अमूल्य शास्त्र दानदाता

जैन स्थम्भ दानवीर



स्व. राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी, जौहरी

जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय, सिकंदराबाद, (दक्षिण.)

जैन प्रभावक धर्म धुरंधर



लाला ज्वालाप्रसादजी, जौहरी.

श्री भगवती सूत्र की प्रस्तावना.

श्लोक—सर्वज्ञ मीश्वर मनंत मसंग मग्रं, सर्वीय मस्परनीस मनीहसत्यम् ।
शिवं शिवं शिवकरं व्यपेतं, श्रीमाज्जिनं जितरिपुप्रयतप्रणैामि ॥ १ ॥

अर्थ–प्रथम इष्टार्थ की सिद्धि के लिये मंगलाचरण करते हैं. तीनों लोक के ईश्वर, अंत रहित सुख के भोक्ता, कर्म काया के संग रहित, सर्व लोकाग्र में रहे, अथवा सब के अग्रेश्वर, कंदर्प रहित, किसी के स्वामित्व रहित, स्नेह रहित, सकलार्थ की सिद्धि कर सिद्ध हुए. कर्मों के उपद्रव रहित, सिद्ध स्थान में संस्थित, अन्य आत्माओं के कल्याणकारी. उपद्रव के हर्ता, अपरम्पार गुणों के धारक, आनिन्द्रिय अतीव सुख में सदैव लीन, अष्टकर्म रूप महाशत्रुओं के पराभव करने वाले ऐसे जिनेन्द्र भगवान को यथाविधी सविनय यथा युक्तनमस्कार करता हुं.

देव देवं जिनं नत्वा, नत्वा च श्रुतदेवतम्। वार्तिकं पंचममंगस्य, वक्षे वृत्यानुसारता॥ १॥

अर्थात्–देवाधि देव श्री जिनेश्वर भगवान को और श्रुत देवता, श्रुत ज्ञान के दाता गुरु महाराज को नमस्कार कर के पंचमांगे श्री विवाह प्रज्ञप्ति (भगवती) सूत्र का हिन्दी भाषानुवाद मेरी अल्पमत्यानुसार करूंगा. प्रथम के चारो अंगों में चार अनुयोग का वर्णन भिन्न २ कहा और इस सूत्र में चारों अनुयोगों का कथन किया गया है इस का नाम विवाहप्रज्ञप्ति इस लिये प्रसिद्ध हुवा है

अर्थ

कि इस में नाना प्रकार के जीवाजीवादि का स्वरूप और भविष्य का बहुत पदार्थों का विवरण है. २ तीर्थंकरों ने गणधरों को कही, गणधरोंने आचार्यादिक को कही. आचार्यादिक ने शिष्यों को कही. यों पूर्व परंपरा से विविध महा पुरुषों ने कथनी आगे सो विवाह पण्णत्ति. ३ विविध प्रकार के विविध अर्थ का प्रवाह और नयों का प्रभाव जिस में कहा वह विवाह पण्णत्ति. ४ विविध प्रकार के प्रश्नों का एक स्थान में समावेश होने से विवाह पण्णत्ति. ५ जिस प्रकार गृहस्थ विवाह समय में विविध प्रकार की सामग्री मीलाता है उस प्रकार इस में भी विविध ज्ञानादि सामग्री का संयोग मीलाया गया है. इसलिये इसे विवाह पण्णत्ति सूत्र कहते हैं. तथा इसे भगवती सूत्र भी कहते हैं. सो सर्व माननीय, सर्व पूजनीय सर्व हितार्थ व सुख की दाता, ऐसा कहते हैं.

इस विवाह पण्णत्ति (भगवती) सूत्र को हस्ति की उपमा दी है १ जिस प्रकार हस्ती अनेक लीला करके लोगों के मन को प्रमुदित करता है वैसे ही इस सूत्र के पदादि का अभ्यास करने से और इस का सम्यक प्रकार से अवलोकन होने से लोगों का मन प्रमुदित होता है. २ जिस प्रकार हस्ती गुल गुलाट शब्द करता है. वैसे ही इस सूत्र में उपसर्ग निपातादि अक्षर के मधु ललित मधुर, गहन, गंभीर, स्याद्वादादि का शब्द होता है. जैसे हस्ती लक्षणयुक्त पावों से युक्त होता है. वैसे ही यह सूत्र भी लिंग, वचन विभक्ति आदि वचन शुद्धि की युक्ति कर युक्त अलंकृत है. ४ जिस प्रकार चक्रवर्तीका हस्ती देवाधिष्ठित होता है वैसे ही यह सूत्र भी शासन देव अधिष्ठित है ५ जैसे हस्ती आठे

चांदी परवाल वगैरह के भूषणों सहित भूपित होता है वैसे ही यह सूत्र भी उद्देशे, हेतु, कारन रूप भूपणों से भूपित है. ६ जिस प्रकार हाथी सब में वडा जानवर है वैसे ही यह सूत्र भी ३६००० प्रश्नोत्तर से बहुत बडा है, ७ जैसे हाथी के चार पांव होते हैं वैसे ही इस सूत्र रूप हाथी के १ चरण करणानुयोग, २ द्रव्यानुयोग, ३ धर्मकथानुयोग और ४ गणितानुयोग यों चार अनुयोग रूप चार पांव है, ८ जैसे हाथी के दो आंखों होती है, वैसे ही इस सूत्र रूप हाथी के ज्ञान व चारित्र रूप दो आंखे हैं. ९ जैसे हाथी के दो दंताशूल होते हैं, वैसे ही इस सूत्र रूप हाथी के द्रव्यास्तिक व पर्यायास्तिक नय रूप दो दंताशूल हैं. १० जैसे हाथी के दो कुंभस्थल होते हैं वैसे ही इस सूत्र रूप हाथी के निश्चय व व्यवहार नय रूप दो कुंभस्थल हैं. ११ जैसे हाथी के सूंड होती है वैसे ही इस सूत्र रूप हाथी के प्रशस्त वचन की रचना रूप सूंडादंड है, १३ निगम वचन रूप छोटी पुंछ है, १४ काल आदि पांच समवाय और आठ प्रवचन माता के रूप आवरणादि उपकरण है, १५ उत्सर्ग व अपवाद मार्ग रूप दो घंटा है, १६ यशःरूप पडह का अवाज चारों दिशा में विस्तृत है, १७ सूत्र रूप हाथी के महावीर स्वामीजी रूप राजा हैं, १८ इस सूत्र रूप गज पर आरूढ होने वाला ३६३ पाखंडियों का पराभव करता है, १९ यह सूत्र रूप हाथी अनेक प्रश्नों के उत्तर रूप तथा पांच ज्ञान रूप शस्त्र सहित सज्ज है, २० यह सूत्र रूप हाथी उपांग रूप चतुरंगिनी सेना सहित चतुर्गति का निकंदन करता है २१ चक्रवर्ती के हाथी के चारों और १४ रत्न होते हैं वैसे ही इस सूत्र रूप हाथी के चउदह पूर्व के अंगोपांग रूप

सूत्र

रत्न हैं, विविध प्रकार के सपांग के समुद्र में विख्यात महान [illegible] मनुष्यों [illegible] सब को ने वाला श्री महावीर महाराजा के वक्त से पृथक पर [illegible] रही है

श्लोक—या षट्त्रिंशत् सहस्त्रान्प्रति विधि, [illegible] प्रश्नानां। [illegible]
प्रथयति परितः श्रोणि सुरेशकानाम् ॥ [illegible]
विवाह प्रज्ञप्ति । पंचमाङ्ग जयति भगवती सा विचित्रार्थ [illegible] ।

अर्थ

पांचवा विवाह प्रज्ञप्ति अपर नाम भगवती सूत्र है. सो [illegible] सागर समान [illegible] गहन, गंभीर, गूढार्थ वाला है. इस में ४१ शतक १००० उद्देशे, और ३६००० प्रश्न रूप [illegible] रहते हैं. इस समुद्र का गूढ भेद रूप रत्नों [illegible] के धारक जनों को प्राप्त नहीं हो सकते हैं परंतु विद्वानों ही प्राप्त कर सकते हैं. ऐसा यह भगवती सूत्र [illegible]

इस भगवती सूत्र का अनुवाद गुजराती में [illegible] से [illegible] बाबु की छपाइ हुइ प्रत पर से और [illegible] मुनि श्री नागचंद्रजी महाराज के [illegible] में एक [illegible] साथ में रख कर किया है. [illegible] हिन्दी अर्थवाली प्रत और एक [illegible] से प्रकाश किया है [illegible] शक्ति व यथामति प्रकाश किया है तथापि अशुद्धि रहने का संभव है सो विद्वज्जन शुद्ध करके पठन करेंगे.

विवाह प्रज्ञप्ति (भगवती) सूत्र की विषयानुक्रमणिका.

सूत्र

रत्न हैं, विविध प्रकार के संयोग के समुद्र से [illegible] प्रधान [illegible] ने वाला श्री महावीर महाराजा के मुख से [illegible]

श्लोक—या षट्त्रिंशत् सहस्त्राण्यति विधि, [illegible]

प्रथयति परितः श्रोगि [illegible] ॥ [illegible]

विवाह प्रज्ञप्ति । पंचमाङ्ग जयति भगवती सा [illegible] ॥

अर्थ

पांचवा विवाह प्रज्ञप्ति अपर नाम भगवती सूत्र है. [illegible] गूढार्थ वाला है. इस में ४१ शतक १००० उद्देशे, और [illegible] समुद्र का [illegible] भेद रूप रत्नों [illegible] प्राप्त कर सकते हैं. ऐसा यह भगवती सूत्र [illegible]

इस भगवती सूत्र का अनुवाद [illegible] छपाइ हुइ [illegible] श्री नागचंद्रजी महाराज के [illegible] साथमें रख कर लिया है. [illegible] हिन्दी अर्थवाली [illegible] शक्ति व यथामति प्रयास किया है [illegible]

सातवे शतक का-दूसरा उद्देशा. ८८३

सप्तम शतक का-तीसरा उद्देशा ८९५

सप्तम् शतक का-चौथा उद्देशा ९०७

सप्तम शतक का-पांचवा उद्देशा ९०८

सप्तम् शतक का छट्ठा उद्देशा ९१०

सातवे शतक का-दूसरा उद्देशा. ८८३

सप्तम शतक का-तीसरा उद्देशा ८९५

सप्तम् शतक का-चौथा उद्देशा ९०७

सप्तम शतक का-पांचवा उद्देशा ९०८

सप्तम् शतक का छट्ठा उद्देशा ९१०

आठवे शतक का-दूसरा उद्देशा. १०३१

आठवा शतक का-तीसरा उद्देशा. १०७३

आठवा शतक का-चौथा उद्देशा. १०७९

आठवे शतक का-पांचवा उद्देशा. १०८०

आठवे शतक का-छट्टा उद्देशा. १०९४

नववा शतक का-प्रथमो उद्देशा.

नववे शतक का-दूसरा उद्देशा.

नववे शतक का-तीसरा उद्देशा.

नववा शतक का-इकतीसवा उद्देशा

नववा शतक का-बावीसवा उद्देशा

नववा शतक का-तेतीसवा उद्देशा.

नववा शतक का-चौतीसवा उद्देशा

१० दशवे शतक का-पहिला उद्देश

त्रयोदश शतक का-पाचवा उद्देशा

तेरवे शतक का-छट्ठा उद्देशा

तेरवे शतक का-सातवा उद्देशा

तेरवे शतक का-आठवा उद्देशा

तेरवे शतक का-नववा उद्देशा

तेरवे शतक का-दशवा उद्देशा.

१४ चतुर्दश शतक का-प्रथमोद्देशा

चउदवे शतक का-दूसरा उद्देशा

चउदवे शतक का-तीसरा उद्देशा

चउदवा शतक का दशवा उद्देशा

पञ्चदश शतक का एक ही उद्देशा

अष्टादश शतक का-प्रथमोद्देशा.

अठारवा शतक का तीसरा उद्देशा

अठारवे शतक का-चौथा उद्देशा.

अठारवे शतक का पांचवा उद्देशा

अठवा शतक का छट्ठा उद्देशा

अठारवा शतक का सातवा उद्देशा

अठारवा शतक का आठवा उद्देशा.

अठारवा शतक का नववा उद्देशा.

अठारवा शतक का दसवा उद्देशा.

गुनीसवा शतक

छव्वीसवा शतक

पुज्य श्री कहानजी ऋषिमहाराज का सम्प्रदायके बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलकऋषिजी ने सीर्फ़ तीन वर्ष में ३२ ही शास्त्रो का हिंदी भाषानुवाद किया. उन ३२ ही शास्त्रों की १०००-१००० प्रतों सीर्फ पांच ही वर्ष में छपवा कर दक्षिण हैद्राबाद निवासी राजा बहादुरलाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रासाद जीने सब को अमूल्य लाभ दिया है.

पुज्य श्री कहानजी ऋषि महाराज का सम्प्रदायके बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलकऋषिजी ने सीर्फ तीन वर्ष में ३२ ही शास्त्रो का हिंदी भाषानुवाद किया. उन ३२ ही शास्त्रों की १०००-१००० प्रतों सीर्फ पांच ही वर्ष में छपवा कर दाक्षिण हैद्राबाद निवासी राजा बहादुरलाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसाद जीने सब को अमूल्य लाभ दिया है.



॥ पंचमांग ॥

॥ विवाह पण्णत्ति (भगवती) सूत्र ॥

* प्रथम शतकम् *

शब्दार्थ ण० नमस्कार अ० अरहंत को ण० नमस्कार सि० सिद्धको ण० नमस्कार आ० आचार्य को ण०

सूत्र णमो अरहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए

भावार्थ श्री अरहंत को नमस्कार होवो. कर, चरण व मस्तक का सुप्रणिधान सो नमस्कार कहा जाता है. किसको नमस्कार करना ? श्री अरहंत को. अरहंत किस को कहते हैं ! देवताओं से विनिर्मित महा-प्रातिहार्य नामक पूजा से जो पूजित बने हुवे हैं, अथवा रहः-एकान्त देश व अन्त जिस को नहीं है,

शब्दार्थ नमस्कार उ० उपाध्याय को ण०नमस्कार लो० लोकमें स० सर्व सा० साधुको ॥*॥ ण०नमस्कार बं०ब्राह्मी

सूत्र सव्वसाहूणं ॥ * ॥ णमो बंभीए लिवीए ॥ * ॥ रायगिह, चलण, दुक्खे, कंखप-

भावार्थ अर्थात् जो सब भाव को जान व देख सकते हैं उन को अरहंत कहते हैं. ऐसे अरहंत भगवंत को नमस्कार होवो. इस का अरुहंताणं व अरिहंताणं ऐसे दो पाठान्तर हैं. अष्टप्रकार के कर्मरूप शत्रुको हणनेवाले अरिहंत कहाते हैं. कर्मरूप बीज का क्षय होने से संसार में पुनःजन्म लेने का जिन को नहीं है इसलिये अरुहंत कहाते हैं; उनको नमस्कार होवो. सिद्ध भगवंत को नमस्कार होवो. वे कैसे हैं ? शुक्ल ध्यानरूप अग्नि से अष्टप्रकार के कर्मों को दग्ध करके जो मोक्ष पहुंचे हैं उन्हें सिद्ध कहते हैं; उन को नमस्कार होवो. जिन शासन के उपदेशक, ज्ञानादि पंचाचार पालनेवाले, गच्छ के नायक, अष्ट संपदा के धारक, ऐसे श्री आचार्यको नमस्कार होवो. अग्यारह अंग व बारह उपांग स्वयं पठन करे, अन्य को पठन करावे, और चरण सत्तरी व करण सत्तरी पचीस गुणों से युक्त होवे ऐसे उपाध्याय को नमस्कार होवो. ज्ञानादिक से मोक्ष मार्ग साधे वैसे सब साधु को नमस्कार होवो. यहांपर " सव्वसाहूणं " पाठ में सव्व शब्दका प्रयोग करने से सामायिक त्रिशेष, अप्रमत्तादिक, पुलाकादिक, जिन कल्पिक, परिहार विशुद्ध कल्पिक, यथा लिंगादि कल्पिक प्रत्येक बुद्ध, स्वयंबुद्ध, व बुद्धबोधित प्रमुख गुणवंत साधुओं को भी ग्रहण कीये हैं उक्त पंच परमेष्ठी मोक्षमार्ग के साहायक व परम उपकारी हैं * ब्राह्मी लिपिक

भावार्थ

को नमस्कार होवो' अर्थात् श्री ऋषभदेवजीने गृहवास में अपनी ज्येष्ठ पुत्री ब्राह्मी को अठारह प्रकार की लिपि बतलाई. उस लिपि से शास्त्र लिखे गये इस लिये उस का कथन करनेवाले श्री ऋषभदेव स्वामी को शास्त्र के उपदेश देनेवाले श्री सुधर्मास्वामी नमस्कार करते हैं. इस तरह नमस्कार किये पीछे पांचवा अंग श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति का अधिकार कहते हैं. इस में जीवाजीव की विविध प्रकार की प्ररूपना की है, गौतमादिक के विविध प्रकार के प्रश्नों व उनके उत्तर दिये हैं. इस में एक सरिखा संबंध होनेपरभी पुष्पावकीर्ण की तरह भिन्न २ प्रकार का अधिकार है. इस का अपर नाम भगवती है अर्थात् भगवंत की वाणी सर्वमान्य होने से भगवती कहाती है. इस के १३८ शतक हैं, उन के उद्देशे १०००० प्रमाण हैं, ३६ हजार प्रश्न हैं और पद २८८००० हैं. प्रथम शतक श्री भगवन्तने राजग्रही नगरी में कहा. इस के दश उद्देशे कहे हैं. प्रत्येक उद्देशे में भिन्न २ प्रश्न पूछे हैं सो बताते हैं. अब उद्देशेके नाम] बताते हैं. १. चलण—चलमाणे

---

१ कितनेक 'नमो बंभीए लिवीए' इनका ब्राह्मी लिपि को नमस्कार होवो ऐसा अर्थ करके अक्षर स्थापना निक्षेप सिद्ध करते हैं, परंतु जैसे अनुयोग द्वार में पाथा का जान पुरुष पाथा कहाता है वैसे ही लिपिका शिखानेवाला पुरुष लिपिक कहा जा सकता है. इसलिये यहांपर सूत्रकारने अक्षर स्थापना रूप लिपि को नमस्कार नहीं करते हुवे लिपि बतानेवाले श्री ऋषभदेव स्वामी को नमस्कार किया है. और भी वीर निर्वाण पीछे ९८० वर्ष में पुस्तकारूढ ज्ञान हुवा इस से लिपि को नमस्कार करना नहीं संभवता है.

शब्दार्थ लि० लिपिक को॥*॥रा० राजगृह में च० चलन दु० दुःख कं० कांक्षा प्रदोष प० प्रकृति पु० पृथ्वी जा० जावन्त णे० नारकी बा० बाल गु० गुरुक च० चलन॥*॥ण० नमस्कार सु० श्रुतको ते० उस का० काल ते० उस स० समय में रा० राजगृह णा० नाम न० नगर हो० था व० वर्णन वाला त० उस रा० राजगृह

सूत्र ओसेय, पगइ, पुढवीओ, जावंते, नेरइए, बाले, गुरुएय, चलणाओ॥*॥णमो सुअस्स ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था, वण्णओ तस्सणं रायगिह-

भावार्थ चलिए इत्यादि चलण विषय अर्थ का निर्णय रूप पहिला उद्देशा नव प्रश्न का जानना. २ दुःख-इस में जीव अपना कीया हुवा कर्म वेदता है इत्यादि प्रश्नकी पृच्छा है. ३ कांक्षा प्रदोप-इस में जीवने कांक्षा मोहनीय कर्म किया ? ऐसे प्रश्नोंकी पृच्छा है ४ प्रकृति-इस में कर्म की कितनी प्रकृतियों कही हैं इत्यादि प्रश्नकी पृच्छा है. पृथ्वी—इस में रत्नप्रभादि कीतनी पृथ्वी है इसका निर्णय किया है ६ जावंत इसमें जितना अंतर से सूर्य का उदय होता होवे उसका निर्णय किया है ७ नारकी—इस में नरक में नारकी उत्पन्न होते हैं या नारकी सिवाय अन्य जीव उत्पन्न होते है इसका निर्णय किया है ८ बाल-इसमें एकान्त बालका स्वरूप कहा है, ९ गुरुक-इसमें कोनसा जीव भारी होता है इसप्रश्न का निर्णय किया है १० चलणाओ-इसमें अन्य दर्शनियों का ऐसा कथन होवे कि चलमाणे अचलिए इत्यादि प्रश्न का निर्णय किया है॥*॥इस द्वादशांग रूप श्रुत सो अर्हत् प्रवचन उस को नमस्कार होवो. इस तरह नमस्कार करके श्री

शब्दार्थ न० नगर की व० बाहिर उ० ईशान दि० दिशा में गु० गुणशिल णा० नामका चे० चैत्य हो० था त० तहां से० श्रेणिक राजा चि० चेलणादेवी ॥ १ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर आ० आदिकर ति० तीर्थंकर स० स्वयं संबुद्ध पु० पुरुषोत्तम पु० पुरुषसिंह

सूत्र स्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए गुणासिलए णामं चेइए होत्था तत्थ-णं सेणिए राया, चिल्लणादेवी ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महा-वीरे-आदिगरे, तित्थगरे,सयंसंबुद्धे, पुरिसुत्तमे पुरिससीहे, पुरिसवर पुंडरीए,पुरिसवरगंधह-

भावार्थ सुधर्मा स्वामी अपने पाटवीय शिष्य श्री जम्बूस्वामी को कहते हैं कि उसकाल उस समय में अर्थात् इस अवसर्पिणी काल के दुषम सुषम नामक चौथे आरेमें भगवन्तने इस कथाका उपदेश दिया तब राजगृह * नामक नगर था. उसका वर्णन रायप्रसेणी सूत्र से जानना. उस राजगृही नगरी की ईशान कोन में गुणशील नामक यक्ष का चैत्य (विंब अथवा बिम्ब युक्त आयतन) था. उस राजगृह में श्रेणिक राजा राज्य करता था. और उनको चेलणा नामक राणी थी. ॥ १ ॥ उस काल उस समय में श्रुत व चारित्र धर्म की आदि के करनेवाले, साधु साध्वी, श्रावक व श्राविका इन चार तीर्थ को

* यद्यपि वर्तमान काल में राजगृह नामक नगर है तथापि अतीत काल जैसा अब नहीं है. अनंत वर्णादिक के पुद्गलों का क्षय हुवा है, इसलिये यहां भूतकाल का प्रयोग किया है.

शब्दार्थ लि० लिपिक को॥*॥रा० राजगृह में च० चलन दु० दुःख कं० कांक्षा प्रदोष प० प्रकृति पु० पृथ्वी जा० जावन्त णे० नारकी बा० बाल गु० गुरुक च० चलन॥*॥ण० नमस्कार सु० श्रुतको ते० उस का० काल ते० उस स० समय में रा० राजगृह णा० नाम न० नगर हो० था व० वर्णन वाला त० उस रा० राजगृह

सूत्र ओसेय, पगइ, पुढवीओ, जावंते, नेरइए, बाले, गुरुएय, चलणाओ॥*॥णमो सुअस्स॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था, वण्णओ तस्सणं रायगिह-

भावार्थ चलिए इत्यादि चलण विषय अर्थ का निर्णय रूप पहिला उद्देशा नव प्रश्न का जानना. २ दुःख-इस में जीव अपना कीया हुवा कर्म वेदता है इत्यादि प्रश्नकी पृच्छा है. ३ कांक्षा प्रदोप-इस में जीवने कांक्षा मोहनीय कर्म किया ? ऐसे प्रश्नोंकी पृच्छा है ४ प्रकृति-इस में कर्म की कितनी प्रकृतियों कही हैं इत्यादि प्रश्नकी पृच्छा है. पृथ्वी-इस में रत्नप्रभादि कीतनी पृथ्वी है इसका निर्णय किया है ६ जावंत इसमें जितना अंतर से सूर्य का उदय होता होवे उसका निर्णय किया है ७ नारकी-इस में नरक में नारकी उत्पन्न होते हैं या नारकी सिवाय अन्य जीव उत्पन्न होते है इसका निर्णय किया है ८ बाल-इसमें एकान्त बालका स्वरूप कहा है, ९ गुरुक-इसमें कोनसा जीव भारी होता है इसप्रश्न का निर्णय किया है १० चलणाओ-इसमें अन्य दर्शनियों का ऐसा कथन होवे कि चलमाणे अचलिए इत्यादि प्रश्न का निर्णय किया है॥*॥इस द्वादशांग रूप श्रुत सो अर्हत् प्रवचन उस को नमस्कार होवो. इस तरह नमस्कार करके श्री

शब्दार्थ र० सरण ग० गति प० रहे हुवे अ० अप्रतिहत प० प्रधान ना० ज्ञान दर्शन ध० धरने वाले वि० निवृत्त छ० छद्मस्थपने से जि० जिते जा० जितानेवाले ति० तीरे ता० तारक बु०बुद्ध बो० बुझाने मु० मुक्त मो० मुक्तकरे स० सर्वज्ञ स० सर्वदर्शी सि० शिव अ० अचल अ० रोगरहित अ० अनंत अ० अक्षय अ०

सूत्र दंसणधरे, वियट्ट छउमे जिणे, जावए, तिणे, तारए, बुद्धे, बोहिए, मुत्ते मोयए, स-
व्वण्णू सव्वदरिसी सिव; मयल, मरुअ, मणंत; मक्खय, मव्वाबाह, मपुणरावत्तियं,

भावार्थ चक्षु के दातार, मोक्ष मार्ग के दातार, विविध प्रकार के उपद्रव से पीडित, जीव को रक्षा स्थान–मोक्ष स्थान देनेसे शरण देनेवाले, सम्यक्त्व चारित्र रूप बोधिके देनेवाले, श्रुत चारित्र रूप धर्म देनेवाले, धर्म के उपदेशक, धर्म के नायक, धर्मरूप रथके सारथी, जैसे पृथिवी पे समस्त राजाओं में चक्रवर्ती प्रधान है वैसेही धर्म कथन में भगवान् चक्रवर्ती चारों गतिके अंत करनेवाले, जैसे समुद्र में रहे हुवे जीवों को द्वीप आधार भूत है वैसेही संसार रूप समुद्र में रहे हुवे प्राणियों को आधार भूत, अप्रतिहत व श्रेष्ठ ज्ञान दर्शन के धारक, छद्मस्थपना से निवर्तनेवाले, रागादि जीतनेवाले, अन्य को धर्मोपदेश कर के रागद्वेष जीतानेवाले, स्वयं संसार समुद्र से तीरनेवाले, अन्य को संसार समुद्र से तीरानेवाले, स्वयंतत्त्वको जानने-वाले, अन्य को तत्त्वका ज्ञान देनेवाले, स्वयं अष्टकर्म से मुक्त होनेवाले व अन्य को मुक्त करानेवाले, सर्वज्ञ सर्वदर्शी, सब उपद्रव रहित, अचल, रोगरहित, अनंत, अक्षय, अव्याबाध, अपुनरावर्त ऐसीसिद्ध

शब्दार्थ पु० पुरुषवर पुंडरीक पु० पुरुषवर गंधहस्ती लो० लोकमें उत्तम लो० लोक के नाथ लो० लोक के हितकर्ता लो० लोक में द्वीपसमान लो० लोकमें प० सूर्यसमान अ० अभय देनेवाले च० चक्षुके देनेवाले म० मार्ग देनेवाले जी० जीव देनेवाले रक्षक बो० बोधि देनेवाले ध० धर्मके देनेवाले ध० ध० धर्मके उपदेशक ध० धर्मके नायक ध० धर्मके सारथि ध० धर्ममें व० प्रधान चा० चातुरंत चक्रवर्ती दी० द्वीप ता० त्राण

सूत्र त्थी, लोगुत्तमे, लोगनाहे, लोगहिए लोगपदीवे, लोग पज्जोयगरे, अभयदए, चक्खुदए, मग्गदए, सरणदए, जीवदए, बोहिदए, धम्मदए, धम्मदेसिए, धम्मनायगे, धम्मसाराहिए, धम्मवर चाउरंत चक्कवट्टी, दीवो ताण सरणगइपइट्ठे, अप्पडिहयवरणाण

भावार्थ स्थापनेवाले, अन्यके उपदेश विना स्वतःही हेय ज्ञेय उपादेय पदार्थ स्वरूप को जाननेवाले, रूपादि अतिशय अथवा जात्यादिकसे उच्चलसे पुरुषोंमें उत्तम, शौर्यगुणसे पुरुषमें सिंह समान, सब अशुभ पाप रहित होनेसे पुरुषोंमें पुंडरीक कमल समान, पुरुषोंमें गंधहस्ती समान लोक में उत्तम, लोकके नाथ अर्थात् योग सो जिसको पहिले धर्म नहीं प्राप्त हुआहै उसको धर्म की प्राप्ति कराना और क्षेम सो धर्मकी प्राप्ति होनेपर मनको स्थिर रहनेदेना इस तरह योग व क्षेम दोनों करनेवाले होनेसे लोकके नाथ; षड्विध जीवनिकाय रूप लोक की रक्षा करने से हितकारी, संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवरूप लोकको द्वीपसमान, गणधरादि लोकको उद्योतके करनेवाले, अभय के दाता, श्रुतज्ञानरूप

१ आसन्न सिद्धिक मोक्षगामी सब भव्य जीव.

शब्दार्थ गुण घो॰ घोरतपस्वी घो॰ घोर ब्रह्मचारी उ॰ सुश्रुषा रहित सं॰ संक्षिप्त वि॰ बहुत ते॰ तेजस लेश्या च॰ चौदहपुर्वी च॰ चार णा॰ ज्ञान के उ॰ धारक स॰ सर्व अक्षर स॰ सन्निपाति स॰ श्रमण भ॰ भगवान् म॰ महावीर से अ॰ दूर नहीं नजदीक नहीं उ॰ ऊर्ध्वजानु अ॰ अधोशिर झा॰ ध्यान कोठे में उ॰

सूत्र तवे, तत्ततवे, महातवे, घोरतवे, उराले, घोरे, घोरगुणे, घोर तवस्सी घोर वंभचेरवासी, उच्छूढ सरीरे, संखित्तविउल तेउलेस्से, चउद्दसपुव्वी, चउणाणोवगए, सव्वक्खरसण्णिवाती, समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठो-

भावार्थ की अवगाहनावाले, समचतुस्र संस्थान से संस्थित, वज्रऋषभ नाराच संघयण युक्त, कनकके बिन्दुसमान व पद्म कमल समान गौर वर्णवाले, उग्रतपस्वी, दीप्त तपवाले, आशंसादि दोष रहित, महत् तप करने वाले, घोर तप करनेवाले, प्रधान तपसे पार्श्वस्थादि जीव को भय उपजानेवाले, परीषह व इन्द्रियादि रिपु को नाश करने में घोर, अन्य जीव नहीं आचर सके वैसे घोरगुणों का धारन करनेवाले, घोर तपस्वी, घोर ब्रह्मचारी, शरीर की शुश्रुषा का त्याग करनेवाले, अनेक योजन प्रमाण क्षेत्राश्रित वस्तुदहन में समर्थ तेजोलेश्या को संकुचित करनेवाले, उत्पातादि चौदह पूर्व के धारक, केवल ज्ञान वर्जित चार ज्ञान के धारक व सब अक्षर के संयोगको जाननेवाले गौतम स्वामी श्री श्रमण, भगवंत महावीर स्वामी से

शब्दार्थ — अव्याबाध अ० पुनरागमन रहित सि० सिद्धगति ना० नाम ठा० स्थान को सं० प्राप्त करने की का० इच्छावाले जा० यावत् स० समवसरण प० परिषदा णि० निर्गता ध० धर्म क० कहा प० परिषदा प्रति-गता ॥ २ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर के जे० ज्येष्ट अं० अंतेवासी इं० इन्द्रभूति ना० नाम का अ० अनगार गो० गौतम गोत्रीय स० सात हाथ के ऊंचे स० समचतुस्र संठान सं० सहित व० वज्र ऋषभ नाराच संघयणी क० सुवर्ण पु० कसोटी णि० घसाहुवा

सूत्र — सिद्धगइनामधेयं ठाणं संपाविउकामे जाव समोसरणं । परिसाणिग्गया । धम्मोकहिओ, परिसा पडिगया ॥ २ ॥ तेणं कालेणं, तेणं समएणं; समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती णामं अणगारे गोयमगोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंस संठाण संठिए, वज्जरिसह नाराय संघयणे कणगपुलगणिघसपम्हगोरे, उग्गतवे, दित्त

भावार्थ — गति को प्राप्त करने की इच्छावाले श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने राजग्रह नगर के गुणशील नामक बगीचे में बारह प्रकार की परिषदा की समक्ष धर्मोपदेश दिया. जीव है, अजीव है लोक है अलोक है यावत् मोक्ष है. परिषदा के देव, देवी, मनुष्य वगैरह सब भगवंत को वांदकर स्वस्थान गये ॥२॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत का जेष्ट अंतेवासी इन्द्रभूति नामक अणगार, गौतम गोत्रीय, सात हाथ

१ चार देव, चार देवी व चतुर्विध संघ.

शब्दार्थ विशेष उत्पन्न हुवा है कुतुहल उ० स्थान से उ० उठे उ० स्थान से उ०उठकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ते० तहां उ० आये उ० आकर स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को ति० तीनवक्त आ०आदान प०प्रदक्षिणा क०की क०करके वं०वंदे न०नमस्कारकिये वं० वंदनकर ण० नमस्कार कर ण० नीचा आसनसे णा० दूरनहीं सु०श्रवण करने की इच्छावाले ण० नमस्कार करते अ० सन्मुख वि० विनय से पं० हस्त जोडकर प० सेवा करते ए० ऐसा व० बोले ॥ ४ ॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन्

सूत्र कोउहल्ले, । उट्ठाएउट्ठेति, उट्ठाएउट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव-उवागच्छइ; उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं, पयाहिणं करेइ, करेइत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासणे णातिदूरे, सुस्सूसमाणे णमंस-माणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी ॥ ४ ॥ से णूणं-

भावार्थ से उपस्थित हुवे. उपस्थित होकर जहां श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी विराजते थे वहां आये. आकर श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीको तीन वार प्रदक्षिणा कर के वांदे नमस्कार किया. वंदणा नमस्कार कर के अतिदूर व अति नजीक भी नहीं वैसे भगवंत के वचन श्रवण करने की अत्यंत अभिलाषा रखते हुवे, नमस्कार करते हुवे, भगवन्त सन्मुख मुख कर के विनय पूर्वक हस्तद्वय जोडकर सेवा करते हुवे ऐसा बोले अर्थात् गौतम स्वामीने ऐसा प्रश्नकिया॥४॥अहो भगवन् ! जो कर्म अपनी स्थितिसे चलनेलगे, भोग सन्मुख हुवे

शब्दार्थ रहेहुवे सं० संयम त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते वि० विचरते हैं. ॥३॥ त० तब गो० गौतम को जा० उत्पन्न है स० श्रद्धा जा० उत्पन्न है सं० संशय जा० उत्पन्न है को० कुतुहल उ० उत्पन्न हुइ है स० श्रद्धा उ० उत्पन्न संशय उ० उत्पन्न कुतुहल स० विशेष उत्पन्न है श्रद्धा सं० विशेष उत्पन्न है संशय सं० विशेष उत्पन्न है कुतुहल स० विशेष उत्पन्न हुइ है श्रद्धा सं० विशेष उत्पन्न हुवा है संशय सं०

सूत्र वगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ३ ॥ तएणं से भगवं गोयमे जायसड्ढे, जायसंसये, जायकोउहल्ले; उप्पण्णसड्ढे, उप्पण्णसंसए, उप्पण्णकोउहल्ले; संजायसड्ढे, संजाय संसये, संजाय कोउहल्ले, समुप्पन्नसड्ढे, समुप्पन्नसंसये, समुप्पन्न

भावार्थ बहुत दूर नहीं वैसेही नजीक भी नहीं ऐसे ऊर्ध्वजानु व अधोशिर (उत्कट आसन) कर वैठेहुवे धर्म ध्यान व शुक्लध्यान करते और संयम व तपसे आत्मा को भावते हुवे विचर रहें ॥ ३ ॥. उस समय श्री गौतम स्वामी को तत्त्वार्थ जानने की श्रद्धा उत्पन्न हुई; क्योंकी "चलमाणे चलिए" इस में वर्तमानकाल व अतीतकाल एक सरिखा कहा ऐसा वाक्य किस न्यायसे कहा? ऐसा संशय उत्पन्न हुवा, किस प्रकार से इस का अर्थ प्रकाशेंगे ऐसा कुतुहल उत्पन्न हुवा, तत्काल श्रद्धा उत्पन्न हुई, तत्काल संदेह उत्पन्न हुवा तत्काल कुतुहल उत्पन्न हुवा, विशेष श्रद्धा हुई, विशेष संशय उत्पन्न हुवा, व विशेष कुतुहल उत्पन्न हुवा है जिस को ऐसे व समुत्पन्न श्रद्धा, समुत्पन्न संशय व समुत्पन्न कुतुहल वाले श्री गौतमस्वामी स्वस्थानक

शब्दार्थ मरा णि० निर्जरते को णि० निर्जरा हं० हा गो० गौतम ! च० चलते को च० चला जा० यावत् णि०

सूत्र छिज्जमाणे छिण्णे ? भिज्जमाणे भिण्णे ! दज्झमाणे दड्ढे ? मिज्जमाणे मडे ? णिज्जरिज्जमाणे णिज्जि

भावार्थ इन्धन जलाना. शरुकिया इस तरह जलाते को जलाया कहना ? ८ जिस के आयुष्य का संचित पुद्गल का क्षय होने लगा मृत्यु सन्मुख हुवा तब उस मरते को मरा कहना ? ९ जीव प्रदेश से कर्म पुद्गलों की निर्जरा करने लगा उस निर्जरा करने को निर्जरा कहना ? यह नवप्रश्नों श्री महावीर स्वामीसे गौतम स्वामीने पूछे तब भगवन्त महावीर स्वामी उत्तर देते हैं कि हां गौतम ! उनका अर्थ वैसेही है. अर्थात् जैसे किसी कपडे बनानेवाले वनकरने कपडा बनाना शरु किया और प्रथम तंतु बुना उसे वस्त्र बुना कहा जाता है वैसेही उक्त प्रकार के कार्य जिस समय में शरु किये उस ही समय में हुवे कहे जासकते हैं. यद्यपि इन को पूर्ण होने में असंख्यात समय व्यतीत होते हैं ताहंपि उस की परिणति में उस की सब आकृति बनगइ है या वह पूर्ण करने का अभिलाषि बना हुवा है. १ वैसे ही जिसने अपने अनादि कर्म को कर्मस्थिति से संचालित किये, भोगवने सन्मुख हुवा उन्हें निश्चय से कर्म भोगवेगा. २ जो उदय नहीं आये हैं उन को उदीरणा से उदय में लाने का जिसने प्रयत्न किया वह उदीरना करेगा. ३ जिनके कर्म उदयमें आकर वेदना देनेलगे वे सबही वेदे जावेंगे ४ जिन के कर्म जीवके प्रदेशसे पतन होनेलगे उस के सब कर्म पडेंगे ५ जिसने कर्म की स्थिति ह्रस्व कालकी की वह क्षय करेगा ६ जो कर्म पुद्गलों को परावर्तन करने लगा वह परावर्तेगा.

शब्दार्थ च० चलते को च० चला उ० उदीरते को उ० उदीरा वे० वेदते को वे० वेदा प० छोडते को प० छोडा छि० छेदते को छि० छेदा भि० भेदते को भि० भेदा द० जलाते को द० जलाया मि० मरते को म०

सूत्र भंते ! चलमाणे चालिए ? उदीरिज्जमाणे उदीरिए ? वेदिज्जमाणे वेदिए ? पहेज्जमाणे पहीणे !

भावार्थ उनकर्मों को क्या चलेही कहना ? + २ जो कर्म उदय में नहीं आये हैं, बहुत आगामिक काल में उदय आवेंगे उनको शुभ अध्यवसाय से आकर्ष कर उदय में लावे उसे उदीरणा कहते हैं. इस तरह प्रथम समय में उदीरणा करते को उदीरेही क्या कहना ? ३ कर्म उदय में आकर प्रथम समय में वेदते होवे उन्हें क्या वेदेही कहना. ? ४ जो कर्म पुद्गल जीव के प्रदेश से अवलम्बन कर रहे थे वे पतन होने लगे उन्हें क्या पतन हुवा कहना ? ५ जो कर्म दीर्घकाल की स्थितिवाले थे उनका छेदन कर अल्प काल की स्थितिवाले बनाये, इस तरह से प्रथम समय में छेदते को छेदा कहना ? ६ जो कर्म तीव्ररस देने वाले थे उनको मंद रस देनेवाले बनाये इस तरह उनकर्मों को प्रथम समयमें भेदतेको भेदे कहना. ? ७ ध्यानरूप ज्वालासे कर्मरूप

+ श्री सुधर्मा स्वामी ने सूत्र की आदि में अन्य अनेक प्रश्नों को छोडकर "चलमाणे चालिए" यह प्रश्न क्यों ग्रहण किया ? समाधान-धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष इन चारों को साधने में उद्यमश्रेष्ठ कहा है. चारों में मोक्ष श्रेष्ठ है वह कर्मक्षय से होता है और कर्म क्षय अनुक्रम से होता है इसलिये प्रधान हेतु की सिद्धि के लिये प्रथम ही "चलमाणे चलिए" इसप्रश्नसे निश्चय किया कि जिनके कर्म अपने अनादि स्वभावकी सिद्धिसे चलित हुए उन को चले ही कहना मोक्ष प्राप्ति का प्रथम कार्य में ही यह दर्शाया है.

शब्दार्थ — अथवा णा॰विविध अर्थी वि॰विविधउच्चारके णा॰विविध व्यंजनके गो॰गौतम ए॰ये च॰चार पद ए॰ एकअर्थी णा॰विविध उच्चार णा॰विविध व्यंजन उ॰उत्पन्न पक्षके ए॰ये पं॰पांचपद णा॰विविधअर्थी णा॰विविध उच्चारके

सूत्र — णाणा वंजणा? गोयमा! चलमाणे चालिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेइज्जमाणे वेइए, पहेज्जमाणे पहीणे, एएणं चत्तारि पया एगट्ठा णाणा घोसा, णाणावंजणा उप्पण्ण

भावार्थ — ये चार पद उत्पन्न पक्ष आश्रित एक अर्थवाले, अनेक घोप, व अनेक व्यंजनवाले हैं यहांपर दो पक्ष ग्रहण किये हैं एक उत्पाद पक्ष और दूसरा विगम पक्ष. उस में उक्त चारों पद केवल ज्ञान सो उत्पाद और मोक्ष सो विगत पद. उस में यह चारों पद केवल उत्पाद विपयक होने से एक अर्थ वाले कहे हैं जैसे केवल ज्ञान पर्याय जीव को पहिले नहीं प्राप्त हुइ थी और जीव का प्रयास केवल ज्ञान निमित्त है इसलिये वह ही केवल ज्ञान उत्पत्ति पर्याय कहा. जो कर्म चलायमान होवेंगे वे उदय में आवेंगे और जो उदय में आवेंगे वे वेदे जावेंगे और वेदे पीछे क्षीण होवेंगे, इस लिये उत्पाद पक्ष में ये चारों पद एकार्थ वाची जानना. अथवा स्थिति बंधादि अविशेपित सामान्य आश्रय से एकार्थ है. केवल उत्पादक पक्ष के साधक है, क्यों कि उत्पन्न पक्ष में कर्म चिंता का प्रक्षीणपना होता है. छिन्न पद में स्थिति का विगम कहा, भिन्न पद में रसका विगम कहा. दज्झ पद में दाहरूप विगम कहा, मिज्ज पद में आयुष्य कर्म के अभावका विगम कहा, णिज्जरिज्ज पद में सब कर्म का विगम कहा इस लिये इन को विगत पक्ष में

शब्दार्थ निर्जरनेको णि० निर्जरा ॥ ५ ॥ ए० येन ० नवपद किं० क्या ए० एक अर्थी णा० विविध उच्चारके णा० विविध व्यंजनके उ०

सूत्र णे ? ॥ हंता गोयमा ! चलमाणे चालिए जाव णिज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे ॥ ५ ॥ एएणं भंते नवपदा किं एगट्ठा, णाणा घोसा, णाणा वंजणा उदाहु णाणट्ठा, णाणा घोसा,

भावार्थ ७ जो शुभ ध्यानरूप अग्नि से कर्म रूप इन्धन जलानेलगा वह कर्म को जलावेगा ८ जिसके आयुष्य का पुद्गल क्षीण होनेलगा वह मरेगा ९ जिसने कर्म की निर्जरा करनी शरु की वह कर्म की निर्जरा करेगा. इस रीति से इन नव कार्यों को प्रारंभ करते ही बनाहुवा कहना ॥ ५ ॥ पुनः गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! इन नव पद का क्या एक अर्थ या एक प्रयोजन है ? या उदात्त, अनुदात्त व स्वरित घोषवाले हैं ? अनेक व्यंजनमय है ? अथवा विविध प्रकार के अर्थवाले, घोषवाले, या व्यंजनवाले हैं ÷ अहो गौतम ! १ चलमाणे चलिए २ उदीरिज्जमाणे उदीरिए, ३ वेइज्जमाणे वेइए ४ पहेज्जमाणे पहीणं

÷ यहां चौभंगी जानना. १ एक अर्थ एक व्यंजन जैसे क्षीर क्षीर २ एक अर्थ अनेक व्यंजन यथा क्षीर पयः ३ अनेक अर्थ एक व्यंजन अर्क गोमहिषी का क्षीर ४ अनेक अर्थ अनेक व्यंजन घट पटादि. इस में दूसरा चौथा भांगा यहां ग्रहण किया है, अन्य दोनों भांगे असंभवित होनेसे नहीं ग्रहण किये हैं इस सूत्र में चलमाणआदि चार पद आश्रित दूसरा भांगा जानना और छिज्जमाणे वगैरह पांचपद आश्रित चौथा भांगा जानना.

शब्दार्थ श्वासेल ऊ० ऊंचाश्वासले णी० नीचाश्वासले जं० जैसे उ० ऊश्वासपद में ॥ ८ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् आ० आहाराके अर्थी ज० जैसे प०पन्नवणा में प० प्रथम शतक में आ० आहार उद्देशे में त० तैसे भा० कहना ठि० स्थिति उ० ऊश्वास आ० आहार किं० किंसतरह आ० आहारले स० सर्वसे क० कितना भाग स० सर्व की० किसप्रकार से भु० वारंवार प० परिणमें ॥ ९ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् पु० पूर्व आ०

सूत्र जहा उस्सासपदे ॥ ८ ॥ णेरइयाणं भंते आहारट्ठी, ? जहा पन्नवणाए पढमसए आहारुद्देसए तहा भाणियव्वं ॥ गाथा ॥ ठिति उस्सासाहरे, किंवाहारेइ सव्वओवावि; कइभागं सव्वाणिव कीसव भुज्जो परिणमंति ॥ १ ॥ ९ ॥ णेरइयाणं भंते पुव्वा-

भावार्थ के जीव निरंतर समय मात्रका विरह रहित-श्वासोश्वास लेते हैं ऐसा कहा है वैसेही यहां जानना. ॥ ८ ॥ अहो भगवन् नारकी आहार के अर्थी- वांच्छक हैं ? इस का पन्नवणा सूत्र में प्रथम शतक के आहार उद्देशे में जैसे कहा है वैसे कहना. नारकी कैसे आहारलेवे ? आत्मा के सब प्रदेश से आहार लेवे. नारकी कितना आहार लेवे ! आहार निमित्त जितने पुद्गल ग्रहण किये होवे उस के असंख्यातवे भाग का आहार लेवे, अनंत भाग में आस्वादे, अथवा आहार परिणम योग्य सब पुद्गल का आहार करे. जिन पुद्गलों का आहार किया है वे पुद्गलों किस प्रकार से वारंवार परिणमते हैं ! वे आहार के पुद्गलों इन्द्रियपने यावत् स्पर्श पने परिणमते हैं, यों सब अधिकार विस्तार पूर्वक पन्नवणा सूत्र से जानना ॥ ९ ॥ अब नारकी

शब्दार्थ णा० विविधव्यंजन के वि० विगतपक्ष को॥ ६ ॥ णे० नारकी को भं० भगवन् के० कितने कालकी ठि० स्थिति प० प्ररूपी गो० गौतम ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ७ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् के० कीतना का० काल में आ० थोडाश्वासले पा० बहुत

सूत्र पक्खस्स छिज्जमाणे छिण्णे भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए णिज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे, एएणं पंचपदा-णाणट्ठा, णाणाघोसा, णाणा वंजणा, विगय पक्खस्स ॥ ६ ॥ णेरइयाणं भंते केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वास सहस्साइं ठिई पण्णत्ता, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ ७ ॥ णेरइयाणं भंते केवइयं कालस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, णीससंतिवा ?

भावार्थ एक कहे हैं. ये पांचों पद विगत पक्ष की अपेक्षा से विविध प्रकार के अर्थ, घोप, व व्यंजनवाले हैं. ये पांचों पद विगत पक्ष याचक हैं. इसका अन्तिम नववा पदमें मोक्षकी कथा कही और वह मोक्ष जीवको होता है. ॥६॥ नरकादिक चौविस दंडक के जीव कहे जाते हैं. उन में से प्रथम नरककी स्थितिका प्रश्न चलता है अहो भगवन् ! नरक के नेरइयों की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! नारकी की प्रथम नरक की अपेक्षासे जघन्य दश हजार वर्ष की और सातवी नरक की अपेक्षासे उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की कही. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् नारकी कितनेकाल तक श्वासोश्वास लेवे ? अहो गौतम जैसे श्वासोश्वासपद में नारकी

द्विसंजोगी १५	त्रिसंजोगी २०		चतुःसंजोगी १५	पंचसंजोगी ६
१२	१२३	२५६	१२३४	१२३४५
१३	१२४	३४५	१२३५	१२३४६
१४	१२५	३४६	१२३६	१२३५६
१५	१२६	३५६	१२४५	१२४५६
१६	१३४	४५६	१२४६	१३४५६
२३	१३५		१२५६	२३४५६
२४	१३६		१३४५	
२५	१४५		१३४६	छसंजोगी १
२६	१४६		१३५६	१२३४५६
३४	१५६		१४५६	एक संजोगी ६
३५	२३४		२३४५	
३६	२३५		२३४६	
४५	२३६		२३५६	१ ४
४६	२४५		२४५६	२ ५
५६	२४६		३४५६	३ ६

शब्दार्थ करते पो० पुद्गल प० परिणमें प० परिणमते हैं अनाहारी आ० आहार करेंने पो० पुद्गल णो० नहीं प० परिणमें प० परिणमेंगे अ० अनाहारीक अ० आहार नहीं करेंगे पो० पुद्गल णो० नहीं

सूत्र परिणमंतिय। अणाहारिया आहारिज्जस्समाणा पोग्गला णो परिणया परिणामिस्संति। अणाहारिया अणाहारिज्जस्समाणा पोग्गला णो परिणया णो परिणामिस्संति ॥ १० ॥ णेरइयाणं भंते पुव्वाहारिया पोग्गला चिया ॥ पुच्छा ॥

भावार्थ अहो गौतम ! नारकी को पहिले ग्रहण किये हुवे पुद्गल परिणमें क्यों कि ग्रहण किये पीछे ही पुद्गल परिणमते हैं पूर्व कालमें ग्रहण किये वर्तमान में ग्रहण करते हैं वैसे पुद्गलों नारकी को परिणमें और परिणमते हैं अतीत काल में पुद्गल नहीं ग्रहण किये हैं और भविष्य में ग्रहण करेंगे वैसे पुद्गल नारकी को परिणमें नहीं हैं परंतु अनागत में ग्रहण किये अनंतर परिणमेंगे, अतीत काल में ग्रहण नहीं किये और भविष्यमेंभी ग्रहण नहीं करेंगे वैसे पुद्गल नारकी को परिणमें नहीं और परिणमेंगे

शब्दार्थ आहारकिये पो० पुद्गल प० परिणमें आ० आहारकिये आ० आहार करते पो० पुद्गल प० परिणमें अ० आहारनहींकिये आ० आहार करेंगे पो० पुद्गल प० परिणमें अ० आहारनहींकिये अ० नहीं आहार करेंगे पो० पुद्गल प० परिणमें गो० गौतम! णे० नारकी पु० पूर्वेआहारनहींकिये पो० पुद्गल प० परिणमें आ० आहारकिये आ० आहा

सूत्र हारिया पोग्गला परिणया आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया अणाहारिया आहारिज्जस्समाणा पोग्गला परिणया अणाहारिया अणाहारिज्जस्समाणा पोग्गला परिणया? गोयमा णेरइयाणं पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया, आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया

भावार्थ के आहाराधिकार से आहार विषयिक प्रश्न करते हैं. अहो भगवन्! नारकी को पहिले-शरीर साथ आहार किये हुवे पुद्गल क्या परिणमे? पूर्वकाल में जिन पुद्गलों का आहार किया होवे अथवा वर्तमान में आहार करते हैं वे पुद्गलों नारकी को क्या परिणमें? पूर्वकाल में जिन पुद्गलों का आहार नहीं किया और भविष्य में आहार करेंगे वैसे पुद्गलों क्या नारकी को परिणमें? और पूर्वकाल में आहार के पुद्गलों संग्रहे नहीं और अनागत में भी संग्रह करेंगे नहीं वैसे पुद्गलों क्या नारकी को परिणमें? यहां चार प्रश्न कहे उस के ६३ भांगे होते हैं. अतीत काल में आहारे, वर्तमान में आहारते हैं और अनागत में आहारेंगे, अतीत काल में आहारे नहीं, वर्तमान में नहीं आहारते हैं और भविष्य में आहारेंगे नहीं इस तरह छ पद के ६३ भांगे होते हैं. अब भगवंत श्री महावीर स्वामी उत्तर देते हैं.

शब्दार्थ अ० आश्री दु० दोप्रकार के पो० पुद्गल चि० चिने अ० सूक्ष्म बा० बादर ए० ऐसे उपचिन णे० नारकी क० कितने प्रकार के पो० पुद्गल उ०उदीरते हैं गो० गौतम क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री दु० दोप्रकारके पो०पुद्गल उ०उदीरते हैं उ०अपवर्तनाकिये उ०अपवर्ततेहैं उ०अपर्तेंगे सं०संक्रमें सं०संक्रमतेहैं सं० संक्रमेंगे नि० विखरें नि० विखरते हैं नि० विखरेंगे नि० एकत्रित हुवे नि० एकत्रित होते हैं नि० एकत्रित

सूत्र कतिविहा पोग्गला चिज्जंति ? गोयमा ! आहारदव्व वग्गणमाहिकिच, दुविहा पोग्गला चिज्जंति तंजहा अणूचेव बायराचेव. । एवं उवाचिज्जंति ॥ णेरइयाणं भंते कतिविहा पोग्गला उदीरंति ? गोयमा ! कम्मदव्व वग्गणमाहिकिच दुविहा पोग्गला उदीरंति, तंजहा—अणूचेव बायराचेव । सेसावि एवं चेव भाणियव्वा । वेदंति । णिज्जरंति । उयट्टिंसु । उयहंति । उयट्टिस्संति ॥ संकामिंसु । संकामंति । संकामिस्संति॥

भावार्थ सेही शरीर संबंधी चय उपचय पहिले कहा. आहार से ही चय उपचय होता है परंतु अन्य द्रव्य से नहीं होता है. उस में सूक्ष्म सो केवलि गम्य और बादर सो चर्मचक्षु ग्राह्य है. ऐसे ही उपचिन आश्रित कहना. अहो भगवन् ! नारकी को कितने प्रकार के पुद्गल की उदीरना होवे ? अहो गौतम ! नारकी को कर्मद्रव्य वर्गणा आश्रित सूक्ष्म व बादर ऐसे दो प्रकार के पुद्गल की उदीरणा होवे. क्यों की उदीरनादिक कर्म द्रव्य को होती है ऐसे ही ५ वेदे ६ निर्जरे ७ अपवर्तन हुवे, ८ अपवर्तन होता है, ९ अपवर्तन होवेंगे १०

१ अध्यवसाय से कर्म स्थिति को हीन करना यहां अपवर्तन में उपलक्षण से उद्वर्तन भी ग्रहण करना उद्वर्तन सो स्थिति आदि की वृद्धि करना.

शब्दार्थ प॰परिणमें णो॰नहीं प॰परिणमेंगे॥१०॥णे॰नारकीने भं॰भगवन् पु॰पूर्वाहारी पो॰पुद्गल चि॰इकठेकिये ज॰ जैसे प॰ परिणमें त॰ तैसे चि॰ इकठेकिये उ॰ उपचिने उ॰ उदीरे वे॰ वेदे णि॰ निर्जरे ए॰ एकेक प॰ पदमें च॰चार प्रकारकेपो॰पुद्गल हैं॥११॥णे॰नारकी क॰कितने प्रकारसे पो॰पुद्गल भि॰भेदातेहैं गो॰गौतम क॰ कर्म द॰ द्रव्य व॰ वर्गणा अ॰ आश्री दु॰ दोप्रकार के पो॰ पुद्गल भि॰ भेदावे अ॰ सूक्ष्म बा॰ बादर णे॰ नारकी क॰ कितने प्रकार के पो॰ पुद्गल चि॰ चिणे गो॰ गौतम ! आ॰ आहार द॰ द्रव्य व॰ वर्गणा

सूत्र परिणया तहा चियावि एवंचिया उवचिया, उदीरिया, वेइया, णिज्जिणा॥गाथा॥परिणत चियाय उवचिया उदीरिया वेइयाय णिज्जिण्णा, एक्किक्कम्मि पदम्मि चउव्विहा पोग्गलाहोंति ॥ १ ॥ ११ ॥ णेरइयाणं भंते कतिविहा पोग्गला भिंजाति ? गोयमा ! कम्मदव्व वग्गणमाहिगिच्च दुविहा पोग्गला भिज्जंति तंजहा अणूचेव, बायराचेव णेरइयाणं भंते

भावार्थ नहीं.॥१०॥अहो भगवन् नारकीको पहिले आहारे हुवे पुद्गल एकत्रित किये? अहो गौतम इसका सब खुलाला जैसे परिणमें का कहा वैसे ही जानना. और इसी तरह बहुत एकत्रित किये, उदीरे, वेदे और निर्जरे ऐसे एक २ पद में चार २ भेद जानना. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् नारकी को कितने पुद्गल अनुभाग भेद से भेदावे ? अर्थात तीव्रमंद, मध्यमेद से भेदपामे, उद्वर्तन करण से मन्दरस तीव्रहोवे तीव्ररस मंद होवे ? अहो गौतम कर्म द्रव्यवर्गणाके आश्रित दो प्रकारके पुद्गल भेदपावे सूक्ष्म व बादर. उदारिकादि द्रव्यमें कर्म द्रव्यही सूक्ष्म है. अहो भगवन् ! नारकी को कितने प्रकार के पुद्गल चिणे, एकत्रित हुवे ? अहो गौतम आहार द्रव्य वर्गणा के आश्रित सूक्ष्म व बादर ऐसे दो प्रकार के पुद्गल एकत्रित होते हैं क्यों की आहार द्रव्य

शब्दार्थ अ० आश्री दु० दोप्रकार के पो० पुद्गल चि० चिने अ० सूक्ष्म बा० बादर ए० ऐसे उपचिन णे० नारकी क० कितने प्रकार के पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं गो० गौतम क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री दु० दोप्रकारके पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं उ० अपवर्तनाकिये उ० अपवर्तते हैं उ० अपवर्तेंगे सं० संक्रमे सं० संक्रमते हैं सं० संक्रमेंगे नि० विखरें नि० विखरते हैं नि० विखरेंगे नि० एकत्रित हुवे नि० एकत्रित होते हैं नि० एकत्रित

सूत्र कतिविहा पोग्गला चिज्जंति ? गोयमा ! आहारदव्व वग्गणमाहिकिच्च, दुविहा पोग्गला चिज्जंति तंजहा अणूचेव बायराचेव. । एवं उवचिज्जंति ॥ णेरइयाणं भंते कतिविहा पोग्गला उदीरंति ? गोयमा ! कम्मदव्व वग्गणमाहिकिच्च दुविहा पोग्गला उदीरंति, तंजहा—अणूचेव बायराचेव । सेसावि एवं चेव भाणियव्वा । वेदंति । णिज्जरंति । उयट्टिंसु । उयट्टंति । उयट्टिस्संति ॥ संकामिंसु । संकामंति । संकामिस्संति॥

भावार्थ सेही शरीर संबंधी चय उपचय पहिले कहा. आहार से ही चय उपचय होता है परंतु अन्य द्रव्य से नहीं होता है. उस में सूक्ष्म सो केवलि गम्य और बादर सो चर्मचक्षु ग्राह्य है. ऐसे ही उपचिन आश्रित कहना. अहो भगवन् ! नारकी को कितने प्रकार के पुद्गल की उदीरना होवे ? अहो गौतम ! नारकी को कर्मद्रव्य वर्गणा आश्रित सूक्ष्म व बादर ऐसे दो प्रकार के पुद्गल की उदीरणा होवे. क्यों की उदीरनादिक कर्म द्रव्य को होती है ऐसे ही ५ वेदे ६ निर्जरे ७ अपवर्तन हुवे. ८ अपवर्तन होता है, ९ अपवर्तन होवेंगे १०

---

१ अध्यवसाय से कर्म स्थिति को हीन करना यहां अपवर्तन में उपलक्षण से उद्वर्तन भी ग्रहण करना उद्वर्तन सो स्थिति आदि की वृद्धि करना.

शब्दार्थ होंगे स० सर्व में क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री भे० भेद चि० चिन उ० उपचिन उ० उदीर वे० वेद णि० निर्जरा उ०अपवर्तन सं० संक्रमन नि० निधत्त णि० निकाच ति०तीन प्रकार का का० काल ॥ १२ ॥ न० नारकी जे जो० पो० पुद्गल ते० तेजस् क० कार्माणपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे किं०

सूत्र निहत्तिंसु । निहत्तंति । निहत्तिस्संति निकाइंसु । निकायंति । निकाइस्संति ॥ सव्वेसुवि कम्म दव्ववग्गण भहिकिच्च ॥ गाथा ॥ भेदिय चिता उवचिता, उदीरिता वेदियाय णिज्जिण्णा । उवट्टण संकामण णिहत्तणिकायणे तिविह कालो ॥ १ ॥ १२॥ णेरइयाणं भंते जे पोग्गला तेया कम्मत्ताए गिण्हंति, ते किं तीतकाल समए गिण्हंति?

भावार्थ मूल व उत्तर प्रकृतियों का अध्यवसाय से परस्पर संचार होना उसे संक्रामन कहते हैं. अतीत काल में संक्रमण ११ हुवा, वर्तमान काल में संक्रमण होता है और १२ आगामिक में संक्रमण होवेगा, भिन्न २ बिखरे हुवे पुद्गलों को निधत्त करना. १३ ऐसे अतीत काल में एकत्रित किये, १४ वर्तमान में कर रहे हैं १५ आगामिक में एकत्रित करेंगे. १६ अतीत काल में निकाचे, १७ वर्तमान में निकाचते हैं और १८ आगामिक में निकाचेंगे उक्तसत्र १८ भेद कर्म द्रव्य वर्गणा आश्रित जानना. ॥ १२ ॥ अहोभगवन् ! नारकी जो पुद्गल तेजस व कार्माण शरीरपने ग्रहण करते हैं वे क्या अतीतकाल में ग्रहण करते हैं. वर्तमान

शब्दार्थ क्या ती० अतीत काल स० समय में गि० ग्रहण करते हैं प० वर्तमान समय में गि० ग्रहण करते हैं अ० अनागत स० समय में गि० ग्रहण करते हैं गो० गौतम णो० नहीं ती० अतीत काल में गि० ग्रहण करते हैं प० वर्तमान काल में गि० ग्रहण करते हैं णो० नहीं अ० अनागत काल में गि० ग्रहण करते हैं ने० नारकी जे० जो पो० पुद्गल ते० तेजस क० कार्माणपने ग० ग्रहाहुवा उ० उदीरते हैं ते० वे किं क्या ती० अतीत काल में ग० ग्रहा हुवा पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं प० वर्तमान काल में गि० लेते

सूत्र पडुप्पण्ण कालसमए गिण्हंति ? अणागय काल समए गिण्हंति ? गोयमा ! णो तीत कालसमए गिण्हंति, पडुप्पण्ण कालसमए गिण्हंति, णो अणागय कालसमए गिण्हंति णेरइयाणं भंते ज पोग्गला तेयाकम्मत्ताए गहिए उदीरेंति; ते किंतीत कालसमय गहिए पोग्गले उदीरेंति, पडुप्पण्ण काल समय घिप्पमाणे पोग्गले उदीरेंति, गहण समय पुरक्खडे पोग्गले उदीरेंति ? गोयमा ! तीत काल समय गहिए

भावार्थ में ग्रहण करते हैं या अनागत में ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! अतीत काल में नहीं ग्रहण करे वर्तमान काल में ग्रहण करे और अनागत काल में ग्रहण करे नहीं. अहो भगवन् नारकी जो पुद्गल तेजस कार्माण कर्मपने ग्रहण करके उदीरते हैं, वे क्या अतीत काल के ग्रहण किये पुद्गल उदीरते हैं, वर्तमानकाल में ग्रहण करते पुद्गल उदीरते हैं अथवा ग्रहण समय से आगे के पुद्गल उदीरते हैं ? अहो गौतम!

शब्दार्थ होंगे स० सर्व में क० कर्म द० द्रव्य व० वर्गणा अ० आश्री भे० भेद चि० चिन उ० उपचिन उ० उदीर वे० वेद णि० निर्जरा उ०अपवर्तन सं० संक्रमन नि० निधत्त णि० निकाच ति०तीन प्रकार का का० काल ॥ १२ ॥ न० नारकी जे जो० पो० पुद्गल ते० तेजस् क० कार्माणपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे किं०

सूत्र निहत्तिंसु । निहत्तंति । निहत्तिस्संति निकाइंसु । निकायंति । निकाइस्संति ॥ सव्वेसुवि कम्म दव्ववग्गण भहिकिच्च ॥ गाथा ॥ भेदिय चिता उवचिता, उदीरिता वेदियाय णिज्जिण्णा । उवट्टण संकामण णिहत्तणिकायणे तिविह कालो ॥ १ ॥ १२॥ णेरइयाणं भंते जे पोग्गला तेया कम्मत्ताए गिण्हंति, ते किं तीतकाल समए गिण्हंति?

भावार्थ मूल व उत्तर प्रकृतियों का अध्यवसाय स परस्पर संचार होना उसे संक्रामन कहते हैं. अतीत काल में संक्रमण ११ हुवा, वर्तमान काल में संक्रमण होता है और १२ आगामिक में संक्रमण होवेगा, भिन्न २ विखरे हुवे पुद्गलों को निधत्त करना. १३ ऐसे अतीत काल में एकत्रित किये, १४ वर्तमान में कर रहे हैं १५ आगामिक में एकत्रित करेंगे. १६ अतीत काल में निकाचे, १७ वर्तमान में निकाचते हैं और १८ आगामिक में निकाचेंगे उक्तसव १८ भेद कर्म द्रव्य वर्गणा आश्रित जानना. ॥ १२ ॥ अहोभगवन् ! नारकी जो पुद्गल तेजस व कार्माण शरीरपने ग्रहण करते हैं वे क्या अतीतकाल में ग्रहण करते हैं. वर्तमान

र्थ संग्रहते स० सर्व में अ० अचलित नो० नहीं च० चलित ने० नारकी जी० जीव किं क्या च० चलित क० कर्म णि० णिर्जरे अ०अचलित गो०गौतम च० चलित क०कर्म णि०णिर्जरे णो० नहीं अ० अचलित क० कर्म णि० णिर्जरे बं० बंध उ०उदय उ०अपवर्त सं० संक्रमन नि० निधत्त नि०निकाच में अ० अचलित क० कर्म भ० होवे च० चलित णि० निर्जरा में ॥ १४ ॥ अ० असुर कुमार की भं० भगवन् के० कितना का०

सूत्र उदीरंति, अचलियं कम्मं उदीरंति ? गोयमा णो चलियं कम्मं उदीरंति अचलियं कम्मं उदीरंति । एवं वेदंति उयट्टंति । संकामंति । निहत्तंति । णिकायंति । सव्वेसु अचलियं णो चलियं णेरइयाणं भंते जीवाओ किं चलियं कम्मं णिज्जरेंति अचलियं कम्मं णिज्जरेंति ? गोयमा ! चलियं कम्मं णिज्जरेंति, णो अचलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ गाहा ॥ बंधोदयवेदोवट्ट संकमण णिहत्त णिकाएसु । अचलियं कम्मंतुभवे, चलियं जीवाउ णिज्जरए ॥ १४ ॥ असुरकुमारणं भंते केवइयं कालं

भावार्थ की उदीरणा करे या अचलित कर्म की उदीरणा करे ? अहो गौतम ! चलित कर्म की उदीरणा करे नहीं परंतु अचलित कर्म की उदीरणा करे. ऐसे ही ३ वेदना, ४ क्षीण करना ५ संक्रमाना ६ धारना ७ निकाचना इन सब में चलित कर्म लेना नहीं परंतु अचलित कर्म लेना ८ अहो भगवन् नारकी जीव-प्रदेश से चलित कर्म की निर्जरा करते हैं या अचलित कर्म की निर्जरा करते हैं ? अहो गौतम ! नारकी

शब्दार्थ पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं ग० ग्रहण समय पु० आगे पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं गो० गौतम ! ती० अतीत काल में ग० ग्रहे हुवे पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं णो० नहीं प० वर्तमान में घि० लेते हुवे पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं णो० नहीं ग्रहण समय पु० आगे पो० पुद्गल उ० उदीरते हैं ए० ऐसे वे० वेदते हैं णि० निर्जरते हैं ॥ १३ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् जी० जीव किं० क्या च० चलित क० कर्म बं० बांधे अ० अचलित क० कर्म बं० बांधे गो० गौतम णो० नहीं च० चलित क० कर्म बं० बांधे अ० अचलित क० कर्म बं० बांधे उ० उदीरे वे० वेदे उ० अपवर्ते सं० संक्रमे नि० निवर्ते नि०

सूत्र पोग्गले उदीरंति णो पडुप्पण्ण काल समय घिप्पमाणे पोग्गले उदीरंति, णो गहण समय पुरक्खडे पोग्गले उदीरंति । एवं वेदंति । णिज्जरंति ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते जीवाओ किंचलियं कम्मंबंधंति, अचलियं कम्मंबंधंति ? गोयमा णोचलियं कम्मंबंधंति अचलियं कम्मं बंधंति णेरइयाणं भंते जीवाओ किंचलियं कम्मं

भावार्थ अतीत काल में ग्रहण किये पुद्गल उदीरते हैं परंतु वर्तमान में ग्रहण करते अथवा ग्रहण समय आगे के पुद्गल उदीरते नहीं हैं ऐसेही वेदन निर्जरा का जानना. ॥ १३ ॥ १ अहो भगवन् ! नारकी जीव प्रदेश में क्या चलित कर्म का बंधकरे या अचलित कर्म का बंधकरे ? अहो गौतम ! तेजस कर्म के योगसे चलित कर्म का बंधकरे नहीं परंतु अचलित कर्म का बंधकरे अहो भगवन् नारकी जीव प्रदेश से चलित कर्म

दार्थ संग्रहते स० सर्व में अ० अचलित नो० नहीं च० चलित ने० नारकी जी० जीव किं क्या च० चलित क० कर्म णि० णिर्जरे अ०अचलित गो०गौतम च० चलित क०कर्म णि०णिर्जरे णो० नहीं अ० अचलित क० कर्म णि० णिर्जरे बं० बंध उ०उदय उ०अपवर्त सं० संक्रमन नि० निधत्त नि०निकाच में अ० अचलित क० कर्म भ० होवे च० चलित णिं० निर्जरा में ॥ १४ ॥ अ० असुर कुमार की भं० भगवन् के० कितना का०

सूत्र उदीरंति, अचलियं कम्मं उदीरंति ? गोयमा णो चलियं कम्मं उदीरंति अचलियं कम्मं उदीरंति । एवं वेदंति उयट्टंति । संकामंति । निहत्तंति । णिकायंति । सव्वेसु अचलियं णो चलियं णेरइयाणं भंते जीवाओ किं चलियं कम्मं णिजरेंति अचलियं कम्मं णिज्जरेंति ? गोयमा ! चलियं कम्मं णिज्जरेंति, णो अचलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ गाहा ॥ बंधोदयवेदोवट्ट संकमण णिहत्त णिकाएसु । अचलियं कम्मंतुभवे, चलियं जीवाउ णिज्जरए ॥ १४ ॥ असुरकुमारणं भंते केवइयं कालं

भावार्थ की उदीरणा करे या अचलित कर्म की उदीरणा करे ? अहो गौतम ! चलित कर्म की उदीरणा करे नहीं परंतु अचलित कर्म की उदीरणा करे. ऐसे ही ३ वेदना, ४ क्षीण करना ५ संक्रमाना ६ धारना ७ निकाचना इन सब में चलित कर्म लेना नहीं परंतु अचलित कर्म लेना ८ अहो भगवन् नारकी जीव-प्रदेश से चलित कर्म की निर्जरा करते हैं या अचलित कर्म की निर्जरा करते हैं ? अहो गौतम ! नारकी

शब्दार्थ काल की ठि० स्थिति गो० गौतम ज० जघन्य द० दश वर्ष स० सहस्र उ० उत्कृष्ट सा० अधिक सा० सागरोपम ॥ १५ ॥ असुर कुमार के० कितनाकाल में आ० थोडा श्वासले पा० बहुत श्वास से ऊ० ऊंचा श्वासले नी० नीचाश्वासले गो० गौतम ज० जघन्य स० सात थो० स्तोक उ० उत्कृष्ट सा० अधिक प० पक्ष

सूत्र ठिई प० गोयमा जहण्णेणं दस वास सहस्साइं ठिई प० उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं ॥ १५ ॥ असुरकुमाराणं भंते केवइयं कालं आणमंतिवा, पाणमंति वा ऊससंतिवा, नीससंतिवा ॥ पुच्छा ॥ गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं साइरेगस्स पक्खस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, नीससंतिवा, ॥ १६ ॥ असुर-

भावार्थ चलित कर्म की निर्जरा करे अचलित कर्म की निर्जरा करे नहीं ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! असुरकुमार की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक सागरोपम से कुच्छ अधिक कही [उत्तर दिशाके बलेन्द्र आश्रित जानना] ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमारके देव कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! असुर कुमार के देव जघन्य सात स्तोक में उत्कृष्ट एक पक्ष से कुच्छ अधिक में श्वासोश्वास लेवे ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! वे आहार के अर्थी हैं. अहो भगवन् ! कितने समय में उन को आ-

१ असुरनिकायमें उत्पन्न होनेसे व कुमारकी तरह क्रीडा करनेसे असुरकुमार कहाये गये हैं.

दार्थ ॥ १६ ॥ अ० असुरकुमार भं० भगवन् आ० आहार के अर्थी हं० हां आ० आहार के अर्थी अ० असुर कुमार को भं० भगवन् के० कितना काल में आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० असुर कुमार को दु० दोप्रकार का आ० आहार आ० आभोगनिवर्तित अ० अनाभोगनिवर्तित त० तहां जे० जो अ० अनाभोग निवर्तित से० वह अ० समय समय में अ० आंतरा रहित आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे त० तहां जे० जो आ० आभोग निवर्तित से वह ज० जघन्य च० चतुर्थभक्त

सूत्र कुमाराणं भंते आहारट्ठी ? हंता आहारट्ठी । असुर कुमाराणं भंते केवइय कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! असुर कुमाराणं दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा आभोगनिव्वत्तिएय, अणाभोग णिव्वत्तिएय । तत्थणं जे से अणाभोगणिव्वत्तिए से अणुसमयं अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ । तत्थणं जे से आभोगणिव्वत्तिए से जहण्णेणं चउत्थ भत्तस्स उक्कोसेणं

भावार्थ हार की इच्छा उत्पन्न होती है ? अहो गौतम ! असुर कुमार को दो प्रकार का आहार कहा. १ आभोग निवर्तित सो जानते हुवे आहार लेवे और २ अनाभोग निवर्तित सो अनजान से करे. उस में जो अनाभोग निवर्तित आहार है उस की इच्छा प्रतिसमय विरह रहित नारकी को उत्पन्न होवे और आभोग निवर्तित जो आहार है उस की इच्छा जघन्य चतुर्थ भक्त (एक दिन) में उत्पन्न होवे उत्कृष्ट एक हजार

शब्दार्थ उ० उत्कृष्ट सा० सातिरेक वा० सहस्र वर्ष में आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे ॥ १७ अ० असुर कुमार किं० क्या आ० आहार आ० ग्रहण करते हैं गो० गौतम द० द्रव्य से अ० अनंत प० प्रदेश द० द्रव्य खे० क्षेत्र का० काल भा० भाव से प० पन्नवणा में से० शेष जं० जैसे ने० नारकी को जा० यावत् ते० उनको पो० पुद्गल की० कैसितरह भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम सो० श्रोतेन्द्रियपने सु० सुरूपपने सु० अच्छावर्णपने इ० इष्टपने इ० इच्छापने अ० अच्छी वांच्छापने उ० प्रधानपने णो० नहीं अ०

सूत्र साइरेगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ. ॥ १७ ॥ असुरकुमाराणं भंते किं आहार माहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंतपएसियाइं दव्वाइं खेत्त काल भाव पण्णवणागमेणं सेसं जहा णेरइयाणं जाव तेणं तेसिं पोग्गला कीसत्ता भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! सोइंदियत्ताए, सुरूवत्ताए, सुवण्णत्ताए, इट्ठत्ताए, इच्छियत्ताए,

भावार्थ वर्ष से कुछ अधिक समय में उत्पन्न होवे ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार जाति के देवता क्या आहार करे ? अहो गौतम ! द्रव्य से अनंत प्रदेशी द्रव्य का आहार करे, क्षेत्र से, काल से, भाव से आहार करने की विधि जैसी पन्नवणा सूत्र में कही है वैसी यहां जानना और शेष सब अधिकार नारकी का कहा वैसे ही यहां कहना. और उनको पुद्गल कीस तरह परिणमते हैं ? उन को पुद्गल श्रोतेन्द्रियपने, सुरूप, मनोज्ञ वर्ण, इष्टपने, इच्छितपने-वल्लभ में सुखदायीपना से, वारंवार ऐसाही बना रहे ऐसी

र्थ

अधोपने सु० सुखपने णो० नहीं दु० दुःखपने भु० वारंवार प० परिणमते हैं ॥ १८ ॥ अ० असुर कुमार भं० भगवन् पु० पूर्वाहारी पो० पुद्गल प० परिणमें अ० असुरकुमार के अ० अभिलाप से ज० जैसे णे० नारकी जा० यावत् च० चलित क० कर्म णि० निर्जरते हैं ॥ १९ ॥ ना० नागकुमार की भं० भगवन् के० कितना काल की ठि० स्थिति गो० गौतम ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र उ० उत्कृष्ट दे० देशऊण,

सूत्र

अभिज्झियत्ताए, उड्ढत्ताए णो अहत्ताए सुहत्ताए णोदुहत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ १८ ॥ असुरकुमाराणं भंते ! पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया ? असुरकुमाराभिलावेणं जहा णेरइयाणं जाव चालियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ १९ ॥ णागकुमाराणं भंते केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ॥ २० ॥ नागकुमाराणं भंते केवइय काल

भावार्थ

इच्छापने, ऊर्ध्वपने, अधोपने नहीं, व सुखपने वारंवार परिणमते हैं परंतु दुःखपने नहीं परिणमते हैं ॥१८॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार को पूर्व के ग्रहण किये हुवे पुद्गल परिणमें ? वे चलित कर्म की निर्जरा करते हैं वहां तक असुरकुमारका सब अधिकार नारकीका अधिकार जैसे कहना ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! नागकुमार जाति के देवता की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! नाग कुमार जाति के देवता की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट देश ऊना दो पल्योपम की स्थिति कही ॥ २० ॥ अहो भगवन्!

शब्दार्थ

दो० दोपल्योपम की ॥ २० ॥ ना० नागकुमार भं० भगवन् के० कितना काल में आ० थोडाश्वास ले पा० बहुत श्वास ले ऊ० ऊंचा श्वास ले नीचा श्वास ले गो० गौतम ज० जघन्य स० सात थोभ उ० उत्कृष्ट मु० मुहूर्त पृथक् ॥ २१ ॥ ना० नागकुमार भं० भगवन् आ० आहारके अर्थी हं० हां आ० आहार के अर्थी णा० नागकुमार को भं० भगवन् के० कितना काल में आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे गो० गौतम ना० नागकुमार दु० दोप्रकार का आहार आ० आहारे आ० आभोग निवर्तित अ० अनाभोग

सूत्र

स्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, णीससंतिवा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं मुहुत्त पुहुत्तस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, नीससंतिवा. ॥ २१ ॥ नागकुमाराणं भंते आहारट्ठी ? हंता आहारट्ठी । णागकुमाराणं भंते केवइय कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! णागकुमाराणं दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा

भावार्थ

नागकुमार के देवता कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! नाग कुमार देवता जघन्य सात स्तोक उत्कृष्ट मुहूर्त से पृथक्[1]में श्वासोश्वास लेते हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! नागकुमार जाति के देवता क्या आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! नागकुमार जाति के देवता आहार के अर्थी हैं. अहो भगवन् ! उन को कितने काल में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! आहार दो प्रकार का है.

१ दो मुहूर्तसे नव मुहूर्ततक. इसको प्रत्येक मुहूर्तभी कहते हैं.

शब्दार्थ निवर्तित त० तहां जे० जो अनाभोग निवर्तित से०उनको अ०समय समयमें अ०आंतरा रहित आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे त० तहां जे० जो आ० आभोग निवर्तित से०उनको ज० जघन्य च० चतुर्थभक्त उ० उत्कृष्ट दिं० दिवस पृथक् आ० आहार की स०इच्छा उत्पन्न होवे से० शेप ज० जैसे अ०असुरकुमार जा० यावत् च० चलित क० कर्म णि० निर्जरते हैं ॥ २२॥ ए० ऐसे सु०सुवर्ण कुमार को भी जा० यावत् थ० स्तनित कुमार को ॥२३॥ पु० पृथ्वी काया की भं० भगवन् के० कितना काल की ठि० स्थिति गो०

सूत्र आभोगाणिव्वत्तिएय, अणाभोगनिव्वत्तिएय । तत्थणं जे से अणाभोग णिव्वत्तिए से अणुसमयं अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ, तत्थणं जे से आभोग णिव्वत्तिए से-जहण्णेणं चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेणं दिवस पुहुत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ, सेसं जहा असुरकुमारणं जाव चलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ २२ ॥ एवं सुवण्णकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणंति ॥२३॥ पुढविकाइयाणं भंते केवइयंकालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा !

भावार्थ १ आभोग निवर्तित, २ अनाभोग निवर्तित. उस में अनाभोग निवर्तित आहार की निरंतर समय २ में अ-विच्छिन्नपने इच्छा उत्पन्न होती रहती है और आभोग निवर्तित आहार की इच्छा जघन्य चतुर्थ भक्त उत्कृष्ट दिन प्रथक् अर्थात् दो दिन से नव दिन तक शेप चलित कर्म निर्जरे वहां तकका अधिकार असुर कुमार जैसे कहना ॥ २२ ॥ जैसे नागकुमार को कहा वैसे ही सुवर्णकुमार यावत् स्तनित कुमारका

शब्दार्थ दो० दोपल्योपम की ॥ २० ॥ ना० नागकुमार भं० भगवन् के० कितना काल में आ० थोडाश्वास ले पा० पहुत श्वास ले ऊ० ऊंचा श्वास ले नीचा श्वास ले गो० गौतम ज० जघन्य स० सात थोभ उ० उत्कृष्ट मु० मुहूर्त पृथक ॥ २१ ॥ ना० नागकुमार भं० भगवन् आ० आहारके अर्थी हं० हां आ० आहार के अर्थी णा० नागकुमार को भं० भगवन् के० कितना काल में आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे गो० गौतम ना० नागकुमार दु० दोप्रकार का आहार आ० आहारे आ० आभोग निवर्तित अ० अनाभोग

सूत्र रस आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, णीससंतिवा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं मुहुत्त पुहुत्तस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, नीससंतिवा. ॥ २१ ॥ नागकुमाराणं भंते आहारट्ठी ? हंता आहारट्ठी । णागकुमाराणं भंते केवइय कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! णागकुमाराणं दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा

भावार्थ नागकुमार के देवता कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! नाग कुमार देवता जघन्य सात स्तोक उत्कृष्ट मुहूर्त [1] पृथक्में श्वासोश्वास लेते हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! नागकुमार जाति के देवता क्या आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! नागकुमार जाति के देवता आहार के अर्थी हैं. अहो भगवन् ! उन को कितने काल में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! आहार दो प्रकार का है.

१ दो मुहूर्तसे नव मुहूर्ततक. इसको प्रत्येक मुहूर्तभी कहते हैं.

शब्दार्थ उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० समय समय में अ० अंतर रहित आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे पु० पृथ्वी काया भं० भगवन् किं० कौनसा आ० आहार आ० ग्रहण करे गो० गौतम द० द्रव्य से ज० जैसे णे० नारकी णि० निर्व्याघात छ० छदिशि में वा० व्याघात आश्री सि० क्वचित् ति० तीनदिशा में सि० क्वचित् च० चारदिशा में सि० क्वचित् पं० पांचदिशा में व० वर्ण से का० काला नी० नीला

सूत्र आहारट्ठे समुप्पज्जइ? गोयमा! अणुसमयं अविराहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ॥ पुढविकाइयाणं भंते किमाहार माहारेंति? गोयमा! दव्वओ जहा णेरइयाणं. णिव्वाघाएणं छदिसिं वाघायंपडुच्च सियतिदिसिं सियचउदिसिं, सियपंचदिसिं, वण्णओ काल नील लोहिय हालिद्द सुक्किलाणं, गंधओ सुब्भिगंध दुराभिगंधाइं, रसओ तित्ताइं

भावार्थ कायिक जीव क्या आहार करते हैं? द्रव्य से अनंत प्रदेशात्मक द्रव्य का आहार करे वगैरह सब अधिकार नारकी जैसे कहना. निर्व्याघात से छ दिशि का आहार लेवे पूर्वादिचार व ऊर्ध्व और अधो. व्याघात आश्रित अर्थात् लोकान्त के उपर या नीचे व पूर्व दक्षिण में अलोक होवे वैसे स्थान उत्पन्न होने वाले पृथ्वी कायिक जीव तीन दिशा का आहार लेवें. उपर नीचे अलोक होवे वैसे स्थान में उत्पन्न होनेवाले चार दिशाका आहार करें, और छ दिशामें से एक दिशा में ही मात्र अलोक होवे वैसेस्थान उत्पन्न होनेवाले पांच

१ लोकान्त निष्कुट को व्याघात कहते हैं उसको छोडकर अन्यत्र उत्पन्न होनेवाले.

शब्दार्थ गौतम ज० जघन्य अं० अन्तर्मुहुर्त उ० उत्कृष्ट वा० बावीसवर्ष स० सहस्र की. ॥ २४ ॥ पु० पृथ्वी काया भं० भगवन के० कितना काल आ० थोडा श्वास ले पा०बहुत श्वास ले ऊ०ऊंचा श्वासले नी० नीचा श्वास ले गो० गौतम वे० वेमात्रा ॥ २५ ॥ पु० पृथ्वी काया आ० आहारार्थी हं० हां गो० गौतम आ० आहार के अर्थी पु० पृथ्वी काया को के० कितना काल में आ० आहार की इच्छा स०

सूत्र जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ॥ २४ ॥ पुढविकाइयाणं भंते केवइयकालस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, नीससंतिवा ? गोयमा! वेमायाए आणमंतिवा पाणमंतिवा, ऊससंतिवा नीससंतिवा ॥ २५ ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! आहारट्ठी ? हंता गोयमा ! आहारट्ठी । पुढविकाइयाणं भंते केवइय कालस्स

भावार्थ जानना ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी काया की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट २२ हजार वर्ष की ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी कायाके जीव वे मात्रा से श्वासोश्वास लेवे अर्थात् उन को श्वासोश्वास लेने की मर्यादा नहीं है ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी कायिक जीवों क्या आहार के अर्थी हैं ? हां गौतम ! वे आहार के अर्थी हैं. अहो भगवन् ! उन को आहार की इच्छा कितने काल में उत्पन्न होती है ? अहो गौतम ! उन को प्रति समय विरह रहित आहार की इच्छा उत्पन्न होती है. अहो भगवन् ! पृथ्वी

दार्थ उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० समय समय में अ० अंतर रहित आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे पु० पृथ्वी काया भं० भगवन् किं० कौनसा आ० आहार आ० ग्रहण करे गो० गौतम द० द्रव्य से ज० जैसे णे० नारकी णि० निर्व्याघात छ० छदिशि में वा० व्याघात आश्री सि० क्वचित् ति० तीनदिशा में सि० क्वचित् च० चारदिशा में सि० क्वचित् पं० पांचदिशा में व० वर्ण से का० काला नी० नीला

सूत्र आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! अणुसमयं अविराहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ पुढविकाइयाणं भंते किमाहार माहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ जहा णेरइयाणं. णिव्वाघाएणं छदिसिं वाघायंपडुच्च सियातिदिसिं सियचउदिसिं, सियपंचदिसिं, वण्णओ काल नील लोहिय हालिद्द सुक्किलाणं, गंधओ सुब्भिगंध दुरभिगंधाइं, रसओ तित्ताइं

भावार्थ कायिक जीव क्या आहार करते हैं ? द्रव्य से अनंत प्रदेशात्मक द्रव्य का आहार करे वगैरह सब अधिकार नारकी जैसे कहना. निर्व्याघात से छ दिशि का आहार लेवे पूर्वादिचार व ऊर्ध्व और अधो. व्याघात आश्रित अर्थात् लोकान्त के उपर या नीचे व पूर्व दक्षिण में अलोक होवे वैसे स्थान उत्पन्न होने वाले पृथ्वी कायिक जीव तीन दिशा का आहार लेवें. उपर नीचे अलोक होवे वैसे स्थान में उत्पन्न होनेवाले चार दिशाका आहार करें, और छ दिशामें से एक दिशा में ही मात्र अलोक होवे वैसेस्थान उत्पन्न होनेवाले पांच

१ लोकान्त निष्कुट को व्याघात कहते हैं उसको छोडकर अन्यत्र उत्पन्न होनेवाले.

शब्दार्थ लो० राता हा० पीला सु० शुक्ल गं० गंधसे सु० सुरभिगंध दु० दुराभिगंध र० रस से ति० तिक्तादि फा० स्पर्श से क० कर्कश आदि से० शेष त० तैसे णा० जानना क० कीतना भाग आ० आहार करते हैं क० कीतना भाग फा० स्पर्शते हैं गो० गौतम अ० असंख्यात में भाग आ० आहार करते हैं अ० अनंत में भाग फा० स्पर्शते हैं जा० यावत् ते० उनको पो० पुद्गल की० कीस तरह भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमते हैं शेष ज० जैसे ने० नारकी जा०

सूत्र ५, फासओ कक्खडाइं ८, ॥ सेसं तहेव णाणत्तं कइभागं आहारेंति, कइभागं फासेंति ? गोयमा ! असंखेज्जइ भागं आहारेंति अणंतभाग फासेंति । जाव तेणं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो

भावार्थ दिशा का आहार करे. वर्ण से काला, नीला, रक्त, पीला व शुक्ल पुद्गलोंका आहार करें, गंध से सुरभिगंध व दुराभिगंध का आहार करें, रस से तिक्तादि पांचों रस का आहार करें और स्पर्श से कर्कशादि आठों स्पर्श का आहार करें. शेष जैसे नारकी का कहा वैसे ही कहना. परंतु इतना विशेष जानना कि कितना भाग का आहार करे व कितना भाग आस्वादे ? अहो गौतम ! असंख्यात भाग का आहार करे, व अनंत में भाग में आस्वादे. वे पुद्गल कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे पुद्गलों स्पर्शेन्द्रियपने परिणमे अथवा विषम मात्रा या विविध मात्रा से वारंवार परिणमे यावत् चलित कर्म निर्जरे वहां तक का शेष

शब्दार्थ यावत् णो॰ नहीं अ॰ अचलित क॰ कर्म णि॰ निर्जरते हैं॥२६॥ए॰ ऐसे जा॰ यावत् व॰ वनस्पति काया को ण॰ विशेष ठि॰ स्थिति व॰ कहना जा॰ जो ज॰ जिनका उ॰ ऊश्वास वे॰ वेमात्रा ॥ २७ ॥ बे॰ बेन्द्रिय की ठि॰ स्थिति भौ॰ कहना उ॰ ऊश्वास वे॰ वेमात्रा ॥ २८ ॥ बे॰ वे द्वीन्द्रिय को आ॰ आहारकी पु॰ पृच्छा अ॰ अनाभोग निर्वर्तित त॰ तैसे त॰ तहां जे॰ जो आ॰ आभोगनिर्वर्तित अ॰

सूत्र परिणमंति, सेसं जहा णेरइयाणं जाव णो अचलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ २६ ॥ एवं जाव वणस्सइ काइयाणं, णवरंठिती वण्णेतव्वा जा जस्स उस्सासो वेमायाए॥ २७ ॥ बेइंदियाणं ठिती भाणियव्वा, ऊसासो वेमायाए. ॥ २८ ॥ बेइंदियाणं आहारे पुच्छा,

भावार्थ सब अधिकार नारकी जैसे कहना ॥ २६ ॥ जैसे पृथ्वी कायिक जीवों का आधिकार कहा वैसे ही अप्कायिक, तेउकायिक. वायुकायिक व वनस्पति कायिक जीवोंका जानना. इस में मात्र स्थिति की भिन्नता बतलाइ है सो कहते हैं-सब की जघन्य अंत मुहूर्त की उत्कृष्ट अप्कायिक जीवों की सात हजार वर्ष की, तेउकायिक जीवों की तीन अहो रात्रि, वायु कायिक जीवों की तीन हजार वर्ष की और वनस्पति कायिक जीवों की दश हजार वर्ष की और श्वासोश्वास मर्यादा रहित ॥ २७ ॥ द्वीन्द्रिय की स्थिति बारह वर्ष की कही और श्वासोश्वास मर्यादा रहित जानना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! द्वीन्द्रिय कैसे आहार करते हैं ? अहो गौतम ! आहार के दो भेद आभोगनिर्वर्तित व अनाभोगनिर्वर्तित. उस में आभोग

शब्दार्थ लो० राता हा० पीला सु० शुक्ल गं० गंधसे सु० सुरभिगंध दु० दुरभिगंध र० रस से ति० तिक्तादि फा० स्पर्श मे क० कर्कश आदि से० शेप त० तैसे णा० जानना क० कीतना भाग आ० आहार करते हैं क० कीतना भाग फा० स्पर्शते हैं गो० गौतम अ० असंख्यात में भाग आ० आहार करते हैं अ० अनंत में भाग फा० स्पर्शते हैं जा० यावत् ते० उनको पो० पुद्गल की० कीस तरह भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमते हैं शेप ज० जैसे णे० नारकी जा०

सूत्र ५, फासओ कक्खडाइं ८, ॥ सेसं तहेव णाणत्तं कइभागं आहारेंति, कइभागं फासेंति ? गोयमा ! असंखेज्जइ भागं आहारेंति अणंतभाग फासेंति । जाव तेणं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो

भावार्थ दिशा का आहार करे. वर्ण से काला, नीला, रक्त, पीला व शुक्ल पुद्गलोंका आहार करें, गंध से सुरभिगंध व दुरभिगंध का आहार करें, रस से तिक्तादि पांचों रस का आहार करें और स्पर्श से कर्कशादि आठों स्पर्श का आहार करें. शेप जैसे नारकी का कहा वैसे ही कहना. परंतु इतना विशेप जानना कि कितना भाग का आहार करे व कितना भाग आस्वादे ? अहो गौतम ! असंख्यात भाग का आहार करे, व अनंत में भाग में आस्वादे. वे पुद्गल कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे पुद्गलों स्पर्शेन्द्रियपने परिणमे अथवा विषम मात्रा या विविध मात्रा से वारंवार परिणमे यावत् चलित कर्म निर्जरे वहां तक का शेप

पदार्थ — ज० जैसे लो० रोम आहार प० कवल आहार जे० जो पो० पुद्गल लो० रोम आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे स० सर्व अ० निर्विशेष आ० आहारकरे जे० जो० पो०. पुद्गल प० कवल आहारपने गि० ग्रहण करतेहैं पो० पुद्गल को अ०१असंख्यात भाग को अ० आहारकरे अ० अनेक भाग स० सहस्र अ० नहीं भोगवे अ० नहीं स्पर्शे वि० विध्वंसपाते हैं ए० इन पो० पुद्गल को अ० नहीं भोगवा न० नहीं स्पर्शा क० कौन से अ० थोडे ब० बहुत तु० सरिखे वि० विशेषाधिक गो० गौतम स०सर्व से थोडा पो०पुद्गल अ० नहीं

सूत्र — पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति तेसिणं पोग्गलाणं असंखेज्जइ भागं आहारेंति. अणेगाइंचणं भागसहस्साइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जइ॥ एएसिणं भंते पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाणं य, कयरे २ हिंतो अप्पावा, बहुलावा, तुल्लावा, विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला

भावार्थ — ग्रहण करते हैं उन सब पुद्गलों का आहार करते हैं. और जो पुद्गल प्रक्षेप आहारपने ग्रहण किये जाते हैं, उन का असंख्यात में भागमें आहार करते हैं, और अनेक सहस्र भाग नहीं आस्वादते व नहीं स्पर्शते उन का विध्वंस होता है. अहो भगवन् ! नहीं आस्वादन किये हुवे व नहीं स्पर्शे हुवे पुद्गलों में से कोनसा अल्प व बहुत है ? अथवा तुल्य है या विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से

शब्दार्थ

असंख्यात समय अ० अन्तर्मुहूर्त वे० वेमात्रा आ० आहार की इच्छा स० उत्पन्न होवे से० शेष त० तैसे जा० यावत् अ० अनंत भाग आ० आस्वादे ॥ २९ ॥ बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् जे० जो पो० पुद्गल आ० आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे किं० क्या स० सर्व आ० आहार करते हैं णो० नहीं स० सर्व आ० आहार करते हैं गो० गौतम बे० बेइन्द्रिय को दु० दोप्रकार का आ० आहार प० कहा तं० वह

सूत्र

अणाभोगणिव्वत्तिए तहेव ॥ तत्थणं जेसे आभोगाणिव्वत्तिए सेणं असंखेज्ज समइए, अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्पजइ. सेसं तहेव जाव अणंतभागं आसायंति ॥ २९ ॥ बेइंदियाणं भंते जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति, णो सव्वे आहारेंति ? गोयमा ! बेइंदियाणं दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा लोमाहारेय पक्खेवाहारेय । जे पोग्गले लोमाहारत्ताए गिण्हंति ते सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति, जे

भावार्थ

निर्वर्तित आहार असंख्यात समयिक अंतर्मुहूर्त में मर्यादा रहित आहार करे. अन्य यावत् अनंत भाग का आस्वादन करे वहांतक का सब अधिकार पहिले जैसे कहना ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय जितने पुद्गलों को आहार के लिये ग्रहण करते हैं उन सब का क्या वे आहार करते हैं या सब का आहार नहीं करते हैं ? अहो गौतम ! द्वीइन्द्रिय के आहार के दो भेद कहे हैं. १ रोम आहार सो ओघ से वर्णादि समय में जो पुद्गलों प्रवेश करे और २ प्रक्षेप आहार सो कवल रूप. इस में जो पुद्गल रोम आहारपने

शब्दार्थ — ज० जैसे लो० रोम आहार प० कवल आहार जे० जो पो० पुद्गल लो० रोम आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे स० सर्व अ० निर्विशेष आ० आहारकरे जे० जो० पो०. पुद्गल प० कवल आहारपने गि० ग्रहण करतेहैं पो० पुद्गल को अ०१असंख्यात भाग को अ० आहारकरे अ० अनेक भाग स० सहस्र अ० नहीं भोगवे अ० नहीं स्पर्शे वि० विध्वसंपाते हैं ए० इन पो० पुद्गल को अ० नहीं भोगवा न० नही स्पर्शा क० कौन से अ० थोडे व० बहुत तु० सारिखे वि० विशेषाधिक गो० गौतम स०सर्व से थोडा पो०पुद्गल अ० नहीं

सूत्र — पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति तेसिणं पोग्गलाणं असंखेज्जइ भागं आहारेंति. अणेगाइंचणं भागसहस्साइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जइ॥ एएसिणं भंते पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाण य, कयरे २ हिंतो अप्पावा, बहुलावा, तुल्लावा, विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला

भावार्थ — ग्रहण करते हैं उन सब पुद्गलों का आहार करते हैं. और जो पुद्गल प्रक्षेप आहारपने ग्रहण किये जाते हैं, उन का असंख्यात में भागमें आहार करते हैं, और अनेक सहस्र भाग नहीं आस्वादते व नहीं स्पर्शते उन का विध्वंस होता है. अहो भगवन् ! नहीं आस्वादन किये हुवे व नहीं स्पर्शे हुवे पुद्गलों में से कोनसा अल्प व बहुत है ? अथवा तुल्य है या विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से

शब्दार्थ भोगवा अ० नहीं स्पर्शा अ० अनंतगुणा ॥ ३० ॥ बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् पो० पुद्गल आ० आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे पो० पुद्गल की० कीसतरह भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमते हैं बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् पु० पूर्वाहारी पो० पुद्गल प० परिणमा त० तैसे जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे ॥ ३१ ॥ ते० तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय णा० विविध प्रकार की ठि० स्थिति जा० यावत् अ० अनेक भा० भाग सहस्र अ०

सूत्र अणासाइज्जमाणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा ॥ ३० ॥ बेइंदियाणं भंते पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति तेणं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! जिब्भिंदिय फासिंदिय बेमायाए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ बेइंदियाणं भंते पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया तहेव जाव चलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ ३१ ॥ तेइंदिय चउरिंदि-

भावार्थ थोडे आस्वाद नहीं कराये हुवे पुद्गल उस से अस्पर्शमान पुद्गल अनंत गुने कहे हैं ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! जो पुद्गल द्वीइन्द्रिय आहारपने ग्रहण करते हैं वे कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे आहार के पुद्गल बेइन्द्रिय को जिव्हेन्द्रियपने स्पर्शेन्द्रियपने व वमात्रासे परिणमते हैं. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय को पाहिले के आहारे हुवे पुद्गल परिणमते हैं यावत् चलित कर्म की निर्जरा करते हैं वगैरह सब अधिकार पाहिले जैसे कहना ॥ ३१ ॥ तेइन्द्रिय की स्थिति ४९ दिन की व चतुरेन्द्रिय की स्थिति ६ मास की अन्य सब अ-

शब्दार्थ नहीं सुंघते अ० नहीं स्वादलेते अ० नहीं स्पर्शते वि० विध्वंसपाते हैं पो० पुद्गल को अ० नहीं सुंघहुवे अ० नहीं स्वादलिये अ० नहीं स्पर्शहुवे गो० गौतम स० सर्व से थोडा पो० पुद्गल अ० नहीं सुंघेहुवे अ० नहीं स्वादलिये अ० अनंतगुने अ० नहीं स्पर्शहुवे अ० अनंतगुने ते० तेइन्द्रिय को घा० घ्राणेन्द्रिय जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भुं० वारंवार परिणमें च० चतुरिन्द्रिय को च० चक्षु-

सूत्र याणं णाणत्तं ठिईए जाव अणेगाइं च णं भागसहस्साइं अणाघाइज्जमाणाइं, अणासाइज्जमाणाइं, अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जंति. एएसिणं भंते पोग्गलाणं अणाघाइज्जमाणाणं, अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्ज माणाणं य पुच्छा ॥ गोयमा ? सव्वत्थोवा पोग्गला अणाघाइज्जमाणा, अणासाइज्जमाणा अणंतगुणा अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा ॥ तेइंदियाणं घाणेंदिय जिब्भिदिय फासिंदिय वेमायत्ताए भुज्जो भुज्जो

भावार्थ धिकार अनेक भाग सहस्र घ्राणेन्द्रिय से नहीं सुंघते, रसनेन्द्रिय से नहीं आस्वादते व स्पर्शेन्द्रिय से नहीं स्पर्शते नष्ट होते हैं वहां तक पहिले जैसे कहना. उन में कोनसा अल्प व बहुत है ? तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे घ्राणेन्द्रियपने नहीं सुंघे हुवे पुद्गलों, इस से रसनेन्द्रियपने नहीं आस्वादे हुवे पुद्गलों अनंत गुने, इस से स्पर्शेन्द्रिपने नहीं स्पर्शे हुवे पुद्गलों अनंत गुने, तेइन्द्रिय को आहार के पुद्गल घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय स्पर्शेन्द्रियपने, व विविध प्रकार से परिणमते हैं. वैसे ही चतुरेन्द्रिय को

शब्दार्थ भोगवा अ० नहीं स्पर्शा अ० अनंतगुणा ॥ ३० ॥ बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् पो० पुद्गल आ० आहारपने गि० ग्रहण करते हैं ते० वे पो० पुद्गल की० किसतरह भु० वारंवार प० परिणमते हैं गो० गौतम जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमते हैं बे० बेइन्द्रिय भं० भगवन् पु० पूर्वाहारी पो० पुद्गल प० परिणमा त० तैसे जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे ॥ ३१ ॥ ते० तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय णा० विविध प्रकार की ठि० स्थिति जा० यावत् अ० अनेक भा० भाग सहस्र अ०

सूत्र अणासाइज्जमाणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा ॥ ३० ॥ बेइंदियाणं भंते पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति तेणं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! जिब्भिंदिय फासिंदिय बेमायाए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ बेइंदियाणं भंते पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया तहेव जाव चालियं कम्मं णिज्जरेंति ॥ ३१ ॥ तेइंदिय चउरिंदि-

भावार्थ थोडे आस्वाद नहीं कराये हुवे पुद्गल उस से अस्पर्शमान पुद्गल अनंत गुने कहे हैं ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! जो पुद्गल द्वीइन्द्रिय आहारपने ग्रहण करते हैं वे कैसे परिणमते हैं ? अहो गौतम ! वे आहार के पुद्गल बेइन्द्रिय को जिव्हेन्द्रियपने स्पर्शेन्द्रियपने व वमात्रासे परिणमते हैं. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय को पहिले के आहारे हुवे पुद्गल परिणमते हैं यावत् चलित कर्म की निर्जरा करते हैं वगैरह सब अधिकार पहिले जैसे कहना ॥ ३१ ॥ तेइन्द्रिय की स्थिति ४९ दिन की न चतुरेन्द्रिय की स्थिति ६ मास की अन्य सब अ-

शब्दार्थ ए० ऐसे म० मनुष्य को ण० विशेष आ० आभोग निवर्तितपने ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट अ० अठम भक्त सो० श्रोतेन्द्रिय च० चक्षुइन्द्रिय घा० घ्राणेन्द्रिय जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने वे० वेमात्रा भु० वारंवार प० परिणमें से० शेष त० तैसे जा० यावत् च० चालित कर्म णि० निर्जरे॥३४॥ वा० वाणव्यंतर को ठि० स्थिति णा० नानाप्रकारकी. अ० निरवशेष ज० जैसे णा० नाग कुमार को॥३५॥ ए० ऐसा जो० ज्योतिषी को ण० विशेष उ० उश्वास ज० जघन्य मु० मुहूर्त पृथक् उ० उत्कृष्ट मु० मुहूर्त

सूत्र मुहुत्तं, उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स सोइंदिय चक्खुंदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदिय वेमायाए भुज्जो भुज्जो परिणमंति सेसं तहेव जाव चलियं कम्मंणिज्जरेंति ॥ ३४ ॥ वाणमंतराणं ठिईए णाणत्तं । अवसेसं जहा णाग कुमाराणं ॥३५॥ एवं जोइसियाणं

भावार्थ मनुष्य को जानना. परंतु आभोग निर्वतित आहार की इच्छा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अठम भक्त सो तीन दिन में होवे देव कुरु उत्तर कुरु क्षेत्र के मनुष्य आश्रित. दोनों को आहार के पुद्गल श्रोतेन्द्रिय चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रियपने व वे मात्रा से परिणमते हैं. अन्य चलित कर्म की निर्जरा करे वहांतक सब पहिले जैसे कहना ॥ ३४ ॥ वाणव्यंतर देवता की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की अन्य सब नाग कुमार जैसे कहना. ॥ ३५ ॥ ज्योतिषी देवता की स्थिति जघन्य एक पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट एक पल्योपम व एकलाख वर्ष अधिक जानना. और

शब्दार्थ

जा० यावत् च० चतुरेन्द्रिय अ० अवशेष स० सब व० बढते हैं हा० हीन होते हैं. त० तैसे अ० अवस्थित का ना० भिन्नता इ० यह स० संमूर्च्छिम ति० तिर्यंच पंचेन्द्रिय दो० दो अ० अंतर्मुहूर्त ग० गर्भ व० उत्पन्न के च० चौवीस मु० मुहूर्त सं० संमूर्च्छिम म० मनुष्य का अ० अडतालीस मु० मुहूर्त ग० गर्भज म० मनुष्य का च० चौवीस मु० मुहूर्त वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी सो० सौधर्म ई० ईशान में अ० अडतालीस मु० मुहूर्त स० सनत्कुमार में अ० अठारह रा० रात्रिदिन च० चालीस मु० मुहूर्त मा० माहे-

सूत्र

जहण्णं एक्कं समयं, उक्कोसं दोअंतोमुहुत्ता एवं जाव चउरिंदिया, अवसेसा सव्वे, वड्ढंति हायंति तहचेव अवट्ठियाणं नाणत्तं इमं तंजहा संमुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं दो अंतोमुहुत्ता, गब्भवक्कंतियाणं चउव्वीसं मुहुत्ता, संमुच्छिम मणुस्साणं अट्ठचत्तालीसं मुहुत्ता, गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं चउव्वीसं मुहुत्ता, वाणमंतरजोइस सोहम्मीसाणेसु अट्ठचत्तालीसं मुहुत्ता, सणंकुमारे अट्ठारस राइंदियाइं चत्तालीसय मु-

दो अंतर्मुहूर्त. संमूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय का चौवीस मुहूर्त, संमूर्छिम मनुष्य का ४८ मुहूर्त, गर्भज मनुष्य का चौवीस मुहूर्त, वाणव्यंतर ज्योतिष सौधर्म व ईशान देवलोक में ४८ मुहूर्त, सनत्कुमार में अठार रात्रि दिन, व चालिस मुहूर्त, माहेन्द्र में २४ रात्रि दिन १० मुहूर्त, ब्रह्मदेवलोक में ४५ दिन, लंतक में ९० दिन महाशुक्र में १६० दिन सहस्रार में २०० आणत प्राणत में संख्यात रात्रिदिन आरण अच्युत में संख्यात वर्ष

न्द्र में चो० चौवीस रा० रात्रिदिन वी०वीस मु० मुहूर्त बं० ब्रह्मदेवलोक में च०चालीस लं०लांतक में न० नेऊ म० महाशुक्र में स० साठ रा० रात्रिदिन स० सो स० सहस्रार में दो० दोसो रात्रिदिन आ० आणत पा० प्राणत में सं० संख्यात मास आ० आरण अ० अच्युत में सं० संख्यात वा० वर्ष ए० ऐसे गे० ग्रैवेयक विमान के दे० देवों का वि० विजय वे० वैजयंत ज० जयंत अ० अपराजित का अ० असंख्यात वा० वर्ष स० सहस स० सर्वार्थ सिद्ध में प० पल्योपम का सं० संख्यात भाग शेष पूर्ववत् ॥ १४ ॥

सूत्र

हुत्ता, माहिंदे चउव्वीसं राइंदियाइं वीसय मुहुत्ता, बंभलोए पंच चत्तालीस राइंदियाइं, लंतए नउयराइंदियाइं, महासुक्के सट्ठिं राइंदियसयं, सहस्सारे दो राइंदियसयाइं, आणयपाणयाणं संखेज्जामासा, आरणच्चुयाइं संखेज्जाइं वासाइं एवं गेवेज्ज देवाणं, विजयवेजयंतजयंतापराजियाणं असंखेज्जाइं वास सहस्साइं, सव्वट्ठासिद्धेय पलिओवमस्स संखेज्जभागो एवं भाणियव्वं, वड्ढंति हायंति, जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं अवाट्ठियाणं जं भाणियं ॥ १४ ॥ सिद्धाणं भंते ! केव-

भावार्थ

नव ग्रैवेयक में संख्यात वर्ष, विजय वैजयंत जयंत व अपराजित में असंख्यात वर्ष सहस और सर्वार्थसिद्ध में पल्योपम का संख्यात वे भाग तक अवस्थित काल रहता है. उन सब का वृद्धि होना व हीन होनेका काल जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका के असंख्यात वे भाग का है ॥ १४॥ सिद्ध भगवंत जघन्य एक समय उत्कृष्ट आठ समय तक वढते

शब्दार्थ पूर्ववत् ॥ १५ ॥ जी० जीव भं० भगवन् किं० क्या सो० वृद्धिहा सा०ने बोल हीन होने, काले सो० वृद्धि व हीन होने वाले नि० वृद्धि व हीन नहीं होने वाले ए० एकेन्द्रिय त० तीसरे प० पद में से०

सूत्र इयं कालं वड्ढंति ? गोयमा ! जहण्णं एक्कं समयं उक्कोसेणं अट्ठसमया, केवइयं कालं अवट्ठिया ? गोयमा ! जहण्णं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा ॥ १५ ॥ जीवाणं भंते ! किं सोवचया, सावचया, सोवचयसावचया, निरुवचयनिरवचया ? गोयमा ! जीवा नो सोवचया, नो सावचया, नो सोवचयसावचया, निरुवचय निरवचया ॥ एगिंदिया तइय पदे, सेसा जीवा चउहिं पएहिं भाणियव्वा ॥ १६ ॥ सिद्धाणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! सिद्धा सोवचया, नोसावचया, नो सोवचयसावचया, निरुवचय

है. उनका अवस्थितकाल जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ मासका है॥१५॥अहो भगवन्! क्या जीव सोवचय-नविन उत्पन्न होकर बढने वाले सावचय-कालकर हीन होनेवाले, सोवचयसावचय व कुछ बढनेवाले कुच्छ हीन होनेवाले और क्या निरुवचय निरवचय हीन व बढनेवाले नहीं हैं? अहो गौतम! समुच्चय जीव निरुवचयनिरवचयवाले हैं अर्थात् इस में कोई नविन जीव उत्पन्न नहीं होता है वैसे ही कोई जीव उस में से विनाश नहीं पाता है. इस में एकेन्द्रिय में सोवचय सावचय का भांगा पाता है और शेष सब दंडक में चारोंही भांगे पाते हैं. ॥ १६ ॥ सिद्ध भगवंत में नविन उत्पन्न होकर वृद्धि होवे वैसा सोवचय और बढे नहीं व हीन नहीं होवे वैसा निरुवच

सूत्र

निरवचया ॥ १७ ॥ जीवाणं भंते ! केवइयं कालं निरुवचयनिरवचया ? गोयमा ! सव्वद्धं ॥ नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं सोवचया ? गोयमा ! जहण्णं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइ भागं, । केवइयं कालं सावचया ? एवं चेव ॥ केवइयं कालं सोवचयसावचया ? एवं चेव ॥ केवइयं कालं निरुवचय निरवचया ? गोयमा ! जहण्णं एक्कं समयं उक्कोसं बारस मुहुत्ता, एगिंदिया सव्वे सोवचया, सावचया; सव्वद्धं ॥ सेसा सव्वे सोवचयावि, सोवचयसावचयावि

भावार्थ

निरवचय ऐसे दो भांगे पाते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! जीव कितने कालतक निरुवचय निरवचय रहते हैं ? अहो गौतम ! जीव सब काल निरुवचय निरवचय रहते है. अहो भगवन् ! नारकी कितने काल तक सोवचय रहते हैं ? अहो गौतम ! नारकी जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यात वा भाग तक सोवचय रहते हैं. अहो भगवन् ! नारकी कितने काल तक सावचय, व सोवचयसावचय रहते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यात वा भाग तक रहते हैं. नारकी निरुवचय निरवचय जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त तक रहते हैं. सब एकेन्द्रिय सदैव सोवचय सावचय रहते हैं. शेष सब पृथक् २ जीवों का सोवचय, सावचय, व सोवचय सावचय का काल जघन्य

शब्दार्थ शप जी० जीव च० चार प० पद से भा० कहना. ॥ १६ ॥ पूर्ववत् ॥ १७ ॥ पूर्ववत् ॥ १८ ॥ सि० सिद्ध भं० भगवन् के० कितना काल सो० बढनेवाले गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट अं० आठ स० समय के० कितनाकालतक नि० बराबर ज० जघन्य ए० एक समय ७० उत्कृष्ट छ० छमास से० वैसे भं० भगवन् ॥ ५ ॥ ८ ॥

* * *

सूत्र जहण्णं एक्कं समयं उक्कोसं आवलियाए असंखेज्जइ भागं अवट्ठिएहिं वक्कंतिय कालो भाणियव्वो ॥ १८ ॥ सिद्धाणं भंते ! केवइयं कालं सोवचया ? गोयमा ! जहण्णं एक्कं समयं उक्कोसं अट्ठसमया. केवइयं निरुवचयनिरवचया ? जहण्णं एक्कं समयं उक्कोसं छम्मासा सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचम सयस्स अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥५॥८॥

भावार्थ एक समय उत्कृष्ट आवलिका के असंख्यात वा भागतक जानना. निरुवचय निरवचय का पन्नवणासूत्र में विरहद्वार जैसे जानना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! सिद्ध कितने कालतक सोवचय रहते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट आठ समय. और उन का निरुवचय काल जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ मास का है. अहो भगवन् आपके वचन सत्य हैं. यह पांचवा शतक का आठवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ ८ ॥ × + ÷

सूत्र

निरवचया ॥ १७ ॥ जीवाणं भंते ! केवइयं कालं निरुवचयनिरवचया ? गोयमा ! सव्वद्धं ॥ नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं सोवचया ? गोयमा ! जहण्णं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइ भागं, । केवइयं कालं सावचया ? एवं चेव ॥ केवइयं कालं सोवचयसावचया ? एवं चेव ॥ केवइयं कालं निरुवचय निरवचया ? गोयमा ! जहण्णं एक्कं समयं उक्कोसं बारस मुहुत्ता, एगिंदिया सव्वे सोवचया, सावचया; सव्वद्धं ॥ सेसा सव्वे सोवचयावि, सोवचयसावचयावि

भावार्थ

निरवचय ऐसे दो भांगे पाते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! जीव कितने कालतक निरुपचय निरवचय रहते हैं ? अहो गौतम ! जीव सब काल निरुपचय निरवचय रहते हैं. अहो भगवन् ! नारकी कितने काल तक सोपचय रहते हैं ? अहो गौतम ! नारकी जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यात वा भाग तक सोपचय रहते हैं. अहो भगवन् ! नारकी कितने काल तक सावचय, व सोपचयसावचय रहते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यात वा भाग तक रहते हैं. नारकी निरुपचय निरवचय जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त तक रहते हैं. सब एकेन्द्रिय सदैव सोपचय सावचय रहते हैं. शेष सब पृथक् २ जीवों का सोपचय, सावचय, व सोपचय सावचय का काल जघन्य

शब्दार्थ

द० द्रव्य न० नगर रा० राजगृह त्ति० ऐसा प० कहाता है गो० गौतम पु० पृथ्वी न० नगर रा० राजगृह जा० यावत् स० सचित्त अ० अचित्त मी० मीश्र द० द्रव्य न० नगर रा० राजगृह से० अथ के० कैसे गो० गौतम पु० पृथ्वी जी० जीववाली अ० अजीववाली न० नगर रा० राजगृह प० कहाता है जा० यावत् स० सचित्त अ० अचित्त मी० मीश्र द्रव्य जी० जीव अ० अजीव वाले न० नगर रा० राजगृह प० कहाता है ते० इसलिये तं० वैसा ॥ १ ॥ से० अथ णू० शंकादर्शी भं० भगवन् दि० दिन

सूत्र

गिहंति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्तमीसयाइं दव्वाइं नगरं रायागिहंति पवुच्चइ । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पुढवी जीवाइय, अजीवाइय, नगरं रायगिहंति पवुच्चइ जाव सचित्ता चित्त मीसयाइं दव्वाइं जीवाइय अजीवाइय,नगरं रायगिहंति पवुच्चइ सेतेणट्ठेणं तंचेव ॥ १ ॥ सेणूणं भंते ! दिवा उज्जोए राइ अंधयारे ? हंता गोयमा !

भावार्थ

कहना ? अहो गौतम ! पृथ्वी राजगृही कहाती है यावत् सचित्त अचित्त व मीश्र द्रव्य राजगृही कहाते हैं. अहो भगवन् ! कैसे पृथ्वी राजगृही कहाती है, यावत् सचित्त, अचित्त व मिश्र द्रव्य राजगृही कहाते हैं. अहो गौतम ! पृथ्वी, पानी आदि स्थावर पशु मनुष्यादि [redacted] जीव, गृह भवन शय्यनासनादि सब वस्तु के संयोग से ही जीव अजीव का जहां संग्रह होता है वह नगर कहाता है. और वैसा संयोग राजगृही नगरी में होने से उनको राजगृही कहा है ॥१॥ अहो भगवन् ! क्या दिन को उद्योत व रात्रि को अंधकार

शब्दार्थ तेः उस का० काल ते० उस स० समय में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले किं० क्या इ० यह भं० भगवन् न० नगर रा० राजगृह ति० ऐसा प० कहाता है किं० क्या पु० पृथ्वी न० नगर रा० राजगृह प० कहाता है आ० अप् जा० यावत् व० वनस्पति ज० जैसे ए० इस का अ० अनुदेशसे पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच की व० वक्तव्यता त० तैसे भा० कहना जा० यावत् स० सचित्त अ० अचित्त मी० मीश्र

सूत्र तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी-किमिदं भंते ! णयरं रायगिहंति पवुच्चइ किं पुढवी णयरं रायगिहंति पवुच्चइ, आऊ नगरं रायगिहंति पवुच्चइ, जाव वणस्सइ जहा एयणुदेसए पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं वत्तव्वया तहा भाणियव्वा जाव सचित्ताचित्तमीसयाइं, दव्वाइं नगरं रायगिहंति पवुच्चइ? गोयमा ! पुढवीवि नगरं राय-

भावार्थ आठवे उद्देशे में जीवों की उत्पत्ति व वृद्धि के प्रश्नोत्तर कहे. वे ग्रामादिक में होते हैं इसलिये, अथवा भगवंत श्री महावीर स्वामी राजगृही नगरी में वारंवार पधारे इसलिये राजगृही नगरीका प्रश्न पूछते हैं. उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को भगवान् गौतम स्वामी पूछनेलगे कि अहो भगवन् ! इस नगरी को राजगृही क्यों कहना ? क्या पृथ्वी, अप, तेउ, वाउ, वनस्पति, यावत् सचित्त अचित्त मीश्र द्रव्य वगैरह जो सातवे उद्देशे में कहे हैं उन सब पदार्थ को क्या राजगृही

शब्दार्थ तें० इसलिये ॥ ३ ॥ अ० असुरकुमार भं० भगवन् किं० क्या उ० उद्योत करने वाले अं० अंधकार वाले गो० गौतम अ० असुरकुमार उ० उद्योत वाले नो० नहीं अं० अंधकार वाले के० कैसे गो० गौतम अ० असुर कुमार को सु० शुभ पो० पुद्गल सु० शुभ पुद्गल परिणम जा० यावत् थ० स्थनित कुमार को ॥ ४ ॥ पु० पृथ्वी काया को जा० यावत् ते० तेइन्द्रिय ज० जैसे ने० नारकी च० चतुरेन्द्रिय भं० भगवन्

सूत्र गोयमा ! नेरइयाणं असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे से तेणट्ठेणं ॥ ३ ॥ असुरकुमाराणं भंते ! किं उज्जोए अंधयारे ? गोयमा ! असुरकुमाराणं उज्जोए नो अंधयारे ॥ से केणट्ठेणं ? गोयमा ! असुरकुमाराणं सुभा पोग्गला सुभे पोग्गल परिणामे से तेणट्ठेणं जाव एवं वुच्चइ, जाव थणियाणं ॥ ४ ॥ पुढवीकाइया जाव तेइंदिया जहा नेरइया । चउरिंदियाणं भंते ! किं उज्जोए अंधयारे ? गोयमा ! उज्जोएवि

परिणम है; इस से अंधकार होता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार को क्या उद्योत होता है अथवा अंधकार होता है ? अहो गौतम ! असुरकुमार को उद्योत होता है परंतु अंधकार नहीं होता है. क्योंकि असुरकुमार को शुभ पुद्गलों होते हैं और वे शुभपनें परिणमते हैं. ऐसे ही नागकुमार यावत् स्थनित कुमारतक जानना ॥ ४ ॥ पृथ्वीकायादि पांच स्थावर बेइन्द्रिय व तेइन्द्रिय का नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् ! चतुरेन्द्रिय को क्या उद्योत अथवा अंधकार होता है ? अहो गौतम ! चतुरे-

शब्दार्थ — को उ० उद्योत रा० रात्रि को अं० अंधकार हं० हां गो० गौतम जा० यावत् अं० अंधकार से० वह के० कैसे गो० गौतम दि० दिन को सु० शुभ पो० पुद्गल सु० शुभ पुद्गल प० परिणम रा० रात्रि को अ० अशुभ पो० पुद्गल अ० अशुभ पो० पुद्गल प० परिणम ते० इसलिये ॥ २ ॥ ने० नारकी किं० क्या उ० उद्योत वाले अं० अंधकार वाले गो० गौतम ने० नारकी नो० नहीं उ० उद्योतवाले अं० अंधकार वाले के० कैसे गो० गौतम ने० नारकी में अ० अशुभ पो० पुद्गल अ० अशुभ पो० पुद्गल प० परिणम

सूत्र — जाव अंधयारे, से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दिवा सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे, रातिं असुभापोग्गला, असुभे पोग्गलपरिणामे से तेणट्ठेणं ॥ २ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं उज्जोए अंधयारे ? गोयमा ! नेरइयाणं नो उज्जोए अंधयारे॥ से केणट्ठेणं?

भावार्थ — होता है ? हां गौतम ! दिन को उद्योत व रात्रि को अंधकार होता है. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! दिन को सूर्य के किरण रूप शुभ पुद्गल परिणमते हैं जिस से उद्योत होता है और रात्रि को अशुभ पुद्गल परिणमते हैं जिस से अंधकार होता है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी को उद्योत या अंधकार है ? अहो गौतम ! नारकी को उद्योत नहीं है परंतु अंधकार है. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! नारकी में सूर्य के अभाव से अशुभ पुद्गलों हैं और अशुभ पुद्गल का

शब्दार्थ

इन्द्रिय घा० घ्राणेन्द्रिय जि० जिव्हेन्द्रिय फा० स्पर्शेन्द्रियपने भु० वारंवार प० परिणमें ॥ ३२ ॥ पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच ठि० स्थिति भ० कहना ऊ० उश्वास वे० वेमात्रा आ० आहार अ० अनाभोग निर्वतित पने अ० समय समय में अ० आंतरा रहित आ० आभोग निर्वर्तितपने ज०जघन्य अ० अन्तर्मुहूर्त उ०उत्कृष्ट छ० छट्ठ भक्त में से० शेष ज० जैसे च० चतुरेन्द्रिय जा० यावत् च० चलित कर्म णि० निर्जरे ॥ ३३ ॥

सूत्र

परिणमंति चउरिंदियाणं चक्खुंदिय घाणिंदिय जिब्भिदिय फासिंदियत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ ३ २ ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं ठिई भाणिऊण ऊसासोवेमायाए आहारो अणाभोगणिव्वत्तिए अणुसमइयं अविरहिओ आभोनिव्वत्तिओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स सेसं जहा चउरिंदियाणं जाव चलियं कम्मं णिज्जरेंति ॥३३॥ एवं मणुस्साणवि. णवरं आभोगणिव्वत्तिए जहण्णेणं अंतो-

भावार्थ

चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय व स्पर्शेन्द्रियपने परिणमते हैं ॥ ३२ ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति जघन्य अंतमुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम की. उन का श्वासोश्वास मर्यादा रहित जानना. उन को अनाभोग निवर्तित आहार प्रति समय विरह रहित होता है. और आभोग निवर्तित आहार जघन्य अंत मुहूर्त में उत्कृष्ट छट्ठ भक्त सो दो दिन में. (देवकुरु उत्तर कुरु के क्षेत्र के तिर्यंच आश्रित.) और चलित कर्म की निर्जरा करेंगे वहांतक का शेष सब अधिकार चतुरेन्द्रिय. जैसे कहना ॥ ३३ ॥ ऐसे ही

शब्दार्थ कि० क्या उ० उद्योत वाले अं० अंधकारवाले गो० गौतम उ० उद्योत वाले अं० अंधकार वाले भी गो० गौतम च० चतुरेन्द्रिय को सु० शुभाशुभ पो० पुद्गल परिणम ए० ऐसे जा० यावत् म० मनुष्य को वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक ज० जैसे अ० असुरकुमार ॥ ४ ॥ अ० हे भं० भगवन् ने० नारकी त० वहां रहे हुवे ए० ऐसे प० जाननेवाले तं० वह ज० यथा स० समय आ० आवलिका जा० यावत् ओ० अवसर्पिणी गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ के० कैसे जा०

सूत्र अंधयारेवि । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! चउरिंदियाणं सुभासुभा पोग्गला सुभासुभे पोग्गलपरिणामे से तेणट्ठेणं ॥ एवं जाव मणुस्साणं, वाणमंतर जोइस वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥ ५ ॥ अत्थिणं भंते ! नेरइयाणं तत्थगयाणं एवं पण्णायए तं० समयाइवा, आवलियाइवा, जाव ओसप्पिणीइवा उस्सप्पिणीइवा? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं जाव समयातिवा आवलियातिवा ओसप्पिणीतिवा उस्सप्पिणीइवा ? गोयमा !

भावार्थ न्द्रिय को उद्योत व अंधकार दोनों होते हैं. क्योंकि उन को शुभाशुभ पुद्गल व शुभाशुभ पुद्गल परिणम होता है. ऐसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य का जानना. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक को असुर कुमार जैसे कहना ॥ ५ ॥ उद्योत सूर्य की कीरणों से होता है. और सूर्य से काल मान भी होता है. इसलिये काल आश्री प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! नारकी नरक लोक में रहे हुवे क्या समय, आ-

शब्दार्थ यावत् स० समय आ० आवलिका ओ० अवसर्पिणी गो० गौतम इ० यहां ते० उनका मा० मान इ० यहां ते० उनका प० प्रमाण इ० यहां ते० उनको ए० ऐसा प० जाना जावे तं० वह स० समय जा० यावत् उ० उत्सर्पिणी ए० ऐसे जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच ॥८॥ अ० है भं० भगवन् म० मनुष्य को इ० यहां रहे हुवे ए० ऐसा प० जाना जाता है स० समय जा० यावत् उ० उत्सर्पिणी

सूत्र इह तेसिं माणं, इह तेसिं पमाणं, इह तेसिं एवं पण्णायते. तं समयाइवा जाव उस्सप्पिणीइवा, से तेणं जाव नो एवं पण्णायए समयाइवा जाव उस्साप्पिणीइवा, एवं जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥ ८ ॥ अत्थिणं भंते ! मणुस्साणं इहगयाणं एवं पण्णायइ तं समयाइवा, जाव उसप्पिणीइवा? हंता अत्थि ॥ से केणट्ठेणं ?

भावार्थ वलिका, दिन, रात्रि, मास, वर्ष यावत् अवसर्पिणी उत्सर्पिणी जान सकते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से यह अर्थ समर्थ नहीं है ? अहो गौतम ! सूर्य का चलना मनुष्य लोक में होता है नरकादि स्थानों में नहीं होता है. इसलिये वे समय, आवलिका यावत् अवसर्पिणी उत्सर्पिणी नहीं जान सकते हैं. जैसे नारकी का कहा वैसे ही पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय व तिर्यंच पंचेन्द्रिय का जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या मनुष्य समय, आवलिका यावत् उत्सर्पिणी जानने को समर्थ हैं हां गौतम ! मनुष्य समयादि जान सकते हैं. अहो भगवन् ! वे कैसे जान सकते हैं ! अहो

शब्दार्थ हं० हां अ० है के० कैसे गो० गौतम इ० यहां ते० उन को मा० मान इ० यहां ते० उन को प० प्रमाण इ० यहां ते० उन को ए० ऐसा प० जाना जावे स० समय जा० यावत् उ० उत्सर्पिणी ते० इसलिये वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक को ज० जैसे ने० नारकी को ॥ ७ ॥ ते० उस काल ते० उस स० समय में पा० पार्श्वनाथ के अ० अपत्य (संतानीये) थे० स्थविर भ० भगवन्त जे० जहां स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ते० वहां उ० आकर के स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अ०

सूत्र गोयमा ! इह तेसिं माणं इह चेव तेसिं पमाणं इह तेसिं एवं पण्णायइ, तंजहा-समयाइवा जाव उस्साप्पिणीइवा, से तेणट्ठेणं। वाणमंतर जोइस वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं ॥ ७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अदूरसामंते ठिचा एवं वयासी-सेणूणं भंते ! असंखेज्जेलोए अणंता राइंदिया

भावार्थ गौतम ! मनुष्य लोक में सूर्य का चलना होता है जिस से समय, आवलिका श्वासोश्वास यावत् अवसर्पिणी उत्सर्पिणी जान सकते हैं. वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का नारकी जैसे जानना ॥७॥ उस काल उस समय में श्री पार्श्वनाथ स्वामी के संतानिये श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आये और सामनेखडे रहकर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! क्या असंख्यात प्रदेशात्मक लोक में अनंत रात्रिदिन

शब्दार्थ देखते हैं. जो० जो लो० दीखता है से० वह लो० लोक हं० हां भ० भगवन् ते० इस से अ० आर्य ए० ऐसा वु० कहा है अ० असंख्यात तं० वैसे ही ॥ ८ ॥ त० उसदिन से ते० वे पा० पार्श्वनाथ के अ० अपत्य थे० स्थविर भ० भगवंत स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को प० जानते हैं स० सर्वज्ञ स० सर्वदर्शी त० तव ते० वे थे० स्थविर भ० भगवंत स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना करके न० नमस्कार करके ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छता हूं भं० भगवन् तु० तुम्हारी अं० समीप चा०

सूत्र त्ता २, निलीयंति ॥ से भूए उप्पन्नेविगए परिणए अजीवेहिं लोकइ पलोकइ । जे लोकइ सेलोए, हंता भगवं से तेणट्ठेणं अज्जो एवं वुच्चइ असंखेजे तंचेव ॥८॥ तप्पाभिइं चणं ते पासावच्चेज्जा थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं पच्चाभिजाणंति सव्वण्णु सव्वदरिसिं ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता

भावार्थ परिता (प्रत्येक) रात्रि होती हैं. जहां वहुत जीव उत्पन्न होवे व नष्ट होवे और इस तरह उत्पन्न व विनाश का स्वभाव होवे वह लोक कहाता है. अजीव पुद्गलादिक से जो उत्पन्न, विनाश व परिणम के स्वभाववाला दीखने में आवे सो लोक कहाता है. इस से अहो आर्य ! असंख्यात प्रदेशात्मक लोक. में अनंत रात्रि दिन व परिता रात्रि दिन उत्पन्न हुवे, होते हैं व होवेंगे ॥ ८ ॥ उस दिन से पार्श्वनाथ स्वामी के संतानी ये स्थविर भगवन्त श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को सर्वज्ञ सर्वदर्शी जानने लगे. फीर. वे स्थविर

शब्दार्थ

चार जा० याम रूप ध० धर्म से पं० पांच म० महाव्रत स० प्रतिक्रमण सहित ध० धर्म उ० अंगीकार कर वि० विचरने को अ० यथासुख दे० देवानुप्रिय मा० मत प० विलंब त० तब ते० वे पा० पार्श्वापत्य थे० स्थविर भ० भगवंत जा० यावत् च० छेल्ला उ० उश्वास नि० निश्वास से सि० सिद्ध हुवे जा० यावत् स० सब दु० दुःखों से प० रहित हुवे अ० कितनेक दे० देवलोक में उ० उत्पन्न ॥ ९ ॥ क० कितनेक भं० भगवन् दे० देवलोक प० प्ररूपे गो० गौतम च० चार

सूत्र

एवं वयासी-इच्छामिणं भंते! तुज्झं आंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ? अहासुहं देवाणुप्पिया ! मापडिबंधं, तएणं तेपा-सावच्चिजा थेरा भगवंतो जाव चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिद्धा जाव सव्वदुक्ख-प्पहीणा. अत्थेगइया देवलोसु उववन्ना, ॥ ९ ॥ कइविहाणं भंते ! देवलोगा

भावार्थ

भगवन्त श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा कहने लगे कि अहो भगवन् ! आप की पास से चार याम रूप धर्म से पांच महाव्रत रूप धर्म अंगीकार करने को इच्छते हैं. अहो देवानुप्रिय ! तुम को जैसे सुख होवे वैसे करो, विलम्ब मत करो. फीर वे पार्श्वनाथ स्वामी के संतानिये स्थविर भगवन्त चरिम उश्वास निश्वास में सिद्ध हुवे, यावत् सब दुःखों से रहित हुवे और कितनेक देवलोक में उत्पन्न हुवे ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! देवलोक कितने प्रकार के कहे ? अहो गौतम ! चार

शब्दार्थ

प्रकार के दे० देवलोक भ० भवनवासी वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषि वे० वैमानिक भे० भेदसे भ० भवनवासी द० दश प्रकार के वा० वाणव्यंतर अ० आठ प्रकार के जो० ज्योतिषी पं० पांच प्रकार के वे० वैमानिक दु० दो प्रकार के गा० गाथा कि० क्या इ० यह रा० राजगृह उ० उद्योत अं० अंधकार स० समय पा० पार्श्वनाथ के अं० शिष्य की पु० पूच्छा रा० रात्रिदिन दे० देवलोक से० वैसे ही भं० भगवन् प० पांचवा म० शतक का न० नववा उ० उद्देशा स० संपूर्ण ॥ ५ ॥ ९ ॥ × ×

मूल

पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पं० तं० भवणवासी, वाणमंतरा; जोइसिया, वेमाणियाभेएणं, भवणवासी दसविहा, वाणमंतरा अट्ठविहा, जोइसिया पंचविहा, वेमाणिया दुविहा ॥ गाहा- किंमियं रायगिहंतिय, उज्जोय अंधयार समएय । पासंतिवासिपुच्छा राइंदिय देवलोगाय ॥ १ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचम सयस्स नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ ९ ॥ * * *

भावार्थ

प्रकार के देवलोक कहे हैं भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी व वैमानिक. उस में से भवनपति के दश भेद, वाणव्यन्तर के आठ भेद, ज्योतिषी के पांच भेद, व वैमानिक के दो भेद. अब इस उद्देशे का सारांश कहते हैं ? राजगृही नगरी किस को कहना, उद्योत व अंधकार, समय, पार्श्वनाथ स्वामी के संतानीये का रात्रि दिन संबंधि प्रश्न, व देवलोक. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह पांचवा शतक का नववा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ ९ ॥ × ×

शब्दार्थ ते० उस काल ते० उस समय में चं० चपा न० नगरी ज० जैसे प० पहिला उ० उद्देशा त० तैसे ने० जानना ए० यह भी न० विशेष चं० चंद्रमा भा० कहना पं० पांचवा स० शतक का द० दशवा उ० उद्देशा स० संपूर्ण ॥ ५ ॥ १० ॥ पं० पांचवा स० शतक स० संपूर्ण ॥ ५ ॥ ÷ ×

सूत्र — तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी, जहा पढमिल्लो उद्देसओ तहा नेयव्वो एसोवि नवरं चंदिमा भाणियव्वो पंचमसयस्स दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥५॥ १० ॥

भावार्थ — नववे उद्देशे के अंत में देवता का आधिकार कहा. दशवे में मात्र चंद्र का प्रश्न पूछते हैं. उस काल उस समय में चंपा नाम की नगरी थी उस की ईशान कौन में पूर्ण भद्र वगीचे में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी पधारे. और श्री गौतम स्वामी वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न पूछने लगे कि अहो भगवन् ! चंद्रमा देव कहां रहता है ? अहो गौतम ! समभूमि से आठसो योजन ऊंचे चंद्र का विमान है. शेष सब आधिकार प्रथम शतक का पहिला उद्देशा जैसे कहना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह पांचवा शतक का दशवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ १० ॥ पांचवा शतक समाप्त ॥ ५ ॥

* षष्ठ शतकम्. *

शब्दार्थ वे॰ वेदना आ॰ आहार म॰ महाश्रव स॰ प्रदेश सहित त॰ तमस्काय भ॰ भव्य सा॰ धान्य पु॰ पृथ्वी क॰ कर्म अ॰ अन्यतीर्थिक द॰ दश छ॰ छट्ठे स॰ शतक में ॥ १ ॥ से॰ अथ णू॰ शंकादर्शी भं॰ भगवन् जे॰ जो म॰ महावेदना वाले से॰ वह म॰ महानिर्जरा वाले जे॰ जो म॰ महानिर्जरा वाले से॰

सूत्र वेयण आहार महस्सवेय, सपएस तमुयए भाविए ॥ साली पुढवी कम्म, अण्णउत्थि दस छट्ठगंमिसए ॥ १ ॥ सेणूणं भंते ! जे महावेयणे से महानिज्जरे, जे महानिज्जरे से महावेयणे, महावेयणस्सय अप्पवेयणस्सय से सेए जे पसत्थनिज्जराए ?

भावार्थ छठे शतक में दश उद्देश कहे हैं. १ पहिले उद्देशे में महावेदना महा निर्जरा का अधिकार, २ दूसरे उद्देशे में आहार का अधिकार, ३ तीसरे उद्देशे में महाआश्रव का अधिकार, ४. चौथे उद्देशे में जीव सप्रदेशी है या अप्रदेशी है इस के प्रश्नोत्तर, ५ पांचवे में तमस्काय का अधिकार ६ छट्ठे में नरक में उत्पन्न होनेयोग्य का अधिकार. ७ सातवे में धान्य का विचार. ८ आठवे में रत्नप्रभादि पृथ्वी का अधिकार ९ नवमे में कर्मबन्ध का अधिकार व १० दशवे में अन्यतीर्थियों का अधिकार. इस तरह छठे शतक में दश उद्देशे कहे हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जो महा वेदनावाला होता है वह क्या महा निर्जरावाला होता है ? और जो महानिर्जरावाला होता है वह क्या महा वेदनावाला होता है ? महा

पदार्थ वह म० महावेदना वाले म० महावेदनावंत अ० अल्प वेदनावंत में से० वह से० श्रेय जे० जो प० प्रशस्तनिर्जरावाले हं० हां गो० गौतम जे० जो म० महावेदना वाले ए० ऐसे ॥ २ ॥ छ० छठी स० सातवी भं० भगवन् पु० पृथ्वी में ने० नारकी म० महावेदना वाले हं० हां म० महावेदना वाले ते० वे भं० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ से म० महानिर्जरा वाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ से० वह कें० कैसे अ० कहा जावे अ० अर्थ से भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहाता है

सूत्र हंता गोयमा ! जे महावेयणे एवं चेव ॥ २ ॥ छट्ठ सत्तमासुणं भंते ! पुढवीसु नेरइया महावेयणा ? हंता महावेयणा, तेणं भंते ! समणेहिंतो निग्गंथेहिंतो महानिज्जरतरागा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से केणं खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जे महावेयणे जाव पसत्थ निज्जराए ?गोयमा! से जहा नामए दुवे वत्था सिया एगेवत्थे कद्दम रागरत्ते, एगेवत्थे खंजण रागरत्ते, एएसिणं गोयमा! दोण्हं वत्थाणं कयरे

भावार्थ वेदना व अल्प वेदनावाले में जो प्रशस्त निर्जरावाला है वह क्या श्रेय-प्रधान है ? हां गौतम ! जो महावेदनावाला होता है वह महा निर्जरावाला होता है और जो महा निर्जरावाला होता है वह महा वेदनावाला होता है, वैसे ही महावेदना व अल्प वेदनावन्त में जो प्रशस्त निर्जरावाला होता है वह श्रेष्ठ है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या छठी सातवी पृथ्वी-नरक में नारकी महा वेदनावाले हैं ? हां

शब्दार्थ जं० जो म० महावेदनावाले जां० यावत् प० प्रशस्त निर्जरा वाले से० अथ ज० जैसे दु० दो व० वस्त्र सि० होवे ए० एक व० वस्त्र क० कीचड के रा० रंगसे र० रक्त ए० एक व० वस्त्र खं० गाडेका खंजन के रा० रंगसे र० रक्त ए० इन दो० दोनों व० वस्त्र में क० कौनसा व० वस्त्र दु० कठिनतासे धोया जावे दु० कठिनता से रंग नीकाला जावे दु० बहुत पराक्रम क० कौनसा व० वस्त्र सु० सरलता से

सूत्र वत्थे दुधोयतराए चेव दुवामतराए चेव, दुपरिकम्मतराए चेव, कयरे वा वत्थे सुधोयतराए चेव, सुवामंतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव, जेवा से वत्थे कद्दमरागरत्ते जेवा से वत्थे खंजणरागरत्ते; भगवं ! तत्थणं जे से कद्दम-राग रत्ते सेणं वत्थे दुधोयतराए चेव, दुवामतराए चेव दुपरिकम्मतराए चेव, एवा

भावार्थ गौतम ! वे महा वेदनावाले हैं. अहो भगवन् ! तब क्या वे श्रमण निर्ग्रन्थ से महा निर्जरावाले हैं ? अर्थात् वे महा निर्जरा करते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् छठी सातवी नरक में नारकी महा वेदना भोगते हुवे महा निर्जरा नहीं करते हैं. तब अहो भगवन् ! यह किस अपेक्षासे कहा है कि जो महा वेदनावाला होता है वह महा निर्जरावाला होता है यावत् जिन को प्रशस्त निर्जरा होती है वह श्रेय है ? अहो गौतम ! जैसे एक कर्दम (कीचड) से भरा हुवा और दूसरा दीपक की कालिमा समान काला गाडे के खंजन से भरा हुवा ऐसे दो वस्त्र होवे. अब अहो गौतम ! उक्त दोनों

शब्दार्थ स्थितिपद में त० तैसे भा० कहना स० सर्व जी० जीव का आ० आहार ज० जैसे प० पन्नवणा में प० प्रथम आ० आहार उद्देशे में त० तैसे भा० कहना ए० यहां से आ० लेकर णे० नारकी भं० भगवन् आ० आहार के अर्थी जा० यावत् दु० दुःखपने भु० वारंवार परिणमें ॥ ३७ ॥ जी० जीव भं० भगवन् किं० क्या आ० आत्मारंभी प० परारंभी उ० उभयारंभी अ० अनारंभी गो० गौतम अ० कितनेक जी० जीव आ० आत्मारंभी प० परारंभी उ० उभयारंभी णो० नहीं अ० अनारंभी अ० कितनेक जीव णो० नहीं

सूत्र ठिती जहा ठितीपदे तहा भाणियव्वा. सव्व जीवाणं आहारोय जहा पन्नवणाए पढमे आहारुद्देसए तहा भाणेयव्वो। एत्तो आढत्तो णेरइयाणं भंते आहारट्ठी जाव दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ॥ ३७ ॥ जीवाणं भंते किं आयारंभा, परारंभा, तदुभयारंभा, अणारंभा? गोयमा! अत्थेगइया जीवा आयारंभावि, परारंभावि तदुभयारंभावि,

भावार्थ जानना. इसी तरह चोविस दंडक का कहदेना अहो भगवन् ! नारकी को आहार की इच्छा होती है ? यावत् दुःखरूप वारंवार परिणमे. इस में पहिले नारकी की वक्तव्यता कहीं वह आरंभ पूर्वक होती है इस लिये आरंभका निरूपण करते हैं॥३७॥अहो भगवन् ! क्या जीव स्वतः घात करनेवाले हैं, व अन्य की पास घात करानेवाले हैं स्वतः घात करानेवाले व अन्य की पास करानेवाले हैं, या दोनों प्रकार की घात से रहित अनारंभी हैं ? अहो गौतम कितनेक जीव आत्मारंभी हैं, परारंभी भी हैं, आत्मपरारंभी भी हैं परंतु अनारंभी

शब्दार्थ भ० होते हैं से० अथ ज० जैसे के० कोई पु० पुरुष अ० एरण को आ० कुटते हुवे म० वडे वडे स० शब्द से घो० घोष से प० परंपरा घा० घात से णो० नहीं सं० समर्थ तीं० उस अ० एरण के अं० यथा बादर पो० पुद्गल प० नीकालने को ए० ऐसे ही गो०! गौतम ने० नारकी को पा० पापकर्म गा० दृढ किये हुवे जा० यावत् नो० नहीं म० महापर्यवसान वाले भ० होते हैं भ० भगवत् तं० वहां जे० जो व०

सूत्र जाव नो महापज्जवसाणाइं भवंति भगवं तत्थ जे से वत्थे खंजणरागरत्ते सेणं वत्थे सुधोयतराए चेव, सुवामतराए चेव सुपरिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहा बायराइं कम्माइं, सिढिली कयाइं, निट्ठियाइं कडाइं विप्परिणा- मियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति ॥ जावइयं तावइयं पिणं ते वेयणं वेएमाणा

पाप कर्म बहुत दृढ बन्धनवाले होते हैं, बहुत चीकने होते हैं, निधत्त होते हैं, निकाचित होते हैं. इस से नारकी उक्त कर्मों भोगवे विना नहीं छुटते हैं. इस तरह महावेदना वेदते हुवे नारकी महा निर्जरा नहीं कर सकते हैं वैसे ही उन का महा पर्यवसान–निर्वाण नहीं होता है. जैसे पुरुष एरण पर लोहा रखकर वडे २ शब्दों से व घोष से एक पीछे एक वडे वडे घाव मारते हुवे उस के बादर पुद्गलों दूर करने को समर्थ नहीं होता है वैसे ही नारकी पूर्वकृत पाप कर्मों को दूर करने को व निर्वाण प्राप्त करने को समर्थ नहीं होते हैं और जैसे खंजन से भरा हुवा वस्त्र सरलता पूर्वक स्वच्छ व शुद्ध होता है वैसे

शब्दार्थ धोयाजावे सु० सरलतासेरंगनीकाला जावे सु० पराक्रम वाले जे० जो से० उस को व० वस्त्र क० कर्दम के रा० रंग से र० रंगाया हुवा जे० जो से० वह व० वस्त्र खं० खंजन के रा० रंग से र० रंगाया हुआ भ० भगवन् त० उस में जे० जो क० कर्दम राग से र० रक्त ए० ऐसे गो० गौतम ने० नारकी को पा० पापकर्म गा० दृढ क० किये हुवे चि० चिकने किये हुए सि० निधत्त किये हुए खि० निकाचित किये हुए सं० दृढ ते० वे वे० वेदना वे० वेदते हुए णो० नहीं म० महानिर्जरा नो० नहीं म० महा पर्यवसान वाले

सूत्र मेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं, चिक्कणी कयाइं, सिढिलीकयाइं, खिलीकयाइं भवंति, सपगाढंपियणं ते वेयणं वेएमाणा णो महानिज्जरा, नो महापज्जवसाणा भवंति, ॥ से जहा वा केइ पुरिसे अहिगरणिं आउडेमाणे महया महया सद्देणं महया २ घोसेणं, महया २ परंपराघाएणं णो संचाएइ तीसे अहिगरणीए अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्तए ॥ एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं

भावार्थ वस्त्रों में से कौनसा वस्त्र कठिनता से धोया जाता है, कौनसा वस्त्र का रंग कठिनता से नीकाला जाता है, और कौनसा वस्त्र धोने में पराक्रम करना पडता है ? ऐसे ही कौनसा वस्त्र सरलता पूर्वक धोया जाता है, रंग निकाला जाता है व कौनसा वस्त्र धोने में पराक्रम नहीं करना पडता है ? अहो भगवन् ! जो वस्त्र कर्दम से भरा हुवा है वह कठिनता से शुद्ध हो सकता है. ऐसे ही अहो गौतम ! नरक के जीवों को

शब्दार्थ
शुष्क त० तृण ह० हस्त जा० अग्नि में प० डालते हुए खि० शीघ्र भ० भस्म को आ० प्राप्त होता है हं० हां भ० भस्म को आ० प्राप्त होता है ए० ऐसे ही गो० गौतम स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ अ० यथा बादर क० कर्म जा० यावत् मं० महापर्यवसान वाले भ० होते हैं से० अथ ज० जैसे के० कोई पु० पुरुष त० तप्त अ० लोहे में उ० पानी का बिं० बिन्दु जा० यावत् हं० हां विध्वंस को आ० प्राप्त होता है ए० ऐसे गो० गौतम स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ जा० यावत् म० महापर्यवसान वाले भ० होते हैं से० अथ ते० इसलिये जे० जो म० महावेदना वाले से० वह म० महानिर्जरा वाले जा० यावत् नि० निर्जरा वाले ॥ ३ ॥ क० कितने प्रकार के भं० भग न् क० करण प० प्ररूपे गो० गौतम च० चार प्रकार के क० करण प०

सूत्र
कइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि उदगबिंदु जाव हंता विद्धंसमा गच्छइ, एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं जाव महापज्जवसाणा भवंति ॥ से तेणट्ठेणं जे महावेयणे से महानिज्जरे जाव निज्जराए ॥ ३ ॥ कइविहेणं भंते ! करणे पणत्ते ? गोयमा !

भावार्थ
पडने से शीघ्र नष्ट होता है वैसे ही श्रमण निर्ग्रन्थ के बादर कर्म पुद्गलों नष्ट होजाते हैं. इसी कारन से कहा है कि जो महा वेदनावाले होते हैं वे महा निर्जरावाले होते हैं और जो महा निर्जरावाले होते हैं वे महा वेदनावाले होते हैं. और महा वेदना व अल्प वेदनावाले में जो प्रशस्त निर्जरावाला है वह श्रेष्ठ-प्रधान होता है ॥ ३ ॥ वेदना करण से होती है इसलिये करण का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् !

शब्दार्थ

वस्त्र खं० खंजन राग से र० रक्त से० वह व० वस्त्र सु० सरालता से धोया जावे सु० अच्छी तरह रंग नीकाला जावे सु० अच्छा पराक्रम वाले ए० ऐसे ही गो० गौतम स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ को अ० यथा वादर क० कर्म सि० शिथिल किये हुए नि० निष्ठितार्थ क० किये हुवे वि० परिणमेहुए खि० शीघ्र वि० विध्वंस भ० होते हैं जा० जहांलग ता० वहांलग ते० वे वे० वेदना वे० वेदते हुवे म० महा निर्जरा म० महापर्यवसान भ० होते हैं से० अथ ज० जैसे के० कोई पु० पुरुष सु० सूका त० तृण ह० हस्त में जा० अग्नि में प० डाले से० अथ णू० शंकादर्शी गो० गौतम से० वह सु०

सूत्र

महानिज्जरा महापज्जवसाणा भवंति, से जहा नामए केइ पुरिसे सुक्कं तणहत्थयं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा सेनूणं गोयमा से सुक्के तणहत्थए जायतेयंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसा विज्जइ ? हंता मसवसाविज्जइ, एवामेव गोयमा समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं जाव महापज्जवसाणाइं भवंति, ॥ से जहा नामए

भावार्थ

ही अहो गौतम ! श्रमण निर्ग्रंथ ने वादर कर्म पुद्गलों को मंदविपाकवाले वनाये, रस रहित किये, और शीघ्र नष्ट होवे वैसे वनाये. जहांलग उन को वे कर्मों उदय में रहते हैं वहांलग भी उन्हे वेदते हुवे महा निर्जरा व महा पर्यवसान करते हैं. जैसे शुष्क तृण अग्नि में डालते ही जल जाता है वैसे ही श्रमण निर्ग्रन्थ वादर कर्म पुद्गलों का विनाश करते हैं. और जैसे तप्त लोहे की सलाका पर पानी का विन्दू

शब्दार्थ काय करण क० कर्म करण ॥ ४ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् किं० क्या क० करण से अ० असाता वे० वेदना वे०वेदते हैं अ० अकरण से अ० असाता वे०वेदना वे० वेदते हैं के० कैसे गो० गौतम ने० नारकी को च० चार प्रकार के क० करण म० मन करण व० वचन करण का० काया करण क० कर्म करण इ० इन च०चार प्रकार के अ० अशुभ करण से ने० नारकी क० करण से अ० असाता वे० वेदना वे० वेदते हैं णो० नहीं अ० अकरण से ते० इसलिये ॥ ५ ॥ अ० असुरकुमार किं० क्या क०

सूत्र विगलिंदियाणं वइकरणे कायकरणे कम्मकरणे, ॥ ४ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं करणओ असायं वेयणं वेदंति, अकरणओ असायं वेयणं वेदंति ? गोयमा ! नेरइयाणं करणओ असायं वेयणं वेदंति णो अकरणओ असायं वेयणं वेदंति ॥ से केणट्ठेणं ? गोयमा ! नेरइयाणं चउव्विहे करणे प० तंजहा-मण करणे, वइकरणे, काय करणे कम्म करणे, इच्चेतेणं चउव्विहेणं असुभेणं करणेणं नेरइया करणओ असायं वेयणं वेदंति णो अकरणओ से तेणट्ठेणं ॥ ५ ॥ असुरकुमाराणं किं करणओ अकरणओ ? गोयमा !

भावार्थ असाता वेदना नहीं वेदते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी करण से असाता वेदना वेदते हैं. परंतु अकरण से नहीं वेदते हैं ? अहो गौतम ! नारकी को मन, वचन, काय व कर्म ऐसे करण रहे हुवे हैं. इन चार अशुभ करण से नारकी असाता वेदना वेदते हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या असुर

शब्दार्थ प्ररूपे तं० वह ज० यथा म० मन करण व० वचन करण का० काया करण क० कर्म करण ने० नारकी को भं० भगवन् क० कितने प्रकार के क० करण प० प्ररूपे म० मनकरण जा० यावत् क० कर्म करण ए० ऐसे पं० पंचेन्द्रिय स० सब में च० चार प्रकार के क० करण प० प्ररूपे ए० एकेन्द्रिय को दु० दोप्रकार के का० काय करण क० कर्म क० करण वि० विकलेन्द्रिय को व० वचन करण का०

सूत्र चउव्विहे करणे पण्णत्ते, तंजहा मणकरणे, वइ करणे, काय करणे, कम्म करणे, नेरइयाणं भंते ! कइविहे करणे प० तं० मणकरणे जाव कम्मकरणे, एवं पंचिंदियाणं सव्वेसिं चउव्विहे करणे पण्णत्ते, एगिंदियाणं दुविहे काय करणेय कम्म करणेय,

भावार्थ करण के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! करण के चार भेद कहे हैं मन करण, वचन करण, काया करण व कर्म करण. अहो भगवन् ! नारकी को कितने करण कहे हैं ? अहो गौतम ! नारकी को चार करण कहे हैं. १ मन करण, वचन करण, काया करण, व कर्म करण. उसी प्रकार जितने पंचेन्द्रिय जीव हैं उन सब को चार करण होते हैं एकेन्द्रिय को काय करण व कर्म करण ऐसे दो करण होते हैं, और तीन विकलेन्द्रिय को काय, वचन व कर्म ऐसे तीन करण होते हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् क्या नारकी करण से असाता वेदनीय वेदते हैं या अकरण से असाता वेदनीय वेदते हैं. अहो गौतम ! नारकी करण से असाता वेदनीय वेदते हैं परंतु अकरण से

शब्दार्थ

काय करण क० कर्म करण ॥ ४ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् किं० क्या क० करण से अ० असाता वे० वेदना वे०वेदते हैं अ० अकरण से अ० असाता वे०वेदना वे० वेदते हैं के० कैसे गो० गौतम ने० नारकी को च० चार प्रकार के क० करण म० मन करण व० वचन करण का० काया करण क० कर्म करण इ० इन च०चार प्रकार के अ० अशुभ करण से ने० नारकी क० करण से अ० असाता वे० वेदना वे० वेदते हैं णो० नहीं अ० अकरण से ते० इसलिये ॥ ५ ॥ अ० असुरकुमार किं० क्या क०

सूत्र

विगलिंदियाणं वइकरणे कायकरणे कम्मकरणे, ॥ ४ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं करणओ असायं वेयणं वेदंति, अकरणओ असायं वेयणं वेदंति ? गोयमा ! नेरइयाणं करणओ असायं वेयणं वेदंति णो अकरणओ असायं वेयणं वेदंति ॥ से केणट्ठेणं ? गोयमा ! नेरइयाणं चउव्विहे करणे प० तंजहा-मण करणे, वइकरणे, काय करणे कम्म करणे, इच्चेतेण चउव्विहेणं असुभेणं करणेणं नेरइया करणओ असायं वेयणं वेदंति णो अकरणओ से तेणट्ठेणं ॥ ५ ॥ असुरकुमाराणं किं करणओ अकरणओ ? गोयमा !

भावार्थ

असाता वेदना नहीं वेदते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी करण से असाता वेदना वेदते हैं. परंतु अकरण से नहीं वेदते हैं ? अहो गौतम ! नारकी को मन, वचन, काय व कर्म ऐसे करण रहे हुवे हैं. इन चार अशुभ करण से नारकी असाता वेदना वेदते हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या असुर

अर्थ करण से अ० अकरण से गो० गौतम क० करण से णो० नहीं अ० अकरण से के० कैसे गो० गौतम अ० असुरकुमार को च० चार प्रकार के क० करण इ० इन सु० शुभ करण से अ० असुरकुमार क० करण से सा० साता वे० वेदना वे०वेदते हैं नो० नहीं अ० अकरण से ए० ऐसे थ० स्थनित कुमार पु० पृथ्वीकायिक क० करण से वे० वेमात्रा (मर्यादा रहित) वे० वेदना वे० वेदते हैं नो० नहीं अ० अकरण से उ० उदारिक शरीर वाले स० सब सु० शुभ अ० अशुभ से वे० वेमात्रा से दे० देवा सु० शुभ

सूत्र करणओ णो अकरणओ। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! असुरकुमाराणं चउव्विहे करणे पण्णत्ते, तंजहा-मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे, इच्चेतेणं सुभेणंकरणेणं असुरकुमारा करणओ सायं वेयणं वेदंति, नो अकरणओ एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवीकाइयाणं एवामेव पुच्छा णवरं एच्चेएणं सुभासुभेणं करणेणं पुढ-विकाइया करणओ वेमायाए वेयणं वेदंति, नो अकरणओ ॥ उरालिय सरीरा

भावार्थ कुमार करण से या अकरण से वेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! असुरकुमार को मन, वचन, काया व कर्म यों चार शुभ करण रहे हुवे हैं इन चारों ही शुभ करण से असुर कुमार साता वेदनीय कर्म वेदते हैं. ऐसे ही स्थनित कुमार का जानना. पृथ्वीकायिक करण से वेमात्रा वेदना वेदते हैं सब उदारिक शरीर वाले जीव शुभाशुभ करण से मर्यादा रहित वेदना वेदते हैं, और देवों शुभ करण से साता वेदनीय

शब्दार्थ करण से सा० साता वे० वेदना वे० वेदते हैं ॥ ६ ॥ जी० जीव किं० क्या म० महावेदना वाले म० महानिर्जरा वाले म० महावेदना वाले अ० अल्प निर्जरा वाले अ० अल्प वेदना वाले म० महानिर्जरा वाले अ० अल्प वेदना वाले अ० अल्प निर्जरावाले गो०गौतम अ० कितनेक जी० जीव म० महावेदनावाले म० महानिर्जरा वाले के० कैसे प० प्रतिमा प० प्रतिपन्न (सहित) अ० अनगार म० महावेदनावाले

सूत्र सव्वे सुभासुभेणं वेमायाए, ॥ देवा सुभेणं सायवेयणं वेदंति, ॥ ६ ॥ जीवाणं भंते किं महावेयणा महानिज्जरा, महावेयणा अप्पनिज्जरा, अप्पवेयणा महानिज्जरा, अ-अप्पवेयणा अप्पानिज्जरा? गोयमा ! अत्थेगइया जीवा महावेयणा महानिज्जरा, अत्थेगइया जीवा महावेयणा अप्पानिज्जरा, अत्थेगइया जीवा अप्पवेयणा महानिज्जरा, अत्थेगइया जीवा अप्पवेयणा अप्पानिज्जरा ॥ से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पडिमापाडिवण्णए अण-

भावार्थ कर्म वेदते हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! क्या जो जीव महा वेदनावाला होता है वह महा निर्जरावाला होता है, महा वेदनावाला अल्प निर्जरावाला होता है, अल्प निर्जरावाला महा वेदनावाला होता है, या अल्प वेदनावाला अल्प निर्जरावाला होता है ? अहो गौतम ! कितनेक जीव महा वेदनावाले व महा निर्जरावाले हैं, कितनेक महा वेदनावाले व अल्प निर्जरावाले हैं, कितनेक अल्प वेदनावाले व महा निर्जरावाले हैं, और कितनेक अल्प वेदनावाले व अल्प निर्जरावाले हैं. अहो भगवन् ! यह किस तरह

शब्दार्थ म० महानिर्जरा वाले छ० छठी स० सातमी पु० पृथ्वी में ने० नारकी म० महावेदनावाले अ० अल्प निर्जरा वाले से० शैलेशी प० प्रतिपन्न अ० अनगार अ० अल्प वेदनावाले म० महानिर्जरा वाले अ० अनुत्तरोपपातिक दे० देव अ० अल्प वे० वेदना वाले अ० अल्प निर्जरा वाले से० वैसे ही भं० भगवन् म० महावेदना व० वस्त्र क० कीचड खं० खंजन अ० एरण त० तृण ह० हस्त क०

सूत्र गारे महावेयणे महानिज्ज, छट्ठसत्तमासु पुढवीसु नेरइया महावेयणा अप्पनिज्जरा, सेलेसि पडिवण्णए अणगारे अप्पवेयणेरे महानिज्जरे, अणुत्तरोववाइया देवा अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ महावेयणायवत्थे, कद्दम खंजण कएय अहिकरणी, तणहत्थयकवल्ले, करण महावेयणा जीवा ॥ सेवं भंते

भावार्थ हैं ? अहो गौतम ! प्रतिमा अंगीकार करनेवाले अनगार महा वेदनावाले व महा निर्जरावाले होते हैं; क्योंकि बारह प्रकार की प्रतिमा अंगीकार करते अनेक प्रकार के कष्ट उपसर्ग होते हैं. २ छठी सातवी नरक के नारकी महा वेदनावाले व अल्प निर्जरावाले हैं ३ शैलेशी प्रतिपन्न चौदहवे गुण स्थान में रहनेवाले अनगार अल्प वेदनावाले व महा निर्जरावाले हैं और ४ सर्वार्थ सिद्ध विमान के देवता अल्प वेदना व अल्प निर्जरावाले हैं. इस उद्देशे का सारांश. महा वेदना का अधिकार, कर्दम व खंजनवाले दो वस्त्रका दृष्टांत, लोहार की ऐरण, तृण व तप्त लोहेका दृष्टांत, चार करण का अधिकार, वेदना निर्जराकी चौभंगी.

शब्दार्थ पृथक् आ० आहार ज० जघन्य दि० दिवस पृथक् उ० उत्कृष्ट दिवस पृथक् ॥ ३९ ॥ वे० वैमानिक को ठि० स्थिति भा० कहना उ० उश्वास ज० जघन्य मु० मुहूर्त पृथक् उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीस प० पक्ष आ० आहार ज० जघन्य दि० दिवस पृथक् उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीसवर्ष स० सहस्र से० शेष तं० तैसे जा० यावत् णि० निर्जरे ए० ऐसे ठि० स्थिति आ० आहार भा० कहना ठि० स्थिति ज० जैसे ठि०

सूत्र वि णवरं उस्सासो जहण्णेणं मुहुत्त पुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि मुहुत्त पुहुत्तस्स आहारो जहण्णेणं दिवस पुहुत्तस्स उक्कोसेणवि दिवस पुहुत्तस्स सेसं तंचेव ॥ ३९ ॥ वेमाणियाणं ठिई भाणियव्वाओहिया, उस्सासो जहण्णेणं मुहुत्त पुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं ॥ आहारो आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं दिवस पुहुत्तस्स उक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं, सेसं तंचेव जाव णिज्जरेंति. एवं ठिती आहारो य भाणियव्वो.

भावार्थ उश्वास जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक मुहूर्त आहार की इच्छा जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक दिन में होवे ॥ ३९ ॥ वैमानिक देवताओं की स्थिति जघन्य एक पल्योपमकी उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की श्वासोश्वास जघन्य प्रत्येक मुहूर्त में लेवे उत्कृष्ट ३३ पक्ष में लेवे, आभोग निर्वर्तित आहार की इच्छा जघन्य प्रत्येक दिन में होवे. उत्कृष्ट तेत्तीस हजार वर्ष में होवे शेष चलित कर्म की निर्जरा करे वहांतक. सब अधिकार पहिले जैसे कहना. सब जीवों की स्थिति स्थिति पद से जानना व आहार पन्नवणा सूत्र के पहिले आहार उद्देशे में जैसा

शब्दार्थ म० महानिर्जरा वाले छ० छठी स० सातवी पु० पृथ्वी में ने० नारकी म० महावेदनावाले अ० अल्प निर्जरा वाले से० शैलेशी प० प्रतिपन्न अ० अनगार अ० अल्प वेदनावाले म० महानिर्जरा वाले अ० अनुत्तरोपपातिक दे० देव अ० अल्प वे० वेदना वाले अ० अल्प निर्जरा वाले से० वैसे ही भं० भगवन् म० महावेदना व० वस्त्र क० कीचड खं० खंजन अ० एरण त० तृण ह० हस्त क०

सूत्र गारे महावेयणे महानिज्ज, छट्ठसत्तमासु पुढवीसु नेरइया महावेयणा अप्पानिज्जरा, सेलेसि पडिवण्णए अणगारे अप्पवेयणेरे महानिज्जरे, अणुत्तरोववाइया देवा अप्पवेयणा अप्पानिज्जरा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ महावेयणायवत्थे, कद्दम खंजण कएय अहिगरणी, तणहत्थयकवल्ले, करण महावेयणा जीवा ॥ सेवं भंते

भावार्थ हैं ? अहो गौतम ! प्रतिमा अंगीकार करनेवाले अनगार महा वेदनावाले व महा निर्जरावाले होते हैं; क्यों कि बारह प्रकार की प्रतिमा अंगीकार करते अनेक प्रकार के कष्ट उपसर्ग होते हैं. २ छठी सातवी नरक के नारकी महा वेदनावाले व अल्प निर्जरावाले हैं ३ शैलेशी प्रतिपन्न चौदहवे गुण स्थान में रहनेवाले अनगार अल्प वेदनावाले व महा निर्जरावाले हैं और ४ सर्वार्थ सिद्ध विमान के देवता अल्प वेदना व अल्प निर्जरावाले हैं. इस उद्देशे का सारांश. महा वेदना का अधिकार, कर्दम व खंजनवाले दो वस्त्रका द्रष्टांत, लोहार की ऐरण, तृण व तप्त लोहेका द्रष्टांत, चार करण का अधिकार, वेदना निर्जराकी चौभंगी.

शब्दार्थ

करण से सा० साता वे० वेदना वे० वेदते हैं ॥ ८ ॥ जी० जीव किं० क्या म० महावेदना वाले म० महानिर्जरा वाले म० महावेदना वाले अ० अल्प निर्जरा वाले अ० अल्प वेदना वाले म० महानिर्जरा वाले अ० अल्प वेदना वाले अ० अल्प निर्जरावाले गो०गौतम अ० कितनेक जी० जीव म० महावेदनावाले म० महानिर्जरा वाले के० कैसे प० प्रतिमा प० प्रतिपन्न (सहित) अ० अनगार म० महावेदनावाले

सूत्र

सव्वे सुभासुभेणं वेमायाए, ॥ देवा सुभेणं सायवेयणं वेदंति, ॥ ८ ॥ जीवाणं भंते किं महावेयणा महानिज्जरा, महावेयणा अप्पनिज्जरा, अप्पवेयणा महानिज्जरा, अ-अप्पवेयणा अप्पानिज्जरा? गोयमा! अत्थेगइया जीवा महावेयणा महानिज्जरा, अत्थेगइया जीवा महावेयणा अप्पानिज्जरा, अत्थेगइया जीवा अप्पवेयणा महानिज्जरा, अत्थेगइया जीवा अप्पवेयणा अप्पानिज्जरा ॥ से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पडिमापडिवण्णए अण-

भावार्थ

र्म वेदते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या जो जीव महा वेदनावाला होता है वह महा निर्जरावाला होता है, महा वेदनावाला अल्प निर्जरावाला होता है, अल्प निर्जरावाला महा वेदनावाला होता है, या अल्प वेदनावाला अल्प निर्जरावाला होता है ? अहो गौतम ! कितनेक जीव महा वेदनावाले व महा निर्जरावाले हैं, कितनेक महा वेदनावाले व अल्प निर्जरावाले हैं, कितनेक अल्प वेदनावाले व महा निर्जरावाले हैं, और कितनेक अल्प वेदनावाले व अल्प निर्जरावाले हैं. अहो भगवन् ! यह किस तरह

शब्दार्थ व० बहुत क० कर्म व० वस्त्र पो० पुद्गल प० प्रयोगसे वी० स्वभाव से सा० आदिसहित क० कर्म स्थिति इ० स्त्री सं० संयति स० सम्यक् दृष्टि स० संज्ञी भ० भव्य दं० दर्शन प० पर्याप्त भा० भाषक अ० अपरत ना० ज्ञान जो० योग उ० उपयोग आ० आहारक सू० सूक्ष्म च० चरिम बं० बंध अ० अल्पाबहुत्व से० अथ णू० शंकादर्शी भं० भगवन् म० महाकर्मवाले म० महा आश्रव वाले म० महाक्रिया वाले त० महा-

सूत्र बहुकम्म वत्थ पोग्गल पयोगसा वीससाय सादीए ॥ कम्मट्ठिइत्थि संजय, सम्मद्दिट्ठीय सन्नीय ॥ १ ॥ भविए दंसण पज्जत्त, भास अपरित्त नाण जोगेय ॥ उवओगाहारग सुहम चरिमबंधेय अप्पबहुं ॥ २ ॥ से णूणं भंते ! महाकम्मस्स, महासवस्स महाकिरियस्स, महावेयणस्स, सव्वओ पोग्गला बज्झंति, सव्वओ पोग्गला चिज्जंति,

भावार्थ दूसरे उद्देशे में आहार का अधिकार कहा. आहारिक जीव सकर्मी होते हैं इसलिये कर्मबंध का सम्बन्ध कहते हैं. जैसे आदि में स्वभाव से व प्रयोग से पुद्गलों एकत्रित होकर वस्त्र बनता है वैसे ही महाकर्म से पुद्गल का बंध करे, कर्म की स्थिति, स्त्री पुरुष कर्म का बंध करे, संयति, दृष्टिद्वार, संज्ञी, भवि, दर्शन, पर्याप्त, भाषक परत, ज्ञान, जोग, उपयोग, आहारक, सूक्ष्म, चरिम, बंध व अल्पाबहुत्व. अहो भगवन् ! स्थिति आदि की अपेक्षा से महाकर्मी, मिथ्यात्वादिक की अपेक्षा से महा आश्रवी, कायिकादि क्रिया से महा क्रियावंत, और साता असाता रूप वेदना से महा वेदनावंत जीव को सब दिशी के

शब्दार्थ छोडे क० कीला क० करण म० महावेदना जी० जीव छ० छट्टा स० शतकका प० प्रथम उ० उद्देशा॥६॥१॥
रा० राजगृह ने० नगर जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले आ० आहार उ० उद्देशा जो० प० पन्नवणा में स० सब नि० निरवशेष ने० जानना. छ० छट्टा स० शतक का वि० दूसरा उ० उद्देशा स० समाप्त॥६॥२

सूत्र भंतेत्ति ॥ छट्ठ सयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥ १ ॥ ×

रायगिहं णगरं जाव एवं वयासी-आहारुद्देसो जो पण्णवणाए सव्वो निरवसेसो नेयव्वो ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ छट्ठसयस्स बिइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥ २ ॥

भावार्थ अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह छठा शतक का पहिला उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ६ ॥ १ ॥

प्रथम उद्देशे में वेदना का अधिकार कहा. वह वेदना आहारवन्त जीव को होती है इसलिये आगे आहार का अधिकार कहते हैं. राजगृही नगरी में गुण शील नामक उद्यान में श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को भगवान् गौतम स्वामी वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन् ! नरक के जीवोंको क्या सचित्त, अचित्त, या मीश्र का आहार है ? अहो गौतम ! नरक के जीवों सचित्त अचित्त का आहार करते हैं परंतु मीश्र का आहार नहीं करते हैं. इत्यादि आहार संबंधी सब वर्णन पन्नवणा सूत्र जैसे जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह छठा शतक का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥६॥२॥

शब्दार्थ वाले को तं० वैसे ही से० अथ के० कैसे गो० गौतम ज० जैसे व० वस्त्र अ० नहीं भोगवा हुवा धो० धोया हुवा त० तंतुमें रहा हुवा आ० अनुक्रम से प० भोगवते हुवे स० चारों तरफ से पो० पुद्गल ब० बंधाते हैं स० चारों तरफ से पो० पुद्गल चि० चयहोते हैं उ० उपचय होते हैं जा० यावत् प० परिणमते हैं तं० इसलिये ॥ १ ॥ से० अथ भं० भगवन् अ० अल्प आश्रव वाले को अ० अल्प कर्म वाले को

सूत्र दुक्खत्ताए नो सुहत्ताए, भुज्जो भुज्जो परिणमंति ? हंता गोयमा ! महाकम्मस्स तंचेव सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! से जहा नामए वत्थस्स अहतस्सवा, धोयस्सवा, तंतुगयस्सवा आणुपुव्वीए परिभुंजमाणस्स सव्वओ पोग्गला बज्झंति, सव्वओ पोग्गला चिज्जंति, जाव परिणमंति सेतेणट्ठेणं ॥ १ ॥ सेणूणं भंते ! अप्पासवस्स अप्पकम्मस्स, अप्पकिरियस्स, अप्पवेयणस्स, सव्वओ पोग्गला भिज्जंति, सव्वओ पोग्गला

भावार्थ जैसे उपयोग में नहीं लाया हुवा, धोया हुवा अथवा तुरिवेमादिक (साल) से मात्र निकाला हुवा ऐसा वस्त्र को भोगते हुवे उस में मलिन पुद्गलों का बंध, चय, व उपचय होता है और वह वस्त्र भी खराब वर्णपने यावत् वारंवार परिणमता है वैसे ही महाकर्म, महाआश्रववाले को संचित किये हुवे पुद्गलों दुष्ट वर्णपने यावत् वारंवार परिणमते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! अल्प कर्मवाले, अल्प आश्रववाले, अल्प क्रियावाले व अल्प वेदनावाले पुरुष को सब दिशि के पुद्गलों क्या भेदाते हैं, छेदाते हैं, विध्वंस होते हैं,

शब्दार्थ वदना वाले म० सब से पो० पुद्गल ब० बंधाते हैं म० सब पो० पुद्गल चि० चयहोते हैं उ० उपचय होते हैं स० सदा स० निरंतर त० उस का आ० आत्मा दु० दुष्टरूपपने दु० दुष्ट वर्णपने दु० दुष्ट गंध पने दु० दुष्ट रसपने दु० दुष्ट स्पर्श पने अ० अनिष्ट अ० अकांत अ० अप्रिय, अ० अशुभ अ० अमनोज्ञ अ० अमणाम अ० नहीं इच्छने योग्यपने अ० नहीं चितवने योग्य अ० जघन्यपने नो० नहीं उ० मुख्यपने दु० दुःखपने नो० नहीं सु० सुखपने भु० वारंवार प० परिणमते हैं हं० हां गो० गौतम म० महाकर्म

सूत्र

सव्वओ पोग्गला उवचिज्जंति, सयासमियं पोग्गला बज्झंति, सयासमियं पोग्गला चिज्जंति, सयासमियं पोग्गला उवचिज्जंति, सयासमियं च णं तस्स आया दुरूवत्ताए, दुवण्णत्ताए, दुगंधत्ताए दुरसत्ताए, दुफासत्ताए, अणिट्ठत्ताए, अकंत-अप्पिय-असुभ अमणुण्ण-अमणामत्ताए-अणिच्छियत्ताए, अभिज्झियत्ताए, अहत्ताए, नोउड्ढत्ताए,

भावार्थ अथवा जीव के सब प्रदेश आश्रित पुद्गलों का क्या बंध, चय, व उपचय होता है ? अथवा सदैव निरन्तर उन पुद्गलों का बंध, चय व उपचय होता है ? और जिन को कर्म का बंध, चय व उपचय होता है उन का आत्मा [बाह्यात्मा] क्या दुष्ट वर्ण, गंध, रस, व स्पर्शपने, अनिष्ट, अकांत, अप्रिय, अमनोज्ञ व अ-मनामपने, अथवा नहीं इच्छने योग्य, नहीं चितवने योग्यपने, जघन्यपने, मुख्यपने, व दुःखपने, वारंवार परिणमता है ? हां गौतम ! सब वैसे ही होता है. अहो भगवन् ! यह किस तरह ? अहो गौतम !

शब्दार्थ भि० भेदाते हैं जा० यावत् प० परिणमते है ते० इसलिये ॥ २ ॥ वं० वस्त्र के भं० भगवन् पो० पुद्गलों का उ० उपचय किं० क्या प० प्रयोग से वी० स्वभाव से गो० गौतम प० प्रयोग से भी वी० स्वभाव से भी ज० जैसे त० तैसे क० कर्मों का उ० उपचय किं० क्या प० प्रयोग से नो० नहीं वी० स्वभाव से के० कैसे गो० गौतम प० प्रयोग से वी० स्वभाव से गो० गौतम प० प्रयोग से

सूत्र भिज्जंति जाव परिणमंति. से तेणट्ठेणं ॥ २ ॥ वत्थस्सणं भंते ! पोग्गलोवचये किं पयोगसा वीससा ? गोयमा ! पयोगसावि, वीससावि, जहाणं भंते ! वत्थस्सणं पोग्गलोवचये पयोगसावि, वीससावि, तहाणं जीवाणं कम्मोवचए, किं पयोगसा, वीससा ? गोयमा ! पयोगसा नो वीससा । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवाणं तिविहे पओगे पण्णत्ते तंजहा मणप्पओगे, वइप्पओगे, कायप्पओगे, इच्चेतेणं तिविहेणं पयो-

भावार्थ क्रिया व वेदनावाले को कर्म पुद्गल छेदाते भेदाते हैं और उन का आत्मा सुखपने परिणमता है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! वस्त्र के पुद्गलों का उपचय क्या स्वभाव से होता है या प्रयोग से होता है ? अहो गौतम ! वस्त्र के पुद्गलों का उपचय स्वभाव से होता है परंतु प्रयोग से नहीं होता है. अहो भगवन् ! जैसे वस्त्र के पुद्गलों का उपचय प्रयोग व स्वभाव दोनों से होता है वैसे ही क्या जीव के कर्मों का उपचय स्वभाव से होता है. -या प्रयोग से होता है ? अहो गौतम ! जीवों को कर्मों का उपचय स्वभाव से

शब्दार्थ अ० अल्प क्रिया वाले को अ० अल्प वेदना वाले को स० सब से पो० पुद्गल भि० भेदाते हैं छि० छेदाते हैं वि० विनाश पाते है प० वारंवार विनाशपाते हैं स० सदैव त० उस का आ० आत्मा सु० रूपपने प० प्रशस्त ने० जानना जा० यावत् सु० सुखपने भु० वारंवार प० परिणमते है हं० हां गो० गौतम जा० यावत् प० परिणमते हैं के० कैसे गो० गौतम व० वस्त्र ज० मेला पं० कीचड वाला, म० कठिन मेलवाला र०रजयुक्त आ०अनुक्रमसे प०पराक्रम करते सु०शुद्ध पा०पानीसे धो०धोते स०सब पो०पुद्गल

मूल छिज्जंति,सव्वओ पोग्गला विद्धंसंति सव्वओ पोग्गला परिविद्धंसंति, सयासमियं पोग्गला भिज्जंति,छिज्जंति,विद्धंसंति,परिविद्धंसंति,सयासमियंचणं तस्स आयारूवत्ताए पसत्थं नेयव्वं जाव सुहत्ताए, नो दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ? हंता गोयमा! जाव परिणमइ। से केणट्ठेणं? गोयमा! से जहा नामए वत्थस्स जल्लियस्सवा, पंकियस्सवा, मइलियस्सवा, रतिल्लियस्सवा आणुपुव्वीए परिकम्मिज्जमाणस्स सुद्धेणं वारिणा धोव्वमाणस्स सव्वओ पोग्गला

भावार्थ या परिविध्वंस होते हैं? अथवा सदैव निरंतर पुद्गल भेदाते हैं यावत् विशेष नष्ट होते हैं. उस का आत्मा अच्छे रूप, वर्ण, गंध, रस व स्पर्शपने यावत् सुखपने वारंवार क्या परिणमता है? हां गौतम! ऐसा होता है. अहो भगवन्! यह किस तरह? अहो गौतम! जैसे मेल, कीचड व रज से भरा हुवा वस्त्र को शुद्ध पानी से धोने से सब मलिन पुद्गलों नष्ट हो जाते हैं वैसे ही अल्प कर्म, आश्रव,

शब्दार्थ जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ३ ॥ व० वस्त्र के० भं० भगवन् पो० पुद्गलोपचय में किं० क्या सा० आदि स० सान्त सा० सादि अ० अनंत अ० अनादि स० सांत अ० अनादि अ० अनंत ज० जैसे भं०

सूत्र एवं जस्स जोप्पओगो जाव वेमाणियाणं ॥ ३ ॥ वत्थस्सणं भंते ! पोग्गलोवचए किं सादीए सपज्जवसिए, सादीए अपज्जवसिए, अणादीए, सपज्जवसिए, अणादीए अपज्जवसिए ? गोयमा ! वत्थस्सणं पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नोसादिए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए नोअणादीए अपज्जवसिए ॥ जहाणं भंते ! वत्थस्स पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नोसादीए अपज्जवसिए णो अणादीए सपज्जवसिए नोअणादीए अपज्जवसिए, तहाणं जीवाणं कम्मोवचए पुच्छा, गोयमा !

भावार्थ जो प्रयोग होवे वैसा वैमानिक तक जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! वस्त्र का पुद्गलोपचय क्या आदि अंत-वाला है, आदि अंत रहित है, अनादि सान्त है व अनादि अनंत है ? अहो भगवन् ! वस्त्र के पुद्गलों का उपचय आदि सान्त है. इस में शेष तीन भांगे नहीं मिल सकते हैं. अहो भगवन् ! जैसे वस्त्र का पुद्गलोपचय सादि सान्त, परंतु सादि अनंत, अनादि सान्त व अनादि अनंत नहीं है वैसे ही क्या कर्म का उपचय सादि सान्त यावत अनादि अनंत है ? अहो गौतम ! कितनेक जीवों का कर्मोपचय सादिसान्त है, कितनेक को अनादि सांत है और कितनेक को अनादि अनंत है परंतु सादि अनंत नहीं

शब्दार्थ जी० जीवों को. ति० तीन प० प्रयोग प० प्रयोग से जी० जीव क० कर्मोपचय प० प्रयोग से नो० नहीं वी० स्वभाव से ए० ऐसे स० सब पं० पंचेन्द्रिय को ति० तीन प० प्रयोग भा० कहा पु० पृथ्वीकाय ए० एक प० प्रयोग से ए० ऐसे जा० जावत् व० वनस्पति का० काया वि० विकलेन्द्रिय दु० दोप्रकार के प० प्रयोग प० कहे व० वचन प्रयोग का० काय प्रयोग ए० ऐसे ज० जिन को जो० जो प० प्रयोग

सूत्र गेणं जीवाणं कम्मोवचये पयोगसा नो वीससा, एवंसव्वेसिं पंचिंदियाणं तिविहे पयोगे भाणियव्वे, ॥ पुढविकाइयाणं एग विहपओगेणं, एवं जाव वणस्सइ काइया, ॥ विगलिंदियाणं- दुविहे पओगे पण्णत्ते तंजहा-वइप्पयोगेय, कायप्पओगेय, इच्चेतेणं दुविहेणं पयोगेणं कम्मोवचये पयोगसा नोवीससा से एणं अट्ठेणं जाव नो वीससा ॥

भावार्थ नहीं होता है परंतु प्रयोग से होता है. अहो भगवन् ! किस प्रकार जीवों को प्रयोग से कर्म पुद्गलों का उपचय होता है ? अहो गौतम ! जीवों को तीन प्रकार का प्रयोग कहा. १ मन प्रयोग, २ वचन प्रयोग व ३ काय प्रयोग. इन तीन प्रयोग से जीव कर्मों का उपचय करते हैं परंतु स्वभाव से नहीं करते हैं. ऐसे ही सब पंचेन्द्रिय का जानना. पृथ्वीकायिकादिक पांच स्थावर को मात्र एक काय प्रयोग है और विकलेन्द्रिय को काया व वचन ऐसे दो प्रयोग हैं. इसलिये पांच स्थावर एक काया का प्रयोग से व विकलेन्द्रिय काया व वचन ऐसे दोनों के प्रयोग से कर्म का उपचय करते हैं, इस तरह जिन को

शब्दार्थ अप्रमत्त संयति त० तहां जे० जो अ० अप्रमत्त संयतिं ते० वे णो० नहीं आ० आत्मारंभी णो० नहीं प० परारंभी जा० यावत् अ० अनारंभी त० तहां जे० जो प० प्रमत्त संयति ते० वे सु० शुभयोग प० आश्रित णो० नहीं आ० आत्मारंभी जा० यावत् अ० अनारंभी अ० अशुभयोग प० आश्रित आ० आत्मारंभी जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारंभी तं० तहां जे० जो० अ० असंयति ते० वे अ० अविरति

सूत्र आयारंभा जाव अणारंभा ॥ तत्थणं जे ते संसार समावण्णगा, तेदुविहा प०, तं० संजयाय, असंजयाय । तत्थणं जे ते संजया, ते दुविहा प०, तं० पमत्त संजयाय, अपमत्त संजयाय । तत्थणं जे ते अपमत्त संजया तेणं णो आयारंभा, णो परारंभा जाव अणारंभा । तत्थणं जे ते पमत्त संजया ते सुहंजोगं पडुच्च णो आयारंभा,

भावार्थ गतिरूप संसार में अनंत वक्त परिभ्रमण करके समस्त कर्म क्षयरूप स्थानक सो मोक्ष को प्राप्त हुवे उन को सिद्ध कहते हैं. वे सिद्ध आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी नहीं हैं. परंतु अनारंभी हैं. और जो संसार समावन्न जीव हैं वे दो प्रकार के कहे हैं संयति सो चारित्र सहित व असंयति सो चारित्र रहित. उस में संयति के दो भेद १ प्रमत्त संयति २ अप्रमत्त संयति. जो सप्तम गुणस्थान वर्ती अप्रमत्त संयति हैं वे आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं. और जो छट्ठे गुणस्थानवर्ती प्रमत्त संयति हैं वे शुभ योग आश्रित आत्मारंभी, परारंभी, व उभयारंभी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं,

शब्दार्थ भगवन् व० वस्त्र का पो० पुद्गलोपचय सा० सादि स० सान्त त० तैसे जी० जीवों को क० कर्मोपचय में पु० पृच्छा गो० गौतम अ० कितनेक जी० जीवों को क० कर्मोपचय सा० सादी स० सान्त अ० कितनेक अ० अनादि स० सान्त अ० कितनेक अ० अनादि अ० अनंत नो० नहीं सा० सादि अ० अनंत के० कैसे गो० गौतम इ० ईर्यापथिक बं० बंध के क० कर्मोपचय सा० सादि स० सान्त भ० भवसिद्धिक क० कर्मोपचय अ० अनादि स० सान्त अ० अभवसिद्धिये का क० कर्मोपचय अ० अनादि

सूत्र अत्थेगइयाणं जीवाणं कम्मोवचए, सादीए सपज्जवसिए, अत्थेगइए अणादीए सपज्जवसिए अत्थेगइए अणादीए अपज्जवसिए, नोचेवणं जीवाणं कम्मोवचए सादीए अपज्जवसिए से केणट्ठेणं ? गोयमा ! इरियावहियावंधस्स कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए, भवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणादीए सपज्जवसिए, अभवसिद्धियस्स कम्मोवचए

भावार्थ है. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! ईर्यापथिक बंध का कर्मोपचय सादिसान्त है. क्योंकि उपशान्त व क्षीण मोहनीय गुणस्थानवर्ती जीव ऐसा कर्मबंध करते हैं कि जो पहिले समय में बांधते हैं, दूसरे समय में वेदते हैं और तीसरे समय में निर्जरते हैं. भवसिद्धिक जीवों को अनादिसान्त है क्योंकि उन के कर्मों की आदि नहीं है परंतु वे कर्मों का क्षय करके मोक्ष में जावेंगे इसलिये सान्त है अभवसिद्धिको कर्मोपचय अनादि अनंत है. क्योंकि उन को कर्मों की आदि नहीं होती है वैसे ही वे

अ० अनंत ते० इसलिये ॥ ४ ॥ व० वस्त्र भं० भगवन् किं० क्या सा० सादि स० सांत च० चार भांगे गो० गौतम व० वस्त्र सा० सादि स० सांत अ० शेष ती० तीन का प० प्रतिषेध ज० जैसे भं० भगवन् सा० सादि स० सांत त० तैसे जी० जीव किं० क्या सा० सादि स० सान्त च० चार भांगे पु० पृच्छा गो० गौतम सा० सादि सा० सान्त च० चारों भा० कहना के० कैसे गो० गौतम ने०

सूत्र

अणादीए अपज्जवसिए से तेणट्ठेणं ॥ ४ ॥ वत्थेणं भंते ! किं सादीए सपज्जवसिए चउभंगो ? गोयमा ! वत्थे सादीए सपज्जवसिए अवसेसा तिण्णिवि पडिसेहेयव्वा जहाणं भंते ! वत्थे सादीए सपज्जवसिए नो सादीए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, णो अणादीए अपज्जवसिए ॥ तहा जीवा किं सादीया सपज्जवसिया चउभंगो,

भावार्थ

मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकते हैं इसलिये ऐसा कहागया है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! क्या वस्त्र सादिसान्त, सादि अनंत, अनादिसान्त व अनादि अनंत है ? अहो गौतम ! वस्त्र में सादिसान्त भांगा मिलता है. शेष तीन भांगे नहीं मीलते हैं. अहो भगवन् ! जैसे वस्त्र सादिसान्त है वैसे ही जीव क्या सादिसान्त, सादि अनंत, अनादिसान्त, व अनादि अनंत है ? अहो गौतम ! जीव में चारों भांगे पाते हैं. अहो भगवन् ! यह किस तरह ! अहो गौतम ! नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव इन चारों गति आश्रित सादिसान्त हैं क्योंकि उक्त चारों गति में जीव उत्पन्न होते हैं सो आदि और चवते हैं सो अंत, सिद्ध-

शब्दार्थ — नारकी ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव ग० गति आ० आगति प० संबंधी सा० सादि स० सान्त सि० सिद्धगति प० आश्रित सा० सादि अ० अनंत भ० भवसिद्धिक ल० लब्धि प० आश्रित अ० अनादि स० सान्त अ० अभवसिद्धिक सं० संसार प० आश्रित अ० अनादि अ० अनंत ते० इसलिये ॥ ५ ॥ क० कितनी भं० भगवन् क० कर्म प्रकृति प० कही गो० गौतम अ० आठ क० कर्म प० प्रकृतियों प० कहीं णा० ज्ञाना वरणीय दं० दर्शना वरणीय जा० यावत् अं० अंतराय ना०

सूत्र — पुच्छा ? गोयमा ! सादीया सपज्जवसिया चत्तारि वि भाणियव्वा ॥ से केणट्ठेणं ? गोयमा ! नेरइय तिरिक्ख जोणिय मणुस्स देवा गइरागइं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया ॥ सिद्धगतिं पडुच्च सादीया अपज्जवसिया, भवसिद्धिया लद्धिं पडुच्च अणादिया सपज्जवसिया, अभवसिद्धिया संसारपडुच्च अणादीया अपज्जवसिया से तेणट्ठेणं ॥५॥

भावार्थ — गति आश्रित सादि अनंत है क्योंकि सिद्धगति में उत्पन्न होने का है परंतु चवने का नहीं है. भवसिद्धिकी लब्धि आश्री अनादि सान्त है क्योंकि जीव को स्वभाव से भवसिद्धिकी लब्धि होती है परंतु जब सिद्ध होते हैं उस समय में लब्धि का क्षय होता है और अभवसिद्धिक संसार आश्री अनादि अनंत है. इसलिये जीव में चार भांगे ग्रहण किये हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! कर्म प्रकृतियों कितने प्रकार की कही हैं अहो गौतम ! १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयुष्य, ६ नाम,

पदार्थ ज्ञानावरणीय क० कर्म की के० कितना का० काल की बं० बंधस्थिति गो० गौतम ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट ती० तीस सागरोपम को० कोडी ति० तीन वा० वर्ष स० सहस्र अ० अबाधा अ० अबाधा ऊ० कम क० कर्म स्थिति क० कर्म निषेक ए० ऐसे दं० दर्शनावरणीय वे० वेदनीय का

सूत्र कइणं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठकम्मपगडीओ पण्णत्ताओ तंजहा णाणावराणिज्जं, दरिसणावराणिज्जं, जाव अंतरायं ॥ नाणावराणिज्जस्सणं भंते ! कम्मस्स केवइयं कालं बंधट्ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं तीसं सागरोवम कोडाकोडीओ, तिण्णियवाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया, कम्मट्ठिई कम्मनिसेओ ॥ एवं दरिसणावराणिज्जंपि ॥ वेयणिज्जं जहण्णं दो समया उ-

भावार्थ गोत्र व ८ अंतराय ऐसे आठ कर्मप्रकृतियों कही हैं. अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म की कितने काल की बंधस्थिति कही है ? अहो गौतम ! ज्ञानावरणीय की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीस क्रोडा-क्रोड सागरोपम की स्थिति व तीन हजार वर्ष का अबाधा[1] काल कहा है, इस अबाधा काल से कर्म स्थिति व कर्म निषेक[2] कम होता है. ऐसे ही दर्शनावरणीय कर्म का जानना. वेदनीय की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त

१ कर्म बंध हुए पीछे उदय में आवे उस के बीच का अंतर को अबाधा काल कहते हैं. २ उदय आये पीछे समय २ में हीन रस होवे.

शब्दार्थ

ज० जघन्य दो० दोसमय उ० उत्कृष्ट ज० जैसे ना० ज्ञानावरणीय मो० मोहनीय ज० जघन्य अं० अंत मुहूर्त उ० उत्कृष्ट स० सीत्तर सा० सागरोपम को० क्रोडा क्रोड स० सात वा० वर्ष स० सहस्र जा० यावत् आ० आयुष्य ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट ते० तेत्तीस सा० सागरोपम पु० पूर्व क्रोड ती० तीन भा० भाग म० मध्य अ० अधिक क० कर्म स्थिति क० कर्म ना० नाम गो० गोत्र ज० जघन्य अ० आठ मुहूर्त उ० उत्कृष्ट वी० वीसं सा० सागरोपम को० क्रोडा क्रोड दो० दो वा० वर्ष स० सहस्र

सूत्र

कोसं जहा नाणावरणिज्जं ॥ मोहणिज्जं जहण्णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं सत्तरि सागरोवम कोडाकोडीओ, सत्तयवास सहस्साणि जाव निसेओ ॥ आउगं जहण्णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं तेत्तीसं सागरोवमाणि, पुव्वकोडि तिभागमज्झाहियाणि कम्मट्ठिई कम्मनिसेओ ॥ नाम गोयाणं जहण्णं अट्ठमुहुत्ता उक्कोसं वीसं सागरोवम कोडाकोडीओ, दोण्णिय वास सहस्साणि, अबाहा, अबाहूणिया, कम्मट्ठिई कम्मनिसेओ ॥ अंत-

भावार्थ

उत्कृष्ट तीस क्रोडाक्रोड सागरोपम. अबाधा काल तीन हजार वर्ष का. मोहनीय कर्म की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ७० क्रोडाक्रोड सागरोपम अबाधा काल ७ हजार वर्ष. आयुष्य की जघन्य अंत मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम व क्रोड पूर्व का तीसरा भाग अधिक. नाम व गोत्र की जघन्य आठ मुहूर्त उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम. अबाधा काल दो हजार वर्ष का. अंतराय की जघन्य अंतर्मुहूर्त

पदार्थ — अ० अबाधा अ० अबाधा से उ० कम क० कर्म स्थिति क० कर्म निषेक अं० अंतराय का ज० जैसे ना० ज्ञानावरणीय ॥ ६ ॥ ना० ज्ञानावरणीय भं० भगवन् क०कर्म किं० क्या इ०स्त्री वं०बांधती है पु०पुरुष वं० बांधता है न० नपुंसक बं० बांधता है नो० नहीं स्त्री नो० नहीं पुरुष नो० नहीं नपुंसक वं० बांधता है गो० गौतम इ० स्त्री भी बं० बांधती है पु० पुरुष भी वं० बांधता है, न० नपुंसक भी बं० बांधता है नो० नहीं स्त्री नो० नहीं पुरुष नो० नहीं नपुंसक वं० बांधता है ए० ऐसे आ० आयुष्य व० छोडकर स० सात

सूत्र — राइयं जहा नाणावराणिज्जं ॥ ६ ॥ नाणावराणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ, पुरिसो बंधइ, नपुंसओ बंधइ, नो इत्थी नो पुरिसो नो नपुंसओ बंधइ ? गोयमा ! इत्थीत्रि बंधइ, पुरिसोत्रि बंधइ, नपुंसओत्रि बंधइ, नो इत्थी नो पुरिसो नो नपुंसओ सिय बंधइ सिय नो बंधइ ॥ एवं आउगवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ ॥ आउगं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ, पुरिसो बंधइ, पुच्छा ? गोयमा ! इत्थी सिय बंधइ, सिय

भावार्थ — उत्कृष्ट तीस क्रोडाक्रोड सागरोपम की. अबाधा काल तीन हजार वर्ष का ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म क्या स्त्री बांधती है, पुरुष बांधता है, नपुंसक बांधता है या इन तीनों वेद रहित अवेदी बांधता है ? अहो गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्म का बंध स्त्री पुरुष व नपुंसक तीनों ही करते हैं. नवते दशवे गुणस्थान में रहनेवाले अवेदी ज्ञानावरणीय का बंध करते हैं अग्यारहवे, बारहवे तेरहवे व चौदहवे

शब्दार्थ क० कर्म प्रकृतियों ॥ ७ ॥ ना० ज्ञानावरणीय किं० क्या सं० संयति बं० बांधता है अ० असंयति बं० बांधता है ए० ऐसे सं० संयतासंयति बं० बांधता है नो० नहीं संयती नो० नहीं असंयती नो० नहीं संयता संयती बं० बांधता है ए० ऐसे आ० आयुष्य वर्जित स० सात आ० आयुष्य हे० नीचे के ति०

सूत्र

नो बंधइ, एवं तिन्निवि भाणियव्वा ॥ नो इत्थी नो पुरिसो नो नपुंसओ न बंधइ ॥ ७ ॥ णाणावरणिज्ज णं भंते ! कम्मं किं संजए बंधइ, असंजए बंधइ, एवं संजयासंजए बंधइ, नो संजए नो असंजए नो संजयासंजए बंधइ ? गोयमा ! संजए सियबंधइ सियनोबंधइ, असंजए बंधइ, संजयासंजएवि बंधइ नो संजए नो असंजए नो संजयासंजए न बंधइ । एवं आउगवज्जाओ सत्तवि, आउगे हे

भावार्थ

गुणस्थानवाले अवेदी ज्ञानावरणीय का बंध नहीं करते हैं. ऐसे आयुष्य कर्म छोडकर शेष सब कर्मों का अवेदी सवेदी आश्री जानना. आयुष्य कर्म का बंध तीनों वेदवाले क्वचित् करते हैं व क्वचित् नहीं करते हैं. अवेदी आयुष्य का बंध नहीं करते हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म का बंध क्या संयति करते हैं, असंयति करते हैं, संयतासंयति करते हैं, व नो संयति नो असंयति नो संयतासंयति (सिद्ध) करते हैं ? अहो गौतम ! संयति ज्ञानावरणीय कर्म का बंध क्वचित् करते हैं व क्वचित् नहीं करते हैं. असंयति व संयतासंयति ज्ञानावरणीय का बंध निश्चयही करते हैं.

शब्दार्थ अ० अबाधा अ० अबाधा से ऊ० कम क० कर्म स्थिति क० कर्म निषेक अं० अंतराय का ज० जैसे ना० ज्ञानावरणीय ॥ ६ ॥ ना० ज्ञानावरणीय भं० भगवन् क० कर्म किं० क्या इ० स्त्री बं० बांधती है पु० पुरुष बं० बांधता है न० नपुंसक बं० बांधता है नो० नहीं स्त्री नो० नहीं पुरुष नो० नहीं नपुंसक बं० बांधता है गो० गौतम इ० स्त्री भी बं० बांधती है पु० पुरुष भी बं० बांधता है, न० नपुंसक भी बं० बांधता है नो० नहीं स्त्री नो० नहीं पुरुष नो० नहीं नपुंसक बं० बांधता है ए० ऐसे आ० आयुष्य व० छोडकर स० सात

सूत्र राइयं जहा नाणावरणिज्जं ॥ ६ ॥ नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ, पुरिसो बंधइ, नपुंसओ बंधइ, नो इत्थी नो पुरिसो नो नपुंसओ बंधइ ? गोयमा ! इत्थीवि बंधइ, पुरिसोवि बंधइ, नपुंसओवि बंधइ, नो इत्थी नो पुरिसो नो नपुंसओ सिय बंधइ सिय नो बंधइ ॥ एवं आउगवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ ॥ आउगं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ, पुरिसो बंधइ, पुच्छा ? गोयमा ! इत्थी सिय बंधइ, सिय

भावार्थ उत्कृष्ट तीस क्रोडाक्रोड सागरोपम की. अबाधा काल तीन हजार वर्ष का ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म क्या स्त्री बांधती है, पुरुष बांधता है, नपुंसक बांधता है या इन तीनों वेद रहित अवेदी बांधता है ? अहो गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्म का बंध स्त्री पुरुष व नपुंसक तीनों ही करते हैं. नववे दशवे गुणस्थान में रहनेवाले अवेदी ज्ञानावरणीय का बंध करते हैं अग्यारहवे, बारहवे तेरहवे व चौदहवे

शब्दार्थ क० कर्म प्रकृतियों ॥ ७ ॥ ना० ज्ञानावरणीय किं० क्या सं० संयति बं० बांधता है अ० असंयति बं० बांधता है ए० ऐसे सं० संयतासंयति बं० बांधता है नो० नहीं संयती नो० नहीं असंयती नो० नहीं संयता संयती बं० बांधता है ए० ऐसे आ० आयुष्य वर्जित स० सात आ० आयुष्य हे० नीचे के ति०

सूत्र नो बंधइ, एवं तिन्निवि भाणियव्वा ॥ नो इत्थी नो पुरिसो नो नपुंसओ न बंधइ ॥ ७ ॥ णाणावरणिज्ज णं भंते ! कम्मं किं संजए बंधइ, असंजए बंधइ, एवं संजयासंजए बंधइ, नो संजए नो असंजए नो संजयासंजए बंधइ ? गोयमा ! संजए सियबंधइ सियनोबंधइ, असंजए बंधइ, संजयासंजएवि बंधइ नो संजए नो असंजए नो संजयासंजए न बंधइ। एवं आउगवज्जाओ सत्तवि, आउगे हे

भावार्थ गुणस्थानवाले अवेदी ज्ञानावरणीय का बंध नहीं करते हैं. ऐसे आयुष्य कर्म छोडकर शेष सात कर्मों का अवेदी सवेदी आश्री जानना. आयुष्य कर्म का बंध तीनों वेदवाले क्वचित् करते हैं व क्वचित् नहीं करते हैं. अवेदी आयुष्य का बंध नहीं करते हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म का बंध क्या संयति करते हैं, असंयति करते हैं, संयतासंयति करते हैं, व नो संयति नो असंयति नो संयता-संयति (सिद्ध) करते हैं ? अहो गौतम ! संयति ज्ञानावरणीय कर्म का बंध क्वचित् करते हैं व क्वचित् नहीं करते हैं. असंयति व संयतासंयति ज्ञानावरणीय का बंध निश्चयही करते हैं.

शब्दार्थ तीन भ० भजना उ० उपर का न० नहीं वं० बांधता है ॥ ८ ॥ ना० ज्ञानावरणीय किं० क्या स० सम्यग् दृष्टि वं० बांधता है मि० मिथ्यादृष्टि वं० बांधता है स० सम्यग्मिथ्या दृष्टि वं० बांधता है

सूत्र ट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए उवरिल्लो न बंधइ ॥ ८ ॥ नाणावराणिज्जं भंते ! कम्मं किं सम्मादिट्ठी बंधइ, मिच्छादिट्ठी बंधइ, सम्मामिच्छादिट्ठी बंधइ ? गोयमा ! सम्मादिट्ठी सियबंधइ सिय नोबंधइ, मिच्छादिट्ठी बंधइ, सम्मामिच्छदिट्ठी बंधइ । एवं आउगवज्जाओ सत्तवि, आउएहेट्ठिल्ला दो भयणाए सम्मामिच्छदिट्ठी नबंधइ ॥ ९ ॥ नाणावरणं

भावार्थ परंतु सिद्ध नहीं करते हैं. ऐसे ही आयुष्य छोडकर शेष सात कर्मों का जानना. संयाति, असंयाति व संयतासंयाति आयुष्य का बंध क्वचित् करते हैं व क्वचित् नहीं करते हैं. सिद्ध आयुष्य कर्म का बंध नहीं करते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या समदृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं, मिथ्यादृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं, या समिथ्यादृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं ? अहो गौतम ! समदृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं. मिथ्यादृष्टि व समिथ्यादृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं. ऐसे ही आयुष्य छोडकर शेष सात का जानना. समदृष्टि व मिथ्यादृष्टि आयुष्य कर्म क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं. समिथ्यादृष्टि आयुष्य कर्म नहीं बांधते हैं ॥ ९ ॥ ज्ञाना-

शब्दार्थ

आ० आत्मारंभी णो० नहीं परारंभी णो० नहीं उ० उभयारंभी अ० अनारंभी से० वह के० कीसतरह ए० ऐसा वु० कहा अ० कितनेक जी० जीव आ० आत्मारंभी ए० ऐसे प० पीछा कहना गो० गौतम जी० जीव दु० दोप्रकार के सं० संसारी अ० संसार को अप्राप्त त० तहां जे० जो अ० संसार को अप्राप्त ते० वे सि० सिद्ध णो० नहीं आ० आत्मारंभी जा० यावत् अ० अनारंभी त० तहां जे० जो सं० संसारि ते० वे दु० दोप्रकार के सं०संयति अ०असंयति तं०तहां जे०जो सं०संयति ते०वे दु०दोप्रकार के प० प्रमत्त संयति अ०

सूत्र

णो अणारंभा ॥ अत्थेगइया जीवाणो आयारंभा, णो परारंभा, णो तदुभयारंभा, अणारंभा ॥ से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? अत्थेगइया जीवा आयारंभावि ! एवं पडि उच्चारेयव्वं ॥ गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-संसार समावण्णगाय, असंसार समावण्णगाय ॥ तत्थणं जे ते असंसार समावण्णगाय, तेणं सिद्धा. सिद्धा णं णो

भावार्थ

नहीं है. कितनेक जीव आत्मारंभी नहीं है, परारंभी नहीं है, उभयारंभी भी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं. अहो भगवन् ! कितनेक जीव आत्मारंभी हैं, परारंभी है और उभयारंभी भी है परंतु अनारंभी नहीं है वैसे ही कितनेक जीव आत्मारंभी नहीं है, परारंभी नहीं है, आत्मपरारंभी दोनों नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं. ऐसा जो आपका कथन है वह किस तरह से हैं ? अहो गौतम ! जीव के दो भेद हैं १ संसार में रहनेवाले और २ संसार से मुक्त. उस में जो संसार असमावन्न जीव हैं वे चार

शब्दार्थ तीन भ० भजना उ० उपर का न० नहीं बं० बांधता है ॥ ८ ॥ ना० ज्ञानावरणीय किं० क्या स० सम्यग् दृष्टि बं० बांधता है मि० मिथ्यादृष्टि बं० बांधता है स० सम्यग्मिथ्या दृष्टि बं० बांधता है

सूत्र ट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए उवरिल्लो न बंधइ ॥ ८ ॥ नाणावराणिज्जं भंते ! कम्मं किं सम्मादिट्ठी बंधइ, मिच्छादिट्ठी बंधइ, सम्मामिच्छादिट्ठी बंधइ? गोयमा! सम्मादिट्ठी सियबंधइ सिय नोबंधइ, मिच्छादिट्ठी बंधइ, सम्मामिच्छदिट्ठी बंधइ । एवं आउगवज्जाओ सत्तवि, आउएहोट्ठिल्ला दो भयणाए सम्मामिच्छदिट्ठी नबंधइ ॥ ९ ॥ नाणावरणं

भावार्थ परंतु सिद्ध नहीं करते हैं. ऐसे ही आयुष्य छोडकर शेप सात कर्मों का जानना. संयाति, असंयाति व संयतासंयति आयुष्य का बंध क्वचित् करते हैं व क्वचित् नहीं करते हैं. सिद्ध आयुष्य कर्म का बंध नहीं करते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या समदृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं, मिथ्यादृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं, या समामिथ्यादृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं ? अहो गौतम ! समदृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं. मिथ्यादृष्टि व समामिथ्यादृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं. ऐसे ही आयुष्य छोडकर शेप सात का जानना. समदृष्टि व मिथ्यादृष्टि आयुष्य कर्म क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं. समामिथ्यादृष्टि आयुष्य कर्म नहीं बांधते हैं ॥ ९ ॥ ज्ञाना-

शब्दार्थ क० कर्म प्रकृतियों ॥ ७ ॥ ना० ज्ञानावरणीय किं० क्या सं० संयति बं० बांधता है अ० असंयति बं० बांधता है ए० ऐसे सं० संयतासंयति बं० बांधता है नो० नहीं संयती नो० नहीं असंयती नो० नहीं संयता संयती बं० बांधता है ए० ऐसे आ० आयुष्य वर्जित स० सात आ० आयुष्य हे० नीचे के ति०

सूत्र नो बंधइ, एवं तिन्निवि भाणियव्वा ॥ नो इत्थी नो पुरिसो नो नपुंसओ न बंधइ ॥ ७ ॥ णाणावराणिज्ज णं भंते ! कम्मं किं संजए बंधइ, असंजए बंधइ, एवं संजयासंजए बंधइ, नो संजए नो असंजए नो संजयासंजए बंधइ ? गोयमा ! संजए सियबंधइ सियनोबंधइ, असंजए बंधइ, संजयासंजएवि बंधइ नो संजए नो असंजए नो संजयासंजए न बंधइ । एवं आउगवज्जाओ सत्तवि, आउगे हे

भावार्थ गुणस्थानवाले अवेदी ज्ञानावरणीय का बंध नहीं करते हैं. ऐसे आयुष्य कर्म छोडकर शेष सब कर्मों का अवेदी सवेदी आश्री जानना. आयुष्य कर्म का बंध तीनों वेदवाले क्वचित् करते हैं व क्वचित् नहीं करते हैं. अवेदी आयुष्य का बंध नहीं करते हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म का बंध क्या संयति करते हैं, असंयति करते हैं, संयतासंयति करते हैं, व नो संयति नो असंयति नो संयतासंयति (सिद्ध) करते हैं ? अहो गौतम ! संयति ज्ञानावरणीय कर्म का बंध क्वचित् करते हैं व क्वचित् नहीं करते हैं. असंयति व संयतासंयति ज्ञानावरणीय का बंध निश्चयही करते हैं.

शब्दार्थ तीन भ० भजना उ० उपर का न० नहीं बं० बांधता है ॥ ८ ॥ ना० ज्ञानावरणीय किं० क्या स० सम्यग् दृष्टि बं० बांधता है मि० मिथ्यादृष्टि बं० बांधता है स० सम्यग्मिथ्या दृष्टि बं० बांधता है

सूत्र ट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए उवरिल्लो न बंधइ ॥ ८ ॥ नाणावराणिज्जं भंते ! कम्मं किं सम्मादिट्ठी बंधइ, मिच्छादिट्ठी बंधइ, सम्मामिच्छादिट्ठी बंधइ ? गोयमा ! सम्मादिट्ठी सियबंधइ सिय नोबंधइ, मिच्छादिट्ठी बंधइ, सम्मामिच्छदिट्ठी बंधइ । एवं आउगवज्जाओ सत्तवि, आउएहेट्ठिल्ला दो भयणाए सम्मामिच्छदिट्ठी नबंधइ ॥ ९ ॥ नाणावरणं

भावार्थ परंतु सिद्ध नहीं करते हैं. ऐसे ही आयुष्य छोडकर शेष सात कर्मों का जानना. संयाति, असंयाति व संयतासंयाति आयुष्य का बंध क्वचित् करते हैं व क्वचित् नहीं करते हैं. सिद्ध आयुष्य कर्म का बंध नहीं करते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या समदृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं, मिथ्यादृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं, या समामिथ्यादृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं ? अहो गौतम ! समदृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं. मिथ्यादृष्टि व समामिथ्यादृष्टि ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं. ऐसे ही आयुष्य छोडकर शेष सात का जानना. समदृष्टि व मिथ्यादृष्टि आयुष्य कर्म क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं. समामिथ्यादृष्टि आयुष्य कर्म नहीं बांधते हैं ॥ ९ ॥ ज्ञाना-

शब्दार्थ ॥ ९ ॥ ना० ज्ञानावरणीय किं० क्या स० संज्ञी अ० असंज्ञी नो०नहीं संज्ञी नो०नहीं असंज्ञी बं०बांधता है ॥ १० ॥ ना० ज्ञानावरणीय किं० क्या भ० भवसिद्धिक अ० अभवसिद्धिक नो० नहीं भवसिद्धिक नो०

सूत्र

किं सन्नी बंधइ असन्नी बंधइ नो सन्नी नो असन्नी बंधइ ? गोयमा ! सन्नी सिय बंधइ सिय नबंधइ, असन्नी बंधइ, नो सन्नी नो असन्नी न बंधइ एवं वेयाणिज्जाउगवज्जाओ छकम्मप्पगडीओ । वेयाणिज्जं हेट्ठिल्ला दो बंधइ, उवरिल्ला भयणाए ॥ आउगं हेट्ठिल्ला दोभयणाए उवरिल्लो न बंधइ ॥ १० ॥ नाणावरणिज्जं कम्मं किं भवसिद्धिए बंधइ अभवसिद्धिए, नो भवसिद्धिए नो अभवसिद्धिए बंधइ ? गोयमा ! भवसिद्धिए भय-

भावार्थ

वरणीय कर्म क्या संज्ञी बांधते हैं, असंज्ञी बांधते हैं या नोसंज्ञी नोअसंज्ञी बांधते हैं ? अहो गौतम ! संज्ञी ज्ञानावरणीय कर्म क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं, असंज्ञी बांधते हैं, परंतु नो संज्ञी नो असंज्ञी नहीं बांधते हैं ऐसे ही वेदनीय व आयुष्य कर्म छोडकर शेष सब कर्मों का जानना. वेदनीय कर्म संज्ञी असंज्ञी बांधते हैं परंतु नो संज्ञी नोअसंज्ञी क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं. आयुष्य कर्म संज्ञी असंज्ञी क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं परंतु नो संज्ञी नो असंज्ञी आयुष्य कर्म नहीं बांधते हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! क्या भवसिद्धिक ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं, अभवसिद्धिक बांधते हैं, या नो भवसिद्धिक नो अभवसिद्धिक बांधते हैं ? अहो गौतम ! भवसिद्धिये ज्ञानावरणीय कर्म क्वचित्

शब्दार्थ नहीं अभवसिद्धिक ॥ ११ ॥ ना० ज्ञानावरणीय किं० क्या च० चक्षुदर्शनीय अ० अचक्षुदर्शनीय आ० अवधिदर्शनीय के० केवलदर्शनीय ॥ १२ ॥ ना० ज्ञानावरणीय किं० क्या प० पर्याप्त अ० अपर्याप्त नो०

सूत्र णाए अभवसिद्धिए बंधइ नो भवसिद्धिए नो अभवसिद्धिए न बंधइ एवं आउगवज्जा सत्तवि, आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्लो न बंधइ॥ ११ ॥ नाणावरणं किं चक्खुदंसणी बंधइ अचक्खुदंसणी बंधइ ओहिदंसणी बंधइ केवलदंसणी बंधइ ? गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए उवरिल्ले ण बंधइ ॥ एवं वेयणिज्जवज्जाओ सत्तवि, वेयणिज्जं हेट्ठिल्ला तिण्णि बंधइ

भावार्थ बांधते हैं, और क्वचित् नहीं भी बांधते हैं अभवसिद्धिये ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं नो भवसिद्धिये नो अभवसिद्धिये ज्ञानावरणीय कर्म नहीं बांधते हैं. ऐसे ही आयुष्य छोडकर शेष सब कर्मों का जानना आयुष्य कर्म भवसिद्धिक व अभवसिद्धिक क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं, परंतु नो भवसिद्धिक नो अभवसिद्धिक आयुष्य कर्म नहीं बांधते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! क्या ज्ञानावरणीय कर्म चक्षु दर्शनी, अचक्षु दर्शनी, अवधि दर्शनी, या केवल दर्शनी बांधते हैं ? अहो गौतम ! चक्षु, अचक्षु व अवधिदर्शनी में भजना. और केवल ज्ञानी नहीं बांधते हैं ऐसे ही वेदनीय कर्म छोडकर सातों कर्मों का जानना. वेदनीय कर्म चक्षु, अचक्षु व अवधि दर्शनी बांधते हैं परंतु केवल दर्शनी नहीं बांधते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म क्या पर्याप्त जीव बांधते हैं अपर्याप्त बांधते हैं.

शब्दार्थ नहीं पर्याप्त नो॰नहीं अपर्याप्त ॥१३॥ ना॰ज्ञानावरणीय किं॰क्या भा॰भापक अ॰अभापक गो॰गौतम दो॰

सूत्र केवलदंसणी भयणाए॥१२॥ णाणावराणिज्जं कम्मं किं पज्जत्तओ बंधइ अपज्जत्तंओ बंधइ नो पज्जत्तओ नो अपज्जत्तओ बंधइ ?गोयमा ! पज्जत्तए भयणाए, अपज्जत्तए बंधइ, नो पज्जत्तए नो अपज्जत्तए नबंधइ ॥ एवं आउगवज्जाओ, आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले ण बंधइ ॥ १३ ॥ णाणावरणं किं भासए बंधइ अभासए ? गोयमा ! दोवि भयणाए ॥ एवं वेयणिज्जवज्जाओ सत्त, वेयणिज्जं भासए बंधइ, अभासए भयणाए ॥ १४ ॥ णाणावरणं किं परित्ते बंधइ, अपरित्ते बंधइ नो परित्ते नो अपरित्ते बंधइ ? गोयमा !

भावार्थ या नो पर्याप्त नो अपर्याप्त बांधते हैं ? अहो गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्म पर्याप्त जीव क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं, अपर्याप्त बांधते हैं. नो पर्याप्त नो अपर्याप्त नहीं बांधते हैं. ऐसे ही आयुष्य कर्म छोडकर शेष सातों कर्मों का जानना. आयुष्य कर्म पर्याप्त अपर्याप्त बांधते भी हैं और नहीं भी बांधते हैं. नो पर्याप्त नो अपर्याप्त जीव आयुष्य कर्म नहीं बांधते हैं ॥१३॥ अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म क्या भापक बांधते हैं व अभापक बांधते हैं ? अहो गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्म भापक व अभापक दोनों क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं ऐसे ही वेदनीय कर्म छोडकर शेष सब कर्मों का जानना. वेदनीय कर्म भापक बांधते हैं परंतु अभापक क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं ॥ १४ ॥

दार्थ दोनोंमें भ० भजना ॥१४॥ ना० ज्ञानावरणीय किं० क्या प० परित अ० अपरित वं० बांधता हैं ॥ १५ ॥ ना० ज्ञानावरणीय किं० क्या आ० मतिज्ञानी सु० श्रुतज्ञानी ओ० अवधिज्ञानी म० मनःपर्यव ज्ञानी के०

सूत्र परित्ते भयणाए, अपरित्ते बंधइ, नो परित्ते नो अपरित्ते न बंधइ एवं आउगवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ आउए परित्तोवि अपरित्तोवि भयणाए, नो परित्तो नो अपरित्तो नबंधइ ॥ १५ ॥ नाणावरणं किं आभाणबोहियनाणी बंधइ, सुयनाणी बंधइ, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी, केवलनाणी ? हेट्ठिल्ला चत्तारि भयणाए केवलनाणी न बंधइ, एवं वेयणिज्जवज्जाओ सत्तवि, वेयणिज्जं हेट्ठिल्ला चत्तारि बंधइ

भावार्थ अहो भगवन् ! परित्त [अल्प संसारी] अपरित्त [अनंत संसारी] नो परित्त नो अपरित्त (सिद्ध) इन तीन में से कौन ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं ? अहो भगवन् ! परित्त ज्ञानावरणीय कर्म क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं, अपरित्त बांधते हैं, और नो परित्त नो अपरित्त नहीं बांधते हैं. ऐसे ही आयुष्य छोडकर सात कर्म प्रकृतियों का जानना. आयुष्य कर्म की परित व अपरित में भजना है. नोपरित नो अपरित आयुष्य कर्म नहीं बांधते हैं ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! क्या मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी व केवलज्ञानी ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं ? अहो गौतम ! चार ज्ञान वाले क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं. केवल ज्ञानी नहीं बांधते हैं. ऐसे वेदनीय छोडकर सातों

शब्दार्थ केवल ज्ञानी हे० नीचे के च० चार में भ० भजना के० केवली न० नहीं बं० बांधते हैं ॥ १६ ॥ म० मति अज्ञानी सु० श्रुत अज्ञानी वि० विभंगज्ञानी ॥ १७ ॥ म० मन योगी व० वचन योगी का० काय

सूत्र केवलनाणी भयणाए ॥ १६ ॥ नाणावरणं किं मति अण्णाणी बंधइ सुयअण्णाणी विभंगनाणी ? गोयमा ! आउगवज्जाओ सत्तवि बंधइ, आउगं भयणाए ॥ १७ ॥ णाणावरणं किं मणजोगी बंधइ, वइजोगी बंधइ, कायजोगी, अजोगी बंधइ ? गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णिभयणाए, अजोगी नबंधइ । एवं वेयणिज्जवज्जाओ वेयणिज्जं हेट्ठिल्ला बंधंति, अजोगी नबंधइ ॥ १८ ॥ नाणावरणं किं सागारोवउत्ते बंधइ अना

भावार्थ कर्मों का जानना. चारों ज्ञान वाले वेदनीय कर्म बांधते हैं परंतु केवलज्ञानवाले वेदनीय कर्म क्वचित् बांधते हैं व क्वचित् नहीं बांधते हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! क्या मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी व विभंग ज्ञानी ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं ? अहो गौतम ! आयुष्य कर्म छोडकर सातों कर्म तीनों अज्ञान वाले बांधते हैं आयुष्य कर्म की उन में भजना रहती है ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! क्या मनयोगी, वचन योगी, काया योगी व अयोगी ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं ? अहो गौतम ! तीन योग वालों में भजना है और अयोगी नहीं बांधते हैं. ऐसे ही वेदनीय छोडकर शेष सब का जानना. तीन योग वाले वेदनीय बांधते हैं और अयोगी नहीं बांधते हैं ॥ १८ ॥ अहो

शब्दार्थ योगी ॥ १८ ॥ सा० साकारोपयुक्त अ० अनाकारोपयुक्त ॥ १९ ॥ आ० आहारक अ० अनाहारक

सूत्र गारोवउत्ते बंधइ ? गोयमा ! अट्ठसुवि भयणाए ॥ १९॥ नाणावरणं किं आहारए बंधइ अणाहारए बंधइ? गोयमा! दोवि भयणाए॥ एवं वेयणिज्जाउगवज्जाणं छण्ह, वेयणिज्जं आहारए बंधइ, अणाहारए भयणाए, आउए आहारए भयणाए, आणाहारए न बंधइ॥ २० ॥ नाणावरणं किं सुहुमे बंधइ, बादरे बंधइ, नो सुहुमे नो बादरे बंधइ ? गोयमा ! सुहुमे बंधइ, बादरे भयणाए, नो सुहुमे नो बादरे नबंधइ, एवं आउगवज्जाओ सत्तवि

भावार्थ भगवन् ! साकारोपयुक्त या अनाकारोपयुक्त क्या ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं ? अहो गौतम ! आठों कर्मों में उन की भजना रहती है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय क्या आहारिक बांधते हैं या अनाहारिक बांधते हैं ? अहो गौतम ! दोनों में भजना है. ऐसे ही वेदनीय व आयुष्य छोडकर शेष सब का जानना. आहारक वेदनीय बांधते हैं और अनाहारक में भजना है. आयुष्य की आहारक में भजना और अनाहारक नहीं बांधता है ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! क्या सूक्ष्म जीवों ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं, बादर जीवों बांधते हैं या नो सूक्ष्म नो बादर जीवों बांधते है ? अहो गौतम ! सूक्ष्म जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधते हैं बादर में भजना है, और नो सूक्ष्म नो बादर नहीं बांधते हैं. ऐसे ही आयुष्य सिवा सब

शब्दार्थ ॥ २० ॥ सु० सूक्ष्म बा० बादर नो० नहीं सूक्ष्म नो० नहीं बादर ॥ २१ ॥ च० चरिम अ० अचरिम ॥ २२ ॥ ए० इन भं० भगवन् जी० जीवों में इ० स्त्री वेदी पु० पुरुष वेदी न० नपुंसकवेदी अ०

सूत्र

आउए सुहुमे बादरे भयणाए, नो सुहुमे नो बादरे नबंधइ ॥ २१ ॥ नाणावरणं किं चरिमे बंधइ, अचरिमे बंधइ, ? गोयमा ! अट्ठवि भयणाए ॥ २२ ॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं-इत्थिवेयगाणं, पुरिसवेयगाणं, नपुंसगवेयगाणं, अवेयगाणय कयरे कयरे

भावार्थ

कर्मों का जानना. आयुष्य की दो में भजना और नो सूक्ष्म नों बादर नहीं बांधते हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय क्या चरिम बांधते हैं या अचरिम बांधते हैं ? अहो गौतम ! आठों कर्मों की भजना है ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! स्त्री वेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी व अवेदी में कौन किस से यावत् विशेषाधिक है ! अहो गौतम ! सब से थोडे पुरुष वेदी, इस से स्त्री वेदी संख्यात गुने उस से अवेदी अनंत गुने उस से नपुंसक वेदी अनंत गुने (२) सब से थोडे संयति. संयतासंयाते संख्यातगुने नो संयति नो असंयति नो संयतासंयति अनंत गुने व असंयति अनंतगुने (३) सब से थोडे समदृष्टि मिश्र दृष्टि अनंत गुने व मिथ्या दृष्टि अनंत गुने (४) सब से थोडे संज्ञी, नो संज्ञी नो असंज्ञी अनंत गुने, असंज्ञी अनंत गुने (५) सब से थोडे अभवि, नो भवि नो अभवि अनंत गुने, भवी अनंत गुने (६)

शब्दार्थ — अप्रमत्त संयति त० तहां जे० जो अ० अप्रमत्त संयति ते० वे णो० नहीं आ० आत्मारंभी णो० नहीं प० परारंभी जा० यावत् अ० अनारंभी त० तहां जे० जो प० प्रमत्त संयति ते० वे सु० शुभयोग प० आश्रित णो० नहीं आ० आत्मारंभी जा० यावत् अ० अनारंभी अ० अशुभयोग प० आश्रित आ० आत्मारंभी जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारंभी त० तहां जे० जो० अ० असंयति ते० वे अ० अविरति

सूत्र — आयारंभा जाव अणारंभा ॥ तत्थणं जे ते संसार समावण्णगा, तेदुविहा प०, तं० संजयाय, असंजयाय । तत्थणं जे ते संजया, ते दुविहा प०, तं० पमत्त संजयाय, अपमत्त संजयाय । तत्थणं जे ते अपमत्त संजया तेणं णो आयारंभा, णो परारंभा जाव अणारंभा । तत्थणं जे ते पमत्त संजया ते सुहंजोगं पडुच्च णो आयारंभा,

भावार्थ — गतिरूप संसार में अनंत वक्त परिभ्रमण करके समस्त कर्म क्षयरूप स्थानक सो मोक्ष को प्राप्त हुवे उन को सिद्ध कहते हैं. वे सिद्ध आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी नहीं हैं. परंतु अनारंभी हैं. और जो संसार समावन्न जीव हैं वे दो प्रकार के कहे हैं संयति सो चारित्र सहित व असंयति सो चारित्र रहित. उस में संयति के दो भेद १ प्रमत्त संयति २ अप्रमत्त संयति. जो सप्तम गुणस्थान वर्ती अप्रमत्त संयति हैं वे आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं. और जो छट्ठे गुणस्थानवर्ती प्रमत्त संयति हैं वे शुभ योग आश्रित आत्मारंभी, परारंभी, व उभयारंभी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं,

शब्दार्थ अनंत गुने से० वैसे ही भं० भगवन् छ० छठा स० शतक का त० तीसरा उ०उद्देशा ॥ ६ ॥ ३ ॥

सूत्र सेवं भंते भंतेत्ति ॥ छट्ठ सयस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥ ३ ॥ * *

जीवेणं भंते ! कालादेसेणं किं सपएसे अपएसे ? गोयमा ! नियमा सपएसे॥ १ ॥ नेरइएणं भंते ? कालादेसेणं किं सपएसे अपएसे ? गोयमा ! सिय सपएसे सिय अपएसे, एवं जाव सिद्धे ॥२॥ जीवाणं भंते कालादेसेणं सपएसा अपएसा ? गोयमा !

भावार्थ (१६) सब से थोडे अचरम, चरम जीव अनंत गुने. अहो भगवन् आप के वचन सत्य हैं यह छठा शतक का तीसरा उद्देशा पूर्ण हुआ. ॥ ६ ॥ ३ ॥ × × × +

तीसरे उद्देशे में जीव का अधिकार कहा आगे भी इन का ही विशेष अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! एक जीव काल आश्री सप्रदेशी है या अप्रदेशी है ? अहो गौतम ! एक जीव काल आश्री सप्रदेशी है, परंतु अप्रदेशी नहीं है क्यों की जीव की स्थिति अनादि अनंत है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नरक का जीव काल आश्री सप्रदेशी है या अप्रदेशी है ? अहो गौतम ! नरक का जीव कालादेश से स्यात् सप्रदेशी व अप्रदेशी है. क्योंकि जिस को उत्पन्न हुए एक समय हुवा है वह अप्रदेशी है और विशेष समय हुवा है वह सप्रदेशी है ऐसे ही सिद्ध तक सब जीव का जानना. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! बहुत जीव क्या कालादेशसे सप्रदेशी हैं या अप्रदेशी हैं ? अहो गौतम ! जीव कालादेशसे

शब्दार्थ अवेदी क० कौन जा० यावत् वि० विशेषाधिक गो० गौतम स० सब से थोडे पु० पुरुषवेदी इ० स्त्रीवेदी सं० संख्यात गुने अ० अवेदी अ० अनंत गुने न० नपुंसक वेदी अ० अनंत गुने ए० इन स० सब प० पदकी अ० अल्पाबहुत्व उ० कहना जा० यावत् स० सब से० थोडे अ० अचरिम च० चरिम अ०

सूत्र जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुरिस वेयगा, इत्थीवेयगा संखेज्जगुणा, अवेयगा अणंतगुणा, नपुंसग वेयगा अणंतगुणा ॥ एएसिं सव्वेसिं पयाणं अप्पबहुगाइं उच्चारियव्वाइं जाव सवत्थोवा जीवा अचरिमा चरिमा अणंतगुणा ॥

भावार्थ सब से थोडे अवधि दर्शनी, चक्षुदर्शनी असंख्यात गुने, केवल दर्शनी अनंत गुने, अचक्षु दर्शनी अनंत गुने (७) सब से थोडे पर्याप्त, नो पर्याप्त नो अपर्याप्त अनंत गुने अपर्याप्त अनंत गुने (८) सब से थोडे भाषक, अभाषक अनंत गुने (९) सब से थोडे परित, नो परित नो अपरित अनंत गुने, अपरित अनंत गुने (१०) सब से थोडे मनःपर्यव ज्ञानी, अवधि ज्ञानी असंख्यात गुने, मति श्रुति परस्पर तुल्य व विशेषाधिक केवल ज्ञानी अनंत गुने (११) सब से थोडे विभंग ज्ञानी, मति श्रुत अज्ञानी परस्पर तुल्य अनंत गुने (१२) सब से थोडे मन योगी, वचन योगी असंख्यात गुने, अयोगी अनंत गुने, काया योगी अनंत गुने (१३) सब से थोडे साकारोपयुक्त, अनाकारोपयुक्त विशेषाधिक (१४) सब से थोडे आहारक अनाहारक असंख्यात गुने [१५] सब से थोडे नो सूक्ष्म नो बादर, बादर अनंत गुने, सूक्ष्म असंख्यात गुने

सूत्र ॥५॥ आहारगाणं जीवेगिंदियवज्जो तिय भंगो, अणाहारगाणं जीवेगिंदियवज्जा छब्भंगा एवं भाणियव्वा, सपएसावा, अपएसावा अहवा सपएसेय अपएसेय, अहवा सपएसेय

भावार्थ आहारक जीव सप्रदेशी है या अप्रदेशी है ? अहो गौतम ! आहारक जीव क्वचित् सप्रदेशी है व क्वचित् अप्रदेशी है. क्योंकि विग्रहगति या केवली समुद्घात में जीव अनाहारक बनकर जब आहारक होता है तब पहिले समय में अप्रदेशी होता है और दूसरे समय से सप्रदेशी होता है. यह एकवचन सब सादि भाव में कहना. अनादि भाव में नियमा सप्रदेशी रहते हैं. अहो भगवन् ! बहुत आहारक जीव क्या सप्रदेशी हैं या अप्रदेशी हैं ? अहो गौतम ! बहुत आहारक जीव सप्रदेशी भी हैं और अप्रदेशी भी हैं क्योंकि बहुत जीव आहारकपने बहुत काल से रहे हुवे हैं इसलिये सप्रदेशी और विग्रह गति अनंतर बहुत जीवों को आहारक बनने में एक समय हुवा है इसलिये अप्रदेशी जानना. जीवपद व एकेन्द्रिय पद छोडकर आहारक जीवों में तीन भांगे पाते हैं. सिद्ध अनाहारक होने से नहीं ग्रहण किये हैं. विग्रहगति प्रतिपन्न व केवली समुद्घातवाले को दो भांगे पाते हैं सप्रदेशी भी होवे और अप्रदेशी भी होवे. अनाहारक जीवपद व एकेन्द्रियपद में सप्रदेशी अप्रदेशी का एक ही भांगा पाता है इसलिये इसे छोडकर शेष सब अनाहारक में छ भांगे पाते हैं. इस में दो भांगे बहुवचन आश्रित व चार भांगे एक वचन व बहुवचन के संयोग से होते हैं. १ बहुत सप्रदेशी २ बहुत अप्रदेशी ३ एक सप्रदेशी एक अप्रदेशी ४

नियमा सपएसा॥३॥ नेरइयाणं भंते! कालादेसेणं किं सपएसा अवएसा?गोयमा! सव्वेवि ताव होज्ज सपएसा, अहवा सपएसाय अपएसेय, अहवा सपएसाय अपएसाय एवं जाव थणियकुमारा ॥ ४ ॥ पुढविकाइयाणं भंते! किं सपएसा अपएसा? गोयमा! सपएसावि अपएसावि, एवं जाव वणप्फइकाइया, सेसा जहा नेरइया तहा सिद्धा

समदेशी ही हैं क्यों कि सब जीव अनादि हैं ॥३॥ अहो भगवन्! नरक के बहुत जीव काल आश्री सप्रदेशी हैं या अप्रदेशी हैं? अहो गौतम! १ सब जीव सप्रदेशी हैं क्योंकि उत्पात विरह काल पहिले असंख्याते उत्पन्न हुए यह प्रथम भंग. २ पहिले बहुत नारकी उत्पन्न हुवे हैं जिस में एक और उत्पन्न होवे. वह प्रथम समय में उत्पन्न होने से अप्रदेशी है और पहिले उत्पन्न हुए नारकी को उत्पन्न हुए बहुत समय होजाने से सप्रदेशी हैं, इस से बहुत सप्रदेशी व एक अप्रदेशी यह दूसरा भांगा ३ पहिले बहुत जीव उत्पन्न हुए थे जिस में बहुत जीव नविन आकर उत्पन्न हुए इस से बहुत सप्रदेशी व बहुत अप्रदेशी भांगा मीलता है. यों असुरकुमारादि दश दंडक में तीनों भांगे पाते हैं ॥ ४ ॥ पृथ्वीकायिकादि पांचों स्थावर में सप्रदेशी अप्रदेशी दोनों रहे हुवे हैं क्योंकि इस में विरह काल नहीं है. शेष तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, वाणव्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिक व सिद्धतक का अधिकार जैसे नरक के जीवों में तीन भांगे कहे वैसे ही कहना. क्यों कि इस में विरह काल रहा है ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! क्या

सूत्र एहिं छब्भंगो, नोसन्नि नोअसन्निजीवे मणुयसिद्धेहिं तियभंगो ॥ सलेसे जहा ओहिया, कण्हलेस्सा नीललेस्सा, काउलेस्सा जहा आहारओ णवरं जस्स अत्थियाओ।

भावार्थ नंतर एक की उत्पत्ति का समय और पहिले के उत्पन्न हुए सो ३ बहुत सप्रदेशी बहुत अप्रदेशी. ऐसे ही एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय व सिद्ध छोडकर सब पद में कहना, क्योंकि उक्त तीनों पद वाले संज्ञी नहीं हैं. असंज्ञी का बहुत जीव आश्रित पृथिव्यादि में बहुत सप्रदेशी बहुत अप्रदेशी एक ही भांगा पाता है. और इस सिवा अन्य सब में तीन भांगे पाते हैं. नरक, भूवनपति व वाणव्यंतर में असंज्ञी के संज्ञी होते हैं, इसलिये भूतकाल की अपेक्षा से संज्ञी को भी असंज्ञी कहे हुवे हैं. नरकादिकमें असंज्ञीपना क्वचित् होता है इस अपेक्षा पूर्वोक्त छ भांगे पाते हैं. ज्योतिषी, वैमानिक व सिद्ध असंज्ञी नहीं होने से ग्रहण नहीं किये गये हैं. नो संज्ञी नो असंज्ञी जीव के दोनों दंडक में जीव, मनुष्य व सिद्ध ऐसे तीन पद होते हैं. इन तीन पद में बहुत जीव आश्री तीन २ भांगे पाते हैं. सलेशी के एक जीव व बहुत जीव ऐसे दो दंडक जानना. दोनों में जीव तथा नरकादिक का औधिक दंडक जैसे जानना. क्योंकि सलेशीपना में जीवपने की अनादि है. सिद्ध अलेशी होने से नहीं ग्रहण किये हैं. कृष्ण, नील व कापोत लेश्यावाले के दोनों दंडक आहारक जैसे कहना. नारकी में जिस लेश्या का प्रश्न होवे उसी लेश्या कहना. ज्योतिषी वैमानिक में कृष्णादि लेश्या नहीं होती है. तेजो लेश्या

सूत्र

अपएसाय, अहवा संपएसाय अपएसेय अहवा सपएसाय अपएसाय॥सिद्धेहिं तियभंगो । भव सिद्धीय अभवसिद्धीय जहा ओहिया नो भवासिद्धीय नो अभवासिद्धीय जीवासिद्धेहिं तिय भंगो,॥ सन्नीहिं जीवादिओ तियभंगो, असन्नीएहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो, नेरइयदेव मणु

भावार्थ

सप्रदेशी एक अप्रदेशी बहुत ५ सप्रदेशी बहुत अप्रदेशी एक ६ सप्रदेशी बहुत अप्रदेशी बहुत यह छ भांगे जानना. सिद्ध पद में तीन भांगे जानना. भव्यजीव व अभव्य जीव को औधिक जीव की तरह जानना. इन का एक जीव आश्री व अनेक जीव आश्री ऐसे दो दंडक करना. एक जीव आश्री भव्य अभव्य दोनों नियमा सप्रदेशी होवे, और नरकादि दंडक में सप्रदेशी अप्रदेशी दोनों होवे. बहुत भव्य अभव्य जीव सप्रदेशी होवे इसलिये नरकादिक में तीन भांगे होवे. १ बहुत सप्रदेशी २ बहुत सप्रदेशी एक अप्रदेशी ३ बहुत सप्रदेशी बहुत अप्रदेशी, एकेन्द्रिय में बहुत सप्रदेशी व बहुत अप्रदेशी का भांगा पाता है. सिद्ध भव्य अभव्य नहीं होते हैं, परंतु नोभव्य नोअभव्य होते हैं. इस के बहुत जीव व एक जीव आश्री दो दंडक करना. यह विशेषण मात्र समुच्चय जीवपद व सिद्ध पद ऐसे दो पद में पाता है. इन में तीन भांगे पाते हैं. संज्ञी के एक जीव व अनेक जीव आश्री दो दंडक हैं उस में अनेक जीव आश्री दंडक के जीवादि पद में तीन भांगे पाते हैं १ संज्ञी जीव कालादेशसे सप्रदेशी है क्यों की बहुत काल के उत्पन्न हुए होते हैं २ बहुत सप्रदेशी एक अप्रदेशी उत्पात विरहा-

सूत्र पम्हलेस्से सुक्कलेस्सोए जीवाइओ तियभंगो,अलेस्सहिं जीवे सिद्धेहिं तियभंगो, मणुएसु छब्भंगा, ॥ सम्मदिट्ठीहिं जीवादियं तिओ भंगो, विगलिंदिएसु छब्भंगा, मिच्छदिट्ठीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं छब्भंगा, संजएहिं जीवादिओ तियभंगो, असंजएहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो, संजयासंजएहिं तियभंगो, जीवादिओ नोसंजय नोअसंजय नोसंजयासंजय जीव सिद्धेहिं तियभंगो ॥ सकसाईहिं-

भावार्थ जीव सदैव बहुत अवस्थित रहते हैं इसलिये एक भांगा. परंतु उपशम श्रेणी से भ्रष्ट होते अकपायी बन कर पुनःसकपायी बनते हैं इस से दूसरा भांगा, और उपश्रेणी से बहुत जीव पडके सकपायपने को प्राप्त होते हैं इसलिये तीसरा भांगा. नरकादिक में पूर्वोक्त तीन भांगे. एकेन्द्रिय में एक भांगा. क्रोध कपाय के दूसरे दंडक में जीवपद व एकेन्द्रियादि पदमें एक भांगा, शेपमें तीन भांगे * देव पदमें छ भांगे पावे, मान कपायी व माया कपायी में जीव पद व एकेन्द्रिय पद में एक भांगा. नारकी व देव में छ भांगे और शेप पद में तीन भांगे. लोभ कपायी क्रोध कपायी जैसे कहना. इसमें नरक में छ भांगे जानना. अकपायी के दूसरे दंडक के जीव, मनुष्य व सिद्ध में तीन भांगे पाते हैं औधिक मतिज्ञान व श्रुतज्ञान के दूसरे दंडक में जीवादि पद में तीन भांगे, विकलेन्द्रिय में छ भांगे. अवधिज्ञान का भी ऐसे ही जानना. परंतु

* यहां कोई प्रश्न करे कि सब पद जैसे क्रोध कपायी जीव में तीन भांगे क्यों न होवे ? मान माया व लोभ से निरंतर क्रोध कपाय को प्राप्त होने वाले जीव अनेक हैं इस से तीन भांगे न होवे.

सूत्र

तेउलेस्साए जीवादियओ तियभंगो णवरं पुढविकाइएसु आउवणफ्फईसु छब्भंगो,

भावार्थ

के दूसरे दंडक में जीवादि पद में तीन भांगे पाते हैं. पृथ्वी, अप्, व वनस्पति में पूर्वोक्त छ भांगे कहना नरक, तेउ, वायु, विकलेन्द्रिय व सिद्ध में तेजोलेश्या नहीं होती है इसलिये उन को यहां ग्रहण करना नहीं. पद्म व शुक्ल लेश्या में जीव, तिर्यंचपंचेन्द्रिय, मनुष्य व वैमानिक यह चार पद ही पाते हैं इन में पूर्वोक्त तीन भांगे होते हैं. अलेशी के दोनों दंडक में जीव, मनुष्य व सिद्ध ये तीन ही पद पाते हैं. जीव व सिद्ध पद में तीन भांगे व मनुष्य पद में छ भांगे पाते हैं. समदृष्टी के एक जीव बहुत जीव ऐसे दो दंडक. इस के दूसरे दंडक जीवादि में तीन भांगे. विकलेन्द्रिय में छ भांगे क्यों कि विकलेन्द्रिय में साश्वादान सम्यग् दृष्टिवाले कोई पहिले उत्पन्न होते हैं इसलिये सप्रदेश, अप्रदेशपने एकत्व बहुत्व का संभव होता है. एकेन्द्रिय में समदृष्टी नहीं होने से नहीं लिये गये हैं. मिथ्यादृष्टि के दूसरे दंडक के जीव पद में तीन भांगे एकेन्द्रिय में एक भांगा. मिश्रदृष्टी में सब दंडक में छ भांगे. इस में एकेन्द्रिय व सिद्ध नहीं हैं. संयति के दूसरे दंडक में जीवादि पद में तीन भांगे. इस में जीव व मनुष्य ऐसे दो ही पद ग्रहण करना. असंयति के दूसरे दंडक में जीवादि पद में तीन भांगे हैं, एकेन्द्रिय में एक भांगा. संयतासंयति के दूसरे दंडक में जीवादि में तीन भांगे, इस में जीव, तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य यह तीन पद कहना. नोसंयति, नोअसंयति नोसंयतासंयति में दूसरे दंडक में जीव व सिद्ध ऐसे दो पद होते हैं. उन में तीन भांगे पाते हैं. सकषायी

सूत्र

अजोगी जहा अलेस्सा॥सागारोवउत्ते अणागारोवउत्तेहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो सवेयगा जहा सकसाई, इत्थीवेयग पुरिसवेयग नपुंसगवेयगेसु जीवादिओ तियभंगो णवरं नपुंसगवेदे एगिंदिएसु अभंगयं, अवेयगा जहा अकसाई ससरीरी जहा ओहि-

भावार्थ

पृथिव्यादि पद में एक ही भांगा कहा. यह एक उपयोगसे दुसरे उपयोग में जाना इस आश्री लीया गया है. सिद्ध को सदाही उपयोग रहा हुवा है तथापि साकार अनाकार उपयोग की वारंवार प्राप्ति होने से सप्रदेशीपना व एकवार प्राप्ति होनेसे अप्रदेशी पना जानना. ऐसे बहुत जीव वारंवार साकारोपयोग को प्राप्त हुवे सो सप्रदेशी एक भांगा, एक ही वक्त साकारोपयोग को प्राप्त हुए सो अप्रदेशी दूसरा भांगा, और यही साकारोपयोग एक वार व अनेक वार प्राप्त किया सो तीसरा भांगा, ऐसे ही अनाकारोपयोग का जानना. सवेदी जीव सकषायी जैसे कहना. स्त्री, वेदी पुरुषवेदी व नपुंसक वेदी में जीवादि पद में तीन भांगे, मात्र नपुंसक वेद में एकेन्द्रिय में एक भांगा पावे, पुरुष वेदी व स्त्री वेदी मात्र देव, मनुष्य व तिर्यंच पंचेन्द्रिय में कहना. नपुंसक वेद में दो दंडक वर्जकर कहना. अवेदी अकषायी जैसे कहना. इस में जीव मनुष्य व सिद्ध ऐसे तीन पद कहना. सशरीरी के दोनों दंडक में जीव सप्रदेशी कहना क्यों की जीवों को शरीर अनादि हैं. नरकादिक में तीन भांगे, एकेन्द्रिय में सप्रदेशी अप्रदेशी ऐसा एक भांगा, उदारिक शरीरी के जीव पद व एकेन्द्रिय पद में तीसरा भांगा और शेष में तीन भांगे होवे. उदारिक शरीर नरक व

जीवादिओ तियभंगो, एगिंदिएसु अभंगकं, कोहकसाईहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, देवेहिं छब्भंगो, माणकसाई माइकसाई जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, नेरइय देवेहिं छब्भंगा, लोभकसाईहिं जीवेगिंदयवज्जो तियभंगो, नेरइएसु छब्भंगा अकसाई जीवमणुएहिं सिद्धेहिं तियभंगो ओहियणाणे आभिणिबोहियणाणे सुयणाणे जीवादिओ तियभंगो, विगलिंदिएहिं छब्भंगा, ओहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे जीवादियओ तियभंगो ओहिए अण्णाणे मतिअण्णाणे सुयअण्णाणे एगिंदियवज्जो तियभंगो, विभंगणाणे जीवादिओ तियभंगो ॥ सजोई जहा ओहिओ मणजोगि वइजोगि, कायजोगि, जीवादिओ तियभंगो, णवरं कायजोगी एगिंदिया तेसु अभंगकं,

भावार्थ

इस में विकलेन्द्रिय नहीं कहना. मनःपर्यव ज्ञान के दुसरे दंडक में जीव व मनुष्य में तीन भांगे केवलज्ञान में जीव, मनुष्य व सिद्ध पद में तीन भांगे जानना. समुच्चय अज्ञान, मति अज्ञान व श्रुत अज्ञानमें जीवादि पद में तीन भांगे, पृथिव्यादिक में एक भांगा विभंगज्ञान को अवधि ज्ञान जैसे कहना. सजोगीमें औधिक जीवादिक का कहा वैसे जानना. मनयोगी संज्ञी, वचन योगी एकेन्द्रिय वर्ज कर सब, और काययोगी में सब जीव इन में तीन भांगे पावे. परंतु काययोगी में दूसरे दंडक में एकेन्द्रिय को एक भांगा पावे. अयोगी अलेशी जैसे कहना. साकारोपयोग व अनाकारोपयोग के दूसरे दंडक में नरकादिक में तीन भांगे. जीव पद व

शब्दार्थ प० आश्रित आ० आत्मारंभी जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारंभी से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसे वु० कहा जाता है अ० कितनेक जीव जा० यावत् अ० अनारंभी ॥ ३८ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् किं० क्या आ० आत्मारंभी प० परारंभी त० उभयारंभी अ० अनारंभी गो० गौतम णे० नारकी

सूत्र णो परारंभा, जाव अणारंभा । असुहं जोगं पडुच्च आयारंभावि जाव णो अणारंभा । तत्थणं जे ते असंजया ते अविरतिं पडुच्च आयारंभावि जाव णो अणारंभा. से ते-णट्ठेणं गोयमा एवं वुच्चइ, अत्थेगइया जीवा जाव अणारंभा ॥३८॥ णेरइयाणं भंते किं आयारंभा, परारंभा, तदुभयारंभा, अणारंभा ? गोयमा ! णेरइया आया-

भावार्थ और अशुभ योग आश्रित आत्मारंभी परारंभी व उभयारंभी हैं परंतु अनारंभी नहीं हैं. और जो असंयति हैं. वे अविरति की अपेक्षा से आत्मारंभी, परारंभी, व उभयारंभी हैं परंतु अनारंभी नहीं है. इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कि कितनेक जीव आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी हैं. परंतु अनारंभी नहीं हैं और आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी नहीं हैं परंतु अनारंभी हैं ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! नारकी आत्मारंभी, परारंभी व उभयारंभी हैं या अनारंभी हैं ? अहो गौतम नारकी आत्मारंभी, परारंभी, व

प्रत्युपेक्षणादि करणसो अशुभयोग-पुढवी आऊक्काए । तेऊवाऊ वणस्सइ तसाणं ॥ पडिलेहण पमत्तो। छण्हं विराहणा होइ ॥ १ ॥ प्रमादसे प्रतिलेखना करनेवाला छ ही कायाका घातक होताहै-

सूत्र

ओ ओरालिय वेउव्विय सरीराणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो आहारगसरीरे जीव मणु एसु छब्भंगा, तेयग कम्मगाइं जहा ओहिया, असरीरेहिं जीव सिद्धेहिं तियभंगो, ॥ आहार पज्जत्तीए सरीर पज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणापाण पज्जत्तीए जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, भासामणपज्जत्ती जहासन्नी आहारअपज्जत्ती जहा अणाहारगा, सरीर

भावार्थ

देवलोक में नहीं है इसलिये यह भांगा नहीं लीया गया है. वैक्रेय शरीर पृथ्वी, अप्, तेउ, वनस्पति व विकलेन्द्रिय में नहीं है. वायुकाय में एक भांगा, और शेष में तीन भांगे. आहारक शरीर जीव व मनुष्य इन दोनों पद में होवे. आहारक जीव के अल्पपना से इन में छ भांगे मीले. तेजस कार्माण में जीवादिक पद औधिक जैसे कहना. अर्थात् जीवपद में सप्रदेशी और नारकादि पद में तीन भांगे जानना. एकेन्द्रिय में एक तीसरा भांगा. अशरीरी के दूसरे दंडक में जीव व सिद्ध में तीन भांगे. आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, व श्वासोश्वास पर्याप्तिवाले जीवों के दूसरे दंडक में जीव व एकेन्द्रिय में एक ही भांगा और शेष नरकादि में तीन भांगे. भाषामन पर्याप्ति संज्ञी जैसे जानना. अर्थात् सब पद में तीन भांगे कहना. आहार अपर्याप्तिवन्त बहुत जीव विग्रहगति संपन्न होते हैं इसलिये एक भांगा और अन्य सब स्थान छ भांगे. शरीर अपर्याप्ति, इन्द्रिय अपर्याप्ति, श्वासोश्वास अपर्याप्तिवाले के दूसरे दंडक में जीव व एकेन्द्रिय छोडकर शेष में तीन भांगे. जीव व एकेन्द्रिय में एक भांगा. नरक देव व

सूत्र

अपज्जत्तीए, इंदिय अपज्जत्तीए, आणापाण अपज्जत्तीए जीवे एगिंदियवज्जो तियभंगो नेरइयदेवमणुएहिं छब्भंगा, भासामणअपज्जत्तीए जीवादिओ तियभंगो, णेरइयदेवमणुएहिं छब्भंगा। सपएसाहारग भविय, सण्णिलेसादिट्ठि संजयकसाए ॥ नाणे जोगुवयोगे वेएयसरीर पज्जत्ती॥२॥६॥ जीवाणं भंते! किं पच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी पच्चक्खाणा पच्चक्खाणी ? गोयमा ! जीवा पच्चक्खाणीवि, अपच्चक्खाणीवि, पच्चक्खाणा पच्चक्खाणीवि सव्व जीवाणं एवं पुच्छा ? गोयमा ! नेरइया अपच्चक्खाणी जाव चउरिंदिया सेसा दो पडिसेहेयव्वा पंचिंदियातिरिक्खजोणिया नो पच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणीवि,

भावार्थ

मनुष्य में छ भांगे. भाषामन की अपर्याप्ति में जीवादि पद में तीन भांगे, नारकी, देव व मनुष्य में छ भांगे. सिद्ध भगवन्त पर्याप्तअपर्याप्त में दोनों नहीं है. अब इनसब का संग्रह गाथा में कहते हैं. २ सप्रदेशी, २ आहारक, ३ भव्य ४ संज्ञी; ५ लेश्या, ६ दृष्टि, ७ संयति, ८ कषाय, ९ ज्ञान, १० योग, १२ उपयोग, १२ वेद, १३ शरीर, १४ पर्याप्तिअपर्याप्ति ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव प्रत्याख्यानी (सर्व विरति) अप्रत्याख्यानी (अविरति) व प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी (देश विरति) हैं ? अहो गौतम ! जीव सर्व विरति, अविरति व देश विरति हैं. अहो भगवन् ! नरकादि चौवीस दंडक के जीव प्रत्याख्यानी, अप्रत्याख्यानी व प्रत्याख्याना प्रत्याख्यानी हैं ? अहो गौतम ! नारकी, दशभुवनपति पांच

मूल

पच्चक्खाणापच्चक्खाणीवि, मणूयातिण्णिवि, सेसाजहा नेरइया ॥ ७ ॥ जीवाणं भंते ! किं पच्चक्खाणं जाणंति, अपच्चक्खाणं जाणंति, पच्चक्खाणापच्चक्खाणं जाणंति ? गोयमा ! जे पंचिंदिया तेतिण्णिवि जाणंति अवसेसा न पच्चक्खाणं जाणंति ॥८॥ जीवाणं भंते ! किं पच्चक्खाणं कुव्वंति अपच्चक्खाणं कुव्वंति पच्चक्खाणापच्चक्खाणं कुव्वंति ? जहा ओहिया तहा कुव्वणा ॥ ९ ॥ जीवाणं भंते ! किं पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया, अपच्चक्खाण णिव्वत्तियाउया पच्चक्खाणापच्चक्खाण णिव्वत्तियाउया ? गोयमा ! जीवाय वेमाणियाय पच्चक्खाण निवात्तियाउया तिण्णिवि,

भावार्थ

एकेन्द्रिय, तीन विकलेन्द्रिय, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक अप्रत्याख्यानी हैं. तिर्यंच पंचेन्द्रिय अप्रत्याख्यानी व प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी हैं मनुष्य में तीनों भांगे पाते हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव प्रत्याख्यान, अप्रत्याख्यान, व प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यान जानते हैं ? अहो गौतम ! जो पंचेन्द्रिय हैं वे तीनों जानते हैं और शेष जीवों प्रत्याख्यान नहीं जानते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव प्रत्याख्यानादि करते हैं ? अहो गौतम ! जैसे औधिक सूत्र कहा वैसे कहना. अर्थात् पंचेन्द्रिय तिर्यंच, व मनुष्य छोडकर सब अप्रत्याख्यानी हैं. मनुष्य तीनों करते हैं और तिर्यंच पंचेन्द्रिय अप्रत्याख्यान व प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यान करते हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! क्या जीव प्रत्याख्यान से, अप्रत्याख्यान से या

शब्दार्थ कि० क्या इ०यह भं०भगवन् त० तमस्काय प०कहाती है कि०क्या पु० पृथ्वी त० तमस्काय आ० अप् त०तमस्काय गो०गौतम नो०नहीं पु०पृथ्वी त०तमस्काय प०कहाती है आ०अप् त०तमस्काय से०अथ के०

सूत्र अवसेसा अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ॥ १० ॥ गाहा-पच्चक्खाणं जाणइ, कुव्वंति तेणेव आउनिव्वत्ती, ॥ सपएसुद्देसंमिय, एमेए दंडगा चउरो ॥ १ ॥ सेवंभंते भंतेत्ति ॥ छट्ठ सयस्स चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥ ४ ॥ × ×

किमियं भंते ! तमुकाएत्ति पवुच्चइ, किं पुढवी तमुकाएत्ति, पवुच्चइ, आउतमुकाएत्ति पवुच्चइ, ? गोयमा ! नो पुढवि तमुकाएत्ति पवुच्चइ, आउतमुकाएत्ति पवुच्चइ, से

भावार्थ प्रत्याख्याना प्रत्याख्यान से आयुष्य का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! जीव प्रत्याख्यानादि तीनों प्रकार से वैमानिक का आयुबंध करते हैं शेष अप्रत्याख्यान से आयुबंध करते हैं ॥ ८ ॥ प्रत्याख्यानी हैं, प्रत्याख्यान जानते हैं, प्रत्याख्यान करते हैं, व प्रत्याख्यान से आयुबंध करते हैं यह चार दंडक उक्त प्रदेशात्मक उद्देशे में विशेष कहे हैं. यह छट्ठा शतक का चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ६ ॥ ४ ॥

चौथे उद्देशे में जीव के सप्रदेशपने का कथन किया. पांचवे उद्देशे में तमस्काय का स्वरूप कहते हैं. तामिस पुद्गलों की राशि सो तमस्काय. अहो भगवन् ! क्या पृथ्वी को तमस्काय कहते हैं, या पानीको

शब्दार्थ कैसे गो० गौतम पु० पृथ्वीकायिक अ० कितनेक सु० शुभ देश को प०प्रकाशित करते हैं. अ०कितनेक दे० देश को नो० नहीं प० प्रकाशित करते हैं ते० इसलिये ॥ १ ॥ त० तमस्काय भं० भगवन् क० कहां स० उत्पन्न हुई क० कहां सं० रही गो० गौतम जं० जम्बूद्वीप की ब० बाहिर ति० तीर्च्छे अ०

सूत्र केणट्ठेणं ? गोयमा ! पुढविकाएणं अत्थेगइए सुभे देसं पकासेइ अत्थेगइए देसं नो पकासेइ से तेणट्ठेणं,॥१॥ तमुकाएणं भंते ! कहिं समुट्ठिए कहिं संनिट्ठिए ? गोयमा ! जंबुद्दीवस्स २ बहिया तिरिय मसंखेज्जे दीवसमुद्दे वीईवइत्ता, अरुणवरस्स

भावार्थ तमस्काय कहते हैं ? अहो गौतम ! जो तमस्काय है वह पृथ्वी का परिणाम नहीं है परंतु पानी का परिणाम है. इसलिये पृथ्वी को तमस्काय कहना नहीं, परंतु पानी को तमस्काय कहना. अहो भगवन् ! किस कारन से पृथ्वी को तमस्काय नहीं कहना परंतु पानी को तमस्काय कहना ? अहो गौतम ! पृथ्वी-काया के मणि आदि कितनेक स्कंध भास्वरपना से विवक्षित क्षेत्र में प्रकाश करते हैं, और कितनेक पृथ्वीकायिक देशपृथ्वीकायांतर प्रकाशने योग्य होने पर भी अभास्वरपना से प्रकाश नहीं करते हैं. अप्काय में अप्रकाशकपना रहा हुवा है वैसे ही तमस्काय में भी अप्रकाशकपना रहा हुवा है. इस से अप्काय परिणामवाली॥ तमस्काय रही हुई है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! तमस्काय कहां से उत्पन्न हुई है व कहां रही हुई है ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप से बाहिर असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघ कर जावे वहां

शब्दार्थ असंख्यात दी० द्वीप समुद्र वी०व्यतिक्रान्त करते अ०अरुणवर द्वीपकी बा० बाहिर की वे०वेदिका से अ० अरुणोदय स० समुद्र को बा० बीयालीस जो० योजन सहस्र उ० अवगाहकर उ० उपर के ज० जल के अंत से ए० एक प्रदेश की से० श्रेणीसे त० वहां त०तमस्काय स०उत्पन्न हुई स० सत्तरह इ०इक्कीस जो० योजन सहस्र उ० ऊर्ध्व उ० जाकर त० उस प० पीछे ति० तीर्च्छी प० विस्तृत होती हुई सो० सौधर्म ई० ईशान स० सनत्कुमार म० माहेन्द्र च० चारों क० कल्प को आ० ढककर उ० ऊर्ध्व

सूत्र दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ अरुणोदयं समुद्दं बायालीस जोयण सहस्साणि उग्गाहित्ता उवरिल्लाओ जलंताओ एग पदेसियाए सेढीए तत्थणं तमुकाए समुट्ठिए सत्तरसएक्कवीसे जोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता तओ पच्छा तिरियं पवित्थरमाणे २

भावार्थ अरुणवरद्वीप आता है, उस अरुणवरद्वीप की बाहिर की वेदिका से ४२ हजार योजन दूर अरुणवर समुद्र में जावे वहां पानी के उपर अंतिम विभाग की एक प्रदेश की + श्रेणी में से तमस्काय नीकली हुई है वहां से १७२१ योजन ऊंची जाकर तीर्च्छी विस्तृत होती हुई सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार व माहेन्द्र इन

+ यहां प्रदेश शब्द से आकाश का मात्र एक प्रदेश ग्रहण करना नहीं, क्योंकि एक प्रदेश में अपूकाय नहीं ठहर सकती है. परंतु जैसे एक प्रदेश में साधु समोसरे अर्थात् थोडे क्षेत्र में रहे, वैसे ही यहांपर एक प्रदेश का कथन किया है. अर्थात् थोडा क्षेत्र जानना.

पदार्थ — जा० यावत् बं० ब्रह्म क० देवलोक में रि० रिष्ट विमान प० प्रस्तर को सं० प्राप्त ए० यहां त० तमस्काय भं० रही हुई है. ॥ २ ॥ त० तमस्काय भं० भगवन् किं० क्या सं० संस्थित अ० नीचे म० सरावले के मू० मूलसे सं० संस्थित उ० ऊपर कु० कूर्कट का पं०पिंजरे से सं० संस्थित ॥ ३ ॥ त०तमस्काय भं० भगवन् के० कितनी वि० चौडाई से के० कितनी प० परिधि से प० प्ररूपी गो० गौतम दू०

सूत्र — सोहम्मीसाणसणंकुमारमहिंदे चत्तारिवि कप्पे आवरेत्ताणं उड्ढं पियणं जाव बंभलोए कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडं संपण्णे एत्थणं तमुकाए संनिट्ठिए ॥ २ ॥ तमुकाएणं भंते ! किं संठिए ? गोयमा ! अहेमल्लगमूलसंठिए, उप्पिं कुक्कुडगपंजरग संठिए पण्णत्ते ॥ ३ ॥ तमुकाएणं भंते ! केवइयं विक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ? गोयमा दुविहे पण्णत्ते तंजहा—संखेज्जवित्थडेय, असंखेज्जवित्थडेय । तत्थणं

भावार्थ — चारों देवलोक को घेर कर पांचवे ब्रह्मदेवलोक में रिष्ट नामक तीसरी प्रतर में उस के विमानतक गइ हुई है. और वहां परही तमस्काय स्थिर रही हुई है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! तमस्काय का कौनसा संस्थान है? अहो गौतम ! नीचे सरावले के संपुट का आकारवाली है और उपर मुर्गे के पिंजर का आकारवाली है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! तमस्काय चोडाइ में कितनी है, व परिधि में कितनी है ? अहो गौतम ! तम-

शब्दार्थ दो प्रकार की प० प्ररूपी तं० वह ज० यथा सं० संख्यात विस्तार वाली अ० असंख्यात विस्तार वाली त० उस में जे० जो सं० संख्यात विस्तार वाली से० वह सं० संख्यात जो० योजन स० सहस्र वि० चौडाइ मे अ० असंख्यात जो० योजन सहस्र प० परिधि से त० उस में जे० जो अ० असंख्यात वि० विस्तार वाली अ० असंख्यात जो० योजन स० सहस्र वि० चौडाइ में अ० असंख्यात जो० योजन सहस्र प० परिधि में ॥ ४ ॥ त० तमस्काय भं० भगवन् के० कितनी म० वडी अ० इस जं० जम्बूद्वीप में

सूत्र जे से संखेज्जवित्थडे सेणं संखेज्जाइ जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते तत्थणं जे से असंखेज्जवित्थडे सेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयण सहस्साइं परिक्खेवेणं प०॥४॥ तमुकाएणं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ? गोयमा ! अयणं जंबूदीवे दीवे सव्व दीव

भ स्काय का विस्तार दो प्रकार का है१. संख्यात योजन का विस्तार व २असंख्यात योजन का विस्तार. जहां संख्यात योजन का विस्तार है वहां उस की चौडाइ संख्यात सहस्र योजन की है और परिधि असंख्यात सहस्र योजन की है. जहां असंख्यात योजन का विस्तार है वहां असंख्यात योजन सहस्र की चौडाइ है और असंख्यात योजन सहस्र की परिधि है॥४॥ अहो भगवन् ! तमस्काय कितनी बडी कही ? अहो गौतम ! सब

शब्दार्थ स० सब द्वी० द्वीप स० समुद्र की स० सब आभ्यंतर, जा० यावत् प० परिधि में प० कहा दे० देश म० महार्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग इ० अभी ति० ऐसा क० करके के० संपूर्ण ज० जम्बूद्वीप ती० तीन अ० चपुट्टिका नि० कीहुई ति० एक्कीसवार अ० परिभ्रमण करके ह० शीघ्र आ० आवे से० उस दे० देवता की उ० उत्कृष्ट तु० त्वरित जा० यावत् दे० देवगति से वी० जातेहुए जा० यावत् ए० एक अ० दिन दु० दो दिन ति० तीन दिन उ० उत्कृष्ट छ० छमास वी० जावे अ० कितनेक त० तमस्काय वि०

सूत्र समुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ते, देवेणं महिड्ढीए जाव महाणुभावे इणामेव २ त्तिकट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तीहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियाट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा, सेणं देवत्ताए उक्किट्ठाए, तुरियाए जाव देवगईए वीईवयमाणे जाव एकाहंवा दुयाहं तियाहंवा उक्कोसेणं छम्मासे वीईवएज्जा अत्थेगइए तमु-

भावार्थ द्वीप समुद्र में यह जम्बूद्वीप वहुत छोटा, व आभ्यंतर है इस की परिधि तीन लाख सोलह हजार दोसो अठाइस योजन से कुछ कम की है. इस को कोई महार्द्धिक यावत् महानुभाग देव तीन चपटी वजावे इतने काल में इक्कवीस वक्त फीरे ऐसी उत्कृष्ट, त्वरित यावत् देवगति से एक दिन, दो दिन, तीन दिन यावत् छ मास पर्यंत फीरे तव संख्यात योजन के विस्तारवाली तमस्काय को उत्तीर्ण होजाते हैं परंतु असंख्यात

शब्दार्थ

दोप्रकार की प० प्ररूपी तं० वह ज० यथा सं० संख्यात विस्तार वाली अ० असंख्यात विस्तार वाली त० उस में जे० जो सं० संख्यात विस्तार वाली से० वह सं० संख्यात जो० योजन स० सहस्र वि० चौडाइ से अ० असंख्यात जो० योजन सहस्र प० परिधि से त० उस में जे० जो अ० असंख्यात वि० विस्तार वाली अ० असंख्यात जो० योजन स० सहस्र वि० चौडाइ में अ० असंख्यात जो० योजन सहस्र प० परिधि में ॥ ४ ॥ त० तमस्काय भं० भगवन् के० कितनी म० वडी अ० इस जं० जम्बूद्वीप में

सूत्र

जे से संखेज्जवित्थडे सेणं संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते तत्थणं जे से असंखेज्जवित्थडे सेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयण सहस्साइं परिक्खेवेणं प०॥४॥ तमुकाएणं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ? गोयमा ! अयणं जंबूदीवे दीवे सव्व दीव

भावार्थ

स्काय का विस्तार दो प्रकार का है १. संख्यात योजन का विस्तार व २ असंख्यात योजन का विस्तार. जहां संख्यात योजन का विस्तार है वहां उस की चौडाइ संख्यात सहस्र योजन की है और परिधि असंख्यात सहस्र योजन की है. जहां असंख्यात योजन का विस्तार है वहां असंख्यात योजन सहस्र की चौडाइ है और असंख्यात योजन सहस्र की परिधि है॥४॥ अहो भगवन् ! तमस्काय कितनी बडी कही ? अहो गौतम ! सब

शब्दार्थ आ० आत्मारंभी जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारंभी से० वह के० कीसतरह भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम अ० अविरति प० प्रत्ययिक से० वह ते० इसलिये जा० यावत् णो० नहीं अ० अनारंभी ए० ऐसे जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच म० मनुष्य ज० जैसे जी० जीव ण० विशेष सि० सिद्ध वि० रहित भा० कहना वा० वाणव्यंतर जा०यावत् वे० वैमानिक ज० जैसे णे०नारकी॥३९॥

सूत्र रंभावि जाव णो अणारंभा ॥ से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च. से तेणट्ठेणं जाव णो अणारंभा ॥ एवं जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥ मणुस्सा जहा जीवा णवरं सिद्धविरहिता भाणियव्वा ॥ वाणमंतरा जाव वेमाणिया जहा नेरइया

भावार्थ उभयारंभी हैं परंतु अनारंभी नहीं हैं. अहो भगवन् ! वह कैसे ? नारकी आत्मारंभी हैं यावत् अनारंभी नहीं हैं. अहो गौतम नारकी के जीव अविरति होने से आत्मारंभी हैं यावत् अनारंभी नहीं हैं. जैसे नारकी का कहा वैसेही दश भुवनपति, पांच स्थावर व तीन विकलेन्द्रिय व तिर्यंच पंचेन्द्रियतक जानना. और मनुष्य को सिद्ध भगवान् छोडकर जैसे जीवको संयति, असंयति, प्रमत्त अप्रमत्त ऐसे चार भांगे कहें वैसे ही यहां भांगा अनुसार आत्मारंभी परारंभी, उभयारंभी व अनारंभी के भेद जानना. और जैसे नारकी को कहा वैसे ही वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक का जानना. ॥ ३९ ॥ अविरति व सलेशी की साधर्म्यतासे आगे

शब्दार्थ उल्लंघे अ० कितनेक नो० नहीं वी० उल्लंघे ए० यह म० ऊचाइ गो० गौतम त० तमस्काय प० प्ररूपी ॥ ५ ॥ अ० है भं० भगवन् त० तमस्काय गे० गृह गे० दुकान नो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० योग्य अ० है भं० भगवन् त० तमस्काय गा० ग्राम जा० यावत् सं० सन्निवेश नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ ६ ॥ अ० है भं० भगवन् त० तमस्काय उ० प्रधान व० मेघ से० झरे स० उत्पन्न होवे वा० वर्षा वा० वर्षावे हं० हां अ० है तं० उसे भं० भगवन् किं० क्या दे० देव प० करते है अ० असुर प०

सूत्र कायं वीईवएज्जा अत्थेगइएतमुकायं नो वीइवएज्जा, ए महालएणं गोयमा ! तमुकाए पण्णत्ते ॥५॥ अत्थिणं भंते! तमुकाए गेहाइवा गेहवणाइवा? णोइणट्ठे समट्ठे॥ अत्थिणं भंते! तमुकाए गामाइवा जाव सन्निवेसाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ६ ॥ अत्थिणं भंते ! तमुकाए उराला वलाहया संसेयंति समुच्छंति वासं वासंति ? हंता अत्थि, तं भंते ! किं देवो पकरेइ, असुरो पकरेइ, नागो पकरेइ ? गोयमा ! देवोवि पकरेइ असुरोवि पकरेइ,

भावार्थ योजनवाली तमस्काय को उत्तीर्ण नहीं हो सकते हैं. अहो गौतम ! तमस्काय इतनी बडी कही है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या तमस्काय में गृह, दुकान, ग्राम, या नगर के आकार हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! तमस्काय में बहुत बडे मेघ स्नेह उत्पन्न करते हैं, पुद्गलों उत्पन्न होते हैं. और वर्षा वर्षती है ? हां गौतम ! यावत् वर्षा वर्षती है. अहो भगवन् ! क्या

पदार्थ करते हैं ना० नाग प० करते हैं गो० गौतम दे० देव करते हैं अ० असुर करते हैं ना० नाग करते हैं ॥ ७ ॥ अ० है भं० भगवन् त० तमस्काय में बा० बादर थ० स्थनित स० शब्द बा० बादर वि० विद्युत् हं० हां अ० है ॥ ८ ॥ अ० है भं० भगवन् त० तमस्काय बा० बादर पु० पृथ्वी काय बा० बादर अ० अग्निकाय णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ न० नहीं अ० अन्य वि० विग्रहगति ॥ ९ ॥ अ० है भं० भगवन् त० तमस्काय चं० चंद्रमा सू० सूर्य ग० ग्रह ग० समुह ण० नक्षत्र ता०

सूत्र नागोवि पकरेइ ॥ ७ ॥ अत्थिणं भंते ! तमुकाए बादरे थणियसद्दे बादरविज्जुयाए ? हंता अत्थि, तं भंते ! किं देवो पकरेइ ? तिण्णिवि पकरेइ ॥ ८ ॥ अत्थिणं भंते ! तमुकाए बादरे पुढवीकाए बादरे अगणिकाए ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ णण्णत्थ विग्गहगइसमावण्णाएणं ॥९॥ अत्थिणं भंते! तमुकाए चंदिम सूरिय गहगणनक्खत्त तारा

भावार्थ वह वर्षा देव करते हैं, असुर करते हैं व नाग करते हैं. ? अहो गौतम ! देव, असुर व नाग तीनों ही वर्षा करते हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! तमस्काय में क्या बादर शब्द व बादर विद्युत होते हैं ? हां गौतम ! तमस्काय में बादर विद्युत् व बादर शब्द होते हैं, अहो भगवन् ! उसे क्या देव, असुर व नाग करते हैं ? अहो गौतम ! तीनों जाति के देवों करते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! तमस्काय में बादर पथ्वीकाय व बादर तेउकाय क्या है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, अर्थात् उस में बादर

शब्दार्थ तारारूप नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ प० चारो तरफ अं० है भं० भगवन् त० तमस्काय में चं० चंद्रकी भा० कान्ति सूं० सूर्य की भा० कान्ति णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ दु० दुपनीक पु० पुनः सा० वह ॥ १० ॥ त० तमस्काय भं० भगवन् के० कैसा व० वर्ण से गो० गौतम का० काली का० काली कान्ति गं० गंभीर लो० रोमहर्ष की उत्पत्ति भी० रौद्र उ० त्रास उत्पन्न करने वाली प० परम कि०

सूत्र रूवा ? णो इणट्ठे समट्ठे पलियस्सओ पुण अत्थि। अत्थिणं भंते ! तमुकाए चंदाभाइवा; सूराभाइवा ? णोइणट्ठे समट्ठे का दूसणिया पुण सा ॥ १० ॥ तमुकाएणं भंते ! केरिसए वण्णेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! कालो, कालोभासे, गंभरिलोमह-

भावार्थ पृथ्वीकाय व वादर अग्निकाय नहीं है. मात्र वादर पृथ्वीकाय के जीव आयुष्य पूर्ण होने पर तमस्काय में से जाते हैं. वादर अग्निकाय मात्र मनुष्य लोक में है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! तमस्काय में चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारे रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अर्थात् तमस्काय में ज्योतिष चक्र नहीं है परंतु उस की आसपास रहा हुवा है. अहो भगवन् ! तमस्काय में क्या चंद्र व सूर्य की प्रभा है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्योंकि अढाइद्वीप की बाहिर चंद्र सूर्य स्थिर हैं और उन पुद्गलों को चंद्र सूर्य की प्रभा दूपित होती है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! तमस्काय का वर्ण कौनसा कहा ? अहो गौतम ! तमस्काय का वर्ण काला, काली प्रभावाला, गंभीररोमकम्पहर्षउत्पन्न

शब्दार्थ कृष्ण व० वर्ण से प० मरूपा दे० देव अ० कितनेक जे० जो त० उसको प० पहिले पा० देखकर खु० क्षुब्ध होवे अ० अथ अ० प्राप्त होवे त० उस की प० पीछे सी० शीघ्र तु० त्वरित खि० शीघ्र ही वी० व्यतिक्रान्त करे ॥ ११ ॥ त० तमस्काय के भं० भगवन् क० कितने ना० नाम प० कहे गो० गौतम ते० तेरह ना० नाम प० कहे तं० वह ज० यथा त० तम त० तमस्काय अं० अंधकार म० महांधकार लो० लोकांधकार लो० लोक तमिस्र दे० देवांधकार दे० देवतमिस्र दे० देवअरण्य वे०देवव्युह दे०देवफलिह दे०

सूत्र रिसजणणे, भीमे, उत्तासणए, परमकिण्हे वण्णेणं पण्णत्ते । देवेविणं अत्थेगइए जेणं तप्पढमयाए पासित्ताणं खुब्भाएज्जा, अहेणं अभिसमागच्छेज्जा, तओ पच्छा सीहं२ तुरियं२ खिप्पामेव वीईवएज्जा ॥ ११ ॥ तमुकायस्सणं भंते! कइ नामधेज्जा पण्णत्ता? गोयमा ! तेरस णामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा तमेइवा, तमुकाएइवा, अंधकारेइवा, महंधकारेइवा, लोगंधकारेइवा, लोगतमिसेइवा, देवंधकारेइवा, देवतमिसेइवा, देवरण्णे-

भावार्थ करनेवाला, भयंकर, त्रास उत्पन्न करे वैसा व परम कृष्ण कहा है. कितनेक देव भी उस को पहिले देखकर क्षुभित होते हैं. फीर तमस्काय में प्रवेश करके शीघ्र त्वरित गति से उसे उल्लंघ जाते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! तमस्काय के कितने नाम कहे हैं ? अहो गौतम ! तमस्काय के तेरह नाम कहे हैं. १ तम २ तमस्काय ३ अंधकार ४ महा अंधकार ५ लोकांधकार ६ लोक तमिस्र ७ देवांधकार

शब्दार्थ देवप्रतिक्षोभ अ० अरुणोदय स० समुद्र ॥ १२ ॥ त० तमस्काय भं० भगवन् किं० क्या पु० पृथ्वीपरिणाम जी० जीव परिणाम आ० अप्परिणाम पो० पुद्गल परिणाम गो० गौतम नो० नहीं पु० पृथ्वी परिणाम आ० अप्परिणाम जी० जीव परिणाम पो० पुद्गल परिणाम ॥ १६ ॥ त० तमस्काय भं० भगवन् स० सब पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्त्व पु० पृथ्वी कायपने जा० यावत् त० त्रसकाय पने

सूत्र इवा, देवबूहेइवा, देवफालिहेइवा, देवपाडिक्खोभेइवा, अरुणोदएइवा, समुद्दे ॥ १२ ॥ तमुकाएणं भंते ! किं पुढवि परिणामे, जीव परिणामे, आउपरिणामे पोग्गल परिणामे ? गोयमा ! नो पुढवि परिणामे आउपरिणामेवि, जीव परिणामेवि, पोग्गल परिणामेवि, ॥ १३ ॥ तमुकाएणं भंते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव तसकाइयत्ताए उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो ।

भावार्थ ८ देवतमिस्र ९ देव अरण्य १० देव व्युह ११ देव फलसा १२ देव प्रतिक्षोभ व १३ अरुणोदय ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! तमस्काय क्या पृथ्वीपरिणामवाली, पानी परिणामवाली, जीव परिणामवाली व पुद्गल परिणामवाली है ? अहो गौतम ! तमस्काय पृथ्वी परिणामवाली नहीं है अपितु पानी, जीव व पुद्गल परिणामवाली है ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! तमस्काय में पृथ्वीकाय यावत् त्रसकायपने सब प्राण भूत जीव व सत्त्व पहिले क्या उत्पन्न हुए ? हां गौतम ! सब प्राण, भूत, जीव व सत्त्व अनेक बार अथवा

कृष्ण व० वर्ण से प० प्रकाश दे० देव अ० कितनेक जे० जो त० उसको प० पहिले पा० देखकर खु० क्षुब्ध होवे अ० अथ अ० प्राप्त होवे त० उस की प० पीछे सी० शीघ्र तु० त्वरित खि० शीघ्र ही वी० व्यतिक्रान्त करे ॥ ११ ॥ त० तमस्काय के भं० भगवन् क० कितने ना० नाम प० कहे गो० गौतम ते० तेरह ना० नाम प० कहे तं० वह ज० यथा त० तम त० तमस्काय अं० अंधकार म० महांधकार लो० लोकांधकार लो० लोक तमिस्र दे० देवांधकार दे० देवतमिस्र दे० देवअरण्य वे० देवव्युह दे० देवफलिह दे०

सूत्र

रिसजणणे, भीमे, उत्तासणए, परमकिण्हे वण्णेणं पण्णत्ते। देवेविणं अत्थेगइए जेणं तप्पढमयाए पासित्ताणं खुब्भाएज्जा, अहेणं अभिसमागच्छेज्जा, तओ पच्छा सीहं२ तुरियं२ खिप्पामेव वीईवएज्जा ॥११॥ तमुकायस्सणं भंते! कइ नामधेज्जा पण्णत्ता? गोयमा! तेरस णामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा तमेइवा, तमुकाएइवा, अंधकारेइवा, महंधकारेइवा, लोगंधकारेइवा, लोगतमिसेइवा, देवंधकारेइवा, देवतमिसेइवा, देवरण्णे-

भावार्थ

करनेवाला, भयंकर, त्रास उत्पन्न करे वैसा व परम कृष्ण कहा है. कितनेक देव भी उस को पहिले देखकर क्षुभित होते हैं. फीर तमस्काय में प्रवेश करके शीघ्र त्वरित गति से उसे उल्लंघ जाते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन्! तमस्काय के कितने नाम कहे हैं? अहो गौतम! तमस्काय के तेरह नाम कहे हैं. १ तम २ तमस्काय ३ अंधकार ४ महा अंधकार ५ लोकांधकार ६ लोक तमिस्र ७ देवांधकार

शब्दार्थ

देवप्रतिशोप अ० अरुणोदय स० समुद्र ॥ १२ ॥ त० तमस्काय भं० भगवन् किं० क्या पु० पृथ्वीपरिणाम जी० जीव परिणाम आ० अप्परिणाम पो० पुद्गल परिणाम गो० गौतम नो० नहीं पु० पृथ्वी परिणाम आ० अप्परिणाम जी० जीव परिणाम पो० पुद्गल परिणाम ॥ १६ ॥ त० तमस्काय भं० भगवन् स० सब पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्त्व पु० पृथ्वी कायपने जा० यावत् त० त्रसकाय पने

सूत्र

इवा, देववूहेइवा, देवफलिहेइवा, देवपडिक्खोभेइवा, अरुणोदएइवा, समुद्दे ॥ १२ ॥ तमुकाएणं भंते ! किं पुढवि परिणामे, आउ परिणामे, जीव परिणामे, पोग्गल परिणामे ? गोयमा ! नो पुढवि परिणामे, आउपरिणामेवि, जीव परिणामेवि, पोग्गल परिणामेवि, ॥ १३ ॥ तमुकाएणं भंते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव तसकाइयत्ताए उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो ॥

अर्थ

८ देवतमिस्र ९ देव अरण्य १० देव व्यूह ११ देव फलसा १२ देव प्रतिक्षोभ व १३ अरुणोदय ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! तमस्काय क्या पृथ्वीपरिणामवाली, पानी परिणामवाली, जीव परिणामवाली व पुद्गल परिणामवाली है ? अहो गौतम ! तमस्काय पृथ्वी परिणामवाली नहीं है परंतु पानी, जीव व पुद्गल परिणामवाली है ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! तमस्काय में पृथ्वीकाय यावत् त्रसकायपने सब प्राण भूत जीव व सत्व पहिले क्या उत्पन्न हुए ? हां गौतम ! सब प्राण, भूत, जीव व सत्व अनेक वार अथवा

शब्दार्थ उ० उत्पन्न पूर्व हैं० हां गो० गौतम अ० अनेक वार अ० अथवा अ० अनंतवार णो० नहीं वा० बादर पु० पृथ्वी कायपने वा० बादर अग्निकायपने ॥ १४ ॥ क० कितनी भं० भगवन् क० कृष्णराजियों प० प्ररूपी गो० गौतम अ० आठ क० कृष्णराजियों प० प्ररूपी क० कहां भं० भगवन् ए० यह अ० आठ क० कृष्णराजियों प० प्ररूपी गो० गौतम उ० ऊपर स० सनत्कुमार मा० माहेन्द्र क० देवलोक में हि० नीचे बं० ब्रह्मलोक क० देवलोक में रि० रिष्ट वि० विमान प० प्रस्तर ए० यहां अ० अखाडा के सं०

सूत्र णो चेवणं बादर पुढविकाइयत्ताए, बादर अगणिकाइयत्ताए ॥ १४ ॥ कइणं भंते ! कण्हराईओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कण्हराईओ पण्णत्ताओ कहिणं भंते ! एया अट्ठ कण्हराईओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! उप्पिं सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं हिट्ठिं बंभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणे पत्थडे एत्थणं अक्खाडग समचउरंस संठाण संठियाओ अट्ठराईओ पण्णत्ताओ, तंजहा पुरच्छिमेणं दो, पच्चात्थिमेणं दो, दाहिणेणं दो, उत्तरेणं दो, पुरच्छिमब्भंतरा कण्हराई दाहिणं बाहिरं

भावार्थ अनंत वार उत्पन्न हुए, परंतु बादर पृथ्वीकाय व बादर अग्निकायपने नहीं उत्पन्न हुए, क्योंकि उन की उत्पत्ति का वहां अभाव है ॥ १४ ॥ तमस्काय के समान रंगवाली कृष्णराजी है इस से कृष्णराजी का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! कृष्णराजी कितनी कही? अहो गौतम ! कृष्णराजी आठ कहीं अहो भगवन् !

शब्दार्थ सम चतुस्र सं० संठाण से सं० रही हुई अ० आठ रा० राजियों प० प्ररूपी पु० पूर्व में दो० दो प०पश्चिम में दो० दो दा० दक्षिण में दो० दो उ० उत्तर में दो० दो पू० पूर्व की अ० आभ्यंतर क० कृष्णराजी दा० दक्षिण की वा० बाहिर की क० कृष्णराजी को पु० स्पर्शी हुई दा० दक्षिण की अ० आभ्यंतर क० कृष्णराजी प० पश्चिम की वा० बाह्य क० कृष्णराजियों छ० छकौने वाली दो० दो पु० पूर्व प० पश्चिम

सूत्र कण्हराइं पुट्ठा, दाहिणब्भंतरा कण्हराई पच्चच्छिम बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा पच्चत्थिमब्भंतरा कण्हराई उत्तरबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, उत्तरब्भंतरा कण्हराई पुरच्छिमबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, दो पुरच्छिम पच्चच्छिमाओ बाहिराओ कण्हराईओ छलंसाओ; दो उत्तरदाहिणबाहिराओ कण्हराईओ तंसाओ, दो पुरच्छिमपच्चच्छिमाओ अब्भंतराओ कण्हराईओ चउरंसाओ, दो उत्तर दाहिणाओ अब्भंतराओ कण्हराईओ चउरं

भावार्थ कृष्णराजी कहां कही ? अहो गौतम ! सनत्कुमार माहेन्द्र देवलोक की उपर व ब्रह्मदेवलोक की नीचे रिष्ट विमान प्रस्तर में अखाडे के समान समचउरंस संठाणसे रही हुई हैं. पूर्व में दो, पश्चिम में दो, दक्षिण में दो. उत्तर में दो. पूर्व की आभ्यंतर कृष्णराजी दक्षिण की बाह्य कृष्णराजी को स्पर्शकर रही हुई है, दक्षिण की आभ्यंतर कृष्णराजी पश्चिम की बाह्य कृष्णराजी को स्पर्शकर रही है पश्चिम की आभ्यंतर कृष्णराजी उत्तर की बाह्य कृष्णराजी को स्पर्शकर रही है और उत्तर की आभ्यंतर कृष्णराजी पूर्व की

शब्दार्थ उ० उत्पन्न पूर्व हं० हां गो० गौतम अ० अनेक वार अ० अथवा अ० अनंतवार णो० नहीं वा० बादर पु० पृथ्वी कायपने वा० बादर अग्निकायपने ॥ १४ ॥ क० कितनी भं० भगवन् क० कृष्णराजियों प० प्ररूपी गो० गौतम अ० आठ क० कृष्णराजियों प० प्ररूपी क० कहां भं० भगवन् ए० यह अ० आठ क० कृष्णराजियों प० प्ररूपी गो० गौतम उ० ऊपर स० सनत्कुमार मा० माहेन्द्र क० देवलोक में हि० नीचे बं० ब्रह्मलोक क० देवलोक में रि० रिष्ट वि० विमान प० प्रस्तर ए० यहां अ० अखाडा के सं०

सूत्र णो चेवणं बादर पुढविकाइयत्ताए, बादर अगणिकाइयत्ताए ॥ १४ ॥ कइणं भंते ! कण्हराईओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कण्हराईओ पण्णत्ताओ कहिणं भंते ! एया अट्ठ कण्हराईओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! उप्पिं सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं हिट्ठिं बंभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणे पत्थडे एत्थणं अक्खाडग समचउरंस संठाण संठियाओ अट्ठराईओ पण्णत्ताओ, तंजहा पुरच्छिमेणं दो, पच्चात्थिमेणं दो, दाहिणेणं दो, उत्तरेणं दो, पुरच्छिमब्भंतरा कण्हराई दाहिणं बाहिरं

भावार्थ अनंत वार उत्पन्न हुए, परंतु बादर पृथ्वीकाय व बादर अग्निकायपने नहीं उत्पन्न हुए, क्योंकि उन की उत्पत्ति का वहां अभाव है ॥ १४ ॥ तमस्काय के समान रंगवाली कृष्णराजी है इस से कृष्णराजी का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! कृष्णराजी कितनी कही? अहो गौतम ! कृष्णराजी आठ कहीं अहो भगवन् !

शब्दार्थ स० लेश्या सहित ज० जैसे ओ०औधिक कि०कृष्णलेश्या नी०नीललेश्या का०कापुत लेश्या ज० जैसे ओ० औधिक जीव ण० विशेष प० प्रमत्त अ० अप्रमत्त भा० कहना ते० तेजो लेश्या प० पद्मलेश्या सु० शुक्ल लेश्या ज० जैसे ओ० औधिक जीव ण० विशेष सि० सिद्ध णा० नहीं भा० कहना ॥४०॥ इ० यह भ० भविक भ० भगवन णा० ज्ञान प० परभविक ज्ञान उ० उभय भविक गो० गौतम इ० यह भ० भविक ज्ञान

सूत्र ॥ ३९ ॥ सलेस्सा जहा ओहिया किण्हलेसस्स नीललेसस्स, काउलेसस्स, जहा ओहिया जीवा। णवरं पमत्त अपमत्ताण भाणियव्वा। तेउलेसस्स पम्हलेसस्स सुक्कलेसस्स जहा ओहिया जीवा। णवरं सिद्धा ण भाणियव्वा ॥ ४० ॥ इह भविए भंते णाणे, परभविए णाणे, तदुभय भवि एणाणे ? गोयमा ! इह भविए वि णाणे, परभवि-

भावार्थ लेश्या का प्रश्नकहते हैं. अहो भगवन्! सलेशी जीव आरंभी हैं? अहो गौतम जैसे समुच्चय जीव का कहा. वैसा कहना. कृष्ण, नील व कापोत लेश्यावालेको समस्त जीव जैसे कहना परंतु इसमें प्रमत्त व अप्रमत्तका कथन करना नहीं तेजु, पद्म, व शुक्ल लेश्या वाले औधिक जीव (सब जीव) जैसे कहना यहां पर सिद्ध को कहना नहीं क्योंकि सिद्ध अलेशी हैं ॥ ४० ॥ अब आरंभ का हेतुभूत ज्ञानका स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन्!

अर्थ

उ० उत्तर द० दक्षिण की बा० बाहिर की क० कृष्णराजी तं० तीनकौने वाली दो० दो पु० पूर्व प० पश्चिम की अ० आभ्यंतर क० कृष्णराजी च० चौरस ॥ १५ ॥ क० कृष्णराजियों भं० भगवन् के० कितनी आ० लम्बाइ में के० कितनी वि० चौडाइ में के० कितनी प० परिधि में गो० गौतम अ० असंख्यात जो० योजन सहस्र आ० लम्बाइ में सं० संख्यात जो० योजन सहस्र वि० चौडाइ में अं० असंख्यात जो० योजनसहस्र प० परिधिमें प० कही ॥१६॥ क० कृष्णराजियों भं० भगवन् के० कितनी

सूत्र

साओ, ॥ पुव्वावरा छलंसा, तंसापुण दाहिणुत्तरावज्झा ॥ अवसेसा चउरंसा, सव्वाविय कण्हराईओ ॥ १ ॥ १५ ॥ कण्हराईओणं भंते ! केवइयं आयामेणं केवइयं विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ताओ ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयण सहस्साइं आयामेणं, संखेज्जाइं जोयण सहस्साइं विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ताओ ॥१६॥ कण्हराईओणं भंते ! के महालियाओ पण्णत्ताओ ?

भावार्थ

बाह्य कृष्णराजी को स्पर्शकर रही है. पूर्व पश्चिम की बाह्य दो कृष्णराजीयों छ कौनेवाली हैं, उत्तर दक्षिण की बाहिर की दो कृष्णराजीयों त्रिकौनाकार हैं, पूर्व पश्चिम की आभ्यंतर दो कृष्णराजीयों चौरस हैं, वैसेही उत्तर दक्षिण की दोनों आभ्यंतर कृष्णराजीयों चौरस हैं॥१५॥ अहो भगवन् ! कृष्णराजीयों लम्बाई चौडाई व परिधि में कितनी कही हैं? अहो गौतम! कृष्णराजीयों असंख्यात योजनकी लम्बी, संख्यात योजन सहस्र की चौडी, व असंख्यात योजन सहस्र की परिधिवाली हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! कृष्णराजीयों

शब्दार्थ सम चतुस्र सं० संठाण से सं० रही हुई अ० आठ रा० राजियों प० प्ररूपी पु० पूर्व में दो० दो प० पश्चिम में दो० दो दा० दक्षिण में दो० दो उ० उत्तर में दो० दो पू० पूर्व की अ० आभ्यंतर क० कृष्णराजी दा० दक्षिण की वा० बाहिर की क० कृष्णराजी को पु० स्पर्शी हुई दा० दक्षिण की अ० आभ्यंतर क० कृष्णराजी प० पश्चिम की बा० बाह्य क० कृष्णराजियों छ० छकौने वाली दो० दो पु० पूर्व प० पश्चिम

सूत्र कण्हराइं पुट्ठा, दाहिणब्भंतरा कण्हराई पच्चच्छिम बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा पच्चत्थिमब्भंतरा कण्हराई उत्तरबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, उत्तरब्भंतरा कण्हराई पुरच्छिमबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा, दो पुरच्छिम पच्चच्छिमाओ बाहिराओ कण्हराईओ छलंसाओ, दो उत्तरदाहिणबाहिराओ कण्हराईओ तंसाओ, दो पुरच्छिमपच्चच्छिमाओ अब्भंतराओ कण्हराईओ चउरंसाओ, दो उत्तर दाहिणाओ अब्भंतराओ कण्हराईओ चउरं

भावार्थ कृष्णराजी कहां कही ? अहो गौतम ! सनत्कुमार माहेन्द्र देवलोक की उपर व ब्रह्मदेवलोक की नीचे रिष्ट विमान प्रस्तर में अखाडे के समान समचउरंस संठाणसे रही हुई हैं. पूर्व में दो, पश्चिम में दो, दक्षिण में दो. उत्तर में दो. पूर्व की आभ्यंतर कृष्णराजी दक्षिण की बाह्य कृष्णराजी को स्पर्शकर रही हुई है, दक्षिण की आभ्यंतर कृष्णराजी पश्चिम की बाह्य कृष्णराजी को स्पर्शकर रही है पश्चिम की आभ्यंतर कृष्णराजी उत्तर की बाह्य कृष्णराजी को स्पर्शकर रही है और उत्तर की आभ्यंतर कृष्णराजी पूर्व की

र्थ उ० उत्तर द० दक्षिण की बा० बाहिर की क० कृष्णराजी तं० तीनकौने वाली दो० दो पु० पूर्व प० पश्चिम की अ० आभ्यंतर क० कृष्णराजी च० चौरस ॥ १५ ॥ क० कृष्णराजियों भं० भगवन् के० कितनी आ० लम्बाइ में के० कितनी वि० चौडाइ में के० कितनी प० परिधि में गो० गौतम अ० असंख्यात जो० योजन सहस्र आ० लम्बाइ में सं० संख्यात जो० योजन सहस्र वि० चौडाइ में अं० अंसख्यात जो० योजनसहस्र प० परिधिमें प० कही ॥१६॥ क० कृष्णराजियों भं० भगवन् के० कितनी

सूत्र साओ, ॥ पुव्वावरा छलंसा, तंसापुण दाहिणुत्तराबज्झा ॥ अवसेसा चउरंसा, सव्वाविय कण्हराईओ ॥ १ ॥ १५ ॥ कण्हराईओणं भंते ! केवइयं आयामेणं केवइयं विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ताओ ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयण सहस्साइं आयामेणं, संखेज्जाइं जोयण सहस्साइं विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ताओ ॥१६॥ कण्हराईओणं भंते ! के महालियाओ पण्णत्ताओ ?

भावार्थ बाह्य कृष्णराजी को स्पर्शकर रही है. पूर्व पश्चिम की बाह्य दो कृष्णराजीयों छ कौनेवाली हैं, उत्तर दक्षिण की बाहिर की दो कृष्णराजीयों त्रिकौनाकार हैं, पूर्व पश्चिम की आभ्यंतर दो कृष्णराजीयों चौरस हैं, वैसेही उत्तर दक्षिण की दोनों आभ्यंतर कृष्णराजीयों चौरस हैं॥१५॥ अहो भगवन् ! कृष्णराजीयों लम्बाई चौडाई व परिधि में कितनी कहीहैं? अहो गौतम! कृष्णराजीयों असंख्यात योजनकी लम्बी, संख्यात योजन सहस्र की चौडी, व असंख्यात योजन सहस्र की परिधिवाली हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! कृष्णराजीयों

शब्दार्थ

म० बडी प० कही गो० गौतम अ० यह जं० जम्बूद्वीप जा० यावत् अ० 'आठ' मास वी० व्यतीत होवे अ० कितनीक क० कृष्णराजियों वी० उल्लंघावे अ० कितनीक क० कृष्णराजियों णो० नहीं वी० उल्लंघावे ए० यह म० बडी गो० गौतम क० कृष्णराजियों प० प्ररूपी ॥ १७ ॥ अ० है भं० भगवन् क० कृष्णराजियों में गे० गृह गे० दुकानों णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ अ० है भं० भगवन् क० कृष्णराजियों में गा० ग्राम जा० यावत् स० सन्निवेश णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ १८ ॥ अ० है भं० भगवन् क०

सूत्र

गोयमा ! अयणं जंबुद्दीवे जाव अट्ठमासं वीईवएज्जा, अत्थेगइए कण्हराई वीईवएज्जा अत्थेगइए कण्हराई णो वीईवएज्जा, ए महालियाओ गोयमा ! कण्हराईओ पण्णत्ताओ ॥ १७ ॥ अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु गेहाइवा गेहवणाइवा ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु गामाइवा जाव सण्णिवेसाइवा ? णोइणट्ठेसमट्ठे

भावार्थ

कितनी बडी कही हैं ? अहो गौतम ! कोई देव तीन चप्पटिका में इस जम्बूद्वीप की आसपास इक्कीस वक्त परिभ्रमण करे ऐसी शीघ्र दीव्य देवगति से कृष्णराजि में आठ मास तक चले तब कितनीक कृष्णराजियों को अतिक्रमे और कितनीक कृष्णराजियों को अतिक्रमे नहीं. अहो गौतम ! इतनी बडी कृष्णराजियों कहीं हैं ॥१७॥ अहो भगवन् ! इन कृष्णराजियों में गृह, दुकानों, ग्राम यावत् सन्निवेश हैं ? अहो गौतम ? इन में गृह यावत् सन्निवेश नहीं हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! कृष्णराजियों में क्या बडे २ मेघ वगैरह हैं ?

शब्दार्थ कृष्णराजियों में उ० बादर व० मेघ सं० संस्वेद हं० हां अ० है तं० उसे भं० भगवन् किं० देव गो० गौतम देव प० करते हैं नो० नहीं अ० असुर नो० नहीं ना० नाग अ० है भं० भगवन् क० कृष्णराजियों में ब० बादर थ० गर्जना ज० जैसे उ० बडे त० तैसे ॥ १९ ॥ अ० है भं० भगवन् क० कृष्णराजियों में बा० बादर आ० अप्काय बा० बादर अ० अग्निकाय, बा० बादर व० वनस्पतिकाय णो०

सूत्र ॥१८॥ अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु उरालाबलाहया संसेयंति ३ ? हंता अत्थि ॥ तं भंते ! किं देवो ३ ? गोयमा ! देवो पकरेइ नो असुरो नो नाओ । अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु बादरे थणियसद्दे २ ? जहा उराला तहा ॥१९॥ अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु बायरे आउकाए बायरे अगणिकाए, बायरे वणप्फइकाए ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥णण्ण-

भावार्थ हां गौतम ! बडे २ मेघ रहे हुवे हैं. अहो भगवन् ! उन्हे क्या देव करते हैं, असुर करते हैं या नाग करते हैं ? अहो गौतम ! उन मेघको देव बनाते हैं परंतु असुर व नाग नहीं बनाते हैं. अहो भगवन् ! कृष्णराजियों में क्या बादर गर्जना व बादर विद्युत् है ? हां गौतम ! उस में बादर गर्जना व बादर विद्युत है, और उन्हे देव बनाते हैं. परंतु असुर व नाग जाति के देव नहीं बनाते हैं. क्योंकि उन का वहां गमन नहीं है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! क्या कृष्णराजियों में बादर अप्काय, अग्निकाय व वनस्पति

शब्दार्थ

म० बडी प० कही गो० गौतम अ० यह जं० जम्बूद्वीप जा० यावत् अ० आठ मास वी० व्यतीत होवे अ० कितनीक क० कृष्णराजियों वी० उल्लंघावे अ० कितनीक क० कृष्णराजियों णो० नहीं वी० उल्लंघावे ए० यह म० बडी गो० गौतम क० कृष्णराजियों प० प्ररूपी ॥ १७ ॥ अ० है भं० भगवन् क० कृष्णराजियों में गे० गृह गे० दुकानों णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ अ० है भं० भगवन् क० कृष्णराजियों में गा० ग्राम जा० यावत् स० सन्निवेश णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ १८ ॥ अ० है भं० भगवन् क०

सूत्र

गोयमा ! अयणं जंबुदीवे जाव अट्ठमासं वीईवएज्जा, अत्थेगइए कण्हराई वीई-वएज्जा अत्थेगइए कण्हराई णो वीईवएज्जा, ए महालियाओ गोयमा ! कण्हराईओ पण्णत्ताओ ॥ १७ ॥ अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु गेहाइवा गेहवणाइवा ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु गामाइवा जाव सण्णिवेसाइवा ? णोइणट्ठेसमट्ठे

भावार्थ

कितनी बडी कही हैं ? अहो गौतम ! कोई देव तीन चपटिका में इस जम्बूद्वीप की आसपास इक्कीस वक्त परिभ्रमण करे ऐसी शीघ्र दीव्य देवगति से कृष्णराजि में आठ मास तक चले तब कितनीक कृष्णराजियों को अतिक्रमे और कितनीक कृष्णराजियों को अतिक्रमे नहीं. अहो गौतम ! इतनी बडी कृष्णराजियों कहीं हैं ॥१७॥ अहो भगवन् ! इन कृष्णराजियों में गृह, दुकानों, ग्राम यावत् सन्निवेश हैं ? अहो गौतम ? इन में गृह यावत् सन्निवेश नहीं हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! कृष्णराजियों में क्या बडे २ मेघ गर्जारव हैं ?

शब्दार्थ कृष्णराजियों में उ० वादर व० मेघ सं० संस्वेद हं० हां सं० है तं० उसे भं० भगवन् किं० देव गो० गौतम देव प० करते हैं नो० नहीं अ० असुर नो० नहीं ना० नाग अ० है भं० भगवन् क० कृष्णराजियों में व० वादर थ० गर्जना ज० जैसे उ० वडे त० तैसे ॥ १९ ॥ अ० है भं० भगवन् क० कृष्णराजियों में वा० वादर आ० अप्काय वा० वादर अ० अग्निकाय, वा० वादर व० वनस्पतिकाय णो०

सूत्र ॥१८॥ आत्थिणं भंते ! कण्हराईसु उरालाबलाहया संसेयंति ३ ? हंता आत्थि ॥ तं भंते ! किं देवो ३ ? गोयमा ! देवो पकरेइ नो असुरो नो नाओ । आत्थिणं भंते ! कण्हराईसु बादरे थणियसद्दे २ ? जहा उराला तहा ॥१९॥ आत्थिणं भंते ! कण्हराईसु बायरे आउकाए बायरे अगणिकाए,बायरे वणप्फइकाए ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥णण्ण-

भावार्थ हां गौतम ! वडे २ मेघ रहे हुवे हैं. अहो भगवन् ! उन्हे क्या देव करते हैं, असुर करते हैं या नाग करते हैं ? अहो गौतम ! उन मेघको देव वनाते हैं परंतु असुर व नाग नहीं वनाते हैं. अहो भगवन् ! कृष्णराजियों में क्या वादर गर्जना व वादर विद्युत् है ? हां गौतम ! उस में वादर गर्जना व वादर विद्युत् है, और उन्हे देव वनाते हैं. परंतु असुर व नाग जाति के देव नहीं वनाते हैं. क्योंकि उन का वहां गमन नहीं है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! क्या कृष्णराजियों में वादर अप्काय, अग्निकाय व वनस्पति

शब्दार्थ

म० बडी प० कही गो० गौतम अ० यह जं० जम्बूद्वीप जा० यावत् अ० 'आठ' मास वी० व्यतीत होवे अ० कितनीक क० कृष्णराजियों वी० उल्लंघावे अ० कितनीक क० कृष्णराजियों णो० नहीं वी० उल्लंघावे ए० यह म० बडी गो० गौतम क० कृष्णराजियों प० प्ररूपी ॥ १७ ॥ अ० है भं० भगवन् क० कृष्णराजियों में गे० गृह गे० दुकानों णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ अ० है भं० भगवन् क० कृष्णराजियों में गा० ग्राम जा० यावत् स० सन्निवेश णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ १८ ॥ अ० है भं० भगवन् क०

सूत्र

गोयमा ! अयणं जंबुद्दीवे जाव अट्ठमासं वीईवएज्जा, अत्थेगइए कण्हराई वीईवएज्जा अत्थेगइए कण्हराई णो वीईवएज्जा, ए महालियाओ गोयमा ! कण्हराईओ पण्णत्ताओ ॥ १७ ॥ अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु गेहाइवा गेहवणाइवा ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु गामाइवा जाव सण्णिवेसाइवा ? णोइणट्ठेसमट्ठे

भावार्थ

कितनी बडी कही हैं ? अहो गौतम ! कोई देव तीन चप्पटिका में इस जम्बूद्वीप की आसपास इक्कीस वक्त परिभ्रमण करे ऐसी शीघ्र दीव्य देवगति से कृष्णराजि में आठ मास तक चले तब कितनीक कृष्णराजियों को अतिक्रमे और कितनीक कृष्णराजियों को अतिक्रमे नहीं. अहो गौतम ! इतनी बडी कृष्णराजियों कहीं हैं ॥१७॥ अहो भगवन् ! इन कृष्णराजियों में गृह, दुकानों, ग्राम यावत् सन्निवेश हैं ? अहो गौतम ? इन में गृह यावत् सन्निवेश नहीं हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! कृष्णराजियों में क्या बडे २ मेघ वगैरह हैं ?

शब्दार्थ कृष्णराजियों में उ० वादर व० मेघ सं० संस्वेद हं० हां सं० है तं० उसे भं० भगवन् किं० देव गो० गौतम देव प० करते हैं नो० नहीं अ० असुर नो० नहीं ना० नाग अ० है भं० भगवन् क० कृष्णराजियों में व० वादर थ० गर्जना ज० जैसे उ० वडे त० तैसे ॥ १९ ॥ अ० है भं० भगवन् क० कृष्णराजियों में वा० वादर आ० अप्काय वा० वादर अ० अग्निकाय, वा० वादर व० वनस्पतिकाय णो०

सूत्र ॥१८॥ अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु उरालावलाहया संसेयंति ३ ? हंता अत्थि ॥ तं भंते ! किं देवो ३ ? गोयमा ! देवो पकरेइ नो असुरो नो नाओ । अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु बादरे थणियसद्दे २ ? जहा उराला तहा ॥१९॥ अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु बायरे आउकाए बायरे अगणिकाए,बायरे वणप्फइकाए ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥णण्ण-

भावार्थ हां गौतम ! बडे २ मेघ रहे हुवे हैं. अहो भगवन् ! उन्हे क्या देव करते हैं, असुर करते हैं या नाग करते हैं ? अहो गौतम ! उन मेघको देव बनाते हैं परंतु असुर व नाग नहीं बनाते हैं. अहो भगवन् ! कृष्णराजियों में क्या वादर गर्जना व वादर विद्युत् है ? हां गौतम ! उस में वादर गर्जना व वादर विद्युत है, और उन्हे देव बनाते हैं. परंतु असुर व नाग जाति के देव नहीं बनाते हैं. क्योंकि उन का वहां गमन नहीं है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! क्या कृष्णराजियों में वादर अप्काय, अग्निकाय व वनस्पति

शब्दार्थ नहीं इ० यह अर्थ सं० समर्थ ण० नहीं अ० अन्यत्र वि० विग्रहगति स० समापन्न ॥ २० ॥ अ० है भं० भगवन् चं० चंद्र सू० सूर्य णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ अ० है भं० भगवन् क० कृष्णराजियों में चं० चंद्र की कान्ति नो० नहीं इ० यह अर्थ स०योग्य ॥ २१ ॥ क० कृष्णराजियों [redacted] भं० भगवन् के० कैसा व०वर्ण प० कहा का० काला जा० यावत् खि०शीघ्र वी० व्यतिक्रान्त होवे ॥२२॥ क०कृष्णराजियों

मूल त्थ विग्गहगइसमावण्णएणं ॥ २० ॥ अत्थिणं भंते ! चंदिम सूरिम ? णो इणट्ठे-समट्ठे ॥ अत्थिणं कण्हराईसु चंदाभाइ २ वा ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ २१ ॥ कण्हराईणं भंते ! केरिसियाओ वण्णेणं पण्णत्ताओ ? गोयमा ! कालाओ जाव खिप्पामेव वीईवएज्जा ॥ २२ ॥ कण्हराईणं भंते ! कइनामधेज्जा पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ

भावार्थ काय है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, परंतु विग्रहगतिवाले जीव कदाचित् उत्पन्न होते हैं ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! क्या वहां चंद्र सूर्य अथवा चंद्र सूर्य की कान्ति है ? यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् वहां नहीं है ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! कृष्णराजियों का वर्ण कैसा है ? अहो गौतम ! कृष्णराजियों का वर्ण काला, काली कान्तिवाला यावत् देवता भी उसे देखकर क्षुब्ध होते हैं और शी- घ्र उसे उल्लंघ जाते हैं ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! कृष्णराजियों के कितने नाम कहे हैं ? अहो गौतम !

शब्दार्थ प॰परभविक उ॰उभय भविक ज्ञान दं॰दर्शन ए॰ऐसे॥४१॥ इ॰यह भ॰भविक च॰ चारित्र प॰ परभविक चारित्र उ॰उयभविक चारित्र गो॰गौतम इ॰यह भविक चारित्र णो॰नहीं प॰परभविक चारित्र णो॰नहीं उ॰ उभयभविक चारित्र ए॰ऐसे त॰तपसंयम॥४२॥ अ॰असंवृत्त अ॰ अनगार सि॰सिझे बु॰बुझे मु॰मुक्त होवे प॰

सूत्र एवि णाणे, तदुभयभविएवि णाणेय दंसणंपि एवामेव ॥४१॥ इह भविए भंते चारित्ते, परभविए भंते चारित्ते, तदुभय भविए चारित्ते ? गोयमा ! इह भविए चरित्ते, णो पर भविए चारित्ते, णो तदुभय भविए चारित्ते एवं तवे, संजमे ॥ ४२ ॥ असंवुडेणं भंते अणगारे सिज्झति, बुज्झति, मुच्चति, परिणिव्वाति, सव्वदुक्खाणमंतंकरेंति ? गोयमा !

भावार्थ इस भविक[1] ज्ञान होता है, परभविक[2] ज्ञान होता है, अथवा दोनों[3] प्रकार का ज्ञान होता है ? अहो गौतम ! इस भविक, परभविक व तदुभयभविक ज्ञान होता है ऐसे ही दर्शनका जानना. ॥ ४१ ॥ अहो भगवन्! इस भवका चारित्र, परभवका चारित्र, व दोनों भवका चारित्र? अहो गौतम! इस भव संबंधिही चारित्र है परंतु परभविक व उभय भविक चारित्र नहीं है-ऐसेही तप व संयम का जानना.॥४२॥ अहो भगवन् असंवृत आश्रवद्वार को नहीं रुंधने वाला अणगार क्या सिझे, बुझे, कर्म से मुक्त होवे निर्वाणको प्राप्त होवे

१ जो ज्ञान यहां पर शीखने में आया होवे और परभव में साथ न जावे, २ इस भवमे शीखने मे आया होवे और परभवमें साथ जावे ३ इस भवमे शीखनेमें आया होवे वह परभव में व परतरभव में अनुवर्तसो

मूल

गौतम अ० अनेकबार अ० अथवा अ० अनंतवार नो० नहीं वा० बादर आ० अप्कायपने वा० बादर अग्निकायपने वा० बादर वायुकायपने ॥ २८ ॥ इ० इन अ० आठ क० कृष्णराजियों में अ० आठ उ० आंतरे में अ० आठ लो० लोकान्तिक वि० विमान प० कहे अ० अर्ची अ० अर्चिमाली व० वैरोचन प० प्रभंकर चं० चद्राभ सू० सूर्याभ सु० शुक्राभ सु० सुप्रतिष्ठाभ म० मध्य में रि० रिष्ठाभ ॥ २९ ॥ क० कहां अ० अर्ची वि० विमान प० प्ररूपा गो० गौतम उ० ईशान में पु० ऐसे ही प० परिपाटी से ने० जानना

एवुत्तो नो चेवणं बायर आउकाइयत्ताए, बायर अगणिकाइयत्ताए, बादरवणस्सइ काइयत्ताए ॥ २५ ॥ एयासिणं अट्ठण्हं कण्हराइणं अट्ठसु उवासंतरेसु अट्ठलोगं-तिय विमाणा पण्णत्ता, तंजहा अच्ची, अच्चीमाली, वइरोयणे, पभंकरे, चंदाभे, सूराभे, सुक्काभे, सुपइट्ठाभे, मज्झे रिट्ठाभे ॥ २६ ॥ कहिणं भंते ! अच्चिविमाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! उत्तरपुरच्छिमेणं ॥ कहिणं भंते ! अच्चिमाली विमाणे पण्णत्ते ? गोयमा !

भावार्थ

जीव व सत्व क्या पहिले उत्पन्न हुए ? हां गौतम ! पहिले अनेक वार व अनंत वार उत्पन्न हुवे परंतु बादर अप्काय, अग्निकाय व वनस्पति कायपने उत्पन्न नहीं हुवे हैं ॥ २८ ॥ इन आठ कृष्णराजियों के आठ आंतरे कहे हैं. उन आठ आंतरे में लोकान्तिक देव के आठ विमान कहे हैं:—अर्ची, अर्ची-माली, वैरोचन, प्रभंकर, चंद्राभ, सूर्याभ, शुक्राभ, सुप्रतिष्ठाभ और मध्य में रिष्ठाभ ॥ २९ ॥ अहो भगवन् !

शब्दार्थ के क० कितने ना० नाम गो० गौतम अ० आठ क० कृष्णराजी मे० मेघराजी म० मघा मा० माघवती वा० वातफलिह वा० वातपरिक्षोभ दे० देवफलिह दे० देवपरिक्षोभ ॥ २३ ॥ क० कृष्णराजियों का भं० भगवन् किं० क्या पु० पृथ्वी परिणाम आ० अप् जी० जीव पो० पुद्गल परिणाम गो० गौतम पु० पृथ्वी परिणाम नो० नहीं आ० अप् परिणाम जी० जीव परिणाम पो० पुद्गल परिणाम ॥ २४ ॥ क० कृष्ण राजी में भं० भगवन् स० सब पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्व उ० उत्पन्न पु० पूर्व हं० हां गो०

सूत्र नामधेज्जा पण्णत्ता तंजहा कण्हराईइवा, मेहराईइवा, मघाइवा, माघवईइवा, वायफलिहा इवा, वायफलिक्खोभाइवा, देवफलिहाइवा, देवफलिक्खोभाइवा ॥२३॥ कण्हराईओणं भंते ! किं पुढवि परिणामाओ, आउ जीव पोग्गल परिणामाओ ? गोयमा ! पुढवि परिणामाओवि, नो आउपरिणामाओ जीव परिणामाओवि, पोग्गलपरिणामाओवि॥ २४॥कण्हराईसुणं भंते! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता उववण्ण पुव्वा? हंता गोयमा! असइं अदुवा अणंत-

भावार्थ कृष्णराजियों के आठ नाम कहे हैं ? कृष्णराजि, मेघराजि, मघा, माघवती, वातफलिह, वातपरिक्षोभ, देवफलिह, देवपरिक्षोभ ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! क्या कृष्णराजियों पृथ्वी परिणामवाली है, या अप् जीव व पुद्गल परिणामवाली हैं ? अहो भगवन् ! कृष्णराजियों पृथ्वी परिणामवाली हैं वैसेही जीव व पुद्गल परिणामवाली हैं परंतु अप् परिणामवाली नहीं हैं ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! कृष्णराजि में सब प्राण भूत,

शब्दार्थ वि० विमान में प० रहते हैं क० कहां आ० आदित्य देव प० रहते हैं अ० अर्चिमाली विमान में ए० ऐसे ने० जानना ज० यथानुपूर्वि जा० यावत् क० कहां भं० भगवन् रि० रिष्टदेव प० रहते हैं गो० गौतम रि० रिष्ट विमान में ॥ २९ ॥ सा० सारस्वत आ० आदित्य को भं० भगवन् दे० देवों को क० कितने देव क० कितने दे० देवशत प० कहे गो० गौतम स० सात दे० देव स० सात देवशत प० परिवार व० वन्हि व० वरुण दे० देवों को चो० चौदह दे० देव चो० चौदहदेवसहस्र ग० गर्दतोय तु० तुषित को स०

सूत्र गोयमा ! अच्चिंमि विमाणे परिवसंति ॥ कहिणं आइच्चा देवा परिवसंति ? गोयमा ! अच्चिमालिंमि विमाणे, एवं नेयव्वं जहाणुपुव्वीए जाव कहिणं भंते ! रिट्ठा देवा परिवसंति ? गोयमा ! रिट्ठंमि विमाणे ॥ २९ ॥ सारस्सय माइच्चाणं भंते ! देवाणं कइदेवा कइदेवसया पण्णत्ता ? गोयमा सत्तदेवा सत्तदेवसया परिवारो पण्णत्ता ॥ वण्हिवरुणाणं चोद्दसदेवा चोद्दसदेव सहस्सा पण्णत्ता ॥ गद्दतोय तुसियाणं देवाणं सत्तदेवा सत्तदेवसहस्सा प० ॥ अवसेसाणं नवदेवा, नवदेवसया पण्णत्ता ॥ पढम

भावार्थ में वन्हि, प्रभंकर में वरुण, चंद्राभ में गर्दतोय, सूर्याभ में तुषित, शुक्राभ में अव्याबाध, सुप्रतिष्ठाभ में आगिच्च, और रिष्टाभ में रिष्ट नामक लोकान्तिक देव रहते हैं ॥ २९ ॥ सारस्वत आदित्य इन दोनों देवों को सात देव आधिपति हैं और एक २ को एकसो २ का परिवार रहा हुवा है इस से सातसो देव का परिवार है.

शब्दार्थ क० कहां भं० भगवन् रि० रिष्ट विमान प० कहा गो० गौतम ब० बहुतं मध्य के दे० देशमें ॥ २७ ॥ ए० इन अ० आठ लो० लोकान्तिक वि० विमान में अ० आठ लो० लोकान्तिक दे० देव प० रहते हैं सा० सारस्वत आ० आदित्य व० वन्हि व० वरुण ग० गर्दतोय त० तुषित अ० अव्याबाध अ० आगिच्च रि० रिष्ट ॥ २८ ॥ क० कहां भ० भगवन् सा० सारस्वत दे० देव प० रहते हैं गो० गौतम अ० अर्चि

सूत्र पुरच्छिमेणं एवं परिवाडीए नेयव्वं जाव कहिणं भंते ! रिट्ठविमाणे पण्णत्ते? गोयमा ! बहुमज्झ देसभागे॥ २७ ॥ एएसुणं अट्ठसु लोगंतिय विमाणेसु अट्ठविहा लोगंतिया देवा परिवसंति तंजहा—सारस्सय माइच्चा, वण्ही वरुणाय गद्दतोयाय ॥ तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठाय ॥ १ ॥ २८ ॥ कहिणं भंते ! सारस्सया देवा परिवसंति ?

भावार्थ अर्ची विमान कहां कहा है ? अहो गौतम ! अर्ची विमान ईशान कौन में कहा है. अर्चीमाली पूर्व में, वैरोचन अग्निकौन में, प्रभंकर दक्षिण में, चंद्राभ नैऋतकौन में, सूर्याभ पश्चिम में, शुक्राभ वायव्य में, सुप्रातिष्ठाभ उत्तर में और मध्य में रिष्ठाभ ॥ २७ ॥ इन आठ लोकान्तिक विमान में आठ प्रकार के लोकान्तिक देव रहते हैं. १ सारस्वत, २ आदित्य ३ वन्हि ४ वरुण, ५ गर्दतोय ६ तुषित ७ अव्याबाध ८ आगिच्च और ९ रिष्ठ ॥ २८ ॥ अर्ची विमान में सारस्वत देव रहते हैं, अर्चिमाली में आदित्य, वैरोचन

शब्दार्थ

अ० अनंतवार नो० नहीं दे० देवपने लो० लोकान्तिक वि० विमान में लो० लोकान्तिक ॥ ३१ ॥ लो० लोकान्तिक दे० देवों की भं० भगवन् के० कितनी ठि० स्थिति प० प्ररूपी गो० गौतम अ० आठ सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी ॥३२॥ लो० लोकान्तिक वि० विमानों से भं० भगवन् के० कितना अ० अव्याबाध से लो० लोकान्त प० प्ररूपा गो० गौतम अ० असंख्यात जो० योजन स० सहस्र अ० अव्याबाध से लो० लोकान्त प० प्ररूपा से० वैसे ही भं० भगवन्

सूत्र

अदुवा अणंतक्खुत्तो नो चेवणं देवत्ताए लोगंतिय विमाणेसु लोगंतिया ॥ ३१ ॥ लोगंतिय देवाणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठसागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, ॥ ३२ ॥ लोगंतिय विमाणेहिंतो णं भंते ! केवइयं अबाहाए लोगंते पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयण सहस्साइं, अबाहाए लोगंते पण्णत्ते सेवं

भावार्थ

योजन का तला कहा है, यावत् लोकान्तिक विमान में पृथ्वीकायादिपने अनेक वार व अनंत वार उत्पन्न हुए परंतु लोकान्तिक देवपने नहीं उत्पन्न हुए ॥ ३१ ॥ अहो भगवन् ! लोकान्तिक देवों की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! लोकान्तिक देवों की आठ सागरोपम की स्थिति कही ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! लोकान्तिक विमानों से कितना दूर लोकान्त रहा है ? अहो गौतम ! अव्याबाध पने असंख्यात योजन दूर लोकान्त रहा हुवा है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह छठा शतक का

शब्दार्थ सातदेव सा० सातदेव सहस्र अ० शेप न० नवदेव न० नवदेवशत प० प्रथम जु० दो में स० सात स० सो बी० दूसरे में चो० चौदह स० सहस्र त० तीसरे में स० सात स० सहस्र न० नव स० सो से० शेप में ॥ ३० ॥ लो० लोकान्तिक भं० भगवन् वि० विमान किं० क्या प० प्रतिष्ठित ए० ऐसे ही ने० जानना वि० विमानों का प० आधार वा० जाडाइ उ० ऊंचाइ सं० संठाण बं० ब्रह्मलोक की व० वक्तव्यता ज० जैसे जी० जीवाभिगम में दे० देव उ० उद्देश में जा० यावत् हं० हां अ० अनेकवार अ० अथवा

सूत्र जुगलंमि सत्तओ सयाणि, बीयम्मि चोद्दससहस्सा, ॥ तइए सत्तसहस्सा, नवचेव सयाणि सेसेसु ॥ १ ॥ ३० ॥ लोगंतिय विमाणाणं भंते ! किंपइट्ठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! वाउपइट्ठिया। एवं नेयव्वं विमाणाणं पइट्ठाणं बाहुल्लुच्चत्तमेव संठाणं, बंभ-लोय वत्तव्वया नेयव्वा, जहा जीवाभिगमे देवुद्देसए जाव ? हंता गोयमा असइं

भावार्थ वन्हि वरुण को चौदह देव हैं, एक को एक २ हजार का परिवार होने से चौदह हजार देव का परिवार रहा हुवा है. गर्दतोय और तुषित को सात देव और सात हजार देव का परिवार, अव्याबाध, आग्नि-च्च व रिष्ट को नव देव नवसों देवों का परिवार है ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! लोकान्तिक विमान किस आधार से रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! लोकान्तिक विमान वायु प्रतिष्ठित हैं. लोकान्तिक विमान अत्यु-त्तम श्रेष्ठ हैं विमान में रक्त, पीत व शुक्ल ऐसे तीन वर्ण हैं सात सो योजन के ऊंचे कहे हैं, पच्चीस सो

जा० यावत् क० कितने भं० भगवन् अ० अनुत्तर विमान प० कहे गो० गौतम पं० पांच अ० अनुत्तर विमान प० कहे तं० वह ज० यथा वि० विजय जा० यावत् स० सर्वार्थसिद्ध ॥ १ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मा० मारणान्तिक स० समुद्घात से स० मरकर जे० जो भ० योग्य इ० इस. र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी में ती० तीस नि० नरकावास में स० लक्ष अ० अन्यतर नि० नरकावास में ने० नारकीपने उ० उत्पन्न होने को से० अथ भं० भगवन् त० वहां आ० आहारकरे प० परिणमावे स० शरीर वं० बांधे गो०

पण्णत्ता? गोयमा! पंच अणुत्तर विमाणा पण्णत्ता, तंजहा विजए जाव सव्वट्ठसिद्धे॥ १॥ जीवेणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहए समोहणित्ता जे भाविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास सयसहस्सेसु अन्नयरंसि निरयावासंसि नेर- इयत्ताए उववज्जित्तए, सेणं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा बंधेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए तत्थगएचेव आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा

विमान की पृच्छा करते हैं. अहो भगवन् ! अनुत्तर विमान कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! अनुत्तर वि- मान पांच कहे हैं उन के नाम १ विजय २ वैजयंत ३ जयंत ४ अपराजित ५ सर्वार्थ सिद्ध ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मारणान्तिक समुद्घातसे मरकरके जो जीव इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासे में से किसी नरकावास में नारकीपने उत्पन्न होने योग्य होवे, वह जीव क्या वहां गया हुवा वहां के पुद्गलों का

दार्थ

छ० छठा स० शतक का प० पांचवा उ० उद्देशा स० समाप्त ॥ ६ ॥ ५ ॥ ×

क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम स० सात पु० पृथ्वीयों प० प्ररूपी तं० वह ज० यथा र० रत्नप्रभा जा० यावत् त० तमतमप्रभा र० रत्नप्रभा के आ० आवास भा० कहना जा० यावत् अ० नीचे स० सातवी ए० ऐसे जे० जो० ज० जितने आ० आवास ते० वे भा० कहना

सूत्र

भंते भंतेत्ति ॥ छट्ठसए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥ ५ ॥ * * •

कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा–रयणप्पभा जाव तमतमा, रयणप्पभादीणं आवासा भाणियव्वा जाव अहे सत्तमाए एवं जे जत्तिया आवासा ते भाणियव्वा जाव कइणं भंते ! अणुत्तर विमाणा

भावार्थ

पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ६ ॥ ५ ॥ + * * *

पांचवे उद्देशे में विमानादिकों की वक्तव्यता कही, और इस में भी इस का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! पृथ्वी कितनी कहीं ? अहो गौतम ! पृथ्वी सात कहीं. उन के नाम १ रत्नप्रभा २ शर्कर प्रभा ३ वालु प्रभा ४ पंकप्रभा ५ धूम्रप्रभा ६ तमप्रभा और ७ तमतमप्रभा, रत्न प्रभा में ३० लाख आवास, शर्कर प्रभा में २५ लाख, वालुप्रभा में १५ लाख, पंकप्रभा में १० लाख, धूम्रप्रभा में तीन लाख, तमप्रभा में पांच कमएक लाख, और तमतमप्रभा में मात्र पांच आवास कहे हैं. ऐसेही अनुत्तर विमान तक जानना. अनुत्तर

शब्दार्थ मारणान्तिक से स० मरकर जे० जो भ० योग्य च० चौसठ अ० असुरकुमार वास स० लक्ष अ० अन्यतर अ० असुरकुमार वास में अ० असुरकुमार पने उ० उत्पन्न होने को ज० जैसे ने० नारकी त० तैसे भा० कहना जा० यावत् थ० स्थनित कुमार ॥ ३ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मा० मारणान्तिक स० करके जे० जो भ० योग्य अ० असंख्यात पु० पृथ्वी कायिक वा० वर्ष स० लक्ष अ० अन्यतर पु० पृथ्वीकायिक वा० वास में पु० पृथ्वीकायपने उ० उत्पन्न होने को से० अथ भं० भगवन् मं० मेरु प० पर्वत

सूत्र पुढवी ॥ २ ॥ जीवेणं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए जे भविए चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारत्ताए उववज्जित्तए जहा नेरइया तहा भाणियव्वा जाव थणियकुमारा ॥ ३ ॥ जीवेणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहए २ जे भविए असंखेज्जेसु पुढविकाइया वास सयसहस्सेसु अन्नयरंसि पुढविकाइयावासंसि पुढवि काइयत्ताए उववज्जित्तए सेणं

भावार्थ और शरीर बांधते हैं, ऐसे ही सातवी पृथ्वीतक का जानना ॥ २ ॥ असुरकुमार यावत् स्थनित कुमार में उत्पन्न होकर आहार करने का, रस परिणमाने का व शरीर बांधने का नारकी जैसे कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! मारणान्तिक समुद्घात से मरकर जो जीव पृथ्वीकायिक के असंख्यात स्थान में से किसी स्थान में उत्पन्न होने योग्य होता है वह मेरु पर्वत की पूर्व दिशा में कितना दूर जाता है और किस स्थान मास

शब्दार्थ गौतम अ० कितनेक त० वहां रहे हुवे आ० आहारकरे प० परिणमावे स॰ शरीर बं० बांधे अ० कितनेक त० वहां से प० पीछा फीरकर इ० यहां आ० आवे आ० आकर दो० दूसरीवार मा० मारणान्तिक स० समुद्घात स० करे स० करके इ० इस र०रत्नप्रभा पु०पृथ्वीके ती०तीस नि०नरकावास स०लक्ष अ०अन्य ने० नारकीपने उ० उत्पन्न होने को त० उस प० पीछे आ० आहारकरे प० परिणमावे स० शरीर बं० बांधे ए० ऐसे जा० यावत् अ० नीचे स० सातवी पु० पृथ्वी ॥ २ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मा०

सूत्र बंधेज्जा, अत्थेगइए तत्थपडिनियत्ताइ तओ पडिनियतित्ता इह मागच्छइ मागच्छइत्ता दोच्चंपि मारणंतिय समुग्घाएणं समोहणइ समोहणइत्ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास सय सहस्सेसु अण्णयरंसि निरयावासंसि णेरइयत्ताए उववज्जित्ताए॥ तओ पच्छा आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरं वा बंधेज्जा, एवं जाव अहे सत्तमा

भावार्थ आहार करता है, उन को खल रसपने परिणमाता है व शरीर उत्पन्न करता है ? अहो गौतम ! कितनेक जीव वहां रहे हुवे आहार करते हैं, उसे खल रसपने परिणमाते हैं, व शरीर बांधते हैं. और कितनेक जीव उस नरकावास से अथवा मारणान्तिक समुद्घात से पीछे फीरते हैं और जहां अपने शरीर हैं वहां आते हैं. आकर दूसरी वक्त मारणान्तिक समुद्घात से मरकर इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासे में से किसी नरकावास में उत्पन्न होते हैं, फीर आहार करते हैं, खल रसपने परिणमाते हैं

शब्दार्थ स० लेश्या सहित ज० जैसे ओ० औधिक कि० कृष्णलेश्या नी० नीललेश्या का० कापुत लेश्या ज० जैसे ओ० औधिक जीव ण० विशेष प० प्रमत्त अ० अप्रमत्त भा० कहना ते० तेजो लेश्या प० पद्मलेश्या सु० शुक्ल लेश्या ज० जैसे ओ० औधिक जीव ण० विशेष सि० सिद्ध णा० नहीं भा० कहना ॥४०॥ इ० यह भ० भविक भ० भगवन णा० ज्ञान प० परभविक ज्ञान उ० उभय भविक गो० गौतम इ० यह भ० भविक ज्ञान

सूत्र ॥ ३९ ॥ सलेस्सा जहा ओहिया किण्हलेसस्स नीललेसस्स, काउलेसस्स, जहा ओहिया जीवा । णवरं पमत्त अपमत्ताण भाणियव्वा । तेउलेसस्स पम्हलेसस्स सुक्कलेसस्स जहा ओहिया जीवा । णवरं सिद्धा ण भाणियव्वा ॥ ४० ॥ इह भविए भंते णाणे, परभविए णाणे, तदुभय भवि एणाणे ? गोयमा ! इह भविए वि णाणे, परभवि-

भावार्थ लेश्या का प्रश्नकहते हैं. अहो भगवन्! सलेशी जीव आरंभी हैं? अहो गौतम जैसे समुच्चय जीव का कहा. वैसा कहना. कृष्ण, नील व कापोत लेश्यावालेको समस्त जीव जैसे कहना परंतु इसमें प्रमत्त व अप्रमत्तका कथन करना नहीं तेजु, पद्म, व शुक्ल लेश्या वाले औधिक जीव (सब जीव) जैसे कहना यहां पर सिद्ध को कहना नहीं क्योंकि सिद्ध अलेशी हैं ॥ ४० ॥ अब आरंभ का हेतुभूत ज्ञानका स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन्!

शब्दार्थ की पु० पूर्व में के० कितना ग० जावे के० कहां पा० प्राप्त होवे गो० गौतम लो० लोकान्त में ग० जावे लो० लोकान्त में पा० प्राप्त होवे अ० अंगुल का अ० असंख्यात भा० भागमात्र सं० संख्यात भा० भागमात्र वा० वालाग्र वा० प्रत्येक वालाग्र ए० ऐसे लि० लींख जू० यूका ज० यव अं० अंगूल जा० यावत् जो०

सूत्र भंते ! मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं केवइयं गच्छेज्जा केवइयं पाउणेज्जा ? गोयमा ! लोयंतं गच्छेज्जा लोयंतं पाउणेज्जा ॥ सेणं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा बंधेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए तत्थगएचेव आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा बंधेज्जा, अत्थेगइए तओ पडिनियत्तइ २ त्ता इह मागच्छइ मागच्छइत्ता दोच्चंपि मारणंतिय समुग्घाएणं समोहणइ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं अंगुलस्स असंखेज्जभागमेत्तंवा, संखेज्जइ भागमेत्तंवा वालग्गंवा

भावार्थ होता है ? अहो गौतम ! वह जीव मारणान्तिक समुद्घात करके लोकान्ततक जाता है और लोकान्त तक स्थिर होता है. अहो भगवन् ! क्या वे जीव वहां ही आहार करते हैं, परिणमाते हैं व शरीर बांधते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक वहां ही आहार करते हैं, परिणमाते हैं व शरीर बांधते हैं और कितनेक वहां से पीछे अपने शरीर में आते हैं, और पुनः मारणान्तिक समुद्घात से मरकर मेरु पर्वत की पूर्व में अंगुल के असंख्यात भागमात्र, संख्यात भागमात्र, वालाग्र, प्रत्येक वालाग्र, ऐसेही लिख, यूका,

शब्दार्थ योजन क्रोड जो० योजन क्रोडा क्रोड सं० संख्यात अ० असंख्यात जो० योजन सहस्र में लो० लोकान्त में ए० एक प्रदेशात्मक से० श्रेणीको मो०अवगाहकर अ० असंख्यात पु० पृथ्वी कायिक वा० वास स० लक्ष अ० अन्यतर पु० पृथ्वी काया के वा० वास में पु० पृथ्वी कायापने उ० उत्पन्न होवे त० उस

सूत्र वालग्गपुहत्तंवा, एवं लिक्ख, जूयं, जव, अंगुल, जाव जोयणकोडिंवा जोयण कोडा कोडिंवा, संखेज्जेसुवा असंखेज्जेसुवा, जोयणसहस्सेसु लोगंतेवा एगपदेसियं सेढिं मोत्तूण असंखेज्जेसु पुढविकाइया वास सयसहस्सेसु अण्णयरंसि पुढवि काइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए उववज्जेत्ता तओ पच्छा आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा बंधेज्जा, जहा पुरच्छिमेणं मंदरस्स पव्वयस्स आलावओ भणिओ, एवं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं उड्ढं अहे जहा पुढविकाइया तहा एगिंदियाणं सव्वेसिं एक्के-

भावार्थ पत्र, अंगूल यावत् क्रोडाक्रोड योजन, संख्यात, असंख्यात योजन सहस्र व लोकान्त तक जाकर अंगुल के असंख्यातवे भाग जितने क्षेत्र में एक प्रदेशात्मक श्रेणी को अवगाह करके पृथ्वीकाय के असंख्यात सहस्र वास में से किसी वास में उत्पन्न हुए पीछे आहार करते हैं, खलरसपने परिणमाते हैं व शरीर बांधते हैं.

पद्यपि असंख्यात आकाश प्रदेश अवगाहन स्वभाववाला जीव है तथापि एक प्रदेश की श्रेणीवर्ती असंख्यात प्रदेश की अवगाहना में भी जाने का स्वभाव होने से एक प्रदेश श्रेणी अवगाह कर जाने का कहा।

पदार्थ — पीछे आ० आहारकर प० परिणमाव स० शरीर वं० बांधे ज० जैसे पु० पूर्व में मे० मेरु प०पर्वत का आ० आलापक भ० कहा ए० ऐसे दा० दक्षिण का प० पश्चिम का उ० उत्तर का उ० ऊर्ध्व अ० अधो ज० जैसे पु० पृथ्वीकायिक त० तैसे ए० एकेन्द्रिय स० सब ए० एक का छ० छ आ० आलापक भा० कहना

सूत्र — क्कस्स छ आलावगा भाणियव्वा ॥ ४ ॥ जीवेणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहए २ जे भविए असंखेज्जेसु बेइंदियावास सय सहस्सेसु अण्णयरंसि बेइंदिया वासंसि बेइंदियत्ताए उववज्जित्तए, सेणं भंते ! तत्थगएचेव जहा नेरइया एवं जाव अणुत्तरोववाइया ॥ जीवेणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहए २ जेभविए पंच अणुत्तरेसु महइ महालएसु महाविमाणेसु अण्णयरंसि अणुत्तरविमाणंसि अणुत्तरोववाइय देवत्ताए उववज्जित्तए सेणं भंते! तत्थगए चेव जाव आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा बंधेज्जा

भावार्थ — जैसे पूर्व दिशा का कहा वैसे ही दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, ऊर्ध्व व अधो का जानना. पृथ्वीकाय के छ आलापक जैसे अप्, तेउ, वायु, व वनस्पति का जानना ॥ ४ ॥ तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, वाणव्यंतर ज्योतिषी, व वैमानिक का नारकी जैसे जानना. अहो भगवन्! जीव मारणान्तिक समुद्घात करके जो पांच अनुत्तर विमान में उत्पन्न होने योग्य होता है वह वहां उत्पन्न होकर क्या आहार करते हैं, खल-रसपने परिणमाते हैं व शरीर बांधते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक जीव वहां आहार ग्रहण करते हैं

शब्दार्थ ॥ ४ ॥ पूर्ववत् से० वैसे ही भं० भगवन् छ० छठा स० शतक में छ० छठा उ० उद्देशा ॥ ६ ॥ ६ ॥

अ० अथ भं० भगवन् सा० शाल वी० व्रीहि गो० गेहुं ज० यव ज० जवार ए० इन ध० धान्य को को० कोठे में गुप्त प० बांस के टोपले में गुप्त मं० तृण के माले में उ० उपलिप्त लि० लिप्त पि० ढका हुवा मु० मुद्रित हुआ लं० लक्षित किया की के० कितना काल जो० योनि सं० रहती है गो० गौतम ज० जघन्य अं० अंत मुहूर्त उ० उत्कृष्ट ति० तीन सं० संवत्सर ते० उस पीछे जो० योनि प० म्लान होवे ते० उस

सूत्र सेवं भंते भंतेत्ति पुढवि उद्देसओ सम्मत्तो ॥ छट्ठसए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥६॥६॥

अह भंते ! सालीणं, वीहीणं, गोधूमाणं, जवाणं, जवजवाणं, एएसिणं धण्णाणं कोट्ठाउत्ताणं, पल्लाउत्ताणं, मंचाउत्ताणं, मालाउत्ताणं, उलित्ताणं, लित्ताणं, पिहियाणं मुद्दियाणं, लंछियाणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठइ ? गोयमा ! जहण्णं अंतोमुहुत्तं

भावार्थ रूल रस पने परिणमाते हैं व शरीर बांधते हैं और कितनेक वहां से पीछे स्व शरीर में आकर दूसरी वक्त मारणा- न्तिक समुद्घात करके वहां उत्पन्न होते हैं और फीर आहारादि करते हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह छठा शतक का छठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ६ ॥ ६ ॥

अहो भगवन् ! शाल, व्रीहि, गेहुं, यव व जवार इन धान्य को कोठा, पाला, मांचा, व माले में रखकर

शब्दार्थ पीछे जो० योनि वि० विध्वंस होवे ते० उस पीछे बी० बीज अ० अबीज भ० होवे ते० उस पीछे जो० योनि का वी० विच्छेदपना प० प्ररूपा स० श्रमण ॥१॥ अ० अथ भं० भगवन् क० चने म० मसुर ति० तिल मु० मूंग मा० उडद नि० वाल कु० कुलथी आ० चवले सं० तुवर प० काले चने इ० इन ध० धान्यों को ज० जैसे सा० शाली का त० तैसे ए० ऐसे न० विशेष पं० पांच सं० संवत्सर से० शेष तं० वैसे

सूत्र उक्कोसं तिण्णि संवच्छराइं, तेणपरं जोणी पमिलायइ तेण परं जोणी विद्धंसइ, तेणं परं बीए अबीए भवइ, तेणं परं जोणी वोच्छेदे पन्नत्ते समणाउसो ! ॥ १ ॥ अह भंते ! कलाव, मसूर, तिल, मुग्ग, मास, निप्फाव, कुलत्थ, आलिसंदग, संतीणं पलिमंथगमाईणं, एएसिणं धण्णाणं जहा सालीणं तहा एयाणिवि णवरं पंच संवच्छराइं सेसं तंचेव ॥ २ ॥ अह भंते ! अयसि कुसुंभग, कोद्दव, कंगु, वरग, रालग,

भावार्थ चारों तरफ से लीपे, अच्छी तरह ढके, मुद्रित करे, व रेखादिक के लक्षण करे तब उस की योनि कितने काल तक रहती है, ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन वर्ष तक रहे. फीर योनि म्लान होती है, विध्वंस होती है और बीज अबीज होजाता है, और योनि का विच्छेद होजाता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! चने, मसुर तिल, मुंग, उडद, वाल, कुलथी, चवले, तुवर व कालेचने इन धान्यों को कोठे आदि में भरकर अच्छी तरह से लीपे यावत् मुद्रित करे तब कितना काल तक रहे ?

शब्दार्थ अ० अहोरात्रि प० पक्ष दो० दो प० पक्ष मा० मास दो० दो मास उ० ऋतु ति० तीन उ० ऋतु अ० अयन दो० अयन सं० संवत्सर पं० पांच स० संवत्सर जु० युग वी० वीसयुग वा० वर्षशत द० दश वा० वर्ष शत वा० वर्ष सहस्र स० सो वा० वर्ष सहस्र का वा० वर्ष लक्ष च० चौरासी व० वर्षलक्ष ए० एक पु० पूर्वांग च० चौरासी पु० पूर्वांग लक्ष ए० एक पु० पूर्व ए० ऐसे तु० तृटित अ० अडड अ० अपप हू० हूहूय उ० उत्पल प० पद्म

सूत्र वाससयं, दसवाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साणं वाससयसहस्सं, चउरासीइं वास सयसहस्साणि से एगे पुव्वंगे, चउरासीतिं पुव्वंग सय सहस्साइं सेएगे-पुव्वे; एवं तुडिए २, अडडे २, अपपे २, हूहुए २, उप्पले २, पउमे २, नलिणे २

भावार्थ वर्ष, चौरासी लक्ष वर्ष का एक पूर्वांग, चौरासी लक्ष पूर्वांगका एक पूर्व, चौरासी लाख पूर्व का एक तृटितांग चौरासी लक्ष तृटितांग का एक तृटित, चौरासी लाख तृटितका एक अडडांग, चौरासी लक्ष अडडांगका एक अडड, चौरासी लक्ष अडडका अपपांग, चौरासी लक्ष अपपांग का एक अपप, चौरासी लक्ष अपप का एक हूहूतांग, चौरासी लक्ष हूहूतांग का एक हूहूत, चौरासी लक्ष हूहूत का एक उत्पलांग, चौरासी लक्ष उत्पलांग का एक उत्पल, चौरासी लक्ष उत्पल का एक पद्मांग, चौरासी लक्ष पद्मांग का एक पद्म, चौरासी लक्ष पद्म का एक नलिणांग, चौरासी लक्ष नलिणांग का एक नलिण, चौरासी लक्ष नलिन का एक अच्छिनिउरांग, चौरासी लक्ष अच्छिनिउरांग का एक अच्छिनिउर, चौरासी लक्ष अच्छिनिउर का एक

शब्दार्थ न० नलिन अ० अच्छिणिऊर अ० अडय ए० एडय न० नउय चू० चूलिका सी० शीर्षप्रहेलिका ए० यह अ० गणित का वि० विषय ते० उस पीछे उ० उपमा ॥ ४ से० अथ किं० क्या उ० उपमा दु० दोप्रकार की प० पल्योपम सा० सागरोपम से से० अथ किं० क्या प० पल्योपम स० शस्त्र से ति० तीक्ष्ण छे० छेदने को भे० भेदने को जं० जिसे न० नहीं कि० खरेखर स० शक्य तं० उसे प० परमाणु सि० केवली व० कहते हैं आ० आदि प० प्रमाण का अ० अनंत प० परमाणु पुद्गलों के स० समुदाय का स०

सूत्र आच्छिणिऊरे २, अडए २, एडए २, नउएय २, चूलिय २, सीसपहेलिय २, एयावयावगणियस्स विसए, तेणंपरं उवमिए ॥ ४ ॥ से किं तं उवमिए दुविहे पण्णत्ते, तंजहा--पलिओवमेय, सागरोवमेय ॥ से किं तं पलिओवमे ? सत्थेणं सुतिक्खेणवि छेत्तुं भेत्तुं च जं न किरसक्का ॥ तं परमाणुं सिद्धा, वयंति आइं पमाणाणं ॥ १ ॥ अणंताणं परमाणुपोग्गलाणं समुदय सामिति समागमेणं साएगा उसण्ह णि-

भावार्थ अडयांग ऐसे ही चोरासी लक्ष गुने करते अडय, एडयांग, एडय, नउयांग. नउय, चूलियांग, चूलिय, सीसपहेलियांग, सीसपहेलिय. वहांतक गणित का विषय है, इस से आगे मात्र उपमा है ॥ ४ ॥ उपमा दो प्रकार की पल्योपम व सागरोपम. उस में से पल्योपम की उपमा बतलाते हैं. तीक्ष्ण शस्त्रसे भी जो भेदावे नहीं, छेदावे नहीं उस परमाणुको केवली भगवन्त आदि प्रमाण कहते हैं. अर्थात् प्रमाणों की आदि परमाणु से है.

शब्दार्थ मीलने के स० समागम से सा० वह ए० एक उ० ओसन्न सन्निय स० शीत सन्निया उ० ऊर्ध्वरेणु त० त्रसरेणु र० रथरेणु वा० वालाग्र लि० लींख जू० यूका ज० यवमध्य अं० अंगूल अ० आठ उ० ओसन्न सन्निया का ए० एक म० शीतसान्निया अं० आठ शीतसान्निया का ए० एक उ० ऊर्ध्वरेणु दे० देवकुरु उ० उत्तरकुरु के म० मनुष्यों का वा० वालाग्र ए० ऐसे ह० हरिवास र० रम्यक हे० हेमवय

सूत्र

याइवा, सण्हसाण्हियाइवा उद्धरेणूइवा, तसरेणूइवा, रहरेणूइवा, वालग्गाइवा, लिक्खा इवा, जूयाइवा, जवमज्झेइवा, अंगुलेइवा, अट्ठ उसण्हसाण्हियाओ साएगा सण्हसण्हिया अट्ठसण्हसण्हयाओ सा एगा उद्धरेणू,अट्ठ उद्धरेणूओ सा एगा तसरेणू अट्ठ तसरेणूओ साएगा रहरेणू, अट्ठरहरेणूओ से एगे देवकुरु उत्तरकुरुगाणं मणूसाणं वालग्गे,एवं हरिवासरम्मग,

भावार्थ यह परमाणु सूक्ष्म शस्त्र से भी भेदा नहीं जाता है. ऐसे अनंत परमाणुओं का एक उसन्नसन्निया होता है, आठ उसन्न सन्निया का एक शीतसेणीया होवे, आठ शीतसेणीयाका का एक ऊर्ध्वरेणु, आठ ऊर्ध्वरेणु का एक त्रसरेणु (पूर्वादिवायु से प्रेरित) आठ त्रसरेणु का एक रथरेणु, आठ रथरेणु का देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रोत्पन्न मनुष्य का एक वालग्र, देवकुरु उत्तरकुरुक्षेत्र के मनुष्य के आठ वालाग्र जितना एक हरिवर्ष रम्यकवर्ष मनुष्य का वालाग्र, हरिवर्ष रम्यकवर्ष मनुष्य के आठ वालाग्र जितना हेमवय एरणवय मनुष्य का एक वालाग्र, हेमवय एरणवय मनुष्य के आठ वालाग्र जितना पूर्व पश्चिम

शब्दार्थ ए० एरणवय पु० पूर्व विदेह अ० पश्चिम विदेह म० मनुष्यों के अ० आठ वा० वालाग्र ए० एक लि० लीख अ० आठ लि० लीख की ए० एक जू० यूका अ० आठ जू० यूका का ए० एक ज० यवमध्य अ० आठ ज० यवमध्य का ए० एक अं० अंगूल प्रमाण इ० इन अ० अंगुल प्रमाण से छ० छ अंगूल का पा० पांव बा० बारह अं० अंगूल की वि० वेंत च० चौवीस अं० अंगूल की र० हाथ अ०अडतालीस अं० अंगूल की कु० कुक्षि छ० छन्नु अं० अंगुल के ए० एक दं० दंड ध० धनुष्य जु० धोसरुं ना०

सूत्र हेमवएरन्नवयाणं, पुव्वविदेहाणं मणूसाणं अट्ठ वालग्गा सा एगा लिक्खा, अट्ठ लिक्खाओ सा एगा जूया, अट्ठजूयाओ साएगा जवमज्झे अट्ठ जवमज्झाओ से एगे अंगुले एएणं अंगुलप्पमाणेणं, छअंगुलाणि पादो, बारस अंगुलाइं विहत्थी, चउवीस अंगुलाइं रयणी अडयालीसं अंगुलाइं कुच्छी, छण्णउइ अंगुलाणि से एगे दंडेइवा धणूइवा जुएइवा नालियाइवा, अक्खेइवा, मुसलेइवा एएणं धणुप्पमाणेणं दो धणुसहस्साइं गाउयं,

भावार्थ महाविदेह क्षेत्र के मनुष्य का वालाग्र, पूर्वपश्चिम महाविदेह क्षेत्र के मनुष्य के आठ वालाग्र जितनी एक लिख, आठलिख जितनी एक यूका, आठ यूका जितना एक यवमध्य, आठ यवमध्य जितना एक अंगूल, छ अंगूल का एक पांव, बारह अंगूल की एकवेंत, चौवीस अंगूल का एक हाथ, अडतालीस अंगुल की एक कुच्छी [कुक्षि] छिन्नु अंगुलके धनुष्य, दंड, गाडी का धूंसरा, लष्टि, गाडे के चक्र का आरा व

गालिका म० अस मु० मूंशल ३० इन ४० धनुष्य प्रमाण से दो०हो ४० धनुष्य सहस्त्र [illegible] प्रमाण,
गाडका जो० योजन ए० ऐसा जो० योजन प्रमाण से जो० जो ए० पाला जो० योजन का आय
गोल जो० योजन उ० ऊंचा उ० ऊंचा से० उसे तिगुने स० विशेष ए० परिधि से होय औ
१ ६ ८० दोदिन के ने० नीरंतर के उ० उत्कृष्ट स० सात ए० बंधे का रो० कर्मो पूरित भरा
रे गाउयाइं उव्वेहेणं ते तिउणं सविसेसं परिरएणं, से णं एगाहिय बेहिय
सेणं जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, एएणं जोयणप्पमाणेणं, जे पल्ले जोयणं आयाम विक्खं-
१ उक्कोसं सत्तरत्तप्परूढाणं संमट्ठे सन्निचिए भरिए वालग्ग कोडीणं, ते णं वालग्गे
अग्गी डहेज्जा, नो वाऊ हरेज्जा, नो कुच्छेज्जा, नो परिविद्धंसेज्जा, नो पूइत्ताए
होते हैं, इस धनुष्य प्रमाण से दो हजार धनुष्य का एक गाउ, चार गाउ का एक योजन, इस
योजन प्रमाण से एक योजन का लम्बा, चौडा, तीगुनी से विशेष परिधिवाला, और एक योजन
का उंडा ऐसा एक पाला में देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्र में एक दिन, दो दिन यावत् सात दिन के जुगलिये
युगलिये के बच्चों का बालाग्र के असंख्यात खंड करके भरे, और इस से इतना ठांसकर भरे
कि जिस से उन बालाग्रों को अग्नि जला सके नहीं, वायु उड़ा सके नहीं, सडे नहीं, विध्वंस
होवे नहीं, दुर्गंध उत्पन्न होवे नहीं. फीर उस पाले में से सो सो वर्ष में एकेक बालाग्र निकाले इस तरह सो

शब्दार्थ करे आ० आयुष्य क० कर्म सि० कदाचित् बं० बांधे सि० कदाचित् नो० नहीं बं० बांधे अ० असाता वे० वेदनीय क० कर्म को भु० वारंवार उ० इकठाकरे अ० अनादी अ० अनंत दी० दीर्घकाल चा० चातुरंत सं० संसार कंतार में अ० परिभ्रमणकरे से० उसको ते० इसलिये गो० गौतम अ० असंवृत अ० अनगार णो० नहीं सि० सिझे ॥ ४२ ॥ सं० संवृत अ० अनगार सि० सिझे हं० हा

सूत्र सिय बंधइ सिय नो बंधइ, असाया वेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो भुज्जो उवचिणइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंतारं अणुपरियट्टति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! असंवुडे अणगारे णो सिज्झइ ॥ ४२ ॥ संवुडेणं भंते अणगारे सिज्झइ ? हंता सिज्झइ जाव अंतं करेइ ॥ सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा ! संवुडेणं

भावार्थ कर्मों को दीर्घ काल की स्थितिवाले बनाता है मंद रस देनेवाले कर्मोंको तीव्ररस देनेवाला करता है, अल्प प्रदेशात्मक कर्मों को बहुत प्रदेशात्मक कर्म करता है. आयुष्य कर्म का बंध किसि समय करता है किसि समय नहीं करता है, असाता वेदनीय कर्म पुनःपुनः संचित करता है, और अनादि अनंत संसार कंतार में परिभ्रमण करता है; इसलिये अहो गौतम ! असंवृत अनगार सिझे नहीं, यावत् संसार का अंतकरे नहीं. ॥ ४२ ॥ अहो भगवन्! आश्रवद्वार का रुंधन करनेवाला संवृत अणगार क्या सिझे यावत् अंतकरे ? हां गौतम ! संवृत अणगार सिझे यावत् अंत करे भगवन् ! किस कारन से संवृत्त अणगार सिझे यावत् अंत

शब्दार्थ क्रोड ग० होवे द० दशगुने तं० वह सा० सागरोपम का ए० एक भ० होवे प० परिमाण ए० इन सा० सागरोपम का प० प्रमाण से च० चार सा० सागरोपम क्रोडा क्रोड का का० काल सु० सुषम सुषमा ति० तीन सा० सागरोपम को० कोडा कोडी का० काल सु० सुषम दो० दो सागरोपम को० क्रोडा कोड काल सु० सुषम दुषम ए० एक सा० सागरोपम को० क्रोडा क्रोड में बा० बीयालीस वा० वर्ष सहस्र ऊ० कम का० काल दु० दुषम सुषमा ए० इक्कीस वा० वर्ष सहस्र का० काल दु० दुषम ए० इक्कीस वा० वर्ष

सूत्र रोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमदुसमा, एगा सागरोवमकोडाकोडीओ बायालीसए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दुसम सुसमा, एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दुसमा, एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दुसमदुसमा, पुणरवि उस्सप्पिणीए एक्कवीसं वास सहस्साइं कालो दुसमदुसमा, एक्कवीसं वास सहस्साइं कालो दुसमा जाव चत्तारि

भावार्थ होता है, एक क्रोडाक्रोड सागरोपम में बीयालीस हजार वर्ष कम का चौथा दुषम सुषम, इक्कीस हजार वर्ष का दुषम और इक्कीस हजार वर्ष का दुषम दुषम नामक छठा आरा होता है. ऐसे ही उत्सर्पिणी काल के छ आरे इक्कीस हजार वर्ष का दुषमादुषम, इक्कीस हजार वर्ष का दूसरा दुषम, बीयालीस हजार वर्ष कम एक क्रोडाक्रोड सागरोपम का दुषम सुषम नामक तीसरा, दो क्रोडाक्रोड सागरोपम का सुषम दुषम. तीन क्रोडाक्रोड सागरोपम का सुषम और चार क्रोडाक्रोड सागरोपम का सुषमसुषम. इस

शब्दार्थ हुवा सं० खंद से भरा हुवा भ० भरा हुवा वा० वालाग्र को० क्रोड ते० उन वा० वालाग्र को नो० नहीं अ० अग्नि ड० जलावे नो० नहीं वा० वायु अ० लेजावे नो० नहीं कु० खण्ड होवे नो० नहीं प० विध्वंस होवे नो० नहीं पू० पूतिभाव को हं० शीघ्र आ० आवे त० पीछे वा० वर्षशत ए० एक २ वा० वालाग्र अ० लेकर के जा० जितने का० काल में से० वह प० पाला खी० क्षीण नी० रज रहित नि० निर्मल नि० निष्ठित, अ० अपहृत वि० विशुद्ध भ० होवे से० वह प० पल्योपम ए० इन प० पल्यकी को० क्रोडा

सूत्र हव्वमागच्छेज्जा; तओणं वाससए२ एगमेगं वालग्गं अवहाय जावइएणं कालेणं सेपल्ले खीणे नीरये निम्मले निट्ठिए, निल्लेवे, अवहडे, विसुद्धे भवइ, से तं पलिओवमे गाहा-एएसिणं पल्लाणं कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया ॥ तं सागरोवमस्स,एक्कस्स भवे परीमाणं ॥ १ ॥ एएणं सागरोवमपमाणेणं चत्तारिसागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमसुसमा ॥ तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा, दो साग-

भावार्थ सो वर्ष में एक २ वालाग्र नीकालते जितने समय में वह पाला संपूर्ण खाली, रज रहित, निर्मल, निर्लेप होजाता है उतने कालको एक पल्योपम कहते हैं. ऐसे दश क्रोडाक्रोड पल्योपम का एक सागरोपम होता है, ऐसे चार क्रोडाक्रोड सागरोपम का एक सुषमासुषम आरा होता है, तीन क्रोडाक्रोड सागरोपम का सुषम नामक दूसरा आरा होता है, सुषमदुषम नामक दो क्रोडाक्रोड सागरोपम का तीसरा आरा

शब्दार्थ से॰ अथ ज॰ जैसे अ॰ मादल ए॰ ऐसे उ॰ उत्तरकुरु व॰ वक्तव्यता ने॰ जानना जा॰ यावत् आ॰ आस्वादे ती॰ उस स॰ समय भा॰ भरत वर्ष में त॰ वहां २ दे॰ देशविभाग में व॰ बहुत उ॰ उदार को॰ कोद्रव जा॰ यावत् कु॰ कुश विकुश वि॰ विशुद्ध रु॰ वृक्षमूल जा॰ यावत् छ॰ छप्रकार के म॰ मनुष्य अ॰ अनुसक्तवंत तं॰ वह ज॰ यथा प॰ पद्मगंधवाले मि॰ मृगगंध वाले अ॰ अममत्वी ते॰ तेजस्वी स॰ समर्थ स॰ शनैः चलने वाले से॰ वैसे भं॰ भगवन् छ॰ छठा स॰ शतक का स॰ सातवा

सूत्र जहानामए आलिंगपुक्खरेइवा, एवं उत्तरकुरुवत्तव्वया नेयव्वा जाव आसयंति, सयंति ॥ तीसेणं समाए भारहेवासे तत्थ २ देसे २ तहिं बहवे उद्दाला कोद्दाला जाव कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला जाव छव्विहा मणुस्सा अणुसज्जिज्झत्था तंजहा— पम्हगंधा, मियगंधा, अममा, तेयली, सहा, सणिंचारी सेवं भंते भंतेत्ति ॥ छट्ठसए

भावार्थ वैसे ही भरतक्षेत्र का भूमिभाग था. उस स्थान में अनेक प्रकार के शाल कोद्रव के वृक्ष थे. उन के मूल कुश विकुशादि रहित थे और मूल स्कंध, शाखा, प्रतिशाखा, पत्र, पुष्प व फलादि से अत्यंत सुशोभित थे. उस में छ प्रकार के मनुष्य उत्पन्न हुवे. पद्म कमल जैसी गंधवाले, मृगमद जैसी गंधवाले, ममकार रहित, तेजस्वी, समर्थ और मंदचालवाले. इस आरे का शेष वर्णन देवकुरु उत्तरकुरु जैसे जानना और अन्य आरों का विवरण जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति से जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह

शब्दार्थ सहस्र का० काल दु० दुषम दुषम पु० पुनरपि उ० उत्सर्पिणी का द० दश सा० सागरोपम को० क्रोडा क्रोड का का० काल उ० उत्सर्पिणी वी० वीस सा० सगारोपम को० क्रोडा क्रोड का० काल ओ० अवसर्पिणी उ० उत्सर्पिणी ॥ ५ ॥ जं० जम्बूद्वीप में भं० भगवन् दी० द्वीप में इ० इस ओ० अवसर्पिणी में सु० सुषम सुषम स० समय में उ० उत्तमता प० प्राप्त भ० भरत वा० वर्ष के० कैसा आ० आकार भाव प० प्रत्यवतार हो० था गो० गौतम व० बहुत स० सममणीय भू० भूमिभाग हो० था

सूत्र सागरोवम कोडाकोडीओ कालो सुसमसुसमा; दस सागरोवम कोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी, दस सागरोवम कोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणी, वीसं सागरोवम कोडाकोडीओ कालोओसप्पिणीय उस्सप्पिणीय ॥ ५ ॥ जंबूद्दीवेणं भंते ! दीवे इमीसे उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए उत्तिमट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्सकेरिसए आगारभावपडोयारे होत्था ? गोयमा बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से

भावार्थ तरह दश क्रोडाक्रोड सागरोपम की अवसर्पिणी, दश क्रोडाक्रोड सागरोपम की उत्सर्पिणी. वीस क्रोडाक्रोड सागरोपम का एक काल चक्र. यह पल्य व सागर की उपमा का प्रमाण जानना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! इस जम्बूद्वीप में प्रथम सुषमसुषम नामक समय में उत्कृष्ट आयुष्यादि प्राप्त होते भरतक्षेत्र का कैसा आकार भाव प्रत्यवतार था ? अहो गौतम ! जैसे मादल के उपर का चर्म बहुत सम होता है

शब्दार्थ भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की अ० नीचे गा० गृह स० सन्निवेश नो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ ॥ ३ ॥ अ० हैं भं० भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की अ० नीचे उ० उदार प० बद्दल सं० स्नेह उत्पन्न होवे स० पुद्गल होवे वा० वर्षा वा० वर्षे हं० हां अ० है ति० तीनों प० करे दे० देव प० करे अ० असुर ना० नाग कुमार ॥ ४ ॥ अ० हैं भं० भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वीकी अ०नीचे बा०बादर थ०स्थनित शब्द हं०हां अ०है ति०तीनों प० करे ॥ ५ ॥ अ० है भं० भगवन्

मूल इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे गामाइवा, जाव सण्णिवेसाइवा ? नो. इणट्ठे समट्ठे ॥ ३ ॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे उराला बलाहया संसेयंति समुच्छंति, वारां वासंति ? हंता अत्थि तिण्णावि पकरेंति देवावि पकरेइ असुरोवि, नागोवि, ॥ ४ ॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बादरे थणियसद्दे ? हंता अत्थि तिण्णावि पकरेंति ॥ ५ ॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयण-

भावार्थ सन्निवेश क्या हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की नीचे बडे बदल उत्पन्न होते हैं व वर्षा वर्षाते हैं ? हां गौतम अहो भगवन् ! वहां क्या देव, असुर व नाग वर्षाते हैं ? हां गौतम ! तीनों वर्षा वर्षाते हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी नीचे क्या बादर स्थनित शब्द है ? हां गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी नीचे बादर स्थनित शब्द है और उसे असुर, नाग व देव ऐसे तीनों जातिवाले करते हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या इस रत्नप्रभा पृथ्वी

शब्दार्थ उ० उद्देशा स० समाप्त ॥ ६ ॥ ७ ॥ ÷ ÷

क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम अ० आठ पु० पृथ्वीयों प० कहीं र० रत्न प्रभा जा० यावत् ई० ईपत् प्रागभार ॥ १ ॥ अ० है भं० भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की अ० नीचे गे० गृह गे० दुकानों गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ २ ॥ अ० है भं०

सूत्र सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥ ७ ॥ * × ×

कइणं भंते पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा— रयणप्पभा जाव ईसिप्पभारा ॥ १ ॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे गेहाइवा, गेहावणाइवा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे ॥ २ ॥ अत्थिणं भंते !

भावार्थ छठा शतक का सातवा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ६ ॥ ७ ॥ ×

सातवे उद्देशे में भरतक्षेत्र का वर्णन कहा. आठवे उद्देशे में पृथ्वी का वर्णन करते हैं. अहो भगवन् ! पृथ्वी कितनी कही ? अहो गौतम ! आठ पृथ्वीयों कहीं. रत्नप्रभा, शर्करप्रभा यावत् तमतमाप्रभा व ईपत्प्राग्भार ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की नीचे क्या गृह व दुकानों हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की नीचे ग्राम यावत्

शब्दार्थ

अ० असुर प० करे नो० नहीं ना० नाग प० करे च० चौथी में ण० विशेष दे० देव ए० एक प० करे नो० नहीं अ० असुर नो० नहीं ना० नाग ए० ऐसे हे० नीचे दे० देव ए० एक प० करे ॥ ९ ॥ त० तमस्काय क० कल्प प० पांच अ० अग्नि पु० पृथ्वी अ० अग्नि पु० पृथ्वी में आ० अप्काय ते० तेउ व०

सूत्र

एवि भाणियव्वं, णवरं देवोवि पकरेइ, असुरोवि पकरेइ नो नाओ पकरेइ ॥ चउत्थीएवि णवरं देवो एक्को पकरेइ, नो असुरो नो नाओ एवं हेट्ठिल्लासु देवो एक्को पकरेइ ॥ ९॥ अत्थिणं भंते ! सोहम्मीसाणेणं कप्पाणं अहे गेहाइवा, गेहावणाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे। अत्थिणं भंते ! उराला बलाहया ? हंता अत्थि; देवो पकरेइ, असुरोवि पकरेइ नो नाओ ॥ एवं थणियसद्देवि । अत्थिणं भंते ! बादरे पुढविकाए बादरे अगणिकाए ?

भावार्थ

करते हैं परंतु नाग नहीं करते हैं. चौथी, पांचवी, छठी, सातवी में मात्र देव करते हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! क्या सौधर्म ईशान देवलोक की नीचे गृह व दुकानों हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! क्या सौधर्म ईशान देवलोक नीचे बडे मेघ होते हैं व वर्षा वर्षाते हैं ? अहो गौतम ! वहां मेघ होते हैं व वर्षा वर्षती है. उन मेघ को देव व असुर करते हैं परंतु नाग नहीं करते हैं. क्योंकि नाग का उन देवलोकं नीचे गमन नहीं है. वैसे ही बादर स्थनित शब्द भी देव व असुर करते हैं. सौधर्म ईशान देवलोक की नीचे क्या बादर पृथ्वीकाय व बादर अग्निकाय है ? अहो गौतम !

इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी में बा० बादर अ० अग्निकाय गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ण० नहीं अ० अन्यत्र वि० विग्रहगति स० मास ॥ ६ ॥ अ० है भं० भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी में चं० चंद्रमा जा० यावत् ता० तारारूप नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ ७ ॥ अ० है भं० भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा में चं० चंद्रकांति नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ ८ ॥ ए० ऐसे दो० दूसरी पु० पृथ्वी में भा० कहना ए० ऐसे त० तीसरी में भा० कहना ण० विशेष दे० देव प० करे

सूत्र

प्पभाए पुढवीए बादरे अगणिकाए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे णण्णत्थ विग्गह गइसमावण्णएणं ॥ ६ ॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए चंदिम जाव तारारूवा ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥ ७ ॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए चंदाभाइवा २ ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥८॥ एवं दोच्चाए पुढवीए भाणियव्वं ॥ एवं तच्चा-

भावार्थ

में क्या बादर अग्निकाय है ? अहो गौतम ! वहां बादर अग्निकाय नहीं है. परंतु क्वचित् विग्रहगतिवाले बादर अग्निकाय के जीव वहां जाते हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! क्या इस रत्नप्रभा पृथ्वी में चंद्र, सूर्य यावत् तारे रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ ७ ॥ क्या इस रत्नप्रभा पृथ्वी में चंद्र सूर्य की कान्ति है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ ८ ॥ जैसे पहिली पृथ्वी का कहा वैसे ही दूसरी व तीसरी का जानना. परंतु दूसरी व तीसरी में देव व असुर ही मेघ व स्थनित शब्द

शब्दार्थ अ० असुर प० करे नो० नहीं ना० नाग प० करे च० चौथी में ण० विशेष दे० देव ए० एक प० करे नो० नहीं अं० असुर नो० नहीं ना० नाग ए० ऐसे हे० नीचे दे० देव ए० एक प० करे ॥ ९ ॥ त० तमस्काय क० कल्प प० पांच अ० अग्नि पु० पृथ्वी अ० अग्नि पु० पृथ्वी में आ० अप्काय ते० तेउ व०

सूत्र एवि भाणियव्वं, णवरं देवोवि पकरेइ, असुरोवि पकरेइ नो नाओ पकरेइ ॥ चउत्थीएवि णवरं देवो एक्को पकरेइ, नो असुरो नो नाओ एवं हेट्ठिल्लासु देवो एक्को पकरेइ ॥९॥ अत्थिणं भंते ! सोहम्मीसाणेणं कप्पाणं अहे गेहाइवा, गेहावणाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे। अत्थिणं भंते ! उराला बलाहया ? हंता अत्थि; देवो पकरेइ, असुरोविपकरेइ नो नाओ ॥ एवं थणियसद्देवि। अत्थिणं भंते ! बादरे पुढविकाए बादरे अगणिकाए ?

भावार्थ करते हैं परंतु नाग नहीं करते हैं. चौथी, पांचवी, छठी, सातवी में मात्र देव करते हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! क्या सौधर्म ईशान देवलोक की नीचे गृह व दुकानों हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! क्या सौधर्म ईशान देवलोक नीचे बडे मेघ होते हैं व वर्षा वर्षाते हैं ? अहो गौतम ! वहां मेघ होते हैं व वर्षा वर्षती है. उस मेघ को देव व असुर करते हैं परंतु नाग नहीं करते हैं. क्योंकि नाग का उन देवलोकों नीचे गमन नहीं है. वैसे ही बादर स्थनित शब्द भी देव व असुर करते हैं. सौधर्म ईशान देवलोक की नीचे क्या बादर पृथ्वीकाय व बादर अग्निकाय है ? अहो गौतम !

शब्दार्थ वनस्पति क० कल्प उ० उपरके क० कृष्णराजी में ॥ २० ॥ क० कितने प्रकार का भं० भगवन् आ०

सूत्र णो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ विग्गहगइ समावण्णएणं । अत्थिणं भंते ! चंदिम जाव तारारूवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । अत्थिणं भंते ! गामाइवा जाव सन्निवेसाइवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अत्थिणं भंते ! चंदा भाइवा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे एवं सणंकुमारमाहिंदेसु णवरं देवो एगो पकरेइ ॥ एवं बंभलोएवि एवं बंभलोगस्स उवरि सव्वहिं देवो पकरेइ पुच्छियव्वोय, बायरे आउकाए, बायरं अगणिकाए, बायरे वणस्सइकाए, अण्णं तं चेव गाहा—तमुकाय कप्पपणए,

भावार्थ वहां बादर पृथ्वीकाय व बादर अग्निकाय नहीं है परंतु विग्रहगति आश्री वहां जीव मीलते हैं. अहो भगवन् ! क्या वहां चंद्र यावत् तारे रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! क्या वहां ग्राम यावत् संनिवेश हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! क्या सौधर्म ईशान देवलोक में चंद्रकी कान्ति व सूर्य की कान्ति है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. जैसे सौधर्म ईशान का कहा वैसे ही सनत्कुमार माहेंद्र का जानना. इस में मात्र देवही उपर जासकते हैं परंतु असुर व नाग नहीं जासकते हैं, इसलिये मात्र देवही पानी की वृष्टि व शब्द करते हैं. इसी प्रकार ब्रह्म देवलोक से अच्युत देवलोकतक का जानना. बारह देवलोक में मात्र देव ही हैं उपर के देवों वैक्रेय नहीं करते हैं इसलिये वहां वैसा शब्द व मेघ नहीं है, पांचवा ब्रह्म देवलोक से उपर के सब विमानों

शब्दार्थ निव्वाणपावे स० सर्व दुःख का अं० अंत करे गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् जा० यावत् अंत न०नहीं क० करे गो० गौतम अ० असंवृत अनगार आ० आयुष्य व० वर्जकर स० सात कर्म प्रकृति सि० शिथिल बं० बंधन ब० बंधिहुइ को ध० निकाचित बं० बंधनसे ब० बद्ध प० करे ह० हस्वकाल की ठि० स्थिति की दी० दीर्घकाल की ठि० स्थिति प० करे मं० मंद अनुभाग को ति० तीव्र अनुभाग प० करे अ० अल्प प्रदेश को ब० बहुत प्रदेश प०

सूत्र पोइणइ समइ ॥ से केणट्ठेणं भंते जाव अंतं न करेति ? गोयमा ! असंवुडे अण-गारे आउय वज्जाओ सत्तकम्म [1]पगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणिय बंधण बद्धाओ पकरेइ; हस्सकालट्ठितीयाओ दीहकालट्ठितीयाओ पकरेइ; मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्प पदेसग्गाओ बहुप्पदेसग्गाओ पकरेइ, आउयंचणं कम्मं

भावार्थ व सब दुःखों का अंत करे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् ऐसा नहीं होता है. पुनः गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! किस कारणसे असंवृत अणगार सिद्ध नहीं, बुद्ध नहीं यावत् सब दुःख का अंतकरे नहीं? अहो गौतम ! असंवृत अणगार आयुष्य कर्म छोडकर अन्य सात कर्म की प्रकृतियों का शिथिल बंधन हुवा होवे तो उन का निकाचित बंध करता है, इस कालकी स्थिति वाले

१ आयुष्य कर्मका बंध भव आश्रित एकही वक्त होता है.

शब्दार्थ निधत्त आ० आयुष्यबंध ॥ ११ ॥ पूर्ववत् ॥ ११-१२ ॥ ल० लवण स० समुद्र किं० क्या उ० ऊंचापानी

सूत्र ओगाहणा नामनिहत्ताउए, पएसनामनिहत्ताउए, अणुभागनामनिहत्ताउए, दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥ ११ ॥ जीवेणं भंते ! किं जाइनामनिहत्ता जाव अनुभाग नामनिहत्ता ? गोयमा ! जाइ नामनिहत्तावि जाव अणुभागनामनिहत्तावि, दंडओ जाव वेमाणियाणं । जीवाणं भंते ! किं जाइनाम निहत्ताउया जाव अणुभागनाम निहत्ताउया ? गोयमा ! जाइनामनिहत्ताउयावि जाव अणुभागनामनिहत्ता-

भावार्थ एक भव में रहने का काल का बंध सो स्थितिनामनिधत्त आयुष्य बंध ४ औदारिकादि शरीर प्रमाण का बंध सो अवगाहना नाम निधत्त आयुष्य बंध ५ आयुष्य कर्म के तथाविध प्रणित जो प्रदेश का बंध सो प्रदेश नाम निधत्त आयुष्य बंध, और ६ आयुष्य द्रव्य का विपाक सो अनुभाग नाम निधत्त आयुष्य बंध. यह छप्रकार का आयुबंध चौवीस ही दंडक में पाता है. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! एक जीवने एकेन्द्रियादि जातिका बंध किया उसे जाति नाम निधत्त क्या कहना ? अहो गौतम ! जिसने जातिनाम का बंध किया उसे जातिनामनिधत्त कहना. जाति नामनिधत्त जैसे गति, स्थिति, अवगाहना, प्रदेश व अनुभाग के ▪ दंडक जानना. अहो भगवन् ! अनेक जीवोंने जिस प्रकार एकेन्द्रियादि जाति नाम का बंध किया उसे क्या जाति नाम निधत्त आयुष्य कहना ? अहो गौतम ! अनेक जीवोंने जाति

शब्दार्थ आयुष्य बंध प० प्ररूपा गो० गौतम छ० छ प्रकार का आ० आयुष्यबंध जा० जातिनाम निधत्त आ० आयुष्यबंध ग०· गतिनाम निधत्त आ० आयुष्यबंध ठि० स्थितिनाम निधत्त आ० आयुष्यबंध ओ० अवगाहन नाम निधत्त आ० आयुष्यबंध प० प्रदेश नाम निधत्त आ० आयुष्यबंध अ० अनुभाग नाम

सूत्र अगणी पुढवीय अगणि पुढवीसु ॥ आउतेउ वणस्सइ, कप्पुवरंमि कण्हराईसु ॥ १० ॥ कइविहेणं भंते ! आउयबंधे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तंजहा--जाइनाम निहत्ताउए, गतिनाम निहत्ताउए, ठिइनाम निहत्ताउए

भावार्थ में बादर अप्काय, बादर अग्निकाय व बादर वनस्पतिकाय नहीं हैं यह विशेषता है. नवग्रैवेयक से ईषत् प्राग्भार पृथ्वीतक वर्णन नहीं लिया है, परंतु इस का निषेध जानना. तमस्काय वैसेही सौधर्मादि पांच देवलोक में अग्निकाय व पृथ्वीकाय का प्रश्न, सातों पृथ्वीयों में अग्निकाय का प्रश्न, और उपर के देवलोक में अप्काय, तेउकाय व वनस्पतिकाय का प्रश्न कहा है. ॥ १० ॥ पृथिव्यादि जीव आयुष्य सहित होते हैं इसलिये आयुष्य का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! आयुष्य का बंध कितने प्रकार का कहा ? अहो गौतम ! आयुष्य का बंध छ प्रकार का कहा है. एकेन्द्रियादि पांच प्रकार के जातिरूप नामकर्म की उत्तर प्रकृति विशेष अथवा जीव परिणामकी साथ प्रतिसमय कर्म पुद्गलका अनुभव के लिये, जो आयुष्य बांधनेमें आवे सो जाति नाम निधत्त आयुष्य २ नरकादिगति का आयुष्यबंध करे सो गति नाम निधत्त आयुष्य ३

पदार्थ निधत्त आ० आयुष्यबंध ॥ ११ ॥ पूर्ववत् ॥ ११-१२ ॥ ल० लवण स० समुद्र किं० क्या उ० ऊंचापानी

सूत्र ओगाहणा नामनिहत्ताउए, पएसनामनिहत्ताउए, अणुभागनामनिहत्ताउए, दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥ ११ ॥ जीवेणं भंते ! किं जाइनामनिहत्ता जाव अनुभाग नामनिहत्ता ? गोयमा ! जाइ नामनिहत्तावि जाव अणुभागनामनिहत्तावि, दंडओ जाव वेमाणियाणं । जीवाणं भंते ! किं जाइनाम निहत्ताउया जाव अणुभागनाम निहत्ताउया ? गोयमा ! जाइनामनिहत्ताउयावि जाव अणुभागनामनिहत्ता-

भावार्थ एक भव में रहने का काल का बंध सो स्थितिनामनिधत्त आयुष्य बंध ४ औदारिकादि शरीर प्रमाण का बंध सो अवगाहना नाम निधत्त आयुष्य बंध ५ आयुष्य कर्म के तथाविध प्रणित जो प्रदेश का बंध सो प्रदेश नाम निधत्त आयुष्य बंध, और ६ आयुष्य द्रव्य का विपाक सो अनुभाग नाम निधत्त आयुष्य बंध. यह छप्रकार का आयुबंध चौवीस ही दंडक में पाता है. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! एक जीवने एकेन्द्रियादि जातिका बंध किया उसे जाति नाम निधत्त क्या कहना ? अहो गौतम ! जिसने जातिनाम का बंध किया, उसे जातिनामनिधत्त कहना. जाति नामनिधत्त जैसे गति, स्थिति, अवगाहना, प्रदेश व अनुभाग के छ दंडक जानना. अहो भगवन् ! अनेक जीवोंने जिस प्रकार एकेन्द्रियादि जाति नाम का बंध किया उसे क्या जाति नाम निधत्त आयुष्य कहना ? अहो गौतम ! अनेक जीवोंने जाति

सूत्र

उयावि ॥ दंडओ जाव वेमाणियाणं एवं एए दुवालस दंडगा भाणियव्वा ॥ ११ ॥ जीवाणं भंते ! किं जाइ नाम निहत्ता, जाइनामनिहत्ताउया, जाइनामनिउत्ता, जाइनामनिउत्ताउया, जाइगोयनिहत्ता, जाइगोयनिहत्ताउया, जाइगोयनिउत्ता, जाइगोयनिउत्ताउया, जाइनामगोय निहत्ता, जाइनामगोयनिहत्ताउया जाइ-नामगोयनिउत्ता, जाइ नामगोय निउत्ताउया जाव अणुभाग नामगोय निउत्ताउया ?

भावार्थ

नाम का बंध किया उन्हे भी जाति नाम निधत्त कहना. अनेक जीवों के जाति नाम निधत्त समान गति स्थिति, अवगाहना, प्रदेश व अनुभाग का जानना. इस तरह एक जीव व अनेक जीव के बारह दंडक चौवीस ही दंडक पर उतारना ॥११॥ १ एक जीव सामान्य जातिका आयुष्य बंध करे २ बहुत जीव सामान्य जाति का आयुष्य बंध करे ३ एक जीव उत्तम जाति का आयुष्य बंध करे ४ बहुत जीव उत्तम जाति का आयुष्य बंध करे, ५ एक जीव जाति की साथ नीच गोत्र का आयुबंध करे ६ बहुत जीव जाति की साथ नीच गोत्र के आयुष्य का बंध करे ७ एक जीव जाति की साथ उच्च गोत्र के आयुष्य का बंध करे ८ बहुत जीव जाति की साथ उच्च गोत्र के आयुष्य का बंध करे ९ एक जीव जाति की साथ नीच नाम व गोत्र के आयुष्य का बंध करे १० बहुत जीव जाति की साथ नीच नाम व गोत्र के आयुष्य का बंध करे ११ एक जीव जाति की साथ उच्च नाम व गोत्र के आयुष्य का बंध करे १२ बहुत जीव जाति की साथ

शब्दार्थ वाला, प० प्रस्तरोदक वाला खु० क्षुब्धजल वाला अ० अक्षुब्ध जल वाला गो० गौतम ल० लवण समुद्र उ० ऊंचापानी वाला प० प्रस्तर उदक वाला खु० क्षुब्ध जल वाला नो० नहीं अ० अक्षुब्ध जल वाला ए० यहां आ० लेकर ज० जैसे जी० जीवाभिगम में जा० यावत् से० वह ते० इसलिये गो० गौतम बा० बाहिर के दी० द्वीप समुद्र पु० पूर्ण पु० पूर्ण प्रमाण वो० उछलते वो० उल्लासपामते स० समान घ० घडे

सूत्र गोयमा! जाइनामगोयनिउत्ताउयावि जाव अणुभागनामगोयनिउत्ताउयावि, दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥ १२ ॥ लवणेणं भंते! समुद्दे किं उस्सिओदए, पत्थडोदए, खुभियजले, अक्खुभिय जले? गोयमा! लवणेणं समुद्दे उस्सिओदए नो पत्थडोदए, खुभियजले, नो अखुभियजले, एत्तो आढत्तं जहा जीवाभिगमे, जाव से केणट्ठेणं? गोयमा! बाहिरयाणं दीवसमुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा, वोलट्टमाणा, वोस-

भावार्थ उच्च नाम व गोत्र के आयुष्य का बंध करे. यह बारह दंडक जाति आश्रित हुए. वैसे ही अनुभागतक छ बोल का जानना. इस तरह १२+६ ७२ दंडक होते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन्! लवण समुद्र में क्या पानी की वृद्धि होती है, या पानी बराबर रहता है अथवा लवणसमुद्र क्षुब्ध रहता है या शान्त रहता है? अहो भगवन्! लवण समुद्र में पानी उपर चढता है क्योंकि सोलह हजार योजन का ऊंचा पानी का दगमाल है, इसलिये सम पानी नहीं. वैसे ही उन का जल क्षुब्ध है परंतु शान्त नहीं है.

शब्दार्थ चि० रहते हैं सं० संठान से ए० एक प्रकार का वि० स्वरूप वि० विस्तार से अ० अनेकविध वि० स्वरूप दु० दुगुने दु० दुगुने प्रमाण के जा० यावत् अ० इस ति० तिर्यक् लोकमें अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र स० स्वयंभू रमण समुद्र प० छेल्ला प० प्ररूपा स० आयुष्यमान् श्रमण ॥ १३ ॥ दी० द्वीप स० समुद्र के भं० भगवन् के० कितने ना० नाम प० प्ररूपे गो० गौतम जा० जितने लो० लोक में सु०

सूत्र ट्ठमाणा, समभरघडत्ताए चिट्ठंति, संठाणओ एगविहिविहाणा वित्थारओ अणेगविहि-विहाणा दुगुणा दुगुणप्पमाणाओ, जाव अस्सिं तिरियलोए असंखेज्ज दीवसमुद्दा स-यंभुरमणपज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो ॥ १३ ॥ दीवसमुद्दाणं भंते ! केवइया नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ? गोयमा ! जावइया लोए सुभा नामा, सुभारूवा, सुभागंधा;

भावार्थ सगैरह सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र जैसे जानना यावत् बाहिर के द्वीप समुद्र किनारे तक पानी स पूर्ण भरे हुवे हैं, उबरा हुवा पानी है, चारों तरफ विखरता है, भरा हुवा घडा समान रहा है, चूडी के आकारवाला है, चौडाइमें एक २ एक से दुगने हैं, इस तरह तीच्छें लोकमें द्वीप समुद्र रहे हुवे हैं. उसमें छेल्ला समुद्र स्वयंभूरमण है ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! द्वीप समुद्र के कितने नाम हैं ? अहो गौतम ! इस लोक में जितने शुभ नाम के, शुभ रूप के, शुभ गंध के, शुभ रस के, व शुभ स्पर्श के पदार्थों हैं. उतने नाम के सब द्वीप समुद्र हैं. और एक २ नाम के अनेक द्वीप समुद्र हैं. पहिले पल्योपम

शब्दार्थ शुभनाम सु० शुभरूप सु० शुभगंध सु० शुभरस सु० शुभस्पर्श ए० इतने दी० द्वीप स० समुद्र ना० नाम प० प्ररूपे ए० ऐसे ने० जानना सु० शुभनाम उ० उद्धार प० परिणाम स० सर्व जीवों का से० ऐसे भं० भगवन् छ० छठा शतक का अ० आठवा उ० उद्देशा स० समाप्त ॥ ६ ॥ ८ ॥ ✠

जी० जीव भं० भगवन् ना० ज्ञानावरणीय क० कर्म वं० बांधते क० कितनी क० कर्मप्रकृति वं०

सूत्र सुभारसा, सुभाफासा, एवइयाणं दीव समुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता, एवं नेयव्वा सुभानामा उद्धारो परिणामो सव्व जीवाणं सेवं भंते भंतेत्ति, ॥ छट्ठसयस्स अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥ ८ ॥ + ÷ ×

जीवेणं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कइ कम्मप्पगडीओ बंधइ ? गोयमा !

भावार्थ का स्वरूप बतानेवाला पालामें बालाग्र भरनेका जो दृष्टांत कहा उस पाले में से समय २ में एक २ खण्ड नीकालते उद्धापल्य होवे ऐसे दश क्रोडाक्रोड कुवा खाली होवे तब उद्धा सागरोपम होवे, ऐसे अढाइ सागरोपम के जितने समय होते हैं उतने ही द्वीप समुद्र होते हैं. इन में सब जीव अनेक वक्त उत्पन्न हुवा. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह छठा शतक का अठवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥६।८॥

गत उद्देशे के अन्त में उत्पन्न होने का कहा. उत्पन्न होना कर्म से होता है इसलिये कर्मबन्ध का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधता हुवा कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध

शब्दार्थ बांधे गो० गौतम स० सात बं० बांधे अ० आठ बं० बांधे बं० बंध उ० उद्देशा ने० जानना ॥ १ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाव बा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विनाग्रहण किये प० समर्थ ए० एक वर्ण ए० एक रूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० योग्य ॥ २ ॥ दे० देव भं० भगवन् बा० बाह्य पो० पुद्गल प० ग्रहण कर म० समर्थ हं० हां प० समर्थ

सूत्र सत्तविह बंधएवा, अट्ठविह बंधएवा, छव्विह बंधएवा, बंधुद्देसो पण्णवणाए नेयव्वो ॥ १ ॥ देवेणं भंते! महिड्डीए जाव महाणुभाए बाहिरए पोग्गले, अपरियाइत्ता पभू एगवण्णं, एगरूवं विउव्वित्तए ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ २ ॥ देवेणं भंते !

भावार्थ करता है ? अहो गौतम ! जीव सात प्रकार की व आठ प्रकार की कर्मप्रकृतियों का बंध करता है. जब आयुष्य कर्म का बंध नहीं करता है तब सात, आयुष्य कर्म का बंध करता है तब आठ, और दशवे गुण स्थान में मोहनीय और आयुष्य दोनों कर्मों का बंध नहीं करता है तब छ कर्म प्रकृतियों का बंध करता है. इस का विशेष अधिकार पन्नवणा सूत्र के चौवीसवे पद में कहा है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! महा ऋद्धिवंत यावत् महानुभाग देव बाहिर के पुद्गलों ग्रहण किये विना क्या एक वर्ण एकरूप (एक सरीखा आकारवाला शरीरादि) बनाने को क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थयोग्य नहीं है. अर्थात् देव इस तरह वैक्रेय बनाने को समर्थ नहीं है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या महर्द्धिक यावत् महानु-

शब्दार्थ से० वह भं० भगवन् किं० क्या इ० यहां रहेहुवे पो० पुद्गल प० ग्रहण कर वि० विकुर्वणाकरे त० तहां रहेहुवे पो० पुद्गल प० ग्रहणकर वि० विकुर्वणाकरे अ० अन्यत्र रहेहुवे पो० पुद्गल प० ग्रहणकर वि० वि-कुर्वणाकरे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ म० योग्य ॥ ३ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक

सूत्र बाहिरए पुग्गले परियाइत्ता पभू ? हंता पभू । से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ, ? गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ णो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता, विउव्वइ, एवं एएणं गमेणं एगवण्णं, एगरूवं, जाव अणेगवण्णं अणेगरूवं चउभंगो ॥ ३ ॥

भावार्थ भाग देव बाहिर के पुद्गलों ग्रहण कर के वैक्रेय बनाने को समर्थ है ? हां गौतम ! देव बाहिर के पुद्गलों ग्रहण कर के वैक्रेय करने को समर्थ है. अहो भगवन् ! क्या वह यहां मनुष्य क्षेत्र गत पुद्गलों को ग्रहण कर वैक्रेय करे, अथवा वहां रहे हुवे पुद्गलों को ग्रहण कर वैक्रेय करे, अथवा अन्यत्र के पुद्गल ग्रहण करे वैक्रेय करे ? अहो गौतम ! देवलोक में रहेहुवे पुद्गलों को ग्रहण कर वैक्रेय बनाता है परंतु मनुष्य क्षेत्र अथवा अन्यस्थान के पुद्गल ग्रहण कर वैक्रेय नहीं बनाता है. इस प्रकार से एकवर्ण, एक रूप व अनेक वर्ण अनेक रूप ऐसे चार भांगे जानना. ॥ ३ ॥ अहो भगवन्

शब्दार्थ जा० यावत् म० महानुभाग बा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विनाग्रहण किये प० समर्थ का० काले पो० पुद्गल

सूत्र देवेणं भंते ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे, बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालगं पोग्गलं नीलयपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए, नीलं पोग्गलंवा कालए पोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, परियाइत्ता पभू ॥ सेणं भंते ! किं इहगए पोग्गले तंचेव नवरं, परिणामेइत्ति भाणियव्वं । एवं कालगपोग्गलंलोहिय पोग्गलत्ताए एवं कालएणं जाव सुक्किलं, एवं नीलएणं जाव सुक्किलं । एवं लोहिएणं जाव सुक्किलं. एवं हालिद्दएणं जाव सुक्किलं एवं एयाए परिवाडीए गंधरसफास

भावार्थ महर्द्धिक यावत् महानुभाग देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये बिना काले पुद्गलों को नीले पुद्गलों में व नीले पुद्गलों को काले में परिणमाने को क्या समर्थ हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. परंतु बाहिर के पुद्गलों ग्रहण करके काले का नीले में व नीले का काले में परिणमाने को समर्थ है और वह यहां के ही पुद्गलों ग्रहण कर परिणमाते हैं. जैसे काला नीला का कहा वैसे ही काला व लाल, काला व पीला, और काला व शुक्ल पुद्गल परिणमाने का जानना. ऐसे ही दो गंध, पांचरस, व आठ स्पर्शका जानना. १. काला नीला, २ काला लाल ३ काला पीला ४ काला श्वेत ५ नीला लाल, ६ नीला पीला ७ नीला श्वेत, ८ लाल पीला ९ लाल श्वेत और १० पीला श्वेत-यह दश भांगे हुए. ऐसे ही गंध

शब्दार्थ करे आ० आयुष्य क० कर्म सि० कदाचित् वं० बांधे सि० कदाचित् नो० नहीं वं० बांधे अ० असाता वे० वेदनीय क० कर्म को भु० वारंवार उ० इकठाकरे अ० अनादी अ० अनंत दी० दीर्घकाल चा० चातुरंत सं० संसार कंतार में अ० परिभ्रमणकरे से० उसको ते० इसलिये गो० गौतम अ० असंवृत अ० अनगार णो० नहीं सि० सिझे ॥ ४३ ॥ सं० संवृत अ० अनगार सि० सिझे हं० हां

सूत्र सिय बंधइ सिय नो बंधइ, असाया वेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो भुज्जो उवचिणइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंतारं अणुपरियट्टति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! असंवुडे अणगारे णो सिज्झइ ॥ ४३ ॥ संवुडेणं भंते अणगारे सिज्झइ ? हंता सिज्झइ जाव अंतं करेइ ॥ सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा ! संवुडेणं

भावार्थ कर्मों को दीर्घ काल की स्थितिवाले बनाता है मंद रस देनेवाले कर्मोंको तीव्ररस देनेवाला करता है, अल्प प्रदेशात्मक कर्मों को बहुत प्रदेशात्मक कर्म करता है. आयुष्य कर्म का बंध किसि समय करता है किसि समय नहीं करता है, असाता वेदनीय कर्म पुनःपुनः संचित करता है, और अनादि अनंत संसार कंतार में परिभ्रमण करता है; इसलिये अहो गौतम ! असंवृत अनगार सिझे नहीं, यावत् संसार का अंतकरे नहीं. ॥ ४३ ॥ अहो भगवन्! आश्रवद्वार का रुंधन करनेवाला संवृत अणगार क्या सिझे यावत् अंतकरे ? हां गौतम ! संवृत अणगार सिझे यावत् अंत करे भगवन् ! किस कारन से संवृत्त अणगार सिझे यावत् अंत

सूत्र

लेसं देवं, अविसुद्धलेसे देवे समोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं, अविसुद्धलेसे समोहया समोहएणं अविसुद्धलेसं देवं, अविसुद्धलेसे देवे समोहया समोहएणं विसुद्धलेसं देवं विसुद्धलेसे देवे असमोहएणं अविसुद्धलेसं देवं विसुद्धलेसे असमोहएणं विसुद्धलेसं देवं, विसुद्ध लेसेणं भंते ! देवे समोहएणं अविसुद्ध लेसं देवं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ, एवं विसुद्ध समोहए विसुद्धलेसं देवं, विसुद्ध समोहयासमोहएणं अविसुद्धलेसं देवं, विसुद्ध समोहयासमोहएणं,

भावार्थ

हीं २ विभंगज्ञानवंत देव उपयोग रहित आत्मा से अवधि ज्ञानवंत देव, देवी या अन्य को नहीं जान व देख सकते हैं. ३ विभंग ज्ञानवंत देव उपयोग सहित आत्मासे विभंग ज्ञानी देव, देवी व अन्य किसी को नहीं जान सकता है ४ विभंग ज्ञानी उपयोग सहित अवधिज्ञानी देवादि को नहीं जान सकता है ५ विभंगज्ञानी देव उपयोग सहित व रहित आत्मा से विभंगज्ञानवंत देव देवी या अन्य किसी को नहीं जान सके ६ विभंग ज्ञानी उपयोग सहित या रहित आत्मा से अवधिज्ञानवंत देव देवी को नहीं जान व देख सकते हैं, यह छ भांगें मिथ्यादृष्टि देव के जानना*७ अवधिज्ञानी देव उपयोग रहित आत्मा से विभंग ज्ञानवंत देव देवी या अन्य किसी को नहीं जान सके व नहीं देख सके, ८ अवधिज्ञानी देव उपयोग रहित

* इस में से तीन भांगे उपयोग रहित वाले हैं. उपयोग रहित जीव कदापि नहीं जानसकता व देख सकता है. परंतु उपयोग सहित मिथ्यादृष्टि मिथ्यात्व व अज्ञान के प्रभाव से यथार्थ वस्तु स्वरूप नहीं जान सकता है इसलिये छ भांगे नहीं जानने व नहीं देखने के कहे हैं.

पदार्थ को नी० नीले पो० पुद्गलपने प० परिणमें ॥ ४ ॥ पूर्ववत ॥ ५ ॥ पूर्ववत् ॥ ६ ॥ ९ ॥

सूत्र कक्खड फास पोग्गलं, मउअ फास पोग्गलत्ताए एवं दो दो गरुअ लहुअ सीय उसिण णिद्धलुक्खवण्णाइं, सव्वत्थ परिणामेइ आलावगा य दो दो पोग्गले अपरियाइत्ता परियाइत्ता॥४॥ अविसुद्धलेसेणं भंते! देवे असमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं देविं अण्णतरं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ एवं अविसुद्धलेस्से असमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं, अविसुद्धलेसे समोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्ध-

भावार्थ के, पांचरस के व आठ स्पर्श के दो २ भांगे ग्रहण करना. कर्कशको कोमलपने परिणमावे व कोमलको कर्कशपने परिणमावे गुरु को लघुपने परिणमावे लघुको गुरुपने परिणमावे शीत को ऊष्ण व ऊष्ण को शीतपने परिणमावे, स्निग्ध को रूक्षपने व रूक्ष को स्निगधपने परिणमावे. बाहिर के पुद्गलों ग्रहण किये विना नहीं परिणमा सकता है, परंतु बाहिर के पुद्गलो ग्रहण कर परिणमा सकता है यह सब परिणमानेका अधिकार कहा ॥ ४ ॥ यह देवशक्ति कही अब देवशक्तिकी भिन्नता बतलाते हैं. १. अविशुद्धलेशी देव, अमसवहतात्मदेव, और विशुद्धलेशी देवादिक इन तीन पद के १२ विकल्प कहते हैं. अहो भगवन् ! विभंगज्ञान वाले देव उपयोग रहित आत्मासे विभंग ज्ञानवंत देवता देवी व अन्य किसी को क्या ज्ञान से जान सकते हैं व दर्शन से देखसकते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. ऐसे

शब्दार्थ सुख दु० दुःख जा० यावत् को० गुठली मात्र नि० वाल मात्र क० कलम मा० मात्रभी मा० ऊडद मा० मात्रभी मु० मुंगमात्र जू० यूकामात्र लि० लिखमात्र अ० निकालकर उ० वताने को से० वह क० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा गो० गौतम ज० जो ते० वे अ० अन्यतीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० मैं पु० फीर गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं जा० यावत् प० परूपता हूं स० सर्व लोक में स० सर्व जीव नो० नहीं च० शक्तिवंत के० कोई सु०

सूत्र मायमवि, कलममायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयमायमवि, लिक्खमायमवि, अभिनिव्वट्टेत्ता उवदंसित्तए से कहमेयं भंते! एवं? गोयमा! जण्णं ते अण्णउत्थिया एव माइक्खंति जाव मिच्छं ते एव माहंसु॥ अहं पुण गोयमा! एव माइक्खामि जाव परूवेमि सव्वलोए वियणं सव्वजीवाणं नो चक्किया केइ सुहंवाः तं चेव जाव

भावार्थ कोई भी जीव वेर जितना, वाल जितना, मुंग, ऊडद, लींख व यूका जितनाभी सुख दुःख नीकालकर वतासकता नहीं है. अहो भगवन्! उन का यह कथन किस तरह है? अहो गौतम! जो अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं वे मिथ्या ऐसा कहते हैं. मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि संपूर्ण लोकमें किसी जीव को वेरकी गुठली जितना यावत् यूका जितना सुख दुःख नीकाल कर बताने को कोई समर्थ नहीं है. अहो भगवन्! यह किस तरह है? अहो गौतम! यह जंम्बूद्वीप एक लक्ष योजन का

शब्दार्थ अ० अन्यतीर्थिक भं० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प० प्ररूपते हैं जा० जितने रा० राजगृह न० नगर में जी० जीव ए० इतने जी० जीव को नो० नहीं च० शक्तिवन्त के० कोइ सु०

सूत्र विसुद्धलेसं देवं, एवं हेट्ठिल्लएहिं अट्ठहिं नजाणइ नपासइ, उवरिल्लएहिं चउहिं जाणइ पासइ, ॥ सेवं भंते भंते त्ति ॥ छट्ठसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥ ९ ॥ * अण्णउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवंति जावइया रायगिहे णगरे जीवा एवइयाणं जीवाणं नो चक्किया केइ सुहंवा दुहंवा जाव कोलट्ठिगमायमवि, निप्पाव

भावार्थ आत्मा से अवधिज्ञानी को नहीं जान सके व देख सके, ९ अवधिज्ञानी उपयोग सहित आत्मा से विभंग ज्ञानी देव, देवी या अन्य को जान सके व देख सके, १० विभंग ज्ञानी उपयोग सहित आत्मा से अवधि ज्ञानी देव, देवी या अन्य किसी को जान व देख सके, ११ अवधि ज्ञानी उपयोग सहित व रहित आत्मा से विभंग ज्ञानी को जान व देख सके और १२ अवधि ज्ञानी उपयोग सहित व रहित आत्मा से अवधि ज्ञानीको जान व देखसके यह ४ भांगे समदृष्टि आश्री कहे हैं. इनमें से आठ भांगेवाले नहीं जान व नहीं देख सकते हैं. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह छटा शतक का नववा उद्देशा पूर्ण हुआ. ॥६॥९॥ *

नववे उद्देशे में अज्ञानिया को जानने का अभाव कहा. अब दशवे उद्देशे में इसकाही स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि राजगृही नगरी में जितने जीव हैं उन.को

शब्दार्थ ते० उस घा० घ्राणेन्द्रिय योग्य पो० पुद्गल को को० गुठलीमात्र जा० यावत् उ० बताने को णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह ते० इसलिये जा० यावत् उ० बताने को ॥ १ ॥ जी० जीव भं० भगवन् जी० चैतन्य जी० चैतन्य जी० जीव गो० गौतम जी० जीव जा० यावत् नि० निश्चय जी० चैतन्य जी० चैतन्य नि० निश्चय जी० जीव ॥ २ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ने० नारकी ने० नार-

सूत्र यमा ! केइ तेसिं घाणपोग्गलाणं कोलट्ठिमायमवि जाव उवदंसित्तए ! णो इण ट्ठे समट्ठे ॥ सेतेणट्ठेणं जाव उवदंसित्तए ॥१॥ जीवेणं भंते! जीवे जीवे जीवे? गोयमा ! जीवे ताव नियमा जीवे, जीवेवि नियमा जीवे ॥ २ ॥ जीवेणं भंते ! नेरइए

भावार्थ जंम्बूद्वीप मे विस्तृत होती है ? हां भगवन् ! वह गंध संपूर्ण जंम्बूद्वीप में विस्तृत होती है. तब अहो गौतम! उस गंधमें से बेरकी गुठली प्रमाण यावत् यूका प्रमाण पुद्गलोंको पृथक् कर बतानेको क्या समर्थ है? अहो भगवन् ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् वैसे बताने को समर्थ नहीं है. इसी तरह जीव सुख दुःख स्पर्शता है परंतु पृथक् करके बताने को समर्थ नहीं होता है ॥१॥ सुख दुःख का भोक्ता जीव होने से जीव संबंधी प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! जो जीव है वह क्या चैतन्य है और जो चैतन्य है सो जीव है ? अहो गौतम! चैतन्य व जीव परस्पर अविनाभूत है, अर्थात् जीव विना चैतन्य नहीं व चैतन्य विना जीव नहीं, इसलिये चैतन्य है वह जीव है और जीव है वह चैतन्य है॥२॥अहो भगवन् ! क्या जीव है सो नारकी है व

पदार्थ — सुख दु० दुःख जा० यावत् उ० बतावे से० वह के० कैसे गो० गौतम अ० वह जं० जंबूद्वीप जा० यावत् वि० विशेषाधिक प० परिधि प० प्ररूपी दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग ए० एक म० बडा स० विलेपन सहित गं० गंधका सु० डब्बा ग० लेकर तं० उसको अ० उघाडकर जा० यावत् इ० ऐसा क० करके के० संपूर्ण जं० जंबूद्वीप को ति० तीन अ० चिपटी से ति० इक्कीसवार अ० पर्यटणा करके ह० शीघ्र आ० आवे से० वह नू० निश्चय गो० गौतम से० वह के० केवलकल्प जं० जम्बूद्वीप ति० उस घा० घाणेन्द्रिय के पो० पुद्गल फु० स्पर्शे हं० हां फु० स्पर्शे च० शक्तिवन्त गो० गौतम के० कोई

सूत्र — उवदंसित्तए ॥ से केणट्ठेणं ? गोयमा ! अयणं जंबूद्दीवेदीवे जाव विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते, देवेणं महिड्ढीए जाव महाणुभागे एगं महं सविलेवणगंधसमुग्गमं गहाय तं अवद्दालेइ अवद्दालेत्ता जाव इणामेवत्ति कट्टु केवलकप्पं जंबुदीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा ॥ सेणूणं गोयमा ! से केवलकप्पे जंबूद्दीवेदीवे तिहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे, हंता फुडे। चक्कियाणं गो-

भावार्थ — लम्बा चौडा है उस की परिधि ३१६ २२७ योजन से कुच्छ विशेषकी है ऐसा जम्बूद्वीप को कोई महार्द्धिक यावत् महानुभाग देव विलेपन वाला किसी सुगंधी पात्र को खुले मुखसे हस्त में लेकर तीन चपटिका में इक्कीस वक्त संपूर्ण जम्बूद्वीप की आवर्तना करे. तब अहो गौतम ! क्या वह गंध संपूर्ण

शब्दार्थ आत्मा स० शरीर खे० क्षेत्र ओ० अवगाहित पो० पुद्गल अ० आत्मा से आ० ग्रहणकर आ० आहार करे अ० अंतर रहित खे० क्षेत्र ओ० अवगाह्य पो० पुद्गल अ० आत्मा से आ० ग्रहणकर प० परंपर खे० क्षेत्र ओ० अवगाहित पो० पुद्गल अ० आत्मा से अ० ग्रहण कर आ० आहार करते हैं ॥ ८ ॥ के० केवली भं० भगवन् आ० इन्द्रिय से जा० जाने पा० देखे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० योग्य

सूत्र अत्तमायाए आहारंति, परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारंति ? गोयमा ! आय सरीर खेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारंति नो अणंतर खेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारंति, नो परंपर खेत्तोगाढे । जहा नेरइया तहा जाव वेमाणियाणं दंडओ ॥ ८ ॥ केवलीणं भंते! आयाणेहिं जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! केवलीणं पुरच्छिमेणं मियंपि जाणइ, अमियंपि जाणइ, जाव निव्वुडे दंसणे केवलिस्स से तेणट्ठेणं ॥ जीवाणय सुहं दुक्खं, जीवे

भावार्थ क्षेत्रावगाहित आहार करने योग्य पुद्गलों का आहार करता है परंतु अनंतर व परंपर क्षेत्रावगाहित पुद्गलों का आहार नहीं करता है. नारकी जैसे वैमानिक तक सब दंडक का जानना ॥८॥ अहो भगवन् ! क्या केवली इन्द्रियों से जानते हैं व देखते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों कि केवली पूर्व में मर्यादित व अमर्यादित जानते हैं व देखते हैं यावत् उन का ज्ञान आवरण रहित निर्मल रहा हुआ है

शब्दार्थ ते० उस घा० घ्राणेन्द्रिय योग्य पो० पुद्गल को को० गुठलीमात्र जा० यावत् उ० बताने को णो० नहीं, इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह ते० इसलिये जा० यावत् उ० बताने को ॥ १ ॥ जी० जीव भं० भगवन् जी० चैतन्य जी० चैतन्य जी० जीव गो० गौतम जी० जीव जा० यावत् नि० निश्चय जी० चैतन्य जी० चैतन्य नि० निश्चय जी० जीव ॥ २ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ने० नारकी ने० नार-

सूत्र यमा ! केइ तेसिं घाणपोग्गलाणं कोलट्ठिमायमवि जाव उवदंसित्तए ! णो इण ट्ठे समट्ठे ॥ सेतणट्ठेणं जाव उवदंसित्तए ॥१॥ जीवेणं भंते ! जीवे जीवे जीवे? गो- यमा ! जीवे ताव नियमा जीवे, जीवेवि नियमा जीवे ॥ २ ॥ जीवेणं भंते ! नेरइए

भावार्थ जम्बूद्वीप मे विस्तृत होती है ? हां भगवन् ! वह गंध संपूर्ण जम्बूद्वीप में विस्तृत होती है. तब अहो गौतम! उस गंधमें से बेरकी गुठली प्रमाण यावत् यूका प्रमाण पुद्गलोंको पृथक् कर बतानेको क्या समर्थ है? अहो भगवन् ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् वैसे बताने को समर्थ नहीं है. इसी तरह जीव सुख दुःख स्पर्शता है परंतु पृथक् करके बताने को समर्थ नहीं होता है ॥१॥ सुख दुःख का भोक्ता जीव होने से जीव संबंधी प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! जो जीव है वह क्या चैतन्य है. और जो चैतन्य है सो जीव है ? अहो गौतम! चैतन्य व जीव परस्पर अविनाभूत है, अर्थात् जीव विना चैतन्य नहीं व चैतन्य विना जीव नहीं, इसलिये चैतन्य है वह जीव है और जीव है वह चैतन्य है॥२॥अहो भगवन् ! क्या जीव है सो नारकी है व

शब्दार्थ आत्मा स० शरीर खे० क्षेत्र ओ० अवगाहित पो० पुद्गल अ० आत्मा से आ० ग्रहणकर आ० आहार करे अ० अंतर रहित खे० क्षेत्र ओ० अवगाह्य पो० पुद्गल अ० आत्मा से आ० ग्रहणकर प० परंपर खे० क्षेत्र ओ० अवगाहित पो० पुद्गल अ० आत्मा से अ० ग्रहण कर आ० आहार करते हैं ॥ ८ ॥ के० केवली भं० भगवन् आ० इन्द्रिय से जा० जाने पा० देखे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० योग्य

सूत्र अत्तमायाए आहारंति, परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारंति ? गोयमा ! आय सरीर खेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारंति नो अणंतर खेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारंति, नो परंपर खेत्तोगाढे । जहा नेरइया तहा जाव वेमाणियाणं दंडओ ॥ ८ ॥ केवलीणं भंते! आयाणेहिं जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! केवलीणं पुरच्छिमेणं मियंपि जाणइ, अमियंपि जाणइ, जाव निव्वुडे दंसणे केवलिस्स से तेणट्ठेणं ॥ जीवाणय सुहं दुक्खं, जीवे

भावार्थ क्षेत्रावगाहित आहार करने योग्य पुद्गलों का आहार करता है परंतु अनंतर व परंपर क्षेत्रावगाहित पुद्गलों का आहार नहीं करता है. नारकी जैसे वैमानिक तक सब दंडक का जानना ॥८॥ अहो भगवन् ! क्या केवली इन्द्रियों से जानते हैं व देखते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों कि केवली पूर्व में मर्यादित व अमर्यादित जानते हैं व देखते हैं यावत् उन का ज्ञान आवरण रहित निर्मल रहा हुआ है

शब्दार्थ साता वे० वेदना वे० वेदते हैं आ० अथवा अ० असाता वे० वेदना वे० वेदे ॥ ७ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् जे० जो पो० पुद्गल अ० आत्मा से आ० ग्रहणकर आ० आहार करते हैं ते० वे किं० क्या आ०

सूत्र सत्ता एगंतसायं वेयणं वेयंति आहच्च असायं वेयणं वेयंति ॥ अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता वेमायाए वेयणं वेयंति, आहच्च सायमसायं ॥ से केणट्टेणं ? गोयमा ! नेरइयाणं एगंत दुक्खं वेयणं वेयंति, आहच्च सायं। भवणवइ, वाणमंतर, जोइस, वेमाणिया एगंत सायं वेयंति, आहच्च असायं। पुढविकाइया जाव मणुस्सा वेमायाए वेयणं वेयंति, आहच्च सायम सायं से तेणट्ठेणं ॥७॥ नेरइयाणं भंते ! जे पोग्गला अत्तमायाए आहारंति ते किं आयसरीरखेतोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारंति अणंतर खेतोगाढे पोग्गले

भावार्थ परंतु चवण काल में अथवा वज्र महारादि से असाता वेदना वेदते हैं. पृथ्वीकायादि से मनुष्य पर्यंत जीव को मर्यादा रहित वेदना है तथापि क्वचित् साता व क्वचित् असाता ऐसे दोनों प्रकार की वेदना वेदते हैं ॥ ७ ॥ साता असाता वेदना आहार के पुद्गलों से होती है इसलिये आहार संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! नरक का जीव आहार करने योग्य पुद्गलों को आत्मा से आहारपने ग्रहण करता है वह क्या स्वशरीर क्षेत्र अवगाहित पुद्गलों का आहार करता है, अनंतर क्षेत्र अवगाहित पुद्गलों का आहार करता है अथवा परंपरक्षेत्र अवगाहित पुद्गलों का आहार करता है ? अहो गौतम ! नारकी स्वशरीर

शब्दार्थ सि० सिझे यावत् अं० अंतकरे से० वह के० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसे वु० कहा जाता है पूर्ववत् ॥ ४४ ॥ जी० जीव भं० भगवन् अ० असंयति अ० अविरति अ० अप्रतिहत प० प्रत्याख्यान पा०

सूत्र

अणगारे आउयवज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ धणिय बंधण बद्धाओ सिढिल बंधण बद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठितीयाओ हस्सकालट्ठितीयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुपदेसगाओ अप्पपदेसगाओ पकरेइ, आउयंचणं कम्मं न बंधइ, असायावेयणिज्जं चणं कम्मं णो भुज्जो भुज्जो उवचिणइ. अणादीयंचणं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंतारं वीईवयइ. से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं संवुडे अणगारे सिज्झइ जाव अंतकरेइ ॥ ४४ ॥ जीवेणं भंतेअसंजए, अविरए, अप्पडिहय

भावार्थ

करे ? अहो गौतम ! संवृत्त अणगार आयुष्य छोडकर अन्य सात कर्म की प्रकृतियों का निकाचित बंधन किया होवे तो उन को शिथिलकरे, दीर्घ काल की स्थिति वाले कर्मों को ह्रस्व काल की स्थिति वाले बनावे तीव्र रसवाले कर्मों को अल्प रसवाले बनावे, बहुत प्रदेशात्मक कर्मों को अल्प प्रदेशात्मक बनावे, आयुष्य कर्म का बंध करे नहीं, असाता वेदनीय कर्म को वारंवार संचित करे नहीं व अनादि अनंत संसार में परिभ्रमण करे नहीं; इसलिये अहो गौतम ! संवृत्त अणगार सिझे यावत् दुःखों का अंतकरे ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! असंयति, अविरति, व प्रत्याख्यान से पापकर्म नहीं तोडनेवाला यहां से चवकर परलोक

शब्दार्थ स० वह के० कैसे गो०गौतम के०केवली पु०पूर्व मि० मर्यादायुक्त अ० मर्यादा रहित जा० जाने जा० यावत् णि० निरावरण दं० दर्शन के० केवली को ते० इसलिये ॥ ८ ॥

सूत्र जीवइ तहेव भवियाय । एगंत दुक्ख वेयण, अत्तमायाय केवली ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥

छट्ठसए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥ १० ॥ छट्ठसयं सम्मत्तं ॥ ६ ॥

भावार्थ इसलिये केवली इन्द्रियों से नहीं जानते हैं, व नहीं देखते हैं इस उद्देशे का सारांश कहते हैं. जीव का सुख, दुःख, चैतन्य, प्राण, भव्य, एकान्त दुःख, आहार व केवली. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह छठा शतक का दशवा उद्देशा समाप्त हुआ ॥६॥१०॥ और छठा शतक भी समाप्त हुआ ॥ ६ ॥ *

ANIL KUMAR



मुख्याधिकारी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुद्धाचारी पूज्य श्री खुबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य स्व. तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने मुझे साथ ले महा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा बडा क्षेत्र साधुमार्गीय धर्म में प्रसिद्ध किया व परमोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये. उनके प्रतापसे ही शास्त्रोद्धारादि महा कार्य हैद्राबाद में हुए. इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए. जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे वे आपही के कृतज्ञ होंगे.

शिशु-अमोल ऋषि.

उपकारी-महात्मा

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्यपाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज!
आप श्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आपके परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका. इस लिये इस कार्य के परमोपकारी महात्मा आप ही हैं. आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोंद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा.

दास-अमोल ऋषि

शब्दार्थ से० वह के० कैसे गो०गौतम के०केवली पु०पूर्व मि० मर्यादायुक्त अ० मर्यादा रहित जा० जाने जा० यावत् णि० निरावरण दं० दर्शन के० केवली को ते० इसलिये ॥ ६ ॥

सूत्र जीवइ तहेव भवियाय । एगंत दुक्ख वेयण, अत्तमायाय केवली ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥

छट्ठसए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥ १० ॥ छट्ठसयं सम्मत्तं ॥ ६ ॥

भावार्थ इसलिये केवली इन्द्रियों से नहीं जानते हैं, व नहीं देखते हैं इस उद्देशे का सारांश कहते हैं. जीव का सुख, दुःख, चैतन्य, प्राण, भव्य, एकान्त दुःख, आहार व केवली. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह छठा शतक का दशवा उद्देशा समाप्त हुआ ॥६॥१०॥ और छठा शतक भी समाप्त हुआ ॥ ६ ॥ *

ANIL KUMAR



मुख्याधिकारी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुद्धाचारी पूज्य श्री खुबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य स्व. तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने मुझे साथ ले महा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा बडा क्षेत्र साधुमार्गीय धर्म में प्रसिद्ध किया व परमोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये. उनके प्रतापसे ही शास्त्रोद्धारादि महा कार्य हैद्राबाद में हुए. इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए. जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे वे आपही के कृतज्ञ होंगे.

शिशु-अमोल ऋषि

उपकारी-महात्मा

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र, महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्य-पाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज!

आप श्री की आज्ञा से ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आप के परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका इस लिये इस कार्य के परमोपकारी महात्मा आप ही हैं. आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोंद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा.

दास-अमोल ऋषि

शास्त्र-प्रकाशक

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जौहरी वर्ग में श्रेष्ठ दृढधर्मी दानवीर राजा बहादुर लालाजी साहेब श्री सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी!

आपने साधु सेवा के और ज्ञान दान जैसे महालाभके लोभी घन साधुमार्गीय जैन धर्म के परम माननीय व परम आदरणीय बत्तीस शास्त्रों को हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने का रु. २००००, का खर्चकर अमूल्य देना स्वीकार किया और युरोप युद्धारंभ से सब वस्तु के भाव में वृद्धि होने से रु. ४०००० के खर्च में भी काम पूरा होनेका संभव नही होते भी आपने उस ही उत्साह से कार्य को समाप्त कर सबको अमूल्य महालाभ दिया, यह आप की उदारता साधुमार्गीयों की गौरव दर्शक व परमादरणीय है!

आश्रयदाता

झोबाला (काठीयावाड) निवासी धर्म प्रेमी कार्यदक्ष कृतज्ञ मणिलाल शिवलाल शेट! इनोंने जैन ट्रेनिंग कालेज रतलाम में संस्कृत प्राकृत व अंग्रेजी का अभ्यास कर तीन वर्ष उपदेशक रह अच्छी कौशल्यता प्राप्त की. इन से शास्त्रोध्धार का कार्य अच्छा होगा ऐसी सूचना गुरुवर्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज से मिलने से इन को बोलाये. इनोंने अन्य प्रेस में शुद्ध अच्छा और शीघ्र काम होता नहीं देख शास्त्रोध्धार प्रेस कायम किया और प्रेस के कर्मचारियों को उत्साही कार्य दक्ष बना काम लिया. तैसे ही भाषानुवाद की प्रेसकोपी बनाइ. यद्यपि यह भाइ पगार से रहे थे तथापि इनोंने इस कार्य की सेवा वेतन के प्रमाण से अधिक की. इस लिये इनको भी धन्यवाद देते हैं.

सहायक मुनिमंडल

अपनी छती ऋद्धि का त्याग कर हैद्राबाद सीकन्द्राबादमें दीक्षा धारक बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजीके शिष्यवर्य ज्ञानानंदी श्री देव ऋषिजी. वैय्यावृत्यी श्री राज ऋषिजी. तपस्वी श्री उदय ऋषिजी और विद्याविलासी श्री मोहन ऋषिजी. इन चारों मुनिवरोंने गुरु आज्ञाका बहुमानसे स्वीकार कर आहार पानी आदि सुखोपचार का संयोग मिला. दो प्रहर का व्याख्यान, प्रसंगीसे वार्तालाप,कार्य दक्षता व समाधि भाव से सहाय दिया जिस से ही यह महा कार्य इतनी शीघ्रता से लेखक पूर्ण सके. इस लिये इस कार्य पवक्ष उक्त मुनिवरों का भी बडा उपकार है.

सुखदेव सहाय ज्वाला प्रसाद

और भी-सहायदाता

पंजाब देश पावन कर्ता पूज्य श्री सोहनलालजी, महात्मा श्री माधव मुनिजी, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी,तपस्वीजी माणकचन्दजी,कविवर श्री अमी ऋषिजी,सुवक्ता श्री दौलत ऋषिजी. पं. श्री नथमलजी.पं.श्री जोरावरमलजी. कविवर श्री नानचन्द्रजी.प्रवर्तिनी सतीजी श्री पार्वतीजी.गुणज्ञ सतीजी श्री रंभाजी-धोराजी सर्वज्ञ भंडार, भीनासरवाले कनीरामजी बहादरमलजी बाँठीया, कोचरी भंडार, कुचेरा भंडार, इत्यादिक की तरफ से शास्त्रों व सम्मति द्वारा इस कार्य को बहुत सहायता मिली है. इस लिये इन का भी बहुत उपकार मानते हैं.

सुखदेव सहाय ज्वालाप्रसाद

आभारी-महात्मा

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के परम पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज! इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री मायिन शुद्ध शास्त्र, हुंडी, गुटका और समय २पर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदत देते रहनेसेही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका. इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के अभारी होंगे.

आपका-अमोल ऋषि

हिन्दी भाषानुवादक

शुद्धाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्रीअमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया. और ऐसा सरल बनादिया कि कोई भी हिन्दी भाषज्ञ सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तल दबे हुवे हम आप के बडे अभारी हैं.

संघकी तर्फ से.

सुखदेव सहाय ज्वाला प्रसाद

शास्त्र-प्रकाशक

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जौहरी वर्ग में श्रेष्ठ दृढधर्मी दानवीर राजा बहादुर लालाजी साहेब श्री सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी!

आपने साधु सेवा के और ज्ञान दान जैसे महालाभके लोभी बन जैन साधुमार्गीय धर्म के परम माननीय व परम आदरणीय बत्तीस शास्त्रों को हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने को रु. २००००, का खर्चकर अमूल्य देना स्वीकार किया और युरोप युद्धारंभ से सब वस्तु के भाव में वृद्धि होने से रु. ४०००० के खर्च में भी काम पूरा होनेका संभव नहीं होते भी आपने उस ही उत्साह से कार्य को समाप्त कर सबको अमूल्य महालाभ दिया, यह आप की उदारता साधुमार्गीयों की गौरव दर्शक व परमादरणीय है!

आश्रयदाता

झोवाला (काठीयावाड) निवासी धर्म प्रेमी कार्यदक्ष कृतज्ञ मणिलाल शिवलाल शेठ! इनोंने जैन ट्रेनिंग कालेज रतलाम में संस्कृत प्राकृत व अंग्रेजी का अभ्यास कर तीन वर्ष उपदेशक रह अच्छी कौशल्यता प्राप्तकी. इन से शास्त्रोध्धार का कार्य अच्छा होगा ऐसी सूचना गुरुवर्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज से मिलने से इन को बोलाये, इनोंने अन्य प्रेस में शुद्ध अच्छा और शीघ्र काम होता नहीं देख शास्त्रोध्धार प्रेस कायम किया और प्रेस के कर्मचारियों को उत्साही कार्य दक्ष बना काम लिया. तैसे ही भाषानुवाद की प्रेसकोपी बनाइ, यद्यपि यह भाइ पगार से रहे थे तथापि इनोंने इन कार्य की सेवा वेतन के प्रमाण से अधिक की. इस लिये इनको भी धन्यवाद देते हैं.

शब्दार्थ पापकर्म इ० यहां से चु० चवकर पे० परलोक में देव सि० होवे गो० गौतम अ० कितनेक दे० देवसि० होवे अ० कितनेक णो० नहीं दे० देव सि० होवे से० वह के० कैसे भं० भगवन् जा० यावत् इ० यहां से चु० चवकर पे० परलोक में अ० कितनेक दे० देव सि० होवे अ० कितनेक णो० नहीं दे० देव सि० होवे गो० गौतम जे० जो जी० जीव गा० ग्राम आ० आगर न० नगर नि० निगम रा० राज्यधानि खे० खेडं क० कव्वड मं० मंडप दो० द्रोणमुख प० पट्टण आ० आश्रम स० सन्निवेश में अ० अकाम तृष्णा

सूत्र पच्चक्खाय पावकम्मे; इतो चुते पेच्चा देवे सिया ? गोयमा ! अत्थेगइए देवे सिया अत्थेगइए णो देवे सिया। सेकेणट्ठेणं भंते जाव इतो चुते पेच्चा अत्थेगइए देवेसिया, अत्थेगइए णो देवे सिया? गोयमा! जे इमे जीवा गामागर नगर निगम रायहाणि खेड कव्वड मडंव दोणमुह पट्टणासम सन्निवेसेसु अकामतण्हाए, अकामछुहाए,

भावार्थ में क्या देवता होवे ? अहो गौतम ! कितनेक देव होवे और कितनेक देव न होवे. अहो भगवन् ? किस कारण से कितनेक देव होवे और कितनेक देव नहोवे ! जो जीव ग्राम, आगर, नगर, निगम, राज्यधानी, खेड, कव्वड, मंडप द्रोणमुख, पट्टण. आश्रम, सन्निवेश में अकाम-विना इच्छा से, तृष्णा, क्षुधा, ब्रह्मचर्य, शीत, आतप, दंश मशक, स्नान नहीं करना, स्वेद नहीं पुछना, शरीर का मेल दूर नहीं करना, मल, पंक व परिदाह से अल्प या बहुत समय तक आत्मा को क्लेश पहुंचावे और इस तरह आत्मा को कष्ट देते

शब्दार्थ सि० सिझे यावत् अं० अंतकरे से० वह के० कैसे भ० भगवन् ए० ऐसे वु० कहा जाता है पूर्ववत् ॥ ४५ ॥ जी० जीव भं० भगवन् अ० असंयति अ० अविरति अ० अप्रतिहत प० प्रत्याख्यान पा०

सूत्र

अणगारे आउयवज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ धणिय बंधण बद्धाओ सिढिल बंधण बद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठितीयाओ हस्सकालट्ठितीयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुपदेसगाओ अप्पपदेसगाओ पकरेइ, आउयंचणं कम्मं न बंधइ, असायावेयणिज्जं च णं कम्मं णो भुज्जो भुज्जो उवचिणइ. अणादीयंचणं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसार कंतारं वीईवयइ. से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं संवुडे अणगारे सिज्झइ जाव अंतकरेइ ॥ ४४ ॥ जीवेणं भंतेअसंजए, अविरए, अप्पडिहय

भावार्थ

करे ? अहो गौतम ! संवृत्त अणगार आयुष्य छोडकर अन्य सात कर्म की प्रकृतियों का निकाचित बंधन किया होवे तो उन को शिथिलकरे, दीर्घ काल की स्थिति वाले कर्मों को ह्रस्व काल की स्थिति वाले बनावे तीव्र रसवाले कर्मों को अल्प रसवाले बनावे, बहुत प्रदेशात्मक कर्मों को अल्प प्रदेशात्मक बनावे, आयुष्य कर्म का बंध करे नहीं, असाता वेदनीय कर्म को वारंवार संचित करे नहीं व अनादि अनंत संसार में परिभ्रमण करे नहीं; इसलिये अहो गौतम ! संवृत्त अणगार सिझे यावत् दुःखों का अंतकरे ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! असंयति, अविरति, व प्रत्याख्यान से पापकर्म नहीं तोडने वाला यहां से चवकर परलोक

शब्दार्थ के दे० देवलोक प० मरूपे गो० गौतम इ० यह म० मनुष्य लोकमें अ० अशोक वृक्षके वन स० सप्त पर्णवन चं० चंपकवन चू० आम्रवन ति० तिलकवन ला० वृक्ष विशेष नि० वड के वन छ० छत्राहवन अ० अशनवन स० शणकेवन अ० अलसीके वन कु० कुसुंभवन सि० सरसव के वन वं० वृक्ष विशेष नि० नित्य कु० कुसुम वाले मौं० मंजरी ल० वेल थ० फूलजाति गु० लता गो० पत्रसमुह ज० समश्रेणी जु० युगल वि० नमेहुवे प० विशेष नमेहुवे मु० मगट पिं० लुम्ब मं० मांजर व० नवकुंपल ध० धारन करने वाले सि० शो-

सूत्र लाउयवणेइवा, निग्गोहवणेइवा, छत्तोहवणेइवा; असणवणेइवा, सणवणेइवा, अयासिवणेइवा, कुसुंभवणेइवा, सिद्धत्थवणेइवा, बंधुजीववणेइवा; निच्चं कुसुमिय माइयलवइयथवइय गुलुइय गोच्छिय जमालिय जुवालिय विणमिय पणमिय सुविभत्त पिंडिमंजरि वडिंगधरे, सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठइ एवामेव तेसिं वाणमंतरा-

भावार्थ युगल वृक्ष के पुष्पों का भार से नमे हुवे, विशेष नमें हुवे, नविन कुंपल रूपी मुकुट को धारण करने वाले व वनलक्ष्मी से बहुत ही शोभनीक हैं वैसेही उन वाणव्यंतर देवता के देवलोक जानना. उस की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की जानना. वे देवलोक बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों से व्याप्त, क्रीडा में आसक्त होनेसे उपरा उपर आच्छादे हुवे, परस्पर बहुत दूर तक खेलनेसे

शब्दार्थ अ० अकामक्षुधा अ० अकाम ब्रह्मचर्य अ० अकाम सी० शीत आ०आतप दं० दंश म० मशक अ० स्नान रहित से० स्वेद ज० जल म० मल पं० कर्दम प० परिदाह अ० थोडे बु० बहुत का० काल अ० आत्मा को प० कष्टदेवे प० कष्टदेकर का० काल के अवसर में का० काल कि० करके अ० अन्यतर वा० वाणव्यंतर दे० देवलोक में दे० देवपने उ० उत्पन्न भ० होवे के० कैसे भं० भगवन् वा० वाणव्यंतर दे० देवता

मूल अकाम बंभचेरवासेगं, अकामसीतातवदंसमसगं, अण्हाणगसेयजल्लमल पंकपरिदाहेणं अप्पतरोवा भुज्जतरोवा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति परिकिलेसइत्ता; कालमासे कालंकिच्चा, अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥ केरिसाणं भंते तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा प०? गोयमा! से जहा नामए इह मणुस्स लोगंमि असोगवणेइवा सत्तवण्णवणेइवा, चंपयवणेइवा, चूयवणेइवा, तिलगवणेइवा,

भावार्थ काल के अवसर में काल करे तो वाणव्यंतर देवलोक में देवतापने उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! उन वाणव्यंतर देवता के देवलोक कैसे हैं? अहो गौतम जैसे मनुष्य लोक में अशोकवन, सप्तपर्णवन, चंपकवन आम्रवन, तिलक वन, अलंबुक (तुम्बी का) वन, न्यग्रोधवन, छत्राहवन, अशनवृक्षवन, शणवृक्ष के वन अलसीका वन, कुसुमवन, सिद्धत्य-श्वेतसरसवका वन, बंधजीव सो मध्यान्हे के कुसुमका वन वगैरह वनों सदैव कुसुमों से फुले हुवे, मंजरी, गुच्छा, गुलम, बेल, पत्र, अन्य अनेक वृक्षोंकी श्रेणियों के समुह व

शब्दार्थ के दे० देवलोक प० प्ररूपे गो० गौतम इ० यह म० मनुष्य लोकमें अ० अशोक वृक्षके वन स० सप्त पर्णवन चं० चंपकवन चू० आम्रवन ति० तिलकवन ला० वृक्ष विशेष नि० वड के वन छ० छत्राहवन अ० असनवन स० शणकेवन अ० अलसीके वन कु० कुसुंभवन सि० सरसव के वन वं० वृक्ष विशेष नि० नित्य कु० कुसुम वाले मों० मंजरी ल० वेल थ० फूलजाति गु० लता गो० पत्रसमुह ज० समश्रेणी जु० युगल वि० नमेहुवे प० विशेष नमेहुवे सु० मगट पिं० लुम्ब मं० मांजर व० नवकुंपल ध० धारन करने वाले सि० शो-

सूत्र लाउयवणेइवा,निग्गोहवणेइवा,छत्तोहवणेइवा;असणवणेइवा,सणवणेइवा,अयासिवणेइवा, कुसुंभवणेइवा, सिद्धत्थवणेइवा, बंधुजीववणेइवा; निच्चं कुसुमिय माइयलवइयथवइय गुलु-इय गोच्छिय जमालिय जुवालिय विणमिय पणमिय सुविभत्त पिंडिमंजरि वाडिंगधरे, सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठइ एवामेव तेसिं वाणमंतरा-

भावार्थ युगल वृक्ष के पुष्पों का भार से नमे हुवे, विशेष नमें हुवे, नविन कुंपल रूपी मुकुट को धारण करने वाले व वनलक्ष्मी से बहुत ही शोभनीक हैं वैसेही उन वाणव्यंतर देवता के देवलोक जानना. उस की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की जानना. वे देवलोक बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों से व्याप्त, क्रीडा में आसक्त होनेसे उपरा उपर आच्छादे हुवे, परस्पर बहुत दूर तक खेलनेसे

शब्दार्थ — भनिक अ० अतीव उ० सुंदर चि० हैं ए० ऐसे ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति से उ० उत्कृष्ट प० पल्योपम ठि० स्थिति से व० बहुत वा० वाणव्यंतर दे० देव दे० देवीसे आ० व्याप्त वि० विस्तीर्ण उ० आच्छादित सं० संस्तीर्ण फु० स्पर्शे अ० रहे गा० गुप्त सि० लक्ष्मी से अ० अतीत २ उ० सुंदर शोभते चि० हैं ए० ऐसे गो० गौतम ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक प० प्ररूपे सो० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा

सूत्र — णं देवाणं देवलोया जहण्णेणं दस वास सहस्स ठिईएहिं, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठिइए-हिं बहुहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय आतिण्णा, वितिण्णा, उवत्थडा संथडा फु-डा, अवगाढगाढ सिरीए, अतीव अतीव उवसोभमाणा उवसोभमाणा चिट्ठंति ॥ ए-रिसगाणं गोयमा ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जीवे णं असंजए जाव देवोसिया ॥ ४५ ॥ सेवं भंते ! भंते ति भगवं

भावार्थ — संथारा जैसे विस्तीर्ण बने हुवे, आसन शयन रमण भाग से भोगवते व लक्ष्मी से अतीव सुशोभित रहे हुवे हैं. अहो गौतम ! उन-वाणव्यंतर के ऐसे देवलोक कहे हैं. और इसी कारण से कितनेक असंयाति जीव देवतापने उत्पन्न होवे और कितनेक उत्पन्न नहोवे ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् जैसे मैंने पृच्छा की वैसे ही आपने प्रतिपादन किया है. आप जैसा कहते हैं; वैसा ही है अन्यथा नहीं है. इस प्रकार भगवन्त के

शब्दार्थ

जाता है जी० जीव अ० असयंति जा० यावत् दे० देव सि० होवे॥४५॥से० ऐसेही भ० भगवन् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर को वं० वंदे ण० नमस्कार किया वं० वंदना करके सं० संयम से त० तपसे अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं. ॥ १ ॥ १ ॥ * *

रा० राजगृह ण० नगर स० समवसरण प० परिपदाणि निर्गता जा० यावत् ए० ऐसा व० कहा जी०

सूत्र

गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ इति पढमसए पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ १ ॥ *

रायगिहे णयरे, समोसरणं, परिसा णिग्गया जाव एवं. वयासी. जीवेणं भंते सय

भावार्थ

वचनों को बहुत मान देकर गौतम स्वामीने श्री श्रमण भगवन्त महावीर को वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर के संयम व तपसे आत्मा के स्वरूप को विचारते हुवे विचरने लगे यह पहिला शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १ ॥ १ ॥ + + ×

गत उद्देशे में कर्म के चलनादि प्रश्नोत्तर कहे हैं वे कर्म दुःखरूप होते हैं इसलिये आगे दुःख का प्रश्न करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में भगवन्त श्री महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वांदने को आई, वाणी सुनकर परिषदा पीछीगई. उस समय श्री गौतम स्वामीने भगवन्त को प्रश्न पुछा कि अहो भगवन् ! जीव अपना किया हुवा दुःख वेदता है ? अहो गौतम ! कितनेक स्वकृत कर्मवेदे, कित-

शब्दार्थ

मनिक अ० अतीव उ० सुंदर चि० हैं ए० ऐसे ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति से उ० उत्कृष्ट प० पल्योपम ठि० स्थिति से व० बहुत वा० वाणव्यंतर दे० देव दे० देवीसे आ० व्याप्त वि० विस्तीर्ण उ० आच्छादित सं० संस्तीर्ण फु० स्पर्शे अ० रहे गा० गुप्त सि० लक्ष्मी से अ० अतीत २ उ० सुंदर शोभते चि० हैं ए० ऐसे गो० गौतम ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक प० प्ररूपे सो० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा

सूत्र

णं देवाणं देवलोया जहण्णेणं दस वास सहस्स ठिईएहिं, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठिइए-हिं बहुहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय आतिण्णा, वितिण्णा, उवत्थडा संथडा फु-डा, अवगाढगाढ सिरीए, अतीव अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥ ए-रिसगाणं गोयमा ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जीवे णं असंजए जाव देवोसिया ॥ ४५ ॥ सेवं भंते ! भंते ति भगवं

भावार्थ

संथारा जैसे विस्तीर्ण बने हुवे, आसन शयन रमण भाग से भोगवते व लक्ष्मी से अतीव सुशोभित रहे हुवे हैं. अहो गौतम ! उन वाणव्यंतर के ऐसे देवलोक कहे हैं. और इसी कारण से कितनेक असंयाति जीव देवतापने उत्पन्न होवे और कितनेक उत्पन्न नहोवे ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् जैसे मैंने पृच्छा की वैसे ही आपने प्रतिपादन किया है. आप जैसा कहते हैं; वैसा ही है अन्यथा नहीं है. इस प्रकार भगवन्त के

शब्दार्थ

जाता है जी० जीव अ० असयंति जा० यावत् दे० देव सि० होवे॥४५॥से० ऐसेही भ० भगवन् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर को वं० वंदे ण० नमस्कार किया वं० वंदना करके सं० संयम से त० तपसे अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं. ॥ १ ॥ १ ॥ * *

रा० राजगृह ण० नगर स० समवसरण प० परिपदाणि निर्गता जा० यावत् ए० ऐसा व० कहा जी०

सूत्र

गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पा-णं भावेमाणे विहरइ इति पढमसए पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ १ ॥ *

रायगिहे णयरे, समोसरणं, परिसा णिग्गया जाव एवं वयासी. जीवेणं भंते सय

भावार्थ

वचनों को बहुत मान देकर गौतम स्वामीने श्री श्रमण भगवन्त महावीर को वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर के संयम व तपसे आत्मा के स्वरूप को विचारते हुवे विचरने लगे यह पहिला शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १ ॥ १ ॥ + + ×

गत उद्देशे में कर्म के चलनादि प्रश्नोत्तर कहे हैं वे कर्म दुःखरूप होते हैं इसलिये आगे दुःख का प्रश्न करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में भगवन्त श्री महावीर स्वामी पधारे, परिपदा वांदने को आई, वाणी सुनकर परिपदा पीछीगई. उस समय श्री गौतम स्वामीने भगवन्त को प्रश्न पुछा कि अहो भगवन् ! जीव अपना किया हुवा दुःख वेदता है ? अहो गौतम ! कितनेक स्वकृत कर्मवेदे, कित-

शब्दार्थ

भनिक अ० अतीव उ० सुंदर चि० हैं ए० ऐसे ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति से उ० उत्कृष्ट प० पल्योपम ठि० स्थिति से व० बहुत वा० वाणव्यंतर दे० देव दे■ देवीसे आ० व्याप्त वि० विस्तीर्ण उ० आच्छादित सं० संस्तीर्ण फु० स्पर्शे अ० रहे गा० गुप्त सि० लक्ष्मी से अ० अतीत २ उ० सुंदर शोभते चि० हैं ए० ऐसे गो० गौतम ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक प० प्ररूपे सो० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा

सूत्र

णं देवाणं देवलोया जहण्णेणं दस वास सहस्स ठिईएहिं, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठिईए-हिं बहुहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय आतिण्णा, वितिण्णा, उवत्थडा संथडा फु-डा, अवगाढगाढ सिरीए, अतीव अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥ ए-रिसगाणं गोयमा ! तोसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जीवे णं असंजए जाव देवोसिया ॥ ४५ ॥ सेवं भंते ! भंते ति भगवं

भावार्थ

संथारा जैसे विस्तीर्ण बने हुवे, आसन शयन रमण भाग से भोगवते व लक्ष्मी से अतीव सुशोभित रहे हुवे हैं. अहो गौतम ! उन वाणव्यंतर के ऐसे देवलोक कहे हैं. और इसी कारण से कितनेक असंयाति जीव देवतापने उत्पन्न होवे और कितनेक उत्पन्न नहोवे ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् जैसे मैंने पृच्छा की वैसे ही आपने प्रतिपादन किया है. आप जैसा कहते हैं; वैसा ही है अन्यथा नहीं है. इस प्रकार भगवन्त के

शब्दार्थ जाता है जी० जीव अ० असयंति जा० यावत् दे० देवं सि० होवे॥४५॥से० ऐसेही भ० भगवन् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर को वं० वंदे ण० नमस्कार किया वं० वंदना करके सं० संयम से त० तपसे अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं. ॥ १ ॥ १ ॥ * *

रा० राजगृह ण० नगर स० समवसरण प० परिपदाणि निर्गता जा० यावत् ए० ऐसा व० कहा जी०

सूत्र गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ इति पढमसए पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ १ ॥ *

रायगिहे णयरे, समोसरणं, परिसा णिग्गया जाव एवं. वयासी. जीवेणं भंते सय

भावार्थ वचनों को बहुत मान देकर गौतम स्वामीने श्री श्रमण भगवन्त महावीर को वंदना नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर के संयम व तपसे आत्मा के स्वरूप को विचारते हुवे विचरने लगे यह पहिला शतक का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुआ. ॥ १ ॥ १ ॥ + + ×

गत उद्देशे में कर्म के चलनादि प्रश्नोत्तर कहे हैं वे कर्म दुःखरूप होते हैं इसलिये आगे दुःख का प्रश्न करते हैं. राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में भगवन्त श्री महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वांदने को आई, वाणी सुनकर परिषदा पीछीगई. उस समय श्री गौतम स्वामीने भगवन्त को प्रश्न पुछा कि अहो भगवन्! जीव अपना किया हुवा दुःख वेदता है? अहो गौतम! कितनेक स्वकृत कर्मवेदे, कित-

शब्दार्थ भनिक अ० अतीव उ० सुंदर चि० हैं ए० ऐसे ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति से उ० उत्कृष्ट प० पल्योपम ठि० स्थिति से व० बहुत वा० वाणव्यंतर दे० देव दे० देवीसे आ० व्याप्त वि० विस्तीर्ण उ० आच्छादित सं० संस्तीर्ण फु० स्पर्शे अ० रहे गा० गुप्त सि० लक्ष्मी से अ० अतीव २ उ० सुंदर शोभते चि० हैं ए० ऐसे गो० गौतम ते० उन वा० वाणव्यंतर दे० देवके दे० देवलोक प० प्ररूपे सो० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा

सूत्र णं देवाणं देवलोया जहण्णेणं दस वास सहस्स ठिईएहिं, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठिईए-हिं बहुहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय आतिण्णा, वितिण्णा, उवत्थडा संथडा फु-डा, अवगाढगाढ सिरीए, अतीव अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥ ए-रिसगाणं गोयमा ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जीवे णं असंजए जाव देवोसिया ॥ ४५ ॥ सेवं भंते ! भंते त्ति भगवं

भावार्थ संथारा जैसे विस्तीर्ण बने हुवे, आसन शयन रमण भाग से भोगवते व लक्ष्मी से अतीव सुशोभित रहे हुवे हैं. अहो गौतम ! उन वाणव्यंतर के ऐसे देवलोक कहे हैं. और इसी कारण से कितनेक असंयाति जीव देवतापने उत्पन्न होवे और कितनेक उत्पन्न नहोवे ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् जैसे मैंने पृच्छा की वैसे ही आपने प्रतिपादन किया है. आप जैसा कहते हैं; वैसा ही है अन्यथा नहीं है. इस प्रकार भगवन्त के

शब्दार्थ नहीं उदयमें आया वे० वेदे से० वह ते० इसलिये ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० ऐसा च० चौवीस दं० दंडक को जा० यावत् वे० वैमानीक ज० जैसे दु० दुःख में दो० दोभेद त० तैसे आ० आयुष्य में ए० एकवचन पो० पृथक् ए० एक वचन से जा० यावत् वे० वैमानिक पु० पृथक् तक ॥ १ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सरिखे आहारी स० सर्व स० सरिखे शरीरी स० सर्व स० सरिखे ऊश्वासनी

सूत्र जीवेणं भंते सयं कडं आउयं वेदेंति? गोयमा! अत्थेगइयं वेदेंति, अत्थेगइयं णो वेदेंति जहा दुक्खेणं दो दंडगा तहा आउएणवि. एगत्त पोहत्तिया, एगत्तेणं, जाव वे-माणिया पुहुत्तेणवि तहेव ॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा सव्वे समुस्सासणिस्सासा ? गोयमा णोइणट्ठे रामट्ठे ! सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ णे-रइया णो सव्वे समाहारा णो सव्वे समुस्सासणिस्सासा? गोयमा! णेरइयां दुविहा पण्ण

भावार्थ नहीं. अहो भगवन् ! किसकारन से ? अहो गौतम ! उदय आयाहुवा वेदे और उदय में नहीं आयाहुवा वेदे नहीं इस कारण से कितनेक जीव स्वकृत आयुष्य वेदे और कितनेक वेदे नहीं. ऐसे ही अनेक जीव आ-श्रित जानना. और चोविस ही दंडक आश्रित दोनों बोल उतारना ॥ १ ॥ आयुष्य आहार के बलसे ही टिकता है इसलिये आहार संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सारिखे आहार करने वाले हैं ? क्या सब सारिखे शरीर वाले हैं ? क्या सब सरीखे श्वासोश्वास लेने वाले हैं ? अहो गौतम ! यह

शब्दार्थ जीव भं० भगवन् स० स्वकृत दु० दुःख वे० वेदता है गो० गौतम अ० कितनेक वे० वेदे अ० कितनेक णो० नहीं वे० वेदे से० वह के० कीसतरह भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है अ० कितनेक वे० वेदे अ० कितनेक णो० नहीं वेदे गो० गौतम उ० उदयमें आया वे० वेदे णो० नहीं अ०

सूत्र कडं दुक्खं वेदेइ ? गोयमा ! अत्थेगइयं वेदेइ, अत्थेगइयं नो वेदेइ । सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ अत्थेगइयं वेदेइ अत्थेगइयं नोवेदेति ? गोयमा ! उदिण्णं वेदेति णो अणुदिण्णं वेदेति. सेतेणट्ठेणं एवं वुच्चइ गोयमा ! अत्थेगइयं वेदेइ, अत्थेगइयं णोवेदेइ एवं चउवीसदंडएणं जाव वेमाणिए ॥ जीवाणं भंते सयं कडं दुक्खं वेदेंति ? गोयमा ! अत्थेगइया वेदेंति, अत्थेगइया णो वेदेंति. । से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा ! उदिण्णं वेदेंति. णो अणुदिण्णं वेदेंति ॥ एवं जाव वेमाणिया

भावार्थ नेक स्वकृत कर्म वेदे नहीं. अहो भगवन्! किस कारन से कितनेक स्वकृत कर्मों वेदते हैं और कितनेक नहीं वेदते हैं. अहो गौतम ! उदय में आये हुवे कर्म वेदते हैं और उदय में नहीं आये हुवे कर्म नहीं वेदते हैं और इसी कारण से ऐसा कहा है कि कितनेक जीव स्वकृत दुःख वेदे और कितनेक जीव स्वकृत दुःख नहीं वेदे. ऐसे ही पृथक् २ चौविसही दंडक आश्रित जानना. उपर जैसे एक जीव आश्रित कहा है वैसेही अनेक जीव आश्रित जानना. अहो भगवन् जीव स्वकृत आयुष्य वेदे ? अहो गौतम ! कितनेक वेदे और कितनेक वेदे

शब्दार्थ नहीं उदयमें आया वे० वेदे से० वह ते० इसलिये ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० ऐसा च० चौवीस दं० दंडक को जा० यावत् वे० वैमानीक ज० जैसे दु० दुःख में दो० दोभेद त० तैसे आ० आयुष्य में ए० एकवचन पो० पृथक् ए० एक वचन से जा० यावत् वे० वैमानिक पु० पृथक् तक ॥ १ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सरिखे आहारी स० सर्व स० सरिखे शरीरी स० सर्व स० सरिखे ऊश्वासनी

सूत्र जीवेणं भंते सयं कडं आउयं वेदेंति? गोयमा! अत्थेगइयं वेदेंति, अत्थेगइयं णो वेदेंति जहा दुक्खेणं दो दंडगा तहा आउएणवि. एगत्त पोहत्तिया, एगत्तेणं, जाव वेमाणिया पुहुत्तेणवि तहेव ॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा सव्वे समुस्सासणिस्सासा ? गोयमा णोइणट्ठे समट्ठे ! सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ णेरइया णो सव्वे समाहारा णो सव्वे समुस्सासणिस्सासा? गोयमा! णेरइया दुविहा पण्ण

भावार्थ नहीं. अहो भगवन् ! किसकारन से ? अहो गौतम ! उदय आयाहुवा वेदे और उदय में नहीं आयाहुवा वेदे नहीं इस कारण से कितनेक जीव स्वकृत आयुष्य वेदे और कितनेक वेदे नहीं. ऐसे ही अनेक जीव आश्रित जानना. और चौविस ही दंडक आश्रित दोनों बोल उतारना ॥ १ ॥ आयुष्य आहार के बलसे ही टिकता है इसलिये आहार संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सारिखे आहार करने वाले हैं ? क्या सब सरिखे शरीर वाले हैं ? क्या सब सरीखे श्वासोश्वास लेने वाले हैं ? अहो गौतम ! यह

शब्दार्थ जीव भं० भगवन् स० स्वकृत दु० दुःख वे० वेदता है गो० गौतम अ० कितनेक वे० वेदे अ० कितनेक णो० नहीं वे० वेदे से० वह के० कीसतरह भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है अ० कितनेक वे० वेदे अ० कितनेक णो० नहीं वेदे गो० गौतम उ० उदयमें आया वे० वेदे णो० नहीं अ०

सूत्र

कडं दुक्खं वेदेइ ? गोयमा ! अत्थेगइयं वेदेइ, अत्थेगइयं नो वेदेइ । सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ अत्थेगइयं वेदेइ अत्थेगइयं नोवेदेति ? गोयमा ! उदिण्णं वेदेति णो अणुदिण्णं वेदेति. सेतेणट्ठेणं एवं वुच्चइ गोयमा ! अत्थेगइयं वेदेइ, अत्थेगइयं णोवेदेइ एवं चउवीसदंडएणं जाव वेमाणिए ॥ जीवाणं भंते सयं कडं दुक्खं वेदेंति ? गोयमा ! अत्थेगइया वेदेंति, अत्थेगइया णो वेदेंति. । से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा ! उदिण्णं वेदेंति. णो अणुदिण्णं वेदेंति ॥ एवं जाव वेमाणिया

भावार्थ नेक स्वकृत कर्मवेदे नहीं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक स्वकृत कर्मों वेदते हैं और कितनेक नहीं वेदते हैं. अहो गौतम ! उदय में आये हुवे कर्म वेदते हैं और उदय में नहीं आये हुवे कर्म नहीं वेदते हैं और इसी कारण से ऐसा कहा है कि कितनेक जीव स्वकृत दुःखवेदे और कितनेक जीव स्वकृत दुःख नहीं वेदे. ऐसे ही पृथक् २ चौविसही दंडक आश्रित जानना. उपर जैसे एक जीव आश्रित कहा है वैसेही अनेक जीव आश्रित जानना. अहो भगवन् जीव स्वकृत आयुष्य वेदे ? अहो गौतम ! कितनेक वेदे और कितनेक वेदे

शब्दार्थ नहीं उदयमें आया वे० वेदे से० वह ते० इसलिये ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० ऐसा च० चौवीस दं० दंडक को जा० यावत् वे० वैमानीक ज० जैसे दु० दुःख में दो० दोभेद त० तैसे आ० आयुष्य में ए० एकवचन पो० पृथक् ए० एक वचन से जा० यावत् वे० वैमानिक पु० पृथक् तक ॥ १ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सरिखे आहारी स० सर्व स० सरिखे शरीरी स० सर्व स० सरिखे ऊश्वासनी

सूत्र जीवेणं भंते सयं कडं आउयं वेदेंति? गोयमा! अत्थेगइयं वेदेंति, अत्थेगइयं णो वेदेंति जहा दुक्खेणं दो दंडगा तहा आउएणवि. एगत्त पोहत्तिया, एगत्तेणं, जाव वेमाणिया पुहुत्तेणवि तहेव ॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा सव्वे समुस्सासणिस्सासा ? गोयमा णोइणट्ठे समट्ठे ? सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ णेरइया णो सव्वे समाहारा णो सव्वे समुस्सासणिस्सासा? गोयमा! णेरइयां दुविहा पण्ण

भावार्थ नहीं. अहो भगवन्! किसकारन से ? अहो गौतम ! उदय आयाहुवा वेदे और उदय में नहीं आयाहुवा वेदे नहीं इस कारण से कितनेक जीव स्वकृत आयुष्य वेदे और कितनेक वेदे नहीं. ऐसे ही अनेक जीव आश्रित जानना. और चौविस ही दंडक आश्रित दोनों बोल उतारना ॥ १ ॥ आयुष्य आहार के बलसे ही टिकता है इसलिये आहार संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सारिखे आहार करने वाले हैं ? क्या सब सरिखे शरीर वाले हैं ? क्या सब सरीखे श्वासोश्वास लेने वाले हैं ? अहो गौतम ! यह

शब्दार्थ भासले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है णे० नारकी णो० नहीं स० सर्व स० समाहारी णो० नहीं स० सर्व स० समशरीरी णो० नहीं स० सर्व स० सरिखा उ० उश्वास णि० निश्वासले गो० गौतम णे० नारकी दु० दोप्रकार के प० प्ररूपे म० महा शरीरी अ० अल्प शरीरी त० तहां जे० जो म० महा शरीरी ते० वे ब० बहुत पो० पुद्गल आ० आहार

सूत्र त्ता तंजहा महासरीराय अप्पसरीराय। तत्थणं जेते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति, बहुतराए पोग्गले परिणामेंति, बहुतराए पोग्गले ऊससंति, बहुतराए पोग्गले णीससंति, अभिक्खणं आहारेंति, अभिक्खणं परिणामेंति, आभिक्खणं ऊससंति, आभिक्खणं णीससंति, ॥ तत्थणं जेते अप्पसरीरा तेणं अप्पंतराए पोग्गले आहारेंति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति,

भावार्थ अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से सब नारकी सारिखे आहार, शरीर, श्वासोश्वास वाले नहीं हैं ? अहो गौतम ! नारकी दोप्रकार के कहे हैं. १ बडे शरीर वाले और २ छोटे शरीर वाले. * जो बडे शरीर वाले हैं. वे बहुत दुःखी होते हुवे बहुत पुद्गलों का आहार करे, बहुत पुद्गलों परिणमावे बहुत पुद्गलों को उश्वास रूप से ग्रहण करे, बहुत पुद्गलों को निश्वासरूप से नीकाले और भी वारंवार

* नारकी की भवधारनीय अवगाहना जघन्य अंगुलका असंख्यात वा भाग उत्कृष्ट ५०० धनुष्य और उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन प्रमाण.

शब्दार्थ करे ब० बहुत पो० पुद्गल प० परिणमे ब० बहुत पो० पुद्गल ऊ० ऊश्वासे ब० बहुत पो० पुद्गल का नी० निश्वास ले अ० वारंवार आ० आहारले अ० वारंवार परिणमे अ० वारंवार ऊ० ऊश्वासले अ० वारंवार नी० निश्वासले त० तहां जे० जो० अ० अल्प शरीरी ते० वे अ० थोडा पो० पुद्गल आ० आहार करे अ० थोडा पो० पुद्गल परिणमें अ० थोडे पो० पुद्गल ऊ० उश्वासले अ० थोडे पो० पुद्गल नी० निश्वासले ॥ २ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० समकर्म वाले गो० गौतम णो० नहीं इ०

सूत्र अप्पतराए पोग्गले ऊससंति, अप्पतराए पोग्गले णीससंति । आहच्च आहारेंति, आहच्च परिणामेंति, आहच्च ऊससंति, आहच्च णीससंति. से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, णेरइया णो सव्वे समाहारा, जाव णो सव्वे समुस्सास णीसासा ॥ २ ॥ णे- रइयाणं भंते सव्वे समकम्मा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, । सेकेणट्ठेणं भंते एवं

भावार्थ आहारकरे, वारंवार परिणमावे, वारंवार श्वासलेवे, वारंवार श्वास नीकाले, और जो छोटे शरीर वाले हैं वे अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं, अल्प पुद्गलों परिणमाते हैं, अल्प पुद्गलों का श्वासलेते हैं, अल्प पुद्गलों को श्वासरूप नीकालते हैं अथवा आंतरा सहित आहार करते हैं, परिणमते हैं, श्वास लेते हैं व श्वास नीकालते हैं. इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि सब नारकी एक सरिखे शरीर, आहार व उश्वास, निश्वासवाले नहीं हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सरीखे कर्म वाले हैं ? अहो

शब्दार्थ यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम णे० नारकी दु० दोप्रकार के पु० पहिले के उत्पन्न प० पश्चात् उ० उत्पन्न त० तहां जे० जो पु० पूर्वोत्पन्न ते० वे अ० अल्प कर्म वाले त० तहां ज० जो प० पश्चात् उ० उत्पन्न ते० वे म० महाकर्म वाले ॥ ३ ॥ णे०

सूत्र वुच्चइ? गोयमा! णेरइयादुविहाप० तं० पुव्वोववण्णगाय पच्छोववण्णगाय तत्थणं जे ते पुव्वोववण्णगा तेणं अप्पकम्मतरा तत्थणं जे ते पच्छोववण्णगा तेणं महाकम्मतरा सेतेणट्ठेणं गोयमा एवं वुच्चइ ॥ ३ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समवण्णगा? गोय-

भावार्थ गौतम ? यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो गौतम! नारकी के दो भेद १ पूर्वोत्पन्न-पहिले उत्पन्न हुवे २ पश्चादुत्पन्न-पीछे से उत्पन्न हुवे उस में जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे अल्पकर्मवाले हैं क्योंकी उनों ने आयुःकर्म तथा अन्य कर्म भेदे हुवे हैं व जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे बहुत कर्मवाले हैं क्योंकी उनों ने आयुष्य कर्म बहुत थोडा छेदा हुवा है ÷ इसलिये सब नारकी सरीखे कर्म वाले नहीं हैं. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सरीखे

÷ यहां सरिखि स्थिति वाले नारकी को अंगीकार करके यह सूत्र कहा है; अन्यथा कोइ एक सागरोपम की स्थिति वाला नारकी बहुत स्थिति भोगव कर शेष एक पल्योपम रहे पीछे दूसरा दश हजार वर्ष की स्थिति वाला नारकी उत्पन्न होवे तो; क्या पहिले उत्पन्न हुवा शेष पल्योपमके आयुष्य वाला नारकी

शब्दार्थ

नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० समवर्णवाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जे० जो पु० पूर्वोत्पन्न ते० वे वि० विशुद्ध वर्णवाले त० तैसेही से० वह ते० इसलिये ॥ ४ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सम लेश्यावाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ त० तहां जे० जो पु० पूर्वोत्पन्न ते० वे वि० विशुद्ध लश्यावाले जे० जो प० पीछे

सूत्र

मा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं तहचेव ? गोयमा ! जे ते पुव्वोववण्णगा तेणं विसुद्ध वण्णतरागा तहेव । सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥४॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समलेस्सा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं जाव णो सव्वे समलेस्सा ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पुव्वोववण्णगाय, पच्छोववण्णगाय तत्थणं जे ते पुव्वोव

भावार्थ

वर्ण वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं. क्या कारण से ? अहो गौतम ! नारकी के दो भेद पहिले उत्पन्न हुवे और पीछे उत्पन्न, जो पहिले उत्पन्न हुवे वे विशुद्ध वर्णवाले होते हैं, और पीछे जो उत्पन्न हुवे हैं वे विशुद्ध वर्ण वाले नहीं हैं; इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी सम वर्ण वाले नहीं हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सरिखि लेश्या वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. क्या कारण से ? अहो गौतम! नारकी के दो भेद१ पहिले उत्पन्न हुवे व २ पीछे उत्पन्न हुवे. जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे विशुद्ध

की आपेक्षा से दश हजार वर्ष की स्थिति वाला महाकर्मीहोसके ! अर्थात् नहीं होवे.

शब्दार्थ — यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम णे० नारकी दु० दोप्रकार के पु० पहिले के उत्पन्न प० पश्चात् उ० उत्पन्न त० तहां जे० जो पु० पूर्वोत्पन्न ते० वे अ० अल्प कर्म वाले त० तहां ज० जो प० पश्चात् उ० उत्पन्न ते० वे म० महाकर्म वाले ॥ ३ ॥ णे०

सूत्र — वुच्चइ? गोयमा ! णेरइया दुविहा प० तं० पुव्वोववण्णगाय पच्छोववण्णगाय तत्थणं जे ते पुव्वोववण्णगा तेणं अप्पकम्मतरा तत्थणं जे ते पच्छोववण्णगा तेणं महाकम्मतरा सेतेणट्ठेणं गोयमा एवं वुच्चइ ॥ ३ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समवण्णगा ? गोय-

भावार्थ — गौतम ? यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो गौतम! नारकी के दो भेद १ पूर्वोत्पन्न-पहिले उत्पन्न हुवे २ पश्चादुत्पन्न-पीछे से उत्पन्न हुवे उस में जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे अल्पकर्मवाले हैं क्योंकी उनों ने आयुःकर्म तथा अन्य कर्म भेदे हुवे हैं व जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे बहुत कर्मवाले हैं क्योंकी उनों ने आयुष्य कर्म बहुत थोडा छेदा हुवा है ÷ इसलिये सब नारकी सरीखे कर्म वाले नहीं हैं. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब नारकी सरीखे

÷ यहां सरिखि स्थिति वाले नारकी को अंगीकार करके यह सूत्र कहा है; अन्यथा कोइ एक सागरोपम की स्थिति वाला नारकी बहुत स्थिति भोगव कर शेष एक पल्योपम रहे पीछे दूसरा दश हजार वर्ष की स्थिति वाला नारकी उत्पन्न होवे तो; क्या पहिले उत्पन्न हुवा शेष पल्योपमके आयुष्य वाला नारकी

शब्दार्थ — जे० जो सं० संज्ञी ते० वे म० बहुतवेदना वाले जे० जो अ० असंज्ञी अ० थोडीवेदनावाले ॥८॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० समक्रियावाले गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी ति० तीन प्रकार के स० सम्यक् दृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि स० समामिथ्यादृष्टि जे० जो स० समदृष्टि ते० उन को च० चारक्रिया प० प्ररूपी आ०

सूत्र — ते असण्णिभूया तेणं अप्पवेयणतरागा से तेणट्ठेणं गोयमा ॥ ६ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समाकिरिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! णेरइया तिविहा प० तं० सम्मादिट्ठीय, मिच्छादिट्ठीय, सम्मामिच्छादिट्ठीय । तत्थणं जेते सम्मदिट्ठी तेसिणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ तं० आरंभिया, परिग्गहिया,

भावार्थ — ऐसा भी अर्थ करते हैं कि संज्ञी पंचेन्द्रिय नारकी में उत्पन्न होवे सो संज्ञीभूत वे बहुत वेदनावाले होवे क्यों कि अशुभ अध्यवसाय से बहुत अशुभ कर्म का बंध कीया और इस से नरक में उत्पन्न हुवे. और असंज्ञी पंचेन्द्रिय प्रथम नरक में असंज्ञीपने उत्पन्न होवे वे अल्प वेदनावाले होवे क्यों कि उनको अति तीव्र अशुभ अध्यवसाय नहीं होते हैं. अथवा संज्ञीभूत सो पर्याप्ता बहुत वेदनावाले और असंज्ञीभूत सो अपर्याप्ता अल्पवेदना वाले, इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी सरिखी वेदनावाले नहीं हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सम क्रियावाले हैं ? अहो गौतम यह अर्थ योग्य नहीं हैं. क्यों कि नारकी के तीन भेद कहे हैं. १ समदृष्टी, २ मिथ्यादृष्टी ३ समामिथ्यादृष्टि. उस में जो समदृष्टी हैं उन को चार

शब्दार्थ

उत्पन्न हुवे ते० वे अ० अविशुद्ध लेश्यावाले ॥ ६ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० समवेदनावाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी दु० दोप्रकार के स० संज्ञी अ० असंज्ञी

सूत्र

वण्णगा तेणं विसुद्धलेसतरागा । तत्थणं जे ते पच्छोववण्णगा तेणं अविसुद्ध लेसतरागा । सेतेणट्ठेणं गोयमा ! ॥ ५ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समवेदणा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा सण्णिभूयाय, असण्णिभूयाय । तत्थणं जेते सण्णिभूया तेणंमहावेदणा, तत्थणं जे

भावार्थ

लेश्या वाले होते हैं; क्यों की उन को अल्प कर्म रहते हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे अशुद्ध लेश्या वाले हैं क्यों कि उन को बहुत कर्म रहते हैं इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी सरिखी लेश्या वाले नहीं हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी को सरिखी वेदना है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. किस कारण से ? अहो गौतम ! नारकी के दो भेद १ संज्ञीभूत सो समदृष्टि व असंज्ञीभूत सो मिथ्यादृष्टि. इस में जो संज्ञी भूत समदृष्टि हैं वे बहुत वेदना वाले हैं क्यों कि सम्यग् ज्ञान से पूर्वकृत कर्म विपाक की स्मृति होनेसे अती दुःख होवे और पश्चाताप करे कि मैंने अरिहंत प्ररूपित धर्म पाला नहीं इस कारण से उन को मानसिक दुःख बहुत होवे. और जो असंज्ञीभूत-मिथ्यादृष्टि हैं वे अल्पवेदना वाले हैं क्यों कि वे अपने कृतकर्म को नहीं जानते हैं इस से उन को मानसिक दुःख अल्प रहता है. कितनेक

शब्दार्थ जे॰ जो सं॰ संज्ञी ते॰ वे म॰ बहुत वेदना वाले जे॰ जो अ॰ असंज्ञी अ॰ थोडीवेदनावाले ॥६॥ णे॰ नारकी भं॰ भगवन् स॰ सर्व स॰ समक्रियावाले गो॰ गौतम नो॰ नहीं इ॰ यह अर्थ स॰ समर्थ णे॰ नारकी ति॰ तीन प्रकार के स॰ सम्यक् दृष्टि मि॰ मिथ्यादृष्टि स॰ समामिथ्यादृष्टि जे॰ जो स॰ समदृष्टि ते॰ उन को च॰ चारक्रिया प॰ प्ररूपी आ॰

सूत्र ते असण्णिभूया तेणं अप्पवेयणतरागा से तेणट्ठेणं गोयमा ॥ ६ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समाकिरिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! णेरइया तिविहा प॰ तं॰ सम्मद्दिट्ठीय, मिच्छादिट्ठीय, सम्मामिच्छादिट्ठीय । तत्थणं जेते सम्मदिट्ठी तेसिणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ तं॰ आरंभिया, परिग्गहिया,

भावार्थ ऐसा भी अर्थ करते हैं कि संज्ञी पंचेन्द्रिय नारकी में उत्पन्न होवे सो संज्ञीभूत वे बहुत वेदनावाले होवे क्यों कि अशुभ अध्यवसाय से बहुत अशुभ कर्म का बंध कीया और इस से नरक में उत्पन्न हुवे. और असंज्ञी पंचेन्द्रिय प्रथम नरक में असंज्ञीपने उत्पन्न होवे वे अल्प वेदनावाले होवे क्यों कि उनको अति तीव्र अशुभ अध्यवसाय नहीं होते हैं. अथवा संज्ञीभूत सो पर्याप्ता बहुत वेदनावाले और असंज्ञीभूत सो अपर्याप्ता अल्पवेदना वाले, इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी सरिखी वेदनावाले नहीं हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सम क्रियावाले हैं ? अहो गौतम यह अर्थ योग्य नहीं है. क्यों कि नारकी के तीन भेद कहे हैं. १ समदृष्टी, २ मिथ्यादृष्टी ३ समामिथ्यादृष्टि. उस में जो समदृष्टी हैं उन को चार

शब्दार्थ आरंभिकी प० प० पारिग्रहिकी मा० मायाप्रत्ययिकी अ० अप्रत्याख्यानक्रिया मि० मिथ्यादृष्टि को पं० पांच क्रिया आ० आरंभिकी जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी ए०ऐसे स० समामिथ्या दृष्टि को भी ॥ ७ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सम आयुष्यवाले स० सम उत्पन्न गो० गौतम णो० नहीं

सूत्र मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, । तत्थणं जे ते मिच्छद्दिट्ठी तेसिणं पंचकिरिया ओ कज्जंति तं० आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया । एवंसम्मामिच्छद्दिट्ठीणंपि. सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥७॥ णेरइयाणं भंते सव्वेसमाउया सव्वे समोववण्णगा ? गोयमा !

भावार्थ क्रिया लगती हैं १ पृथिव्यादिक का आरंभसो आरंभिकी २ शरीरादिपर ममत्व सो पारिग्रहिकी ३ वक्रपना व क्रोध, मान व माया युक्त स्वभावसो मायाप्रत्ययिकी और ४ निवृत्ति के अभाव से जो क्रिया लगेसो अप्रत्याख्यान. मिथ्यादृष्टी नारकी को पांच क्रिया लगे. उक्त चार क्रियाओं में मिथ्यादर्शन प्रत्यायिक क्रिया बढी. और ऐसे ही समपिथ्यादृष्टी को जानना. इस कारण से अहो गौतम ! नारकी को सरिखि क्रिया नहीं हैं. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सरीखे आयुष्य वाले हैं ? और सब सरीखे-एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारण से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो गौतम ! नारकी के चार भेद कहे हैं. १ कितनेक सम आयुष्य वाले हैं और एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं २ कितनेक सम आयुष्यवाले हैं विषम उत्पन्न होते हैं अर्थात्

शब्दार्थ इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी च० चार प्रकार के अ० कितनेक स० सम आयुष्यवाले स० समोत्पन्न अ० कितनेक स० सम आयुष्यवाले वि० विषमो उत्पन्न अ० कितनेक वि० विषम आयुष्यवाले स० समोत्पन्न अ० कितनेक वि० विषम आयुष्यवाले वि० विषमत्पन्न ॥ ८ ॥ अ० असुरकुमार भं० भगवन् स० सर्व स० सम आहारी स० सर्व स० सम शरीरी ज० जैसे णे० नारकी त० तैसे भा० कह-

सूत्र णोइणट्ठे समट्ठे। सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ? गोयमा! णेरइया चउव्विहा प०तं० अत्थेगइया समाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववण्णगा, सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥८॥ असुरकुमाराणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा? जहा णेरइया

भावार्थ एक साथ नहीं उत्पन्न होते हैं ३ कितनेक विषम आयुष्यवाले हैं और एक साथ उत्पन्न होने वाले हैं ४ कितनेक विषम आयुष्य वाले हैं और विषम उत्पन्न होने वाले हैं, इसलिये अहो गौतम! सब नारकी एक सरिखे आयुष्य व एक साथ उत्पन्न होने वाले नहीं ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! असुरकुमार जाति के सब देवता क्या सरिखे आहार वाले व सरिखे शरीर वाले हैं? अहो गौतम जैसे नारकी का कहा वैसेही यहां कहना. विशेष इतनाही कि असुरकुमारको भवधारणीय शरीरकी अवगाहना जघन्य अंगुलका असंख्यात वे भाग उत्कृष्ट सात हाथकी और उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुलका असंख्यात वा भाग उत्कृष्ट एक लक्ष योजनकी. जो महाशरीर वाले होते

शब्दार्थ आरंभिकी प० प० पारिग्राहिकी मा० मायाप्रत्ययिकी अ० अप्रत्याख्यानक्रिया मि० मिथ्यादृष्टि को पं० पांच क्रिया आ० आरंभिकी जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी ए०ऐसे स० सममिथ्या दृष्टि को भी ॥ ७ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् स० सर्व स० सम आयुष्यवाले स० सम उत्पन्न गो० गौतम णो० नहीं

सूत्र मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, । तत्थणं जे ते मिच्छद्दिट्ठी तेसिणं पंचकिरियाओ कज्जंति तं० आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया । एवंसम्मामिच्छदिट्ठीणंपि. सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥७॥ णेरइयाणं भंते सव्वेसमाउया सव्वे समोववण्णगा ? गोयमा !

भावार्थ क्रिया लगती हैं १ पृथिव्यादिक का आरंभसो आरंभिकी २ शरीरादिपर ममत्व सो पारिग्राहिकी ३ वक्रपना व क्रोध, मान व माया युक्त स्वभावसो मायाप्रत्ययिकी और ४ निवृत्ति के अभाव से जो क्रिया लगेसो अप्रत्याख्यान. मिथ्यादृष्टि नारकी को पांच क्रिया लगे. उक्त चार क्रियायों में मिथ्यादर्शन प्रत्यायिक क्रिया बढी. और ऐसे ही समभिथ्यादृष्टि को जानना. इस कारण से अहो गौतम ! नारकी को सरिखि क्रिया नहीं हैं. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! सब नारकी सरीखे आयुष्य वाले हैं ? और सब सरीखे-एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारण से यह अर्थ योग्य नहीं हैं ? अहो गौतम ! नारकी के चार भेद कहे हैं. १ कितनेक सम आयुष्य वाले हैं और एक साथ उत्पन्न होनेवाले हैं २ कितनेक. सम आयुष्यवाले हैं विषम उत्पन्न होते हैं अर्थात्

शब्दार्थ इ० यह अर्थ स० समर्थ णे० नारकी च० चार प्रकार के अ० कितनेक स० सम आयुष्यवाले स० समोत्पन्न अ० कितनेक स० सम आयुष्यवाले वि० विषमो उत्पन्न अ० कितनेक वि० विषम आयुष्यवाले स० समोत्पन्न अ० कितनेक वि० विषम आयुष्यवाले वि० विषमत्पन्न ॥ ८ ॥ अ० असुरकुमार भं० भगवन् स० सर्व स० सम आहारी स० सर्व स० सम शरीरी ज० जैसे णे० नारकी त० तैसे भा० कह-

सूत्र णोइणट्ठे समट्ठे। सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा! णेरइया चउव्विहा प०तं० अत्थेगइया समाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववण्णगा, सेतेणट्ठेणं गोयमा ॥८॥ असुरकुमाराणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा ? जहा णेरइया

भावार्थ एक साथ नहीं उत्पन्न होते हैं ३ कितनेक विषम आयुष्यवाले हैं और एक साथ उत्पन्न होने वाले हैं ४ कितनेक विषम आयुष्य वाले हैं और विषम उत्पन्न होने वाले हैं, इसलिये अहो गौतम ! सब नारकी एक सरिखे आयुष्य व एक साथ उत्पन्न होने वाले नहीं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार जाति के सब देवता क्या सरिखे आहार वाले व सरिखे शरीर वाले हैं ? अहो गौतम जैसे नारकी का कहा वैसेही यहां कहना. विशेष इतनाही कि असुरकुमारको भवधारणीय शरीरकी अवगाहना जघन्य अंगुलका असंख्यात वे भाग उत्कृष्ट सात हाथकी और उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुलका असंख्यात वा भाग उत्कृष्ट एकलक्ष योजनकी. जो महाशरीर वाले होते

शब्दार्थ ना ण० विशेष क० कर्म व० वर्ण ले० लेश्या प० कहना पु० पूर्वोत्पन्न म० बहुत कर्मवाले अ० अविशुद्धवर्ण वाले अ० अविशुद्ध लेश्यावाले प० पीछे उत्पन्न हुवे प० प्रशस्त से० शेष तं० तैसे ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार

सूत्र तहा भाणियव्वा, णवरं कम्म, वण्ण, लेस्साओ, परिवण्णेयव्वाओ पुव्वोववण्णगा महाकम्मतरा, अविसुद्ध वण्णतरा, अविसुद्ध लेसतरा, पच्छोववण्णगा पसत्था सेसंतंचेव. एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ ९ ॥ पुढविकाइयाणं आहारकम्म वण्ण लेस्सा

भावार्थ हैं वे बहुत पुद्गलों का आहार करते हैं, और जो छोटे शरीर वाले होते हैं वे अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं. जघन्य चतुर्थभक्त उत्कृष्ट एक हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे. जघन्य सातस्तोक में उत्कृष्ट एकपक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं, जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे महाकर्मी, अविशुद्ध वर्ण वाले, अविशुद्धलेश्या वाले हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे अल्प कर्म वाले, विशुद्ध वर्ण व विशुद्ध लेश्या वाले हैं. क्यों की पहिले उत्पन्न हुवे देवताओ अतिलुब्धता से दीव्य सुखों को भोगवकर बहुत शुभ कर्म का क्षय करते हैं और अशुभ कर्म का संचय करते हैं इस से कितनेक तिर्यंच पृथ्वी पानी वनस्पति में उत्पन्न होते हैं. और पीछे से उत्पन्न होने वाले के पुण्य के दल रह जाने से विशुद्ध वर्ण लेश्या वाले होते हैं शेष सब अधिकार नारकी जैसे कहना जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही स्तनित कुमार का जानना. ॥ ९ ॥ पृथ्वी

॥ १ ॥ पु० पृथ्वी काया को आ० आहार क० कर्म व० वर्ण लेश्या ज० जैसे णे० नारकी पु० पृथ्वीकाया भं० भगवन् स० सर्व स० समवेदना वाले हैं० हा स० समवेदना वाले से० वह के० कैसे गो० गौतम पु० पृथ्वीकाया स० सर्व अ० असंज्ञि अ० निर्धारविना वे० वेदते हैं से० वह ते० इसलिये पु० पृथ्वीकाया भं० भगवन् स० सर्व स० समक्रियावाले हैं० हां स० सबक्रिया वाले से० वह के० कैसे पु० पृथ्वी काया गो० गौतम स० सर्व मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि ण० निरंतर पं० पांचक्रिया क० करते हैं आ० आरंभिकी

सूत्र

जहा णेरइयाणं, पुढविकाइयाणं भंते सव्वे समवेदणा? हंता समवेदणा से केणट्ठेणं भंते सव्वे समवेयणा? गोयमा! पुढविकाइया सव्वे असण्णिभूया, अणिदाए वेदणं वेदेंति सेतेणट्ठेणं। पुढविकाइयाणं भंते सव्वे समकिरिया? हंता समकिरिया। सेकेण-ट्ठेणं भंते पुढविकाइया? गोयमा! पुढविकाइया सव्वे माईमिच्छादिट्ठी ताणंणिय-

भावार्थ

काया को आहार, कर्म, वर्ण, व लेश्या नारकी जैसे कहना. अहो भगवन्! क्या सब पृथ्वीकायिक जीव समवेदना वाले हैं? गौतम सब पृथ्वी कायिक जीव समवेदनावाले हैं. अहो भगवन्! किस तरह से वे सब समवेदना वेदते हैं? अहो गौतम! सब पृथ्वीकायिक असंज्ञी भूत होने से निर्धार बिना वेदना वेदते हैं परंतु ये कर्म पहिले के उपार्जित हैं वैसा जाने नहीं इसलिये अहो गौतम! सब पृथ्वी कायिकजीव समवेदना वेदते हैं. अहो भगवन्! सब पृथ्वी कायिक जीव सरिखी क्रिया वाले हैं.! हां गौतम वे सब सरिखी

शब्दार्थ ना ण० विशेष क० कर्म व० वर्ण ले० लेश्या प० कहना पु० पूर्वोत्पन्न म० बहुत कर्मवाले अ० अविशुद्धवर्ण वाले अ० अविशुद्ध लेश्यावाले प० पीछे उत्पन्न हुवे प० प्रशस्त से० शेष तं० तैसे ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार

सूत्र तहा भाणियव्वा, णवरं कम्म, वण्ण, लेस्साओ, परिवण्णेयव्वाओ पुव्वोववण्णगा महाकम्मतरा, अविसुद्ध वण्णतरा, अविसुद्ध लेसतरा, पच्छोववण्णगा पसत्था से-संतंचेव. एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ ९ ॥ पुढविकाइयाणं आहारकम्म वण्ण लेस्सा

भावार्थ हैं वे बहुत पुद्गलों का आहार करते हैं, और जो छोटे शरीर वाले होते हैं वे अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं. जघन्य चतुर्थभक्त उत्कृष्ट एक हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे. जघन्य सातस्तोक में उत्कृष्ट एकपक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं, जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे महाकर्मी, अविशुद्ध वर्ण वाले, अविशुद्धलेश्या वाले हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे अल्प कर्म वाले, विशुद्ध वर्ण व विशुद्ध लेश्या वाले हैं. क्यों की पहिले उत्पन्न हुवे देवताओ अतिलुब्धता से दीव्य सुखों को भोगवकर बहुत शुभ कर्म का क्षय करते हैं और अशुभ कर्म का संचय करते हैं इस से कितनेक तिर्यंच पृथ्वी पानी वनस्पति में उत्पन्न होते हैं. और पीछे से उत्पन्न होने वाले के पुण्य के दल रह जाने से विशुद्ध वर्ण लेश्या वाले होते हैं शेष सब अधिकार नारकी जैसे कहना जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही स्तनित कुमार का जानना. ॥ ९ ॥ पृथ्वी

र्थ

॥ ९ ॥ पु० पृथ्वी काया को आ० आहार क० कर्म व० वर्ण लेश्या ज० जैसे णे० नारकी पु०पृथ्वीकाया भं० भगवन् स० सर्व स० समवेदना वाले हैं० हा स० समवेदना वाले से० वह के० कैसे गो० गौतम पु० पृथ्वीकाया स० सर्व अ० असंज्ञि अ० निर्द्धारविना वे० वेदते हैं से० वह ते० इसलिये पु०पृथ्वीकाया भं० भगवन् स० सर्व स० समक्रियावाले हैं० हां स० समक्रिया वाले से० वह के० कैसे पु० पृथ्वी काया गो० गौतम स० सर्व मा० मांयी मि० मिथ्यादृष्टि णे० निरंतर पं० पांचक्रिया क० करते हैं आ० आरंभिकी

सूत्र

जहा णेरइयाणं, पुढविकाइयाणं भंते सव्वे समवेदणा? हंता समवेदणा से केणट्ठेणं भंते सव्वे समवेयणा? गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे असण्णिभूया, अणिदाए वेदणं वेदेंति सेतेणट्ठेणं। पुढविकाइयाणं भंते सव्वे समकिरिया? हंता समकिरिया। सेकेण-ट्ठेणं भंते पुढविकाइया? गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे माईमिच्छादिट्ठी ताणंणेय-

भावार्थ

काया को आहार, कर्म, वर्ण, व लेश्या नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् ! क्या सब पृथ्वीकायिक जीव समवेदना वाले हैं? गौतम सब पृथ्वी कायिक जीव समवेदनावाले हैं. अहो भगवन् ! किस तरहसे वे सब समवेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! सब पृथ्वीकायिक असंज्ञी भूत होने से निर्धार विना वेदना वेदते हैं परंतु ये कर्म पहिले के उपार्जित हैं वैसा जाने नहीं इसलिये अहो गौतम ! सब पृथ्वी कायिकजीव समवेदना वेदते हैं. अहो भगवन् ! सब पृथ्वी कायिक जीव सरिखी क्रिया वाले हैं. ! हां गौतम वे सब सरिखी

शब्दार्थ ना ण० विशेष क० कर्म व० वर्ण ले० लेश्या प० कहना पु० पूर्वोत्पन्न म० बहुत कर्मवाले अ० अविशुद्धवर्ण वाले अ० अविशुद्ध लेश्यावाले प० पीछे उत्पन्न हुवे प० प्रशस्त से० शेष तं० तैसे ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार

सूत्र तहा भाणियव्वा, णवरं कम्म, वण्ण, लेस्साओ, परिवण्णेयव्वाओ पुव्वोववण्णगा महाकम्मतरा, अविसुद्ध वण्णतरा, अविसुद्ध लेसतरा, पच्छोववण्णगा पसत्था सेसंतंचेव. एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ ९ ॥ पुढविकाइयाणं आहारकम्म वण्ण लेस्सा

भावार्थ हैं वे बहुत पुद्गलों का आहार करते हैं, और जो छोटे शरीर वाले होते हैं वे अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं. जघन्य चतुर्थभक्त उत्कृष्ट एक हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे. जघन्य सातस्तोक में उत्कृष्ट एकपक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं, जो पहिले उत्पन्न हुवे हैं वे महाकर्मी, अविशुद्ध वर्ण वाले, अविशुद्धलेश्या वाले हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे हैं वे अल्प कर्म वाले, विशुद्ध वर्ण व विशुद्ध लेश्या वाले हैं. क्यों की पहिले उत्पन्न हुवे देवताओ अतिलुब्धता से दीव्य सुखों को भोगवकर बहुत शुभ कर्म का क्षय करते हैं और अशुभ कर्म का संचय करते हैं इस से कितनेक तिर्यंच पृथ्वी पानी वनस्पति में उत्पन्न होते हैं. और पीछे से उत्पन्न होने वाले के पुण्य के दल रह जाने से विशुद्ध वर्ण लेश्या वाले होते हैं शेष सब अधिकार नारकी जैसे कहना जैसे असुरकुमारों का कहा वैसे ही स्तनित कुमार का जानना. ॥ ९ ॥ पृथ्वी

शब्दार्थ मिथ्यादृष्टि स० समिथ्यादृष्टि त० तहां जे० जो स० समदृष्टि ते० वे दु० दोप्रकार के अ० असंयति सं० संयतासंयति त० तहां जे० जो सं० संयतासंयति ते० उनको ति० तीन कि० क्रिया तं० वह ज०जैसे आ० आरंभिकी प०पारिग्राहिकी मा० मायाप्रत्ययिकी अ० असंयति को च० चार मि०

सूत्र रिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! पांचिंदिय तिरिक्ख जोणिया, तिविहा प० तं० सम्मादिट्ठी, मिच्छदिट्ठी ! सम्मामिच्छदिट्ठी, तत्थणं जे ते सम्मादिट्ठी ते दुविहा प०तं० असंजयाय, संजयासंजयाय, तत्थणं जे ते संजयासंजया तेसिणं तिण्णि किरियाओ कज्जंति, तंजहा-आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया. असंज-

भावार्थ छोटा शरीरको अपनी २ अवगाहना जैसे कहना. विकलेन्द्रियादिक को प्रक्षेप आहार होता है ॥ ११ ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय नारकी जैसे कहना. परंतु क्रिया में जो भेद हैं सो बताते हैं. अहो भगवन् क्या सब तिर्यंच पंचेन्द्रिय सरिखि क्रिया वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं. किस कारन से ? तिर्यंच पंचेन्द्रिय के तीन भेद, सम्यक् दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, व समिथ्यादृष्टि; उस में जो समदृष्टि हैं उनके दो भेद असंयाति व संयतासंयति उस में जो संयतासंयति हैं. उनको तीन क्रिया लगती हैं. १ आरंभिकी, २ पारिग्रहिकी व ३ मायाप्रत्ययिकी. असंयतिको चार, समिथ्यादृष्टि व मिथ्यादृष्टी को पांच २ क्रियाओं कही

शब्दार्थ जा० यावत् मि० मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी से० वह ते० इसलिये पु० पृथ्वी काया स० समायुष्य वाले स० समवर्ण वाले ज० जैसे णे० नारकी त० तैसे भा० कहना ॥ १० ॥ ज० जैसे पु० पृथ्वी काया त० तैसे जा० यावत् च० चतुरेन्द्रिय ॥ ११ ॥ पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच ज० जैसे णे० नारकी णा० नानाप्रकार कि० क्रियामें पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच भं० भगवन् स० सर्व स० समक्रिया वाले गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच ति० तीन प्रकार के स० समदृष्टि मि०

सूत्र तियाणं पंचकिरियाओ कज्जंति, तंजहा - आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया. सेतेणट्ठेणं. पुढविकाइया समाउया समोववण्णगा? जहा णेरइया तहा भाणियव्वा ॥ १० ॥ जहा पुढविकाइया तहा जाव चउरिंदिया ॥ ११ ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया जहा णेरइया, णाणत्तं किरियासु ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं भंते सव्वे समाकि-

भावार्थ क्रिया वाले हैं. ? अहो भगवन् ! वह कैसे ? अहो गौतम ! सब पृथ्वीकायिक जीव मायावी व मिथ्या दृष्टी हैं, उनको अवश्यही आरंभिकी यावत् मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी पांच क्रियायों लगती हैं. इसी से पृथ्वी कायिक जीव समक्रिया वाले हैं. सब पृथ्वी कायिक जीव, सरिखे आयुष्य वाले, व साथ उत्पन्न होने वाले हैं? इसका सब अधिकार नारकी जैसे कहना ॥ १० ॥ जैसे पृथ्वी कायाका अधिकार कहा वैसेही अपूकाय तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, द्वीन्द्रिय, तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का जानना. यहांपर बडा शरीर व

शब्दार्थ वे॰ वेदना म॰ मनुष्य भं॰ भगवन् स॰ सर्व स॰ समक्रिया वाले गो॰ गौतम णो॰ नहीं इ॰ यह अर्थ स॰ समर्थ से॰ वह के॰ कैसे गो॰ गौतम म॰ मनुष्य ति॰ तीन प्रकार के स॰ समदृष्टि मि॰ मिथ्यादृष्टि स॰ समामिथ्यादृष्टि त॰तहां जे॰ जो स॰ समदृष्टि ते॰ वे ति॰ तीन प्रकार के सं॰ संयति अ॰ असंयति सं॰ संयतासंयति जे॰ जो सं॰ संयति ते॰ वे दु॰ दोप्रकार के स॰ सराग संयति वी॰ वीतराग संयति त॰ तहां जे॰ जो वी॰ वीतराग संयति ते॰ वे अ॰ अक्रिया वाले स॰ सराग संयति दु॰ दो-

सूत्र समकिरिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेण भंते ? गोयमा ! मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता तं॰ सम्मादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी, तत्थणं जे ते सम्मादिट्ठी ते तिविहा प॰ तं॰ संजयाय असंजयाय संजया संजयाय । तत्थणंजेते संजया ते दुविहा प॰ तं॰ सराग संजयाय वीयराग संजयाय, तत्थणं जे ते वीयराग संजया, तेणं अकिरिया । तत्थणं जे ते सराग संजया ते दुविहा प॰ तं॰ पमत्त संजयाय,

भावार्थ मनुष्य के तीन भेद कहे हैं सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि समामिथ्यादृष्टि; उस में जो सम्यग्दृष्टि हैं उनके तीन भेद कहे हैं संयति, असंयति व संयतासंयति; उसमें संयति के दो भेद सरागसंयति व वीतराग संयति. उसमें जो वीतराग संयति हैं वे अक्रिय हैं अर्थात् उन को किसी भी सांपरायिक क्रिया नहीं लगती है. जो सरागसंयति हैं उनके दो भेद प्रमत्त संयति व अप्रमत्त संयति: अप्रमत्त संयति सातवे गुण स्थानवर्ती हैं उनको एक मायाप्रत्ययिकी क्रिया लगतीहै और छठे गुण स्थानवर्ती प्रमत्त संयतिको आरंभिकी व

शब्दार्थ मिथ्यादृष्टिको पं०पांच स०समभिथ्यादृष्टि को पं०पांच॥१२॥ म०मनुष्य ज०जैसे णे०नारकी णा० नानाप्रकार म०महाशरीरी आ० कदाचित् आ०आहार करते हैं जे० जो अ० अल्प शरीरी ते० वे अ० थोडे पो० पुद्गल आ० आहार करते हैं अ० वारंवार आ० आहार करते हैं से० शेष ज० जैसे णे० नारकी जा० यावत्

सूत्र याणं चत्तारि,मिच्छदिट्ठीणं पंच सम्ममिच्छादिट्ठीणं पंच॥१२॥मणुस्सा जहा णेरइया,णाणत्तं जे महासरीरा ते आहच्च आहारेंति ४ । जे अप्पसरीरा ते अप्पतराए पोग्गले आहारेंति ४ । अभिक्खणं आहारेंति. सेसं जहा णेरइयाणं जाव वेदणा. मणुस्साणं भंते . सव्वे

भावार्थ ॥१२॥ मनुष्य का अधिकार नारकी जैसे कहना. विशेष इतना कि-क्या सब मनुष्य सारिखे आहार करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य के दो भेद; बडे शरीरवाले व छोटे शरीरवाले. उस में जो बडे शरीर वाले हैं वे बहुत पुद्गलों का आहार करते हैं, बहुत पुद्गल परिणमते हैं, वैसे ही श्वासोश्वास लेते हैं. यहां नरकमें वारंवार आहार करने का कहा है, परंतु देवकुरु उत्तरकुरु के युगलिये तीन दिन में आहार लेते हैं. छोटे शरीर वाले अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं, उस के दो भेद संमूर्च्छिम व बालक वे दोनों वारंवार आहार करते हैं. बाकी का सब अधिकार नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् ! सब मनुष्य सारिखे क्रिया वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारण से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो गौतम !

पदार्थ

मिथ्या दृष्टि उ० उत्पन्न हुवे अ० अल्प वेदना वाले अ० अमायी स० समदृष्टि उ० उत्पन्न हुवे म० बहुत वेदना भा० कहना जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक को ॥ १४ ॥ स० सलेशी णे० नारकी स० सर्व स० समाहारी ओ० औधिक स० सलेशी सु० शुक्लेशी ए० इन ति० तीन में ए० एक सरिखे क० कृ-ष्णलेशी नी० नीललेशी ए० एक सरिखे ण० विशेष वे० वेदना में मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्न

सूत्र

सुरकुमारा णवरं वेदणाए णाणत्तं । मायी मिच्छदिट्ठी उववण्णगाय अप्पवेयणतरा, अमायी सम्मदिट्ठी उववण्णगाय महावेयणतरा भाणियव्वा ॥ जोइस वेमाणियाय ॥ १४ ॥ सलेस्साणं भंते णेरइया सव्वे समाहारगा ओहियाणं, सलेस्साणं

भावार्थ

प्रकारकी है सो बताते हैं. ज्योतिषी वैमानिक में मायी मिथ्यादृष्टि पने उत्पन्न हुवे सो अल्पवेदनावाले हैं क्यों की उन को साता वेदनीय कर्म अल्प रहता है. और अमायी सम्यक्दृष्टि बहुत वेदनावाले हैं क्यों की उनको साता वेदनीय कर्म विशेष रहता है इतना ज्योतिषी व वैमानिक में असुरकुमार से विशेष है शेष सब असुरकुमार जैसे कहना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! लेश्या सहित नारकी क्या सरिखे आहार करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! समुच्चय जीव, सलेशी व शुक्लेशी इन तीन [redacted] एक गमा जानना. कृष्ण व नील लेशीका एक गमा जानना, वेदना में इतना विशेषपना कि मायावी, मिथ्यादृष्टी को बहुत वेदना और अमायी सम्यग्दृष्टी को अल्पवेदना. मनुष्यपद में, क्रिया सूत्र में व औधिक (समुच्चय) दंडक में सराग, वीतराग,

शब्दार्थ प्रकार के प०प्रमत्त अ० अप्रमत्त जे० जो अ० अप्रमत्त संयति ते० उनको ए० एक मा० मायाप्रत्ययिकी क्रिया जे० जो प० प्रमत्त संयति ते० उनको दो० दोक्रिया आ० आरंभिकी मा० मायाप्रत्ययिकी जे० जो सं० संयतासंयति ते० उनको आ० पहिली ति० तीन कि० क्रिया अ० असंयति को, च० चारक्रिया मि० मिथ्यादृष्टि को पं० पांचक्रिया स० सममिथ्यादृष्टि को पं० पांचक्रिया ॥ १३ ॥ वा० वाणव्यंतर जो०ज्योतिषी वे०वैमानिक ज० जैसे अ०असुरकुमार न०विशेष वे०वेदना में णा०नानाप्रकार मा०मायी मि०

सूत्र अपमत्त संजयाय, ॥ तत्थणं जे ते अपमत्तसंजया तेसिणं एगा मायावत्तिया किरिया कज्जइ । तत्थणं जे ते पमत्तसंजया तेसिणं दो किरिया कज्जइ तं० आरंभियाय मायावत्तियाय. तत्थणं जे ते संजयासंजया तेसिणं आदिमाओ तिण्णि किरियाओ कज्जंति । असंजयाणंचत्तारि किरियाओ कज्जंति मिच्छदिट्ठीणं पंच सम्ममिच्छदिट्ठीणं पंच ॥ १३ ॥ वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा अ-

भावार्थ मायाप्रत्ययिकी ऐसी दो क्रियाओं लगती हैं. जो संयतासंयति-श्रावक हैं उन को आरंभिकी माया प्रत्ययिकी व परिग्राहिकी ऐसी तीन क्रियाओं लगती हैं. असंयति को चार क्रियाओं लगती हैं. उपर्युक्त तीन और चौथी अप्रत्याख्यान. मिथ्यादृष्टि व सममिथ्यादृष्टि को पांच क्रियाओं. उपर्युक्त क्रियाओंमें मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी क्रिया पांचवी बढी ॥ १३ ॥ वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक को असुरकुमार जैसे कहना. शरीर का अल्पपना व बहुतपना अपने २ शरीर की अवगाहना के अनुसार जानना. वेदना विविध

दार्थ मिथ्या दृष्टि उ० उत्पन्न हुवे अ० अल्प वेदना वाले अ० अमायी स० समदृष्टि उ० उत्पन्न हुवे म० बहुत वेदना भा० कहना जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक को ॥ १४ ॥ स० सलेशी णे० नारकी स० सर्व स० समाहारी औ० औघिक स० सलेशी सु० शुक्लेशी ए० इन ति० तीन में ए० एक सरिखे क० कृष्णलेशी नी० नीललेशी ए० एक सरिखे ण० विशेष वे० वेदना में मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्न

सूत्र सुरकुमारा णवरं वेदणाए णाणत्तं । मायी मिच्छद्दिट्ठी उववण्णगाय अप्पवेयणतरा, अमायी सम्मद्दिट्ठी उववण्णगाय महावेयणतरा भाणियव्वा ॥ जोइस वेमाणियाय ॥ १४ ॥ सलेस्साणं भंते णेरइया सव्वे समाहारगा ओहियाणं, सलेस्साणं

भावार्थ प्रकारकी है सो बताते हैं. ज्योतिषी वैमानिक में मायी मिथ्यादृष्टि पने उत्पन्न हुवे सो अल्पवेदनावाले हैं क्यों की उन को साता वेदनीय कर्म अल्प रहता है. और अमायी सम्यक्दृष्टि बहुत वेदनावाले हैं क्यों की उनको साता वेदनीय कर्म विशेष रहता है इतना ज्योतिषी व वैमानिक में असुरकुमार से विशेष है शेष सब असुरकुमार जैसे कहना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! लेश्या सहित नारकी क्या सरिखे आहार करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! समुच्चय जीव, सलेशी व शुक्लेशी इन तीन का एक गमा जानना. कृष्ण व नील लेशीका एक गमा जानना, वेदना में इतना विशेषपना कि मायावी, मिथ्यादृष्टी को बहुत वेदना और अमायी सम्यग्दृष्टी को अल्पवेदना. मनुष्यपद में, क्रिया सूत्र में व औधिक (समुच्चय) दंडक में सराग, वीतराग,

शब्दार्थ

हुवे अ० अमायी स० समदृष्टि उ० उत्पन्न हुवे भा० कहना म० मनुष्य कि० क्रिया में स० सरागी वी० वीतरागी अ० अप्रमत्त प० प्रमत्त भा० कहना का० कापुतलेशी ए० ऐसे ण० विशेष णे० नारकी ज० जैसे ओ० औधिक दं० दंडक त० तैसे भा० कहना ते० तेजु लेशी प० पद्मलेशी ज० जिनको अ० है ज० जैसे ओ० औधिक त० तैसे भा० कहना ण० विशेष म० मनुष्य स० सरागी वी० वीतरागी भा० कहना दु० दुःख आ० आयुष्य उ० उदीरणा आ० आहार क० कर्म व० वर्ण ले० लेश्या स०

सूत्र

सुक्कलेस्साणं एएसिणं तिण्हं एक्कोगमो कण्हलेसणीललेस्साणंपि एगोगमो ॥ णवरं वेदणाए मायीमिच्छदिट्ठीउववण्णगाय, अमायीसम्मदिट्ठी उववण्णगाय भाणियव्वा मणुस्सा किरियासु सराग वीतराग अपमत्ता पमत्ताण भाणियव्वा ॥ काउलेस्साणवि एवमेवगमो णवरं णेरइए जहा ओहिए दंडए तहा भाणियव्वा, तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा जस्स अत्थि जहा ओहिओ तहा भाणियव्वा णवरं मणुस्सा सराग वीतरागा ण भा-

भावार्थ

अपमत्त व प्रमत्त कहा है, परंतु कृष्ण नीललेश्यावाले मनुष्य में यह कहना नहीं; क्योंकि दोनों लेश्यावाले को संयम का अभाव होता है. कापुत लेश्या में वैसा जानना परंतु नारकी को औधिक दंडक जैसे कहना. तेजो लेश्या व पद्मलेश्या जिन को हैं; उन को औधिक दंडक जैसे कहना. मनुष्य सराग वीतराग कहे हुवे हैं वे यहांपर कहना नहीं; क्यों की तीनों लेश्यावालों को वीतरागपने का अभाव होता है. अब उद्देश के प्रारंभ से जो अधिकार आयासो गाथासे बतातेहैं. एक वचन व बहुवचन आश्रित क्या दुःख व आयुष्य

शब्दार्थ समवेदना स० समक्रियां स० समायुष्य वो० जानना ॥ १५ ॥ क० कितनी भं० भगवन् ले० लेश्या प० प्ररूपी गो० गौतम छ० छलेश्या प० प्ररूपी ल० लेश्या का बी० दूसरा उ० उद्देशा भा० कहना जा०

सूत्र णियव्वा गाथा ॥ दुक्खाउएउदिण्णे आहारे कम्म वण्ण लेस्साय समवेयण समकिरिया. समाउया चेव बोधव्वा ॥ १ ॥ १६ ॥ कइणं भंते लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तंजहा लेस्साणं बीओउ-

भावार्थ उदय में आया हुवा वेदे ? क्या सरिखे आहार, कर्म वर्ण, लेश्या, वेदना, क्रिया व आयुष्यवाले हैं ? वगैरह सब पूर्वोक्त जैसे कहना. ॥१५॥ नारकी सलेशी हैं ऐसा पहिले कहा इसलिये आगे लेश्याका स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! लेश्या के कितने भेद ? अहो गौतम ! लेश्या के छ भेद कहे हैं इन छही लेश्या का वर्णन पन्नवणा सूत्र में लेश्यापद का दूसरा उद्देशा में जैसा कहा है वैसा जानना: अहो भगवन् ! इन लेश्यामेंसे कोनसी लेश्यावाला विशेष ऋद्धि का धारक व कौनसी लेश्यावाला अल्पऋद्धिका धारक होता है ? अहो गौतम ! कृष्ण लेश्या से नील लेश्यावाला अधिक ऋद्धिका धारक होता है, नील लेश्या से कापोत लेश्यावाला अधिक ऋद्धिका धारक होता है, कापोत से तेजो लेश्यावाला अधिक ऋद्धि का धारक होता है, तेजोसे पद्मलेश्यावाला अधिक ऋद्धिका धारक होता है, और पद्म से शुक्ल लेश्यावाला

शब्दार्थ हुवे अ॰ अमायी स॰ समदृष्टि उ॰ उत्पन्न हुवे भा॰ कहना म॰ मनुष्य कि॰ क्रिया में स॰ सरागी वी॰ वीतरागी अ॰ अप्रमत्त प॰ प्रमत्त भा॰ कहना का॰ कापुतलेशी ए॰ ऐसे ण॰ विशेष णे॰ नारकी ज॰ जैसे ओ॰ औधिक दं॰ दंडक त॰ तैसे भा॰ कहना ते॰ तेजु लेशी प॰ पद्मलेशी ज॰ जिनको अ॰ है ज॰ जैसे ओ॰ औधिक त॰ तैसे भा॰ कहना ण॰ विशेष म॰ मनुष्य स॰ सरागी वी॰ वीतरागी भा॰ कहना दु॰ दुःख आ॰ आयुष्य उ॰ उदीरणा आ॰ आहार क॰ कर्म व॰ वर्ण ले॰ लेश्या स॰

सूत्र सुक्कलेस्साणं एएसिणं तिण्हं एक्कोगमो कण्हलेसणीललेस्साणंपि एगोगमो ॥ णवरं वेदणाए मायीमिच्छद्दिट्ठीउववण्णगाय, अमायीसम्मद्दिट्ठी उववण्णगाय भाणियव्वा मणुस्सा किरियासु सराग वीतराग अपमत्ता पमत्ताण भाणियव्वा ॥ काउलेस्साणवि एवमेवगमो णवरं णेरइए जहा ओहिए दंडए तहा भाणियव्वा, तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा जस्स अत्थि जहा ओहिओ तहा भाणियव्वा णवरं मणुस्सा सराग वीतरागा ण भा-

भावार्थ अप्रमत्त व प्रमत्त कहा है, परंतु कृष्ण नीललेश्यावाले मनुष्य में यह कहना नहीं; क्योंकि दोनों लेश्यावाले को संयम का अभाव होता है. कापुत लेश्या में वैसा जानना परंतु नारकी का औधिक दंडक जैसे कहना. तेजो लेश्या व पद्मलेश्या जिन को हैं; उन को औधिक दंडक जैसे कहना. मनुष्य सराग वीतराग कहे हुवे हैं वे यहांपर कहना नहीं; क्यों की तीनों लेश्यावालों को वीतरागपने का अभाव होता है. अब उद्देश के प्रारंभ से जो अधिकार आयासो गाथासे बतातेहैं. एक वचन व बहुवचन आश्रित क्या दुःख व आयुष्य

शब्दार्थ ति० तीन प्रकार का सु० शून्य काल अ० अशून्य काल मि० मिश्रकाल ति० तिर्यंच का सं० संसार सं० संचिठण काल पु० पृच्छा गो० गौतम दु० दोप्रकार का अ० अशून्य काल मि० मिश्रकाल म० मनुष्य

सूत्र संसार संचिट्ठण काले, देव संसार संचिट्ठण काले॥ णेरइय संसार संचिट्ठण कालेणं भंते कइविहे प०? गोयमा! तिविहे प०तं० सुण्णकाले, असुण्णकाले, मिस्सकाले। तिरिक्ख

भावार्थ संचिठन काल ३ मनुष्य के भव में रहे सो मनुष्य संसार संचिठन काल ४ देवता के भव में रहे सो देव संसार संचिठन काल. अहो भगवन् ! नारकी संसार संचिठन काल के कितने भेद ? अहो गौतम ! नारक संसार संचिठन काल के तीन भेद कहे हैं १. शून्यकाल २ अशून्यकाल और ३ मिश्रकाल * अहो भगवन् ! तिर्यंच संसार संचिठन कालके कितने भेद ? अहो गौतम ! दो भेद. अशून्यकाल

---

*वर्तमान कालमें सातों नरकमें जो नारकी विद्यमानहैं उनमेंसे कोई उद्वर्तेनहीं, और उसमें कोई नविन उत्पन्न होवे नहीं, जितने हैं उतने ही रहे सो नरक गति आश्रित अशून्यकाल. जैसे कहा है आइड समइयाणं नेरइयाणं न जाव एक्को वि उवट्टइ अण्णोवा उववज्जइ सो असुण्णोउ ॥१॥ उन सातों नरक के नारकी में से जो उद्वर्त वाले होवे उस में एक शेष रहे सो मिश्रकाल और सब उद्वर्ते सो शून्यकाल जैसे उव्वट्टे एक्कंमिवि तामीसो धरइ जाव एक्कोवि णिल्लेवएहिं सव्वेहिं वट्टमाणेहिं सुण्णोउ ॥ १ ॥ यहांपर मिश्र नारक संसारावस्थान काल सूत्र वर्तमान भव आश्रित नहीं ग्रहण किया है परंतु वर्तमान काल के नारकी अन्य गति में

शब्दार्थ यावत् इ० ऋद्धि ॥ १५ ॥ जी० जीव का ती० अतीत काल आ० कहा हुवा क० कितना सं० संसार सं० संचिठण काल प० प्ररूपा गो० गौतम च० चार प्रकार का सं० संसार संचिठन काल णे० नारकी सं० संसार संचिठन काल ति० तिर्यंच संसार सं० संचिठन काल म० मनुष्य संसार सं० संचिठण काल दे० देवसंसार सं० संचिठण काल णे० नारकी सं० संसार संचिठण काल क० कितना प्रकार का गो० गौतम

सूत्र देसओ भाणेयव्वो जाव इड्डी ॥ १६ ॥ जीवस्सणं भंते तीयद्धाए आदिट्ठस्स कइविहे संसार संचिट्ठण काले पण्णत्ते ? गोयमा! चउव्विहे संसार संचिट्ठण काले पण्णत्ते, तंजहा णेरइए संसार संचिट्ठण काले, तिरिक्ख जोणिय संसार संचिट्ठण काले, मणुस्स

भावार्थ अधिक ऋद्धि का धारक होता है ॥ १६ ॥ सलेशी जीव संसार में रहते हैं इसलिये संसार में रहनेका प्रश्न करते हैं. ÷ अहो भगवन् ! नारकी आदि जीवों को अतीत काल में कितने प्रकार के संसार संचिठनकाल कहे हैं ? अहो गौतम ! उपाधिभेद से एक भव से भवान्तर[1] में रहने की क्रिया का काल के चार भेद कहे हैं. १. नारकी के भव में जीव रहे सो नरक संसार संचिठनकाल २ तिर्यंच के भव में रहे सो तिर्यंच संसार

÷ कितनेक की ऐसी मान्यता होती है कि मनुष्य मरकर मनुष्य व पशु मरकर पशु ही होता है इसका निर्णय यहांपर किया गया है.

१ एक भवसे दूसरे भव में रहने की क्रिया का काल.

शब्दार्थ ति० तीन प्रकार का सु० शून्य काल अ० अशून्य काल मि० मिश्रकाल ति० तिर्यंच का सं० संसार सं० संचिठण काल पु० पृच्छा गो० गौतम दु० दोप्रकार का अ० अशून्य काल मि० मिश्रकाल म० मनुष्य

सूत्र संसार संचिट्ठण काले, देव संसार संचिट्ठण काले॥ णेरइय संसार संचिट्ठण कालेणं भंते कइविहे प०? गोयमा! तिविहे प०तं० सुण्णकाले, असुण्णकाले, मिस्सकाले। तिरिक्ख

भावार्थ संचिठन काल ३ मनुष्य के भव में रहे सो मनुष्य संसार संचिठन काल ४ देवता के भव में रहे सो देव संसार संचिठन काल. अहो भगवन् ! नारकी संसार संचिठन काल के कितने भेद ? अहो गौतम ! नारक संसार संचिठन काल के तीन भेद कहे हैं १ शून्यकाल २ अशून्यकाल और ३ मिश्रकाल * अहो भगवन् ! तिर्यंच संसार संचिठन कालके कितने भेद ? अहो गौतम ! दो भेद. अशून्यकाल

---

* वर्तमान कालमें सातों नरकमें जो नारकी विद्यमानहैं उनमेंसे कोई उद्वर्तेनहीं, और उसमें कोई नविन उत्पन्न होवे नहीं, जितने हैं उतने ही रहे सो नरक गति आश्रित अशून्यकाल. जैसे कहा है आइठ समइयाणं नेरइयाणं न जाव एक्को वि उवट्टइ अण्णोवा उववज्जइ सो असुण्णोउ ॥१॥ उन सातों नरक के नारकी में से जो उद्वर्त वाले होवे उस में एक शेप रहे सो मिश्रकाल और सब उद्वर्ते सो शून्यकाल जैसे उव्वट्टे एक्कंमिवि तामीसो धरइ जाव एक्कोवि णिलेवएहिं सव्वेहिं वट्टमाणेहिं सुण्णोउ ॥ १ ॥ यहांपर मिश्र नारक संसारावस्थान काल सूत्र वर्तमान भव आश्रित नहीं ग्रहण किया है परंतु वर्तमान काल के नारकी अन्य गति में

शब्दार्थ द्रे० देवता को ज० जैसे णे० नारकी ए० यह भं० भगवन् णे० नारकी का सं० संसार संचिठण काल सु० शून्य अ० अशून्य मि० मिश्र क० कौन क० किससे अ० अल्प व० वहुत तु०तुल्य वि० विशेपाधिक गो० गौतम स० सब से थोडा अ० अशून्य काल मी० मिश्रकाल अ० अनंत गुणा सु० शून्य काल अ० अनंतगुणा ति० तिर्यंच का स० सर्व से थोडा अ० अशून्य काल मी० मिश्रकाल अनंतगुणा म० मनुष्य

सूत्र जोणिय संसार संचिट्ठण काल पुच्छा ? गोयमा ! दुविहे प० तं० असुण्णकालेय, मिस्सकालेय. मणुस्साणय देवाणय जहा णेरइयाणं । एयस्सणं भंते णेरइय संसार संचिट्ठण कालस्स सुण्णकालस्स, असुण्णकालस्स मीसकालस्स, कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा, बहुएवा, तुल्लेवा, विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा असुण्णकाले, मीसकाले अणंतगुणे,

भावार्थ व मिश्रकाल. मनुष्य व देवता में तीनों काल जानना. अहो भगवन् ! इस नरक संसार संचिठन काल के शून्य, अशून्य व मिश्रकाल में से कोन किससे अल्प, वहुत तुल्य व विशेपाधिक है ! अहो गौतम सब से

जाकर पुनः नरक गति में उत्पन्न होवे उन जीवों आश्रित लिया गया है. यदि उसी नरक भव आश्रित करा जावे तो अल्प वहुत्व सूत्र में अशून्य कालको अपेक्षा से मिश्र काल को अनंत गुना कहा है वह नहीं हो सकता है जैसे एयं पुण ते जीवे पडुच्च सुत्तं न तब्भवं चेव। जइ होज्जंत भवंतो अणंतकालो न संभवइ॥ ॥ १ ॥

शब्दार्थ दे॰ देव ज॰ जैसे नारकी भं॰ भगवन् णे॰ नारकी का सं॰ संसार संचिठण काल जा॰ यावत् दे॰ देव संसार संचिठण काल का जा॰ यावत् वि॰ विशेषाधिक गो॰ गौतम स॰ सर्व से थोडा म॰ मनुष्य संसार संचिठण काल णे॰ नारकी संसार संचिठण काल अ॰ असंख्यातगुणा दे॰ देव संसार संचिठण काल अ॰ असंख्यात गुणा ति॰ तिर्यंच संसार संचिठण काल अ॰ अनंतगुणा ॥ १७ ॥ जी॰ जीव भं॰

सूत्र सुण्णकाले अणंतगुणे, ॥ तिरिक्ख जोणियाणं सव्वत्थोवे असुण्णकाले, मीसकाले अणंतगुणे, ॥ मणुस्साणय, देवाणय जहा णेरइयाणं एयस्सणं भंते णेरइय संसार संचिट्ठण कालस्स जाव देव संसार संचिट्ठण कालस्स जाव विसेसाहिएवा गोयमा ? सव्वत्थोवे मणुस्स संसार संचिट्ठण काले, णेरइय संसार संचिट्ठण काले असंखेज्जगुणे, देव

भावार्थ थोडा अशून्यकाल है, क्योंकि उत्पाद व उद्वर्तना काल का विरह बारह मुहूर्त का है, उस से मीश्रकाल अनंत गुना, और उस से शून्यकाल अनंत गुना कहा है. तिर्यंच में सब मे थोडा अशून्यकाल उस से मीश्रकाल अनंत गुना. मनुष्य व देवता का नारकी जैसे कहना. अहो भगवन् ! चारों संसारसंचिठन कालमें से कौन किस से अल्प, बहुत, तुल्य व विशेषाधिक है अहो ? गौतम ! सब से थोडा मनुष्य संसार संचिठन काल, उस से नारकी संसार संचिठन काल असंख्यात गुना, उस से देव संसार संचिठन काल असंख्यात

शब्दार्थ भगवन् अं० अंतक्रिया क० करे गो० गौतम अ० कितनेक क० करे अ० कितनेक णो० नहीं करे अ० अंतक्रिया पद णे० जानना ॥ १८ ॥ अ० अहो भं० भगवन् अ० असंयति भ० भविद्रव्य देव अ० अविराधिक सं० संयति वि० विराधिक संयति अ० अविराधिक संयतासंयति वि० विराधिक सं० संयता संयति अ० असंज्ञी ता० तापस कं० कंदर्पिक च० चरक परिव्राजक कि० अशुभ परिणाम वाले ति०

सूत्र संसार संचिट्ठण काले असंखेज्जगुणे, तिरिक्ख जोणिय संसार संचिट्ठण काले अणंतगुणे ॥ १७ ॥ जीवेणं भंते अंत किरियं करेज्जा? गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगइए णो करेज्जा. अंतकिरिया पदं णेतव्वं ॥ १८ ॥ अहभंते असंजय भविय दव्व देवाणं, अविराहिय संजमाणं, विराहिय संजमाणं, अविराहिय संजमासंजमाणं, विराहिय संजमासंजमाणं, असण्णीणं, तावसाणं, कंदप्पियाणं, चरगपरिव्वायगाणं,

भावार्थ गुना उस से तिर्यंच संसार संचिठन काल अनंत गुना ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! जीव अंतक्रिया करे? अहो गौतम ! कितनेक जीव अंतक्रिया करे और कितनेक अंतक्रिया करे नहीं इस का विशेष अधिकार पन्नवणा के तीस वे अंतक्रिया पद में जानना. ॥ १८ ॥ अंतक्रियाके अभावसे कोई जीव देवलोक में उत्पन्न होवे इसलिये उस का विशेष स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन् ! चारित्र परिणाम से शून्य मिथ्यादृष्टि,

शब्दार्थ तिर्यंच आ० आजीविक आ० आभियोगिक स० स्वलिंगी दं० दर्शन से भ्रष्ट ए० इनकी दे० देवलोक में उ० उपजते क० कीसका क० कहां उ० उपपात प० प्ररूपा गो० गौतम अ० असंयाति भविद्रव्यदेव ज० जघन्य भ० भवनपति में उ० उपरकी गे० ग्रैवेयक में अ० अविराधिक सं० संयति ज० जघन्य सो० सौधर्म देवलोक उ० उत्कृष्ट स० सर्वार्थसिद्ध विमान में वि० विराधिक संयति ज० जघन्य भवनपति में उ० उत्कृष्ट सो० सौधर्म देवलोक अ० अविराधिक सं० संयतासंयति ज० जघन्य सो० सौधर्म देवलोक उ० उत्कृष्ट अ० अच्युत

सूत्र किब्विसियाणं, तिरिच्छियाणं, आजीवियाणं, आभिओगियाणं, सलिंगीदंसणवावण्णगाणं, एएसिणं देवलोएसु उववज्जमाणाणं कस्स कहिं उववाए प० ? गोयमा ! असंजय भविय दव्व देवाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं उवरिम गेवेज्जएसु, अविराहिय संजमाणं जहण्णेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे विमाणं, विराहिय

भावार्थ मात्र क्रिया के करने वाले, प्रवर्ज्या काल से निरतिचार पूर्वक पूर्ण चारित्र पालने वाले, अविराधिक संयमी

१. इसका कितनेक भावि में होनेवाला देव सो भावद्रव्य देव, चरणपरिणाम शून्य सो असंयति, असंयतिभवि द्रव्य देव अर्थात् असंयति सम्यक्दृष्टी ऐसा अर्थ करते हैं परंतु यह अर्थ यहांपर योग्य नहीं है क्योंकि इन की उत्कृष्ट उपरकी ग्रैवेयक में उत्पत्ति बतलाइ है. और सम्यग् दृष्टि देश विरति की तो मात्र अच्युत देव लोक तकही ली है इसलिये यहां मिथ्यादृष्टी असंयति भव्य अभव्य जीव ग्रहण किये हैं.

शब्दार्थ देवलोक वि० विराधिक सं० संयतासंयति ज० जघन्य भवनपति उ० उत्कृष्ट जो० ज्योतिषी अ० असंज्ञी ज० जघन्य भ० भवनपति उ० उत्कृष्ट वा० वाणव्यंतर अ० बाकी के स० सब ज० जघन्य भ० भवनपति में उत्कृष्ट ता० तापस जो० ज्योतिषी में कं० कंदर्पिक सो० सौधर्म देवलोक में च० चरक परिव्राजिक बं० ब्रह्मदेवलोक में कि० क्लिष्टपरिणामी लं० लंतक देवलोक में ति० तिर्यंच स० सहस्रार देवलोक में आ० आजी

मूल संजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं सोहम्मेकप्पे; अविराहिय संजमासंजमाणं जहण्णेणं सोहम्मेकप्पे, उक्कोसेणं अच्चुएकप्पे, विराहिय संजमासंजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं जोइसिएसु, असण्णीणं जहण्णेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं वाणमंतरेसु अवसेसा सव्वे जहण्णेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं वोच्छामि—तावसाणं जोइसिएसु, कंदप्पियाणं सोहम्मे कप्पे, चरग परिव्वायगाणं बंभलोए कप्पे, किव्विसि-

भावार्थ विराधिक संयमी, अविराधिक संयमासंयमी विराधिक संयमासंयमी, असंज्ञी, तापस, कंदर्प कथा करने वाले, त्रिदंडिये, कपिल मुनि के संतानिये, ज्ञानादिक के अवर्णवाद बोलने वाले, तिर्यंच, आजीविक धर्म वाले व्यवहार में चारित्रवंत होते हुवे मंत्र यंत्रादिक के करने वाले आभियोगिक, और साधु वेष होने पर सम्यक्त्व से भ्रष्ट निन्हव देवलोक में उत्पन्न होते किस २ स्थान पर उत्पन्न होवे ? अहो गौतम असंयति भवि द्रव्य देव जघन्य भवनपति में उत्कृष्ट उपर की ग्रैवयक में. अविराधिक साधु जघन्य सौधर्म देवलोक में

शब्दार्थ

विक अ० अच्युत देवलोक आ० आभियोगिक अ० अच्युत देवलोक में स० सलिंगी दर्शन भ्रष्ट उ० उपर की गे० ग्रैवेयक में ॥ १९ ॥ क० कितने प्रकार का भं० भगवन् अ० असंज्ञी आ० आयुष्य गो० गौतम च० चार प्रकार का अ० असंज्ञी आयुष्य णे० नारकी अ० असंज्ञी आयुष्य ति० तिर्यंच अ० असंज्ञी आयुष्य म० मनुष्य अ० असंज्ञी आयुष्य दे० देव असंज्ञी आयुष्य अ० असंज्ञी भं० भगवन्

सूत्र

याणं लंतगे कप्पे, तिरिच्छियाणं सहस्सारे कप्पे, आजीवियाणं अच्चुएकप्पे, आभिओगिया अच्चुए कप्पे, सलिंगीदंसणवावण्णगा उवरिमगेविज्जएसु ॥ १९ ॥ कइविहे णं भंते असण्णियाउए, पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे असण्णियाउए प० तं० णेरइय असण्णियाउए तिरिक्खजोणिय असण्णियाउए, मणुस्स असण्णियाउए, देव असण्णियाउए ॥ असण्णीणं भंते ! जीवे किं णेरइयाउयं पकरेइ, तिरिक्ख

भावार्थ

उत्कृष्ट सर्वार्थसिद्ध विमान में, विराधिक साधु जघन्य भवनपति में उत्कृष्ट सौधर्म देवलोक में अविराधिक श्रावक जघन्य सौधर्म देवलोक में, उत्कृष्ट अच्युत देवलोक में, विराधिक श्रावक जघन्य भवनपति, उत्कृष्ट ज्योतिषि में, असंज्ञी जघन्य भवनपति, उत्कृष्ट वाणव्यंतरमें शेष सब जघन्य भवनपति में उत्पन्न होवे और उत्कृष्ट तापस ज्योतिषीमें, कंदर्पकी कथा करनेवाले सौधर्म देवलोकमें, चरक परिव्राजिक ब्रह्मदेवलोक में ज्ञानादि के अवर्णवाद बोलनेवाले लांतक देवलोकमें तिर्यंच सहस्रार देवलोकमें आजीविक मतानुसारी अच्युत देवलोक में आभियोगिक अच्युत देवलोकमें और दर्शन से भ्रष्ट सलिंगी उपर की ग्रैवेयकमें उत्पन्न होते हैं. ॥ १९ ॥ अब असंज्ञी का आयुष्य कहते हैं. अहो भगवन् ! असंज्ञी परभव योग्य कितने प्रकार का आयुष्य

शब्दार्थ जी जीव भं० भगवान् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म क० करे हं० हां क० करे से० वह भं० भगवन् कि० क्या दे० देशने दे० देश क० करे दे० देश से स० सर्व क० करे स० सर्व से दे० देश क० करे स० सर्व से स० सर्व क० करे गो० गौतम णो० नहीं दे० देशने दे० देश क० करे णो० नहीं दे० देशसे स० सर्व क० करे णो० नहीं स०

सूत्र जीवाणं भंते! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ? हंता कडे. से भंते! किं देसेणं देसे कडे देसेणं सव्वे कडे सव्वेणं देसे कडे सव्वेण सव्वे कडे ? गोयमा! णो देसेणंदेसेकडे णो

भावार्थ द्वितीय उद्देशे में आयुष्य का स्वरूप कहा. वह मोहनीय कर्म से होवे इसलिये आगे मोहनीय कर्म का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन्! क्या जीव कांक्षा मोहनीय कर्म (मिथ्यात्व मोहनीय कर्म) करे ? हां गौतम! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म करे. अहो भगवन्! जैसे १ हस्तादि देश से किसी वस्तु का देश आच्छादे, २ हस्तादि देशसे समस्त वस्तु आच्छादे, ३ समस्त शरीर से वस्तुका देश आच्छादे, ४ समस्त शरीर से समस्त वस्तु का आच्छादन करे; वैसे ही क्या जीव का देश कांक्षा मोहनीय का एक देश करे, जीव का एक देश सब कांक्षा मोहनीय कर्म करे, संपूर्ण जीव कांक्षा मोहनीय का एक देश करे, अथवा संपूर्ण जीव संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म करे? अहो गौतम! जीव का एक देश कांक्षा मोहनीय का एक देश नहीं करे, जीव का एक देश संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म नहीं करे, संपूर्ण जीव कांक्षा मोहनीय का एक देश नहीं करे, परंतु संपूर्ण जीव

शब्दार्थ सर्व से दे० देश क० करे स० सर्व से स० सर्व क० करे ॥ १ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् कं० कांक्षा मोहनीय कर्म क० करे हं० हां क० करे जा० यावत् स० सर्व से स० सर्व क० करे ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक दं० दंडक भा० कहना ॥ २ ॥ जी० जीवने भं० भगवन् क० कांक्षा मोहनीय कर्म क० किया हं० हां क० किया तं० उन को भं० भगवन् किं० क्या दे० देश से दे० देश क० किया ए० यह अ०

सूत्र देसेणं सव्वेकडे, णो सव्वेणं देसेकडे, सव्वेणं सव्वे कडे॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते ! कंखा मोहणिज्जे कम्मेकडे? हंताकडे, जाव सव्वेणं सव्वेकडे । एवं जाव वेमाणियाणं दंडओ भाणियव्वो॥ २ ॥ जीवाणं भंते ! कंखा मोहणिज्जं कम्मं करिंसु? हंताकरिंसु । तं भंते ! किं देसेणं देसं करिंसु, ?॥ एएणं अभिलावेणं दंडओ जाव वेमाणियाणं । एवंकरंति, एत्थवि दंडओ जाव वेमाणियाणं । एवं करिस्संति, एत्थवि दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥ एवं चिए, चिणिंसु, चिणंति, चिणिस्संति । उवचिए, उवचिणिंसु, उवचिणंति, उवचिणिस्संति

भावार्थ संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म करे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी कांक्षा (मिथ्यात्व) मोहनीय कर्म करे ? हां गौतम! नारकी कांक्षा मोहनीय कर्मकरे; यावत् सर्व से सर्व कांक्षा मोहनीय कर्म करे वैसेही चौवीस दंडक का जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जीव ने क्या अतीत काल में कांक्षा मोहनीय कर्म किया ? हां गौतम किया. देश से देश यावत् सर्व से सर्व किया वगैरह वैमानिक तक जानना. और वैसे ही वर्तमान काल

शब्दार्थ

शी जीव भं० भगवन् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म क० करे हं० हां क० करे से० वह भं० भगवन् कि०क्या दे०देशने दे०देश क०करे दे०दश मे स०सर्व क०करे स०सर्व से दे०देश क०करे स० सर्व से स० सर्व क०करे गो०गौतम णो०नहीं दे०देशने दे०देश क०करे णो०नहीं दे०देशसे स०सर्व क०करे णो०नहीं स०

सूत्र

जीवाणं भंते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ? हंता कडे. से भंते ! किं देसेणं देसे कडे देसेणं सव्वे कडे सव्वेणं देसे कडे सव्वेण सव्वे कडे ? गोयमा! णो देसेणंदेसेकडे णो

भावार्थ

द्वितीय उद्देशे में आयुष्य का स्वरूप कहा. वह मोहनीय कर्म से होवे इसलिये आगे मोहनीय कर्म का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! क्या जीव कांक्षा मोहनीय कर्म (मिथ्यात्व मोहनीय कर्म) करे ? हां गौतम! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म करे. अहो भगवन् ! जैसे१ हस्तादि देश से किसी वस्तुका देश आच्छादे,२ हस्तादि देशसे समस्त वस्तु आच्छादे,३ समस्त शरीर से वस्तुका देश आच्छादे,४ समस्त शरीर से समस्त वस्तु का आच्छादन करे; वैसे ही क्या जीव का देश कांक्षा मोहनीय का एक देश करे, जीव का एक देश सब कांक्षा मोहनीय कर्म करे. संपूर्ण जीव कांक्षा मोहनीय का एक देश करे, अथवा संपूर्ण जीव संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म करे? अहो गौतम! जीव का एक देश कांक्षा मोहनीय का एक देश नहीं करे, जीव का एक देश संपूर्ण कांक्षा मोहनीय कर्म नहीं करे, संपूर्ण जीव कांक्षा मोहनीय का एक देश नहीं करे, परंतु संपूर्ण जीव

पदार्थ — हनीय कर्म वे० वेदते हैं हं० हां वे० वेदते हैं क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदते हैं गो० गौतम त० उस २ का० कारनसे सं० शंकित कं० कांक्षा सहित वि० फल में संदेह सहित भे० भेदको प्राप्त क० संक्लिष्ट परिणामी जी०, जीव कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे ॥ ४ ॥ तं० वहही स० सत्य णी० शंकारहित जं० जो जि० जिनने प० प्ररूपा हं० हां गो० गौतम त० वहही स० सत्य णी० शंकारहित जं० जो जि० जिनने प० प्ररूपा ॥५॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन् ए० ऐसा

सूत्र — वेदेंति। कहणं भंते ! जीवा कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ? गोयमा ! तेहिं तेहिं कारणेहिं संकिया, कंखिया, वितिगिच्छिया, भेदसमावण्णगा, कलुससमावण्णगा, एवं खलु जीवा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ॥ ४ ॥ सेणूणं भंते ! तमेवसच्चं, णीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं ? हंता गोयमा ! तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं

भावार्थ — पदार्थ में देश से या सर्व से शंका उत्पन्न होवे, अन्य दर्शन ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न होवे, कृत कार्य के फल में संदेह उत्पन्न होवे, द्वेषीभाव उत्पन्न होवे, अथवा मतिभ्रम होवे, इस तरह से जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जो जिन भगवान्ने कहा है वह क्या निःशंक सत्य है ? हां गौतम ! जो जिन भगवान् ने कहा है वह ही निःशंक सत्य है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! इस तरह मन में धारता हुवा, ऐसे करता हुवा, ऐसे रहता हुवा ऐसे ही प्राणातिपातादिक से आत्मा को संवरता हुवा

शब्दार्थ अभिलाप से दं० दंडक जा० यावत् वे० वैमानिक को ए० ऐसे क० करता है ए० इस का दं० दंडक जा० यावत् वे० वैमानिक ए० ऐसे क० करेंगे ए० यह दं० दंडक जा० यावत् वे० वैमानिक ए० ऐसे क० किरे चि० इकठे किरे उ० विशेष इकठे किरे उ० उदीरे वे० वेदे नि० निर्जरे आ० आदिके ति० तीनके च० चारभेद ति० तीनभेद प० पीछेके ति० तीन के ॥३॥ जी० जीव भं० भगवन् कं० कांक्षा मो-

सूत्र उदीरेंसु, उदीरेंति, उदीरिस्संति, वेदेंसु, वेदेंति, वेदिस्संति। णिज्जरेंसु, णिज्जरेंति, णिज्जरिस्संति गाहा॥ कडे चिए य उवचिए, उदीरिया वेदियाय णिज्जिण्णा॥ आदितिए चउभेया, तियभेया पच्छिमातिण्णि ॥ १ ॥ ३ ॥ जीवाणं भंते ! कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ? हंता-

भावार्थ आश्रित जीव कांक्षा मोहनीय कर्म करता है, और भविष्यकाल आश्रित जीव कांक्षा मोहनीय कर्म करेगा, वगैरह चौवीस दंडक में जानना. ऐसे ही चिय, उपचिय, का सामान्य, भूत भविष्य व वर्तमान काल आश्रित जानना. और उदीरणा, वेद व निर्जरा इन तीन बोल को भूत, भविष्य व वर्तमान काल आश्रित चौवीस दंडक पर उतारना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ? हां गौतम ! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है. अहो भगवन् ! किस तरह से जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ? अहो गौतम ! मिथ्यात्व की संगति से या परदर्शन के वचन श्रवण से श्री वीतराग प्ररूपित

शब्दार्थ परिणमे ण० नास्तित्व ण० नास्तिरूप प० परिणमे हं० हां गो० गौतम जा० यावत् प० परिणमे जं० जो भं० भगवन् अ० अस्तित्व अ० अस्तिरूप पने प० परिणमे न० नास्तित्व न० नास्तिरूप पने प० परिणमे तं० उस को० किं क्या प० प्रयोग से वी० स्वभाव से गो० गौतम प० प्रयोगसे वी० स्वभा-वसे ॥ ७ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० अस्तित्व अ० अस्तिरूप पने ग० प्रकाशने योग्य ज० जैसे प०

सूत्र नत्थित्ते परिणमइ तं किं पओगसा वीससा? गोयमा ! पओगसावि तं वीससावि तं।जहाते भंते! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, तहाते णत्थित्तं णत्थित्ते परिणमइ, जहाते नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ,तहाते अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ? हंता गोयमा !जहामे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ तहामे नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ. जहामे नत्थित्तं, नत्थित्ते परिणमइ तहामे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ ॥ ७ ॥ सेणूणं भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं जहा

भावार्थ वैसे ही क्या आपके मत में नास्तिपना नास्ति पने परिणमता है ? और जैसे नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है वैसे ही क्या अस्तिपना अस्तिपने परिणमता है ? हां गौतम ! जैसे हमारे मत में अस्तित्व अस्तिपने परिणमता है वैसेही नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है और जैसे नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है ! वैसेही अस्तित्व अस्तिपने परिणमता है. ॥७॥ अहो भगवन् ! अस्तित्व अस्तिपने गमनीय

शब्दार्थ प॰मनमें ध॰ धारता प॰ करता चि॰ रहता सं॰ संवरता आ॰ आज्ञा आ॰आराधक भ॰ होवे हं॰हां गो॰ गौतम ए॰ऐसा म॰मनमें ध॰ धारता जा यावत् भ॰होवे. ॥५॥ से॰ वह भं॰भगवन् अ॰ अस्तित्व पने प॰

सूत्र ॥ ५ ॥ सेणूणं भंते ! एवं मणे धारेमाणे एवं पकरेमाणे, एवं चिट्ठेमाणे, एवं संवरे-माणे, आणाए आराहए भवइ ? हंता गोयमा ! एवं मणे धारेमाणे जाव भवइ ॥ ६ ॥ सेणूणं भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, णत्थित्तं णत्थित्ते परिणमइ ? हंता गोयमा ! जाव परिणमइ ॥ जंतंभंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्तं

भावार्थ क्या आज्ञा का आराधक होता है ? हां गौतम ! ऐसा करने वाला आज्ञा का आराधक होवे ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! अस्तित्व अस्तिरूपपने (वस्तु का पर्यायान्तर होने पर जो मूल गुण है वह होना) परिणमे ? जैसे अंगुली ऋजुता, वक्रता, धारन करे तो भी अंगुलीपने परिणमे और नास्तित्व सो नास्ति-रूपपने परिणमे ? हां गौतम ! जो अस्ति रूप वस्तु है वह अस्तिपने परिणमती है, जैसे अंगुली को अंगुली ही कही जाति है और अछती वस्तु नास्तित्व पने परिणमति है जैसे जो पट नहीं है वह कदापि पट नहीं है. अहो भगवन् ! क्या वह प्रयोग सो जीव का व्यापारसे या स्वभाव से परिणमे ? हां गौतम ! प्रयोग से भी परिणमें जैसे कुंभकार मृत्तिका का घट बनावे और स्वभाव से भी परिणमें जैसे आकाश में बद्दल होवे. अहो भगवन् ! जैसे आपके मत में प्रयोग या स्वाभाव से अस्तिपना अस्तिपने परिणमताहै

पदार्थ परिणमे ण० नास्तित्व ण० नास्तिरूप प० परिणमे हं० हां गो० गौतम जा० यावत् प० परिणमे जं० जो भं० भगवन् अ० अस्तित्व अ० अस्तिरूप पने प० परिणमे न० नास्तित्व न० नास्तिरूप पने प० परिणमे तं० उस को० किं क्या प० प्रयोग से वी० स्वभाव से गो० गौतम प० प्रयोगसे वी० स्वभावसे ॥ ७ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० अस्तित्व अ० अस्तिरूप पने ग० प्रकाशने योग्य ज० जैसे प०

सूत्र नत्थित्ते परिणमइ तं किं पओगसा वीससा? गोयमा ! पओगसावि तं वीससावि तं। जहाते भंते! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, तहाते णत्थित्तं णत्थित्ते परिणमइ, जहाते नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ,तहाते अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ? हंता गोयमा !जहामे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ तहामे नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ. जहामे नत्थित्तं, नत्थित्ते परिणमइ तहामे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ ॥ ७ ॥ सेणूणं भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं जहा

भावार्थ वैसे ही क्या आपके मत में नास्तिपना नास्ति पने परिणमता है ? और जैसे नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है वैसे ही क्या अस्तिपना अस्तिपने परिणमता है ? हां गौतम ! जैसे हमारे मत में अस्तित्व अस्तिपने परिणमता है वैसेही नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है और जैसे नास्तिपना नास्तिपने परिणमता है ! वैसेही अस्तित्व अस्तिपने परिणमता है. ॥७॥ अहो भगवन् ! अस्तित्व अस्तिपने गमनीय

शब्दार्थ परिणमे में दो॰ दोआलापक त॰ तैसे ग॰ प्रकाशने में दो॰ दो आ॰ आलापक भा॰ कहना ॥ ८ ॥ जी॰ जीव भं॰ भगवन् कं॰ कांक्षा मोहनीय कर्म बं॰ बांधे हं॰ हां गो॰ गौतम बं॰ बांधे क॰ कैसे भं॰ भगवन् जी॰ जीव कं॰ कांक्षा मोहनीय कर्म बं॰ बांधे गो॰ गौतम प॰ प्रमाद प्रत्यय जो॰ जोगानिमित्त से॰ वह

सूत्र परिणमइ दो आलावगा,तहा गमणिज्जेणवि दो आलावगा भाणियव्वा,जाव तहामे अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं जहा ते भंते! एत्थंगमणिज्जं तहाते इह गमणिज्जं जहाते इह गमणिज्जं तहाते इत्थं गमणिज्जं?हंता गोयमा!जहामे इत्थं गमणिज्जं तहामे इहगमणिज्जं॥८॥ जीवाणं भंते कंखा मोहणिज्जं कम्मं बंधंति ? हंता गोयमा ! बंधंति । कहण्णं भंते ! जीवा कंखा

भावार्थ अर्थात् छती वस्तु छतेपने ही प्रकाशने योग्य है अन्य को जनाने योग्य है ? यहां पर जैसे परिणमते के दो आलापक को वैसे ही प्रकाशने के हमारे मतमें अस्तित्व अस्तिपने प्रकाशने योग्य है वहां तक दो आलापक कहना. और भी अहो भगवन् ! जैसे आप के मत में मेरे जैसे सुशिष्य को वस्तु प्ररूपी वैसेही क्या आपके मत में पाखंडी गृहस्थादिक को प्ररूपी ? और जैसे पाखंडी गृहस्थादिक को वस्तु प्ररूपी वैसेही क्या मेरे जैसे सुशिष्य को वस्तु प्ररूपी ? हां गौतम ! जैसे मेरे मत में सुशिष्यादिक को वस्तु स्वरूप प्ररूपा वैसे ही पाखंडी गृहस्थादिक को वस्तु स्वरूप प्ररूपा और जैसे पाखंडी को वस्तु स्वरूप प्ररूपा वैसेही सुशिष्य को वस्तु स्वरूप प्ररूपा ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! जीव कांक्षा

शब्दार्थ भं० भगवन् प०प्रमाद कि० किससे प० उत्पन्न होवे गो० गौतम जो० जोगसे प० उत्पन्न होवे जो०जोग कि० किससे प०उत्पन्नहोवे गो०गौतम वी०वीर्यसे प०उत्पन्नहोवे वी०वीर्य कि०किससे प०उत्पन्न होवे स०शरीर से

सूत्र मोहणिज्जं कम्मं बंधंति ? गोयमा ! पमाद पच्चयं, जोगनिमित्तंच ॥ सेणं भंते ! पमादे किंपव्वहे ? गोयमा ! जोगप्पव्वहे । सेणं भंते ! जोए किंपव्वहे ? गोयमा ! वीरियप्पव्वहे। सेणं भंते ! वीरिए किंपव्वहे ? गोयमा ! सरीरप्पव्वहे । सेणं भंते सरीरे किंपव्वहे !

भावार्थ मोहनीय कर्म बांधता है ? हां गौतम ! जीव कांक्षा मोहनीय कर्म बांधता है. अहो भगवन् ! जीव कैसे कांक्षा (मिथ्यात्व) मोहनीय कर्म बांधता है ? अहो गौतम ! प्रमाद प्रत्ययिक व योग निमित्त से. अहो भगवन् ! प्रमाद किस कारन से प्रवर्ते अर्थात् कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! मन प्रमुख योग के व्यापार से प्रमाद उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! योग कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वीर्यांतराय कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न हुवा जो जीव परिणाम उस से योग उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! वीर्य कैसे उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वीर्य के दो भेद सकरण वीर्य और अकरण वीर्य. उस में अलेशी केवली समस्त पदार्थ जानते व देखते को वैसेही केवल ज्ञान केवल दर्शन प्रयुंजते को जो अप्रतिघाती परिणाम विशेष भाव होवे उसे अकरण वीर्य कहते हैं उस का यहांपर अधिकार नहीं है. परंतु यहां पर मन वचन करण साधन सलेशीजीव प्रदेशात्मक व्यापार सो सकरण वीर्य ग्रहण कीया है और

शब्दार्थ प०उत्पन्नहोवे स०शरीर किं०किससे प०उत्पन्न होवे जी०जीवसे प०उत्पन्नहोवे ए०ऐसे स०होते अ० है उ० उत्थान क०कर्म ब० बल वी०वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ॥२॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन् अ० आत्मा से उ० उदीरे ग० निन्दे सं० संवरे हं० हां गो० गोतम आ० आत्मा से तं० तैसे ही उ० कहना

सूत्र गोयमा! जीवप्पवहे एवंसइ अत्थि उट्ठाणेइवा. कम्मेइवा, बलेइवा वीरिएइवा पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ ९ ॥ सेणूणं भंते, अप्पणाचेव उदीरेइ, अप्पणाचेव . गरहइ, अप्पणा चेव संवरइ? हंता गोयमा! अप्पणा चेव उच्चारेयव्वं ॥ जंतंभंते! अप्पणा चेव उदीरेइ,

भावार्थ वह शरीर के व्यापार से होता है. अहो भगवन्! शरीर कैसे उत्पन्न होवे? अहो गौतम जीव से उत्पन्न होवे+ यदि ऐसा होवे तो उट्ठान–कार्य साधन के लिये खडे होना, कर्म–गमनादि कर्म करना, बल–शरीर की सामर्थ्यता, वीर्य–उत्साह, पुरुषात्कार–पुरुषका अभिमान, व पराक्रम–कार्य पूर्ण करना, इस में भी जीव की प्रधानता है. ॥२॥ अहो भगवन्! कर्मबंधादिक में जीव की प्रधानता है तो क्या स्वयंही कर्म की उदीरणा करे, स्वयंही कृत कर्म की निन्दाकरे और स्वयंही संवरे, अर्थात् कर्म करे नहीं? हां गोतम; स्वयंही कर्मकी उदीरणा करे यावत् स्वयं कर्म करे नहीं. अहो भगवन जब जीव स्वयं उदीरता है, गर्हता है, व संवरता है तो क्या

+ यद्यपि शरीर में कर्म भी कारण है निष्केवल जीव ही कारण नहीं है, तथापि कर्म का कर्ता जीव होने से जीव से शरीर उत्पन्न होना कहा है.

शब्दार्थ जं० जो भं० भगवन् आ० आत्मासे उ० उदीरे ग० निन्दे सं० संवरे तं० उन को किं० क्या उ० उदे आया अ० उदीरे अ० उदे नहीं आया अ० उदीरे उ० उदे नहीं आया उ० उदीरणा योग्य उ० उदीरे उ० उदयान्तर प० पीछे क० कीया कर्म उ० उदीरे गो० गौतम णो० नहीं उ० उदे आया उ० उदीरे णो० नहीं अ० उदे नहीं आया

सूत्र · अप्पणाचेव गरहइ, अप्पणाचेव संवरइ, तंकिं उदिण्णं उदीरेइ, अणुदिन्नं उदीरेइ अणुदिन्नं उदीरणा भवियं कम्मं उदीरेइ, उदयाणंतरं पच्छाकडं कम्मं उदीरेइ ? गोयमा ! नो उदिण्णं उदीरेइ, णो अनुदिण्णं उदीरेइ, अनुदिण्णं उदीरणा भवियं कम्मं उदीरेइ, नो उदयाणंतरं पच्छाकडं कम्मं उदीरेइ ॥ जंतंभंते ! अणुदिन्नं उदीरणा

भावार्थ उदय आया हुवा उदीरता है, उदय नहीं आया हुवा उदीरता है, उदय में नहीं आया है परंतु उदीरणा के योग्य जो उसे उदीरता है, अथवा उदय के अनंतर समय में पश्चात् कृत कर्म को उदीरता है ? अहो गौतम! जो कर्म उदयमें आये हैं उनकी उदीरणा करे नहीं क्योंकी उदयमें आये हुवे कर्मों की उदीरणा नहीं होती है, जो उदय में नहीं आये हैं उन की भी उदीरणा नहीं होती है क्यों की वे बहुत काल में उदय में आवेंगे इस लिये वर्तमान काल में उन की उदीरणा का अभाव है, जो उदय में नहीं आये हैं परंतु उदीरणा के योग्य हुवे हैं उन को उदीरते हैं और उदयांतर कृत कर्म को नहीं उदीरते हैं. अहो भगवन् ! जो उदय में नहीं आये हैं और उदीरणा के योग्य बने हुवे उन को उदीरते हैं तो क्या

शब्दार्थ प०उत्पन्नहोवे स०शरीर किं०किससे प०उत्पन्न होवे जी०जीवसे प०उत्पन्नहोवे ए०ऐसे स०होते अ० है उ० उत्थान क०कर्म ब० बल वी०वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ॥२॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन् अ० आत्मा से उ० उदीरे ग० निन्दे सं० संवरे हं० हां गो० गौतम आ० आत्मा से तं० तैसे ही उ० कहना

सूत्र गोयमा! जीवप्पवहे एवंसइ अत्थि उट्ठाणेइवा. कम्मेइवा, बलेइवा वीरिएइवा पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ १ ॥ सेणूणं भंते, अप्पणाचेव उदीरेइ, अप्पणाचेव . गरहइ, अप्पणा चेव संवरइ ? हंता गोयमा! अप्पणा चेव उच्चारेयव्वं ॥ जंतंभंते! अप्पणा चेव उदीरेइ,

भावार्थ वह शरीर के व्यापार से होता है. अहो भगवन्! शरीर कैसे उत्पन्न होवे? अहो गौतम जीव से उत्पन्न होवे+ यदि ऐसा होवे तो उट्ठान-कार्य साधन के लिये खडे होना, कर्म-गमनादि कर्म करना, बल-शरीर की सामर्थ्यता, वीर्य-उत्साह, पुरुषात्कार-पुरुषका अभिमान, व पराक्रम-कार्य पूर्ण करना, इस में भी जीव की प्रधानता है. ॥२॥ अहो भगवन्! कर्मबंधादिक में जीव की प्रधानता है तो क्या स्वयंही कर्म की उदीरणा करे, स्वयंही कृत कर्म की निन्दाकरे और स्वयंही संवरे, अर्थात् कर्म करे नहीं? हां गौतम; स्वयंही कर्मकी उदीरणा करे यावत् स्वयं कर्म करे नहीं. अहो भगवन् जब जीव स्वयं उदीरता है, गर्हता है, व संवरता है तो क्या

+ यद्यपि शरीर में कर्म भी कारण है निष्केवल जीव ही कारण नहीं है, तथापि कर्म का कर्ता जीव होने से जीव से शरीर उत्पन्न होना कहा है.

शब्दार्थ अ० अवल अ० वीर्यरहित अ० पुरुषात्कार पराक्रम रहित ॥ १० ॥ से० वह भं० भगवन् अ० आत्मा से उ० उपशमावे ग० निन्दे सं० संवरे हं० हां ए० यहां त० तैसे भा० कहना ण० विशेष अ० उदे नहीं आया उ० उपशमावे से० शेष प० वर्जना ति० तीन जं० जो भं० भगवन् अ० उदे नहीं आया उ० उपशमावे तं० उन को किं० क्या

सूत्र अपुरिसक्कार परक्कमेणं अणुदिन्नं उदीरणा भावियं कम्मं उदीरंति. एवं सइ आत्थि उट्ठाणेइवा, कम्मेइवा, बलेइवा, वीरिएइवा, पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ १० ॥ सेणूणं भंते अप्पणाचेव उवसामेइ, अप्पणाचेव गरहइ, अप्पणाचेव संवरइ ? हंता गोयमा ! एत्थवि तहेव भाणियव्वं, णवरं अणुदिन्नं उवसामेइ, सेसा पडिसेहियव्वा तिण्णि ॥ जं तं भंते! अणुदिन्नं उवसामेइ तंकिं उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कार परक्कमेइवा

भावार्थ अनुदित कर्म को उदीरता है ॥ १० ॥ अब कांक्षा मोहनीय का उपशम कहते हैं. अहो भगवन् ! क्या जीव स्वयं कांक्षा मोहनीय कर्म उपशमावे, गर्हे, व संवरे ! हां गौतम ! जीव स्वयं ही कांक्षा मोहनीय कर्म उपशमावे यावत् संवरे. यहांपर पूर्वोक्त उदीरणा जैसे कहना, परंतु यहां अनुदित कर्म का उपशम करते हैं और शेष तीन को छोडना. जो उदय में आया है वह अवश्यही वेदाता है इस लिये अनुदित कर्म का उपशम कहा है. अहो भगवन् ! जो अनुदित कर्म का उपशम करता है वह क्या उत्थान, कर्म यावत् पराक्रम से करता है या उत्थानादि विना उपशम करता है ? वगैरह आधिकार पाहिले जैसे

शब्दार्थ उ० उदीरे अ० उदे नहीं आया उ० उदीरणा योग्य क० कर्म उ० उदीरे नो० नहीं उ० उदयान्तर प० पीछे क० कीया कर्म उ० उदीरे जं० जो भं० भगवन् अ० उदे नहीं आया उ० उदीरना योग्य क० कर्म उ० उदीरे तं० उन को उ० उत्थान क० कर्म व० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार पराक्रम से अ० उदे नहीं आया उ० उदीरणा योग्य उ० उदीरे उ० अथवा तं० उन को अ० अनुत्थान अ० अकर्म

सूत्र भवियं कम्मं उदीरेइ तंकिं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार परक्कमेणं अणुदिन्नं उदरिणा भवियं कम्मं उदीरेति. उादहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं; अबलेणं अवीरिएणं, अपुरिसक्कार परक्कमेणं; अणुदिण्णं उदीरणा भावियं कम्मं उदीरेइ ?, गोयमा ! तं उट्ठाणेणवि, कम्मणवि, बलेणावि, वीरिएणावि, पुरिसक्कार परक्कमेणावि, अणुदिन्नं उदीरणा भावियं कम्मं उदीरेइ नो, तं अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं

भावार्थ उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम से उदीरता है ? अथवा उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम विना उदीरता है ? अहो गौतम ! उत्थान यावत् पराक्रम से उदीरणा के योग्य अनुदित कर्म उदीरता है. परंतु उत्थान यावत् पराक्रम विना उदीरणा के योग्य अनुदित कर्म को नहीं उदीरता है. इस लिये उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम में आस्ति है जिस से उदीरणा योग्य

दार्थ जा० यावत् प० पराक्रम ॥ १३ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वेदे ज० जैसे ओ० औधिक जीव त० तैसे ने० नारकी जा० यावत् थ० स्तनित कुमार ॥ १४ ॥ पु० पृथ्वी-काया भं० भगवन् कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वेदे हं० हां वे० वेदे क० कैसे भं० भगवन् पु० पृथ्वीकाया कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे गो० गौतम ते० उन जी० जीवों को णो० नहीं हैं ए० ऐसा

सूत्र णिज्जरेइ एवं जाव परक्कमेइत्ता ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते! कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदं-ति ? जहा ओहिया जीवा तहा णेरइया जाव थणिय कुमारा ॥ १४ ॥ पुढवि-काइयाणं भंते ! कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदंति ? हंता वेदंति । कहणं भंते ! पुढवि-काइया कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदंति ? गोयमा ! तेसिणं जीवाणं णो एवं तक्काइवा,

भावार्थ शेष पुरुषात्कार पराक्रम तक का सब अधिकार पहिले जैसे कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! क्या नार-की कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है ? अहो गौतम ! जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसे ही नारकी का जानना. और वैसे ही स्तनित कुमार तक का जानना ॥ १४ ॥ पंचेन्द्रिय को शंकितादि दोष होवे इस से कांक्षा मोहनीय कर्मकी वेदनादि होवे परंतु एकेन्द्रियादिकको शंकितादि दोष नहीं होने से कांक्षा मोहनीय की वेदना होवे नहीं इस लिये एकेन्द्रिय को विशेषता से कांक्षा मोहनीय का स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन् ! पृथ्वी काय कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे ? हां गौतम ! पृथ्वी कायिक जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे.

शब्दार्थ

उ० उत्थान जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रमसे ॥ ११ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० आत्मा से वे० वेदे ग० निन्दे हं० हां गो० गौतम ए० यहां सं० सर्व प० परंपरा ण० विशेष उ० उदेआया वे० वेदे णो० नहीं अ० उदे नहीं आया वे० वेदे ए० ऐसे जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम ॥ १२ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० आत्मा से णि० निर्जरे अ० आत्मा से ग० निन्दे हं० हां गो० गौतम ए० यहां स० सर्व प० परंपरा ण० विशेष उ० उदयान्तर प० पीछे क० कीया क० कर्म नि० निर्जरे ए० ऐसे

सूत्र

॥ ११ ॥ सेणूणं भंते ! अप्पणा चेव वेदेइ, अप्पणा चेव गरहइ ? हंता गोयमा ! एत्थवि सव्वेवि परिवाडी, णवरं उदिण्णं वेदेइ, णो अणुदिन्नं वेदेइ. एवं जाव पुरिसक्कार परक्कमेइवा ॥ १२ ॥ सेणूणं भंते ! अप्पणा चेव णिज्जरेइ अप्पणा चेव गरहइ ? हंता गोयमा ! एत्थवि सव्वेवि परिवाडी, णवरं उदयाणंतरं पच्छा कडं कम्मं

भावार्थ

कहना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जीव स्वयं वेदता है, स्वयं गर्हता है ? हां गौतम ! यहांपर सब परिपाटी पहिले जैसे कहना. इस में उदय आये हुवे कर्म वेदते हैं इतना ही विशेष है और पुरुषात्कार पराक्रमतक पहिले जैसे कहना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जीव क्या स्वयं कर्म की निर्जरा करता है व नहीं करता है ! हां गौतम ! यहांपर उदयान्तर समय पश्चात् कृतकर्म निर्जरे इतना विशेष जानना

पदार्थ जा॰ यावत् प॰ पराक्रम ॥ १३ ॥ णे॰ नारकी भं॰ भगवन् कं॰ कांक्षा मोहनीय क॰ कर्म वे॰ वेदे ज॰ जैसे ओ॰ औधिक जीव त॰ तैसे ने॰ नारकी जा॰ यावत् थ॰ स्तनित कुमार ॥ १४ ॥ पु॰ पृथ्वीकाया भं॰ भगवन् कं॰ कांक्षा मोहनीय क॰ कर्म वे॰ वेदे हं॰ हां वे॰ वेदे क॰ कैसे भं॰ भगवन् पु॰ पृथ्वीकाया कं॰ कांक्षा मोहनीय कर्म वे॰ वेदे गो॰ गौतम ते॰ उन जी॰ जीवों को णो॰ नहीं हैं ए॰ ऐसा

सूत्र णिज्जरेइ एवं जाव परक्कमेइवा ॥ १३ ॥ णेरइयाणं भंते! कंखा मोहाणिज्जं कम्मं वेदंति? जहा ओहिया जीवा तहा णेरइया जाव थाणिय कुमारा ॥ १४ ॥ पुढविकाइयाणं भंते! कंखा मोहाणिज्जं कम्मं वेदंति? हंता वेदंति। कहणं भंते! पुढविकाइया कंखा मोहाणिज्जं कम्मं वेदंति? गोयमा! तेसिणं जीवाणं णो एवं तक्काइवा,

भावार्थ शेष पुरुषात्कार पराक्रम तक का सब अधिकार पहिले जैसे कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! क्या नारकी कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता है? अहो गौतम! जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसे ही नारकी का जानना. और वैसे ही स्तनित कुमार तक का जानना ॥ १४ ॥ पंचेन्द्रिय को शंकितादि दोष होवे इस से कांक्षा मोहनीय कर्मकी वेदनादि होवे परंतु एकेन्द्रियादिकको शंकितादि दोष नहीं होने से कांक्षा मोहनीय की वेदना होवे नहीं इस लिये एकेन्द्रिय को विशेषता से कांक्षा मोहनीय का स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन्! पृथ्वी काय कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे? हां गौतम! पृथ्वी कायिक जीव कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे.

मो० यात्र -

... वचन अ० अन्हें कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वेदते हैं गो० गौतम ... मन नो० नहीं तं० तथाप्रकार जं० जो जि० जिनने प० प्ररूपा से० शेष तं० ... यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम ए० ऐसे जा० यावत् च० चतुरिन्द्रिय ॥ १५ ॥ पं० पंचेन्द्रिय ... यावत् वे० वैमानिक ज० जैसे ओ० औधिक जीव ॥ १६ ॥ अं० भगवन् स० श्रमण नि०

...गाइवा, पव्वाइवा, मणइवा, वइइवा, अम्हेणं कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदेमो वे-
देंति ! णुणते सेणूणंभंते ! तमेवसच्चं णीसंकंजंजिणेहिं पवेइयं सेसं तंचेव जाव परिसक्का-
परक्कमेइवा एवं जाव चउरिंदियाणं ॥ १५ ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया जाव
वेमाणिया जहा ओहिया जीवा ॥ १६ ॥ अत्थिणं भंते ! समणा निग्गंथा कंखा

भगवन् ! वे कैसे कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे ? अहो गौतम ! उन जीवोंको तर्क, संज्ञा, प्रज्ञा, मन, वचन व मैं कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता हूं ऐसा ज्ञान नहीं है तथापि वे कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे. इस कारन से ऐसे स्थान में साधु को ऐसा कहना कि जो जिन भगवान्ने प्ररूपा है वहही निःशंक सत्य है. शेष पुरुषात्कार पराक्रम तकका सब अधिकार पूर्ववत् जानना और ऐसे ही अप्, तेउ, वायु, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय तक कहना ॥ १५ ॥ पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का औधिक (समुच्चय) जीव जैसे कहना ॥ १६ ॥ सब

दार्थ निग्रंथ कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे हं० हां क० कैसे भ० भगवन् स० श्रमण नि० निग्रंथ कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे गो० गौतम ते० उस का० कारन से ना० ज्ञानांतरसे दं० दर्शनांतर से च०

सूत्र मोहणिज्जं कम्मं वेदांति ? हंता अत्थि । कहणं भंते ? समणा निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदंति ? गोतमा ! तेहिं तेहिं कारणेहिं, नाणंतरेहिं, दंसणंतरेहिं, चरित्तंतरेहिं

भावार्थ जीवोंको मिथ्यात्व मोहनीय कर्म वेदना कहा परंतु वह निग्रंथ को नहीं होता है क्यों कि जिनागम जानने-वाले को निर्मल बुद्धि रहती है, इस लिये निग्रंथ संबंधी पृच्छा करते हैं. अहो भगवन् ! बाह्याभ्यंतर परिग्रह रहित श्रमण तपस्वी कांक्षा मोहनीय कर्म वेदते हैं ? हां गौतम ! वे वेदते हैं. अहो भगवन् ! वे श्रमण निग्रंथ किस प्रकार से कांक्षा मोहनीय कर्म वेदते हैं ? अहो गौतम ! इस का कारण मैं बताता हूं. १ ज्ञानांतर से - एक ज्ञान से दूसरे ज्ञान में शंका उत्पन्न होवे जैसे अवधि ज्ञानवाला परमाणु वगैरह सकल रूपी द्रव्य अवधि ज्ञान से जाने और मनःपर्यव ज्ञानी अढाइद्वीप में रहे हुवे संज्ञी के मन का भाव जाने. इस में मन द्रव्य रूपी होने से अवधि ज्ञानी अवधि ज्ञान से मन का भाव जाने जब मनः पर्यव ज्ञान में क्या विशेषता ? ऐसी शंका करे. २ दर्शनांतर से अर्थात् एक दर्शन से दूसरे दर्शन में शंका उत्पन्न होवे जैसे चक्षुदर्शन व अचक्षुदर्शन को भिन्न क्यों कहा ? अथवा सम्यक् दर्शन में शंका उत्पन्न होवे ३ चारित्रांतरसे - अर्थात् एक चारित्र से दूसरे चारित्र में शंका उत्पन्न होवे जैसे सामायिक चारित्र

शब्दार्थ न० तर्क स० संज्ञा प० प्रज्ञा म० मन व० वचन अ० अम्हे कं० कांक्षा मोहनीय क० कर्म वे० वेदते हैं वे० जानते हैं पु० फीर तं० वहही स० सत्य नी० शंकारहित जं० जो जि० जिनने प० प्ररूपा. से० शेष तं० तैसे जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम ए० ऐसे जा० जावत् च० चतुरेन्द्रिय ॥ १५ ॥ पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच जा० यावत् वे० वैमानिक ज० जैसे ओ० औधिक जीव ॥ १६ ॥ भं० भगवन् स० श्रमण नि०

सूत्र सण्णाइवा, पण्णाइवा, मणेइवा, वइइवा, अम्हेणं कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदेमो वेदेंति। पुणते सेणूणंभंते! तमेवसच्चं णीसंकंजंजिणेहिं पवेइयं सेसं तंचेव जाव परिसक्कार परक्कमेइवा एवं जाव चउरिंदियाणं ॥ १५ ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया जाव वेमाणिया जहा ओहिया जीवा ॥ १६ ॥ अत्थिणं भंते! समणा निग्गंथा कंखा

भावार्थ अहो भगवन्! वे कैसे कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे? अहो गौतम! उन जीवोंको तर्क, संज्ञा, प्रज्ञा, मन, वचन व मैं कांक्षा मोहनीय कर्म वेदता हूं ऐसा ज्ञान नहीं हैं. तथापि वे कांक्षा मोहनीय कर्म वेदे. इस कारन से ऐसे स्थान में साधु को ऐसा कहना कि जो जिन भगवान्ने प्ररूपा है वहही निःशंक सत्य है. शेष पुरुषात्कार पराक्रम तकका सब अधिकार पूर्ववत् जानना और ऐसे ही अप्, तेउ, वायु, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय तक कहना ॥ १५ ॥ पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का औधिक (समुच्चय) जीव जैसे कहना ॥ १६ ॥ सब

शब्दार्थ मतांतरसे भं० भंगोकेअंतरसे ण० नयांतर से णि० नियमांतरसे य० प्रमाणांतरसे सं० शंकित कं० वांच्छा वाला वि० संदेह वाला कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे ॥ १७ ॥ भं० भगवन् तं० वहही स० सत्य नी० शंकारहित जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥१॥३॥ ❋

सूत्र णयंतरेहिं, णियमंतरेहिं, पमाणंतरेहिं, संकिया कंखिया, वितिगिंच्छिया, भेदसमावण्णा, कलुससमावण्णा, एवं खलु समणा निग्गंथा कंखा मोहणिज्जं कम्मं वेदंति ॥ १७ ॥ सेणूणं भंते ! तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं? हंता गोयमा तमेव सच्चं नीसंकं एवं जाव पुरिसकार परक्कमेइवा ॥ सेवंभंते भंते ! त्ति पढमसए तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ३ ॥ × +

भावार्थ यिकादिक का प्रत्याख्यान है तो प्रहरसी वगैरह की क्या विशेषता है ऐसी शंका करे १३ प्रमाणान्तर से-प्रत्यक्ष प्रमाण व आगम प्रमाणमें भेद क्यों ? आगम प्रमाण से सूर्य ८०० योजन ऊंचे उदित होता है और चक्षु दृष्टि से जमीन में से नीकलता हुवा दीखता है इस में शंका उत्पन्न होवे. इस तरह तेरह प्रकार की शंका उत्पन्न होवे, मिथ्या दर्शन की वांच्छा होवे, धर्म करणी में फलका संदेह लावे, सत्य असत्यका भेद करे, मतिभ्रम होने से कालुष्यतावाले बने, इसी कारण से श्रमण निर्ग्रंथ कांक्षा मोहनीय कर्म वेदते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! जो जिन भगवान्ने प्ररूपा है वह सत्य है ? हां गौतम ! जो जिन भगवान्ने प्ररूपा है वहही निःशंक सत्य है. ऐसे ही पुरुषात्कार पराक्रमतक कहना. श्री गौतम स्वामी कहते हैं कि अहो भगवन् ! जैसे आप प्ररूपते हैं वह सब सत्य है. यह पहिला शतकका तीसरा उद्देशा.

शब्दार्थ चारित्रांतरसे लिं० लिंगांतरसे प० प्रवचनांतरसे पा० प्रावचनांतरसे क० कल्पांतरसे म० मार्गांतरसे म०

सूत्र लिंगंतरेहिं, पवयणंतरेहिं पावयणंतरेहिं कप्पंतरेहिं, मग्गंतरेहिं, मयंतरेहिं, भंगंतरेहिं,

भावार्थ में सब सावद्यका प्रत्याख्यान है और छेदोपस्थापनीय में पंचमहाव्रत का आरोपण किया है. ४ लिंगांतर से - लिंग जो साधु का वेष उस में शंका उत्पन्न होवे जैसें बावीस तीर्थंकर के साधु जैसे शुद्ध वस्त्र मीले वैसा ग्रहण करे और प्रथम व अन्तिम तीर्थंकर के साधु प्रमाण युक्त वस्त्र धारन करे. इस तरह जो भिन्नता है वह क्यों होवे ऐसी शंका होवे ५ प्रवचनान्तर से - प्रवचन सो आगम इस में भिन्नता होने से शंका उत्पन्न होवे. जैसे बावीस तीर्थंकर के साधुओंको चार महाव्रत और प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के साधुओं को पांच महाव्रत ऐसी भिन्नता ६ प्रावचनान्तर से - अर्थात् गीतार्थ के वचन में भिन्नता होने से शंका करे जैसे एक आचार्य थोडी क्रिया करते हैं और दूसरे विशेष क्रिया करते होवे. ७ कल्पान्तर से - अर्थात् कल्प २ में भिन्नता देखकर शंका होवे जैसे जिन कल्पी नग्नत्वपना वगैरह अतिकष्ट सहन करते हैं और स्थविर कल्पी वस्त्रादि सहित प्रवर्ते. ये दोनों किस प्रकार से कर्मक्षय करे वैसी शंका उत्पन्न होवे ८ मार्गान्तर से - अर्थात् पूर्वापर समाचारी में भिन्नता होने से शंका उत्पन्न होवे ९ मतांतर से - आचार्य के अभिप्राय में भिन्नता होने से शंका उत्पन्न होवे १० भंगान्तरसे - अर्थात् द्वीभंगी चौभंगी की विचारना उस में भिन्नता की समझ नहीं होने से शंका उत्पन्न होवे ११ नयांतर से द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक नय में नित्यानित्य वस्तु का स्वरूप जानकर शंका उत्पन्न होवे १२ नियमान्तर से - जब यावज्जीव पर्यंत सामा-

शब्दार्थ मतांतरसे भं० भंगीकेअंतरसे ण० नयांतर से णि० नियमांतरसे प० प्रमाणांतरसे सं० शंकित कं० वांच्छा वाला वि० संदेह वाला कं० कांक्षा मोहनीय कर्म वे० वेदे ॥ १७ ॥ भं० भगवन् तं० वहही स० सत्य नी० शंकाराहित जा० यावत् पु० पुरुषात्कार पराक्रम स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥१॥३॥ *

सूत्र णयंतरेहिं, णियमंतरेहिं, पमाणंतरेहिं, संकिया कंखिया, वितिगिच्छिया, भेदसमावण्णा, कलुससमावण्णा, एवं खलु समणा निग्गंथा कंखा मोहणिजं कम्मं वेदंति ॥ १७ ॥ सेणूणं भंते ! तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं? हंता गोयमा तमेव सच्चं नीसंकं एवं जाव पुरिसकार परकमेइवा ॥ सेवंभंते भंते ! त्ति पढमसए तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ३ ॥

× +

भावार्थ थिकादिक का प्रत्याख्यान है तो प्रहरसी वगैरह की क्या विशेषता है ऐसी शंका करे १३ प्रमाणान्तर से-प्रत्यक्ष प्रमाण व आगम प्रमाणमें भेद क्यों ? आगम प्रमाण से सूर्य ८०० योजन ऊंचे उदित होता है और चक्षु दृष्टि से जमीन में से नीकलता हुवा दीखता है इस में शंका उत्पन्न होवे. इस तरह तेरह प्रकार की शंका उत्पन्न होवे, मिथ्या दर्शन की वांच्छा होवे, धर्म करणी में फलका संदेह लावे, सत्य असत्यका भेद करे, मतिभ्रम होने से कालुष्यतावाले बने, इसी कारण से श्रमण निर्ग्रंथ कांक्षा मोहनीय कर्म वेदते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! जो जिन भगवान्ने प्ररूपा है वह सत्य है ? हां गौतम ! जो जिन भगवान्ने प्ररूपा है वहही निःशंक सत्य है. ऐसे ही पुरुषात्कार पराक्रमतक कहना. श्री गौतम स्वामी कहते हैं कि अहो भगवन् ! जैसे आप प्ररूपते हैं वह सब सत्य है. यह पहिला शतकका तीसरा उद्देशा.

शब्दार्थ क० कितनी भं० भगवन् क० कर्म प्रकृति प० प्ररूपी गो० गौतम अ० आठ कर्म प्रकृति प० प्ररूपी क० कर्म प्रकृतिका प० पहिला उद्देशा ने० जानना जा० यावत् अ० अनुभाग क० कितनी क० कर्म प्रकृति क० कैसे बं० बांधे क० कितने ठा० स्थानमें बं० बांधे प० प्रकृति क० कितनी वे० वेदे प० प्रकृति अ० अनुभाग क० कितना प्रकारका क० किपका ॥ १ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मो० मोहनीय क० कीये

सूत्र कतिणं भंते ! कम्म पगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्म पगडीओ पण्णत्ताओ, । कम्म पयडीए पढमोउद्देसो नेयव्वो ॥ जाव अणुभागो सम्मत्तो ॥ गाहा—कति पगडी कहिं बंधइ । कतिहिं ठाणेहिं बंधए पगडी ॥ कइ वेदेइ च पगडी । अणुभागो कतिविहो कस्स ॥ १ ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिण्णे-

भावार्थ गत उद्देशे में कर्म की वेदना उदीरणा आदिका कथन किया है. अब इस उद्देशे में कर्म का स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन् ! कितनी कर्म प्रकृतियों कही ? अहो गौतम ! कर्म की मूल आठ प्रकृति कही. इन का विस्तार पूर्वक कथन पन्नवणा सूत्र के तेत्तीसवा पद के प्रथम उद्देश में कहा है. उस में से अनुभाग तक का जानना. उस का संक्षेप में अर्थ बतानेवाली संग्रह गाथा कहते हैं. १ कितनी कर्म प्रकृतियों २ प्रकृति कैसे बांधे ३ कितने स्थानक में प्रकृति बांधे, ४ कितनी प्रकृति वेदे और ५ कितने प्रकार का अनुभाग होवे ऐसे पांच द्वार कहे हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मिथ्यात्व मोहनीय से कराये हुवे

शब्दार्थ क०कर्म उ०उदय से के उ०अंगीकारकरे हं०हां गो०गौतम उ०अंगीकारकरे से०वह भं०भगवन् किं०क्या वी० वीर्यपने उ० अंगीकार करे अ० अवीर्यपने उ०अंगीकार करे गो०गौतम वी० वीर्यपने उ० अंगीकार करे णो० नहीं अ० अवीर्यपने उ० अंगीकार करे ज० यदि वी० वीर्यपने उ० अंगीकार करे किं० क्या, वा० बाल वीर्यपने उ० अंगीकार करे पं० पंडितवीर्य पने उ० अंगीकार करे वा० बाल पंडित वीर्यपने उ०

सूत्र णं उवट्ठाएज्जा ? हंता गोयमा ! उवट्ठाएज्जा । से भंते! किं वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, णो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥ जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, किं बाल वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, पंडित वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, बालपंडित वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? गोयमा ! बाल वी-

भावार्थ कर्मों के उदय से क्या जीव परलोक क्रिया अंगीकार करे अर्थात् अन्य दर्शनी बने ? हां गौतम ! अन्य दर्शनी बने. अहो भगवन् ! जीव वीर्य सहित अन्य दर्शन अंगीकार करे अथवा वीर्य रहित अंगीकार करे ? अहो गौतम ! जीव वीर्य से परलोक क्रिया अंगीकार करे परंतु वीर्य रहितपने अंगीकार करे नहीं. अहो भगवन् ! यदि वीर्य से परलोक क्रिया अंगीकारकरे तो क्या बल वीर्य से, पंडित वीर्य से अथवा बालपंडित वीर्य से परलोक क्रिया अंगीकार करे ? अहो गौतम ! मिथ्यात्व के उदय से मिथ्या-दृष्टिपना से जीव को जो बाल वीर्य स्थिर रहता है उस से ही अन्य दर्शन अंगीकार करता है, पंडित

शब्दार्थ क० कितनी भं० भगवन् क० कर्म प्रकृति प० प्ररूपी गो० गौतम अ० आठ कर्म प्रकृति प० प्ररूपी क० कर्म प्रकृतिका प० पहिला उद्देशा ने० जानना जा० यावत् अ० अनुभाग क० कितनी क० कर्म प्रकृति क० कैसे बं० बांधे क० कितने ठा० स्थानमें बं० बांधे प० प्रकृति क० कितनी वे० वेदे प० प्रकृति अ० अनुभाग क० कितना प्रकारका क० किसका ॥ १ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मो० मोहनीय क० कीये

सूत्र कतिणं भंते ! कम्म पगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्म पगडीओ पण्णत्ताओं, । कम्म पयडीए पढमोउद्देसो नेयव्वो ॥ जाव अणुभागो सम्मत्तो ॥ गाहा—कति पगडी कहिं बंधइ । कतिहिं ठाणेहिं बंधए पगडी ॥ कइ वेदेइ च पगडी । अणुभागो कतिविहो कस्स ॥ १ ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिण्णे-

भावार्थ गत उद्देशे में कर्म की वेदना उदीरणा आदिका कथन किया है. अब इस उद्देशे में कर्म का स्वरूप बताते हैं. अहो भगवन् ! कितनी कर्म प्रकृतियों कही ? अहो गौतम ! कर्म की मूल आठ प्रकृति कही. इन का विस्तार पूर्वक कथन पन्नवणा सूत्र के तेत्तीसवा पद के प्रथम उद्देश में कहा है. उस में से अनुभाग तक का जानना. उस का संक्षेप में अर्थ बतानेवाली संग्रह गाथा कहते हैं. १ कितनी कर्म प्रकृतियों २ प्रकृति कैसे बांधे ३ कितने स्थानक में प्रकृति बांधे, ४ कितनी प्रकृति वेदे और ५ कितने प्रकार का अनुभाग होवे ऐसे पांच द्वार कहे हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मिथ्यात्व मोहनीय से कराये हुवे

शब्दार्थ सि० कदाचित् बा०बालपंडित वीर्यपने अ० अतिक्रमे ॥ ३ ॥ ज० जैसे उ०उदयमें दो० दोआलापक त० तैसे उ० उपशांत में दो० दोआलापक भा० कहना ण० विशेष उ० अंगीकार करे पं० पंडित वीर्यपने अ० अतिक्रमे बा० बालपंडित वीर्यपने अ० अतिक्रमे ॥ ४ ॥ से वह भं० भगवन् किं० क्या आ० आ-

सूत्र वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, ॥ ३ ॥ जहा उदिन्नेणं दो आलावगा, तहा उवसंतेणवि दो आलावगा भाणियव्वा, णवरं उवट्ठाएज्जा, पंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, बाल पंडिय वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ॥ ४ ॥ से भंते ! किं आयाए अवक्कमइ, अणायाए

भावार्थ वीर्य से अपक्रमे अर्थात् बाल पंडित वीर्य से देशविरति (श्रावक) होता है. पाठान्तर ऐसा भी है कि मात्र बालवीर्यपने मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का उदयसे अपक्रमे परंतु अन्य दो वीर्य सहित अपक्रमे नहीं ॥ ३ ॥ जैसे उदय का दो आलापक कहा वैसेही उपशान्तका दो आलापक जानना. इन में विशेष इतना कि पहिला आलापक में क्रिया करते सर्वथा मोहनीय उपशान्त रहे इसलिये उपशान्त मोह अवस्था में पंडित वीर्य का भाव है और अन्य दो का अभाव है. दूसरा आलापक मे संयतपना से मोहनीय कर्म उपशमा और बाल पंडित वीर्य से पीछा पडकर देश विरति हुवा उनको मोहनीय कर्म के उपशम का सद्भाव है परंतु मिथ्यात्वी नहीं हुवा है क्यों कि मोह के उदय से ही मिथ्यात्वी होवे परंतु यहां पर मोह मिथ्यात्व के उपशम का अधिकार है ॥ ४ ॥ अब सामान्य से अपक्रम का अधिकार चलता

शब्दार्थ

अंगीकारकरे गो० गौतम वा० बालवीर्य पने उ० अंगीकार करे णो० नहीं पं० पंडित वीर्यपने नो० नहीं बा० बाल० पंडित वीर्यपने ॥ २ ॥ जी० जीव भं० भगवन् मो० मोहनीय क० कीये क० कर्म के उ० उदयसे अ० अतिक्रमे हं० हां अ० अतिक्रमे से० वह भं० भगवन् जा० यावत् बा० बाल पंडित वीर्य पने अ० अतिक्रमे

सूत्र

रियत्ताए उवट्ठाएज्जा णो पंडिय वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, णो बाल पंडिय वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥ २ ॥ जीवेणं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिन्नेणं अवक्कमेज्जा? हंता अवक्कमेज्जा. से भंते ! जाव बालपंडिय वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? गोयमा ! बाल वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, नो पंडिय वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा. सिय बाल पंडिय

भावार्थ

वीर्य व बाल पंडित वीर्य से अंगीकार नहीं करता है ॥ २ ॥ अब अपक्रमण सो पीछा पडना उस संबंध में प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! जीव मोहनीय कर्म के उदय से अपक्रमता है, उपर के गुणस्थान पर गया हुवा पीछा पडता है ? हां गौतम! जीव मोहनीय कर्म के उदय से उत्तम गुणस्थान से हीन गुणस्थान को जाता है. अहो भगवन् ! क्या वीर्य सहित जाता है या वीर्य रहित जाता है ? अहो गौतम ! वीर्य सहित जाता है. यदि वीर्य सहित जाता है तो क्या बाल वीर्य से, पंडित वीर्य से या बाल पंडित वीर्य से जाता है ? अहो गौतम ! बाल वीर्य से अपक्रमे परंतु पंडित वीर्य से अपक्रमे नहीं कदाचित् बाल पंडित

शब्दार्थ की ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव जे० जो क० किये पा० पापकर्म ण० नहीं हैं त० उसका अ० विना-भोगवा मो० मोक्ष हं० हां गो० गौतम ने० नारकी ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव को जा० यावत् मो० मोक्ष से० वह के० कैसे भं० भगवान् ए० ऐसे वु० कहाजाता है ने० नारकी जा० यावत् मो०

सूत्र णियस्सवा, मणुस्सस्सवा, देवस्सवा जे कडे पावे कम्मं णत्थि तस्स अवेइयत्ता मोक्खो ? हंता गोयमा ! णेरइयस्सवा, तिरिक्ख मणुस्स देवस्सवा जाव मोक्खो । सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, नेरइयस्सवा जाव मोक्खो ? एवं खलुमए गोयमा !

भावार्थ सामान्य कर्म की चिन्तवना कहते हैं अहो भगवन् ! नरक, तिर्यंच, मनुष्य, व देवताने अशुभाचरण से जो पापकर्म किये हैं उन को वेदे विना क्या वे मुक्त नहीं हो सकते हैं ? हां गौतम ! नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवताने जो पापकर्म किये हैं उन को विना वेदे वे मुक्त नहीं हो सकते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी तिर्यंच, मनुष्य व देवता किये हुवे कर्मों से विना वेदे नहीं छूट सकते हैं ? अहो गौतम ! कर्म के दो भेद मैंने कहे हैं. प्रदेश कर्म व अनुभाग कर्म. उस में से जो प्रदेश कर्म हैं वे निश्चय ही जैसे किये वैसे ही वेदते हैं. और अनुभाग कर्म को कितनेक वेदते हैं, और कितनेक नहीं वेदते हैं. जैसे मिथ्यात्व क्षयोपशम काल में प्रदेश कर्म वेदे परंतु अनुभाग कर्म वेदे नहीं. कर्म वेदने के प्रकार अरिहंत देवने ही जाने हैं, अरिहंतने उपदेशे हैं, उन्होंने ही उन का चिन्तवन किया है, व द्रव्य क्षेत्र काल भा-

शब्दार्थ त्मा से अ० अतिक्रमे अ० परात्मा से अतिक्रमे गो० गौतम आ० आत्मासे अ० अतिक्रमे णो० नहीं अ० परात्मासे अ० अतिक्रमे मो० मोहनीय क० कर्म वे० वेदता से० वह क० कैसे ए० यह भं० भगवन् ए० ऐसे गो० गौतम पु० पहिले से वह ए० यह ए० ऐसा रो० रुचे इ० पीछे से० वह ए० यह ए० ऐसा णो० नहीं रो० रुचे ए० ऐसे ख० निश्चय ए० यह ॥५॥ से० वह णू० निश्चय भं० भगवन् ने० नार-

सूत्र अवक्कमइ ? गोयमा ! आयाए अवक्कमइ, णो अणायाए अवक्कमइ । मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे । सेकहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! पुव्विं से एयं एवं रोयइ, इयाणिं से एयं एवं नो रोयइ, एवं खलु एयं एवं ॥ ५ ॥ सेणूणं भंते ! नेरइयस्सवा, तिरिक्ख जो-

भावार्थ अहो भगवन् ! जीव अपनी आत्मासे अपक्रमता है या अन्य की आत्मा से अपक्रमता है. अहो गौतम ! जीव मिथ्यात्व मोहनीय व चारित्र मोहनीय वेदता हुवा अपनी आत्मा से अपक्रमे परंतु अन्यकी आत्मा से अपक्रमे नहीं. अहो भगवन् ! मोहनीय कर्म वेदनेवाले को पहिले पंडितपने की रुचि थी और फीर मिथ्यात्व की रुचि हुई वह कैसे ? अहो गौतम ! अपक्रमण से पहिले अपक्रमणकारी जीव इस जीवादि पदार्थ अथवा अहिंसादि वस्तु को जैसे जिनेश्वर भगवान्ने कहीं वैसे ही श्रद्धता था; अब मोहनीय कर्म के उदय से जीवादि पदार्थ व अहिंसादिक वस्तु को जैसे तीर्थंकरने कहीं वैसे श्रद्धे नहीं इसलिये निश्चय में उक्त प्रकार से मोहनीय कर्म वेदते हुवे जीव स्वात्मा से अपक्रमे ॥ ५ ॥ मोहनीय कर्म के आधिकार से

शब्दार्थ लिये गो० गौतम ने० नारकी जा० यावत् मो० मोक्ष ॥ ६ ॥ ए० यह भं० भगवन् पो० पुद्गल ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत स० काल भु० हुवा इ० ऐसे व० कहना हं० हां गो० गौतम ए० यह पो० पुद्गल ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत स० काल भु० हुवा इ० ऐसा व० कहना ए० यह भं० भगवन् पो० पुद्गल प० वर्तमान काल में सा० शाश्वत स० काल भ० है इ० ऐसा व० कहना

सूत्र गरणं, जहा जहा तं भगवया दिट्ठं तहा तहा तंविपरिणमिस्सतीति. सेतेणट्ठेणं गोयमा ! नेरइयस्सवा जाव मोक्खो ॥ ६ ॥ एसणं भंते ! पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वंसिया ? हंता गोयमा ! एसणं पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वं सिया । एसणं भंते ! पोग्गले पडुप्पण्णसासयं समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा ! तंचेव उच्चारेयव्वं । एसणं भंते ! पोग्गले

भावार्थ नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता किये हुवे कर्मों से मुक्त नहीं हो सकते हैं ॥ ६ ॥ उपर कर्म की चिन्तवना की यह कर्म पुद्गल रूप हैं इस लिये परमाणु आदि पुद्गल की चिन्तवना कहते हैं. अथवा परिणाम अधिकार से पुद्गल परिणाम कहते हैं. अहो भगवन् ! अतीत काल में सब पुद्गल अनंत, शाश्वत थे ऐसा कहना ? हां गौतम ! परमाणु पुद्गल अतीत काल में सदा थे. ऐसा कदापि नहीं हुवा कि अतीत काल में शून्य समय [काल] हुवा. अहो भगवन् ! वर्तमान काल में सब पुद्गल क्या शाश्वत है ऐसा

शब्दार्थ मोक्ष ए० ऐसे म० मैंने दु० दोप्रकारे क० कर्म प० प्रदेशप०प्रदेश कर्म अ० अनुभाग कर्म त० तहां जं० जो प० प्रदेश कर्म तं० उस को णि० निश्चय वे० वेदे जं० जो अ० अनुभाग कर्म तं० उस को अ० कित-नेक वे० वेदे अ० कितनेक नो० नहीं वे० वेदे णा० जाना अ० अरिहंतने सु० सूना अ० अरिहंतने वि० विशेषजाना अ० अरिहंतने इ० इस कर्म को अ० यह जीव उ० उदय आये वे० वेदना वे० वेदेगा अ० जैसे कर्म अ० बांधे हैं ज० जैसे तं० उनको भ० भगवन्तने दि० देखे त० तैसे प० परिणमेंगे से० इस

सूत्र दुविहे कम्मे पण्णत्ते तंजहा, पएसकम्मेय, अणुभागकम्मेय । तत्थणं जं तं पएसकम्मं तं नियमा वेदेइ, तत्थणं जं तं अणुभागकम्मं तं अत्थेगइयं वेदेइ अत्थेगइयं नो वेदेइ णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया, इमं कम्मं अयंजीवे अब्भोवगमियाए वेयणाए वेयइस्सइ, इमंकम्मं अयं जीवे उवक्कमियाए वेयणाए वेयइस्सइ, अहाकम्मं अहाणि

भावार्थ वादिक अनेक प्रकार से भिन्न प्रकार के विभाग करके जाने हैं, अरिहंत को ' यह कर्म है, यह जीव है' ऐसा प्रत्यक्ष है. प्रवर्ज्या काल से लेकर ब्रह्मचर्य भूमिशयन, केशलोचनादिक का अंगीकार से निवर्तना सो अभ्युपगमिकी वेदना उस को यह जीव वेदेगा. स्वयमेव उदय में आये हुवे अथवा उदीरणा से उदय में लाये हुवे कर्मों को वेदना सो औपक्रमिकी वेदना, उस को यह जीव वेदेगा. जैसे कर्म बांधे हैं, जैसे कर्म के देश कालादि है और जैसे २ भगवन्तने कर्म देखे वैसे २ परिणमेंगे. इसलिये अहो गौतम !

पदार्थ स०काल के०संपूर्ण संयम से के०संपूर्ण संवर से के०संपूर्ण ब्रह्मचर्य से के०संपूर्ण प्रवचन माता से सि० सिझें बु० बुझें जा० यावत् स० सर्व दु० दुःख का अं० अंतकिया गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स०समर्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे वु० कहा जाता है जा० यावत् अं० अंत क० किया गो० गौतम जे० जो के० कोइ अं० अंत करने वाले अ० चरम शरीरी स० सर्व दु० दुःखों का अं० अंत क० किया क० करते हैं क० करेंगे स० सब ते० वे उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली भ० होकर त० पीछे सि० सिझते हैं बु० बुझते हैं मु० मुक्त होते हैं प० निर्वाणपाने

सूत्र केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलीहिं पवयणमायाहिं, सिज्झिसु, बुज्झिसु जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिंसु ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ! सेकेणट्ठेणं भंते ! एवंवुच्चइ, तंचेव जाव अंतं करिंसु ? गोयमा ! जेकेइ अंतकरावा अंतिम सरीरियावा सव्व दुक्खाणमंतं करिंसुवा, करिंतिवा, करिस्संतिवा, सव्वे

भावार्थ केवल संवर से, केवल ब्रह्मचर्य से व केवल आठ प्रवचन माता से सिझें, बुझें. यावत् सब दुःखों का अंत किया ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से छमस्थ मनुष्य सिझें, बुझें नहीं यावत् सब दुःखों का अंत किया नहीं ? अहो गौतम ! संसार के अंत करनेवाले व चरम शरीरी ने सब दुःखों का अंत किया, करते हैं, व करेंगे. वे सब केवलज्ञान, केवलदर्शन के

हं० हां गो० गौतम तं० तैसे व० कहना ए० यह भं० भगवन् पो० पुद्गल अ० अनागत में अ० अनंत सा० शाश्वत स० काल भ० होगा इ० ऐसा व० कहना हं० हां गो० गौतम तं० तैसे ही उ० कहना. ए० ऐसे खं० स्कन्ध में ति० तीन आ० आलापक ॥ ७ ॥ ए० ऐसे जी० जीव में ति० तीन आ० आलापक भा० कहना ॥ ८ ॥ छ० छद्मस्थ भं० भगवन् म० मनुष्य अ० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत

सूत्र

अणागयमणंतं सासयं समयं भाविस्सतीति वत्तव्वं सिया? हंता गोयमा ! तंचेव उच्चारेयव्वं ॥ एवं खंधेणवितिण्णि आलावगा ॥ ७ ॥ एवं जीवेणवि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा ॥ ८ ॥ छउमत्थेणं भंते ! मणूसे तीतमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं,

भावार्थ

कहना ? हां गौतम ! वर्तमान काल में सब पुद्गल शाश्वत है. अहो भगवन् ! अनागत काल में सब पुद्गल अनंतपना से शाश्वत रहेंगे ? हां गौतम ! सब पुद्गल शाश्वत रहेंगे. (परमाणु पुद्गल का संयोग मीलने से स्कंध होता है उन पर भी तीन आलापक जानना ॥ ७ ॥ पुद्गल का प्रतिपक्षी जीव है इस लिये जीव का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! अतीत काल में जीव था ? अहो गौतम ! जैसे तीन काल के तीन आलापक पुद्गल के कहे वैसे ही भूत, भविष्य व वर्तमान काल की अपेक्षा से जीव के भी तीन आलापक जानना ॥ ८ ॥ अब जीव के अधिकार से उद्देशा के अंत तक यथोत्तर प्रधान जीव की वक्तव्यता कहते हैं. अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य अतीत, अनंत व शाश्वत काल में संपूर्ण शुद्ध संयम से,

१ इसमें केवल ज्ञान व अवधिज्ञान ऐसे दोनोंज्ञान रहितको लेना क्योंकि अवधिज्ञानका अधिकार आगेआवेगा

मूलार्थ — स०काल के०संपूर्ण संयम से के०संपूर्ण संवर से के०संपूर्ण ब्रह्मचर्य से के०संपूर्ण प्रवचन माता से सि० सिझें बु० बुझें जा० यावत् स० सर्व दु० दुःख का अं० अंतकिया गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स०समर्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे वु० कहा जाता है जा० यावत् अं० अंत क० किया गो० गौतम जे० जो के० कोइ अं० अंत करने वाले अ० चरम शरीरी स० सर्व दु० दुःखों का अं० अंत क० किया क० करते हैं क० करेंगे म० सब ते० वे उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली भ० होकर त० पीछे सि० सिझते हैं बु० बुझते हैं मु० मुक्त होते हैं प० निर्वाणपाते

सूत्र — केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलीहिं पवयणमायाहिं, सिज्झिसु, बुज्झिनु जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिंसु ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ! सेकेणट्ठेणं भंते ! एवंवुचइ, तंचेव जाव अंतं करिंसु ? गोयमा ! जेकेइ अंतकरावा अंतिम सरीरियावा सव्व दुक्खाणमंतं करिंसुवा, करिंतिवा, करिस्संतिवा, सव्वे

भावार्थ — केवल संवर से, केवल ब्रह्मचर्य से व केवल आठ प्रवचन माता से सिझें, बुझें, यावत् सब दुःखों का अंत किया ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से छद्मस्थ मनुष्य सिझें, बुझें नहीं यावत् सब दुःखों का अंत किया नहीं ? अहो गौतम ! संसार के अंत करनेवाले व चरम शरीरी ने सब दुःखों का अंत किया, करते हैं, व करेंगे. वे सब केवलज्ञान, केवलदर्शन के

शब्दार्थ

है जा० यावत् स० सब दु० दुःखों का अं० अंत क० किया क० करते हैं क० करेंगे से० वह ते० इस लिये गो० गौतम जा० यावत् स० सब दु० दुःखों का अं० अंतक्रिया प० वर्तमान में ए० ऐसे न० विशेष सि० सिझते हैं भा० कहना अ० अनागत में ए० ऐसे न० विशेष सि० सिझेंगे भा० कहना ॥ ९ ॥ ज० जैसे छ० छद्मस्थ त० तैसे अ० अवधि त० तैस प० परमावधि ति० तीन २ आ० आलापक भा० कहना ॥ १० ॥ के० केवली भं० भगवन् म० मनुष्य ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत स०

सूत्र

ते उप्पन्न नाणदंसणधरा अरहा जिणे केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति, जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिंसुवा करिंतिवा करिस्संतिवा से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव सव्व दुक्खाणमंतं करिंसु । पडुपन्नेवि एवं चेव, नवरं सिज्झंति भाणियव्वं. अणागएवि एवंचेव, नवरं सिज्झिस्संति भाणियव्वं ॥ ९ ॥ जहा छउमत्थो तहा आहोहिओवि, तहा परमोहिओवि तिन्नितिन्नि आलावगा भाणियव्वा ॥ १० ॥ केवलीणं भंते ! मणूसे तीतमणंतं सासयं समयं जाव अंतं करेंसु ? हंता

भावार्थ

धारक जिन हुवे पीछे सिझते हैं, बुझते हैं व निर्वाण को प्राप्त होते हैं यावत् सब दुःखों का अंत किया, करते हैं व करेंगे. इसलिये अहो गौतम ! सब दुःखों का अंत किया वहां वर्तमान काल में सिझते हैं व भविष्य काल में सिझेंगे कहना शेष सब पहिले जैसे कहना ॥ ९ ॥ जैसे छद्मस्थ का कहा वैसे ही अवधि व परम अवधिज्ञानी का जानना ॥ १० ॥ अब केवल ज्ञानी की पृच्छा करते हैं. अहो

शब्दार्थ काल जा० यावत् अं० अंत किया हं० हां गो० गौतम जा० यावत् अं० अंतक्रिया ए० ये ति०तीन आ० आलापक भा० कहना छ० छद्मस्थ को ज० जैसे ण० विशेष सि० सिझे सि० सिझते हैं सि० सिझेंगे ॥ ११ ॥ से० वह भं० भगवन् ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत स० काल प० वर्तमान सा० शाश्वत स० समय अ० अनागत अ० अनंत सा० शाश्वत स० समय जे० जो के०कोई अं०अंत करने वाले

सूत्र गोयमा सिज्झिंसु जाव अंतंकरिंसु एते तिन्नि आलावगा भाणियव्वा छउमत्थस्स जहा णवरं सिज्झंसु सिज्झंति, सिज्झिस्संति॥ ११॥ सेणूणं भंते! तीतमणंतं सासयं समयं पडुप्पन्नंवा सासयंसमयं अणागय मणंतंवा सासयं समयं। जेकेइ अंतकरावा अंतिम सरीरियावा सव्व दुक्खाण.

भावार्थ भगवन् ! केवली अतीत शाश्वत काल में सिझे, बुझे यावत् सब दुःखों का अंत किया ? हां गौतम ! सिझे यावत् अंत किया. ऐसे अतीत, अनागत व वर्तमान के तीन २ आलापक जानना. जैसे छद्मस्थ का कहा वैसे ही केवली का जानना मात्र विशेषता यह है कि अतीत काल में सिझे, वर्तमान में सिझते हैं और आगामिक में सिझेंगे ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! अतीत काल में अनंत शाश्वत समय में वर्तमान का भी शाश्वत समय में, अनागत काल के अनंत शाश्वत समय में जो कोई अंत करनेवाले अन्तिम शरीरीने सब दुःखों का अंत किया, करते हैं व करेंगे वे क्या सब उत्पन्न केवल ज्ञान, केवल दर्शन के धारक अरिहंत केवली हुवे पीछे सिझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं ? हां गौतम ! अतीत

शब्दार्थ अं० चरिम शरीरी स० सर्व दुःख का अं० अंतक्रिया क० करता है क० करेगा स० सर्व ते० वे उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दं० दर्शन वाले अ० अरिहंत जिं० जिन के० केवली भ० होकर त० पीछे सि० सिझते हैं जा० यावत् अं० अंत क० करेंगे हं० हां गो० गौतम ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत जा० यावत् अं० अंत करेंगे ॥ १२ ॥ से० वह भं० भगवन् उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली अ० चाहिए उतना व० कहना हं० हां गो० गौतम उ० उत्पन्न

सूत्र मंतं करिंसुवा, करिंतिवा, करिस्संतिवा ॥ सव्वेते उप्पण्ण नाण दंसण धरा अरहा जिणे केवली भवित्ता, तओ पच्छा सिज्झंति जाव अंतं करिस्संतिवा ? हंता गोयमा ! तीत मणंतं सासयं जाव अंतंकरिस्संतिवा ॥ १२ ॥ सेणूणं भंते ! उप्पण्ण नाण दंसण धरे अरहा जिणे केवली अलमत्थुत्ति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा ! उप्पण्ण

भावार्थ काल के अनंत शाश्वत समय में सिझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक, अरिहंत जिन केवली ही संपूर्ण ज्ञानवाले हुवे! उन से अधिक ज्ञान प्राप्त करने को अन्य कोई भी समर्थ नहीं है ? हां गोतम ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक अरिहंत जिन केवली ही संपूर्ण ज्ञानवाले हैं अन्य कोई इस से आधिक ज्ञानी नहीं है. अहो भगवन् ! आपने कहा

शब्दार्थ नाः ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली अ० चाहिए उतना व० कहना से० ऐसे ही भं० भगवन्. ॥ १ ॥ ४ ॥ ÷ ÷ ÷

क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम स० सात पु० पृथ्वी प० प्ररूपी र० रत्न प्रभा जा० यावत् त० तमतम इ० इस भं० भगवन् र० रत्नप्रभा पृथ्वी में क० कितने नि० नरकावास

सूत्र

नाण दंसण धरे अरहा जिणे केवली अलमत्थुत्ति वत्तव्वं सिया सेवं भंते भंतेत्ति पढमसए चउत्थोद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ४ ॥ * *

कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—रयणप्पभा जाव तमतमा । इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए कइ निरयावास

भावार्थ वह वैसे ही है अन्यथा नहीं है. यह पहिला शतकका चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ४ ॥ ×

पहिले उद्देशे के अंत में अरहंतादिक कहे वे पृथ्वी पर हुवे इस लिये इस उद्देशे में पृथ्वी संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! कितनी पृथ्वी कहीं ? अहो गौतम ! पृथ्वी सात कहीं उन के नाम १ रत्नप्रभा इस में रत्नों की प्रभा २ शर्कर प्रभा इस में कंकरों की प्रभा ३ वालु प्रभा जिस में वालु की कान्ति ४ पंक प्रभा जिस में अशुचि रूप कर्दम की कान्ति ५ धूम प्रभा जिस में धूम्र सरिखी कान्ति ६ अंधकार की प्रभा सो तम प्रभा और ७ महा अंधकार की प्रभा. सो तमतम प्रभा. अहो भगवन् !

शब्दार्थ अं० चरिम शरीरी स० सर्व दुःख का अं० अंतक्रिया क० करता है क० करेगा स० सर्व ते० वे उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दं० दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली भ० होकर त० पीछे सि० सिझते हैं जा० यावत् अं० अंत क० करते हैं० हां गो० गौतम ती० अतीत काल में अ० अनंत सा० शाश्वत जा० यावत् अं० अंत करेंगे ॥ १२ ॥ से० वह भं० भगवन् उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दर्शन वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली अ० चाहिए उवना व० कहना हं० हां गो० गौतम उ० उत्पन्न

सूत्र भंते करिंसुवा, करिंतिवा, करिस्संतिवा ॥ सव्वेते उप्पण्ण णाण दंसण धरा अरहा जिणे केवली भवित्ता, तओ पच्छा सिज्झंति जाव अंतं करिस्संतिवा ? हंता गोयमा ! तीत मणंतं सासयं जाव अंतंकरिस्संतिवा ॥ १२ ॥ सेणूणं भंते ! उप्पण्ण णाण दंसण धरे अरहा जिणे केवली अलमत्थुत्ति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा ! उप्पण्ण

भावार्थ काल के अनंत शाश्वत समय में सिझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक, अरिहंत जिन केवली ही संपूर्ण ज्ञानवाले हुवे उन से अधिक ज्ञान प्राप्त करने को अन्य कोई भी समर्थ नहीं है ? हां गौतम ! उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक अरिहंत जिन केवली ही संपूर्ण ज्ञानवाले हैं अन्य कोई इस से अधिक ज्ञानी नहीं है. अहो भगवन् ! आपने कहा

शब्दार्थ तीन स० सात वि० विमान स० शत च० चार क० देवलोक में ए० अग्यारह उ०उत्तर हे० नीचे की स० सात उ० उत्तर म० मध्यकी स० शत उ० उपर की पं० पांच अ० अनुत्तर विमान में ॥ ३ ॥ पु० पृथ्वी ठि० स्थिति ओ० अवगाहना स० शरीर सं० संघयण सं० संठाण ले० लेश्या दि० दृष्टि णा० ज्ञान जो० जोग उ० उपयोग द० दश स्थान इ० इस भं० भगवन् र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी के तीं०

सूत्र एक्कारसुत्तरहेट्ठिमए सत्तुत्तरंच माज्झिमए ॥ सयमेयं उवरिमए ॥ पंचेवय अणुत्तर-विमाणा ॥ ३ ॥ १ ॥ पुढवि ठिइ ओगाहण सरीर संघयण मेव संठाणे ॥ लेस्सा दिट्ठी णाणे, जोगुवओगे य दसठाणा ॥ १ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए

भावार्थ अच्युत इन दोनों में तीनसो. नवग्रैवेयक की प्रथम त्रिक में १११, दूसरी त्रिक में १०७, तीसरी त्रिक में १०० और उपर पांच अनुत्तर विमान के पांच सब मीलकर ८४९७०२३ विमान हुवे ॥ ३ ॥ अब आगे उद्देशा के लीये द्वार गाथासे बताते हैं. १ स्थिति २ अवगाहना ३ शरीर ४ संघयण ५ संठान ६ लेश्या ७ दृष्टि ८ ज्ञान ९ जोग १० उपयोग, इस में प्रथम स्थिति द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में तीस लाख नरकावासमें से प्रत्येक नरकावास में नारकी के कितने स्थिति स्थान कहे हैं ? अहो गौतम ! प्रत्येक नरकावास में असंख्याते स्थिति स्थान कहे हैं क्योंकी प्रथम पृथ्वी की अपेक्षासे नारकी की जघन्य दश हजार वर्ष की स्थिति है. और एक २ समय बढाते उत्कृष्ट एक सागरोपम की

शब्दार्थ जो० ज्योतिषी त्रि० विमान वास स० शत सहस्र सो० सौधर्म में भं० भगवन् क० कितने वि० विमान वास स० शतसहस्र गो० गौतम ब० बत्तीस विमानवास स० शतसहस्र ए० ऐसे ब० बत्तीस अ० अट्ठावीस ब० बारह अ० आठ च० चार स० शतसहस्र प० पचास च० चालीस छ० छ स० सहस्र स० सहस्रार में आ० आनत पा० प्राणत क० देवलोक च० चार स० शत आ० आरण अ० अच्युत में ति० प०

सूत्र ॥ सोहम्मेणं भंते ! कइविमाणा वास सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! बत्तीसं विमाणावास सयसहस्सा प० । एवं (गाथा) बत्तीसट्ठावीसा, बारस अट्ठ चउरो सयसहस्सा ॥ पण्णा चत्तालीसाछच्चसहस्सा सहस्सारे ॥१॥ आणय पाणयकप्पे, चत्तारि सयारणच्चुए तिण्णि ॥ सत्त विमाण सयाइं, चउसुवि एएसु कप्पेसु ॥ २ ॥

भावार्थ अप्, तेऊ, वायु, वनस्पतिकायिक जीव द्वीन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, वाणव्यंतर व ज्योतिषी के असंख्यात स्थान कहे हैं. अहो भगवन् ! सौधर्म देवलोक में कितने वास कहे हैं ? अहो गौतम ! सौधर्म देवलोक में बत्तीस लाख विमान वास कहे हैं. दूसरे ईशान देवलोक में अट्ठावीस लाख विमान कहे हैं तीसरे सनत्कुमार में बारह लाख विमान कहे हैं, चौथे माहेन्द्र देवलोक में आठ लाख पांचवे ब्रह्म देवलोक में चार लाख छठे लांतक में ५० हजार, सातवे महाशुक्र में ४० हजार, आठवे सहस्रार में छ हजार नववे आणत दशवे प्राणत में इन दोनों देवलोक में चारसो अग्यारवे आरण बारवे

शब्दार्थ वास स० शत सहस्र में ए० एकैक नि० नरका वास में ज० जघन्य ठि० स्थिति वाले व० वर्तते ने०

सूत्र सयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहण्णियाए ठिईए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ता ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्ज. कोहोवउत्ता, अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय, माणोवउत्ताय, । अहवा कोहोवउत्ताय मायोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय मायोवउत्ताय । अहवा कोहोवउत्ताय लोभोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय, लोभोवउत्ताय । अहवा कोहोवउत्ताय माणोवउत्तेय, मायोवउत्तेय; । कोहोवउत्ताय,

भावार्थ प्रकार का है. ॥ ४ ॥ अब इन स्थिति स्थान में क्रोधादि विषय का विभाग कर बताते हैं. अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासमें से प्रत्येक नरकावास में जघन्य स्थितिवाले नारकीरहे हैं उनमें से क्या क्रोधवाले ज्यादा हैं, ? मानवाले ज्यादा हैं ? मायावाले ज्यादा हैं ? अथवा लोभवाले ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! प्रत्येक नरक में जघन्य स्थिति वाले नारकी सदैव रहते हैं उन में क्रोध युक्त विशेष रहते हैं. इस से उन के २७ भागे किये हैं. और एकादि से संख्यात समयाधिक जघन्य स्थितिवाले नारकी हैं वे कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं भी हैं. इसलिये उसमें क्रोध सहित एक भी होवे अनेकभी होवे इससे

शब्दार्थ

तीस न० नरकावास स० शत सहस्र में ए० एकेक नि० नरकावास में ने० नारकी क० कितने ठि० स्थिति स्थान गो० गौतम अ० असंख्यात ठि० स्थिति स्थान प० प्ररूपे तं० वह ज० जघन्य ठि० स्थिति स० समयाधिक ज० जघन्य स्थिति दु० दो समयाधिक जा० यावत् अ० असंख्यात समयाधिक ज० जघन्य स्थिति त० उसयोग्य उ० उत्कृष्ट ठि० स्थिति ॥४॥ इ० इस र० रत्नप्रभा पृथ्वी में ती० तीन नि० नरका

सूत्र

तीसाए निरयावास सयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाणं केवइया ठिइट्ठाणा प० ? गोयमा ! असंखेज्जा ठिइट्ठाणा प० तं० जहाण्णिया ठिई समयाहिया, जहाण्णिया ठिई दुसमयाहिया, जाव असंखेज्ज समयाहिया जहाण्णिया ठिई. तप्पाउग्गुक्कोसिया ठिई ॥ ४ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास

भावार्थ

स्थिति होती है. उन में असंख्यात समय होते हैं इसलिये असंख्यात स्थिति स्थान होवे. वैसेही प्रत्येक नरकावास की अपेक्षासे भी असंख्याते स्थिति स्थान होवे. जो रत्नप्रभा के पहिले पाथडे में जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट ९० हजार वर्ष की स्थिति है वह एक स्थिति स्थान वह भी प्रत्येक नरक में भिन्न है. उन से एक समय अधिक सो दूसरा जघन्य स्थिति स्थान वह भी अनेक प्रकार का है. ऐसेही असंख्यात समय अधिक जघन्य स्थिति स्थान वह भी अनेक प्रकार का है. स्थिति स्थानक प्रत्येक नरक व प्रत्येक पाथडे में भिन्न है. ऐसेही विवक्षित नरकावास को योग्य उत्कृष्ट स्थिति स्थानक भी अनेक

शब्दार्थ वास स० शत सहस्र में ए० एकैक नि० नरका घास में ज० जघन्य ठि० स्थिति वाले व० वर्तते ने०

सूत्र सयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहण्णियाए ठिईए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ता? गोयमा! सव्वेवि ताव होज्ज. कोहोवउत्ता, अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय, माणोवउत्ताय, । अहवा कोहोवउत्ताय मायोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय मायोवउत्ताय । अहवा कोहोवउत्ताय लोभोवउत्तेय, । अहवा कोहोवउत्ताय, लोभोवउत्ताय । अहवा कोहोवउत्ताय माणोवउत्तेय, मायोवउत्तेय; । कोहोवउत्ताय,

भावार्थ प्रकार का है. ॥ ४ ॥ अब इन स्थिति स्थान में क्रोधादि विषय का विभाग कर बताते हैं. अहो भगवन्! रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासमें से प्रत्येक नरकावास में जघन्य स्थितिवाले नारकीरहे हैं उनमें से क्या क्रोधवाले ज्यादा हैं, ? मानवाले ज्यादा हैं ? मायावाले ज्यादा हैं ? अथवा लोभवाले ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! प्रत्येक नरक में जघन्य स्थिति वाले नारकी सदैव रहते हैं उन में क्रोध युक्त विशेष रहते हैं. इस से उन के २७ भागे किये हैं. और एकादि से संख्यात समयाधिक जघन्य स्थितिवाले नारकी हैं वे क्वचित् हैं और क्वचित् नहीं भी हैं. इसलिये उसमें क्रोध सहित एक भी होवे अनेकभी होवे इससे

शब्दार्थ नारकी किं० क्या को० क्रोधयुक्त मा० मा युक्त मा० मायायुक्त लो० लोभयुक्त स० सर्व ता० तैसा

सूत्र माणोवउत्तेय मायोवउत्ता । कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्तेय । कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता ॥ एवं कोहेणंमाणेणं लोभेणं चत्तारि भंगा ॥ अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ते मायोवउत्ते, लोभोवउत्ते. । अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ते, मायोवउत्ते लोभोवउत्ता । अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ते, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ते. अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता । अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ते, लोभोवउत्ते. । अहवा कोहोवउत्ता. माणोवउत्ता मायोवउत्ते, लोभोवउत्ता

भावार्थ इसमें अस्सी भांगे होते हैं. एकेन्द्रिय में चारों कषायवाले बहुत हैं इस से इन में भांगा नहीं होता है. × अब भांगे के भेद कहते हैं १ क्रोधवाले बहुत २ क्रोधके बहुत मान के एक ३ क्रोध के बहुत मान के बहुत ४ क्रोध के बहुत माया के एक ५ क्रोध के बहुत माया के बहुत ६ क्रोध के बहुत लोभ के एक ७ क्रोध के बहुत लोभ के बहुत (असंयोगी एक व द्विसंयोगी ६ मील ७ हुवे) ८ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक मायावंत एक ९ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक व मायावंत बहुत १० क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत व

+ जहां विरह है वहां अस्सीभांगे और जहां विरह नहीं है वहां सत्ताइस भांगे होते हैं. यह विरह उत्पाद की अपेक्षा से नहीं ग्रहण किया है क्यों की वहांपर चौविस मुहूर्त का उत्पाद विरह कहा है और भांगे भी सत्तावीस ही कहे हैं

शब्दार्थ हो० होवे ए० ऐसे स० सत्तावीस भं० भांगा ने० जानना॥४॥ इ० इस र० रत्नप्रभा पु०पृथ्वी में ती०तीस

सूत्र अहवा कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ते. अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ता, एवं सत्तावीसं भंगा नेयव्वा ॥ ५ ॥

भावार्थ मायावंत एक ११ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत व मायावंत बहुत. १२ बहुत मानवंत एक व लोभवंत एक १३ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक व लोभवंत बहुत १४ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत व लोभवंत एक १५ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत व लोभवंत बहुत १६ क्रोधवंत बहुत मायावंत एक व लोभवंत एक १७ क्रोधवंत बहुत मायावंत एक व लोभवंत बहुत १८ क्रोधवंत बहुत मायावंत बहुत व लोभवंत एक १९ क्रोधवंत बहुत मायावंत बहुत व लोभवंत बहुत २० क्रोधवंत बहुत मानवंत एक, मायावंत एक व लोभवंत एक २१ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक मायावंत एक व लोभवंत बहुत २२ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक मायावंत बहुत व लोभवंत एक २३ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत मायावंत एक व लोभवंत एक २४ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत मायावंत एक व लोभवंत एक २५ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत मायावंत एक व लोभवंत बहुत २६ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत मायावंत बहुत व लोभवंत एक २७ क्रोधवंत बहुत, मानवंत बहुत मायावंत बहुत व लोभवंत बहुत ये सब मीलकर २७ भांगे जघन्य स्थिति वाले नारकी में होते हैं. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! एक समय से अधिक समय

शब्दार्थ नि० नरकावास स० शत सहस्र में ए० एकेक नि०नरकावास में स० समयाधिक ज० जघन्य ठि० स्थिति में व० वर्तते ने० नारकी किं० क्या को० क्रोधयुक्त मा० मानयुक्त मा० मायायुक्त लो० लोभयुक्त गो०

सूत्र इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास सयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि समयाहियाए जहण्णट्ठिईए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता, माणोवउत्ता, मायोवउत्ता, लोभोवउत्ता ? गोयमा ! कोहोवउत्तेय, माणोवउत्तेय, मायोवउत्तेय, लोभोवउत्तेय । कोहोवउत्ताय, माणोवउत्ताय, मायोवउत्ताय, लोभोवउत्ताय॥ अहवा

भावार्थ की जघन्य स्थितिवाले नारकी क्या क्रोधवाले ज्यादा हैं? मानवाले ज्यादे हैं? मायावाले ज्यादा हैं? या लोभवाले ज्यादा है? अहो गौतम! एक समय से अधिक समय की व संख्यात समय से अधिक समय की जघन्य स्थिति वाले नारकी होवे और नभी होवे इसलिये इस में अस्सी भांगे होते हैं. उस में असंयोगी आठ भांगे १ क्रोध का एक २ मान का एक ३ माया का एक ४ लोभ का एक ५ क्रोध का बहुत ६ मान का बहुत ७ माया का बहुत व ८ लोभ का बहुत. द्वि संयोगी भांगे २४-१ क्रोधवंत एक मानवंत एक २ क्रोधवंत एक मानवंत बहुत ३ क्रोधवंत बहुत मानवंत एक ४ क्रोधवंत बहुत मानवंत बहुत ५ क्रोधवंत एक मायावंत एक ६ क्रोधवंत एक मायावंत बहुत ७ क्रोधवंत बहुत मायावंत एक ८ क्रोधवंत बहुत मायावंत बहुत ९ क्रोधवंत एक लोभवंत एक १० क्रोधवंत एक लोभवंत बहुत ११ क्रोधवंत बहुत लोभवंत

१२.

शब्दार्थ गौतम को० क्रोधयुक्त मा० मानयुक्त मा० मायायुक्त लो० लोभयुक्त ए० ऐसे अ० असी भं० भांगा ने० जानना ए० ऐसे जा० यावत् सं० संख्यात स० समयाधिक ठि० स्थिति वाले अ० असंख्यात स० समयाधिक स्थिति वाले त० उसयोग्य उ० उत्कृष्ट ठि० स्थिति वाले स० सत्तावीस भं० भांगे भा० कहना. ॥६॥

सूत्र कोहोवउत्तेय, माणोवउत्तेय, अहवा कोहोवउत्तेय माणोवउत्ताय एवं असीइ भंगा नेयव्वा ॥ एवं जाव संखेज्ज समयाहिया ठिई, असंखेज्ज समयाहिया ठिईए, तप्पाउग्गुक्कोसियाए ठिईए सत्तावीसं भंगा भाणियव्वा॥६॥इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास

भावार्थ एक१२ क्रोधवंत बहुत लोभवंत बहुत१३ मानवंत एक मायावंत एक१४मानवंत एक मायावंत बहुत १५मानवंत बहुत मायावंत एक १६ मानवंत बहुत मायावंत बहुत१७ मानवंत एक लोभवंत एक१८ मानवंत एक लोभवंत बहुत १९ मानवंत बहुत लोभवंत एक २० मानवंत बहुत व लोभवंत बहुत २१ मायावंत एक लोभवंत एक २२ मायावंत एक लोभवंत बहुत २३ मायावंत बहुत लोभवंत एक २४ मायावंत बहुत व लोभवंत बहुत. त्रिसंयोगी भांग ३२-१ क्रोधवंत, मानवंत, मायावंत एक, अनेक ऐसे मीलकर ३२ भांगे होते हैं और चतुःसंयोगी के १६ भांगे होते हैं यों सब मील कर जघन्य स्थिति के नारकी में एक से असी पर्यंत भांगे होते हैं. और संख्यात समय से अधिक समय तक के जघन्य स्थिति वाले नारकी से लगाकर उत्कृष्ट स्थिति वाले तक सत्तावीस भांगे होते हैं यह प्रथमद्वार हुआ

शब्दार्थ

द० दंडक भा० कहना ॥ ६ ॥ जी० जीव भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रहगति स० प्राप्त अ० अविग्रहगति स० प्राप्त गो० गौतम सि० कदाचित् वि० विग्रहगति स० प्राप्त सि० कदाचित् अ० अविग्रहगति स० प्राप्त ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ७ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रह-

सूत्र

भाणियव्वं ॥ एवं णाणत्तं, एवं सव्वेवि सोलसदंडगा भाणियव्वा ॥ ६ ॥ जीवेणं भंते किं विग्गहगइ समावण्णए, अविग्गहगइ समावण्णए? गोयमा! सिय विग्गहगइ समावण्णए, सिय अविग्गहगइ समावण्णए एवं जाव वेमाणिए॥ जीवाणं भंते! किं विग्गहगइ समावण्णगा, अविग्गहगइ समावण्णगा? गोयमा! विग्गहगइ समावण्णगावि, अविग्गहगइ समावण्णगावि ॥ ७ ॥ नेरइयाणं भंते! किं विग्गहगइ

भावार्थ

च्यवन प्रायःगति पूर्वक होता है. इसलिये आगे गति का वर्णन कहते हैं. अहो भगवन्! गति करते जीव क्या विग्रह गति से जाता है या अविग्रह गति से जाता है? अहो गौतम! किसी समय जीव विग्रह गति से जाता है और किसी समय जीव अविग्रह गति से जाता है. ऐसा वैमानिक तक का जानना अब बहुत जीव आश्री प्रश्न करते हैं अहो भगवन्! बहुत जीव विग्रह गतिवाले हैं या अविग्रह गतिवाले हैं? विग्रहगतिवाले भी हैं और अविग्रहगतिवाले भी हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! क्या नारकी विग्रह

शब्दार्थ गति स० प्राप्त अ० अविग्रहगति स०प्राप्त गो०गौतम स० सर्व ता० तैसे हो० होवे ए० ऐसे जी० जीव ए० एकेन्द्रिय व० वर्जकर ति० तीन भांगे ॥ ८ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक म०ज्योतिवंत म०बलवंत म० यशस्वी म० महासुखी म०महानुभाव अ० नजदीक च० चवता किं० थोडाकाल हि० लज्जा दु० दुगं-

सूत्र समावण्णगा अविग्गहगइ समावण्णगा ? गोयमा ! सव्वेवि तावहोज्जा. अविग्गहगइ समावण्णगा, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय, विग्गहगइ समावण्णगेय, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय विग्गहगइ समावण्णगाय एवं जीव एगिंदिय वज्जो तिय भंगो ॥ ८ ॥ देवेणं भंते ! महड्डिए, महज्जुइए, महब्बले, महाजसे, महेसक्खे, महाणुभावे, अविउक्कंतियं चयमाणे किंचिकालं हिरवत्तियं, दुगं-

भावार्थ गति करनेवाले हैं या अविग्रह गति करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! नारकी में अविग्रहगतिवाले विशेष होने से अविग्रहगति में बहुवचन लीया है. और विग्रह गतिवाले थोडे होवे अथवा न होवे इसलिये एक वचन लिया है. इस के तीन भांगे होते हैं १. नारकी में सब जीव अविग्रहगति संयुक्त २ अविग्रहगतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त एक ३ अविग्रह गतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त बहुत. ऐसे ही एकेन्द्रिय के पांच दंडक छोडकर अन्य सब दंडक में उक्त तीनों भांगे पाते हैं. एकेन्द्रिय में विग्रहगतिवन्त व अविग्रहगति-वंत बहुत होने से भांगा नहीं होता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक, महाद्युतिवन्त, महाबलवन्त, महा

शब्दार्थ
च्छा प० परीषह आ० आहार नो० नहीं आ० आहार करे आ० आहारकरे आ० आहार करता आ० आहार करे प० परिणमता प०परिणमे प० क्षीण आ० आयुष्य वाला भ० होवे ज०जहां उ० उपजे त० उस आ० आयुष्य प०अनुभवे तं० उस ति०तिर्यंच आयुष्य म०मनुष्य आयुष्य गो० गौतम दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० मनुष्य आ० आयुष्य ॥ ९ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व०

सूत्र
छावत्तियं, परिसह वत्तियं, आहारं नो आहारेइ, अहेणं आहारेइ आहारेज्जमाणे आहारिए,परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणेय आउए भवइ, जत्थ उववज्जइ, तमाउयं पडिसंवेदेइ तिरिक्ख जोणियाउयंवा, मणुस्साउयंवा ? हंता गोयमा ! देवेणं महड्डिए जाव मणुस्साउयं वा ॥९॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सइंदिए वक्कमइ,

भावार्थ
सुखवाले, व महानुभाव देवों चवन होने का समय पास आया हुवा जानकर माता पिता का क्रीडा स्थान देख लज्जा आने से, शुक्र शोणित का आहार की दुर्गच्छा आने से व पुद्गल ग्रहणरूप अराति परिषह से किंचित्कालतक आहार करे नहीं परंतु चवे पीछे क्षुधा वेदनीय के उदय से आहार करे. ऐसा आहार किये हुवे, परिणमाये हुवे व प्रक्षीण आयुष्यवाले देव मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य क्या वेदे ? हां गौतम ! ऐसा महर्द्धिक देव मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य वेदे ॥ ९ ॥ गर्भ में उत्पन्न होने के कारन से गर्भ की अव-

शब्दार्थ उपजता किं० क्या स० सइन्द्रियपने व० उपजता है अ० अनिन्द्रियपने व० उपजता है गो० गौतम सि० कदाचित् स० सइन्द्रियपने व० उपजता है सि० कदाचित् अ० अनिंद्रियपने उपजता है से० वह के० कैसे गो० गौतम द० द्रव्येन्द्रिय प० प्रत्यय अ० अनिन्द्रिय व० उपजे भा० भाव इन्द्रिय प० प्रत्यय स० सइन्द्रिय व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ १० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता किं०

सूत्र अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेणं ॥ १० ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ,

भावार्थ स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता हुवा जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से जीव क्वचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि निवृत्त्युपकरण रूप, स्पर्शन, रस, घ्राण, चक्षुः व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुये पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित सइन्द्रिय होता है क्यों की ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती हैं. इसलिये अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है. ॥ १० ॥ इन्द्रिय

शब्दार्थ च्छा प० परीषह आ० आहार नो० नहीं आ० आहार करे आ० आहारकरे आ० आहार करता आ० आहार करे प० परिणमता प०परिणमे प० क्षीण आ० आयुष्य वाला भ० होवे ज०जहां उ० उपजे त० उस आ० आयुष्य प०अनुभवे तं० उस ति०तिर्यंच आयुष्य म०मनुष्य आयुष्य गो० गौतम दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० मनुष्य आ० आयुष्य ॥ ९ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व०

सूत्र छावत्तियं, परिसह वत्तियं, आहारं नो आहारेइ, अहेणं आहारेइ आहारेज्जमाणे आहारिए,परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणेय आउए भवइ, जत्थ उववज्जइ, तमाउयं पडिसंवेदेइ तिरिक्ख जोणियाउयंवा, मणुस्साउयंवा ? हंता गोयमा ! देवेणं महड्डिए जाव मणुस्साउयं वा ॥९॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सइंदिए वक्कमइ,

भावार्थ सुखवाले, व महानुभाव देवों चवन होने का समय पास आया हुवा जानकर माता पिता का क्रीडा स्थान देख लज्जा आने से, शुक्र शोणित का आहार की दुर्गच्छा आने से व पुद्गल ग्रहणरूप अरति परिषह से किंचित्कालतक आहार करे नहीं परंतु चवे पीछे क्षुधा वेदनीय के उदय से आहार करे. ऐसा आहार किये हुवे, परिणमाये हुवे व प्रक्षीण आयुष्यवाले देव मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य क्या वेदे ? हां गौतम ! ऐसा महर्द्धिक देव मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य वेदे ॥ ९ ॥ गर्भ में उत्पन्न होने के कारन से गर्भ की अव-

शब्दार्थ आहार आ० आहारकरे गो० गौतम मा० माता का ओ० रुधिर पि० पिताका सु० वीर्य तं० उस उ० दोनों सं० मिलाहुवा क० मलिन कि० किल्वीषरूप प० प्रथम आ० आहार आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० गयाहुवा किं० क्या आ० आहार आ० आहारकरे गो० गौतम जं० जो मा० माता ना० नानाप्रकार र० रस वि० विक्राति आ० आहारकरे त० उस का ए० एक दे० देश ओ० ओज आ० आहारकरे ॥१३॥ जी० जीव का भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० उत्पन्न हुवा अ० है उ०

सूत्र वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभय संसिटुं कलुसं किव्विसं, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! जं से माया णाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सणं भंते ! गब्भगयस्स

भावार्थ है. ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिलेहि क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने से किल्विष रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता है ? अहो गौतम ? गर्भवती स्त्री दुग्ध घृतादिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

शब्दार्थ क्या स० सशरीरी व० उपजे अ० अशरीरी व० उपजे गो० गौतम सि० कदाचित् स० सशरीरी व० उपजे सि० कदाचित् अ० अशरीरी व० उपजे से० वह के० कैसे गो० गौतम ओ० उदारीक वे० वैक्रेय आ० आहारक प० प्रत्यय अ० अशरीरी ते० तेजस क० कार्माण प० प्रत्यय स० सशरीरी व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ ११ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता प० प्रथम कं० कौनसा आ०

मूल असरीरी वक्कमइ ? गोयमा ! सिय ससरीरी वक्कमइ, सिय असरीरी वक्कमइ । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! ओरालिय वेउव्विय आहारयाइं पडुच्च असरीरी वक्कमइ ! तेया कम्माइं पडुच्च ससरीरी वक्कमइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ॥ ११ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं

भावार्थ शरीर को होती है इसलिये शरीर का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! क्या जीव शरीरी उत्पन्न होता है अथवा अशरीरी उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! जीव क्वचित् शरीरी उत्पन्न होता है और क्वचित् अशरीरी उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! किस कारण से ? अहो गौतम ! उदारिक वैक्रेय व आहारक इन तीनों शरीर की अपेक्षा से अशरीरी क्यों की ये तीनों शरीर एक स्थान से चवकर अन्य स्थान में उत्पन्न हुवे पीछे जीव को पाते हैं. गमन करते मार्ग में इन तीनों शरीर का अभाव है. तेजस व कार्माण शरीर की अपेक्षा से सशरीरी उत्पन्न होते हैं क्यों कि ये दोनों शरीर जीव को संसार अवस्था में सदैव रहते हैं इसलिये ऐसा कहा गया है कि कदाचित् शरीर सहित और कदाचित् शरीर रहित उत्पन्न होता

शब्दार्थ आहार आ० आहारकरे गो० गौतम मा० माता का ओ० रुधिर पि० पिताका सु० वीर्य तं० उस उ० दोनों सं० मिलाहुवा क० मलिन कि० किल्वीपरूप प० प्रथम आ० आहार आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० गयाहुवा किं० क्या आ० आहार आ० आहारकरे गो० गौतम जं० जो मा० माता ना० नानाप्रकार र० रस वि० विकृति आ० आहारकरे त० उस का ए० एक दे० देश ओ० ओज आ० आहारकरे ॥ १३ ॥ जी० जीव को भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० उत्पन्न हुवा अ० है उ०

सूत्र वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभय संसिट्ठं कलुसं किव्विसं, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सणं भंते ! गब्भगयस्स

भावार्थ है. ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिलेहि क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने से किल्विष रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता है ? अहो गौतम ? गर्भवती स्त्री दुग्ध घृतादिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

शब्दार्थ

वडीनीत पा० लघुनीत खे० थूंक सिं० श्लेष्म वं० वमन पि० पित्त गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गयाहुवा जं० जो आ० आहार करता है तं० उसको चि० इकठा करता है तं० उसको सो० श्रोतेन्द्रियपने जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रियपने अ० हड्डि अ० हड्डिकीमिंजी के० केश मं०श्मश्रु रो०रोम न०नखपने से०वह ते०इसलिये ॥ १४ ॥ जी०जीव भं०

मूत्र

समाणस्स अत्थि उच्चारेइवा, पासवणेइवा, खेलेइवा, सिंघाणेइवा, वंतेइवा, पित्तेइवा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे ! से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे जमाहारेइ तं चिणाइ, तं सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए, अट्ठि अट्ठिमिंज केस मंसुरोम नहत्ताए से तेणट्ठेणं ॥ १४ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे पभूमुहेणं

भावार्थ

रूप ओज आहार करता है. ॥ १३ ॥ जहां आहार होता है वहां निहार होता है इसलिये निहार संबंधि प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव को वडीनीत, लघुनीत खेंकार, श्लेष्म, वमन व पित्त क्या होता है ? अहो गौतम ! गर्भ में रहे हुवे जीव को यह नहीं होता है. अहो भगवन् ! ऐसा नहीं होने का क्या कारण है ? अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव जो आहार करता है वह सब आहार श्रोतेन्द्रियादि पांचो इन्द्रियपने, हड्डी, हड्डी की मिंजी, केश, श्मश्रु रोम व नखपने परिणमता है इस लिये इन जीवों को लघुनीत वडीनीत वगैरह नहीं होते हैं ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या

दार्थ

भगवन् ग० गर्भ में उत्पन्न मु० मुखसे का० कवल आ० आहार आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में उपजा स० सर्व तरफ से आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले अ० वारंवार आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले आ० कदाचित् आ० आहार करे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले मा० माताका जीव र० नाभिनाल पु० पुत्रका जीव र० नाभिनाल मा० माता का

सूत्र

कावलियं आहारं आहारित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा- जीवेणं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ आभिक्खण आहारेइ आभिक्खणं परिणामेइ आभिक्खणं उस्ससंई अभिक्खणं निस्ससइ, आहच्च आहारेइ आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ, माउ जीव रसहरणी पुत्तजीव रसहरणी माउ जीव पडिबद्धा पुत्तजीव

भावार्थ

कवल का आहार कर सकता है ? अहो गौतम ! यह अर्थयोग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ! अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव सब आत्मा से आहार करता है, परिणमाता है, उश्वास लेता है, नीश्वास लेता है, वारंवार आहार करता है, वारंवार परिणमाता है, वारंवार श्वासोश्वास लेता है, अथवा क्वचित् अहार करता है, परिणमाता है व श्वासोश्वास लेता है, गर्भवती स्त्री को नाभीस्थान में रसहरणी नामक एक नाडी नली रूप होती है. यह नाली गर्भस्थ जीव को स्पर्शकर रहती है. उस से वह जीव

शब्दार्थ

जीव प० प्रतिवद्ध पु० पुत्रका जीव फु० स्पर्शा हुवा त० इसलिये आ० आहार करे प० परिणमे अ० अथवा पु० पुत्रका जीव प० प्रतिवद्ध मा०माता का जीव से फु० स्पर्शा हुवा त० इस लिये चि०चिने उ० उपचेने से० वह ते० इसलिये जा० यावत् नो० नहीं मु० मुख से का० कवल आ० आहार आ० आहार करे ॥ १५ ॥ क० कितने भं० भगवन् मा० माता के अंग गो० गौतम त० तीन मा० माता के अंग प० प्ररूपे मं० मांस सो० रुधिर म० मस्तक ॥ १६ ॥ क० कितने भं० भगवन् पे० पिता के

सूत्र

फुडा, तम्हा आहारेइ, तम्हा परिणामेइ, अविरात्रियणं पुत्तजीव पडिवद्धा माउजीव फुडा, तम्हा चिणाइ, तम्हा उवचिणाइ. से तेणट्ठेणं जाव नो पभू मुहेणं कावलियं आहारं आहारित्तए ॥ १५ ॥ कइणं भंते ! माइअंगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ माइयंगा पण्णत्ता तंजहा मंससोणिए मत्थुलुंगे ॥ १६ ॥ कइणं भंते ! पेइयंगा प-

भावार्थ

आहार करता है और शरीर में परिणमाता है. दूसरी पुत्रजीवरसहरणी नाडी पुत्रके जीव की साथ बंधी हुई व माता की साथ स्पर्शी हुई है. इस से गर्भस्थ जीव के शरीर की वृद्धि होती है. इसीसे अहो गौतम ! कवल आहार लेने को गर्भस्थ जीव नहीं समर्थ होता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! माता के कितने अंग कहे हैं ? अहो गौतम ! माता के तीन अंग कहे हैं. मांस, रुधिर व मस्तक की मींजी. फेफसा अथवा कलेजा ऐसा भी अर्थ कितनेक करते हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पिता के कितने अंग हैं ? अहो गौतम !

पदार्थ

अंग गो०गौतम त०तीन पे०पिता के अंग अ० हड्डि अ०हड्डिकीमिंज के०केश मं०श्मश्रु रो०रोम न०नख॥१७॥ अ० माता पिता का भं०भगवन् स०शरीर के०कितना का०काल सं० रहे गो०गौतम जा० जितना का०काल भ० भवधारणीय स० शरीर अ० नाश न पामे ए० इतना का० काल सं० रहे अ० अब स०समय २ में वो० हीन होता च० चरिम का० काल स०समय में वो० नाश भ० होवे॥ १८ ॥ जी० जीव भं० भगवन्

सूत्र

पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पेइयंगा पण्णत्ता तंजहा अट्ठि, अट्ठिमिंजा, केसमंसुरोमनहे ॥ १७ ॥ अम्मा पेइएणं भंते ! सरीरए केवइयं कालं संचिट्ठइ ? गोयमा ! जावइयं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावण्णे भवइ, एवतियं कालं संचिट्ठइ. अहेणं समए समए वोयसिज्जमाणे चरिम काल समयंसि वोच्छिण्णे भवइ ॥ १८ ॥ जीवेणं

भावार्थ

शरीर में पिता के तीन अंग होते हैं. १ अस्थि, २ अस्थि की मींजी ३ केश श्मश्रु रोम व नख. ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! माता व पिता के अंग जीव की साथ कितने काल तक सम्बन्ध रखते हैं. ? अहो गौतम ! जहांलग मनुष्यादिक का भवधारणीय शरीर विनाश होवे नहीं वहां लग माता व पिता के अंग रहते हैं. अर्थात् शरीर का विनाश होनेपर इन अंगों का भी विनाश होता है. जिस समय से माता व पिता के अंगों संबंधी आहार ग्रहण किया था उस समय से लगाकर प्रति समय क्षीण होते २ अन्तिम काल में

शब्दार्थ ग० गर्भ में ग० रहाहुवा ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० कितनेक उ० उत्पन्न होवे अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे से० वह के० कैसे गो० गौतम स० संज्ञीपंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्तिसे प० पर्याप्त वी० वीर्यलब्धिसे वे० वैक्रेयलब्धिसे प० शत्रुसैन्य आ० आया हुवा सो० सुनकर नि० अवधारकर प० प्रदेश नि० बहार निकाले वे० वैक्रेय समुद्घात से स० ग्रहण करे स० ग्रहण करके

सूत्र भंते गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा॥ सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीएहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए पराणियं आगयं सोच्चा निसम्म पएसे नि-

भावार्थ नष्ट होजाते हैं॥ १८॥ अब गर्भस्थ जीव कदाचित् गर्भ में ही काल अवस्था को प्राप्त होवे तो कहां पर उत्पन्न होता है उस संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भस्थ जीव आयुष्य पूर्ण होने से कालकर क्या नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक जीव नरक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस तरह से गर्भस्थ जीव नारकी में उत्पन्न होते हैं अहो गौतम ! कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव राणी की कुक्षि में उत्पन्न होवे अर्थात् राजपुत्र होवे. वहां उन को पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे पूर्व करणी के प्रभाव से वीर्य लब्धि व वैक्रेय लब्धि की प्राप्ति होवे.

दार्थ चा० चतुरंगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरंगी से० सैन्य से प०शत्रु शैन्य की स०साथ सं० संग्राम सं० संग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग की इच्छा वाला का० काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी कांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु त०उसमें चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वाला अ०

सूत्र च्छुभइ,वेउव्विय समुग्घाएण समोहणइ,समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्व इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिंसंगामं संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए, रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

भावार्थ वह गर्भस्थ जीव ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी. ऐसी बात सुनकर, अवधारकर जीव के प्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों को ग्रहण कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्री की सेना साथ संग्राम करे. द्रव्य की अभिलाषावाला राज्यऋद्धि की अभिलाषावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग की अभिलाषावाला, शब्द रूपादि कामकी अभिलाषावाला धन की इच्छा से आसक्त बनाहुवा, राज्य, भोग, व काम की इच्छा से आसक्त बना हुवा. धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय

शब्दार्थ ग० गर्भ में ग० रहाहुवा ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० कितनेक उ० उत्पन्न होवे अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे से० वह के० कैसे गो० गौतम स० संज्ञीपंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्ति प० पर्याप्त वी० वीर्यलब्धिसे वे० वैक्रियलब्धिसे प० शत्रुसैन्य आ० आया हुवा सो० सुनकर नि० अवधारकर प० प्रदेश नि० बहार निकाले वे० वैक्रिय समुद्घात से स० ग्रहण करे स० ग्रहण करके

सूत्र भंते गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा। सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए पराणियं आगयं सोच्चा निसम्म पएसे नि-

भावार्थ नष्ट होजाते हैं॥ १८॥ अब गर्भस्थ जीव कदाचित् गर्भ में ही काल अवस्था को प्राप्त होवे तो कहां पर उत्पन्न होता है उस संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भस्थ जीव आयुष्य पूर्ण होने से, कालकर क्या नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक जीव नरक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस तरह से गर्भस्थ जीव नारकी में उत्पन्न होते हैं अहो गौतम ! कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव राणी की कुक्षि में उत्पन्न होवे अर्थात् राजपुत्र होवे, वहां उन को पूर्ण पर्याप्ति बांधकर पर्याप्ता हुए पीछे, पूर्व करणी के प्रभाव से वीर्य लब्धि व वैक्रिय लब्धि की प्राप्ति होवे,

शब्दार्थ कैसे गो० गौतम स० संज्ञी पं० पंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अं० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० अच्छा वचन सो० सुनकर नि० अव-धारकर त० पीछे भ० होवे सं० वैराग्य से उ० उत्पन्न स० श्रद्धा ति० तीव्र ध० धर्मानुराग र० रक्त जी० जीव ध० धर्म का कामी पु० पुन्य का कामी स० स्वर्ग का कामी मो० मोक्षका कामी ध० धर्म

सूत्र वज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा। सेकेणट्ठेणं? गोयमा! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धाम्मियं सुवयणं सोच्चा, निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेणं जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए; मोक्खकामए; धम्मकंखिए,

भावार्थ कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन्! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! कोई जीव धर्मिष्ठ स्त्री की कुक्षि में संज्ञी पंचेन्द्रियपने उत्पन्न हुवा. वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे तथारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व तीव्र धर्मानुराग से रक्त बनगया. फीर वह श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलाषी बनाहुवा, पुण्य का

शब्दार्थ अर्थयुक्त अ० रहाहुवा करण भा० भावना भं० भावता ए० इन अं० अंतर में का० काल क० करे ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे से० वह ने० इस लिये गो० गौतम जा० यावत् अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे. ॥ १९ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० रहाहुवा दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम अ० कितनेक उ० उत्पन्न होवे अ० कितनेक नो० नहीं उ० उत्पन्न होवे से० वह के०

सूत्र

कंखिए, अत्थ पिवासिए, रज्जपिवासिए भोगपिवासिए काम पिवासिए, तच्चित्ते, तम्मणे, तल्लेस्से, तदज्झवसिए तात्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते, तदप्पिय करणे तब्भावणा भाविए एयंसिणं अंतरंसि कालं करेज्जा नेरइएसु उववज्जइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥ १९ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे देवलोगेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उव-

बनाहुवा, तीन अशुद्ध लेश्या से ध्यानयुक्त, काम भोगों की भावना भावता हुवा व करण करावण व अनुमोदन रूप अध्यवसाय की प्रबलता करता हुवा वह जीव यदि उसी समय काल कर जावे अर्थात् आयुष्य पूर्ण कर के चवे तो वह नरक गतिमें उत्पन्न होवे इसलिये अहो गौतम! कितनेक जीव नरक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक नहीं होते हैं ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव यदि आयुष्य पूर्ण कर जावे तो क्या देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और

शब्दार्थ फल जैसे अ० होवें चि० खडारहे नि० बैठे तु० सोवें मा० माता सु० सोती होवें सु० सोवे जा० जगती होवें जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दुःखी होती दु० दुःखी होवे हं० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दुःखी होते दु० दुःखी भ० होवे ॥ २१ ॥ प० प्रसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांवसे आ० आवे स० सीधा आ० आवे ति० तिच्छी आ०

सूत्र अंबखुज्जएवा, अच्छेज्जवा, चिट्ठेज्जवा, निसीएज्जवा, तुयट्टेज्जवा; माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हंता गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेणं पसवण काल समयंसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

भावार्थ जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकले पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है वह बतलाते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या उत्तान - छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पडा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान बैठा रहता है, खडा होता है, बैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है, माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गौतम ! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं. ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

शब्दार्थ का कांक्षी पु० पुन्य का कांक्षी स० स्वर्ग का कांक्षी मो० मोक्ष का कांक्षी ध० धर्म पि० पिपासु पु० पुन्य पिपासु स० स्वर्ग पिपासु मो० मोक्ष पिपासु त० उस में चित्त वाला म० मनवाला ले० लेश्या वाला अ० अध्यवसाय वाला अ० अर्थयुक्त अ० अर्पित करण वाला उ० उस भा० भावना से भा० भावता ए० इस अं० अंतर में का० काल क० करे दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे से० वह ते० इस लिये गो० गौतम ॥ २० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० गया हुवा उ० उलटा होवे पा० पसली जैसे अं० आम्र

मूत्र पुण्णकंखिए, सग्गकंखिए, मोक्खकंखिए; धम्मापिवासिए, पुण्णापिवासिए, सग्गापिवासिए, मोक्खापिवासिए, तच्चित्ते, तम्मणे, तल्लेसे तदज्झवसिए, तदट्ठोवउत्ते; तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयंसिणं अंतरंमि कालं करेज्जा देवलोएसु उववज्जइ सेतेणंट्ठेणं गोयमा ॥ २० ॥ जीवेणं भंते गब्भगए समाणे उत्ताणएवा, पासल्लएवा

भावार्थ कामी, स्वर्ग का कामी व मोक्ष का कामी; धर्म, पुण्य, स्वर्ग व मोक्षका कांक्षी; धर्म, पुण्य, स्वर्ग व मोक्ष का पिपासु, धर्मादिमें तथा प्रकारका चित्तवाला, तन्मय, तीनशुभ लेश्यावन्त, वैसेही अध्यवसाय युक्त, उस अर्थ प्रयोजन युक्त, उसी अर्थ में आत्मा को अर्पण करनेवाला व वैसा भाव को चिन्तवनेवाला यदि उसी समय काल कर जावे तो देवलोक में देवतापने उत्पन्न होता है. इस कारन से अहो गौतम! कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ॥ २० ॥ अब

शब्दार्थ फल जैसे अ० होवें चि० खडारहे नि० बैठे तु० सोवें मा० माता सु० सोती होवें सु० सोवे जा० जगती होवें जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दुःखी होती दु० दुःखी होवे हं० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दुःखी होते दु० दुःखी भ० होवे ॥ २१ ॥ प० प्रसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांवसे आ० आवे स० सीधा आ० आवे ति० तिर्च्छा आ०

सूत्र अंबखुज्जएवा, अच्छेज्जवा, चिट्ठेज्जवा, निसीएज्जवा, तुयट्टेज्जवा; माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हंता गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेणं पसवण काल समयंसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

भावार्थ जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकले पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है वह बतलाते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या उत्तान - छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पडा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान बैठा रहता है, खडा होता है, बैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है,माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गौतम ! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं. ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

शब्दार्थ आये वि० विनाश आ० पावे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म व० बांधे हुवे पु० स्पर्शे हुवे णि० निकाचित बांधे क० कीये प० स्थापे अ० तीव्र स्थापे अ० सन्मुख आये उ० उदय आये णो० नहीं उ० उपशांत हुवे दु० कुरूप दु० खराववर्ण वाला दु० दुर्गंधी दु० खरावर । वाला दु० खराव स्पर्श वाला अ० अनिष्ट अ० अकान्त अ० अप्रिय अ० अशुभ अ० अमनोज्ञ अ० अमनाम ही० हीनस्वर वाला दी० दीनस्वर

सूत्र च्छइ, विणिहाय मावज्जइ, वण्णवज्झाणिय से कम्माइं बद्धाइं, पुट्ठाइं, णिहित्ताइं, कडाइं, पट्ठवियाइं, अभिनिविट्ठाइं, अभिसमण्णगयाइं उदिण्णाइं, णोउवसंताइं भवंति, तओ भवइ, दुरूवे, दुवण्णे, दुग्गंधे, दुरसे, दुफासे, आणिट्ठे, अकंते, अप्पिए, असुभे, अमणुण्णे, अमणामे, हीणस्सरे, दीणस्सरे आणिट्ठस्सरे, अकंतस्सरे अप्पियस्सरे, असुभस्सरे,

भावार्थ प्राप्त होता है तब कितनेक जीव मस्तक से नीकलते हैं, और कितनेक पांव से नीकलते हैं, अथवा माता व जीव दोनों की घात न होवे वैसे नीकलते हैं, और अशुभ कर्मोदय से कदाचित् तिर्च्छा होजाता है तो नीकलने व नीकालने के अभाव से मृत्यु को प्राप्त होजाता है. अब गर्भ से नीकले बाद जो होता है सो कहते हैं, जिनोंने पूर्व भव में पापाचरण व अयोग्य कर्तव्य से निकाचित कर्मों का बंध किया है वैसेही जिन को मनुष्य तिर्यंचादि गति, पंचेंद्रियादि जाति, त्रसादि नामकर्म से व्यवस्थापित किये, तीव्र अनुभाव से स्थापित किये, उदय सन्मुख हुवे, स्वतः की उदीरना से उदय में आये और उपशान्त न हुवे, उन को अशुभ वर्ण, गंध,

शब्दार्थ अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण व० बध्य क० कर्म नो० नहीं ब० बंधेहुवे प० प्रशस्त ने० जानना. जा० यावत् आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन्. ॥ १ ॥ ७ ॥

× ×

सूत्र अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयणं, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइं नोबद्धाइं पसत्थं णेयव्वं जाव आदेज्जवयणं पच्चायाएवि भवइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥

* *

भावार्थ रस, स्पर्श होवे. उन को सब संयोग अनिष्ठ, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे. वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं. यह अशुभ कर्म का फलकहा और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उदय होते वेशुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे. वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले. सब में माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे. यह सब पुण्य फल जानना. अहो भगवन् ! आपने जो प्रतिपादन किया है वह सत्य है. यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥

× ×

शब्दार्थ आवे वि० विनाश आ० पावे व० वर्ण-व० वध्य क० कर्म व० बांधे हुवे पु० स्पर्शे हुवे णि० निकाचित बांधे क० कीये प० स्थापे अ० तीव्र स्थापे अ० सन्मुख आये उ० उदय आये णो० नहीं उ० उपशांत हुवे दु० कुरूप दु० खराववर्ण वाला दु० दुर्गंधी दु० खरावरस वाला दु० खराव स्पर्श वाला अ० अनिष्ट अ० अकान्त अ० अप्रिय अ० अशुभ अ० अमनोज्ञ अ० अमनाम ही० हीनस्वर वाला दी० दीनस्वर

सूत्र च्छइ, विणिहाय मावज्जइ, वण्णवज्झाणिय से कम्माइं बद्धाइं, पुट्ठाइं, णिहित्ताइं, कडाइं, पट्ठवियाइं, अभिनिविट्ठाइं, अभिसमण्णगयाइं उदिण्णाइं, णोउवसंताइं भवंति, तओ भवइ, दुरूवे, दुवण्णे, दुग्गंधे, दुरसे, दुफासे, अणिट्ठे, अकंते, अप्पिए, असुभे, अमणुण्णे, अमणामे, हीणस्सरे, दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे, अकंतस्सरे अप्पियस्सरे, असुभस्सरे,

भावार्थ प्राप्त होता है तब कितनेक जीव मस्तक से नीकलते हैं, और कितनेक पांव से नीकलते हैं, अथवा माता व जीव दोनों की घात न होवे वैसे नीकलते हैं, और अशुभ कर्मोदय से कदाचित् तिर्च्छा होजाता है तो नीकलने व नीकालने के अभाव से मृत्यु को प्राप्त होजाता है. अब गर्भ से नीकले बाद जो होता है सो कहते हैं. जिनोंने पूर्व भव में पापाचरण व अयोग्य कर्तव्य से निकाचित कर्मों का बंध किया है वैसेही जिन को मनुष्य तिर्यंचादि गति, पंचेंद्रियादि जाति, त्रसादि नामकर्म से व्यवस्थापित किये, तीव्र अनुभाव से स्थापित किये, उदय सन्मुख हुवे, स्वतः की उदीरना से उदय में आये और उपशान्त न हुवे, उन को अशुभ वर्ण, गंध,

शब्दार्थ

ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य कि० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र

लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणु-देवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ

के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध करे नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

शब्दार्थ

ए० एकान्त बा० अज्ञानी भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच का आ०आयुष्य प०बांधे म०मनुष्य का आ०आयुष्य प०बांधे दे०देव का आ० आयुष्य प०बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उपजे ति० तिर्यंच का आ० आयुष्य कि० करके ति० तिर्यंच में उ० उपजे म० मनुष्य का आ० आयुष्य कि० करके म० मनुष्य में उ० उपजे दे० देव का आ० आयुष्य कि०करके दे०देवलोक में उ०उपजे गो० गौतम ए०एकान्त बा०अज्ञानी म० मनुष्य

सूत्र

एगंत बालेणं भंते ! मणूसे किं नेरइयाउयं पकरेइ, तिरिआउयं पकरेइ, मणुआउयं पकरेइ, देवाउयं पकरेइ, नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जइ, मणुयाउयं किच्चा मणुएसु उववज्जइ, देवाउयं किच्चा देव-

भावार्थ

सातवे उद्देश में गर्भ की वक्तव्यता कही. गर्भ आयुष्य से होता है इसलिये आगे आयुष्य संबंधि प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! एकान्त बाल (मिथ्यात्वी) मनुष्य क्या नरक के आयुष्य का बंध करता है, मनुष्य के आयुष्य का बंध करता है, तिर्यंच के आयुष्य का बंध करता है, या देव के आयुष्य का बंध करता है ! और नरक के आयुष्य का बंध कर के क्या नरक में उत्पन्न होता है, तिर्यंच के आयुष्य का बंध कर के तिर्यंच में उत्पन्न होता है, मनुष्य के आयुष्य का बंधकर के मनुष्य में उत्पन्न होता है या देव

शब्दार्थ नै० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

शब्दार्थ मि० कदाचित् प० बांधे मि० कदाचित् नो० नहीं प० बांधे ज० यदि प० बांधे नो० नहीं णे० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे नो० नहीं ति० तिर्यंच का आ० आयुष्य प० बांधे नो० नहीं म० मनुष्य का आ० आयुष्य प० बांधे दे० देवता का आ० आयुष्य प० बांधे णो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे णो० नहीं ति० तिर्यंच नो० नहीं म० मनुष्य दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे से० वह के० कैसे जा० यावत् दे० देवका

सूत्र यं सिय पकरेइ सिय णो पकरेइ। जइ पकरेइ णो णेरइयाउयं पकरेइ णो तिरियाउयं पकरेइ णो मणुयाउयं पकरेइ देवाउयं पकरेइ णो नेरइयाउयं किच्चा णेरइएसु उववज्जइ, णो तिरि नो मणु देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ। सेकेणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ? गोयमा! एगंत पंडियस्सणं मणुस्सस्स केवलमेव दोगईओ पण्णायंति तंजहा—अंत-

भावार्थ पंडित मनुष्य किसी समय आयुष्य का बंध करता है और किसी समय आयुष्य का बंध नहीं करता है. जब आयुष्य का बंध करता है, तब नरक तिर्यंच व मनुष्य का आयुष्य नहीं बांधता है और वहां नहीं उत्पन्न होता है परंतु मात्र एक देवगति का आयुष्य बांधता है और वहां उत्पन्न होता है. अहो भगवन्! किस कारन से एकान्त पंडित नरक तिर्यंच व मनुष्य का आयुष्य नहीं बांधता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है? अहो गौतम! एकान्त पंडित मनुष्य को केवल दो गति कही. १. सब कर्मों का अंत करना सो अंतक्रिया और समस्त कर्म क्षय नहीं होने से व पुण्य की वृद्धि होने से

अर्थ आयुष्य कि॰ करके दे॰ देवलोक में उ॰ उत्पन्न होवे गो॰ गौतम ए॰ एकान्त पं॰ पंडित मं॰ मनुष्य को के॰ मात्र दो॰ दोगति प॰ कही है अं॰ अंतक्रिया क॰ कल्पोत्पन्न से॰ वह ते॰ इस लिये जा॰ यावत् दे॰ देवता का आ॰ आयुष्य कि॰ करके दे॰ देवलोक में उ॰उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ बा॰बाल पंडित भं॰ भगवन् म॰ मनुष्य किं॰ क्या ने॰ नारकी का आ॰ आयुष्य प॰ बांधे जा॰ यावत् दे॰ देवता का आ॰ आयुष्य कि॰ करके दे॰ देवता में उ॰ उत्पन्न होवे गो॰ गौतम णो॰ नहीं ने॰ नारकी का आ॰ आयुष्य प॰ बांधे जा॰ यावत् दे॰ देवता का आ॰ आयुष्य कि॰ करके दे॰ देवता में उ॰ उत्पन्न होवे

सूत्र किरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव; से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ २ ॥ बाल पंडिएणं भंते ! मणूसे किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! णो णेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ । सेकेणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! बाल-

भावार्थ वैमानिक देवलोकमें उत्पन्न होवे ऐसी दोगति कही. इसलिये अहो गौतम ! एकान्त पंडित मनुष्य देवगति के आयुष्य का बंधकर देवगति में उत्पन्न होता है. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! बाल पंडित (श्रावक) मनुष्य क्या नारकी का आयुष्य यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य नारकी का आयुष्य बांधे नहीं, तिर्यंच का आयुष्य बांधे नहीं, मनुष्य का आयुष्य

शब्दार्थ

मे० वह के० कैसे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम बा० श्रावक त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अं० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० सुवचन सो० सुनकर नि० अवधारकर दे० देशसे उविरमे दे० देशसे नो० नहीं उविरमे दे० देश प० प्रत्याख्यान करे दे० देश नो० नहीं प० प्रत्याख्यान करे ते० इस लिये दे० देश विरति से दे० देश प्रत्याख्यान से नो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे ॥ ३ ॥ पु० पुरुष भं० भगवन् क० कच्छ द०

सूत्र

पंडिएणं मणुस्से तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोचा निसम्म देसं उवरमइ, देसं णो उवरमइ; देसं पच्चक्खाइ, देसं णो पच्चक्खाइ; से तेणं देसोवरमइ, देसपच्चक्खाणेणं णो णेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ । से तेणट्ठेणं जाव देवेसु उववज्जइ ॥ ३ ॥ पुरिसेणं भंते ! कच्छंसि-

बांधे नहीं परंतु देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे. अहो भगवन् ! किस कारन से बाल पंडित मनुष्य देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य तथारूप श्रमण माहण की पास से एकान्त आर्यधर्म श्रवणकर अवधारकर देश से निवर्ते, देशसे निवर्ते नहीं, देशसे प्रत्याख्यान करे, देश से प्रत्याख्यान करे नहीं; इस तरह देश से निवर्तने से व प्रत्याख्यान करने से

दार्थ द्रह उ० पानी द० द्रव्य व० वलय णू० गुप्तस्थान ग० गहन वि० विषम प० पर्वत प० पर्वत वि० विषम स्थान व० वन व० वनविषम स्थान मि० मृगवृत्ति वाला मि० मृगसंकल्प वाला मि० मृगकेवध का अध्यवसायी मि० मृग व० वधकरने को गं० गया हुवा मि० मृग त्ति० ऐसा का० करके अ० अन्य कोई मि० मृग व० मारने को कू० कूटपाश उ० बनावे त० तब भं० भगवन् से० उस पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम सि० कदाचित् ति० तीनक्रिया च० चारक्रिया पं० पांचक्रिया से० वह के० कैसे भं०

सूत्र वा दहंसिवा, उदगंसिवा, दवियंसिवा, वलयंसिवा, णूमंसिवा, गहणंसिवा, गहण विदुग्गंसिवा, पव्वयंसिवा, पव्वय विदुग्गंसिवा, वणंसिवा, वणविदुग्गंसिवा, मियवित्तीए मियसंकप्पे, मियपणिहाणे, मियवहाए गंताए एमिएत्ति काओ, अण्णयरस्समियवहाए, कूडपासं उद्दाइ । तओणं भंते ! से पुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए,

भावार्थ नारकी, तिर्यंच व मनुष्य का आयुष्य बांधे नहीं परंतु देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ॥ ३ ॥ आयुष्य बंध के कारन भूत क्रियाओं हैं इसलिये क्रिया के संबंध में प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! कच्छ, द्रह, उदक, द्रव्य, वलय, नूम, गहन, गहनविदुर्ग, पर्वत, पर्वत विदुर्ग, वन; व वनविदुर्ग में मृग की वृत्तिवाला, मृग के वध का अध्यवसायवाला, मृग को मारने के लिये एकाग्र चित्त करनेवाला

---

१ नदी का पानी व वृक्षादि से घेराया हुवा भूमिभाग २ तडागादि में कुंड ३ अल्पजल ४ तृणादिसमुदाय ५ वर्तुलाकार नदी के जल की कुटिलगति वाला प्रदेश ६ गुफाआदिगुप्त स्थान.

शब्दार्थ भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है सि० कदाचित् ति० तीनक्रिया सि० कदाचित् च० चारक्रिया पं० पांचक्रिया गो० गौतम जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से णो० नहीं बं० बंधन करने से णो० नहीं मा० मारने से ता० तव से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी अ० अधिकरणी की पा० प्रद्वेषिकी ति० तीन कि० क्रिया प० स्पर्शी जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से बं० बंधन करने से नो० नहीं म०

सूत्र सिय चउकिरिए, सियपंचकिरिए । से केणट्ठेणं भंते ? एवं वुच्चइ सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए, सिय पंच किरिए ? गोयमा ! जे भविए उड्डवणयाए णो बंधणयाए, णो मारणयाए, तावं चणं से पुरिसे काइयाए अहिगरणियाए, पाउसियाए, तिहिं किरियाहिं पुट्ठे । जे भविए उड्डवणयाएवि बंधणयाएवि, णोमारणयाए तावंचणं

भावार्थ कोई पुरुष मृग को मारने के लिये कूटपाश करे; तब अहो भगवन् ! उस मृगपाश करनेवाले पुरुष को कितनी क्रिया लगती हैं ? अहो गौतम ! उस मृगपाश बनानेवाले को तीन, चार व पांच क्रिया लगती हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से तीन चार व पांच क्रिया उस पुरुष को लगती हैं ? अहो गौतम ! जिस को जितने कालतक कूटपाश करने का भाव है परंतु बंधन करने का व मारने का भाव नहीं है उस पुरुष को उतने कालतक तीन क्रियाओं लगती हैं. १ गमनादि रूप सो कायिकी क्रिया, कूटपाशादिक को उत्पन्न करना सो अधिकरणकी और मृग में दुष्ट भाव रखना सो प्रद्वेषिकी जिस. पुरुष को

शब्दार्थ मारने से ता० तब से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी अ० अधिकरण की प० प्रद्वेपिकी प० परितापनिकी च० चार कि० क्रिया पु० स्पर्शी जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से बं० बंधन करने से मा० मारने से ता० वहांलग से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पा० प्राणातिपातिकी पं० पांच कि० क्रिया पु० स्पर्शी से० वह ते० इसलिये जा० यावत पं० पांच कि० क्रिया ॥ ४ ॥ पु० पुरुष क० कच्छ जा० यावत व० वन वि० विपम त० तृण ऊ० ऊंचा करके अ० अग्निकाय

सूत्र से पुरिसे काइयाए अहिगरणयाए, पाओसियाए, परियावणियाए, चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । जे भविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि, मारणयाएवि तावंचणंसे पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाय किरियाए पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । से तेणट्ठेणं जाव पंचकिरिए ॥ ४ ॥ पुरिसेणं भंते ! कच्छंसिवा, जाव वणाविदुग्गंसिवा, तणाइं ऊसविय २ अ-

भावार्थ जितने काल पर्यंत कूटपाश बनाने का व मृग बांधने का भाव है परंतु मारनेका भाव नहीं है उस को उतने कालतक चार क्रिया लगती हैं. उक्त तीनों में उस मृग को परिताप दुःख दिया सो परितापनिकी क्रिया वढी. जिस को जितने कालतक कूटपाश बनाने का, बांधने का व मारने का भाव है उस को उतने कालतक पांच क्रियाओं लगती हैं. कायिकी, अधिकरणकी, प्रद्वेपिकी, परितापनिकी व प्राणातिपातिकी. इसी कारन से अहो गौतम ! उक्त पुरुष को कदाचित् तीन, कदाचित् चार व कदाचित् पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ४ ॥

शब्दार्थ

भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है सि० कदाचित् ति० तीनक्रिया सि० कदाचित् च० चारक्रिया पं० पांचक्रिया गो० गौतम जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से णो० नहीं बं० बंधन करने से णो० नहीं मा० मारने से ता० तब से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी अ० अधिकरणी की पा० प्रद्वेषिकी ति० तीन कि० क्रिया पु० स्पर्शी जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से बं० बंधन करने से नो० नहीं म०

सूत्र

सिय चउकिरिए, सियपंचकिरिए। से केणट्ठेणं भंते ? एवं वुच्चइ सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए, सिय पंच किरिए ? गोयमा ! जे भविए उद्दवणयाए णो बंधणयाए, णो मारणयाए, तावं चणं से पुरिसे काइयाए अहिगरणियाए, पाउसियाए, तिहिं किरियाहिं पुट्ठे। जे भविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि, णोमारणयाए तावंचणं

भावार्थ

कोई पुरुष मृग को मारने के लिये कूटपाश करे; तब अहो भगवन् ! उस मृगपाश करनेवाले पुरुष को कितनी क्रिया लगती हैं ? अहो गौतम ! उस मृगपाश बनानेवाले को तीन, चार व पांच क्रिया लगती हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से तीन चार व पांच क्रिया उस पुरुष को लगती हैं ? अहो गौतम ! जिस को जितने कालतक कूटपाश करने का भाव है परंतु बंधन करने का व मारने का भाव नहीं है उस पुरुष को उतने कालतक तीन क्रियाओं लगती हैं. १ गमनादि रूप सो कायिकी क्रिया, कूटपाशादिक को उत्पन्न करना सो अधिकरणकी और मृग में दुष्ट भाव रखना सो प्रद्वेषिकी जिस पुरुष को

शब्दार्थ पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पं० पांच कि० क्रिया पु० स्पर्शी से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ॥ ५ ॥ पु० पुरुष क० कच्छ जा० यावत् व० वन वि० विषम मि० मृगवृत्ति वाला मि० मृगसंकल्प वाला मि० मृग मारने का अध्यवसाय वाला मि० मृगवध केलिये गं० गया हुवा मि० मृग ति० ऐसे का० करके अ० किसी एक मि० मृग का व० वधकेलिये उ० बाण नि० निकाले त० तव भं० भगवन् क०

सूत्र उस्सवणयाएवि, निसिरणयाएवि, दहणयाएवि, तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! ॥ ५ ॥ पुरिसेणं कच्छंसिवा जाव वणविदुग्गंसिवा मियवित्तीए मियसंकप्पे, मिय पणिहाणे, मियवहाए गंताए, एमिए-त्तिकाउं अन्नयरस्स मियस्स वहाए उसुं निसिरइ. ततोणं भंते ! सेपुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सियचउकिरिए, सियपंचकिरिए । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा !

भावार्थ इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहागया है कि उक्त पुरुष को कदाचित् तीन, चार, व पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! कच्छ यावत् वनदुर्ग में मृगकी वृत्तिवाला, मृगवध का संकल्पवाला, मृग-वध का चिन्तवन करनेवाला; यह मृग है ऐसा कहकर मृग मारने के लिये निकलाहुवा किसी पुरुषने किसी एक मृग को मारने के लिये बाण छोडा. उस समय अहो भगवन् ! उस पुरुष को कितनी क्रियाओं

शब्दार्थ नि० डाले ता० तब भं० भगवन् से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया सि० कदाचित् ति० तीनक्रिया सि० कदाचित् च० चारक्रिया सि० कदाचित् पं० पांचक्रिया से० वह के० कैसे गो० गौतम जे० जो भ० योग्य उ० ऊंचा करने से ति० तीन उ० ऊंचा करने से नि० डालने से नो० नहीं द० जलाने से च० चार जे० जो० भ० योग्य उ० ऊंचा करने से नि० फेंकने से द० जलाने से से० उस

सूत्र गणिकायंसि निसिरइ तावंचणं भंते ! सेपुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जे भविए उस्सवणयाए तिहिं, उस्सवणयाएवि निसिरणयाएवि नोदहणयाए चउहिं, जेभविए

भावार्थ अहो भगवन् ! कोई पुरुष कच्छ में यावत् वनदुर्ग में तृणका ढग करके उस में अग्निकाय का प्रक्षेप करे तो उन को कितनी क्रिया लगती हैं ? अहो गौतम ! उन को तीन, चार व पांच क्रियाओं लगती हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से उन को तीन, चार, व पांच क्रियाओं लगती हैं ? अहो गौतम ! जितना काल पर्यंत तृणका समुदाय एकत्रित करता है उतना कालतक उन को कायिकी. अधिकरणकी व प्रद्वेषिकी ऐसी तीन क्रियाओं लगती हैं और तृण एकत्रित कर अग्नि में डाले परंतु जले नहीं वहांतक कायिकी, अधिकरण की, प्रद्वेषिकी, व परितापनिकी ऐसी चार क्रियाओं लगती हैं, और जो तृण एकत्रित करके अग्नि में डालता है और उस में जलता है उसको कायिकी आदि पांचों क्रियाओं लगती हैं.

पदार्थ — कानतक उ० वाण को आ० खींचकर चि० खडारहे अ० अन्य कोई पु० पुरुष म० पीछेसे आ० आकर स० अपने पा० हस्त से अ० असिसे सी० शीर्ष छिं० छेदे से० वह उ० वाण ता० उस पु० पूर्वाकर्षण मे तं० उस मि० मृगको विं० विंधे से० वह भं० भगवन् पु० पुरुष किं मि० मृग वैरसे पु० स्पर्शा पु० पुरुष वे० वैरसे पु० स्पर्शा गो० गौतम जे० जो मि० मृगको मा० हने से० वह मि० मृगवैर से पु० स्पर्शा जे० जो पु० पुरुष को मा० हने से० वह पु० पुरुष वैरसे पु० स्पर्शा से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा

सूत्र —

आयय कण्णाययं उसुं आयामेत्ता चिट्ठिज्जा. अन्नयरे पुरिसे मग्गओ आगम्म सय-

पाणिणा असिणा सीसं छिंदेज्जा, सेय उसू ताएचेव पव्वायामणयाए तंमियं विंधेज्जा ।

सेणं भंते ! पुरिसे किं मियवेरेण य पुट्ठे पुरिसवेरेणं पुट्ठे ? गोयमा ! जंमियं मारेइ,

से मियवेरेणं पुट्ठे, जे पुरिसं मारेइ से पुरिसवेरेणं पुट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ

भावार्थ — अहो भगवन् ! कच्छ यावत् वनदुर्ग में मृग का वध के लिये कोई पुरुष धनुष्य में वाण रखकर कान पर्यंत प्रत्यंचा खींच कर खडारहे; उतने में पीछे से अन्य कोई पुरुष आकर अपने हस्त में खड्गलेकर उस मृग वधक का मस्तक छेदे. उस समय उस मृग को उद्देशकर खींचा हुवा वाण उस पुरुष के हस्त में से छुटकर उसी मृग को भेदे. अत्र अहो भगवन् ! उस मस्तक छेदनेवाला पुरुष को क्या मृग का वैर हुआ अथवा पुरुष का वैर हुआ ? अहो गौतम ! जिसने पुरुष को मारा उस को पुरुष का वैर हुवा और जिसने

शब्दार्थ कितनी कि० क्रिया गो० गौतम सि० कदाचित् ति० तीन क्रिया सि० कदाचित् च० चारक्रिया सि० कदाचित् पं० पांचक्रिया जे० जो भ० योग्य नि०निकालनेसे ति० तीन जे० जो भ० योग्य नि० निकालनेसे वि० विध्वंस करने से नो० नहीं मा० मारने से च० चार जे० जो भ० योग्य नि० निकालने से वि० विध्वंस करने से मा० मारने से से० उस पु० पुरुष को जा० यावत् पं० पांचक्रिया ॥ ६ ॥ पु० पुरुष भं० भगवन् क० कच्छ जा० यावत अ० किसी एक मि० मृग का व० वधकेलिये आ०

सूत्र जे भविए निसिरणयाए तिहिं, जेभविए निसिरणयाएवि, विद्धंसणयाएवि, णोमारणयाए चउहिं, जे भविए निसिरणयाएवि, विद्धंसणयाएवि, मारणयाएवि, तावंचणं सेपुरिसे जाव पंचकिरियाहिं पुट्ठे। से तेणट्ठेणं गोयमा ! सियतिकिरिए, सिय चउकिरिए, सियपंच किरिए ॥ ६ ॥ पुरिसेणं भंते ! कच्छंसिवा जाव अन्नयरस्समियस्स वहाए

भावार्थ कही ? अहो गौतम ! क्वचित तीन क्रिया. क्वचित चार क्रिया व क्वचित् पांच क्रिया कही हैं. अहो भगवन् ! किस कारण मे ऐसा कहा ? अहो गौतम ! जो वाण छोडता है उस को कायिकादि तीन क्रिया. जहांलग जो वाण छोडकर उस मृग को दुःखी करता है वहांलग उस को चार क्रिया और जो पुरुष वाण छोडता है, मृग को दुःखी करता है, और मार डालता है वहांलग उस पुरुष को पांच क्रियाओं लगती हैं इसलिये अहो गौतम ! उक्त पुरुष को क्वचित् तीन चार व पांच क्रिया ओं लगती हैं ॥ ६ ॥

शब्दार्थ अंदर में छ० छमास की म० मरे का० कायिकी जा० यावत् पं० पांचक्रिया पु० स्पर्शे बा० बाहिर छ० छमास की म० मरे च० चारक्रिया पु० स्पर्शे ॥ ७ ॥ पुं० पुरुष भं० भगवन् पु० पुरुष को स० भाला से मं० सांधे मः स्वतः के पा० हस्त मे अ० असिसे सी० शीर्ष छिं० छेदे त० तत्र से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम जा० जब से० वह पु० पुरुष त० उस पु० पुरुष को सः

सूत्र काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे : बाहिं छण्हं मासाणं मरइ, काइयाए जाव पारियावणियाए चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ ७ ॥ पुरिसेणं भंते ! पुरिसं सत्तीए समभिसंधेज्जा सयपाणिणावा से असिणा सीसं छिंदेज्जा । तओणं भंते ! से पुरिसे कइकि-

भावार्थ मारनेवाले को पुरुष का वैर लगता है. वह मृग यदि छ मांस की अंदर मरजावे तो घातक पुरुष को पांच क्रियाओं लगती हैं क्यों की छ मासतक मृग को प्रहार हेतुक मरण होता है. छ मास पीछे यदि वह मृग मरजावे तो प्राणातिपातिकी क्रिया छोडकर अन्य चार क्रियाओं लगती हैं * ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष शक्ति (भाला) से, अथवा अपने हस्त में रहा हुवा खड्ग से किसी पुरुष का शिरच्छेदन करे तब

* यहांपर व्यवहारकी अपेक्षासे प्राणातिपातिकी क्रिया मात्र व्यपदेश बतानेको कहाहै. अन्यथा जब प्रहारहेतुक मरण होवे उस समय उस वधकको कायिकी यावत् प्राणातिपातिकी पांच क्रिया लगती हैं.

शब्दार्थ जाता है जा० यावत् से० वह पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शा से० वह गो० गौतम क० करते को क० किया सं० सांधते को सं० सांधा नि० खींचते को नि० खींचा नि० निकलते को नि० निकला व० कहना हं० हां भं० भगवन् क० करते को किया जा० यावत् नि० निकला जे० जो मि० मृगको मा० हने से० वह मि० मृगवैर से पु० स्पर्शे जे० जो पु० पुरुष को मा० हने से० वह पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शे अं०

सूत्र जाव से पुरिसवेरेणं पुट्ठे । सेणूणं गोयमा ! कज्जमाणे कडे, संधिज्जमाणे संधिए, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए, निसिरिज्जमाणे निसिट्ठेत्ति वत्तव्वंसिया । हंता भगवं ! कज्जमाणे कडे जाव निसट्ठेत्ति वत्तव्वंसिया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जे मियंमारेइ से मियवेरेणं पुट्ठे, जे पुरिसं मारेइ से पुरिसवेरेणं पुट्ठे. अंतो छण्हं मासाणं मरइ-

भावार्थ मृग को मारा उस को मृग का वैर हुआ. अहो भगवन् ! यह अर्थ किस तरह से है ? अहो गौतम ! 'कज्जमाणे कडे' करते हुवे को किया अर्थात् धनुष्य बाण करने लगा सो किया, 'संधिज्जमाणे संधिए' धनुष्य बाण सांधनेलगा सो संधा, 'निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए' धनुष्य खींचने लगा सो खींचा व 'निसरिज्जमाणे निसिट्ठे' धनुष्य में से बाण नीकलनेलगा सो नीकला ऐसा कहा जा सकता है. हां भगवन् ! करते को किया हुवा यावत् नीकलने को निकला हुवा कहा जा सकता है. इसी से अहो गौतम ! जो मृग मारता है वह मृग का वैर से स्पर्शाता है अर्थात् उस मृग मारनेवाले को मृग का वैर लगता है और पुरुष

शब्दार्थ अंदर में छ० छमास की म० मरे का० कायिकी जा० यावत् पं० पांचक्रिया पु० स्पर्शे बा० बाहिर छ० छमास की म० मरे च० चारक्रिया पु० स्पर्शे ॥ ७ ॥ पुं० पुरुष भं० भगवन् पु० पुरुष को स० भालासे सं० सांधे म० स्वतः के पा० हस्त में अ० असिसे सी० शीर्ष छिं० छेदे त० तब से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम जा० जब से० वह पु० पुरुष तं० उस पु० पुरुष को स०

सूत्र काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे : बाहिं छण्हं मासाणं मरइ, काइयाए जाव पारियावणियाए चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ ७ ॥ पुरिसेणं भंते ! पुरिसं सत्तीए समभिसंधेजा सयपाणिणावा से असिणा सीसं छिंदेज्जा । तओणं भंते ! से पुरिसे कइकि-

भावार्थ मारनेवाले को पुरुष का वैर लगता है. वह मृग यदि छ मास की अंदर मरजावे तो घातक पुरुष को पांच क्रियाओं लगती हैं क्यों की छ मासतक मृग को प्रहार हेतुक मरण होता है. छ मास पीछे यदि वह मृग मरजावे तो प्राणातिपातिकी क्रिया छोडकर अन्य चार क्रियाओं लगती हैं * ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष शक्ति (भाला) से, अथवा अपने हस्त में रहा हुवा खड्ग से किसी पुरुष का शिरच्छेदन करे तब

* यहांपर व्यवहारकी अपेक्षासे प्राणातिपातिकी क्रिया मात्र व्यपदेश बतानेको कहाहै. अन्यथा जब प्रहारहेतुक मरण होवे उस समय उस वधकको कायिकी यावत् प्राणातिपातिकी पांच क्रिया लगती हैं.

शब्दार्थ सर्वकाल ए० ऐसे उ० उपर का ए० एकेक को सं० जोडना जो० जो हे० निचे का तं० उन को छ० छोडना ने० जानना जा० यावत् अ० अतीत अ० अनागतकाल प० पीछे स० सर्वकाल जा० यावत् अ० अननुक्रम मे सा० वह रो० रोहा से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥१४॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितना प्रकार की भं० भगवन्

सूत्र एक्केक्कं संजोयं, तेणं जो जो हेट्ठिल्लो तं तं छड्डेतेणं नेयव्वं जाव अतीय अणागयद्धा, पच्छासव्वद्धा. जाव अणाणुपुव्वीए सा रोहा, सेवं भंते २ जाव विहरइ ॥ १४ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं जाव एवं वयासी कइविहाणं भंते ! लोयट्ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठविहा लोयट्ठिई पण्णत्ता, तंजहा — आगासपइट्ठिए वाए

भावार्थ भी वैसे ही कहना. इस में कोई पहिले पीछे नहीं, सब अनुक्रम रहित बराबर हैं. सदा शाश्वत है. फीर रोहक अनगार बोले की अहो भगवन् ! आपने जो कहा वह वैसे ही है यों कहकर तप संयम से आत्माको भावते हुवे विचरने लगे ॥ १४ ॥ श्री गौतम स्वामीने प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! लोक स्थिति कितने प्रकार की है ? अहो गौतम ! लोक स्थिति आठ प्रकार की है. १ आकाश प्रतिष्ठित वायु अर्थात् आकाश के आधारसे घनवात तनुवात ऐसे दोनों वायु रहे हैं. २ वायु के आधार से उदधि है ३ उदधि प्रतिष्ठित पृथ्वी ४ पृथ्वी प्रतिष्ठित त्रस स्थावर प्राणी ५ जीव के आधार से अजीव रहे हैं ६ कर्म के आ-

दार्थ लो० लोकस्थिति गो० गौतम अ० आठ प्रकार की लो० लोकस्थिति आ० आकाश प० प्रतिष्ठित वा० वायु वा० वायु प० प्रतिष्ठित पु० पृथ्वी पु० पृथ्वी प० प्रतिष्ठित त० त्रस था० स्थावर प्राणी अ० अजीव जी० जीव प्रतिष्ठित जी० जीव क० कर्म प० प्रतिष्ठित अ० अजीव जी० जीव सं० संग्रहित जी० जीव क० कर्म सं० संग्रहित ॥ १५ ॥ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है अ० आठ प्रकार की जा० यावत् जी० जीव क० कर्म सं० संग्रहित गो० गौतम से० वह ज० जैसे के० कोइ पुरुष

सूत्र

वाय पइट्ठिइए उदही, उदहि पइट्ठिया पुढवी, पुढवी पइट्ठिया तसा, थावरा पाणा, अजीवा जीव पइट्ठिया, जीवा कम्मपइट्ठिया, अजीवा जीव संगहिया, जीवा कम्म संगहिया ॥ १५ ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, अट्ठविहा जाव जीवा कम्म संगहिया ? गोयमा ! सेजहा नामए केइपुरिसे वत्थिमाडोवेइ . २ त्ता उप्पिं सिइं

भावार्थ

धार से जीव है ७ जीवने अजीव ग्रहण किया, मन भाषा के पुद्गलों जीवने ग्रहण किये ८ कर्म संग्रहीत संसारी जीव हैं. उदय में आये हुवे कर्मों के वश से जो प्रवर्तते हैं, जो जिस में रहते हैं, वे उस में प्रतिष्ठित हैं जैसे घटादि में रूप रहने से घटादि प्रतिष्ठित रूप कहाजाता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! किस कारन से आठ प्रकार की लोक स्थिति कही ? अहो गौतम ! जैसे कोई पुरुष चमडे की मशक में वायु भरे और फीर उस का उपर का मुख बंध कर देवे मुख बांधकर उस मशकके मध्य भाग में

शब्दार्थ व० मशक को आ० भरकर उ० उपर सि० बंधन बं० बांधे म० मध्य में गं० गांठ बं० बांधे उ० उपर की गं० गांठ को मु० छोडे उ० उपर के दे० भाग का वा० नीकाले उ० उपला दे० भाग में आ० पानी पू० भरे उ० उपर का सि० बंधन बं० बांधे म० मध्य की गं० गांठ को मु० छोडे से० वह गो० गौतम आ० पानी वा० वायु की उ० उपर चि० रहे हं० हां चि० रहे से० वह

सूत्र बंधइ २ त्ता, मज्झे गंठिं बंधइ २ त्ता, उवरिल्लं गंठिं मुयइ २ त्ता, उवरिल्लं देसं वामेइ २ त्ता, उवरिल्लं देसं आउयायस्स पूरेइ २ त्ता, उप्पिं सियं बंधइ २ त्ता, मज्झिल्लं गंठिं मुयइ ॥ सेणूणं गोयमा ! से आउयाए तस्स वाउयायस्स उप्पिं उवरितले चिट्ठइ ? हंता चिट्ठइ । से तेणट्ठेणं जाव जीवा कम्मसंगहिया, ॥ से

भावार्थ दूसरा बंध बांधे, मध्य में बंध बांधकर उपर का मुख खोलकर वायु नीकाल देवे और पानी भरे. फीर उस का मुख बांधकर बीच का बंध छोड देवे तो क्या गौतम ! उस मशक में रहे हुवे नीचे के वायु से पानी रह सकता है ? हां भगवन् ! उपर के विभाग में वायु के आधार से पानी रह सकता है. तब भगवन्तने कहा कि जैसे वायु के आधार से मशक में पानी रहा वैसे ही आकाश के आधार से वायु, वायु के आधार से पानी यावत् कर्म संग्रहीत जीव है. दूसरा दृष्टान्त जैसे कोई पुरुष वायु से पूरित चमडे की मशक को कटि से बांधकर पुरुष प्रमाण से अधिक अगाध पानीवाले द्रह में प्रवेश

शब्दार्थ — ते० तैसे जा० यावत् जी० जीव क० कर्म संग्रहित से० वह ज० जैसे के० कोइ पुरुष व० मशक को आ० भरे क० कटि से बं०बांधे अ०अगाध म०तल अ०बहुत पु० पुरुषप्रमाण उ०पानी में ओ० प्रवेश करे से० वह णू० निश्चय गो० गौतम से० वह पु० पुरुष त० उस आ० पानी की उ० उपर चि० रहे हं० हां चि० रहे ए० ऐसे अ० आठ प्रकार की लो० लोकस्थिति प० प्ररूपी जा० यावत् जी० जीव क० कर्म संग्रहित ॥ १६ ॥ अ० है भं० भगवन् जी० जीव पो० पुद्गल अ० अन्योन्य ब० बंधाये हुवे अ० अन्योन्य

सूत्र — जहावा केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ २ त्ता कडीए बंधइ अत्थाह मतारम पोरिसियं उदगंसि ओग्गाहेज्जा ॥ सेणूणं गोयमा ! से पुरिसे तस्स आउयायस्स उवरिमतले चिट्ठइ ? हंता चिट्ठइ ॥ एवं वा अट्ठविहा लोयट्ठिई पण्णत्ता, जाव जीवा कम्म संगहिया ॥१६॥ अत्थिणं भंते ! जीवा य पोग्गला य अण्णमण्ण बद्धा, अण्णमण्ण

भावार्थ — करके आगे जावे तो क्या गौतम ! वह पुरुष पानी पर तीरता हुवा रहता है ? गौतम स्वामी कहते हैं कि वह पुरुष पानी पर ही तीरता हुवा रहता है. जैसे वह पानी पर ही तीरता हुवा रहता है वैसे ही अहो गौतम ! आकाश प्रतिष्ठित वायु वगैरह आठ प्रकार की लोक स्थिति कही है ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! जीव व पुद्गल परस्पर क्या बंधे हुवे हैं ? परस्पर एक २ को स्पर्शे हुवे हैं ? परस्पर चिकनाइ से लगे

शब्दार्थ पु० स्पर्शाये अ० अन्योन्य ओ० अवगाढे हुवे अ० अन्योन्य सि० स्निग्ध प० बंधाये अ० अन्योन्य घ० घडापने चि० रहते हैं हं० हां अ० है से० वह के० कैसे भं० भगवन् जा० यावत् चि० रहते हैं गो० गौतम से० वह ज० जैसे ह० द्रह सि० होवे पु० पूर्ण प० प्रतिपूर्ण वो० उछलता वो० विकसता स० सम घ० घडापने चि० रहे अ० अब के० कोइ पु० पुरुष तं० उस ह० द्रहमें ए० एक अ० बडा ना० नाव स०

सूत्र पुट्ठा, अण्णमण्ण मोगाढा, अण्णमण्ण सिणेह पडिबद्धा, अण्णमण्ण घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! जाव चिट्ठंति ? गोयमा ! से जहा नामए हरदे सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभर घडत्ताए चिट्ठइ ॥ अहेणं केइपुरिसे तांसि हरदंसि एगं महं नावं सदासवं सयच्छिड्डं ओगाहेज्जा, सेणूणं गोयमा ! सानावा तेहिं आसवदारेहिं आपूरमाणी २ पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा

हुवे हैं ? भगवन्त कहते हैं कि हां गौतम ! जीव पुद्गल परस्पर बन्धे हुवे रहते हैं यावत् लोली भूत रहते हैं. अहो भगवन् ! किस प्रकार से जीव अजीव दोनों बंधे हुवे हैं यावत् लोलीभूत हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई द्रह पानी से परिपूर्ण होवे किंचिन्मात्र खाली न होवे, उस में पानी उछलता होवे, और बहुत सुशोभित होवे, वैसे द्रह में कोई पुरुष एक बडी छिद्रवाली नाव सहित प्रवेश करे. अब अहो गौतम ! छिद्रों से आता हुवा पानी से भरकर वह नावा भरे हुवे घडे समान क्या नीचे बैठे ? हां

शब्दार्थ सदा आश्रव स० शतच्छिद्र ओ० प्रवेशकरे गो० गौतम सा० वह ना० वो० उछलता वो० वीकसता स०मम घ० घडापने चि० रहे हं० हां चि० रहे से० वह ते० ऐसे गो० गौतम अ० है जी०जीव जा० यावत् चि० रहे ॥ १७ ॥ अ० है भं० भगवन् स० सदैव सु० सुक्ष्म सि० अप्काय प० गीरता है हं० हां अ० है से० वह भं० भगवन् किं० क्या उ० ऊर्ध्व प० गीरे अ० अधो प० गीरे ति० तिर्यक् प० गीरे. गो०

सूत्र वोसट्टमाणासभमर घडत्ताए चिट्ठइ! हंता चिट्ठइ। से तेणट्ठेणं गोयमा!अत्थिणं जीवाय जाव चिट्ठंति ॥ १७ ॥ अत्थिणं भंते सदासमियं सुहुम सिणेहकाये पवडइ ? हंता अत्थि । से भंते ! किंउड्ढे पवडइ, अहेपवडइ, तिरिए पवडइ ? गोयमा उड्ढेवि पवडइ, अहेवि पडवइ, तिरिएवि पवडइ, ॥ १८ ॥ जहा से बादरे आउयाए अण्णमण्ण

भावार्थ भगवन् ! वह नावा पानी भराने से नीचे बैठे. ऐसे ही अहो गौतम ! जीव व पुद्गल परस्पर बंधे हुवे, मीले हुवे, यावत् लोलीभूत बने हुवे हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! सदैव सूक्ष्म पानी पडता है ! हां गौतम ! सदैव सूक्ष्म अप्काय पडती है. अहो भगवन् ! क्या वह उपर पडती है, नीचे पडती है, या तिर्यक् पडती है ! अहो गौतम ! ऊर्ध्व लोक में वाटलादि पर्वत पर पडती है, अधो लोक में अधोगामिनी विजय में पडती है और तिर्यक् लोक में भी पडती है ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! जैसे बादर पानी की वर्षा होने से वह पानी तडागादि में एकत्रित होकर बहुत काल पर्यंत टिकता है वैसे ही क्या सूक्ष्म अप्काय

शब्दार्थ

पु० स्पर्शाये अ० अन्योन्य ओ० अवगाहे हुवे अ० अन्योन्य सि० स्निग्ध प० बंधाये अ० अन्योन्य घ० घडापने चि० रहते हैं हं० हां अ० है से० वह के० कैसे भं० भगवन् जा० यावत् चि० रहते हैं गो० गौतम से० वह ज० जैसे ह० द्रह सि० होवे पु० पूर्ण प० प्रतिपूर्ण वो० उछलता वो० विकसता स० सम घ० घडापने चि० रहे अ० अब के० कोइ पु० पुरुष तं० उस ह० द्रहमें ए० एक अ० बडा ना० नाव स०

सूत्र

पुट्ठा, अण्णमण्ण मोगाढा, अण्णमण्ण सिणेह पडिबद्धा, अण्णमण्ण घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! जाव चिट्ठंति ? गोयमा ! से जहा नामए हरदे सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभर घडत्ताए चिट्ठइ ॥ अहेणं केइपुरिसे तांसि हरदंसि एगं महं नावं सदासवं सयच्छिद्दं ओगाहेज्जा, सेणूणं गोयमा ! सानावा तेहिं आसवदारेहिं आपूरमाणी २ पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा

भावार्थ

हुवे हैं ? भगवन्त कहते हैं कि हां गौतम ! जीव पुद्गल परस्पर बन्धे हुवे रहते हैं यावत् लोली भूत रहते हैं. अहो भगवन् ! किस प्रकार से जीव अजीव दोनों बंधे हुवे हैं यावत् लोलीभूत हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोई द्रह पानी से परिपूर्ण होवे किंचिन्मात्र खाली न होवे, उस में पानी उछलता होवे, और बहुत सुशोभित होवे, वैसे द्रह में कोई पुरुष एक बडी छिद्रवाली नाव सहित प्रवेश करे. अब अहो गौतम ! छिद्रों से आता हुवा पानी से भरकर वह नावा भरे हुवे घडे समान क्या नीचे बैठे ? हां

शब्दार्थ

सदा आश्रव स० शतच्छेद ओ० प्रवेशकरे गो० गौतम मा० वह ना० वो० उछलता वो० वीकसता स०मम घ० घडापने चि० रहे हं० हां चि० रहे से० वह ते० ऐसे गो० गौतम अ० है जी०जीव जा० यावत् चि० रहे ॥ १७ ॥ अ० है भं० भगवन् स० सदैव सु० सुक्ष्म सि० अप्काय प० गीरता है हं० हां अ० है से० वह भं० भगवन् किं० क्या उ० ऊर्ध्व प० गीरे अ० अधो प० गीरे ति० तिर्यक् प० गीरे गो०

सूत्र

वोसट्टमाणा सभमर घडत्ताए चिट्ठइ? हंता चिट्ठइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! अत्थिणं जीवाय जाव चिट्ठंति ॥ १७ ॥ अत्थिणं भंते सदासमियं सुहुम सिणेहकाये पवडइ ? हंता अत्थि । से भंते ! किंउड्ढे पवडइ, अहेपवडइ, तिरिए पवडइ ? गोयमा उड्ढेवि पवडइ, अहेवि पडवइ, तिरिएवि पवडइ, ॥ १८ ॥ जहा से बादरे आउयाए अण्णमण्ण

भावार्थ

भगवन् ! वह नावां पानी भराने से नीचे बैठे. ऐसे ही अहो गौतम ! जीव व पुद्गल परस्पर बंधे हुवे, मीले हुवे, यावत् लोलीभूत बने हुवे हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! सदैव सूक्ष्म पानी पडता है ? हां गौतम ! सदैव सूक्ष्म अप्काय पडती है. अहो भगवन् ! क्या वह उपर पडती है, नीचे पडती है, या तिर्यक् पडती है ? अहो गौतम ! ऊर्ध्व लोक में वाटलादि पर्वत पर पडती है, अधो लोक में अधोगामिनी विजय में पडती है और तिर्यक् लोक में भी पडती है ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! जैसे बादर पानी की वर्षा होने से वह पानी तडागादि में एकत्रित होकर बहुत काल पर्यंत टिकता है वैसे ही क्या सूक्ष्म अप्काय

शब्दार्थ

गौतम उ० ऊर्ध्व प०गीरे अ०अधो प० गीरे ति० तिर्यक् प०गीरे॥१८॥ ज० जैसे से०वह बा० बादर आ० अपूकाय अ० अन्योन्य स० रहता चि० चिरकाल दी० दीर्घकाल चि० रहे त० तैसे से० वह नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह खि० शीघ्र वि० विध्वंस आ० आता है से० ऐसे भं०भगवन्॥१॥६॥

ने० नारकी भं० भगवन् ने०नरकमें उ०उपजता किं०क्या दे०देशसे दे० देश उ० उपजे दे०देश से स० सर्व उ० उपजे स० सर्व से दे० देश उ० उपजे स० सर्व से स० सर्व उ० उपजे गो० गौतम नो० नहीं

सूत्र

समाउत्ते चिरंपि दीहकालं चिट्ठइ, तहाणं सेवि ? णोइणट्ठे समट्ठे। सेणं खिप्पामेव वि-द्धंसमागच्छइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥१॥६॥

नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं देसेणं देसं उववज्जइ, देसेणं सव्वं उवव-ज्जइ, सव्वेणं देसं उववज्जइ, सव्वेणं सव्वं उववज्जइ ? गोयमा ! नो देसेणं देसं उव

भावार्थ

भी बहुत काल तक टिकती है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों की सूक्ष्म अपूकाय बहुत काल पर्यंत नहीं टिकती है. अल्प समय में नष्ट होती है. गौतम स्वामी कहते हैं कि अहो भगवन् ! आपका वचन सत्य है. अन्यथा नहीं है. यह पहिले शतकका छठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥१॥६॥

छठे उद्देशे में विध्वंस की कथा कही अब सातवे उद्देशे में इससे विपरीत उत्पन्न होने की वक्तव्यता करते

शब्दार्थ दे० देश से दे० देश उ० उपजे नो० नहीं दे० देशसे स० सर्व उ० उपजे नो० नहीं स० सर्व से दे० देश उ० उपजे स० सर्व से स०सर्व उ०उपजे ज० जैसे ने० नारकी ए० ऐसे जा० यावत् वे०वैमानिक ॥१॥

सूत्र वज्जइ, नोदेसेणं सव्वं उववज्जइ, णोसव्वेणं देसं उववज्जइ, सव्वेणं सव्वं उववज्जइ ॥ जहा नेरइए, एवं जाव वेमाणिए ॥ १ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे

भावार्थ हैं. अहो भगवन् ! नारकी में उत्पन्न होता * हुवा जीव क्या अपने देश से नारकी का देशपने उत्पन्न होता है ? क्या अपना एक देश से नारकीका सर्वांगपने उत्पन्न होता है ? क्या अपना सर्वांग से नारकी का एक देशपने उत्पन्न होता है ? अथवा क्या अपना सर्वांग से नारकी का सर्वांगपने उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! नारकी में उत्पन्न होता जीव देश से देश नहीं उत्पन्न होता है, देश से सर्व नहीं उत्पन्न होता है, सर्व से देश नहीं उत्पन्न होता है, परंतु सर्व से सर्व उत्पन्न होता है अर्थात् संपूर्ण जीव नारकी के सर्वांगपने उत्पन्न होता है. जैसे नरकका कहा है वैसे ही असुर कुमारादिक से वैमानिक तक के सब दंडक का कहना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में उत्पन्न होता जीव क्या अपना देश से देश का

---

* यहांपर उत्पन्न होताहुवा कहनेसे उत्पन्नहुवा ऐसाही जानना. क्योंकी नारकीके आयुष्यका उदय होनेसे अन्य तिर्यंचादिकके आयुष्यका अभावहै

शब्दार्थ गौतम उ० ऊर्ध्व प०गीरे अ०अधो प० गीरे ति० तिर्यक् प०गीरे॥१८॥ ज० जैसे से०वह बा० बादर आ० अप्काय अ० अन्योन्य स० रहता चि० चिरकाल दी० दीर्घकाल चि० रहे त० तैसे से० वह नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह खि० शीघ्र वि० विध्वंस आ० आता है से० ऐसे भं०भगवन्॥१॥६॥

ने० नारकी भं० भगवन् ने०नरकमें उ० उपजता किं०क्या दे०देशने दे० देश उ० उपजे दे०देश से स० सर्व उ० उपजे स० सर्व से दे० देश उ० उपजे स० सर्व से स० सर्व उ० उपजे गो० गौतम नो० नहीं

सूत्र समाउत्ते चिरंपि दीहकालं चिट्ठइ, तहाणं सेवि? णोइणट्ठे समट्ठे। सेणं खिप्पामेव वि-द्धंसमागच्छइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥१॥६॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं देसेणं देसं उववज्जइ, देसेणं सव्वं उवव-ज्जइ, सव्वेणं देसं उववज्जइ, सव्वेणं सव्वं उववज्जइ ? गोयमा ! नो देसेणं देसं उव

भावार्थ भी बहुत काल तक टिकती है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों की सूक्ष्म अप्काय बहुत काल पर्यंत नहीं टिकती है. अल्प समय में नष्ट होती है. गौतम स्वामी कहते हैं कि अहो भगवन् ! आपका वचन सत्य है. अन्यथा नहीं है. यह पहिले शतकका छठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥१॥६॥

छठे उद्देशे में विध्वंस की कथा कही अब सातवे उद्देशे में इससे विपरीत उत्पन्न होने की वक्तव्यता करते

अर्थ

ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ २ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरक से उ० चवता किं० क्या दे० देश से दे० देश उ० चवे ज० जैसे उ० उपजने में त० तैसे उ० चवने में दं० दंडक भा० कहना ॥ ३ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरक से उ० चवता किं० क्या दे० देश मे दे० देश आ० आहार करे त०

सूत्र

वा देसं आहारेइ, सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ, एवं जाव वेमाणिए ॥ २ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे, किं देसेणं देसं उव्वट्टइ? जहा उववज्जमाणे, तहेव उव्वट्टमाणेवि दंडगो भाणियव्वो ॥ ३ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे किं देसेणं देसं आहारेइ? तहेव जाव सव्वेणं वा देसं आहारेइ, सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ॥

भावार्थ

दंडक का जानना. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में से उद्वर्तता हुवा जीव क्या अपने देश से देशकी उद्वर्तना करे, देशसे सर्व की उद्वर्तना करे, सर्व से देश की उद्वर्तना करे, या सर्व से सर्व की उद्वर्तना करे? अहो गौतम ! जैसे उत्पन्न आश्रित कहा वैसे ही उद्वर्तन आश्रित जानना. इस में सर्व से सर्व उद्वर्तता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में से उद्वर्तता हुवा जीव क्या देश से देश पुद्गलों का आहार करे? देश से सर्व पुद्गलों का आहार करे ? सर्व से देश का आहार करे ? अथवा सर्व से सर्व का आहार करे? अहो गौतम ! सर्वसे देश का आहार करे व सर्व से सर्व का आहार करे, शेष सब पहिले उपजने के समय आहार का कहा वैसे ही यहां कहना. जैसे नरक का उद्वर्तन व आहार का कहा वैसे ही शेष सब

शब्दार्थ ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरक में उ० उपजता किं० क्या दे० देश से दे० देश आ० आहारकरे दे० देश से स० सर्व आ० आहार करे स० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्व से स० सर्व आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं दे० देश से दे० देश आ० आहार करे नो० नहीं दे० देश से स० सर्व आ० आहारकरे स० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्वसे स० सर्व आ० आहार करे

सूत्र किं देसेणं देसं आहारेइ, देसेणं सव्वं आहारेइ, सव्वेणं देसं आहारेइ, सव्वेणं सव्वं आहारेइ ? गोयमा ! णो देसेणं देसं आहारेइ, णो देसेणं सव्वं आहारेइ, सव्वेणं

भावार्थ आहार करे ? देश से सर्वका आहार करे ? सर्व से देश का आहार करे ? अथवा सर्व से सर्व का आहार करे ? अहो गौतम ! जीव एक देश से देश पुद्गलों का आहार नहीं करता है, जीव एक देश से सब पुद्गलों का आहार नहीं करता है, परंतु उत्पन्न होने के दूसरे समय में ही सब प्रदेश से नरक के देश पुद्गलों का आहार करता है, और जीव के समस्त प्रदेश से समस्त पुद्गलों का आहार करता है. जैसे उष्ण किया हुवा तेल की कडाइ में पुरी को डालते पहिले पास के तेल को चूस लेती है फीर थोडा बहुत ग्रहण करती है और थोडा बहुत छोडती है. इस प्रकार उत्पन्न होने के समय में आहार के ग्रहण योग्य जितने पुद्गलों होवे उन सब को खींच लेता है फीर कितनेक पुद्गलों ग्रहण करता है और कितनेक छोडता है, इस तरह दो प्रकार से नरक के जीव आहार करते हैं. जैसे नरक का कहा वैसे ही अन्य सब

शब्दार्थ ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ २ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरक से उ० चवता किं० क्या दे० देश से दे०देश उ० चवे ज० जैसे उ० उपजने में त० तैसे उ० चवने में दं०दंडक भा०कहना ॥३॥ ने० नारकी भं० भगवन् ने० नरक से उ० चवता किं० क्या दे० देश से दे० देश आ० आहार करे त०

सूत्र वा देसं आहारेइ, सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ, एवं जाव वेमाणिए ॥ २ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे, किं देसेणं देसं उव्वट्टइ? जहा उववज्जमाणे, तहेव उव्वट्टमाणेवि दंडगो भाणियव्वो ॥ ३ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे किं देसेणं देसं आहारेइ? तहेव जाव सव्वेणं वा देसं आहारेइ, सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ॥

भावार्थ दंडक का जानना. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में से उद्वर्तता हुवा जीव क्या अपने देश से देशकी उद्वर्तना करे, देशसे सर्व की उद्वर्तना करे, सर्व से देश की उद्वर्तना करे, या सर्व से सर्व की उद्वर्तना करे? अहो गौतम ! जैसे उत्पन्न आश्रित कहा वैसे ही उद्वर्तन आश्रित जानना. इस में सर्व से सर्व उद्वर्तता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! नारकी में से उद्वर्तता हुवा जीव क्या देश से देश पुद्गलों का आहार करे ? देश से सर्व पुद्गलों का आहार करे ? सर्व से देश का आहार करे ? अथवा सर्व से सर्व का आहार करे ? अहो गौतम ! सर्वसे देश का आहार करे व सर्व से सर्व का आहार करे, शेष सब पहिले उपजने के समय आहार का कहा वैसे ही यहां कहना. जैसे नरक का उद्वर्तन व आहार का कहा वैसे ही शेष सब

शब्दार्थ

तैसे जा०यावत् स० सर्व से स० सर्व आ० आहार करे ए० ऐसे जा०यावत् वे० वैमानिक॥४॥ ने० नारकी भं०भगवन् ने० नरक में उ० उत्पन्न हुवा किं० क्या दे० देश से दे० देश उ० उत्पन्न हुवा ए०यह त० तैसे जा० यावत् स० सर्व से स० सर्व उ० उत्पन्न हुवा ज० जैसे उ० उपजता उ० चवता में च० चार दं० दंडक त० तैसे उ० उत्पन्न हुवा उ० चवा च० चार दं० दंडक भा० कहना स० सर्व से स० सर्व उ० उत्पन्न हुवा म० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्व से स० सर्व आ० आहारकरे ए०

सूत्र

एवं जाव वेमाणिया ॥ ४ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववण्णे किं देसेणं देसं उववण्णे ? एसोवि तहेव जाव सव्वेणं सव्व उववण्णे जहा उववज्जमाणे उव्वट्टमाणेय चत्तारि दंडगा तहा उववण्णे उव्वट्टणेवि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा, सव्वेणं सव्वं उववण्णं सव्वेण वा देसं आहारेइ सव्वेणं सव्वं

दंडक में जानना ॥ ४ ॥ अब उत्पन्न हुवा व उत्पन्न हुए [redacted] आहार संबंधी दो दंडक कहते हैं. अहो भगवन् ! नारकी में उत्पन्न हुवा जीव क्या अपने देश से नारकी का देशपने उत्पन्न हुवा यावत् सर्व से सर्वपने उत्पन्न हुवा ? अहो गौतम ! इस का अधिकार उत्पन्न होते हुवे में जैसा कहा वैसा यहां पर कहना. उत्पन्न होते व उद्वर्तते के चार दंडक जैसे कहा वैसे ही उत्पन्न हुवे व उद्वर्ते का आहार की साथ चार दंडक जानना. इस में सब से सब उत्पन्न हुवा, उत्पन्न हुए जीव सब से देश का आहार करे, सब

पदार्थ यह अ० अभिलाप से उ० उत्पन्न हुवा उ० चवामें ने० जानना ॥ ५ ॥ ने०नारकी भं० भगवन् ने०नरक में उ० उपजता किं० क्या अ० अर्ध से अ० अर्ध उ० उपजे अ० अर्ध से स०सर्व उ० उपजे स० सर्व से अ० अर्ध उपजे स० सर्व से स० सर्व उ० उपजे ज० जैसे प० प्रथम अ० आठ दं० दंडक त० तैसे अ० अर्ध में अ० आठ दं० दंडक भा० कहना ण० विशेष अ० जहां दे० देश से दे० देश उ० उपजे त० तहां अ० अर्ध से अ० अर्ध उ० उपजे भा० कहना ए० ऐसे ना० नानाप्रकार स० सर्व सो० सोलह

सूत्र आहारइ. एएणं अभिलावेणं उववण्णे उव्वट्टेवि नेयव्वं ॥ ५ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं अद्धेणं अद्धं उववज्जइ, अद्धेणं सव्वं उववज्जइ, सव्वेणं अद्धं उववज्जइ, सव्वेणं सव्वं उववज्जइ ? जहापढमिल्लेणं अट्ठदंडगा तहा अद्धेणावि अट्ठ दंडगा भाणियव्वा. णवरं जहिं देसेणं देसं उववज्जइ तहिं अद्धेणं अद्धं उववज्जइ त्ति-

भावार्थ से सब का आहार करे ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! नरक में उत्पन्न होता जीव क्या अपना अर्ध से अर्ध नारकीपने उत्पन्न होता है, अर्ध से सर्व उत्पन्न होता है, सर्व से अर्ध उत्पन्न होता है, सर्व से सर्व उत्पन्न होता है? अहो गौतम ! जैसे पहिले देश के आठ दंडक कहे वैसे ही यहां अर्ध के आठ दंडक जानना. इतनी भिन्नता कि देश के स्थान में यहां पर अर्ध कहना. * ऐसे सब मीलकर सोलह दंडक हुवे ॥ ६ ॥ उत्पन्न

* यहां कोइ प्रश्न करे कि देश व अर्धमें क्या भिन्नता है? देशके थोडे, बहुत ऐसे अनेक भेद होते हैं, और अर्धके दो विभागही होते हैं

शब्दार्थ

तैसे जा०यावत् स० सर्व से स० सर्व आ० आहार करे ए० ऐसे जा०यावत् वे० वैमानिक॥४॥ ने० नारकी भं०भगवन् ने० नरक में उ० उत्पन्न हुवा किं० क्या दे० देश से दे० देश उ० उत्पन्न हुवा ए०यह त० तैसे जा० यावत् स० सर्व से स० सर्व उ० उत्पन्न हुवा ज० जैसे उ० उपजता उ० चवता में च० चार दं० दंडक त० तैसे उ० उत्पन्न हुवा उ० चवा च० चार दं० दंडक भा० कहना स० सर्व से स० सर्व उ० उत्पन्न हुवा स० सर्व से दे० देश आ० आहार करे स० सर्व से स० सर्व आ० आहारकरे ए०

सूत्र

एवं जाव वेमाणिया ॥ ४ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववण्णे किं देसेणं देसं उववण्णे ? एसोवि तहेव जाव सव्वेणं सव्व उववण्णे जहा उववज्जमाणे उव्वट्टमाणेय चत्तारि दंडगा तहा उववण्णे उव्वट्टणेवि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा, सव्वेणं सव्वं उववण्णं सव्वेण वा देसं आहारेइ सव्वेणं सव्वं

भावार्थ

दंडक में जानना ॥ ४ ॥ अब उत्पन्न हुवा व उत्पन्न हुए का आहार संबंधी दो दंडक कहते हैं. अहो भगवन् ! नारकी में उत्पन्न हुवा जीव क्या अपने देश से नारकी का देशपने उत्पन्न हुवा यावत् सर्व से सर्वपने उत्पन्न हुवा ? अहो गौतम ! इस का अधिकार उत्पन्न होते हुवे में जैसा कहा वैसा यहां पर कहना. उत्पन्न होते व उद्वर्तते के चार दंडक जैसे कहा वैसे ही उत्पन्न हुवे व उद्वर्ते का आहार की साथ चार दंडक जानना. इस में सब से सब उत्पन्न हुवा, उत्पन्न हुए जीव सब से देश का आहार करे, सब

शब्दार्थ गति स० प्राप्त अ० अविग्रहगति स० प्राप्त गो० गौतम स० सर्व ता० तैसे हो० होवे ए० ऐसे जी० जीव ए० एकेन्द्रिय व० वर्जकर ति० तीन भांगे ॥ ८ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक म० ज्योतिवंत म० बलवंत म० यशस्वी म० महासुखी म० महानुभाव अ० नजदीक च० चवता किं० थोडाकाल हि० लज्जा दु० दुगं-

सूत्र समावण्णगा अविग्गहगइ समावण्णगा ? गोयमा ! सव्वेवि तावहोज्जा. अविग्गहगइ समावण्णगा, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय, विग्गहगइ समावण्णगेय, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय विग्गहगइ समावण्णगाय एवं जीव एगिंदिय वज्जो तिय भंगो ॥ ८ ॥ देवेणं भंते ; महड्डिए, महज्जुइए, महब्बले, महाजसे, महेसक्खे, महाणुभावे, अविउक्कंतियं चयमाणे किंचिकालं हिरवत्तियं, दुगं-

भावार्थ गति करनेवाले हैं या अविग्रह गति करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! नारकी में अविग्रहगतिवाले विशेष होने से अविग्रहगति में बहुवचन लीया है. और विग्रह गतिवाले थोडे होवे अथवा न होवे इसलिये एक वचन लिया है. इस के तीन भांगे होते हैं १ नारकी में सब जीव अविग्रहगति संयुक्त २ अविग्रहगतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त एक ३ अविग्रह गतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त बहुत. ऐसे ही एकेन्द्रिय के पांच दंडक छोडकर अन्य सब दंडक में उक्त तीनों भांगे पाते हैं. एकेन्द्रिय में विग्रहगतिवन्त व अविग्रहगति-वंत बहुत होने से भांगा नहीं होता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक, महाद्युतिवन्त, महाबलवन्त, महा

शब्दार्थ द० दंडक भा० कहना ॥ ६ ॥ जी० जीव भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रहगति स० प्राप्त अ० अवि-ग्रहगति स० प्राप्त गो० गौतम सि० कदाचित् वि० विग्रहगति स० प्राप्त सि० कदाचित् अ० अविग्रहगति स० प्राप्त ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ७ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रह-

सूत्र भाणियव्वं ॥ एवं णाणत्तं, एवं सव्वेवि सोलसदंडगा भाणियव्वा ॥ ६ ॥ जीवेणं भंते किं विग्गहगइ समावण्णए, अविग्गहगइ समावण्णए? गोयमा! सिय विग्गहगइ समावण्णए, सिय अविग्गहगइ समावण्णए एवं जाव वेमाणिए॥ जीवाणं भंते! किं विग्गहगइ समावण्णगा, अविग्गहगइ समावण्णगा ? गोयमा ! विग्गहगइ समावण्णगावि, अविग्गहगइ समावण्णगावि ॥ ७ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं विग्गहगइ

भावार्थ न नवण मायागति पूर्वक होता है. इसलिये आगे गति का वर्णन करते हैं. अहो भगवन् ! गति करते जीव क्या विग्रह गति मे जाता है या अविग्रह गति से जाता है ? अहो गौतम ! किसी समय जीव विग्रह गति से जाता है और किसी समय जीव अविग्रह गति से जाता है. ऐसा वैमानिक तक का जानना अब बहुत जीव आश्री प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! बहुत जीव विग्रह गतिवाले हैं या अविग्रह गतिवाले हैं ? विग्रहगतिवाले भी हैं और अविग्रहगतिवाले भी हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी विग्रह

शब्दार्थ गति स० प्राप्त अ० अविग्रहगति स०प्राप्त गो०गोतम स० सर्व ता० तैसे हो० होवे ए० ऐसे जी० जीव ए० एकेन्द्रिय व० वर्जकर ति० तीन भांगे ॥ ८ ॥ दे० देव भं० भगवन् म० महर्द्धिक म०ज्योतिवंत म०बलवंत म० यशस्वी म० महासुखी म०महानुभाव अ० नजदीक च० चवता किं० थोडाकाल हि० लज्जा दु० दुगं-

सूत्र समावण्णगा अविग्गहगइ समावण्णगा ? गोयमा ! सव्वेवि तावहोज्जा. अविग्गहगइ समावण्णगा, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय, विग्गहगइ समावण्णगेय, अहवा अविग्गहगइ समावण्णगाय विग्गहगइ समावण्णगाय एवं जीव एगिंदिय वज्जो तिय भंगो ॥ ८ ॥ देवेणं भंते ; महड्डिए, महज्जुइए, महब्बले, महाजसे, महेसक्खे, महाणुभावे, अविउक्कंतियं चयमाणे किंचिकालं हिरवत्तियं, दुगं-

भावार्थ गति करनेवाले हैं या अविग्रह गति करनेवाले हैं ? अहो गौतम ! नारकी में अविग्रहगतिवाले विशेष होने से अविग्रहगति में बहुवचन लीया है. और विग्रह गतिवाले थोडे होवे अथवा न होवे इसलिये एक वचन लिया है. इस के तीन भांगे होते हैं १. नारकी में सब जीव अविग्रहगति संयुक्त २ अविग्रहगतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त एक ३ अविग्रह गतिवन्त बहुत व विग्रहगतिवन्त बहुत. ऐसे ही एकेन्द्रिय के पांच दंडक छोडकर अन्य सब दंडक में उक्त तीनों भांगे पाते हैं. एकेन्द्रिय में विग्रहगतिवन्त व अविग्रहगति-वंत बहुत होने से भांगा नहीं होता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! महर्द्धिक, महाद्युतिवन्त, महाबलवन्त, महा

शब्दार्थ द० दंडकी भा० कहना ॥ ६ ॥ जी० जीव भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रहगति स० प्राप्त अ० अविग्रहगति स० प्राप्त गो० गौतम सि० कदाचित् वि० विग्रहगति स० प्राप्त सि० कदाचित् अ० अविग्रहगति स० प्राप्त ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ७ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् किं० क्या वि० विग्रह-

सूत्र भाणियव्वं ॥ एवं णाणत्तं, एवं सव्वेवि सोलसदंडगा भाणियव्वा ॥ ६ ॥ जीवेणं भंते किं विग्गहगइ समावण्णए, अविग्गहगइ समावण्णए? गोयमा! सिय विग्गह गइ समावण्णए, सिय अविग्गहगइ समावण्णए एवं जाव वेमाणिए॥ जीवाणं भंते! किं विग्गहगइ समावण्णगा, अविग्गहगइ समावण्णगा ? गोयमा ! विग्गहगइ समावण्णगावि, अविग्गहगइ समावण्णगावि ॥ ७ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं विग्गहगइ

भावार्थ च्यवन प्रायःगति पूर्वक होता है. इसलिये आगे गति का वर्णन करते हैं. अहो भगवन् ! गति करते जीव क्या विग्रह गति से जाता है या अविग्रह गति से जाता है ? अहो गौतम ! किसी समय जीव विग्रह गति से जाता है और किसी समय जीव अविग्रह गति से जाता है. ऐसा वैमानिक तक का जानना अब बहुत जीव आश्री प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! बहुत जीव विग्रह गतिवाले हैं या अविग्रह गतिवाले हैं ? विग्रहगतिवाले भी हैं और अविग्रहगतिवाले भी हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी विग्रह

शब्दार्थ उपजता किं० क्या स० सइन्द्रियपने व० उपजता है अ० अनिन्द्रियपने व० उपजता है गो० गौतम सि० कदाचित् स० सइन्द्रियपने व० उपजता है सि० कदाचित् अ० अनिन्द्रियपने उपजता है से० वह के० कैसे गो० गौतम द० द्रव्येन्द्रिय प० प्रत्यय अ० अनिन्द्रिय व० उपजे भा० भाव इन्द्रिय प० प्रत्यय स० सइन्द्रिय व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ १० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता किं०

सूत्र अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेणं ॥ १० ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ;

भावार्थ स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता हुआ जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से जीव क्वचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि निर्वृत्त्युपकरण रूप, स्पर्शन, रस, घ्राण, चक्षुः व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुये पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित सइन्द्रिय होता है क्यों की ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती है. इसलिये अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है. ॥ १० ॥ इन्द्रिय

शब्दार्थ

उपजता किं० क्या स० सइन्द्रियपने व० उपजता है अ० अनिन्द्रियपने व० उपजता है गो० गौतम सि० कदाचित् स० सइन्द्रियपने व० उपजता है सि० कदाचित् अ० अनिंद्रियपने उपजता है से० वह के० कैसे गो० गौतम द० द्रव्येन्द्रिय प० प्रत्यय अ० अनिन्द्रिय व० उपजे भा० भाव इन्द्रिय प० प्रत्यय स० सइन्द्रिय व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ १० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता किं०

सूत्र

अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेणं ॥ १० ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ,

भावार्थ

स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता हुवा जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से जीव क्वचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि निवृत्त्युपकरण रूप, स्पर्शन, रस, घ्राण, चक्षुः व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुवे पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित सइन्द्रिय होता है क्यों की ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती है. इसलिये अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है. ॥ १० ॥ इन्द्रिय

शब्दार्थ उपजता कि॰ क्या स॰ सइन्द्रियपने व॰ उपजता है अ॰ अनिन्द्रियपने व॰ उपजता है गो॰ गौतम सि॰ कदाचित् स॰ सइन्द्रियपने व॰ उपजता है सि॰ कदाचित् अ॰ अनिंद्रियपने उपजता है से॰ वह के॰ कैसे गो॰ गौतम द॰ द्रव्येन्द्रिय प॰ प्रत्यय अ॰ अनिन्द्रिय व॰ उपजे भा॰ भाव इन्द्रिय प॰ प्रत्यय स॰ सइन्द्रिय व॰ उपजे से॰ वह ते॰ इसलिये ॥ १० ॥ जी॰ जीव भं॰ भगवन् ग॰ गर्भ में व॰ उपजता कि॰

सूत्र अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेणं ॥ १० ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ,

भावार्थ स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता हुवा जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से जीव क्वचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि निवृत्त्युपकरण रूप, स्पर्शेन, रस, घ्राण, चक्षुः व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुवे पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित सइन्द्रिय होता है क्यों की ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती हैं. इसलिये अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है. ॥ १० ॥ इन्द्रिय

शब्दार्थ उपजता किं० क्या स० सइन्द्रियपने व० उपजता है अ० अनिन्द्रियपने व० उपजता है गो० गौतम सि० कदाचित् स० सइन्द्रियपने व० उपजता है सि० कदाचित् अ० अनिंद्रियपने उपजता है से० वह के० कैसे गो० गौतम द० द्रव्येन्द्रिय प० प्रत्यय अ० अनिन्द्रिय व० उपजे भा० भाव इन्द्रिय प० प्रत्यय स० सइन्द्रिय व० उपजे से० वह ते० इसलिये ॥ १० ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में व० उपजता किं०

सूत्र अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ, सिय अणिंदिए वक्कमइ । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ, भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ से तेणट्ठेणं ॥ १० ॥ जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सरीरी वक्कमइ,

भावार्थ स्थान का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन्! गर्भ में उत्पन्न होता हुवा जीव क्या इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है अथवा इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! क्वचित् इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित भी उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! किस कारन से जीव क्वचित् सइन्द्रियपने उत्पन्न होता है और क्वचित् अनिन्द्रियपने होता है ? अहो गौतम ! द्रव्य इन्द्रिय आश्रित अनिन्द्रिय उत्पन्न होता है क्यों कि द्रव्य इन्द्रिय रूप, स्पर्श, रस, घ्राण, चक्षु व श्रोतेन्द्रिय पर्याप्त हुवे पीछे होती है और भावेन्द्रिय आश्रित होता है क्यों की ज्ञानरूप इन्द्रिय जीव को सदा काल रहती है. इसलिये अहो गौतम ! इन्द्रिय सहित उत्पन्न होता है और क्वचित् इन्द्रिय रहित उत्पन्न होता है. ॥ १० ॥ इन्द्रिय

शब्दार्थ आहार आ० आहारकरे गो० गौतम मा० माता का ओ० रुधिर पि० पिताका सु० वीर्य तं० उस उ० दोनों सं० मिलाहुवा क० मलिन कि० किल्वीषरूप प० प्रथम आ० आहार आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० गयाहुवा किं० क्या आ० आहार आ० आहारकरे गो० गौतम जं० जो मा० माता ना० नानाप्रकार र० रस वि० विकृति आ० आहारकरे त० उस का ए० एक दे० देश ओ० ओज आ० आहारकरे ॥१३॥ जी० जीव को भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० उत्पन्न हुवा अ० है उ०

सूत्र वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभय संसिट्ठं कलुसं किब्बिसं, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सणं भंते ! गब्भगयस्स

भावार्थ है. ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिलेहि क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने से किल्विष रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता हे ? अहो गौतम ? गर्भवती स्त्री दुग्ध घृतादिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

शब्दार्थ

आहार आ॰ आहारकरे गो॰ गौतम मा॰ माता का ओ॰ रुधिर पि॰ पिताका सु॰ वीर्य तं॰ उस उ॰ दोनों सं॰ मिलाहुवा क॰ मलिन कि॰ किल्वीपरूप प॰ प्रथम आ॰ आहार आ॰ आहारकरे ॥ १२ ॥ जी॰ जीव भं॰ भगवन् ग॰ गर्भ में ग॰ गयाहुवा किं॰ क्या आ॰ आहार आ॰ आहारकरे गो॰ गौतम जं॰ जो मा॰ माता ना॰ नानाप्रकार र॰ रस वि॰ विकृति आ॰ आहारकरे त॰ उस का ए॰ एक दे॰ देश ओ॰ ओज आ॰ आहारकरे ॥१३॥ जी॰ जीव को भं॰ भगवन् ग॰ गर्भ में ग॰ उत्पन्न हुवा अ॰ है उ॰

सूत्र

वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभय संसिट्ठं कलुसं किब्बिसं, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सणं भंते ! गब्भगयस्स

भावार्थ

है. ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिलेहि क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने से किल्विप रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता है ? अहो गौतम ? गर्भवती स्त्री दुग्ध घृता-दिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

शब्दार्थ आहार आ० आहारकरे गो० गौतम मा० माता का ओ० रुधिर पि० पिताका सु० वीर्य तं० उस उ० दोनों सं० मिलाहुवा क० मलिन कि० किल्वीषरूप प० प्रथम आ० आहार आ० आहारकरे ॥ १२ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० गयाहुवा किं० क्या आ० आहार आ० आहारकरे गो० गौतम जं० जो मा० माता ना० नानाप्रकार र० रस वि० विकृति आ० आहारकरे त० उस का ए० एक दे० देश ओ० ओज आ० आहारकरे ॥१३॥ जी० जीव को भं० भगवन् ग० गर्भ में ग० उत्पन्न हुवा अ० है उ०

सूत्र वक्कममाणे तप्पढमयाए कमाहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभय संसिट्ठं कलुसं किव्विसं, तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥ १२ ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ? गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगईओ आहारेइ तदेगदेसेणय ओय माहारेइ ॥ १३ ॥ जीवस्सणं भंते ! गब्भगयस्स

भावार्थ है. ॥ ११ ॥ शरीर आहार से होता है इसलिये आहार का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता जीव पहिलेहि क्या आहार करता है ? अहो गौतम ! माता का ऋतुकाल संबंधी रुधिर व पिता का वीर्य यह दोनों परस्पर मिलने से किल्विप रूप बने हुवे पुद्गलों का आहार जीव प्रथम करता है. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव किस का आहार करता है ? अहो गौतम ? गर्भवती स्त्री दुग्ध घृतादिक का जो आहार करती है और उस का जो रस होता है उस में से एक देश (कुच्छ थोडा विभाग)

शब्दार्थ भगवन् ग० गर्भ में उत्पन्न मु० मुखसे का० कवल आ० आहार आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में उपजा स० सर्व तरफ से आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले अ० वारंवार आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले आ० कदाचित् आ० आहार करे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले मा० माताका जीव र० नाभिनाल पु० पुत्रका जीव र० नाभिनाल मा० माता का

सूत्र कावलियं आहारं आहारित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा- जीवेणं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ आभिक्खण आहारेइ आभिक्खणं परिणामेइ आभिक्खणं उस्ससइ अभिक्खणं निस्ससइ, आहच्च आहारेइ आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ, माउ जीव रसहरणी पुत्तजीव रसहरणी माउ जीव पडिबद्धा पुत्तजीव

भावार्थ कवल का आहार कर सकता है ? अहो गौतम ! यह अर्थयोग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ! अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव सब आत्मा से आहार करता है, परिणमाता है, उश्वास लेता है, नीश्वास लेता है, वारंवार आहार करता है, वारंवार परिणमाता है, वारंवार श्वासोश्वास लेता है, अथवा क्वचित् अहार करता है, परिणमाता है व श्वासोश्वास लेता है, गर्भवती स्त्री को नाभीस्थान में रसहरणी नामक एक नाडी नली रूप होती है. यह नाली गर्भस्थ जीव को स्पर्शकर रहती है. उस से वह जीव

पदार्थ भगवन् ग० गर्भ में उत्पन्न मु० मुखसे का० कवल आ० आहार आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में उपजा स० सर्व तरफ से आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले अ० वारंवार आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले आ० कदाचित् आ० आहार करे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले मा० माताका जीव र० नाभिनाल पु० पुत्रका जीव र० नाभिनाल मा० माता का

सूत्र कावलियं आहारं आहारित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा- जीवेणं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ आभिक्खण आहारेइ आभिक्खणं परिणामेइ आभिक्खणं उस्ससइ अभिक्खणं निस्ससइ, आहच्च आहारेइ आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ, माउ जीव रसहरणी पुत्तजीव रसहरणी माउ जीव पडिबद्धा पुत्तजीव

भावार्थ कवल का आहार कर सकता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ! अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव सब आत्मा से आहार करता है, परिणमाता है, उश्वास लेता है, निश्वास लेता है, वारंवार आहार करता है, वारंवार परिणमाता है, वारंवार श्वासोश्वास लेता है, अथवा कदाचित् अहार करता है, परिणमाता है व श्वासोश्वास लेता है, गर्भवती स्त्री का नाभीस्थान में रसहरणी नामक एक नाडी नली रूप होती है. यह नाली गर्भस्थ जीव को स्पर्शकर रहती है. उस से वह जीव

पदार्थ

भगवन् ग० गर्भ में उत्पन्न मु० मुखसे का० कवल आ० आहार आ० आहार करे गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में उपजा स० सर्व तरफ से आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले अ० वारंवार आ० आहारकरे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले आ० कदाचित् आ० आहार करे प० परिणमे उ० ऊश्वासले नि० निश्वासले मा० माताका जीव र० नाभिनाल पु० पुत्रका जीव र० नाभिनाल मा० माता का

सूत्र

कावलियं आहारं आहारित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा- जीवेणं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ आभिक्खण आहारेइ आभिक्खणं परिणामेइ आभिक्खणं उस्ससइ अभिक्खणं निस्ससइ, आहच्च आहारेइ आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ, माउ जीव रसहरणी पुत्तजीव रसहरणी माउ जीव पडिबद्धा पुत्तजीव

भावार्थ

कवल का आहार कर सकता है ? अहो गौतम ! यह अर्थयोग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से ! अहो गौतम ! गर्भ में रहा हुवा जीव सब आत्मा से आहार करता है, परिणमाता है, उश्वास लेता है, नीश्वास लेता है, वारंवार आहार करता है, वारंवार परिणमाता है, वारंवार श्वासोश्वास लेता है, अथवा क्वचित् अहार करता है, परिणमाता है व श्वासोश्वास लेता है, गर्भवती स्त्री को नाभीस्थान में रसहरणी नामक एक नाडी नली रूप होती है. वह नाली गर्भस्थ जीव को स्पर्शकर रहती है. उस से वह जीव

तत्वार्थ

अंग गो॰गौतम त॰तीन पे॰पिता के अंग अ॰ हड्डि अ॰हड्डिकीमिंज के॰केश मं॰श्मश्रु रो॰रोम न॰नख॥१७॥ अ॰ माता पिता का भं॰भगवन् स॰शरीर के॰कितना का॰काल सं॰ रहे गो॰गौतम जा॰ जितना का॰काल भ॰ भवधारणीय स॰ शरीर अ॰ नाश न पावे ए॰ इतना का॰ काल सं॰ रहे अ॰ अत्र स॰समय २ में वो॰ हीन होता च॰ चरिम का॰ काल स॰समय में वो॰ नाश भ॰ होवे॥ १८ ॥ जी॰ जीव भं॰ भगवन्

सूत्र

पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पेइयंगा पण्णत्ता तंजहा अट्ठि, अट्ठिमिंजा, केसमंसुरोमनहे ॥ १७ ॥ अम्मा पेइएणं भंते ! सरीरए केवइयं कालं संचिट्ठइ ? गोयमा ! जावइयं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावण्णे भवइ, एवतियं कालं संचिट्ठइ. अहेणं समए समए वोयासिज्जमाणे चरिम काल समयंसि वोच्छिण्णे भवइ ॥ १८ ॥ जीवेणं

भावार्थ

शरीर में पिता के तीन अंग होते हैं. १ अस्थि, २ अस्थि की मींजी ३ केश श्मश्रु रोम व नख. ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! माता व पिता के अंग जीव की साथ कितने काल तक सम्बन्ध रखते हैं. ? अहो गौतम ! जहांलग मनुष्यादिक का भवधारणीय शरीर विनाश होवे नहीं वहां लग माता व पिता के अंग रहते हैं. अर्थात् शरीर का विनाश होनेपर इन अंगों का भी विनाश होता है. जिस समय से माता व पिता के अंगों संबंधी आहार ग्रहण किया था उस समय से लगाकर प्रति समय क्षीण होते २ अन्तिम काल में

शब्दार्थ अंग गो०गौतम त०तीन पे०पिता के अंग अ० हड्डि अ०हड्डिकीमिंज के०केश मं०श्मश्रु रो०रोम न०नख॥१७॥ अ० माता पिता का भं०भगवन् स०शरीर के०कितना का०काल सं० रहे गो०गौतम जा० जितना का०काल भ० भवधारणीय स० शरीर अ० नाश न पावे ए० इतना का० काल सं० रहे अ० अब स०समय २ में वो० हीन होता च० चरिम का० काल स०समय में वो० नाश भ० होवे॥ १८ ॥ जी० जीव भं० भगवन्

सूत्र पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पेइयंगा पण्णत्ता तंजहा अट्ठि, अट्ठिमिंजा, केसमंसुरोमनहे ॥ १७ ॥ अम्मा पेइएणं भंते ! सरीरए केवइयं कालं संचिट्ठइ ? गोयमा ! जावइयं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावण्णे भवइ, एवतियं कालं संचिट्ठइ. अहेणं समए समए वोयसिज्जमाणे चरिम काल समयंसि वोच्छिण्णे भवइ ॥ १८ ॥ जीवेणं

भावार्थ शरीर में पिता के तीन अंग होते हैं. १ अस्थि, २ अस्थि की मींजी ३ केश श्मश्रु रोम व नख. ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! माता व पिता के अंग जीव की साथ कितने काल तक सम्बन्ध रखते हैं. ? अहो गौतम ! जहांलग मनुष्यादिक का भवधारणीय शरीर विनाश होवे नहीं वहां लग माता व पिता के अंग रहते हैं. अर्थात् शरीर का विनाश होनेपर इन अंगों का भी विनाश होता है. जिस समय से माता व पिता के अंगों संबंधी आहार ग्रहण किया था उस समय से लगाकर प्रति समय क्षीण होते २ अन्तिम काल में

शब्दार्थ अंग गो॰गौतम त॰तीन पे॰पिता के अंग अ॰ हड्डि अ॰हड्डिकीमिंज के॰केश मं॰श्मश्रु रो॰रोम न॰नख॥१७॥ अ॰ माता पिता का भं॰भगवन् स॰शरीर के॰कितना का॰काल सं॰ रहे गो॰गौतम जा॰ जितना का॰काल भ॰ भवधारणीय स॰ शरीर अ॰ नाश न पावे ए॰ इतना का॰ काल सं॰ रहे अ॰ अत्र स॰समय २ में वो॰ हीन होता च॰ चरिम का॰ काल स॰समय में वो॰ नाश भ॰ होवे॥ १८ ॥ जी॰ जीव भं॰ भगवन्

सूत्र पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पेइयंगा पण्णत्ता तंजहा आट्ठि, आट्ठिमिंजा, केसमंसुरोमनहे ॥ १७ ॥ अम्मा पेइएणं भंते ! सरीरए केवइयं कालं संचिट्ठइ ? गोयमा ! जावइयं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावण्णे भवइ, एवतियं कालं संचिट्ठइ. अहेणं समए समए वोयसिज्जमाणे चरिम काल समयंसि वोच्छिण्णे भवइ ॥ १८ ॥ जीवेणं

भावार्थ शरीर में पिता के तीन अंग होते हैं. १ अस्थि, २ अस्थि की मींजी ३ केश श्मश्रु रोम व नख. ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! माता व पिता के अंग जीव की साथ कितने काल तक सम्बन्ध रखते हैं. ? अहो गौतम ! जहांलग मनुष्यादिक का भवधारणीय शरीर विनाश होवे नहीं वहां लग माता व पिता के अंग रहते हैं. अर्थात् शरीर का विनाश होनेपर इन अंगों का भी विनाश होता है. जिस समय से माता व पिता के अंगों संबंधी आहार ग्रहण किया था उस समय से लगाकर प्रति समय क्षीण होते २ अन्तिम काल में

पदार्थ

चा० चतुरंगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरंगी से० सैन्य से प०शत्रु शैन्य की स०साथ सं० संग्राम सं० संग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग की इच्छा वाला का० काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी कांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु त०उसमें चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वाला अ०

सूत्र

च्छुभइ;वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ,समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्व इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिंसंगामं संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए, रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

भावार्थ

वह गर्भस्थ जीव ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी. ऐसी बात सुनकर, अवधारकर जीव के प्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों को ग्रहण कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्री की सेना साथ संग्राम करे. द्रव्य की अभिलाषावाला राज्यऋद्धि की अभिलाषावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग की अभिलाषावाला, शब्द रूपादि कामकी अभिलाषावाला धन की इच्छा से आसक्त बनाहुवा, राज्य, भोग, व काम की इच्छा से आसक्त बना हुवा. धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय

शब्दार्थ चा० चतुरंगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरंगी से० सैन्य से प०शत्रु शैन्य की स०साथ सं० संग्राम सं० संग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग की इच्छा वाला का०काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी कांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु त०उसमें चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वाला अ०

सूत्र रुहुभइ, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्व इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिंसंगामं संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए, रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

भावार्थ वह गर्भस्थ जीव ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी. ऐसी बात सुनकर, अवधारकर जीव के प्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों को ग्रहण कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्री की सेना साथ संग्राम करे. द्रव्य की अभिलाषावाला राज्यऋद्धि की अभिलाषावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग की अभिलाषावाला, शब्द रूपादि कामकी अभिलाषावाला धन की इच्छा से आसक्त बनाहुवा, राज्य, भोग, व काम की इच्छा से आसक्त बना हुवा. धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय

दार्थ

चा० चतुरंगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरंगी से० सैन्य से प०शत्रु शैन्य की स०साथ सं० संग्राम सं० संग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग की इच्छा वाला का० काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी कांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु त०उसमें चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वाला अ०

सूत्र

च्छुभइ, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्व इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिंसंगामं संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए, रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

भावार्थ

वह गर्भस्थ जीव ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी. ऐसी बात सुनकर, अवधारकर जीव के प्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों को ग्रहण कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्री की सेना साथ संग्राम करे. द्रव्य की अभिलाषावाला राज्यऋद्धि की अभिलाषावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग की अभिलाषावाला, शब्द रूपादि कामकी अभिलाषावाला धन की इच्छा से आसक्त बनाहुवा, राज्य, भोग, व काम की इच्छा से आसक्त बना हुवा. धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय

शब्दार्थ

चा० चतुरंगी से० सैन्य वि० विकुर्वे वि०विकुर्व कर चा० चतुरंगी से० सैन्य से प०शत्रु शैन्य की स०साथ सं० संग्राम सं० संग्राम करे से० वह जी० जीव अ० अर्थ का इच्छक र० राज्य का इच्छक भो० भोग की इच्छा वाला का० काम की इच्छा वाला अ०अर्थ की कांक्षा वाला र०राज्यकी कांक्षा वाला भो० भोगकी कांक्षा वाला का०काम की कांक्षा वाला अ०अर्थ पिपासु र०राज्य पिपासु भो०भोग पिपासु का०काम पिपासु त०उसमें चित्त वाला म० मन वाला ले० लेश्या वाला अ०अध्यवसाय वाला ति० तीव्र आरंभ वाला अ०

सूत्र

च्छुभइ, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइए चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ, विउव्वि इत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिंसंगामं संगामेइ, सेणं जीवे अत्थ कामए, रज्जकामए, भोग कामए, कामकामए, अत्थकंखिए, रज्जकंखिए, भोगकंखिए, काम

भावार्थ

वह गर्भस्थ जीव ऐसी बात सुने की परचक्री की सेना आई है और अपन को दुःखी करेगी. ऐसी बात [illegible], आत्मप्रदेश गर्भ की बाहिर नीकाले और वैक्रेय समुद्घात से तथाविध पुद्गलों [illegible] कर हाथी, घोडे, रथ, पायदल वगैरह सेना की विकुर्वणा करे, विकुर्वणा करके परचक्री की [illegible] करे, अर्थ की अभिलाषावाला राज्यऋद्धि की अभिलाषावाला, गंधरस स्पर्शरूप भोग [illegible], शब्द रूपादि कामकी अभिलाषावाला धन की इच्छा से आसक्त बनाहुवा, राज्य, [illegible] आसक्त बना हुवा. धन, राज्य, भोग व काम का पिपासु, [अतृप्त,] तन्मय [illegible] धर्मानुराग से रक्त बनगया. फीर वह [illegible] ...

शब्दार्थ — कैसे गो० गौतम स० संज्ञी पं० पंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अं० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० अच्छा वचन सो० सुनकर नि० अव-धारकर त० पीछे भ० होवे सं० वैराग्य से उ० उत्पन्न स० श्रद्धा ति० तीव्र ध० धर्मानुराग र० रक्त जी० जीव ध० धर्म का कामी पु० पुन्य का कामी स० स्वर्ग का कामी मो० मोक्षका कामी ध० धर्म

सूत्र — वज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धाम्मियं सुवयणं सोच्चा, निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेणं जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए; मोक्खकामए; धम्मकंखिए,

भावार्थ — कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कोई जीव धर्मिष्ट स्त्री की कुक्षि में संज्ञी पंचेन्द्रियपने उत्पन्न हुवा. वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे तथारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व तीव्र धर्मानुराग से रक्त बनगया. फीर वह श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलाषी बनाहुवा, पुण्य का

शब्दार्थ कैसे गो० गौतम स० संज्ञी पं० पंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अं० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० अच्छा वचन सो० सुनकर नि० अव-धारकर त० पीछे भ० होवे सं० वैराग्य से उ० उत्पन्न स० श्रद्धा ति० तीव्र ध० धर्मानुराग र० रक्त जी० जीव ध० धर्म को कामी पु० पुन्य का कामी स० स्वर्ग का कामी मो० मोक्षका कामी ध० धर्म

सूत्र वजेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा। सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धाम्मियं सुवयणं सोच्चा, निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेणं जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए; मोक्खकामए; धम्मकंखिए,

भावार्थ कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कोई जीव धर्मिष्ट स्त्री की कुक्षि में संज्ञी पंचेन्द्रियपने उत्पन्न हुवा. वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे तथारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व तीव्र धर्मानुराग से रक्त बनगया. फीर वह श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलापी बनाहुवा, पुण्य का

शब्दार्थ कैसे गो॰ गौतम स॰ संज्ञी पं॰ पंचेन्द्रिय स॰ सर्व प॰ पर्याप्ति से प॰ पर्याप्त त॰ तथारूप स॰ श्रमण मा॰ माहण की अं॰ पास ए॰ एक आ॰ आर्य ध॰ धर्म का सु॰ अच्छा वचन सो॰ सुनकर नि॰ अव-धारकर त॰ पीछे भ॰ होवे सं॰ वैराग्य से उ॰ उत्पन्न स॰ श्रद्धा ति॰ तीव्र ध॰ धर्मानुराग र॰ रक्त जी॰ जीव ध॰ धर्म का कामी पु॰ पुन्य का कामी स॰ स्वर्ग का कामी मो॰ मोक्षका कामी ध॰ धर्म

सूत्र वजेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा, निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेणं जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए; मोक्खकामए; धम्मकंखिए,

भावार्थ कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कोई जीव गर्भिष्ट स्त्री की कुक्षि में संज्ञी पंचेन्द्रियपने उत्पन्न हुवा. वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे तथारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व तीव्र धर्मानुराग से रक्त बनगया. फीर वह श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलाषी बनाहुवा, पुण्य का

शब्दार्थ कैसे गो० गौतम स० संज्ञी पं० पंचेन्द्रिय स० सर्व प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण की अं० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० अच्छा वचन सो० सुनकर नि० अव-धारकर त० पीछे भ० होवे सं० वैराग्य से उ० उत्पन्न स० श्रद्धा ति० तीव्र ध० धर्मानुराग र० रक्त जी० जीव ध० धर्म को कामी पु० पुन्य का कामी स० स्वर्ग का कामी मो० मोक्षका कामी ध० धर्म

सूत्र

वज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा। सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धाम्मियं सुवयणं सोच्चा, निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुराग-रत्ते, सेणं जीवे धम्मकामए, पुण्णकामए, सग्गकामए; मोक्खकामए; धम्मकंखिए,

भावार्थ [illegible] जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से कितनेक जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं और कितनेक जीव देवलोक में नहीं उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कोई जीव धर्मिष्ठ भी [illegible] संज्ञी पंचेन्द्रियपने उत्पन्न हुवा. वहां पूर्ण पर्याय बांधकर पर्याप्त हुवे पीछे तथारूप श्रमण माहण [illegible] आर्य धार्मिक वचन श्रवण कर, अवधारकर संवेग से धर्मादि में श्रद्धावन्त हुवा व [illegible] और वह श्रुत चारित्र रूप धर्म का अभिलाषी बनाहुवा, पुण्य का

दार्थ फल जैसे अ० होवें चि० खडारहे नि० बैठे तु० सोवें मा० माता सु० सोती होवे सु० सोवे जा० जगती होवें जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दुःखी होती दु० दुःखी होवे हं० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दुःखी होते दु० दुःखी भ० होवे ॥ २१ ॥ प० प्रसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांवसे आ० आवे स० सीधा आ० आवे ति० तिर्च्छा आ०

सूत्र अंबखुज्जएवा, अच्छेज्जवा, चिट्ठेज्जवा, निसीएज्जवा, तुयट्टेज्जवा; माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हंता गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेणं पसवण काल समयंसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

भावार्थ जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकले पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है वह बतलाते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या उत्तान - छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पडा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान बैठा रहता है, खडा होता है, बैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है,माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गोतम ! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं. ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

फल जैसे अ० होवे चि० खडारहे नि० बैठे तु० सोवे मा० माता सु० सोती होवे सु० सोवे जा० जगती होवें जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दुःखी होती दु० दुःखी होवे हं० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दुःखी होते दु० दुःखी भ० होवे ॥ २१ ॥ प० प्रसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांवसे आ० आवे स० सीधा आ० आवे ति० तिर्च्छा आ०

सूत्र

अंबखुज्जएवा, अच्छेज्जवा, चिट्ठेज्जवा, निसीएज्जवा, तुयट्टेज्जवा; माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हंता गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेणं पसवण काल समयंसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

भावार्थ

जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकले पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है वह बतलाते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या उत्तान - छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पडा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान बैठा रहता है, खडा होता है, बैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है, माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गौतम ! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं. ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

शब्दार्थ फल जैसे अ० होवे चि० खडारहे नि० बैठे तु० सोवे मा० माता सु० सोती होवे सु० सोवे जा० जगती होवे जा० जगे सु० सुखी होती सु० सुखी होवे दु० दुःखी होती दु० दुःखी होवे हं० हां गो० गौतम जी० जीव ग० गर्भ में ग० गया हुवा जा० यावत् दु० दुःखी होते दु० दुःखी भ० होवे ॥ २१ ॥ प० प्रसवन का० अवसर में सी० मस्तक से पा० पांवसे आ० आवे स० सीधा आ० आवे ति० तिर्च्छा आ०

सूत्र अंबखुज्जएवा, अच्छेज्जवा, चिट्ठेज्जवा, निसीएज्जवा, तुयट्टेज्जवा; माऊए सुयमाणीए सुयइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ, दुहियाए दुहिए भवइ ? हंता गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ ॥ २१ ॥ अहेणं पसवण काल समयंसि सीसेणवा, पाएहिंवा आगच्छइ, सममागच्छइ, तिरिय माग-

भावार्थ जीव किस प्रकार गर्भ में रहता है और गर्भ से नीकले पीछे करणी के फल किस तरह प्राप्त करता है यह बतलाते हैं. अहो भगवन् ! गर्भ में रहा हुवा जीव क्या उत्तान - छत्राकार रहता है, एक पसली की तरह पडा रहता है, आम्र फल की तरह उत्कट आसनसे रहता है, ऊर्ध्व स्थान बैठा रहता है, खडा होता है, बैठाहोता है, शयन करता है, जब उस की माता शयन करती है तब सोता है, माता जगती है तब जागृत होता है, माता सुखी तो वह सुखी रहता है, और माता दुःखी रहनेपर क्या दुःखी रहता है? हां गौतम ! गर्भ में रहनेवाले जीव को उक्त सब क्रियाओं होती हैं. ॥ २१ ॥ अब जब प्रसवन काल

अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म नो० नहीं ब० बंधहुवे प० प्रशस्त ने० जानना. जा० यावत् आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन्. ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

सूत्र अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयणं, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइं नोबद्धाइं पसत्थं णेयव्वं जाव आदेज्जवयणं पच्चायाएवि भवइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥ * *

भावार्थ रस, स्पर्श होवे. उन को सब संयोग अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे. वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं. यह अशुभ कर्म का फलकहा और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उदय होते वेशुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे. वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले. सब में माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे. यह सब पुण्य फल जानना. अहो भगवन् ! आपने जो प्रतिपादन किया है वह सत्य है. यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म नो० नहीं ब० बंधेहुवे प० प्रशस्त ने० जानना. जा० यावत् आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन्. ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

सूत्र अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयणं, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइं नोबद्धाइं पसत्थं णेयव्वं जाव आदेज्जवयणं पच्चायाएवि भवइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥ * *

भावार्थ रस, स्पर्श होवे. उन को सब संयोग अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे. वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं. यह अशुभ कर्म का फलकहा और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उदय होते वे शुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे. वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले. सब में माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे. यह सब पुण्य फल जानना. अहो भगवन् ! आपने जो प्रतिपादन किया है वह सत्य है. यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म नो० नहीं ब० बंधेहुवे प० प्रशस्त ने० जानना. जा० यावत् आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन्. ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

सूत्र अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयणं, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइं नोबद्धाइं पसत्थं णेयव्वं जाव आदेज्जवयणं पच्चायाएवि भवइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥ * *

भावार्थ रस, स्पर्श होवे. उन को सब संयोग अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे. वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं. यह अशुभ कर्म का फलकहा और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उदय होते वे शुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे. वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले. सब में माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे. यह सब पुण्य फल जानना. अहो भगवन् ! आपने जो प्रतिपादन किया है वह सत्य है. यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

अर्थ अ० अनिष्टस्वर अ० अनादेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे व० वर्ण व० वध्य क० कर्म नो० नहीं ब० बंधेहुवे प० प्रशस्त ने० जानना. जा० यावत् आ० आदेय वचन वाला प० उत्पन्न भ० होवे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन्. ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

सूत्र अमणुण्णसरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयणं, पच्चायाएवि भवइ, वण्णवज्झाणिय, से कम्माइं नोबद्धाइं पसत्थं णेयव्वं जाव आदेज्जवयणं पच्चायाएवि भवइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति पढमे सए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ७ ॥ * *

भावार्थ रस, स्पर्श होवे. उन को सब संयोग अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम होवे. वैसे ही वह जीव हीनस्वर, दीनस्वर, अनिष्टस्वर, अप्रियस्वर, अशुभस्वर, अमनोज्ञस्वर, अमनामस्वर व अनादेय वचनवाला होवे अर्थात् उन का वचन किसी को माननीय होवे नहीं. यह अशुभ कर्म का फलकहा और जिनोंने अशुभ कर्म नहीं किये हैं और धर्माचरण से शुभ कर्म की उपार्जना की है उन को शुभ फलका उदय होते वेशुभ वर्ण, गंध, रस व स्पर्शवन्त होवे. वैसे ही प्रियकारि, शुभ मनोज्ञ व सब मान्य करे ऐसे अच्छे संयोग मीले. सब में माननीय पूजनीय होवे और सब प्रकार के सुख भोगवे. यह सब पुण्य फल जानना. अहो भगवन् ! आपने जो प्रतिपादन किया है वह सत्य है. यह पहिला शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ७ ॥ × ×

थ ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणु-देवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ; तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

अर्थ नं० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

अर्थ

ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य कि० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र

लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ

के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

अर्थ ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध करे नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

शब्दार्थ ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करक ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध करे नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

शब्दार्थ

ने० नारकों का आ० आयुष्य प० बांधे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य प० बांधे ने० नारकी का आ० आयुष्य कि० करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ ए० एकान्त पं० पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देव का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य आ० आयुष्य

सूत्र

लोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत बालेणं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिमणुदेवाउयंपि पकरेइ, । नेरइयाउयंपि किच्चा नेरइएसु उववज्जइ, तिरिमणुदेवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ॥ १॥ एगंत पंडिएणं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंत पंडिएणं मणुस्से आउ-

भावार्थ

के आयुष्य का बंध कर के देवलोक में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त बाल मनुष्य नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है वैसे ही नारकी, तिर्यंच मनुष्य व देवता के आयुष्य बंध कर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता में उत्पन्न होता है. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकान्त पंडित मनुष्य क्या नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता के आयुष्य का बंध करता है ? और नरक का आयुष्य बांध कर नरकमें उत्पन्न होता है यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! एकान्त

अर्थ

आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य को के० मात्र दो० दोगति प० कही है अं० अंतक्रिया क० कल्पोत्पन्न से० वह ते० इस लिये जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ०उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ बा०बाल पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम णो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे

सूत्र

किरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव; से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ २ ॥ बाल पंडिएणं भंते ! मणूसे किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! णो णेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ । सेकेणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! बाल-

भावार्थ

वैमानिक देवलोकमें उत्पन्न होवे ऐसी दोगति कही. इसलिये अहो गौतम ! एकान्त पंडित मनुष्य देवगति के आयुष्य का बंधकर देवगति में उत्पन्न होता है. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! बाल पंडित (श्रावक) मनुष्य क्या नारकी का आयुष्य यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य नारकी का आयुष्य बांधे नहीं, तिर्यंच का आयुष्य बांधे नहीं, मनुष्य का आयुष्य

आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य को के० मात्र दो० दोगति प० कही है अं० अंतक्रिया क० कल्पोत्पन्न से० वह ते० इस लिये जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ०उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ बा०बाल पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम णो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे

सूत्र

किरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव; से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ २ ॥ बाल पंडिएणं भंते ! मणूसे किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! णो णेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ । सेकेणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! बाल-

भावार्थ

वैमानिक देवलोकमें उत्पन्न होवे ऐसी दोगति कही. इसलिये अहो गौतम ! एकान्त पंडित मनुष्य देवगति के आयुष्य का बंधकर देवगति में उत्पन्न होता है. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! बाल पंडित (श्रावक) मनुष्य क्या नारकी का आयुष्य यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य नारकी का आयुष्य बांधे नहीं, तिर्यंच का आयुष्य बांधे नहीं, मनुष्य का आयुष्य

आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम ए० एकान्त पं० पंडित म० मनुष्य को के० मात्र दो० दोगति प० कही है अं० अंतक्रिया क० कल्पोत्पन्न से० वह ते० इस लिये जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे ॥ २ ॥ बा० बाल पंडित भं० भगवन् म० मनुष्य किं० क्या ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम णो० नहीं ने० नारकी का आ० आयुष्य प० बांधे जा० यावत् दे० देवता का आ० आयुष्य कि० करके दे० देवता में उ० उत्पन्न होवे

सूत्र

किरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव; से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ २ ॥ बाल पंडिएणं भंते ! मणूसे किं नेरइयाउयं पकरेइ, जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! णो णेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ । सेकेणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! बाल-

भावार्थ

वैमानिक देवलोकमें उत्पन्न होवे ऐसी दोगति कही. इसलिये अहो गौतम ! एकान्त पंडित मनुष्य देवगति के आयुष्य का बंधकर देवगति में उत्पन्न होता है. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! बाल पंडित (श्रावक) मनुष्य क्या नारकी का आयुष्य यावत् देवता का आयुष्य बांधकर देवता में उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! बाल पंडित मनुष्य नारकी का आयुष्य बांधे नहीं, तिर्यंच का आयुष्य बांधे

शब्दार्थ मारने से ता० तब से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी अ० अधिकरण की प० प्रद्वेषिकी प० परितापनिकी च० चार कि० क्रिया पु० स्पर्शी जे० जो भ० भव्य उ० बनाने से बं० बंधन करने से मा० मारने से ता० वहांलग से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पा० प्राणातिपातिकी पं० पांच कि० क्रिया पु० स्पर्शी से० वह ते० इसलिये जा० यावत पं० पांच कि० क्रिया ॥ ४ ॥ पु० पुरुष क० कच्छ जा० यावत व० वन वि० विषम त० तृण ऊ० ऊंचा करके अ० अग्निकाय

सूत्र से पुरिसे काइयाए अहिगरणयाए, पाओसियाए, परियावणियाए, चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । जे भविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि, मारणयाएवि तावंचणंसे पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाय किरियाए पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । से तेणट्ठेणं जाव पंचकिरिए ॥ ४ ॥ पुरिसेणं भंते ! कच्छंसिवा, जाव वणाविदुग्गंसिवा, तणाइं ऊसविय २ अ-

भावार्थ जितने काल पर्यंत कूटपाश बनाने का व मृग बांधने का भाव है परंतु मारनेका भाव नहीं है उस को उतने कालतक चार क्रिया लगती हैं. उक्त तीनों में उस मृग को परिताप दुःख दिया सो परितापनिकी क्रिया कही. जिस को जितने कालतक कूटपाश बनाने का, बांधने का व मारने का भाव है उस को उतने कालतक पांच क्रियाओं लगती हैं. कायिकी, अधिकरणकी, प्रद्वेषिकी, परितापनिकी व प्राणातिपातिकी. इसी कारन से अहो गौतम ! उक्त पुरुष को क्वचित् तीन, क्वचित् चार व क्वचित् पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ४ ॥

शब्दार्थ मारने से ता॰ तब से॰ उस पु॰ पुरुष को का॰ कायिकी अ॰ अधिकरण की प॰ प्रद्वेपिकी प॰ परितापनिकी च॰ चार कि॰ क्रिया पु॰ स्पर्शी जे॰ जो भ॰ भव्य उ॰ वनाने से बं॰ बंधन करने से मा॰ मारने से ता॰ वहांलग से॰ उस पु॰ पुरुष को का॰ कायिकी जा॰ यावत् पा॰ प्राणातिपातिकी पं॰ पांच कि॰ क्रिया पु॰ स्पर्शी से॰ वह ते॰ इसलिये जा॰ यावत् पं॰ पांच कि॰ क्रिया ॥ ४ ॥ पु॰ पुरुष क॰ कच्छ जा॰ यावत् व॰ वन वि॰ विषम त॰ तृण ऊ॰ ऊंचा करके अ॰ अग्निकाय

सूत्र

से पुरिसे काइयाए अहिगरणयाए, पाओसियाए, परियावणियाए, चउहिं किरियाहिं पुट्ठे। जे भविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि, मारणयाएवि तावंचणंसे पुरिसे काइ-याए जाव पाणाइवाय किरियाए पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे। से तेणट्ठेणं जाव पंचकिरिए ॥ ४ ॥ पुरिसेणं भंते ! कच्छंसिवा, जाव वणविदुग्गंसिवा, तणाइं ऊसविय २ अ-

भावार्थ जितने काल पर्यंत कूटपाश बनाने का व मृग बांधने का भाव है परंतु मारनेका भाव नहीं है उस को उतने कालतक चार क्रिया लगती हैं. उक्त तीनों में उस मृग को परिताप दुःख दिया सो परितापनिकी क्रिया बढी. जिस को जितने कालतक कूटपाश बनाने का, बांधने का व मारने का भाव है उस को उतने कालतक पांच क्रियाओं लगती हैं. कायिकी, अधिकरणकी, प्रद्वेपिकी, परितापनिकी व प्राणातिपातिकी. इसी कारन से अहो गौतम ! उक्त पुरुष को कदाचित् तीन, कदाचित् चार व कदाचित् पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ ४ ॥

शब्दार्थ जाता है जा० यावत् से० वह पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शा से० वह गो० गौतम क० करते को क० किया सं० सांधते को सं० सांधा नि० खींचते को नि० खींचा नि० निकलते को नि० निकला व० कहना है० हां भं० भगवन् क० करते को किया जा० यावत् नि० निकला जे० जो मि० मृगको मा० हने से० वह मि० मृगवैर से पु० स्पर्शे जे० जो पु० पुरुष को मा० हने से० वह पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शे अं०

सूत्र जाव से पुरिसवेरेणं पुट्ठे । सेणूणं गोयमा ! कज्जमाणे कडे, संधिज्जमाणे संधिए, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए, निसिरिज्जमाणे निसिट्ठेत्ति वत्तव्वंसिया । हंता भगवं ! कज्जमाणे कडे जाव निसट्ठेत्ति वत्तव्वंसिया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जे मियंमारेइ से मियवेरेणं पुट्ठे, जे पुरिसं मारेइ से पुरिसवेरेणं पुट्ठे. अंतो छण्हं मासाणं मरइ-

भावार्थ मृग को मारा उस को मृग का वैर हुआ. अहो भगवन् ! यह अर्थ किस तरह से है ? अहो गौतम ! 'कज्जमाणे कडे' करते हुवे को किया अर्थात् धनुष्य बाण करने लगा सो किया, 'संधिज्जमाणे संधिए' धनुष्य बाण सांधनेलगा सो संधा, 'निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिए' धनुष्य खींचने लगा सो खींचा व 'निसरिज्जमाणे निसिट्ठे' धनुष्य में से बाण नीकलनेलगा सो नीकला ऐसा कहा जा सकता है. हां भगवन् ! करते को किया हुवा यावत् नीकलते को निकला हुवा कहा जा सकता है. इसी से अहो गौतम ! जो मृग मारता है वह मृग का वैर से स्पर्शाता है अर्थात् उस मृग मारनेवाले को मृग का वैर लगता है और पुरुष

शब्दार्थ

अंदर में छ० छमास की म० मरे का० कायिकी जा० यावत् पं० पांचक्रिया पु० स्पर्शे बा० बाहिर छ० छमास की म० मरे च० चारक्रिया पु० स्पर्शे ॥ ७ ॥ पुं० पुरुष भं० भगवन् पु० पुरुष को स० भाला से सं० मांधे म० स्वतः के पा० हस्त में अ० असिसे सी० शीर्ष छिं० छेदे त० तब से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम जा० जब से० वह पु० पुरुष तं० उस पु० पुरुष को स०

मूल

काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे : बाहिं छण्हं मासाणं मरइ, काइयाए जाव पारियावणियाए चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ ७ ॥ पुरिसेणं भंते ! पुरिसं सत्तीए समभिसंधेजा सयपाणिणावा से असिणा सीसं छिंदेज्जा । तओणं भंते ! से पुरिसे कइकि-

भावार्थ

मारनेवाले को पुरुष का वैर लगता है. वा मृग यदि छ मास की अंदर मरजावे तो घातक पुरुष को पांच क्रियाओं लगती हैं क्यों की छ मासतक मृग को प्रहार हेतुक मरण होता है. छ मास पीछे यदि वह मृग मरजावे तो प्राणातिपातिकी क्रिया छोडकर अन्य चार क्रियाओं लगती हैं * ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! कोई पुरुष शक्ति (भाला) से, अथवा अपने हस्त में रहा हुवा खड्ग से किसी पुरुष का शिरच्छेदन करे तब

* यहांपर व्यवहारकी अपेक्षासे प्राणातिपातिकी क्रिया मात्र व्यपदेश बतानेको कहाहै. अन्यथा जब प्रहारहेतुक मरण होवे उस समय उस वधकको कायिकी यावत् प्राणातिपातिकी पांच क्रिया लगती हैं.

शब्दार्थ

शक्तिसे स० सांधे स० स्वतः के पा० हस्त से अ० असिसे सी० शीर्ष छिं० छेदे ता० तत्र से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पा० प्राणातिपातिकी पं० पांच कि०.क्रिया पु० स्पर्शे आ० नजदीक व० वध करने वाला अ० आकांक्षा रहित पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शा ॥ ८ ॥ दो० दो भं०भगवन् पु० पुरुष स० सरिखे स० सरिखी त्वचावाले स० सरिखी वयवाले स० सरिखे भं० भंडोपकरणवाले अ० अन्योन्य स० साथ सं० संग्राम सं० करे त० तहां ए० एक पु० पुरुष प० जीते ए० एक पु० पुरुष

मूल

रिए ? गोयमा ! जावंचणं से पुरिसे तं पुरिसं सत्तीए समभिसंधेइ सयपाणिणावा से असिणा सीसं छिंदइ तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाए पंचाहिंकिरियाहिं पुट्ठे । आसण्ण वहएणय अणवकंखवत्तीएणं पुरिसवेरेणं पुट्ठे ॥ ८ ॥ दो भंते ! पुरिसा सरिसया, सरित्तया, सरिसव्वया, सरिसभंडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेणं सद्धिं संगामं संगामेइ, तत्थणं एगे पुरिसे पराइणइ, एगे पुरिसे पराइज्जइ, से कहमेयं भंते !

अहो भगवन् ! उस पुरुष को कितनी क्रियाओं लगती हैं ? अहो गौतम ! जितने कालतक वह पुरुष किसी अन्य पुरुष का शक्ति या खड्गसे शीर्ष का छेदन करता है उतनाकाल तक उस पुरुष को कायिकीआदि पांच क्रियाओं लगती हैं. आसन्न वधक पाप की निवृत्ति के लिये निरपेक्ष वृत्ति से वैर का बंधन करता है. ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! शरीर के प्रमाण में व कुशलता में सरिखे, सरीखी वयवाले, सरीखे भंडोप

शब्दार्थ प० पराजयपामे से० वह क० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे गो० गौतम स० वीर्यवन्त प० जीते अ० अवीर्यवन्त प० पराजयपामे वी० वीर्य व० वधयोग्य क० कर्म नो० नहीं व० बंधे नो० नहीं पु० स्पर्शे जा० यावत् नो० नहीं अ० सन्मुख हुवे णो० नहीं उ० उदयआये उ० उपशान्तपामे से० वह प० जीतता है ज० जीस का वी० वीर्य व० वधयोग्य क० कर्म व० बंधे जा० यावत् उ० उदयआये नो० नहीं उ० उपशमें भ० हैं

सूत्र एवं गोयमा ! सवीरिए पराइणइ, अवीरिए पराइज्जइ । से केणट्ठेणं जाव पराइज्जइ ? गोयमा ! जस्सणं वीरियवज्झाइं कम्माइं णो बद्धाइं णो पुट्ठाइं जाव नो अभिसमण्णागयाइं, णो उदिण्णाइं उवसंताइं भवंति, सेणं पराइणइ. जस्सणं वीरियवज्झाइं कम्माइं बद्धाइं

भावार्थ करणवाले दो पुरुष परस्पर संग्राम करे; उस में से एक पुरुष का जय होवे और दूसरा पुरुष का पराजय होवे. अहो भगवन् ! इस तरह जय पराजय होनेका क्या कारन? अहो गौतम ! वीर्यवंत पुरुष का जय हुवा और वीर्य रहित पुरुष का पराजय हुवा. अहो भगवन्त ! वीर्यवन्त पुरुष का जय और वीर्य रहित पुरुष का पराजय होने का क्या कारन ? अहो गौतम ! वीर्य की घात करनेवाले कर्म पुद्गलों का बंध जिसने नहीं किया होवे, जिन को नहीं स्पर्शे होवे, यावत् उदय में नहीं आये होवे वैसे ही उदीरणा से उदय में नहीं लाये होवे परंतु उपशान्त रहे हुवे होवे, उस को जय होता है और जिस पुरुषको वीर्य की घात करनेवाले कर्म पुद्गलों बंधे हुवे होवे यावत् उदीरणा से उदय में आये होवे उस पुरुष का पराजय

शब्दार्थ

शक्तिमे स० सांधे स० स्वतः के पा० हस्त से अ० असिसे सी० शीर्ष छिं० छेदे ता० तव से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् पा० प्राणातिपातिकी पं० पांच कि०.क्रिया पु० स्पर्शे आ० नजदीक व० वध करने वाला अ० आकांक्षा रहित पु० पुरुषवैर से पु० स्पर्शा ॥ ८ ॥ दो० दो भं०भगवन् पु० पुरुष स० सरिखे स० सरिखी त्वचावाले स० सरिखी वयवाले स० सरिखे भं० भंडोपकरणवाले अ० अन्योन्य स० साथ सं० संग्राम सं० करे त० तहां ए० एक पु० पुरुष प० जीते ए० एक पु० पुरुष

मूल

रिए ? गोयमा ! जावंचणं से पुरिसे तं पुरिसं सत्तीए समभिसंधेइ सयपाणिणावा से असिणा सीसं छिंदइ तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाए पंचाहिंकिरियाहिं पुट्ठे । आसण्ण वहएणय अणवकंखवत्तीएणं पुरिसवेरेणं पुट्ठे ॥ ८ ॥ दो भंते ! पुरिसा सरिसया, सरित्तया, सरिसव्वया, सरिसभंडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेणं सद्धिं संगामं संगामेइ, तत्थणं एगे पुरिसे पराइणइ, एगे पुरिसे पराइज्जइ, से कहमेयं भंते !

भावार्थ

अहो भगवन् ! उस पुरुष को कितनी क्रियाओं लगती हैं. ? अहो गौतम ! जितने कालतक वह पुरुष किसी अन्य पुरुष का शक्ति या खड्गसे शीर्ष का छेदन करता है उतनाकाल तक उस पुरुष को कायिकीआदि पांच क्रियाओं लगती हैं. आसन्न वधक पाप की निवृत्ति के लिये निरपेक्ष वृत्ति से वैर का बंधन करता है. ॥ ८ ॥ अहो भगवन ! शरीर के प्रमाण में व कुशलता में सरिखे, सरिखी वयवाले, सरिखे भंडोप

शब्दार्थ ते० वे दु० दोप्रकार के से० निश्चल आत्मा वाले अ० निश्चल आत्मा रहित त० तहां जे० जो से० शैलेशी युक्त ते० वे ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से अ० अवीर्य त० तहां जे० जो अ० अशैलशीयुक्त ते० वे ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स० सवीर्य अ० अवीर्य से०

सूत्र तत्थणं जे ते असंसार समावण्णगा तेणं सिद्धा, सिद्धाणं अवीरिया तत्थणं जे ते संसार समावण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा सेलेसि पडिवण्णगाय, असेलेसि पडिवण्णगाय। तत्थणं जे ते सेलेसि पडिवण्णगा तेणं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं अवीरिया। तत्थणं जे ते असेलेसि पडिवण्णगा, तेणं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरियावि अवीरियावि. सेतेणट्ठेणं गोयमा

भावार्थ अभाव है इसलिये वे वीर्य रहित हैं और जो संसार समापन्नक हैं उन के दो भेद कहे हैं. १ शैलेशी प्रतिपन्न सो चउदहवे गुणस्थानवर्ती अयोगी केवली के जीव और २ अशैलेशी सो प्रथम गुणस्थान से तेरहवे गुणस्थानवर्ती जीव. उस में चउदहवे गुणस्थानवर्ती शैलेशी जीव लब्धि वीर्य की अपेक्षा से वीर्य सहित और करण वीर्य की अपेक्षा से वीर्य रहित हैं. प्रथम गुणस्थान से तेरहवे गुणस्थानवर्ती अशैलेशी प्रतिपन्न जीव लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं. इस कारन से अहो

१ वीर्यांतराय के क्षय से जो वीर्य होता है सो लब्धिवीर्य २ उत्थानादि क्रिया सो करण वीर्य.

शब्दार्थ से० वह पु० पुरुष प० पराजित है से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० एसा क० कहा जाता है स० वीर्यवन्त प० जीतता है अ० वीर्यरहित प० पराजय पामता है ॥९॥ जी०जीव भं०भगवन् किं०क्या स० सवीर्य अ० अवीर्य गो० गौतम स० सवीर्य अ अवीर्य से० वह के० कैसे भं०भगवन् ए०ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम जी० जीव दु० दोप्रकार के सं० संसार को प्राप्त अ० संसार से रहित त० तहां जे० जो अ० संसार रहित ते० वे सि० सिद्ध सि० सिद्ध अ० अवीर्य त० तहां जे० जो सं० संसारो

सूत्र जाव उदिण्णाइं नो उवसंताइं भवंति सेणं पुरिसे पराइज्जइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ सवीरिए पराइणइ, अवीरिए पराइज्जइ ॥ ९ ॥ जीवाणं भंते किंसवीरिया अवीरिया ? गोयमा ! सवीरियावि, अवीरियावि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता तंजहा संसारसमावण्णगाय असंसारसमावण्णगाय ।

भावार्थ होता है. इसलिये ऐसा कहागया है कि वीर्यवंत पुरुष का जय और वीर्य रहित पुरुष का पराजय होता है ॥ ९ ॥ अब वीर्य का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ? जीव क्या वीर्य सहित है या वीर्य रहित है ? अहो गौतम ! वीर्य सहित भी है और वीर्य रहित भी है. अहो भगवन् ! जीव वीर्य सहित भी है और वीर्य रहित भी है यह किस तरह से ? अहो गौतम ? जीव के दो भेद कहे हैं. संसार समापन्नक और असंसार समापन्नक. जो असंसार समापन्नक हैं वे सिद्ध कहाते हैं. उन को करण वीर्य का

शब्दार्थ ते० वे दु० दोप्रकार के से० निश्चल आत्मा वाले अ० निश्चल आत्मा रहित त० तहां जे० जो से० शैलेशी युक्त ते० वे ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से अ० अवीर्य त० तहां जे० जो अ० अशैलशीयुक्त ते० वे ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स० सवीर्य अ० अवीर्य से०

सूत्र तत्थणं जे ते असंसार समावण्णगा तेणं सिद्धा, सिद्धाणं अवीरिया तत्थणं जे ते संसार समावण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा सेलेसि पडिवण्णगाय, असेलेसि पडिवण्णगाय । तत्थणं जे ते सेलेसि पडिवण्णगा तेणं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं अवीरिया । तत्थणं जे ते असेलेसि पडिवण्णगा, तेणं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरियावि अवीरियावि. सेतेणट्ठेणं गोयमा

भावार्थ अभाव है इसलिये वे वीर्य रहित हैं और जो संसार समापन्नक हैं उन के दो भेद कहे हैं. १ शैलेशी प्रतिपन्न सो चउदहवे गुणस्थानवर्ती अयोगी केवली के जीव और २ अशैलेशी सो प्रथम गुणस्थान से तेरहवे गुणस्थानवर्ती जीव. उस में चउदहवे गुणस्थानवर्ती शैलेशी जीव लब्धि वीर्य की अपेक्षा से वीर्य सहित और करण वीर्य की अपेक्षा से वीर्य रहित हैं. प्रथम गुणस्थान से तेरहवे गुणस्थानवर्ती अशैलेशी प्रतिपन्न जीव लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं. इस कारन से अहो

१ वीर्यांतराय के क्षय से जो वीर्य होता है सो लब्धिवीर्य २ उत्थानादि क्रिया सो करण वीर्य.

शब्दार्थ वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है ॥ १८ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् कि० क्या स० सवीर्य अ० अवीर्य गो० गौतम ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स० सवीर्य अ० अवीर्य से० वह के० कैसे गो० गौतम जे० जिस ने० नारकी को अ० है उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प०पराक्रम ते०वे ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स०सवीर्य जे०जो ने०नारकी को न० नहीं है उ०

सूत्र एवं वुच्चइ जीवा दुविहा प० तं० सवीरियावि, अवीरियावि ॥ १० ॥ नेरइयाणं भंते किं सवीरिया अवीरिया ? गोयमा नेरइया लाद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरियाय अवीरियाय। सेकेणट्ठेणं?गोयमा! जेसिणं नेरइयाणं आत्थि उट्ठाणे, कम्मे बले, वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे तेणं नेरइया लाद्धि वीरिएणवि सवीरिया, करणवीरिएण

भावार्थ गौतम ! ऐसा कहा है कि जीव वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! क्या नरक के जीव वीर्य सहित हैं या वीर्य रहित हैं ? अहो गौतम ! नरकके जीव लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहागया है ! अहो गौतम ! जिन नारकियों को उत्थान, कर्म, बल, वीर्य पुरुषात्कार व पराक्रम हैं वे नारकी लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से भी वीर्य सहित हैं. और जो नारकी उत्थानादि रहित हैं वे लब्धि

शब्दार्थ उत्थान जा० यावत् प० पराक्रम ते० वे ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से अ० अवीर्य से० वह ते० इसलिये ज० जैसे ने० नारकी जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच म० मनुष्य ज० जैसे ओ० औधिक जीव न० विशेष सि० सिद्ध व० वर्जना भा० कहना वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक ज० जैसे ने० नारकी से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ १ ॥ ८ ॥

सूत्र वि सवीरिया । जेसिणं नेरइयाणं नत्थि उट्ठाणे जाव परक्कमे तेणं नेरइया लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं अवीरिया । से तेणट्ठेणं जहा नेरइया एवं जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया । मणूसा जहा ओहिया जीवा नवरं सिद्ध वज्जा भाणियव्वा । वाणमंतर जोइस वेमाणिया जहा नेरइया ॥ सेवं भंते २ त्ति ॥ पढमेसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ८ ॥

* * *

भावार्थ वीर्य से वीर्य सहित हैं परंतु करण वीर्य से वीर्य रहित हैं इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहागया है कि नारकी के जीव वीर्य सहित व वीर्य रहित है. जैसा नारकी का कहा वैसे ही मनुष्य छोडकर अन्य सब दंडक का कहना मनुष्य का समुच्चय जीव जैसे कहना परंतु समुच्चय जीव के दंडक में सिद्ध है यह यहां नहीं कहना अहो भगवन् ! आपने जो कहा व सत्य है यह पहिला शतकका आठवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ १ ॥ ८ ॥

*

शब्दार्थ वह तें० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है ॥ १८ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् कि० क्या स० सवीर्य अ० अवीर्य गो० गौतम ने० नारकी ल०. लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स० सवीर्य अ० अवीर्य से० वह के० कैसे गो० गौतम जे० जिस ने० नारकी को अ० है उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प०पराक्रम ते०वे ने० नारकी ल० लब्धिवीर्य से स० सवीर्य क० करणवीर्य से स०सवीर्य जे०जो ने०नारकी को न० नहीं है उ०

सूत्र एव वुच्चइ जीवा दुविहा प० तं० सवीरियावि, अवीरियावि ॥ १० ॥ नेरइयाणं भंते किं सवीरिया अवीरिया ? गोयमा नेरइया लाद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिए-णं सवीरियाय अवीरियाय। सेकेणट्ठेणं?गोयमा! जेसिणं नेरइयाणं आत्थि उट्ठाणे, कम्मे बले, वीरिए पुरिसकार परक्कमे तेणं नेरइया लाद्धि वीरिएणवि सवीरिया, करणवीरिएण

भावार्थ गौतम ! ऐसा कहा है कि जीव वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! क्या नरक के जीव वीर्य सहित हैं या वीर्य रहित हैं ? अहो गौतम ! नरकके जीव लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से वीर्य सहित व वीर्य रहित हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहागया है ? अहो गौतम ! जिन नारकियों को उत्थान, कर्म, बल, वीर्य पुरुषात्कार व पराक्रम हैं वे नारकी लब्धि वीर्य से वीर्य सहित हैं और करण वीर्य से भी वीर्य सहित हैं. और जो नारकी उत्थानादि रहित हैं वे लब्धि

अर्थ

जा० यावत् मिथ्यादर्शन शल्य के वे० निवर्तने से ए० ऐसे ख० निश्चय गो० गौतम जी०जीव ल० लघुत्व को आ० आते हैं ॥ २ ॥ ए० ऐसे सं० संसार आ० वहुत क० करे प० थोडा क० करे दी० दीर्घ क० करे ह० छोटा क० करे अ० वारंवार भ्रमण करे वी० तीरे प० प्रशस्त च० चार अ० अप्रशस्त च०

सूत्र

गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्ल वेरमणेणं एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥ २ ॥ एवं संसार आउली करेंति, एवं परित्ती करेंति, दीही करेंति, हस्सी करेंति, एवं अणुपरियट्टंति, एवं

भावार्थ

अवर्णवाद वोलना १७ माया मृपा और १८ मिथ्यादर्शन शल्य-देवगुरु धर्म से भी मन का मिथ्यात्व नाश नहीं होवे, इन अठारह कारनों से जीव अधोगाति गमनरूप गुरुत्व धारण करता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव लघुत्व कैसे धारण करता है ? अहो गौतम ! प्राणातिपात से निवर्तना यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से निवर्तना इन अठारह कारनों से जीव लघुत्व प्राप्त कर सकता है ॥ २ ॥ उक्त अठारह पाप स्थानों के आचारण से जीव संसार प्रचुर करे, संसार परत्त करे, दीर्घ करे, ह्रस्व करे, संसार में वारंवार परिभ्रमण करे और संसार से उत्तीर्ण होवे. इन आठ में से लघुत्व, परित्त, ह्रस्वत्व व संसार का उल्लंघन ऐसे चार बोल प्रशस्त और गुरुत्व, संसार का प्रचूर करना, दीर्घ करना व संसार का उल्लंघन

शब्दार्थ

क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव ग० गुरुत्व को ह० शीघ्र आ० आते हैं गो० गौतम पा० प्राणातिपात से मु० मृषावाद से अ० अदत्तादान मे० मैथुन प० परिग्रह को० क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ पे० राग दो० द्वेष क० कलह अ० कलंक चडाना पे० चुगली र० रति अ० अरति प० परपरिवाद मा० कपट मि० मिथ्यादर्शन शल्य ए० ऐसे ख० निश्चय जी० जीव ग० गुरुत्व को ह० शीघ्र आ० आते हैं ॥ १ ॥ भं० भगवन् जी० जीव ल० लघुत्व ह० शीघ्र आ० आते हैं गो० गौतम पा० प्राणातिपात

सूत्र

कहणं भंते ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! पाणाइवाएणं, मुसावाएणं, आदिन्न, मेहुण, परिग्गह, कोह, माण, माया, लोह, पेज, दोस, कलह, अब्भक्खाण, पेसुन्न, रति, अराति, परपरिवाए, मायामोस, मिच्छादंसणसल्लेणं, एवं खलु गोयमा ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥ १ ॥ कहणं भंते ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ?

भावार्थ

आठवे उद्देशे के अंत में वीर्य का वर्णन किया है. और जीव वीर्य से भारी होता है इसलिये आगे गुरुत्व का अधिकार चलता है. अहो भगवन् ! अधोगति गमनरूप गुरुत्व किस तरह से जीव प्राप्त करे? अहो गौतम ! १ प्राणातिपात-जीव का अतिपात से, २ मृषावाद-असत्य बोलने से ३ अदत्तादान-चौरी करने से ४ मैथुन से ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह १३ अभ्याख्यान-कलंक चडाने से १४ पैशुन्य-चुगली करने से १५ रति अरति १६ परपरिवाद अन्य का

र्थ जा० यावत् मिथ्यादर्शन शल्य के वे० निवर्तने से ए० ऐसे ख० निश्चय गो० गौतम जी०जीव ल० लघुत्व को आ० आते हैं ॥ २ ॥ ए० ऐसे सं० संसार आ० बहुत क० करे प० थोडा क० करे दी० दीर्घ क० करे ह० छोटा क० करे अ० वारंवार भ्रमण करे वी० तीरे प० प्रशस्त च० चार अ० अप्रशस्त च०

सूत्र

गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्ल वेरमणेणं एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥ २ ॥ एवं संसार आउली करेंति, एवं परित्ती करेंति, दीही करेंति, हस्सी करेंति, एवं अणुपरियट्टंति, एवं

भावार्थ

अवर्णवाद बोलना १७ माया मृषा और १८ मिथ्यादर्शन शल्य-देवगुरु धर्म से भी मन का मिथ्यात्व नाश नहीं होवे, इन अठारह कारनों से जीव अधोगति गमनरूप गुरुत्व धारण करता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव लघुत्व कैसे धारण करता है ? अहो गौतम ! प्राणातिपात से निवर्तना यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से निवर्तना इन अठारह कारनों से जीव लघुत्व प्राप्त कर सकता है ॥ २ ॥ उक्त अठारह पाप स्थानों के आचारण से जीव संसार प्रचुर करे, संसार परत्त करे, दीर्घ करे, ह्रस्व करे, संसार में वारंवार परिभ्रमण करे और संसार से उत्तीर्ण होवे. इन आठ में से लघुत्व, परित्त, ह्रस्वत्व व संसार का उल्लंघन ऐसे चार बोल प्रशस्त और गुरुत्व, संसार का प्रचूर करना, दीर्घ करना व संसार का उल्लंघन

शब्दार्थ

चार ॥ ३ ॥ स० सातवा उ० आकाशांतर किं० क्या ग० गुरु ल० लघु ग० गुरुलघु अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु नो० नहीं गुरुलघु अ० अगुरुलघु स० सातवा त० तनुवात किं० क्या गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु ग० गुरुलघु नो० नहीं अगुरुलघु ए० ऐसे स० सातवा घ० घनवात स० सातवा घ० घनोदधि स० सातवी पु० पृथ्वी उ० आकाशांतर स० सर्व [illegible]

सूत्र

वीईवयंति, पसत्था चत्तारि अपसत्था चत्तारि ॥ ३ ॥ सत्तमेणं भंते ! उवासंतरे किं गरुए, लहुए, गरुय लहुए, अगुरुय लहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, नो गरुय लहुए, अगरुय लहुए सत्तमेणं भंते ! तणुवाए किं गरुए, लहुए, गरुयलहुए, अगरुयलहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, गरुय लहुए, नो अगरुय लहुए एवं सत्तमे

भावार्थ

नहीं करना ये चार बोल अप्रशस्त कहाये गये हैं ॥ ३ ॥ जीव के गुरुत्व लघुत्व से आकाशादिक का गुरुत्व लघुत्व कहते हैं. १ अहो भगवन् ! सातवी नरककी नीचेका आकाशान्तर क्या गुरुत्व, लघुत्व, गुरुलघुत्व, व अगुरुलघुत्ववाला है ? अहो गौतम ! सातवी नरक का आकाशान्तर गुरु, लघु व गुरुलघु नहीं है परंतु अगुरुलघु है. अहो भगवन् ! सातवी नरक की नीचे का तनुवात क्या गुरु, लघु, गुरुलघु व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! सातवा तनुवात गुरु नहीं है, लघु नहीं है परंतु गुरु लघु है और अगुरु लघु नहीं है. ऐसे ही सातवा घनवात, सातवा घनोदधि, सातवी पृथ्वी व सब आकाशान्तर को सातवा

पदार्थ — सातवा उ० आकाशान्तर ज० जैसे त० तनुवात ए० ऐसे ग० गुरुलघु ग० घनवात घ० घनोदधि पु० पृथ्वी दी० द्वीप स० सागर वा० क्षेत्र ॥ ४ ॥ ने० नारकी भं० भगवन् किं० क्या ग० गुरु जा० यावत् अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु गु० गुरुलघु अ० अगुरुलघु से० वह के०

सूत्र — घणवाए, सत्तमे घणोदही, सत्तमा पुढवी, उवासंतराइं सव्वाइं जहा सत्तमे उवासंतरे। जहा तणुवाए एवं गरुयलहुए घणवाय घणउदहि, पुढवी, दीवाय, सागरा, वासा, ॥ ४ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं गरुया जाव अगरुलहुया ? गोयमा ! नो गुरुया, नोलहुया, गुरुयलहुयावि, अगरुयलहुयावि । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! वेउव्विय

भावार्थ — आकाशान्तर जैसे कहना. अर्थात् जैसे सातवा आकाशान्तर गुरु, लघु, व गुरुलघु नहीं है परंतु अगुरुलघु है वैसेही इस का जानना. जैसे तनुवात का कहा वैसेही घनवात, घनोदधि, पृथ्वी, द्वीप, सागर व भरतादि क्षेत्र का जानना अर्थात् जैसे तनुवात गुरुलघु है वैसे ही उक्त सब पदार्थों गुरुलघु हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! नारकी क्या गुरु, लघु, गुरुलघु या अगुरुलघु हैं ? अहो गौतम ! गुरु भी नहीं हैं, लघु भी नहीं हैं, परंतु गुरुलघु व अगुरुलघु हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी गुरु व लघु नहीं हैं परंतु गुरुलघु व अगुरुलघु हैं ? अहो गौतम ! वैक्रेय व तेजस शरीर की अपेक्षा से नारकी गुरुलघु हैं परंतु

शब्दार्थ चार ॥ ३ ॥ स० सातवा उ० आकाशांतर किं० क्या ग० गुरु ल० लघु ग० गुरुलघु अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु नो० नहीं गुरुलघु अ० अगुरुलघु स० सातवा त० तनुवात किं० क्या गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो० नहीं लघु ग० गुरुलघु नो० नहीं अगुरुलघु ए० ऐसे स० सातवा घ० घनवात स० सातवा घ० घनोदधि स० सातवी पु० पृथ्वी उ० आकाशांतर स० सर्व ज० जैसे स०

सूत्र वीईवयांति, पसत्था चत्तारि अपसत्था चत्तारि॥ ३ ॥सत्तमेणं भंते ! उवासंतरे किं गरुए, लहुए, गरुय लहुए, अगुरुय लहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, नो गरुय लहुए, अगरुय लहुए सत्तमेणं भंते ! तणुवाए किं गरुए, लहुए, गरुयलहुए, अगरुयलहुए ? गोयमा ! नोगरुए, नोलहुए, गरुय लहुए, नो अगरुय लहुए एवं सत्तमे

भावार्थ नहीं करना ये चार बोल अप्रशस्त कहाये गये हैं ॥ ३ ॥ जीव के गुरुत्व लघुत्व से आकाशादिक का गुरुत्व लघुत्व कहते हैं. १ अहो भगवन् ! सातवी नरककी नीचेका आकाशान्तर क्या गुरुत्व, लघुत्व, गुरुलघुत्व, व अगुरुलघुत्ववाला है ? अहो गौतम ! सातवी नरक का आकाशान्तर गुरु, लघु व गुरुलघु नहीं है परंतु अगुरुलघु है. अहो भगवन् ! सातवी नरक की नीचे का तनुवात क्या गुरु, लघु, गुरुलघु व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! सातवा तनुवात गुरु नहीं है, लघु नहीं है परंतु गुरु लघु है और अगुरु लघु नहीं है. ऐसे ही सातवा घनवात, सातवा घनोदधि, सातवी पृथ्वी व सब आकाशान्तर को सातवा

पदार्थ ॥ ५ ॥ ध० धर्मास्तिकाय जा० यावत् जी० जीव च० चौथापद में ॥ ६ ॥ पो० पुद्गलास्ति काया भं० भगवन् किं० क्या ग० गुरु ल० लघु ग० गुरुलघु अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गु० गुरु नो० नहीं ल०लघु ग०गुरुलघु अ०अगुरुलघु से०वह के०कैसे गो० गौतम गु०गुरुलघु द०द्रव्य प० प्रत्यय नो० नहीं गुरु नो० नहीं ल०लघु गु०गुरु लघु नो०नहीं अ० अगुरुलघु अ०अगुरु लघु द०द्रव्य प०प्रत्यय नो०नहीं

सूत्र त्थिकाए चउत्थपएणं ॥ ६ ॥ पोग्गलत्थि काएणं भंते ! किं गरुए, लहुए,गरुयलहुए, अगुरुयलहुए ? गोयमा! नो गुरुए, नोलहुए, गुरुयलहुएवि, अगुरुयलहुएवि सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! गुरुयलहुय दव्वाइं पडुच्च णो गरुए णो लहुए, गरुय लहुए, नो अगुरुयलहुए । अगुरुयलहुय दव्वाइं पडुच्च णो गुरुए, नोलहुए, नोगुरुयल-

भावार्थ अगुरुलघु जानना. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! पुद्गलास्ति काय क्या गुरु, लघु, गुरुलघु या अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! पुद्गलास्ति काय गुरु नहीं है, लघु नहीं है परंतु गुरुलघु व अगुरुलघु है ? अहो भगवन् ! किस तरह से पुद्गलास्तिकाय गुरु नहीं है लघु नहीं है परंतु गुरुलघु व अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! औदारिक, वैक्रेय, आहारक व तेजस इन गुरुलघु द्रव्य आश्रित पुद्गलास्तिकाय गुरु नहीं है, लघु नहीं है, परंतु गुरुलघु है. व अगुरुलघु नहीं है और कार्माण,मन व भाषा इन तीन अगुरुलघु द्रव्यकी अपेक्षा से पुद्गलास्तिकाय गुरु

शब्दार्थ कैसे गो॰ गौतम वे॰ वैक्रेय ते॰ तेजस प॰ प्रत्यय नो॰ नहीं गुरु नो॰ नहीं लघु ग॰ गुरुलघु नो॰ नहीं अ॰ अगुरुलघु जी॰ जीव क॰ कर्म प॰ प्रत्ययिक नो॰नहीं गुरु नो॰नहीं लघु नो॰ नहीं गु॰ गुरुलघु अ॰ अगुरुलघु से॰ वह ते॰ इसलिये जा॰ यावत् वे॰ वैमानिक न॰ विशेष ना॰ नाना प्रकार जा॰ जानना

सूत्र तेयाइं पडुच्च नोगरुया, नोलहुया, गरुयलहुया, नो अगुरुयलहुया। जीवंच कम्मंच पडुच्च नो गुरुया नो लहुया, नो गुरुयलहुया अगुरुयलहुया। सेतेणट्ठेणं, एवं जाव वेमाणिया। नवरं णाणत्तं जाणियव्वं सरीरेहिं ॥ ५ ॥ धम्मत्थिकाए जाव जीव-

भावार्थ गुरु, लघु व अगुरुलघु नहीं हैं. और जीव व कर्म की अपेक्षा से गुरु, लघु, व गुरुलघु नहीं है परंतु अगुरु लघु हैं. इससे नारकी गुरुलघु व अगुरुलघु हैं. नारकी जैसे शेष सब दंडक के जीवों का जानना. मात्र शरीर में भिन्नता रहती है अर्थात् जिनको जितने शरीर होवे उनको उतने शरीर की अपेक्षा ग्रहण करनी असुर कुमारादिक को नारकी जैसे, पृथिव्यादिक में उदारिक तेजस व कार्माण ऐसे तीन शरीर है इसलिये यहांपर उदारिक व तेजसकी अपेक्षा ग्रहण करनी वायुकायमें वैक्रेय उदारिक व तेजसकी अपेक्षा ग्रहण करनी. ऐसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय को जानना. मनुष्य को उदारिक वैक्रेय अहारक व तेजस की अपेक्षा से लेना ॥ ५ ॥ धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय, आकाशास्ति काय व जीवास्ति काय में मात्र चौथापद

शब्दार्थ लेश्या ॥ ९ ॥ दि॰ दृष्टि दं॰ दर्शन ना॰ ज्ञान अ॰ अज्ञान स॰ संज्ञा च॰ चौथे पद में ने॰ जानना हे॰ नीचे के च॰ चार स॰ शरीर ना॰ जानना त॰ तीसरे पदमें क॰ कार्माण च॰ चौथा पद में॰ म॰ मनजोग व॰ वचनजोग च॰ चौथा पद में का॰ कायाजोग त॰ तीसरापद में सा॰ साकारोपयोग अ॰ अनाकारोपयोग च॰ चौथापद में स॰ सर्व द्रव्य स॰ सर्व प्रदेश स॰ सर्व पर्यव ज॰ जैसे पो॰ पुद्गलास्ति काय ती॰

सूत्र चउत्थपएणं । एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥ ९ ॥ दिट्ठी—दंसण—नाण—अन्नाण—सण्णाओ चउत्थपएणं णेयव्वाइं , हेट्ठिल्ला चत्तारि सरीरा नायव्वा तइएणं पएणं ॥ कम्मय चउत्थएणं पएणं, ॥ मणजोगे, वइजोगे, चउत्थएणं पदेणं ॥ कायजोगो तइयएणं पएणं ॥ सागारोवओगो, अणागारोवओगो चउत्थपदेणं ॥ सव्वदव्वा, सव्वपदेसा,

भावार्थ कृष्ण लेश्याका कहा वैसे ही नील, कापुत, तेजो, पद्म व शुक्ल लेश्या का जानना. ॥ ९ ॥ दृष्टि, दर्शन, ज्ञान, अज्ञान व संज्ञा में अगुरुलघुत्व जानना. उदारिक, वैक्रेय, आहारक व तेजस शरीर में गुरु लघुत्व और कार्माण शरीर में अगुरु लघुत्व जानना. मनयोग वचन योग में अगुरु लघुत्व और काय योग में गुरुलघुत्व जानना. साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त उपयोग में अगुरु लघुत्व. धर्मास्तिकायादि षट्द्रव्य, उन के सब प्रदेश, व सब पर्यवको पुद्गलास्तिकाय जैसे गुरुलघु व अगुरुलघु दोनों कहना.

शब्दार्थ गु० गुरु नो० नहीं ल० लघु नो० नहीं गु० गुरुलघु अ० अगुरुलघु ॥ ७ ॥ स० समय क० कार्मण वर्गणा च० चौथा प० पद में॥ ८ ॥ क० कृष्ण ले० लेश्या भं०भगवन् किं०क्या ग० गुरु जा०यावत् अ० अगुरुलघु गो० गौतम नो० नहीं गुरु नो०नहींलघु गु० गुरु लघु अ० अगुरु लघु से० वह के० कैसे द०द्रव्य लेश्या प० मत्यय त० तीसरापद भा० भाव लेश्या प० मत्यय च० चौथा पद ए० ऐसे जा०यावत् सु०शुक्ल

सूत्र हुए अगुरुयलहुए ॥७॥ समया कम्माणियचउत्थपएणं, ॥८॥ कण्हलेसाणं भंते ! किं गरुया जाव अगुरुयलहुया ? गोयमा ! नोगुरुया, नोलहुया, गरुयलहुयावि, अगुरुयलहुयावि । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्वलेस्सं पडुच्च तइयपएणं, भावलेस्संपडुच्च

भावार्थ नहीं, लघु नहीं गुरुलघु नहीं परंतु अगुरुलघु है ॥ ७ ॥ काल-अमूर्त होने से और कर्मवर्गणा के पुद्गल अगुरु लघु होते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या क्या गुरु, लघु यावत् अगुरु लघु है ? गौतम कृष्णलेश्या गुरुनहीं, लघुनहीं, गुरुलघु, व अगुरु लघु है. अहो भगवन् किस कारन से कृष्ण लेश्या गुरु लघु न अगुरुलघु है ? अहो गौतम ! द्रव्य लेश्या की अपेक्षासे गुरुलघु है क्यों की द्रव्य लेश्या उदारिक शरीर के वर्ण वाली है और उदारीक शरीर गुरुलघु है इसलिये कृष्ण लेश्या द्रव्य लेश्या की अपेक्षा से गुरु लघु जानना और भाव लेश्या की अपेक्षा से अगुरुलघु जानना क्यों की भाव लेश्या जो जीव परिणाम वह अमूर्त होने से अगुरु लघु होते हैं इसलिये भाव लेश्या की अपेक्षा से कृष्ण लेश्या अगुरुलघु जानना जैसे

शब्दार्थ

लेश्या ॥ ९ ॥ दि० दृष्टि दं० दर्शन ना० ज्ञान अ० अज्ञान स० संज्ञा च० चौथे पद में ने० जानना हे० नीचे के च० चार स० शरीर ना० जानना त० तीसरे पदमें क० कार्माण च० चौथा पद में० म० मनजोग व० वचनजोग च० चौथा पद में का० कायाजोग त० तीसरापद में सा० साकारोपयोग अ० अनाकारोपयोग च० चौथापद में स० सर्व द्रव्य स० सर्व प्रदेश स० सर्व पर्यव ज० जैसे पो० पुद्गलास्ति काय ती०

सूत्र

चउत्थपएणं । एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥ ९ ॥ दिट्ठी—दंसण—नाण—अन्नाण—सण्णाओ चउत्थपएणं णेयव्वाइं , हेट्ठिल्ला चत्तारि सरीरा नायव्वा तइएणं पएणं ॥ कम्मय चउत्थएणं पएणं, ॥ मणजोगे, वइजोगे, चउत्थएणं पदेणं ॥ कायजोगो तइयएणं पएणं ॥ सागारोवओगो, अणागारोवओगो चउत्थपदेणं ॥ सव्वदव्वा, सव्वपदेसा,

भावार्थ

कृष्ण लेश्याका कहा वैसे ही नील, कापुत, तेजो, पद्म व शुक्ल लेश्या का जानना. ॥ ९ ॥ दृष्टि, दर्शन, ज्ञान, अज्ञान व संज्ञा में अगुरुलघुत्व जानना. उदारिक, वैक्रेय, आहारक व तेजस शरीर में गुरु लघुत्व और कार्माण शरीर में अगुरु लघुत्व जानना. मनयोग वचन योग में अगुरु लघुत्व और काय योग में गुरुलघुत्व जानना. साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त उपयोग में अगुरु लघुत्व. धर्मास्तिकायादि षड्द्रव्य, उन के सब प्रदेश, व सब पर्यवको पुद्गलास्तिकाय जैसे गुरुलघु व अगुरुलघु दोनों कहना.

शब्दार्थ अतीतकाल अ० अनागत काल स० सर्वपना काल च० चौथा पद में ॥ १० ॥ से० वह भं० भगवन् ला० लघुता अ० अल्पइच्छा अ० मूर्च्छारहित अ० अगृद्धी अ० अप्रतिबन्ध स० श्रमण नि० निग्रंथ को प० प्रशस्त है० हां गो० गौतम ला० लघुता जा० यावत् प० प्रशस्त ॥ ११ ॥ भं० भगवन् अ० क्रोध रहित अ० मान रहित अ० मायारहित अ० लोभ रहित स० श्रमण नि० निग्रंथ को प० प्रशस्त हं० हां गो० गौतम अ० क्रोध रहित जा० यावत् प० प्रशस्त ॥ १२ ॥ भं० भगवन् कं० कांक्षा प० द्वेष खी० क्षीण स० श्रमण नि० निग्रंथ अं० अंत

सूत्र सव्वपज्जवा, जहा पोग्गलत्थिकाओ, तीतद्धा अणागयद्धा, सव्वद्धा, चउत्थएणं पए- णं ॥ १० ॥ सेणूणं भंते ! लाघवियं, अप्पिच्छा, अमुच्छा, अगेही, अपडिबद्धया समणाणं निग्गंथाणं पसत्थं ? हंता गोयमा ! लाघवियं जाव पसत्थं ॥ ११ ॥ सेणूणं भंते अकोहत्तं अमाणत्तं अमायत्तं अलोभत्तं समणाणं णिग्गंथाणं पसत्थं ? हंता !

भावार्थ अतीत काल, अनागतकाल व सब काल में चौथा अगुरुलघुत्व जानना ॥ १० ॥ अब गुरुलघुपने का अन्य प्रकार से प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ को लघुता, अल्प इच्छा, अमूर्च्छा, अगृद्धि, व अप्रतिबन्ध क्या प्रशस्त है ? हां गौतम ! श्रमण निर्ग्रन्थ को लघुता यावत् अप्रतिबन्ध प्रशस्त है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ को क्रोध, मान, माया व लोभ रहितपना क्या श्रेष्ठ है ? हां गौतम ! क्रोध रहितपना यावत् लोभ रहितपना श्रमण निर्ग्रन्थ को श्रेष्ठ है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् !

दार्थ करने वाले अं० चरिम शरीरी व० बहुत मोहवाले पु० पाहिले वि० विचरकर अ० अथ प० पीछे सं० संवृत का० कालकरे त० पीछे सि० सिझे बु० बुझे मु० मुक्त होवे जा० यावत् अं० अंतकरे हं० हां गो० गौतम कं० कांक्षा प० द्वेष खी० क्षीण जा० यावत् अं० अंतकरे ॥ १३ ॥ अ० अन्य तीर्थिक भं० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं भा० विशेष कहते हैं प० कहते हैं प० प्ररूपते हैं ए० एक जी० जीव ए० एक

सूत्र गोयमा ! अकोहत्तं जाव पसत्थं ॥ १२ ॥ सेणूणं भंते ! कंखापदोसे खीणे समणे णिग्गंथे अंतकरे भवइ अंतिम सारीरिएवा, बहुमोहे विय णं पुव्विं विहरित्ता, अह पच्छा संवुडे कालं करेइ तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, जाव अंतं करेइ ? हंता गोयमा ! कंखापदोसे खीणे जाव अंतंकरेइ ॥ १३ ॥ अण्णउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति, एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो आ-

भावार्थ कांक्षा-मिथ्यात्व-मोहनीय कर्मक्षय करनेवाला श्रमण क्या दुःख का अंत करनेवाला होवे ? अथवा चरिम शरीरी व पहिले मोह में रमण करके पुनः लघुभूत शुद्ध बना हुवा काल करें तो क्या सिझता, बुझता, मुक्त होता यावत् सब दुःखों का अंत करता है ? हां गौतम ! कांक्षा प्रद्वेष का क्षय करनेवाला, चरिम शरीरी व मोहका क्षय करनेवाला संसार का अंत करे ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं, बोलते हैं, हेतु सहित कहते हैं, व प्ररूपते हैं कि एकही जीव एक समय में दो प्रकार के आयुष्य का बंध करता है:

शब्दार्थ

अतीतकाल अ० अनागत काल स० सर्वपना काल च० चौथा पद में ॥ १० ॥ से० वह भं० भगवन् ला० लघुता अ० अल्पइच्छा अ० मूर्च्छारहित अ० अगृद्धी अ० अप्रतिबन्ध स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को प० प्रशस्त है० हां गो० गौतम ला० लघुता जा० यावत् प० प्रशस्त ॥ ११ ॥ भं० भगवन् अ० क्रोध रहित अ० मान रहित अ० मायारहित अ० लोभ रहित स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को प० प्रशस्त हं० हां गो० गौतम अ० क्रोध रहित जा० यावत् प० प्रशस्त ॥ १२ ॥ भं० भगवन् कं० कांक्षा प० द्वेष खी० क्षीण स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ अं० अंत

सूत्र

सव्वपज्जवा, जहा पोग्गलत्थिकाओ, तीतद्धा अणागयद्धा, सव्वद्धा, चउत्थएणं पए-णं ॥ १० ॥ सेणूणं भंते ! लाघवियं, अप्पिच्छा, अमुच्छा, अगेही, अपडिबद्धया समणाणं निग्गंथाणं पसत्थं ? हंता गोयमा ! लाघवियं जाव पसत्थं ॥ ११ ॥ सेणू-णं भंते अकोहत्तं अमाणत्तं अमायत्तं अलोभत्तं समणाणं णिग्गंथाणं पसत्थं ? हंता !

भावार्थ

अतीत काल, अनागतकाल व सव काल में चौथा अगुरुलघुत्व जानना ॥ १० ॥ अब गुरुलघुपने का अन्य प्रकार से प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ को लघुता, अल्प इच्छा, अमूर्च्छा, अगृद्धि, व अप्रतिबन्ध क्या प्रशस्त है ? हां गौतम ! श्रमण निर्ग्रन्थ को लघुता यावत् अप्रतिबन्ध प्रशस्त है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ को क्रोध, मान, माया व लोभ रहितपना क्या श्रेष्ठ है ? हां गौतम ! क्रोध रहितपना यावत् लोभ रहितपना श्रमण निर्ग्रन्थ को श्रेष्ठ है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् !

शब्दार्थ से प॰ परभव का आयुष्य प॰ बांधे प॰ परभवका आयुष्य प॰ बांधने से इ॰ यह भवका आ॰ आयुष्य प॰ बांधे ए॰ ऐसे ए॰ एक जीव ए॰ एक समय में दो॰ दो आयुष्य प॰ बांधे इ॰ इस भवका आ॰ आयुष्य प॰ परभवका आयुष्य से॰ वह क॰ कैसे ए॰ इस भं॰ भगवन् ए॰ ऐसे गो॰ गौतम जं॰ जो अ॰ अन्यती-

सूत्र गोयमा ! जण्णंते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव परभवियाउयंच, जे ते एव माहंसु मिच्छंते एव माहंसु ॥ अहं पुण गोयमा ! एव माइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पकरेइ. तंजहा—इहभवियाउयंवा, परभवियाउयंवा. । जं समयं इह भवियाउयं पकरेइ णो तं समयं परभवियाउयं पकरेइ, जं समयं परभवियाउयं पकरेइ णो तं समयं इह भवियाउयं पकरेइ, इह भविया-उयस्स पकरणयाए णो परभवियाउयं पकरेइ, परभवियाउयस्स पकरणयाए णो

भावार्थ करता है तो अहो भगवन् ! यह किस तरह से है ? अहो गौतम ! अन्य तीर्थी जो ऐसा कहते हैं कि एक जीव एक समय में इस भव व परभव का आयुष्य बांधता है वगैरह जो कहते हैं सो मिथ्या है. परंतु अहो गौतम ! मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि एक जीव एक समय में इस भवका अथवा परभव का ऐसे दोनों में से एक भवका आयुष्य बांधता है. जिस समय में इस भवका आयुष्य बांधता है उस समय में परभव का आयुष्य नहीं बांधता है और जिस समय में परभव का आयुष्य बांधता है उस

शब्दार्थ स०समय में दो०दो आ०आयुष्य प०बांधे इ०इस भवका आयुष्य प०परभवका आयुष्य जं०जिस स०समयमें इ०इस भ०भवका आ०आयुष्य प०बांधे तं०उस स०समयमें प०परभवका आयुष्य प०बांधे जं०जिससमयमें प० परभवका आयुष्य प०बांधे तं०उस समयमें इ०इसभवका आयुष्य प०बांधे इ०इस भ०भवका आ०आयुष्यप०बांधने

सूत्र उयाइं पगरेइ तंजहा—इहभवियाउयंच, परभवियाउयंच, । जं समयं इह भवियाउयं पकरेइ तंसमयं परभवियाउयं पकरेइ, जंसमयं परभवियाउयं पकरेइ तंसमयं इह भवियाउयं पकरेइ; इह भवियाउयस्स पकरणयाए परभवियाउयं पकरेइ, परभवियाउयस्स पकरणयाए इह भवियाउयं पकरेइ, एवं खलु एगे जीवे एगे समएणं दो आउयाइं पकरेइ तंजहा इह भवियाउयंच, पर भवियाउयंच ॥ से कहमेयं भंते ! एवं ?

भावार्थ इस में विरोध नहीं आता है क्यों की जीव स्वपर्याय समूहात्मक है. जब वह आयुष्य का बंध करता है तब दो भव का आयुष्य बांधता है. इस भव का आयुष्य व परभव का आयुष्य. जिस समय में इस भवका आयुष्य का बंध करता है उस समय में परभव के आयुष्य का बंध करता है; और जिस समय में परभव के आयुष्य का बंध करता है उस समय में इस भव के आयुष्य का बंध करता. है इस भव के आयुष्य का बंध करते परभव के आयुष्य का बंध करता है; और परभव के आयुष्य का बंध करते इस भव के आयुष्य का बंध करता है. इसी प्रकार एकही जीव एक ही समयमें दो भव के आयुष्य का बंध

शब्दार्थ उस समय में पा० पार्श्वनाथ के अ० शिष्य का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार जे० जहां थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० तहां उ० आये उ० आकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व०कहा थे० स्थविर सा० सामायिक ण० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर सा० सामायिक का अ० अर्थ ण० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर प० प्रत्याख्यान न० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर प० प्रत्याख्यान का अर्थ ण०नहीं या०जानते हैं थे०स्थविर सं०संयम व संयम का अर्थ न०नहीं जानते हैं थे०स्थविर सं० संवर ण०

सूत्र थेरा सामाइयं ण याणंति, थेरा सामाइयस्स अट्ठं णयाणंति, थेरा पच्चक्खाणं नयाणंति, थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठं णयाणंति, थेरा संयमं णयाणंति, थेरा संजमस्स अट्ठं णयाणंति, थेरा संवरं णयाणंति, थेरा संवरस्स अट्ठं नयाणंति, थेरा विवेगं णयाणंति, थेरा विवेगस्स अट्ठं ण याणंति, थेरा विउस्सग्गं णयाणंति, थेरा विउस्सग्गस्स अट्ठं नयाणंति ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी, जाणामोणं

भावार्थ भगवन्त को ऐसा कहने लगे. अहो स्थविर ! तुम समताभाव रूप सामायिक नहीं जानते हो, कर्म का अनुपादान व निर्जरारूप सामायिक का प्रयोजन को नहीं जानते हो, पोरिशी वगैरह प्रत्याख्यान तुम नहीं जानते हो, आश्रव द्वार निरोध रूप प्रत्याख्यानका प्रयोजन तुम नहीं जानते हो, पृथिव्यादि का संरक्षण रूप संयम तुम नहीं जानते हो, अनाश्रवपना सो संयम का अर्थ तुम नहीं जानते हो, इन्द्रिय

शब्दार्थ थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प० परभवका आ० आयुष्य जे० जो ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे आ० कहते हैं अ० मैं पु० फीर गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं जा० यावत् प० प्ररूपता हूं ए० एक जीव ए० एक समय में ए० एक आ० आयुष्य प० बांधे से० वह ए० ऐसे भं० भगवन् भ० भगवान् गो० गौतम जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १४ ॥ ते० उसकाल ते०

सूत्र इह भवियाउयं पकरेइ । एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पकरेइ तंजहा इह भवियाउयंवा परभवियाउयंवा सेवं भंते भंतेत्ति भगवं गोयम जाव विहरइ ॥ १४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे कालासवेसियपुत्ते णामं अणगारे, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता, थेरं भगवं एवं वयासी

भावार्थ समय में इस भवका आयुष्य नहीं बांधता है. इस भव का आयुष्य बांधते परभव का आयुष्य नहीं बंधाता है और परभव का आयुष्य बांधते इस भव का आयुष्य नहीं बंधाता है. इसी से एक जीव एक समय में इस भव का अथवा परभव का ऐसे एक भव का आयुष्य बांधता है. अहो भगवन् ! आपने कहा सो यथा तथ्य है ऐसा गौतम स्वामी कहकर विचरने लगे ॥१४॥ उस काल उस समय में श्री पार्श्वनाथ स्वामी के शिष्य कालासवेसितपुत्र नामक अनगार जहां भगवंत श्री महावीर स्वामी के शिष्यथे वहां आये और स्थविर

शब्दार्थ उस समय में पा० पार्श्वनाथ के अ० शिष्य का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार जे० जहां थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० तहां उ० आये उ० आकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व०कहा थे० स्थविर सा० सामायिक ण० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर सा० सामायिक का अ० अर्थ ण० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर प० प्रत्याख्यान न० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर प० प्रत्याख्यान का अर्थ ण०नहीं या०जानते हैं थे०स्थविर सं०संयम व संयम का अर्थ न०नहीं जानते हैं थे०स्थविर सं० संवर ण०

सूत्र थेरा सामाइयं ण याणंति, थेरा सामाइयस्स अट्ठं णयाणंति, थेरा पच्चक्खाणं नयाणंति, थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठं णयाणंति, थेरा संयमं णयाणंति, थेरा संजमस्स अट्ठं णयाणंति, थेरा संवरं णयाणंति, थेरा संवरस्स अट्ठं नयाणंति, थेरा विवेगं णयाणंति, थेरा विवेगस्स अट्ठं ण याणंति, थेरा विउस्सग्गं णयाणंति, थेरा विउस्सग्गस्स अट्ठं नयाणंति ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी, जाणामोणं

भावार्थ भगवन्त को ऐसा कहने लगे. अहो स्थविर ! तुम समताभाव रूप सामायिक नहीं जानते हो, कर्म का अनुपादान व निर्जरारूप सामायिक का प्रयोजन को नहीं जानते हो, पोरिशी वगैरह प्रत्याख्यान तुम नहीं जानते हो, आश्रव द्वार निरोध रूप प्रत्याख्यानका प्रयोजन तुम नहीं जानते हो, पृथिव्यादि का संरक्षण रूप संयम तुम नहीं जानते हो, अनाश्रवपना सो संयम का अर्थ तुम नहीं जानते हो, इन्द्रिय

शब्दार्थ नहीं या० जानते हैं सं० संवर का अ० अर्थ न० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर वि० विवेक ण० नहीं या० जानते हैं वि० विवेक का अर्थ वि० कायोत्सर्ग वि० कायोत्सर्ग का अर्थ न० नहीं या० जानते हैं त० तब ते० वे थे० स्थविर का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार को ए० ऐसा व० कहे जा० जानता हूं अ० आर्य सा० सामायिक जा० जानता हूं अ० आर्य सा० सामायिक का अर्थ जा०

सूत्र अज्जो सामाइयं, जाणामोणं अज्जो सामाइयस्स अट्ठं, जाव जाणामोणं अज्जो विउस्सग्गस्स अट्ठं। तएणंसे कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरे भगवंते एवं वयासी, जइणं अज्जो तुब्भे जाणह सामाइयं, जाणह सामाइयस्स अट्ठं, जाव जाणह विउस्सग्गस्स अट्ठं; के भे अज्जो सामाइए ? केभे सामाइयस्स अट्ठे, जाव के भे विउसग्गस्स

भावार्थ नोइन्द्रिय का निग्रह रूप संवर तुम नहीं जानते हो, अनाश्रवपना सो संवर का अर्थ तुम नहीं जानते हो, विशिष्ट बोध रूप विवेक तुम नहीं जानते हो, त्याग व त्यागादि जो विवेक उस का अर्थ तुम नहीं जानते हो, त्यागरूप कायोत्सर्ग तुम नहीं जानते हो, और कायोत्सर्ग का अर्थ तुम नहीं जानते हो. तब श्री स्थविर भगवंत उन कालासवेसित पुत्र अनगार को ऐसे बोले कि अहो आर्य ! मैं समपरिणाम रूप सामायिक जानता हूं. कर्मका अनुपादान व निर्जरा रूप सामायिक का अर्थ मैं जानता हूं यावत् कायोत्सर्ग व कायोत्सर्ग का अर्थ मैं जानता हूं-तब कालासवेसित पुत्र नामक अनगार उन स्थविर भगवंत को

शब्दार्थ यावत् जा० जानता हूं अ० आर्य वि० कायोत्सर्ग का अर्थ त० तब का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व० कहा ज० यदि अ० आर्य तु० तुम जा० जानते हो सा० सामायिक जा० जानते हो सा० सामायिक का अर्थ जा० यावत् जा० जानते हो वि० कायोत्सर्ग का अर्थ के० क्या अ० आर्य सा० सामायिक के० क्या सा० सामायिक का अर्थ जा० यावत् के० क्या वि० कायोत्सर्ग का अर्थ त० तब थे० स्थविर भ० भगवन् का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार को

सूत्र अट्ठे ? तएणं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी—आयाणे अज्जो! सामाइए, आयाणे अज्जो सामाइयस्स अट्ठे, जाव विउस्सग्गस्स अट्ठे॥ तएणं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते एवं वयासी—जइ भे अज्जो ! आया सामाइए आया सामाइयस्स अट्ठे जाव आया विउस्सग्गस्स अट्ठे, अवहट्टु कोह माणमाया लोभे, किमट्ठं अज्जो गरहह ? कालासा ! संजमट्ठयाए । से भंते ! किं गरहासंजमे, अग-

भावार्थ ऐसे बोले की यदि तुम सामायिक, सामायिकका अर्थ यावत् कायोत्सर्ग का अर्थ जानते हो तो अहो आर्य ! सामायिक क्या है, सामायिक का अर्थ क्या है, यावत् कायोत्सर्ग का अर्थ क्या है ? तब स्थविर भगवंत कालासवेशित पुत्र नामक अनगार को ऐसे बोले की अहो आर्य ! हमारे मतमें सामायिक गुण प्रतिपन्न जीव को ही सामायिक कही है, आत्मा को ही सामायिक का अर्थ कहा है यावत् आत्मा को ही कायो

शब्दार्थ नहीं या० जानते हैं सं० संवर का अ० अर्थ न० नहीं या० जानते हैं थे० स्थविर वि० विवेक ण० नहीं या० जानते हैं वि० विवेक का अर्थ वि० कायोत्सर्ग वि० कायोत्सर्ग का अर्थ न० नहीं या० जानते हैं त० तब ते० वे थे० स्थविर का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार को ए० ऐसा व० कहे जा० जानता हूं अ० आर्य सा० सामायिक जा० जानता हूं अ० आर्य सा० सामायिक का अर्थ जा०

सूत्र अज्जो सामाइयं, जाणामोणं अज्जो सामाइयस्स अट्ठं, जाव जाणामोणं अज्जो विउस्सग्गस्स अट्ठं । तएणंसे कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरे भगवंते एवं वयासी, जइणं अज्जो तुब्भे जाणह सामाइयं, जाणह सामाइयस्स अट्ठं, जाव जाणह विउस्सग्गस्स अट्ठं; के भे अज्जो सामाइए ? केभे सामाइयस्स अट्ठं, जाव के भे विउसग्गस्स

भावार्थ नोइन्द्रिय का निग्रह रूप संवर तुम नहीं जानते हो, अनाश्रवपना सो संवर का अर्थ तुम नहीं जानते हो, विशिष्ट बोध रूप विवेक तुम नहीं जानते हो, त्याग व त्यागादि जो विवेक उस का अर्थ तुम नहीं जानते हो, त्यागरूप कायोत्सर्ग तुम नहीं जानते हो, और कायोत्सर्ग का अर्थ तुम नहीं जानते हो. तब श्री स्थविर भगवंत उन कालासवेसित पुत्र अनगार को ऐसे बोले कि अहो आर्य ! मैं समपरिणाम रूप सामायिक जानता हूं. कर्मका अनुपादान व निर्जरा रूप सामायिक का अर्थ मैं जानता हूं यावत् कायोत्सर्ग व कायोत्सर्ग का अर्थ मैं जानता हूं-तब कालासवेसित पुत्र नामक अनगार उन स्थविर भगवंत को

शब्दार्थ क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ किं० क्या अ० आर्य ग० गर्हते हो का० कालासवेसित सं० संयम केलिये से० वह भ० भगवन् किं० क्या ग० गर्हा सं० संयम अ० अगर्हा सं० संयम का० कालासवेसित ग० गर्हा सं० संयम नो० नहीं अ० अगर्हा सं० संयम ग० गर्हा स० सब दो० दोष प० क्षपावे स० सब वा० मिथ्यात्व प० जानकर ए० ऐसे आ० आत्मा स० संयम में उ० स्थिर भ० होवे उ० पुष्ट भ० होवे उ० उपस्थित भ० होवे ए० यहां से० वह का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार सं० स्वयं बुद्ध थे०

सूत्र अणभिगमेणं, अदिट्ठाणं अस्सुयाणं असुयाणं, अविण्णायाणं अव्वोगडाणं अव्वोच्छिण्णाणं, आणिज्जूढाणं, अणुवधारियाणं, एयमट्ठं णो सद्दहिए, णोपत्तिइए णोरोइए, इयाणिं भंते ! एएसिणं पयाणं जाणणयाए, सवणयाए, बोहियाए, अभिगमेणं दिट्ठाणं सुयाणं मुयाणं विण्णायाणं, वोगडाणं, वोच्छिण्णाणं, णिज्जूढाणं उवधारियाणं; एयमट्ठं सद्दहामि, पत्तियामि, रोएमि, एवमेयं सेजहेयं तुब्भे वयह ॥ तएणंते थेरा भगवंतो कालासवेसिय पुत्त अणगारं एवं वयासी

भावार्थ अहो अनगार ! गर्हा संयम है परंतु अगर्हा संयम नहीं है. गर्हा से सब रागादि दोषों अथवा पूर्व कृत पाप क्षय होता है और सब मिथ्यात्व ज्ञान परिज्ञान से जानकर प्रत्याख्यान परिज्ञान से छूटता है इस तरह से हमारे मत में आत्मा स्थिर व पुष्ट होता है. ऐसा सुनकर कालासवेशित पुत्र नामक अनगारने स्थविर भगवन्त को वंदना नमस्कार किया. वंदना नमस्कार करके कहने लगे कि अहो भगवन् ! मुझे

शब्दार्थ ए० ऐसा व० कहा आ० आत्मा णे० हमारे में सा० सामायिक आ० आत्मा णे० हमारे में सा० सामायिक का अर्थ जा० यावत् वि० कायोत्सर्ग आ अर्थ त० तब से० वह का० कालसवेसित पुत्र अ० अनगार थे० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व० कहा अ० आर्य आ० आत्मा सा० सामायिक आ० आत्मा सा० सामायिक का अर्थ जा० यावत् आ० आत्मा वि० कायोत्सर्ग का० अर्थ अ० छोडकर को

सूत्र रहासंजमे ? कालासा ! गरहासंजमे नो अगरहा संजमे; गरहात्रियणं सव्वं दोसं पविणेइ सव्वं बालियं परिण्णाए । एवं खु णे आया संजमे उवहिए भवइ, एवंखु णेआया संजमे उवचिए भवइ, एवंखु णेआया संजमे उवट्ठिए भवइ । एत्थणं से कालासवेसियपुत्त अणगारे संवुद्धे थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसइत्ता एवं वयासी—एएसिणं भंते ! पयाणं पुव्विं अण्णाणयाए, असवणयाए, अबोहियाए,

भावार्थ त्सर्ग का अर्थ कहा है. तब वह कालासवेशित पुत्र नामक अनागर बोले की अहो आर्य ! यदि तुमारे मत में आत्मा सामायिक, आत्मा सामायिक का अर्थ यावत् आत्मा कायोत्सर्ग का अर्थ है तो क्रोध, मान, माया व लोभ का त्याग कर के उसकी निन्दा क्यों करते हो ? क्यों कि निन्दा, गर्हा यह प्रद्वेष का कारन है; और क्रोधादि त्यागने वाला सामायिक वृत्तिवाला निन्दा गर्हा नहीं कर सकता है तब स्थविर भगवंतने उत्तर दीया कि अहो कालासवेशित पुत्र ! अवद्य पापकी गर्हा करते संयम होता है. तब पुनः वह कालासवेशित अनगार बोले कि अहो भगवन् ! क्या गर्हा संयम है या अगर्हा संयम है ?

पदार्थ

ए० यह प० पद जा० जाने त० सुने उ० अवधारे ए० यह अर्थ स० श्रद्धता हूं प० प्रतीति करताहूं ए० ऐसे ज० जैसे तु० तुम व० कहते हो त० तब थे० स्थविर भ० भगवान् का० कालासवेसित अ० अनगार को ए० ऐसा व० कहा स० श्रद्धा करो अ० आर्य प० प्रतीति करो रो० रुचिकरो ज० जैसे अ० मैं व० कहता हूं त० तब का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार थे० स्थविर भ० भगवन्त को वं० वंदनकर न० नमस्कारकर इ० इच्छता हूं तु० तुमारी अं० पास चा० चार महाव्रत ध० धर्म से पं० पांच म० महाव्रत स० प्रतिक्रमण सहित ध० धर्म उ० अंगीकार करके वि० विचरने को अ० यथासुख दे० देवानुप्रिय मा० नहीं

सूत्र

मा पडिबंधं करेह; तएणं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंप-ज्जित्ताणं विहरइ ॥ तएणं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे बहूणिवासाणि सामण्ण परि-

भावार्थ

यह अर्थ अच्छी तरह से मैंने स्वीकार किया है, अब मैं इन की श्रद्धा, प्रतीति व रुचि करता हूं आपने जो कहा है वैसाही भाव है. तब स्थविर भगवंत कालासवेशित पुत्र नामक अनगार को बोले की अहो आर्य! जो मैं कहताहूं उन वचनों की तुम श्रद्धा प्रतीति व रुचि करो. तब कालासवेशित पुत्र नामक अनगार श्री स्थविर भगवंत को वंदना नमस्कार कर के बोले की अहो भगवन्! मैं आपकी समीप चार महाव्रत रूप धर्म से प्रतिक्रमण सहित पांच महाव्रत रूप धर्म अंगीकार करने को इच्छता हूं. तब स्थ-

शब्दार्थ स्थविर भ० भगवन्त को व वंदनकर न० नमस्कारकर ए० ऐसा व० कहा ए० यह भं० भगवन् प०पद में पु०पुहिले अ० जाना नहीं अ० सुना नहीं अ० वोध नहीं अ०ज्ञान नहीं अ० देखा नहीं अ० सुना नहीं अ० स्मरण नहीं किया अ० विज्ञान हुवा नहीं अ०गुरुगम नहीं हुवा अ० व्यवच्छेद नहीं हुवा भं० सुखात्र वोध नहीं अ० धारा नहीं ए० यह अर्थ णो० श्रद्धे नहीं नो० पातित कीये नहीं णो० रुचे नहीं इ० अत्र भं० भगवन्

सूत्र सद्दहाहि अज्जो, पत्तियाहि अज्जो, रोएहि अज्जो, सेजहेयं अम्हे वयामो ॥ तएणं से कालासवेसिय पुत्ते अणगारे थेरे भगवंतो वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता एवं वयासी—इच्छामिणं भंते ! तुब्भे अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंच-महव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ? । अहासुहं देवाणुप्पिया

भावार्थ इन पदों का इस प्रकार के अर्थ का ज्ञान नहीं था, मैंने उस का स्वरूप नहीं पाहिचानाथा, मैंने पहिले किसी की पास ऐसा श्रवण नहीं कियाथा. मुझे ऐसी प्रतीति नहीं हुईथी; मुझे ऐसा साक्षात्कार नहीं हुवा था, मुझे ऐसा गुरुगम नहीं हुवा था, मेरा संदेह इस प्रकार किसीने नहीं मीटाया था, मुझे ऐसा सुखात्र बोध नही हुआ था, मैंने इस प्रकार ऐसा धारण नहीं किया था, मैं इस प्रकार इसे नहीं श्रद्धता था, मुझे ऐसा रुचिकर नहीं हुआ था, अब अहो भगवन् ! इन का अर्थ मैंने जाना है, ज्ञान से बोधित हुवा है, सम्यक्त्व से विस्तृत अर्थाववोधवाला हुआ है विशेषकर धारनाकिया है, सर्वथा प्रकार से संदेह दूर हुआ है,

शब्दार्थ

धे आ० आराधकर च० चरम उ० श्वासोश्वास से सि० सिद्ध बु० बुद्ध मु० मुक्त प० परिनिवृत्त स० सर्व दुःख से प०मुक्त भं० भगवन् त्ति० ऐसा ॥ १५ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को वं० वंदना कर न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले भं० भगवन् से० शेठ त० दरिद्री कि० रंक ख० क्षत्रिय स० सरिखी अ० अप्रत्याख्यान कि० क्रिया क० करे हं० हां० गो० गौतम

सूत्र

अहियासिज्जइ; तमट्ठं आराहेइ आराहेइत्ता चरमेहिं उस्सास नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुए सव्वदुक्खप्पहीणे भंतेत्ति ॥ १५ ॥ भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता एवं वयासी सेणूणं भंते ! सेट्ठिस्सय तणुयस्स,

भावार्थ

पना, भूमिशैय्या, काष्टशैय्या, केशलोचन, ब्रह्मचर्य, परघर प्रवेश, प्राप्ति, अप्राप्ति, ऊंच नीच इन्द्रियों के समूह और बावीस परिषह के उपसर्ग सहन करते थे; उसे आराधकर चरम श्वास नीश्वास में सिद्ध बुद्ध यावत् सब दुःखों से रहित हुवे. अहो भगवन् ! यह आपका वचन सत्य है ॥ १५ ॥ क्रिया रहित होने से सिद्ध होते हैं इसलिये क्रिया का प्रश्न करते हैं. गौतम स्वामीने महावीर भगवंत को वंदना नमस्कार करके ऐसा प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! श्रेष्टि, दरिद्री, कृपण व क्षत्रिय को क्या एक सरिखी अप्रत्याख्यान क्रिया लगती है ? हां गौतम ! श्रेष्टि, दरिद्री, कृपण व क्षत्रिय को एक सरिखी अप्रत्याख्यान क्रिया लगती है. अहो भगवन् ! सब को एक सरिखी क्रिया लगनेका क्या कारन ? अहो गौतम !

शब्दार्थ प० प्रतिबंध क० करो त० तब का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार थे० स्थविर भ० भगवान् को वं० वंदनकर न० नमस्कारकर चा० चार महाव्रत ध० धर्म से पं० पांच महाव्रत स० प्रतिक्रमण सहित, ध० धर्म उ० अंगीकार कर वि० विचरता है का० कालासवेसित पुत्र अ० अनगार ब० बहुत व० वर्ष सा० साधु पर्याय पा० पाली पा० पालकर ज० जिसलिये की० करे न० नग्न भाव मुं० मुंडभाव अ० स्नान करना नहीं अ० दंत प्रक्षालन नहीं अ० छत्र नहीं अ० उपानह रहित भू० भूमि शैय्या फ० पाटशैय्या क० काष्ट शैय्या के० केशलोच बं० ब्रह्मचर्य प० परगृह प्रवेश ल० प्राप्त अ० अप्राप्त उ० ऊंच नीच गा० इन्द्रिय समुह बा० बावीस प० परिषह उ० उपसर्ग अ० सहन त० इसलिये आ० आरा-

सूत्र याग पाउणइ पाउणइत्ता, जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे, अन्हाणयं, अदंत धुवणयं, अच्छत्तयं, अणोवाहणयं, भूमिसेज्जा फलहसेज्जा, कट्ठसेज्जा, केसलोओ, बंभ चेरवासो, परघरप्पवेसो, लद्धावलद्धी, उच्चावया गामकंटया, बावीसं परीसहोवसग्गा

भावार्थ विर भगवन्त बोले की ज्यों तुम्हारा आत्मा को सुख होवे वैसे करो. ऐसा कार्य में प्रतिबंध [विलंब] मत करो. तब कालासवेशित पुत्र अनगारने स्थविर भगवंत को वंदना नमस्कार किया; वंदना नमस्कार करके चार महाव्रत रूप धर्म में से प्रतिक्रमण सहित पांच महाव्रत रूप धर्म अंगीकार कर विचरने लगे. तब उन कालासवेशित पुत्र अनगारने बहुत कालतक साधु की पर्याय का पालन किया. और पालन करके जिस लिये नग्नपना, मुंड भाव, स्नान नहीं करना, दंत प्रक्षालन नहीं करना, छत्र व उपानह रहित

शब्दार्थ अ० परिभ्रमण से० वह के० कैसे जा० यावत् आ० आधाकर्मी भुं० भोगवता जा० यावत् अ० परिभ्रमण करे गो० गौतम आ० आधाकर्मी भुं० भोगवता आ० आत्मा से ध० धर्म अ०अतिक्रमे आ०आत्मा से ध० धर्म अ०अतिक्रमता पु०पृथ्वी कायाकी ण०नहीं अ०अनुकंपाकरे जा०यावत् त०त्रसकाया की, ण०नहीं अ०

सूत्र बद्धाओ धाणिय बंधण बद्धाओ पकरेइ, जाव अणुपरियट्टइ। से केणट्ठेणं जाव आहाकम्मंणं भुंजमाणे जाव अणुपरियट्टइ? गोयमा! आहाकम्मंणं भुंजमाणे आयाए धम्मं अइक्कमइ आयाए धम्मं अइक्कममाणे पुढविकायं णावकंखइ जाव तसकायं णावकंखइ, जेसिंपियणं जावाणं

भावार्थ [अनुभाग की अपेक्षा से] और प्रदेश बंध की अपेक्षा से क्या उपाचिने ! अहो गौतम ! आधाकर्मी आहार भोगनेवाला श्रमण निग्रंथ आयुष्य कर्म वर्जकर अन्य सात कर्म प्रकृतियों यदि शिथिल बंधनवाली होवे तो दृढ बंधनवाली बनावे, अल्प काल की स्थितिवाली को दीर्घ काल की स्थितिवाली बनावे, यावत् अनंत कालतक चतुर्गति रूप संसार में परिभ्रमण करे. अहो भगवन् ! किस कारन से आधाकर्मी भोगवनेवाला साधु सात कर्म प्रकृतियों को दृढ बंधनवाली बनावे यावत् चतुर्गतिक संसार में परिभ्रमण करे ? अहो गौतम ! आधाकर्मी आहार भोगनेवाला आत्मासे धर्म अतिक्रमता है, आत्मा से धर्म अतिक्रमते पृथ्वीकायादि षट्काया की अनुकम्पा रहित होता है और जिन जीवों के शरीर का

शब्दार्थ से० शेठ का जा० यावत् अ० अप्रत्याख्यान क्रिया क० कर से० वह के० कैसे भं० भगवन् गो० गौतम अ० अविरति प० प्रत्यय ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा बु० कहा जाता है से० शेठ त० दरिद्री जा० यावत् क० करे ॥ १६ ॥ अ० आधाकर्मी भुं० भोगवता स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ किं० क्या बं० बांधे प० करे चि० चिने उ० उपचिने गो० गौतम आ० आधाकर्मी भुं० भोगवता आ० आयुष्य व० वर्जकर स० सात क० कर्म प्रकृति सि० सिथिल बं० बंधन ब० बंधीहुइ ध० दृढ बं० बंधन ब० बंधीहुई प० करे जा० यावत्

सूत्र किवणस्सय, खत्तियस्सय समाचेव अपच्चक्खाण किरिया कज्जइ? हंता गोयमा! सेट्ठियस्स जाव अपच्चक्खाण किरिया कज्जइ। से केणट्ठेणं भंते? गोयमा! अविरइं पडुच्च, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ सेट्ठिस्सय तणु जाव कज्जइ ॥ १६ ॥ आहाकम्मंणं भुंजमाणे समणे निग्गंथे किं बंधइ, किंपकरेइ, किंचिणाइ, किंउवचिणाइ? गोयमा! आहाकम्मं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ सिढिलबंधण

भावार्थ अविरति प्रत्ययिक सब को एक सरिखी क्रिया लगती है. क्यों की इच्छा सब को एक सरिखी है; और उस की निवृत्ति किसी को नहीं हुइ है इसलिये अहो गौतम! ऐसा कहा गया है कि श्रेष्ठी यावत् क्षत्रिय को एक सरिखी अप्रत्याख्यान क्रिया लगती है ॥ १६ ॥ अहो भगवन्! आधाकर्मी आहार भोगनेवाला साधु निर्ग्रंथ क्या बांधे, [प्रकृति की अपेक्षा से] क्या करे, [स्थिति की अपेक्षा से] क्या चिने

शब्दार्थ सि॰शिथिल बं॰बंधन ब॰बंधीहुइ प॰करे ज॰जैसे सं॰संवृति ण॰ विशेष आ॰ आयुष्य क॰ कर्म सि॰ कदाचित् बं॰ बांधे सिं॰ कदाचित् नो॰ नहीं बं॰ बांधे से॰ शेष त॰ तैसे जा॰ यावत् वी॰ तीरे से॰ वह के॰ कैसे जा॰ यावत् वी॰ तीरे गो॰ गौतम फा॰ प्रासुक ए॰ शुद्ध भुं॰ भोगवता स॰ श्रमण नि॰ निग्रंथ आ॰ आत्मा से ध॰ धर्म ना॰ अतिक्रमे नहीं आ॰ आत्मा से ध॰ धर्म अ॰ नहीं अ॰ अतिक्रमनेसे से पु॰ पृथ्वी काया की अ॰ अनुकंपाकरे जा॰ यावत् त॰ त्रसकाया की अ॰ अनुकंपाकरे जे॰ जिस जी॰

सूत्र ओ पकरेइ जहा से संवुडेणं णवरं आउयंचणं कम्मं सि बंधइ सिय नो वंधइ सेसं तहेव जाव वीईवयइ । सेकेणट्ठेणं जाव वीईवयइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं भुंजमाणे समणे निग्गंथे आयाए धम्मं नाइक्कमइ, आयाए धम्मं अणइक्कममाणे पुढविकायं

भावार्थ छोडकर अन्यसात कर्मों यदि दृढ बंधनवाले होवे तो शिथिल बंधनवाले बनावे और आयुष्य कर्म क्वचित् बांधे क्वचित् बांधे नहीं. उस में यदि आयुष्य कर्म का बंध करे तो वैमानिक देवता होवे और आयुष्य का बंध नहीं करे तो मुक्तिगामी जीव होवे. अहो भगवन् ! ऐसा किस तरह से होता है ? अहो गौतम ! प्रासुक एषणिक आहार भोगनेवाला आत्मधर्म का उल्लंघन नहीं करता है इस तरह उल्लंघन नहीं करता हुवा पृथ्वीकायादि षट्कायाकी अनुकम्पावाला होता है यावत् जिन जीवों के शरीर का आहार करता है, उन जीवों की भी अनुकम्पावाला होता है. इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है कि प्रासुक एषणिक

शब्दार्थ अनुकंपाकरे जे० जिन जी० जीव के श० शरीर का आहार आ० करे ते० उन जी० जीवों की ण०नहीं अ० अनुकंपाकरे से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है आ० आधाकर्मी भुं० भोगवता आ० आयुष्य व० वर्जकर स० सात क० कर्म प्रकृति जा० यावत् अ० परिभ्रमण करे ॥ १७ ॥ फा०प्रासुक ए०शुद्ध भं० भगवन् भुं०भोगवता किं०क्या बं०बांधे जा० यावत् उ०उपचिने गो० गौतम फा० प्रासुक भुं० भोगवता आ० आयुष्य वर्ज कर स० सात क० कर्म प्रकृति ध० दृढ बं० बंधन ब० बंधी हुइ

सूत्र सरीराइं आहारमाहारेइ तेविजीवे नावकंखइ, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, आहाकम्मंणं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ जाव अणुपरियट्टइ॥ १७॥फासुएसणिज्जं भंते ! भुंजमाणे किंबंधइ ? जाव उवचिणाइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं भुंजमाणे आउय वज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ धणिय बंधन बद्धाओ सिढिल बंधण बद्धा

भावार्थ वह आहार करता है उन जीवों की भी अनुकम्पा रहित होता है. इस लिये अहो गौतम ! आधाकर्मी आहार भोगनेवाला आयुष्य कर्म छोडकर अन्य सात कर्मों का दृढ बंधन करता है यावत् चतुर्गतिक संसार में परिभ्रमण करता है ॥ १७ ॥ प्रासुक एषणिक वस्तु भोगनेवाला श्रमण निर्ग्रंथ किस का बंध करे यावत् क्या उपचिने ? अहो गौतम ! प्रासुक एषणिक वस्तु भोगनेवाला श्रमण निर्ग्रंथ आयुष्य कर्म

शब्दार्थ सि॰शिथिल बं॰बंधन ब॰बंधीहुइ प॰करे ज॰जैसे सं॰संवृति ण॰ विशेष आ॰ आयुष्य क॰ कर्म सि॰ कदाचित् बं॰ बांधे सि॰ कदाचित् नो॰ नहीं बं॰ बांधे से॰ शेष त॰ तैसे जा॰ यावत् वी॰ तीरे से॰ वह के॰ केसे जा॰ यावत् वी॰ तीरे गो॰ गौतम फा॰ प्रासुक ए॰ शुद्ध भुं॰ भोगनता स॰ श्रमण नि॰ निर्ग्रंथ आ॰ आत्मा से ध॰ धर्म ना॰ अतिक्रमे नहीं आ॰ आत्मा से ध॰ धर्म अ॰ नहीं अ॰ अतिक्रमनेसे से पु॰ पृथ्वी काया की अ॰ अनुकंपाकरे जा॰ यावत् त॰ त्रसकाया की अ॰ अनुकंपाकरे ज॰ जिस जी॰

सूत्र ओ पकरेइ जहा से संवुडेणं णवरं आउयंचणं कम्मं सि बंधइ सिय नो बंधइ सेसं तहेव जाव वीईवयइ । सेकेणट्ठेणं जाव वीईवयइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं भुंजमाणे समणे निग्गंथे आयाए धम्मं नाइक्कमइ, आयाए धम्मं अणइक्कममाणे पुढविकायं

भावार्थ छोडकर अन्यसात कर्मों यदि दृढ बंधनवाले होवे तो शिथिल बंधनवाले बनावे और आयुष्य कर्म क्वचित् बांधे क्वचित् बांधे नहीं. उस में यदि आयुष्य कर्म का बंध करे तो वैमानिक देवता होवे और आयुष्य का बंध नहीं करे तो मुक्तिगामी जीव होवे. अहो भगवन् ! ऐसा किस तरह से होता है ? अहो गौतम ! प्रासुक एषणिक आहार भोगनेवाला आत्मधर्म का उल्लंघन नहीं करता है इस तरह उल्लंघन नहीं करता हुवा पृथ्वीकायादि षट्कायाकी अनुकम्पावाला होता है यावत् जिन जीवों के शरीर का आहार करता है, उन जीवों की भी अनुकम्पावाला होता है. इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है कि प्रासुक एषणिक

शब्दार्थ — जीव के स० शरीर का आ० आहार करे ते० उन जी० जीवों को अ० अनुकंपाकरे से० वह ते० इसलिये जा० यावत् वी० तीरे ॥ १८ ॥ से० वह भं० भगवन् अ० अस्थिर प० परिवर्तन होवे नो० नहीं थि० स्थिर प० परिवर्तन होवे अ० अस्थिर भ० भेदावे नो० नहीं थि० स्थिर भ० भेदावे सा० शाश्वत वा०

सूत्र — अवकंखइ जाव तसकायं अवकंखइ, जेसिंपियणं जीवाणं सरीराइं आहारेइ तेवि जीवे अवकंखइ, से तेणट्ठेणं जाव वीईवयइ ॥ १८ ॥ सेणूणं भंते ! अथिरे पलोट्टइ नोथिरे पलोट्टइ, अथिरे भज्जइ नो थिरे भज्जइ, सासए बालए बालियत्तं

भावार्थ — आहार भोगनेवाला सात कर्मका शिथिल बंधन करता है और आयुष्य कर्म क्वचित् बांधता है व क्वचित् नहीं बांधता है यावत संसार का व्यतिक्रम करता है ॥ १८ ॥ इस में संसार का उल्लंघन कहा वह संसार का अस्थिरपना से होवे इस लिये स्थिर अस्थिर का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! क्या अस्थिर पदार्थ पलटते हैं और स्थिर नहीं पलटते है ? अस्थिर का भेद होता है और स्थिर का भेद नहीं होता है ? बालक शाश्वत, बालक पना अशाश्वत, पंडित शाश्वत व पंडितपना क्या अशाश्वत है ? हां गौतम ! अस्थिर द्रव्य जो लोहादि उनका परावर्तन होता है, (आध्यात्म चिन्तवन में) अस्थिर कर्म जीव प्रदेश से समय २ में चले. स्थिर सो पत्थारादि चले नहीं आध्यात्म चिन्ता में जीव का उपयोग स्थिर तृणादि

शब्दार्थ बालक बा० बालपना अ० अशाश्वत सा० शाश्वत पं० पंडित पं० पंडितपना अ० अशाश्वत हं० हां गो० गौतम अ० अस्थिर प० परिवर्तन होवे जा० यावत् पं० पंडितपना अ० अशाश्वत स० वह ए० ऐसा भं० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १ ॥ ९ ॥ + ×

सूत्र असासयं सासए पंडिए पंडियत्तं असासयं ? हंता गोयमा ! अथिरे पलोट्टइ जाव पंडियत्तं असासयं सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ पढमेसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ ९ ॥ * * *

भावार्थ अस्थिर भेद्य स्वभाव वाले हैं आध्यात्म चिन्ता में अस्थिर कर्म भेदावे, लोहकी शलाका अभेद्य स्वभाव वाली है और शाश्वतपना से जीव के टुकडे होवे नहीं. व्यवहार से बालक शाश्वत है और निश्चय से जीव शाश्वत, व्यवहार से बालक भाव अशाश्वत निश्चय से असंयत भाव अशाश्वत, निश्चय से पंडित तत्त्व के जान-शाश्वत, व्यवहार से संयती जीव शाश्वत. व्यवहार से पंडितपना अशाश्वत और निश्चय से संयत भाव अशाश्वत होवे. अहो भगवन् ! आपने कहा वह सब सत्य है अन्यथा नहीं है ऐसा कहकर वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे. यह पहिला शतक का नववां उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ १ ॥ ९ ॥ * * *

शब्दार्थ

अ० अन्यतीर्थिक भं० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प० प्ररूपते हैं च० चलते को अ० नहीं चला जा० यावत् नि० निर्जरते को अ० नहीं निर्जरा दो० दो प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित न० नहीं सा० मीले क० कैसे दो० दो प० परमाणु पुद्गल को न० नहीं है सि० स्निग्धपना त० इसलिये दो० दो प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित न० नहीं सा० मीले ति० तीन प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित सा० मीले क० कैसे ति० तीन प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित मा० मीले ति० तीन प० परमाणु पुद्गल

सूत्र

अण्णउत्थियाणं भंते ! एव माइक्खंति जाव परूवंति एवं खलु चलमाणे अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे अनिज्जिण्णे दो परमाणु पोग्गला एगयओ न साहणंति, कम्हा दो, परमाणु पोग्गलाणं णत्थि सिणेहकाए तम्हा दो परमाणु पोग्गला एगयओ न साहणंति ॥ तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति; कम्हा तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ

भावार्थ

नववे उद्देशे में अस्थिर कर्म का विषय कहा. उस में कुतीर्थिक प्रवर्तते हैं सो आगे बतलाते हैं. कितनेक अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि जो कर्म जीव प्रदेश से चलने लगे उसे चले कहना नहीं यावत् निर्जरने लगे उसे निर्जरे कहना नहीं; क्यों की वर्तमान काल को अतीत काल नहीं कह सकते हैं; परंतु जो संपूर्ण पुद्गल चलित हुवे होवे तब चले और निर्जरित हुवे होवे तब निर्जरे कहना. और वे ऐसा कहते हैं कि दो परमाणु पुद्गल एकत्रित स्कन्धपने मीले नहीं क्यों कि मीलने में जो स्निग्धपने का

शब्दार्थ को अ० है सि० स्निग्धपना त० इसलिये ति० तीन प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित सा० मीले ते० वे भि० भेदाते दु० दोप्रकार से ति० तीन प्रकार से क० कर दु० दोप्रकार से कि० करते ए० एक तरफ दि० देढ प० परमाणु पुद्गल भ० होवे ए० एक तरफ दि० देढ प० परमाणु पुद्गल भ० होवे ति० तीन प्रकार से क०करते ति०तीन प०परमाणु पुद्गल ह०होवे ए०ऐसे जा०यावत् च० चार पं० पांच प०परमाणु पुद्गल ए०एक बाजु से सा०मीले ए०एक बाजुमे मा०मीलकर दु०दुःखपने क० करे दु०दुःख सा०शाश्वत स०

सूत्र साहणंति, तिण्णि परमाणु पोग्गलाणं अत्थि सिणेह काए, तम्हा तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति, ते भिजमाणा दुहावि तिहावि कज्जंति. दुहा किज्जमाणा एगयओ दिवड्ढे परमाणु पोग्गले भवइ, एगयओ दिवड्ढे परमाणु पोग्गले भवइ, तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणु पोग्गला हवंति एवं जाव चत्तारि पंच परमाणु

भावार्थ गुण है वह उन परमाणु पुद्गलों में नहीं है. परंतु तीन परमाणु पुद्गल मीलकर स्कंधरूप बनजाते हैं क्यों की इसमें स्निग्धता रही हुइ है. उस तीन परमाणु पुद्गल का स्कन्ध को भेदने में आवेतो इस के दो अथवा तीन विभाग होसकते हैं. जब दो विभाग किया जाता है तब देढ २ परमाणु का एक २ विभाग होता है और जब तीन विभाग किया जाता है तब एक २ परमाणु का तीन विभाग होता है. जैसे दो परमाणु का स्कंध होता है वैसे ही तीन, चार पांच परमाणुओं का स्कंध बनता है वे स्कंध रूप बनकर

शब्दार्थ सदाकाल उ० चयपामे अ० अपचयपामे पु० पहिले भा० भाषा भा० भाषा भा० बोलाती हुइ भा० भाषा अ० अभाषा भा० भाषा समय वि० व्यतीत हुवा भा० बोली हुइ भा० भाषा अ० अभाषा भा० भाषा समय वि० व्यतीत हुवा भा० बोलीहुइ भा० भाषा किं० क्या भा० भाषक को भा० भाषा अ० अभाषक भा० भाषा णो० नहीं सा० वह भा० भाषक को भा० भाषा पु० पाहिली कि० क्रिया दु० दुःख क० करते कि० क्रिया अ० अदुःख कि० क्रिया स० समय वी० व्यतीत हुवे क० कीहुइ कि० क्रिया दु० दुःख

सूत्र पोग्गला एगयओ साहणंति, एगयओ साहणित्ता दुक्खत्ताए कज्जंति, दुक्खेवियणं सेसासए सयासमियं उवचिज्जइयं अवचिज्जइयं, पुव्विं भासा भासा, भासिज्जमाणी भासाअभासा, भासासमयंवितिक्कंतंचणं भासिया भासा, जा सा पुव्वं भासा भासाभासिज्जमाणी भासा अभासा, भासा समयवितिक्कंतंचणं भासियाभासा सा किं भासओ

भावार्थ दुःख रूप (कर्म पने) परिणमते हैं. कर्म अनादि होने से वह दुःख भी शाश्वत होता है. वह सदैव सम्यक् प्रकार से चय उपचय-हानि वृद्धि को प्राप्त होता रहता है. और भी वे अन्य तीर्थिक कहते हैं कि पहिले बोलाइ हुई प्रथम की भाषा को भाषा कहना; परंतु वर्तमान में बोलाती हुई भाषा को भाषा कहना नहीं, भाषा का समय आतिक्रान्त हुवे पीछे भाषा को भाषा कहना. और जब बोलाइ हुई प्रथम की भाषा को भाषा कहना, बोलाती हुई भाषा को अभाषा कहना, और भाषा समय व्यतीत हुए पीछे

शब्दार्थ सा० वह पु० पहिली कि० क्रिया दु० दुःख क० करते कि० क्रिया अ० अदुःख कि० क्रिया स० समय वी० व्यतीतहुवे क० कीहुइ कि० क्रिया दु० दुःख क० करण दु० दुःख अ० अकरण दु० दुःख० णो० नहीं सा० वह क० करण दु० दुःख व० कहना अ० नहीं किया दु० दुःख अ० नहीं स्पर्शा अ० नहीं करते पा० प्राण भू० भूत

सूत्र भासा, अभासओ? भासा अभासओणं साभासा णो खलुसा भासओ भासा। पुव्विं किरिया दुक्खा, कज्जमाणी किरिया अदुक्खा, किरिया समयवीतिकंतं चणं कडा किरिया दुक्खा, जा सा पुव्विं किरिया दुक्खा, कज्जमाणा किरिया अदुक्खा किरिया समय वीइक्कंतंचणं कडा किरिया दुक्खा। सा किं करणओ दुक्खा अकरणओ दुक्खा ? अकरणओणं सा दुक्खा, णो खलु सा करणओ दुक्खा, सेव वत्तव्वं सिया, आकिचं दुक्खं, अफुसं-

भावार्थ बोलाइ जो भाषा उसे भाषा कहना, तब क्या वह भाषा भाषकको होती है या अभाषक को होती है ? तब अन्यतीर्थिक ऐसा उत्तर देते हैं कि भाषक को भाषा नहीं; परंतु अभाषक को भाषा होती है और भी अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं कि जहां तक कायिकादि क्रिया नहीं की जावे वहांतक ही वह क्रिया दुःख के हेतु भूत होती है, और क्रिया करने लगे तब वह दुःख के हेतु भूत नहीं होती है, क्रिया समय व्यतीत हुवे पीछे कराइ हुइ क्रिया दुःख के हेतु भूत है, और जो पहिले की क्रिया दुःख के हेतु भूत है, कराती हुई क्रिया दुःख के हेतु भूत नहीं है और क्रिया समय व्यतीत हुए पीछे कराइ क्रिया दुःख के हेतु

शब्दार्थ सदाकाल उ० चयपामे अ० अपचयपामे पु० पहिले भा० भाषा भा० भाषा भा० बोलाती हुइ भा० भाषा अ० अभाषा भा० भाषा समय वि० व्यतीत हुवा भा० बोली हुइ भा० भाषा अ० अभाषा भा० भाषा समय वि० व्यतीत हुवा भा० बोलीहुइ भा० भाषा किं० क्या भा० भाषक को भा० भाषा अ० अभाषक भा० भाषा णो० नहीं सा० वह भा० भाषक को भा० भाषा पु० पहिली कि० क्रिया दु० दुःख क० करते कि० क्रिया अ० अदुःख कि० क्रिया स० समय वी० व्यतीत हुवे क० कीहुइ कि० क्रिया दु० दुःख

सूत्र पोग्गला एगयओ साहणंति, एगयओ साहणित्ता दुक्खत्ताए कज्जंति, दुक्खेवियणं सेसासए सयासमियं उवचिज्जइयं अवचिज्जइयं, पुव्विं भासा भासा, भासिज्जमाणी भासाअभासा, भासासमयंवितिक्कंतंचणं भासिया भासा, जा सा पुव्वं भासा भासाभासिज्जमाणी भासा अभासा, भासा समयवितिक्कंतंचणं भासियाभासा सा किं भासओ

भावार्थ दुःख रूप (कर्म पने) परिणमते हैं. कर्म अनादि होने से वह दुःख भी शाश्वत होता है. वह सदैव सम्यक् प्रकार से चय उपचय—हानि वृद्धि को प्राप्त होता रहता है. और भी वे अन्य तीर्थिक कहते हैं कि पहिले बोलाइ हुई प्रथम की भाषा को भाषा कहना; परंतु वर्तमान में बोलाती हुई भाषा को भाषा कहना नहीं, भाषा का समय अतिक्रान्त हुवे पीछे भाषा को भाषा कहना. और जब बोलाइ हुई प्रथम की भाषा को भाषा कहना, बोलाती हुई भाषा को अभाषा कहना, और भाषा समय व्यतीत हुए पीछे

शब्दार्थ सा० वह पु० पाहिली कि० क्रिया दु० दुःख क० करते कि० क्रिया अ० अदुःख कि० क्रिया स० समय वी० व्यतीतहुवे क० कीहुइ कि० क्रिया दु० दुःख क० करण दु० दुःख अ० अकरण दु० दुःख० णो० नहीं सा० वह क० करण दु० दुःख व० कहना अ० नहीं किया दु० दुःख अ० नहीं स्पर्शा अ० नहीं करते पा० प्राण भू० भूत

सूत्र भासा, अभासओ? भासा अभासओणं साभासा णो खलुसा भासओ भासा। पुव्विं किरिया दुक्खा, कज्जमाणी किरिया अदुक्खा, किरिया समयवीतिकंतं चणं कडा किरिया दुक्खा, जा सा पुव्विं किरिया दुक्खा, कज्जमाणा किरिया अदुक्खा किरिया समय वीइकंतंचणं कडा किरिया दुक्खा। सा किं करणओ दुक्खा अकरणओ दुक्खा ? अकरणओणं सा दुक्खा, णो खलु सा करणओ दुक्खा, सेव वत्तव्वं सिया, आकिच्चं दुक्खं, अफुसं-

भावार्थ बोलाइ जो भाषा उसे भाषा कहना, तब क्या वह भाषा भाषकको होती है या अभाषक को होवी है ? तब अन्यतीर्थिक ऐसा उत्तर देते हैं कि भाषक को भाषा नहीं; परंतु अभाषक को भाषा होती है और भी अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं कि जहां तक कायिकादि क्रिया नहीं की जावे वहांतक ही वह क्रिया दुःख के हेतु भूत होती है, और क्रिया करने लगे तब वह दुःख के हेतु भूत नहीं होती है, क्रिया समय व्यतीत हुवे पीछे कराइ हुइ क्रिया दुःख के हेतु भूत है, और जो पहिले की क्रिया दुःख के हेतु भूत है, कराती हुई क्रिया दुःख के हेतु भूत नहीं है और क्रिया समय व्यतीत हुए पीछे कराइ क्रिया दुःख के हेतु

शब्दार्थ जी० जीवस० सत्व वे० वेदना वे० वेदते हैं व० कहना से० वह क० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा गो० गौतम ज० जो अ० अन्यतीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत वे० वेदना वे० वेदते हैं व० कहना ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० मैं गो० गौतम ए० ऐसा आ०

सूत्र दुक्खं, अकज्जमाणकडं दुक्खं अकट्टु अकट्टु पाणभूयजीवसत्ता वेदणं वेदंतित्ति वत्तव्वं सिया ॥ से कहमेयं भंते एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव वेदणं वेदंति वत्तव्वंसिया, जे ते एवमाहंसु मिच्छंते एवं आहंसु. अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि ४, एवं खलु चलमाणे चालिए जाव निज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे दो-परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति, कम्हा दो परमाणु पोग्गला एगयओ

भावार्थ भूत है वह क्रिया क्या करण आश्री दुःख के हेतु भूत है या अकरण आश्री दुःख के हेतु भूत है ? वह अकरण आश्री दुःख के हेतु भूत है परंतु करण आश्री दुःख के हेतु भूत नहीं है. ऐसे ही नहीं किया हुवा दुःख, नहीं स्पर्शा हुवा दुःख, व अक्रियमाण किया हुवा दुःख किये विना प्राण भूत, जीव व सत्व वेदना वेदते हैं. अहो भगवन् ! ऐसा जो अन्य तीर्थिक कहते हैं वह किस तरह से है ? अहो गौतम ! जो अन्य तीर्थिक उक्त बातों को कहते हैं वे मिथ्या बोलते हैं अर्थात् उन का कथन मिथ्या है. परंतु अहो गौतम ! मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि चलने लगे कर्म पुद्गलों को चले कहना, यावत्

पदार्थ कहता हूं च० चलते को च० चला जा० यावत् नि० निर्जरते को नि० निर्जरा दो० दो प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित

मूत्र साहणंति? दोण्हं परमाणु पोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए तम्हा दो परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति ते भिज्जमाणा दुहा कज्जंति, दुहा कज्जमाणा एगयओवि परमाणु पोग्गले एगयओ परमाणु पोग्गले भवइ, तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति, कम्हा तिण्णि परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति? तिण्हं परमाणु पोग्गलाणं अत्थि सिणेह काए तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति, ते भिज्जमाणा दुहावि तिहावि कज्जंति, दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणु पोग्गले एगयओ दु पदेसिए खंधे भवइ, तिहा

भावार्थ निर्जरने लगे को निर्जरे कहना. और भी दो परमाणु पुद्गल एकत्रित होकर स्कंध रूप बनजाते हैं क्यों की उस में स्नेह का गुण रहा हुवा है. एक परमाणु में शीत, ऊष्ण, स्निग्ध व रुक्ष ऐसे चार स्पर्श में से अविरोधी दो स्पर्श पाते हैं. इसलिये दो परमाणु में स्निग्धता होने से एकत्रित मीलकर स्कन्ध रूप बन जाते हैं. वैसे ही दो परमाणु को पृथक् करने से उस के एक २ परमाणु के दो विभाग होसकते हैं, वैसे ही तीन परमाणु मीलकर भी स्निग्धता के कारण से स्कन्ध होता है. उस का यदि भेद किया जावे तो दो व तीन होसकते हैं. दो में एक परमाणु का एक विभाग और द्विप्रदेशी स्कन्ध का दूसरा विभाग, तीन विभाग एक २ परमाणु पृथक् २ होजाने से होते हैं. ऐसे ही तीन चार पांच आदि परमाणु राशिका

शब्दार्थ सा० मीलते हैं क० कैसे दो० दो प० परमाणु पुद्गल ए० एकत्रित सा० मीलते हैं दो० दो प० परमाणु

सूत्र कज्जमाणा तिण्णि परमाणु पोग्गला भवंति एवं जाव चत्तारि पंचपरमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति साहणित्ता खंधत्ताए कज्जंति, खंधेवियणं से असासए सयासमियं उवाचिज्जइय अवाचिज्जइय ॥ पुव्विं भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा, भासा समय वीतिक्कंतंचणं भासिया भासा अभासा. जासा पुव्विं भासा अभासा भासिज्जमाणी भासा भासा,भासा समय वीतिक्कंतंचणं भासिया भासा अभासा। सा किं भासओ भासा अभासओ भासा ? भासओणं भासा सा, णो खलु सा अभासओ भासा ।

भावार्थ स्कन्ध जानना. वह स्कन्ध अशाश्वत, सर्वदा सम्यक् प्रकार से चय उपचय (हानि वृद्धि) को पाता है. अब तीसरा प्रश्न का उत्तर देते हैं. पहिले बोलाई हुई प्रथम की भाषा तो अभाषा होती है, बोलाती हुइ भाषा को ही भाषा कह सकते हैं. क्यों की उस समय शब्द अर्थ की उत्पत्ति होती है. भाषा समय व्यतीत हुवे पीछे भाषा अभाषा होजाती है, अब जो पहिले बोलाइ हुइ भाषा भाषा नहीं है, बोलाती हुइ भाषा भाषा है व भाषा समय व्यतीत हुवे पीछे भाषा को अभाषा कही जाती है ऐसा कहागया है तो क्या वह भाषा भाषक को होती है या अभाषक को होती है ? वह भाषा भाषक को ही होती है परंतु अभाषक को नहीं होती है. अब चौथा प्रश्न का उत्तर देते हैं. पहिले की हुई क्रिया दुःख

शब्दार्थ पुद्गल में अ० है० स्निग्धपना ॥ १ ॥ अ० अन्यतीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् ए० एक जी० जीव ए० एक स० समय में दो० दो क्रिया प० करे इ० ईर्यापथिक सं० संपरायिकी जं० जिस स० समय में इ० ईर्यापथिक प० करे तं० उस स० समय में सं० संपरायिकी प० करे जं० जिस स० समय में सं० संपरायिकी प० करे तं० उस स० समय में इ० ईर्यापथिक प० करे इ० ईर्यापथिक प० करते सं० संपरायिकी प० परे

सूत्र पुव्विं किरिया अदुक्खा जहा भासा तहा भाणियव्वा, किरियावि जाव करणओणं सा दुक्खा नो खलु सा अकरणओ दुक्खा, सेवं वत्तव्वं सिया, किच्चं दुक्खं, फुसं दुक्खं; कज्जमाणकडं दुक्खं कट्टु कट्टु पाणभूयजीवसत्ता वेदणं वेदंति त्ति वत्तव्वं सिया ॥ १ ॥ अण्णउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति जाव एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो किरियाओ पकरेइ तंजहा—इरियावहियंच, संपराइयंच, जं समयं इरियावहियं पकरेइ

भावार्थ देनेवाली होती है शेष सब अधिकार भाषा जैसे कहना यावत् करण से दुःख परंतु अकरण से दुःख नहीं है. किया हुवा दुःख है, स्पर्शा हुवा दुःख है. करने लगा किया वही दुःख करके प्राण भूत जीव व सत्व वेदना वेदते हैं यह चारों प्रश्नोंका उत्तर हुवा ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं कि एक समय में ईर्यापथिक व सांपरायिक ऐसी दो क्रियाओं जीव करता है, जिस समय में जीव ईर्यापथिक क्रिया करता है उस समय में ही सांपरायिक क्रिया करता है और जिस समय में सांपरायिक

स० संपरायिकी प० करते इ० ईर्यापथिक प० करे ए० ऐसे ए० एक जीव ए० एक स० समय में दो० दा कि० क्रिया पं० करे तं० वह ज० जैसे इ० ईर्यापथिक सं० संपरायिकी. से० वह क० कैसे भं० भगवन् गो० गौतम ज० जो अ० अन्यतीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् जे० जो ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या तें० वे आ० कहते हैं अ० मैं पु० फीर गो० गौतम ए० ऐसा आ० करता हूं ए०

सूत्र

तंसमयं संपराइयं पकरेइ, जंसमयं संपराइयं पकरेइ तंसमयं इरियावहियं पकरेइ । इरियावहिय पकरणयाए संपराइयं पकरेइ, संपराइयं पकरणयाए इरियावहियं पकरेइ। एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो किरियाओ पकरेइ तंजहा—इरियावहियंच संपराइयच ॥ सेकहमेयं भंते एवं ? गोयमा ! जण्णंते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति तं चेव जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु ॥ अहं पुण गोयमा ! एव माइ-

भावार्थ

क्रिया करता है उस समय में ईर्यापथिक क्रिया करता है सांपरायिक करते क्रिया ईर्यापथिक क्रिया करता है और ईर्यापथिक क्रिया करते सांपरायिक क्रिया करता है इस तरह ईर्यापथिक व साम्परायिक ऐसी दोनों क्रियाओं जीव एक समय में करता है तब अहो भगवन् ! यह कथन किस प्रकार है ? अहो गौतम ! अन्य तीर्थिक जो इस प्रकार कहते है वह मिथ्या है अर्थात् उसका कथन मिथ्या है. मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि एक समय में जीव एक ही क्रिया करता है क्यों कि ईर्यापथिक क्रिया

शब्दार्थ एक जी० जीव ए० एक स० समय में ए० एक कि०क्रिया प०करे स०स्वसमय व० व्यक्तव्यता, ने०जानना जा० यावत् इ० ईर्यापथिक सं० संपरायिकी ॥ २ ॥ नि० नरकगति में भं० भगवन् के० कितना काल वि० विरह उ० उत्पन्न होने का प० प्ररूपा ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट बा० बारह मु० मुहूर्त ए०

सूत्र क्खामि ४ । एवं खलु एगे जीवे एगसमए एकं किरियं पकरेइ, ससमयवत्तव्वयाए नेयव्वं ॥ जाव इरियावहियं संपराइयंवा ॥ २ ॥ निरयगईणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एकं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहु-

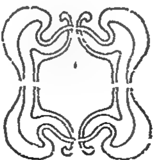
भावार्थ मात्र योग से होती है और सांपरायिक क्रिया योग व कषाय दोनों से होती है. जिस समय सांपरायिक क्रिया होती है उस समय ईर्यापथिक नहीं होती है. और जिस समय ईर्यापथिक होती है उस समय सांपरायिक नहीं होती है, वगैरह उक्त प्रकार से जिन शासन के कथनानुसार कहना. ॥ २ ॥ यहां क्रिया कही; क्रियावंत पुरुष की उत्पत्ति होती है इसलिये उत्पात विरहका प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! नरक में उत्पन्न होने का विरह कितना कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त. इस की सब वक्तव्यता पन्नवणाजी सूत्र के छट्ठे पद जैसे कहना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य व देवता में उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का विरह. इस प्रकार चवन का विरह जानना. एक समय में जघन्य एक, दो, तीन का उत्पन्न होना व चवना होता है उत्कृष्ट एक समय में संख्याते असंख्याते जानना. यों सब पन्नवणा सूत्र से जानना.

शब्दार्थ ऐसा व० चवने का प० पद भा० कहना नि० निर्विशेप स० वह ए० ऐसा भं० भगवन् जा० यावत् वि० विचरते हैं. ॥ १ ॥ १० ॥ × ×

सूत्र त्ता, एवं वक्कंती पयं भाणियव्वं निरवसेसं । सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ पढमसए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ १० ॥ पढमसयं सम्मत्तं. ॥१॥ *

भावार्थ अहो भगवन् ! जो आपने फरमाया वह वैसा ही है, अन्यथा नहीं है. ऐसा कह कर तप व संयम से आत्मा को भावते हुवे श्री गौतम स्वामी विचरने लगे. यह प्रथम शतक का दशवा उद्देशा समाप्त हुवा. और प्रथम शतक भी समाप्त हुवा ॥ १ ॥ १० ॥ १ ॥ + +







॥ द्वितीयं शतकम् ॥

शब्दार्थ उ० उश्वास खं० खंदक पु० पृथ्वी इं० इन्द्रिय अ० अन्यतीर्थिक भा० भाषा दे० देव च० चमर चंचा स० समय खे० क्षेत्र अ० अस्तिकाय वी० दूसरे शतक में ॥ * ॥ ते० उस काल तं० उस समय में

सूत्र ऊसासे खंदए विय । पुढविंदिय अणउत्थिभासाय ॥ देवाय चमरचंचा । समय खित्तत्थिकाय बीयसए ॥ १ ॥ * ॥ तेणं कालेणं, तेणं समएणं, रायगिहे नामं

भावार्थ प्रथम शतक के अंतमें जीवों का उत्पन्न होने का व चवन का विरह कहा. अब दूसरे शतक में उत्पन्न व चवन के मध्य का श्वासोश्वास का प्रश्न चलता है. इस शतक के सब मीलकर दश उद्देशे हैं. पहिले उद्देशे में उश्वास व खंदक का अधिकार है, दूसरे में पृथिवी का अधिकारहै, तीसरे में इन्द्रिय का अधिकार है, चौथे में अन्य तीर्थियों का अधिकार है, पांचवे में भाषा का अधिकार है, छठे में देव का अधिकार, सातवे में चमर चंचाका अधिकार, आठवे में समय क्षेत्र सो अढाइ द्वीप का अधिकार, नववे में क्षेत्राधिकार और दशवे में अस्तिकाया का स्वरूप ॥*॥ उस काल सो चौथे आरे में उस समय सो महावीर स्वामी विचरने के समय में राजगृही नामक नगर अत्यंत सुशोभित था. उस का वर्णन उववाइ सूत्र में जैसा चंपा नगरी का वर्णन किया है वैसा जानना. राजगृही के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवन्त

शब्दार्थ रा० राजगृह न० नगर हो० था व० वर्णनयुक्त सा० स्वामी स० पधारे प० परिषदा नि० निर्गता ध० धर्म क० कहा प० परिषदा प० प्रतिगता ॥ * ॥ ते० उसकाल ते० उस समय में जे० ज्येष्ठ अं० अंतेवासी जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसा व० बोले जे० जो बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय पं० पंचेन्द्रिय जी० जीव ए० उनका आ० श्वास पा० विशेष श्वास उ० उश्वास नि० निश्वास जा० जानते हैं पा० देखते हैं जे० जो पु० पृथ्वी काया जा० यावत् व० वनस्पति काया ए० एकेन्द्रिय जीव

सूत्र नगरे होत्था, वण्णओ सामीसमोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ॥ * ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे अंतेवासी जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी जे इमे भंते ! बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचेंदिया जीवा एएसिणं आणामंवा, पाणामंवा, उस्सासंवा, निस्सासंवा जाणामो, पासामो जे इमे पुढविकाइया

भावार्थ महावीर स्वामी सब परिवार सहित पधारे, यथोचित अनुज्ञा ग्रहण कर बगीचे में विराजित हुए, परिषदा वंदन को आई, और श्री भगवन्त से धर्म सुनकर पीछीगइ ॥÷॥ उस काल उस समय में भगवन्त श्री महावीर स्वामीके ज्येष्ठ अंतेवासी श्री गौतम स्वामी सेवा पर्युपासना करते ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय इन जीवों का श्वासोश्वास मैं जानता हूं यावत् देखता हूं अर्थात् त्रस जीव का श्वासोश्वास मैं जानता हूं व देखता हूं, परंतु पृथ्वीकायादिक जीव की आगमादि

शब्दार्थ — ए० उनका आ० श्वास पा० विशेष श्वास उ० उश्वास नि० निश्वास ण० नहीं जा० जानते हैं ण० नहीं पा० देखते हैं ए० वे भं० भगवन् जी० जीव आ० श्वासलेते हैं पा० बहुत श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते है हं० हां गो० गौतम ए० वे जी० जीव आ० श्वासलेते हैं पा० विशेष श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं कि० किसका ए० ये जी० जीव आ० श्वासलेते हैं पा० विशेष श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते है नि० निश्वासलेते हैं गो० गौतम द०-द्रव्य से अ० अनंत प० प्रदेश

सूत्र — जाव वणप्फइकाइया, एगिंदिया जीवा एएसिणं आणामंवा, पाणामंवा, उस्सासं वा, निस्सासंवा, ण जाणामो ण पासामो ॥ एएसिणं भंते ! जीवा आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा, निस्ससंतिवा ? हंता गोयमा ! एएविणं जीवा आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा । किण्णं भंते ! एते जीवा आणमंतिवा पाण-

भावार्थ — प्रमाण से प्रतीति है तथापि उन पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेउकायिक, वायुकायिक, व वनस्पति कायिक जीवों का श्वासोश्वास मैं नहीं जानसकता हूं नहीं देखसकता हूं. तो अहो भगवन् ! क्या वे जीव श्वासोश्वास लेते हैं ? हां गौतम ! वे जीवों भी श्वासो श्वास लेते हैं. अहो भगवन् ! वे किस प्रकार श्वासो श्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! द्रव्य से अनंत प्रदेशी अनंत पुद्गल का श्वासोश्वास लेते हैं क्षेत्र से असंख्यात प्रदेश को अवगाहकर रहनेवाले पुद्गलों का, कालसे एक समय यावत् असंख्यात

शब्दार्थ

रा० राजगृह न० नगर हो० था व० वर्णनयुक्त सा० स्वामी स० पधारे प० परिषदा नि० निर्गता ध० धर्म क० कहा प० परिषदा प० प्रतिगता ॥ ＊ ॥ ते० उसकाल ते० उस समय में जे० ज्येष्ट अं० अंतेवासी जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसा व० बोले जे० जो बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय पं० पंचेन्द्रिय जी० जीव ए० उनका आ० श्वास पा० विशेष श्वास उ० उश्वास नि० निश्वास जा० जानते हैं पा० देखते हैं जे० जो पु० पृथ्वी काया जा० यावत् व० वनस्पति काया ए० एकेन्द्रिय जीव

सूत्र

नगरे होत्था, वण्णओ सामीसमोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ॥ ＊ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं जेट्ठे अंतेवासी जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी जे इमे भंते ! बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचेंदिया जीवा एएसिणं आणामंवा, पाणामंवा, उस्सासंवा, निस्सासंवा जाणामो, पासामो जे इमे पुढविकाइया

भावार्थ

महावीर स्वामी सब परिवार सहित पधारे, यथोचित अनुज्ञा ग्रहण कर बगीचे में विराजित हुए, परिषदा वंदन को आई, और श्री भगवन्त से धर्म सुनकर पीछीगइ ॥÷॥ उस काल उस समय में भगवन्त श्री महावीर स्वामीके ज्येष्ट अंतेवासी श्री गौतम स्वामी सेवा पर्युपासना करते ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय इन जीवों का श्वासोश्वास मैं जानता हूं यावत् देखता हूं अर्थात् त्रस जीव का श्वासोश्वास मैं जानता हूं व देखता हूं, परंतु पृथ्वीकायादिक जीव की आगमादि

शब्दार्थ गमो ने० जानना जा० यावत् पं० पांचदिशि में कि० कैसे भं० भगवन् णे० नारकी आ० श्वासले पा० विशेष श्वासले उ० उश्वासले नि० निश्वासले तं० तैसे जा० यावत् छ० छदिशा में आ० श्वासले पा० बहुत श्वासले उ० उश्वासले नि० निश्वासले ए० एकेन्द्रिय जी० जीव वा० व्याघात नि० निर्व्याघात भा० कहना से० शेष नि० निश्चय छ० छदिशा में ॥ १ ॥ वा० वायुकाय भं० भगवन् वा० वायु आ० श्वासले पा० बहुत श्वासले उ० उश्वासले नि० निश्वासले हं० हां गो० गौतम वा० वायुकाय जा० यावत् नि०

सूत्र नेयव्वो जाव पंचदिसं ॥ किण्णं भंते ! णेरइया आणमंतिवा, पाणमंतिवा, उस्ससंतिवा, निस्ससंतिवा तं चेव जाव नियमा छद्दिसिं आणमंतिवा, पाणमंतिवा, उस्ससंति वा निस्ससंतिवा । जीवे एगिंदिया वाघाया निव्वाघाया भाणियव्वा सेसा नियमा छद्दिसिं ॥१॥ वाउयाएणं भंते ! वाउयाए चेव आणमंतिवा, पाणमंतिवा,

भावार्थ नरक के जीव कैसे पुद्गलों का श्वासोश्वास लेते हैं ? इस का सब अधिकार पहिले जैसे कहना यावत् निश्चय ही छ दिशिका श्वासोश्वास लेते हैं. एकेन्द्रिय जीव में व्याघात निर्व्याघात कहना. अन्य किसी दंडक में कहना नहीं. क्योंकी वे छ दिशिका श्वासोश्वास लेते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय श्वासोश्वास ग्रहण करे ? हां गौतम ! वायुकाय श्वासोश्वास लेता है. अहो भगवन् ! क्या वायुकाय के जीव अनेक

शब्दार्थ

द्रव्य खि० क्षेत्र से अ० असंख्यात प० प्रदेश अ० अवगाही का० काल से अ० अन्य ठि० स्थिति वाले भा० भाव से व० वर्णवाले गं० गंधवाले र० रसवाले फा० स्पर्श वाले आ०. श्वासलेते हैं पा० विशेष श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं जा० यदि भा० भाव से व० वर्ण वाले आ० श्वास-लेते हैं पा० विशेष श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं ना० तो किं० क्या ए० एक व० वर्ण वाले आ० श्वासलेते हैं पा० विशेष श्वासलेते हैं उ० उश्वासलेते हैं नि० निश्वासलेते हैं आ० आहार

सूत्र

मंतिवा उस्ससंतिवा, निस्ससंतिवा ? गोयमा ! दव्वओणं अणंत पएसियाइं दव्वाइं, खित्तओ असंखेज्ज पएसोगाढाइं, कालओ अण्णयरठिईयाइं, भावओ, वण्णमंताइ, गंधमंताइं, रसमंताइं, फासमंताइं आणमंतिवा, पाणमंतिवा, उस्ससंतिवा, निस्ससंतिवा. जाइं भावओ वण्णमंताइं आणमंतिवा पणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा, ताइं किं एग वण्णाइंआणमंतिवा, पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा, आहारगमो

भावार्थ

समय की स्थिति वाले पुद्गल और भाव से वर्णवाले, गंधवाले. रसवाले व स्पर्श वाले द्रव्य का श्वासोश्वास लेते हैं. अहो भगवन् ! जब भाव से वर्ण सहित पुद्गल श्वासोश्वासपने ग्रहण करते हैं तो क्या वह एक वर्ण वाले पुद्गल का श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! इनका सब अधिकार पन्नवणा सूत्र के अट्ठावीस में पद में कहा है वैसा व्याघात आश्री तीन चार पांच व छ दिशा के पुद्गल ग्रहण करे वहांतक कहना. अहो भगवन्

शब्दार्थ नि० निकले से० वह के० कैसे ए० ऐसा वु० कहा जाता है गो० गौतम वा० वायुकायाको च० चार स० शरीर प० प्ररूपे उ० उदारिक वे० वैक्रेय ते० तेजस क० कार्माण उ० उदारिक वे० वैक्रेय वि० छोडकर ते० तेजस क० कार्माण सहित नि० निकले से० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहाजाता है ॥ २ ॥ म० प्रासुक भोजन करने वाला नि० निर्ग्रंथ नो० नहीं नि० रुंधा हुवा भ० भव नो०

सूत्र एवं वुच्चइ सियससरीरी निक्खमइ सियअसरीरि निक्खमइ ? गोयमा ! वाउकायस्सणं चत्तारि सरीरया प० तं० उरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए । उरालिय वेउव्वियाइं विप्पजहाय, तेय कम्मएहिं निक्खमइ. सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ सियससरीरी, सिय असरीरी निक्खमइ ॥ २ ॥ मडाईणं भंते नियंठे नो निरुद्ध भवे, नो

भावार्थ नीकलते हैं और कथंचित् शरीर रहित नीकलते हैं. अहो भगवन् ! वायुकाय के जीव किस तरह से कथंचित् सशरीरी व कथंचित् अशरीरी नीकलते हैं ? अहो गौतम ! वायुकाय को उदारिक, वैक्रेय, तेजस और कार्माण ऐसे चार शरीर होते हैं. उस में से उदारिक वैक्रेय को छोडकर नीकले इस लिये अशरीरी और तेजस, कार्माण शरीर सहित नीकले इसलिये सशरीरी, इसी से अहो गौतम ! वायुकाय के जीव कथंचित् शरीर सहित नीकले और कथंचित् शरीर रहित नीकले ॥ २ ॥ अहो भगवन् !

शब्दार्थ निश्वासले वा० वायुकाय वा० वायु कायमें अ० अनेक स० शतसहस्र वार उ० मरे उ० मरकर त० तहां भु० वारंवार प० उत्पन्नहोवे हं० हां गो० गौतम जा० यावत् प० उत्पन्नहोवे से० वह भं० भगवन् किं० क्या पु० स्पर्शी उ० मरे अ०नहीं स्पर्शी उ० मरे गो० गौतम पु० स्पर्शी उ० मरे नो० नहीं अ० अस्पर्शी उ० मरे सें० वह भं० भगवन् किं० क्या स० सशरीरी नि० निकले अ० अशरीरी नि० निकले गो० गौतम सि० कदाचित स० सशरीरी नि० निकले सि० कदाचित् अ० अशरीरी

सूत्र उस्ससंतिवा, निस्ससंतिवा ? हंता गोयमा ! वाउयाएणं जाव निस्ससंति वा ॥ वाउयाएणं भंते ! वाउयाएचेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइ उद्दाइत्ता, तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाइ ? हंता गोयमा ! जाव पच्चायाइ. से भंते!किंपुट्ठे उद्दाइ अपुट्ठे उद्दाइ?गोयमा! पुट्ठे उद्दाइ, नो अपुट्ठे उद्दाइ। से भंते ! किं ससरीरी निक्खमइ, असरीरी निक्खमइ? गोयमा ! सियससरीरी निक्खमइ, सियअसरीरी निक्खमइ । से केणट्ठेणं भंते !

भावार्थ लक्षवार मरकर वहांही वारंवार उत्पन्न होते हैं ? हां गौतम वायुकायके जीव अनेक वार मरकर वहांही वारंवार उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन् ! वायुकाय के जीव क्या स्पर्श कर मरते हैं या विना स्पर्शे मरते हैं ? अहो गौतम ! सोपक्रम की अपेक्षा से स्पर्शा हुवा मरे .परंतु नहीं स्पर्शा हुवा मरे नहीं. अहो भगवन् ! क्या वे स्वकलेवर से शरीर सहित नीकलते हैं या शरीर रहित नीकलते हैं ? अहो गौतम! कथंचित् शरीर सहित

शब्दार्थ स० सत्त्व वि० विज्ञ वे० वेदक व० कहना पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्व वि० विज्ञ वे० वेदक व० कहना से० वह के० कैसे पा० प्राण जा० यावत् वे० वेदक व० कहना ज० जिसलिये आ० श्वासलेता है पा० विशेष श्वासलेता है उ० उश्वासलेता है नि० निश्वासलेता है त० इसलिये पा० प्राण व० कहना ज० जिसलिये भू० हुवा भ० होता है भ० होगा त० इसलिये भू० भूत व० कहना ज० जिसलिये जी० जीव जी० जीता है जी० जीवपना आ० आयुष्य क० कर्म उ० अनुभवे त० इसलिये जी० जीव व०

सूत्र सिया. पाणे भूये जीवे सत्ते विण्णूवेदेति वत्तव्वंसिया ॥ से केणट्ठेणं पाणेतिव त्तव्वं-सिया जाव वेदेतिवत्तव्वंसिया? जम्हा आणमंतिवा पाणमंतिवा, उस्ससंतिवा, निस्ससं-तिवा, तम्हा पाणेतिवत्तव्वंसिया। जम्हा भूए भवइ भविस्सइ, तम्हा भूएतिवत्तव्वं-सिया, जम्हा जीवे जीवइ जीवत्तं आउयं च कम्मं उवजीवइ तम्हा जीवेति वत्तव्वं-

भावार्थ विस्तार का अंत नहीं करनेवाला यावत् अपूर्ण प्रयोजन की करणीवाला निर्ग्रंथ पुनः मनुष्यादि गति में आता है. अहो भगवन्! जो ऐसा निर्ग्रंथ मनुष्यादि गति में आता है उन को क्या कहना? अहो गौतम! उन को प्राण, भूत, जीव, सत्व, विज्ञ व वेदक कहना. अहो भगवन्! किस कारन से उन को प्राण, भूत यावत् वेदक कहना? अहो गौतम! वह श्वासोश्वास लेता है इस लिये प्राण कहाता है, वह अतीत काल में था, वर्तमान में है और आगामिक में होगा इस लिये भूत कहाता है, वह आत्मा जनित

शब्दार्थ नहीं नि० रूंधाहुआ भ० भव विस्तार णो० नहीं प० क्षय हुवा सं० संसार णो० नहीं प० क्षयहुआ सं० संसार वे० वेदनीय नो० नहीं वो० तूटा सं० संसार नो० नहीं वो० तूटा सं० संसार वे० वेदनीय नो० नहीं नि० पूर्णहुवा आ० अर्थ नो० नहीं पूर्णहुआ अ० अर्थ कार्य पु० फीर इ० यहां ह० शीघ्र आ० आवे हं० हां गो० गौतम म० प्रासुक भोजी नि० निर्ग्रंथ जा० यावत् पु० फीर इ० यहां ह० शीघ्र आ० आवे से० उनको भं० भगवन् किं० क्या व० कहना गो० गौतम पा० प्राण भू० भूत जी० जीव

सूत्र निरुद्धभवपवंचे, णो पहीण संसारे, णो पहीण संसार वेयणिज्जे, नो वोच्छिण्ण संसारे, णो वोच्छिण्ण संसार वेयणिज्जे; णो निट्ठियट्ठे, नोनिट्ठियट्ठ कराणिज्जे, पुणरवि इच्छत्तं हव्वमागच्छइ? हंता गोयमा! मडाईणं नियंठे जाव पुणरवि इच्छत्तं हव्वमागच्छइ। सेणं भंते! किं वत्तव्वंसिया? गोयमा! पाणेतिवत्तव्वं सिया, भूतेति वत्तव्वंसियां जीवेतिवत्तव्वंसिया, सत्तेति वत्तव्वंसिया, विन्नुयात्ति वत्तव्वंसिया, वेदेति वत्तव्वं-

भावार्थ प्रासुक भोजन करनेवाला परंतु भव व भव विस्तार का निरूंधन नहीं करनेवाला, चतुर्गति गमन रूप संसार का क्षय नहीं करनेवाला, संसार में वेदनीय कर्म का क्षय नहीं करनेवाला, चतुर्गतिक गमनानुबंध व वेदनीय कर्म को नहीं तोडनेवाला, अपूर्ण प्रयोजनवाला और अपूर्ण प्रयोजन की करणीवाला निर्ग्रंथ क्या पुनः इस मनुष्यादि गति में आता है? हां गौतम! प्रासुक भोजन करनेवाला परंतु भव व भव के

शब्दार्थ ह० शीघ्र आ० आते हैं हं० हां गो० गौतम म० मृतभोजी नि० निर्ग्रंथ जा० यावत् नो० नहीं पु० फीर इ० यहां ह० शीघ्र आ० आते हैं से० उनको भं० भगवन् किं० क्या व० कहना सि० सिद्ध बु० बुद्ध मु० मुक्त पा० पारंगत प० परंपरा तग व० कहना सि० सिद्ध मु० मुक्त प० परिनिवृत्त अ० अंतकृत स० सर्व दु० दुःख से प० मुक्तहुवे व० कहना स० वह ए० ऐसा भं० भगवन् भ० भगवान्

सूत्र रणिज्जे णो पुणरवि इच्छत्तं हव्व मागच्छइ ? हंता गोयमा ! मडाईणं नियंठे जाव नो पुणरवि इत्थत्तं हव्वं आगच्छइ ॥ सेणं भंते ! किं वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! सिद्धेत्ति वत्तव्वं सिया, बुद्धेत्ति वत्तव्वं सिया, मुत्तेत्ति वत्तव्वं सिया, पारगएत्ति वत्तव्वं सिया, परंपरगएत्ति वत्तव्वं सिया, सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुडे, अंतकडे सव्व दुक्खप्प-

भावार्थ तार्थ करणीकरनेवाले निर्ग्रंथ क्या पुनः मनुष्यादि गति में नहीं आते हैं ? हां गौतम ! प्रासुक भोजन करनेवाले यावत् निष्टितार्थ करणीवाले पुनः मनुष्यादि गति में नहीं आते हैं, अहो भगवन् ! उन को क्या कहना ? अहो गौतम ! उन को सब कार्य की सिद्धि होने से सिद्ध कहना, चराचर पदार्थ के ज्ञाता होने से बुद्ध कहना, समस्त कर्म से मुक्त होने से मुक्त कहना, संसार सागरको उत्तीर्ण होने से पारंगत कहना, मिथ्यात्वादि गुणस्थान अथवा मनुष्यादि गति को परंपरा से जानने से अर्थात् भव समुद्र के पार पहुंचने से परम्परागत कहना, कषाय से निवर्तने से परिनिवृत्त, संसार का अंत करने से अंतकृत

शब्दार्थ कहना ज० जिसलिये स० असक्त सु० शुभाशुभ क० कर्म से त० इसलिये स०सत्व व० कहना ज० जिस-लिये ति० तिक्त क० कटुक क० कषाय अं० अंबट म० मधुर र० रस जा० जाने त० इसलिये वि० विज्ञ व० कहना वे० वेदता है सु०सुख दु० दुःख० त०इसलिये वे० वेदक व० कहना से० वह ते० इसलिये जा० यावत् पा० प्राण जा० यावत् वे० वेद व० कहना ॥ ३ ॥ म० मृतभोजी नि० निर्ग्रंथ नि० रुंधा भ० भव नि० रुंधा भ० भवविस्तार जा० यावत् नि० पुरा हुवा अ० अर्थ कार्य नो० नहीं पु० फीर इ० यहां

सूत्र सिया, जम्हा सत्ते सुहासुहेहिं कम्मेहिं तम्हा सत्तेत्ति वत्तव्वं सिया, जम्हा तित्त, कटु, कसाय अंबिल महुरे रसे जाणइ, तम्हा विण्णुतत्ति वत्तव्वं सिया, वेदेइय सुहदुक्खं तम्हा वेदेतिवत्तव्वं सिया, से तेणट्ठेणं जाव पाणेति वत्तव्वंसिया, जाव वेदेतिवत्तव्वांसि-या ॥ ३ ॥ मडाईणं भंते ! नियंठे निरुद्ध भवे निरुद्ध भवपवंचे जाव निट्ठियट्ठ क-

भावार्थ अर्थात् प्राणों को धारन करता है और उपयोग लक्षणरूप जीवत्व वैसे ही आयुः कर्म को अनुभवता है इस लिये जीव कहाता है. वह शुभाशुभ कर्म में आसक्त अथवा समर्थ है इसलिये सत्व कहाता है, वह तिक्त, कटुक, कषाय, अम्बट व मधुर रस को जानता है इस लिये विज्ञ कहाता है और सुख दुःख को वेदनेवाला होने से वेदक कहाता है.. इस लिये अहो गौतम ! वह प्राण यावत् वेदक कहाता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! प्रासुक भोजन करनेवाले वैसे ही भव व भव प्रपंच का निरुंधन करनेवाले यावत् निष्ठि-

शब्दार्थ दिशा में छ० छत्रपलाश चे० चैत्य हो० था व० वर्णन युक्त स० श्रमण भं० भगवान् म० महावीर उ० उत्पन्न णा० ज्ञान दर्शन युक्त जा० यावत् स० समवसरण प० परिषदा नि० निर्गता ॥६॥ ती० उस क० कयंगला न० नगरी की अ० नजदीक सा० सावत्थी ना० नामकी न० नगरी हो० थी व० वर्णनयुक्त त० तहां सा० सावत्थी ण० नगरी में ग० गर्दभाली का अं० अंतेवासी खं० खंदक ना० नामका क० कासायन गोत्रीय प० परिव्राजक प० रहता है रि० ऋग्वेद ज० यजुर्वेद सा० सामवेद अ० अथर्ववेद इ०

सूत्र छत्तपलासए णामं चेइए होत्था, वण्णओ । तएणं समणे भगवं महावीरे उप्पन्नणाण दंसणधरे जाव समोसरणं परिसा निग्गया ॥ ६ ॥ तीसेणं कयंगलाए नयरीए अदूर-सामंते सावत्थीणामं नयरीहोत्था. वण्णओ तत्थणं सावत्थीए णयरीए गद्दभालिस्स अंतेवासी खंदए नाम कच्चायणसगोत्ते परिव्वायगे परिवसइ रिउव्वेय, जजुव्वेय, साम-

भावार्थ में चंपा नगरी का वर्णन कहा है वैसा कहना. उस कयंगला नामक नगरी के बाहिर उत्तरपूर्व-ईशान कौन में छत्र पलाश नामक यक्षका चैत्य है, उस का भी वर्णन उववाइ से जानना. वहांपर केवल ज्ञान केवल दर्शन के धारक श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे. परिषदा वंदन करने को आइ. भगवन्त से धर्मकथा सुनकर परिषदा पीछी गई. ॥ ६ ॥ उस कयंगला नगरी की पास एक सावत्थी नामकी नगरी थी. उस का वर्णन भी उववाइ में से जानना. उस सावत्थी नगरी में गर्दभाली नामक तापस का

शब्दार्थ गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को वं० वंदना कर न० नमस्कार कर सं० संयम त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं ॥ ४ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर रा० राजगृह न० नगर से गु० गुणशीलक चे० चैत्य से प० निकले प० निकलकर ब० बाहिर ज० अन्यदेश में वि० विचरने लगे ॥ ५ ॥ ते० उसकाल ते० उस समय में क० कयंगला ना० नामकी न० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त ती० उस क० कयंगला न० नगरी की ब० बाहिर उ० ईशान

सूत्र हीणेत्ति वत्तव्वं सिया. सेवं भंतेत्ति. भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ४ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ, गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता बाहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ ५ ॥ तेणं कालेणं तेणंसमएणं कयंगला णामं नयरीहोत्था,वण्णओ तीसेणं कयंगलाए नयरीए बाहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए

भावार्थ और सब दुःख का क्षय करने से सर्व दुःख प्रहीन कहना. अहो भगवन् ! आपने कहा सो सत्य है ऐसा कहकर गौतम स्वामी संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे ॥ ४ ॥ उस समय में श्री श्रमण भगवन्त महावीर राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में से नीकल कर अन्य देश में विचरने लगे. ॥ ५ ॥ उसकाल उस समय में कयंगला नामक नगरी थी. उस का वर्णन उववाइ सूत्र

शब्दार्थ सा० श्रवण करनेवाला अ० कोई वक्त जे० जहां खं० खंदक क० कात्यायन गोत्री ते० तहां उ० आये आ० आकर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्री को इ० यह अ० आक्षेप से पु० पूछे मा० मागध किं० क्या स० अन्त वाला लो० लोक अ० अनंतलोक स० अंतसहित जी० जीव अ० अनंत जी० जीव स० अन्त सहित सिद्धी अ० अनंत सिद्धी स० अंत सहित सिद्ध अ० अनंत सि० सिद्ध के० किस म० मरण से म० मरता जी० जीव व० वृद्धिपावे हा० हानीपावे ए० इतना आ० कहो वु० बोलते ए० ऐसा से० वह खं० खंदक

सूत्र सावए परिवसइ ; तएणं से पिंगलए नामं नियंठे वेसालिय सावए अण्णया कयाइं जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ २ त्ता खंदयं कच्चायणसगोत्तं इण मक्खेवं पुच्छे, मागहा ! किं सअंतेलोए अणंतेलोए ? सअंतेजीवे, अणंते जीवे ? सअंतेसिद्धे, अणंतेसिद्धे ? सअंतासिद्धी, अणंतासिद्धी ? केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे

भावार्थ छंद निमित्त सो शब्द उत्पत्ति का शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, व अनेक ब्राह्मण सन्यासी संबंधी नीति शास्त्र में निपुण थे ॥ ७ ॥ उस सावत्थी नगरी में श्री महावीर के वचन सुनने में रसिक पिंगलक नामक निर्ग्रंथ रहता था. महावीर भगवन्त के वचन सुनने में रसिक ऐसे पिंगलक निर्ग्रन्थ एकदा कात्यायन गोत्रीय खंदक नामक परिव्राजक की पास आये, आकर के उन को ऐसा प्रश्न पुछा कि अहो मागधे ! क्या

१ मगध देश में उत्पन्न होनेवाले.

शब्दार्थ इतिहास पं० पांचवा नि० निगण्टु संग्रह छ० छठा च० चारवेद का सं० सांगोपांग स० रहस्य सहित सा०स्मरण करनेवाला वा०शुद्धकरनेवाला धा०धारक पा०पारगामी स०छअंग स०कापिलीयशास्त्र वि०पंडित सं० गणित शास्त्र मि० अक्षररूप शास्त्र वा० शब्द छं० छंद नि० शब्द उत्पति का जान जो० ज्योतिषी शास्त्र अ० अन्य कोई व० बहुत बं० ब्राह्मण प० परिव्राजक में न० नय में सु० अच्छा निश्चयार्थ का जान हो० था ॥ ७ ॥ त० तहां सा० सावत्थी न० नगरी में पिं० पिंगलक नि० निग्रंथ वे० वैशालिक

सूत्र वेय, अहव्वणवेय, इतिहास पंचमाणं, निघंटुछट्ठाणं, चउण्हं वेयाणं संगोवंगाणं, सरह-स्साणं सारए, वारए, धारए, पारए, सडंगवी, सट्ठितंतविसारए, संखाणे, सिक्खाकप्पे, वाग-रणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे, अण्णेसुय बहुसु बंभण्णएसु परिव्वायएसु नएसु सुपरि-निट्ठिएयावि होत्था. ॥ ७ ॥ तत्थणं सावत्थीए नयरीए पिंगलए नामंनियंट्ठे वेसालिय

भावार्थ शिष्य कात्यायन गोत्रीय खंदक नामक परिव्राजक रहताथा. वह खंदक परिव्राजक ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद, अथर्ववेद, इतिहास सो प्राचिनकाल के महापुरुषों की कथाओं, और निघन्टु सो अनेकार्थ वाची को-प ऐसे षड्शास्त्र के ज्ञाता थे. और चारों वेदों के छअंग और उस में कहे हुवे प्रबंध सो अंग, इनकी प्रयुक्ति, युक्तियों को वारंवार स्मरण करनेवाले, अशुद्ध पाठ का निषेध करनेवाले, हृदय में धारन करनेवाले व पारगामी थे. वैसे ही छ अंग व कापीलिय शास्त्र के ज्ञाताथे. संख्या-गणितविद्या, शिक्षाकल्प, व्याकरण,

शब्दार्थ क्या स० अंतसहित लोक जा० यावत् के० किस म० मरण से म० मरता जी० जीव व० वृद्धिपामे हा० हानिपामे ए० इतना आ० कहो बु० बोलता त० तब ते० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय पिं० पिंगलक निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा० सुननेवाला दो०दो त०तीन वक्त इ०यह अ०आक्षेप से पु० पूछते सं० शंकित कं० कांक्षित वि० संदेहवाला भे० भेद को प्राप्त क० कालुष्य वाला नो०. नहीं सं० शक्तिमान

सूत्र तएणं से पिंगलए नियंठे वेसालीसावए खंदयं कच्चायणसगोत्तं दोच्चंपि इणमक्खेवं पुच्छे मागहा! किं सअंतेलोए जाव॰केणवा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्डइवा, हायइवा, एतावंताव आइक्खाहि वुच्चमाणो एवं तएणं तेखंदए कच्चायणसगोत्तं पिंगलएणं नियंठेणं वेसालीसावएणं दोच्चंपि तच्चंपि इणमक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिंछिए,

भावार्थ जानने की कांक्षा, अन्य को 'उत्तर देने में प्रतीति होवे वैसी वितिगिच्छा उत्पन्न हुई. वैसे ही मैंने इस का उत्तर नहीं जाना सो मतिभंग, भेद व मन में कालुष्यता हुई. वैसे ही वैसालिय श्रावक पिंगलक अनगार के एक ही प्रश्नों का उत्तर देने को असमर्थ हुआ. और मौन खडा रहा. तब उन वैसालिय श्रावक पिंगलक निर्ग्रंथने पुनःयही प्रश्न पूछा की अहो मागध! अंत सहित लोक है यावत् किस मरण से संसार की वृद्धि होती है और किस मरणसे संसार का क्षय होता है? इस तरह पिंगलक निर्ग्रंथने दो

शब्दार्थ क० कात्यायन गोत्रीय पिं० पिंगलक नि० निग्रंथ वे० वैशालिक सा० सुननेवाला इ० यह अ० आक्षेप से पु० पूछते सं० संकित कं० कांक्षित वि० संदेह वाला भे० भेदको प्राप्त क० कालुष्य को स० प्राप्त णो० नहीं सं० शक्तिमान है पिं० पिंगलक नि० निग्रंथ वे० वैशालिक सा० सुननेवाला किं० किंचित् प० उत्तर अ० कहने को तु० तुष्णीक सं० रहे ते० तब से० वह पिं० पिंगलक नि० निग्रंथ वे० वैशालिक सा० सुननेवाला खं० खंदक क० कात्यायन गोत्री को दो० दोवार इ० यह अ० आक्षेप से पु० पूछे मा० मागध किं०

सूत्र वड्डइवा, हायइवा, एतावंताव आइक्खाहि, वुच्चमाणो एवं तएणं से खंदए कच्चायण-सगोत्ते, पिंगलएणं नियंठेणं वेसालीसावएणं इणमक्खेवं पुच्छिएसमाणे संकिए कंखिए, वितिगिंछिए, भेदसमावण्णे, कलुससमावण्णे णो संचाएइ पिंगलयस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचिवि पमोक्ख मक्खाइओ तुसिणीए संचिट्ठइ.

भावार्थ यह लोक अंत सहित या अंत रहित है ? २ जीव अंत सहित है या अंत रहित है ? सिद्ध शिला अंत सहित है या अंत रहित है ? सिद्ध अंत सहित या अंत रहित है ? अथवा किस मरण से जीव संसार की वृद्धि करता है व किस मरण से जीव संसार को क्षीण करता है ? इन प्रश्नों का उत्तर कहो अनंतर दूसरे प्रश्न पूछूंगा. इस तरह महावीर स्वामी के वचन सुनने को रसिक पिंगलक निर्ग्रन्थने इस तरह प्रश्न पुछने पर कात्यायन गौत्रीय स्कंदक परिव्राजक को इस का क्या उत्तर होगा ऐसी शंका, अन्य की पास अर्थ

शब्दार्थ आत्मविषय चिं० स्मरणरूप प० प्रार्थनारूप म० मनोगत सं० संकल्प स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसा स० श्रमण अ० भगवन् म० महावीर क० कयंगला न० नगरी की व० बाहिर छ० छत्रपलास चे० चैत्य में सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते वि० विचरते हैं तं० उनकीपास गं० जाऊं स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को वं० वंदनाकर न० नमस्कारकर स० सत्कारकर स० सन्मानदेकर

सूत्र वीरे कयंगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ तं गच्छामिणं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाणं मंगलं देव-यं चेइयं पज्जुवासेत्ता इमाइंचणं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं वागरणाइं पु-

भावार्थ कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक को ऐसा चिन्तवन व मनोगत संकल्प हुवा कि कयंगला नगरी के छत्र पलाश उद्यान में संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे श्री श्रमण भगवंत महावीर विचरते हैं इसलिये उन की समीप मैं जाऊं और श्री श्रमण, भगवन्त को वंदना नमस्कार करूं. श्री श्रमण भगवन्त महावीर को वंदना, नमस्कार, सत्कार व सन्मान कर वैसे ही कल्याणकारी, मंगलकारी, देव व साक्षात् महाज्ञानके धारक ऐसे श्री श्रमण भगवंत की पर्युपासना करके जो मेरे मन में संदेह रहा हुवा है वैसे प्रश्नों पुछकर निर्णय करना मुझे श्रेय है. ऐसा विचार करके जहां परिव्राजक संन्यासीओं का आश्रम था वहां आया वहां

शब्दार्थ है पिं० पिंगलक नि० निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा० सुननेवाला को किं० किंचित् प० उत्तर अ० कहने को तु० तुष्णीक सं० रहे ॥ ८ ॥ त० तव सा० सावत्थी न० नगरी से सिं० सिंघाडे जैसे जा० यावत् प० रस्ते में म० महा पुरुषों सं० संमर्द ज० जन समुदाय प० परिषदा नि० गइ त० तव त० उस खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय ब० बहुत ज० मनुष्य की अं० पास स० यह अर्थ सो० सुनकर नि० अवधाकर इ० इसरूप अ०

सूत्र भेदसमावन्ने, कलुससमावन्ने नोसंवाएइ पिंगलस्स नियंठस्स वेसालिय सावयस्स किंचिवि पमोक्खमक्खाइओ तुसिणीए संचिट्ठइ ॥ ८ ॥ तएणं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु महयाजण सम्मद्दइवा, जण बूहेइवा; निग्गइच्छइ तएणं तस्स खंदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म इमेएयारूवे अज्झत्थिए, चिंतिए, पत्थिए, मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था एवं खलु समणे भगवं महा-

भावार्थ तीन वार वैसाही प्रश्न पूछा परंतु कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक को शंका, कांक्षा, वितिगिच्छा, भेद व कालुष्पता प्राप्त होने से उन के प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका और मौन खडा रहा ॥ ८ ॥ उस समय श्रावस्ती नगरी के तीन रस्ते मीलने के स्थान, चौक यावत् बहुत रस्ते मीलने के स्थान पर बहुत मनुष्यों के समुदाय की परिषदा श्री श्रमण भगवन्त को वंदना करने को नीकली. और परस्पर ऐसा बोलने लगे की श्री श्रमण भगवन्त महावीर कयंलगा नगरी के छत्रपलाश नामक उद्यानमें पधारे हैं. ऐसा बहुत मनुष्यों की पाससे श्रवण करके

शब्दार्थ में लेकर छ० छत्र वा० पगरखा सं० युक्त धा० धातुरक्त व० वस्त्र प० पहनकर सा० सावत्थी न० नगरी की म० मध्य से नि० निकलकर जे० जहां क० कयंगला न० नगरी जे० जहां छ० छत्रपलास चे० चैत्य जे० जहां स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ते० तहां पा० निश्चय किया ग० जाने को ॥ ९ ॥ गो० गौतमादि स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर भ० भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० बोले द०

सूत्र

छत्तोवाहण संजुत्ते, धाउरत्त वत्थ परिहिए, सावत्थीए नयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छइत्ता जेणेव कयंगला नगरी, जेणेव छत्तपलासए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पाहारेच्छ गमणाए॥ ९॥ गोयमाइ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी दच्छिसिणं गोयमा! पुव्वसंगइयं कंतं, कं भंते? खंदयं नाम। से काहेवा, कि-

भावार्थ

नीकलकर त्रिदंड, कमंडल, रुद्राक्षमाला, मृत्तिका का भाजन, मृत्तिका आसन विशेष, प्रमार्जन करने का कपडा, षड्नालिका, वृक्ष पल्लव को छेदनेवाला अंकुश, ताम्बेकी मुद्रिका व कालाचिका इत्यादि हस्त में धारन करके, शिरपर छत्र रखकर, पांव में उपानह रखकर, भगवे वस्त्र पहिन कर, सावत्थी नगरी के मध्य में से नीकलकर जहां कयंगला नामक नगरी के छत्र पलाश उद्यान में श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आनेका अभिलाषी हुवा ॥ ९ ॥ उस समय श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने गौतम स्वामी को बोलाकर कहा कि अहो गौतम! तूं तेरा पूर्व संगातिवाला मित्र को देखेगा. तब गौतम स्वामी बोले की

शब्दार्थ

क० कल्याण कारी म० मंगल कारी दे० देव चे० ज्ञानरूप प० पूजते इ० उस ए० ऐसा अ० अर्थ हे० हेतु प० प्रश्न वा० व्याकरण पु० पूछना क० करके ए० ऐसा सं० आलोचकर जे०जहां प०परिव्राजक की व० वसति ते० तहां आ० आकर ति० त्रीदंड कुं० कमंडल कं० रुद्राक्ष माला क० मिट्टिका भाजन भि० आसन के० चीवरखंड छ० त्रिगडी अ० अंकुश प० तांबे की मुद्रिका ग० आभरण विशेष छ० छत्र वा० पगरखा पा० पावडी धा० शाटिका गे० ग्रहणकर प० परिव्राजक व० वसति से प० निकलकर ह० हस्त में

सूत्र

च्छित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता, जेणेव परिव्वायगा वसही तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता तिदंडंच, कुडियंच, कंचणियंच, करोडियंच, भिसियंच, केसरियंच, छण्णालियंच, अंकुसयंच, पवित्तयंच, गणेत्तियंच, छत्तयंच, वाहणाउय पाउयाउय धाउरत्ताउयगेण्हइ गेण्हइत्ता परिव्वायगवसहीओ परिनिक्खमइ परिनिक्खमइत्ता, तिदंडं कुंडियं, कंचणियं, करोडियं, भिसियकेसारियछनालयअंकुसयपवित्तियगणेत्तिय हत्थगए,

भावार्थ

आकर १ त्रिदंड,२ कमंडल ३ रुद्राक्षमाला ४ मृत्तिका का भाजन ५ मृत्तिका का आसन विशेष ६ प्रमार्जने का कपडा ७ षड्नालिका-त्रिकाष्टिका ८ वृक्षपल्लव को छेदनेवाला अंकुश ९ ताम्बेकी मुद्रिका १० कलाचिका आभरण विशेष ११ शिरपर धारन करने का छत्र १२ पांव में पहिनने का उपानह १३ लकडी की चाखडी १४ गेरू से रंगे हुवे भगवे वस्त्र ऐसे भाव ग्रहण कर परिव्राजककी वसति में से नीकला,

शब्दार्थ गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को वं० वंदनाकर न० नमस्कार कर व० बोले प० समर्थ भं० भगवन् खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय दे० देवानुप्रियाकी अं० पास मुं० मुंड भ० होकर अ० अगारसे अ० अनगार को प० प्रव्राजित होनेको हं० हाँ प० प्रभु॥११॥ जा० जितना काल स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर भ० भगवान् गो० गौतम की पास ए० यह अर्थ प० करते हैं ता० उस वक्त में खं० खंदक

सूत्र •भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी पहूणं भंते ! खंदए कच्चायणसगोत्ते देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? हंता पभू ! ॥ ११ ॥ जावंचणं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेइ तावंचणं खंदए कच्चायणसगोत्ते तं देसं हव्वमागए, तए-

भावार्थ स्वामी महावीर भगवंत को वंदना नमस्कार करके ऐसा पूछने लगे की अहो भगवन् ! क्या कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक आपकी पास दीक्षा ग्रहण कर मुंड होने को समर्थ है ? हां गौतम ! वह खंदक परिव्राजक दीक्षा लेने को समर्थ है ॥ ११ ॥ श्री महावीर भगवन्त गौतम स्वामी को ऐसा कह रहे थे इतने में कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक उस बगीचे के एक देश में आ पहुंचे. उस समय श्री गौतम स्वामी कात्यायन गोत्रीय स्कंदक मुनि को पास आये जानकर उपस्थित हुवे,* उपस्थित होकर

* श्री गौतम स्वामी स्कंदक परिव्राजक असंयतीको देखकर खडेहुवे जिसका कारन यह है कि वह आगे

शब्दार्थ देखो गो० गौतम पु० पूर्व सं० मित्रको कं० किनको भं० भगवन् खं० खंदक को का० किसवक्त कि० किसतरह के० कितने वक्त में ए० ऐसा गो० गौतम ते० उस समय में सा० सावत्थी न० नगरी ग० गर्द-भालिका अं० अंतेवासी खं० खंदक का० कात्यायन गोत्रीय प०परिव्राजक प० रहता है उ० उनको जा० यावत् म० मेरीपास पां० निश्चय किया ग० आने को से० वह अ० नजदीक व० बहुत नजदीक अ० मार्ग में प० रहाहुवा अं० रस्ते में व० रहा है अ० आजही दि० देखेगा ॥ १० ॥ भ० भगवान् गो०

सूत्र हंवा,केवच्चिरेणवा? एवं खलु गोयमा! तेणंकालेणं तेणंसमएणं सावत्थी णामं णयरी होत्था, वण्णओ, तत्थणं सावत्थीए नगरीए गद्दभालिस्स अंतेवासी खंदए णामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायए परिवसइ तंचेव जाव जेणेव मम अंतिए तेणेव पाहारेच्छ गमणाए सेअदूरामए बहुसंपत्ते, अद्धाणपडिवण्णे अंतरापहे वट्टइ अज्जेवणं दिच्छसि गोयमा ! ॥१०॥भंतेत्ति

भावार्थ पूर्व संगतिवाला कौनसा मित्रको मैं देखूंगा ? तब श्री भगवन्त बोले की तू खंदक को देखेगा. तब गौतम स्वामी बोले की किस समय, किस प्रकार व कितनी देर में मीलेगा ? तब श्री भगवन्त बोले की उस काल उस समय में श्रावस्ती नामक नगरी में गर्दभाली परिव्राजकका शिष्य कात्यायन गोत्रीय खंदक नामक परिव्राजक रहता है. उन को पिंगलक निर्ग्रंथने प्रश्न किया. जिस का उत्तर नहीं दे सकने से मेरी पास आरहा है वह अभी रस्ते के मध्य में है और उसे तू आज ही देखेगा ॥ १० ॥ श्री गौतम

शब्दार्थ पिंगलक नि० निर्ग्रंथ वे० वैशालिक सा० श्रवण करनेवाला इ० इस अ० आक्षेप पु० पूछा मा० मागध कि० अ० अर्थ स० समर्थ हं० हां अ० है त० तब से०वह खं०खंदक क०कात्यायन गोत्रीय भ०भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० कहा से० वह के० कौन गो० गौतम त० तथारूप णा० ज्ञानी त० तपस्वी जे० जिससे त० तुमने ए० यह अर्थ म० मेरा र० रहस्य ह० शीघ्र अ० कहा ज० जिससे तु० तुम जा० जानते हो त० तब भ० भगवान् गो० गौतम खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा

सूत्र वएणं इणमक्खेवं पुच्छिए मागहा ! किं सअंतेलोए, एवं तंचेव जेणेव इहं तेणेव हव्व मागए; सेणूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि ॥ तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—से केसिणं गोयमा ! तहारूवे णाणीवा, तवस्सीवा, जेणं तव एसअट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओणं तुमं जाणासि तएणं

भावार्थ होती है ? उस का उत्तर नहीं आने से तुम महावीर भगवन्त की पास से सुनने को आये हो. अहो स्कंदक क्या यह सत्य है ? स्कंदकने उत्तर दिया की हां यह सत्य है. तब कात्यायन गोत्रीय स्कंदकने पुछा कि अहो गौतम ! ऐसा कौन तथारूप ज्ञानी व तपस्वी है कि जिनोंने मेरे मन का रहस्य तुम को कहा ? अहो स्कंदक ! मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक धर्मगुरु श्री श्रमण भगवंत केवल ज्ञान केवल दर्शन के

खंदक क०कात्यायन गोत्रीय अ०नजदीक आ०आयाहुवा जा०जानकर खि०शीघ्र अ०उठकर खि०शीघ्र प० सन्मुख जाकर जे० जहां खं० खंदक क०कात्यायन गोत्रीय ते०तहां उ०आकर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा व० बोले हे० अहो खं० खंदक सा० स्वागतम् सु० सुस्वागतं अ० योग्य आगमन सा० स्वागतम् अ० योग्य आगमन मे० वह तु० तुम को खं० खंदक सा० सावत्थी न० नगरी में पिं०

सूत्र

णं भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं अदूरमागयं जाणेत्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेइ २ त्ता, खिप्पामेव पच्चुगच्छइ पच्चुगच्छइत्ता जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी हे खंदया! सागयं खंदया! सुसागयं खंदया! अणुरागयं खंदया!. सागयमणुरायं खंदया! सेणूणं तुमं खंदया, सावत्थीए णयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसा-

भावार्थ

स्कंदक परिव्राजक की सन्मुख गये, और सन्मुख जाकर स्कंदक परिव्राजक को ऐसा बोले अहो स्कंदक तुम्हारा आगमन श्रेष्ठ है, तुम्हारा आगमन अनुपम है, तुम्हारा आगमन शोभन व अनुपम है. अहो स्कंदक! श्रावस्ती नगरी में श्री महावीर के वचन सुनने को रसिक पिंगलक नामक निर्ग्रंथने क्या ऐसे प्रश्नों पूछे थे कि अंत सहित लोक है, या अंत रहित लोक है, यावत् किस मरण से संसार की वृद्धि व हीनता

शब्दार्थ पिंगलक नि० निग्रंथ वे० वैशालिक सा० श्रवण करनेवाला इ० इस अ० आक्षेप पु० पूछा मा० मागध कि० अ० अर्थ स० समर्थ हं० हां अ० है त० तब से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय भ० भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० कहा से० वह के० कौन गो० गौतम त० तथारूप णा० ज्ञानी त० तपस्वी जे० जिससे त० तुमने ए० यह अर्थ म० मेरा र० रहस्य ह० शीघ्र अ० कहा ज० जिससे तु० तुम जा० जानते हो त० तब भ० भगवान् गो० गौतम खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा

सूत्र तएणं इणमक्खेवं पुच्छिए मागहा ! किं सअंतेलोए, एवं तंचेव जेणेव इहं तेणेव हव्व मागए: सेणूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि ॥ तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—से केसिणं गोयमा ! तहारूवे णाणीवा, तवस्सीवा, जेणं तव एसअट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओणं तुमं जाणासि तएणं

भावार्थ होती है ? उस का उत्तर नहीं आने से तुम महावीर भगवन्त की पास से सुनने को आये हो. अहो स्कंदक क्या यह सत्य है ? स्कंदकने उत्तर दिया की हां यह सत्य है. तब कात्यायन गोत्रीय स्कंदकने पुछा कि अहो गौतम ! ऐसा कौन तथारूप ज्ञानी व तपस्वी है कि जिनोंने मेरे मन का रहस्य तुम को कहा ? अहो स्कंदक ! मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक धर्मगुरु श्री श्रमण भगवंत केवल ज्ञान केवल दर्शन के

शब्दार्थ व० कहा खं० खंदक म० मेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण भं० भगवान् म० महावीर उ० उत्पन्न णा० ज्ञान द० दर्शन युक्त अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली ती० अतीत प० वर्तमान अ० अनागत वि० विज्ञानक स० सर्वज्ञ स० सर्वदर्शी जे० जिनने म० मुझे ए० यह अर्थ त० तुमारा र० हृदय भाव ह० शीघ्र अ० कहा ज० जिससे अ० मैं जा० जानताहूं खं० खंदक ॥ १२ ॥ त० तब खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय भं० भगवान् गो० गौतम को ए० ऐसा व० बोले ग० जावे गो० गौतम

सूत्र से भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी एवं खलु खंदया ! मम धम्मायरिए धम्मोवएसए, समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली, तीय पच्चुप्पण्ण मणागय वियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी, जेणं ममएसअट्ठे तवताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए जओणं अहं जाणामि खंदया ? ॥ १२ ॥ तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी. गच्छामोणं गोयमा ? तव धम्मायरियं

भावार्थ धारक श्री महावीर स्वामी है. वे इन्द्रादिक के वंदनीक पूजनीक, रागादि शत्रु को जीतनेवाले, सब दोष रहित, व अतीत, अनागत व वर्तमान के ज्ञानी सर्वज्ञ, सर्वदर्शी है. इनोंने मुझे यह अर्थ तुम्हारे आये पहिले बतलाया. उन के कथनसेही मैं यह जानता हूं ॥ १२ ॥ तब स्कंदक परिव्राजक बोले की अहो गौतम ! मैं तुम्हारे धर्माचार्य धर्मोपदेशक श्री श्रमण भगवंत महा-

शब्दार्थ

त० तुमारे ध० धर्माचार्य पास की ध० धर्मोपदेशक की पास स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को वं० वांदे नं० नमस्कार कर जा० यावत् प० पूजे अ० यथासुखम् दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रति बंध क० करो त० तब भ० भगवान् गो० गौतम खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय की स० साथ जे० जहां स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ते० तहां प० निश्चय कीया ग० जाने को ॥ १३ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर वि० नित्य भोजी हो० थे त० तब स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर वि० नित्यभोजी का स० शरीर को उ० उदार सिं० शो-

सूत्र

धम्मोवदेसयं समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मापडिबंधंकरेह ॥ तएणं भगवं गोयमे खंदएणं कच्चायणसगोत्तेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेनेव पहारेच्छ गमणाए॥१३॥तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे वियट्टभोजीयावि होत्था॥ तएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं उरालं सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं अणलंकिय विभू-

भावार्थ

वीर स्वामी को वंदना नमस्कार करूं. अहो स्कंदक ! जैसे तुम को सुख होवे वैसे करो, विलम्ब मत करो. तब श्री गौतम स्वामी स्कंदक परिव्राजक को साथ लेकर जहां श्रमण भगवंत महावीर स्वामी थे वहां आये ॥ १३ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर नित्यभोजी थे. उन का शरीर

शब्दार्थ

भावन्त क० कल्याण कारी सि० श्रेयकारी ध० धन्य मं० मंगलकारी अ० अलंकार रहित वि० विभू-पित ल० लक्षण वं० व्यंजन गु० गुणयुक्त सि० श्री जैसे अ० अतीव उ० शोभते चि० रहते हैं ॥ १४ ॥ त० तहां से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रिय स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर का वि० नित्य भोजी स० शरीर उ० उदार जा० यावत् अ० अतीव उ० शोभता पा० देखकर ह० आनंद तु० तुष्ट चि० चितमें आ० आनंद हुवा पी० प्रीति हुइ प० उत्कृष्ट सा० अच्छा मन हुआ ह० हर्षयुक्त

सूत्र

सियं लक्खण वंजण गुणोववेयं, सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥१४॥ तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं उरालयं जाव अतीव अतीव उवसोभेमाणं पासइ पासइत्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीइमाणे परमसोमणसिए हरिसवसविसप्पमाणहियए, जेणेव समणे भगवं महावीरे

भावार्थ

अतिशय शोभावन्त, श्रेयकारी, उपद्रवकारी, वस्त्राभरण रहित होनेपर शोभनिक व लक्षण व्यंजन युक्त था. ॥ १४ ॥ उस समय कात्यायन गोत्रीय स्कंदक परिव्राजक नित्यभोजी श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी का शरीर को अत्यंत शोभनिक यावत् लक्षण व्यंजन युक्त देखकर हृष्ट तुष्ट चित्तवाला हुआ, बहुत संतोषित हुआ, आनंदित चित्तवाला हुआ, मन में प्रीति उत्पन्न हुई और परम उत्कृष्ट हर्ष उत्पन्न हुआ. इस तरह से

शब्दार्थ वि० विस्तार हि० हृदय वाला जे० जहां स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ते० तहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त महावीर को ति० तीनवार आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करके जा० यावत् प० पूजनेलगे ॥ ५ ॥ स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को ए० ऐसा व० बोले तु० तुम को खं० खंदक सा०सावत्थी ण० नगरी में पिं०पिंगलक निग्रंथ वे० वैशालिक सा० सुनने वाला इ० इस अ० प्रश्न से मा० मागध किं० क्या स० अंतसहित लोक अ० अनंत-

सूत्र तेणेव उवागच्छइ२त्ता, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ जाव पज्जुवासइ ॥ १५ ॥ खंदयाइ समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी सेणूणंतुमं खंदया ! सावत्थीए णयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालिसावएणं इणमक्खेवं, मागहा ! किं सअंतेलोए, अणंतेलोए एवं तंचेव जाव जेणेव मम अंति-

भावार्थ हर्षित बनाहुआ जहां श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आये ; आकर श्री श्रमण भगवंत महावीर को तीन आदान व प्रदक्षिणा की, यावत् सेवाभक्ति की ॥ १५ ॥ तब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने कात्यायन गोत्रीय खंदक को पूछा कि अहो खंदक ! श्रावस्ती नगरी में महावीर के वचन सुनने का रसिक पिंगल निर्ग्रन्थने ऐसा पूछा कि अहो मागध ! अंत सहित लोक है या अंत रहित लोक है यावत् किस मरण से जीव संसार की वृद्धि व हानि करता है ? उस का उत्तर नहीं दे सकनेसे तू शीघ्र मेरी

शब्दार्थ लोक जा० यावत् म० मेरी अं० पास ह० शीघ्र आ० आया से० वह खं० खंदक अ० अर्थ स० समर्थ हं० हां अ० है खं० खंदक ए० ऐसा अ० आत्मविषय में चिं० चिंतवन प० प्रार्थनारूप म० मनोगत सं० संकल्प स० उत्पन्न हुआ किं० क्या स० अंतसहित लोक अ० अनंतलोक त० उस का अ० यह अर्थ म० मैंने खं० खंदक च० चार प्रकार का प० प्ररूपा द० द्रव्य से खे० क्षेत्र से का० काल से भा० भाव से द० द्रव्य से ए० एक लो० लोक स० अंतसहित खे० क्षेत्र से लो० लोक अ० असंख्यात जो० योजन

सूत्र ए तेणेव हव्वमागए। सेणूणं खंदया! अट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि॥ जेविय ते खंदया! अयमेयारूवे अज्झात्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, किं सअंतेलोए अणंतेलोए तस्सावियणं अयमट्ठे, एवं खलुमए खंदया! चउव्विहे लोए पण्णत्ते तंजहा—दव्वओ, खत्तओ, कालओ, भावओ. । दव्वओणं एगेलोए सअंते,॥

भावार्थ पास आया है तो क्या यह बात सत्य है? खंदक बोले हां यह सत्य है. अहो खंदक! तेरे मन में ऐसा अध्यवसाय, चिन्तवन, मनन, व मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ कि क्या अंत सहित लोक है या अंत रहित लोक है. परंतु अहो स्कंदक! मैं लोक को इस प्रकार प्ररूपता हूं. लोक के चार भेद कहे हैं द्रव्यसे, क्षेत्रसे, कालसे व भाव से. द्रव्य से पंचास्तिकायरूप एक, वह द्रव्य तत्त्व से अंत सहित है, क्षेत्र से सब लोक का मध्य मेरुपर्वत है उससे वह ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् दिशा की लम्बाइ व चौडाइ में असंख्यात योजन का

शब्दार्थ को० क्रोडा क्रोडा आ० लंबा वि० चौडा अ० असंख्यात जो० योजन को० क्रोडा क्रोड प० परिधि में अ० है से० उस का अं० अंत का० काल से लो० लोक न० नहीं क० कदापि न० नहीं आ० हुवा न० नहीं कदापि न० नहीं है न० नहीं कदापि न० न होगा भु० हुवा भ० होता है भ० होगा धु० ध्रुव नि० नित्य सा० शाश्वत अ० अक्षय अ० अव्यय अ० अवस्थित णि० नित्य ण० नहीं है से० उस का अं० अंत भा० भाव से लो० लोक अ० अनंत वर्ण प० पर्यव गं० गंध र० रस फा० स्पर्श अ० अनंत सं०

सूत्र खेत्तओणं लोए असंखेज्जाओ जोयण कोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं, असंखेज्जाओ जोयण कोडाकोडीओ परिक्खेवेणं पण्णत्ता, अत्थि पुण सेअंते. ॥ कालओणं लोए न कयाइ न आसि, न कदाइ न भवइ, न कदाइ न भविस्सइ, भुविंसु य, भवतिय, भाविस्सइय धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चं, णात्थिपुणसे अंते, भावओणं लोए अणंतावण्ण पज्जवा, गंधरसफास, अणंता संठाण पज्जवा, अणंता गुरुय लहुय

भावार्थ है और परिधि भी उस की असंख्यात योजन की है ताहंपि वह लोक अंत सहित है. काल से, पहिला लोक नहीं था वैसा नहीं, वर्तमान में नहीं है वैसा नहीं, भविष्य में नहीं होगा वैसा नहीं; परंतु अतीतकाल में था, वर्तमान में है और भविष्य में होगा. और भी वह ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित व नित्य है. इसलिये कालसे लोक का अंत नहीं है. भाव से लोक के अनंत वर्ण पर्यव गंध, रस व स्पर्श

शब्दार्थ लोक जा० यावत् म० मेरी अं० पास ह० शीघ्र आ० आया से० वह खं० खंदक अ० अर्थ स० समर्थ है० हां अ० है खं० खंदक ए० ऐसा अ० आत्मविषय में चिं० चिंतवन प० प्रार्थनारूप म० मनोगत सं० संकल्प स० उत्पन्न हुवा किं० क्या स० अंतसहित लोक अ० अनंतलोक त० उस का अ० यह अर्थ म० मैंने खं० खंदक च० चार प्रकार का प० प्ररूपा द० द्रव्य से खे० क्षेत्र से का० काल से भा० भाव से द० द्रव्य से ए० एक लो० लोक स० अंतसहित खे० क्षेत्र से लो० लोक अ० असंख्यात जो० योजन

सूत्र ए तेणेव हव्वमागए। सेणूणं खंदया! अट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि॥ जेविय ते खंदया! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, किं सअंतेलोए अणंतेलोए तस्सावियणं अयमट्ठे, एवं खलुमए खंदया! चउव्विहे लोए पण्णत्ते तंजहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ. । दव्वओणं एगेलोए सअंते,॥

भावार्थ पास आया है तो क्या यह बात सत्य है? खंदक बोले हां यह सत्य है. अहो खंदक! तेरे मन में ऐसा अध्यवसाय, चिन्तवन, मनन, व मनोगत संकल्प उत्पन्न हुवा कि क्या अंत सहित लोक है या अंत रहित लोक है. परंतु अहो स्कंदक! मैं लोक को इस प्रकार प्ररूपता हूं. लोक के चार भेद कहे हैं. द्रव्यसे, क्षेत्रसे, कालसे व भाव से. द्रव्य से पंचास्तिकायरूप एक, वह द्रव्य तत्त्व से अंत सहित है, क्षेत्र से सब लोक का मध्य मेरुपर्वत है उससे वह ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् दिशा की लम्बाइ व चौडाइ में असंख्यात योजन का

शब्दार्थ अवगाहिक अ० है से० उसका अं० अंत का० काल से जी० जीव न० नहीं क० कदापि नहीं हुवा णि० नित्य न० नहीं है से० उसका अं० अंत भा० भाव से जी० जीव अ० अनंत ना० ज्ञान पर्यव अ० अनंत द० दर्शन पर्यव अ० अनंत च० चारित्र पर्यव अ० अनंत गु० गुरुलघु पर्यव अ० अनंत अ० अगुरुलघु पर्यव न० नहीं है से० उसका अं० अंत द० द्रव्य से जी० जीव स० अंतसहित खे० क्षेत्र से स० अंतसहित का० काल से अ० अनंत भा० भाव से जी० जीव अ० अनंत ॥ १७ ॥ जे० जो खं०

सूत्र नत्थि पुणसे अंते, भावओणं जीवे अणंता णाणपज्जवा, अणंता दंसण पज्जवा, अणंता चारित्तपज्जवा, अणंता गुरुय लहुय पज्जवा, अणंता अगुरुय लहुय पज्जवा, नत्थि पुण से अंते । सेत्तं दव्वओ जीवे सअंते, खेत्तओ जीवे सअंते, कालओजीवे अणंते, भावओ जीवे अणंते ॥ १७ ॥ जेवियणं तेखंदया पुच्छा अंतासिद्धी,

भावार्थ ख्यात प्रदेशात्मक है इसलिये अंत सहित है, कालसे जीव पहिले नहीं था वैसा नहीं, नहीं है वैसा नहीं व नहीं होगा वैसा नहीं, परंतु अतीत कालमें था, वर्तमानमें है और आगामिकमें होगा, वैसे ही वह नित्य, शाश्वत है, इसलिये काल से जीव अंत रहित है. भावसे जीव को अनंत ज्ञान पर्यव, अनंत दर्शन पर्यव, अनंत चारित्र पर्यव, अनंत गुरुलघु पर्यव है, इसलिये जीव अंत रहित है. इस तरह द्रव्यसे जीव अंत सहित है, क्षेत्र से जीव अंत सहित है, काल से व भाव से जीव अंत रहित है ॥ १७ ॥ अहो खंदक !

शब्दार्थ

संस्थान प०पर्यव अ०अनंत गु०गुरुलघुके प०पर्यव अ०अनंत अ०अगुरुलघु पर्यव न०नहीं है से०उस का अं० अंत खं० खंदक द० द्रव्य से लो० लोक अ० अंतसहित खे० क्षेत्र से लो० लोक स० अंतसहित का० काल से लो० लोक अ० अनंत भा० भाव से लो० लोक अ० अनंत ॥ १९ ॥ खं० खंदक जा० यावत् स० अंतसहित जी० जीव अ० अनंत जीव त० उस का अ० यह अर्थ जा० यावत् द० द्रव्य से ए० एक जीव स० अंतसहित खे० क्षेत्र से जी० जीव अ० असंख्यात प० प्रदेशिक अ० असंख्यात प्रदेश

सूत्र

पज्जवा, अणंता अगुरुयलहुयपज्जवा, नात्थपुणसे अंते ॥ सेत्तं खंदया ! दव्वओ लोगसअंते, खेत्तओलोए सअंते, कालओ लोए अणंते, भावओ लोए अणंते ॥ १९ ॥ जेविय ते खंदया ! जाव सअंतेजीवे अणंतेजीवे, तस्सवियणं अयमट्ठे एवं खलु जाव दव्वओणं एगेजीवे सअंते, खेत्तओणं जीवे असंखेज्ज पएसिए, असंखेज्ज पएसोगाढे, अत्थिपुण से अंते, कालओणं जीवे नकदाइ न आसि निच्चे

भावार्थ

पर्यव, अनंत संठान पर्यव, अनंत गुरुलघु पर्यव, व अनंत अगुरुलघु पर्यव है. इसलिये भावसे लोक अनंत है. इसतरह से अहो स्कंदक ! द्रव्यसे लोक अंत सहित, क्षेत्रसेभी अंत सहित, कालसे व भाव से लोक अनंत है ॥ १९ ॥ अहो स्कंदक ! जीव अंत सहित है या अंत रहित है उस प्रश्न के उत्तर में जीव के चार भेद कहे हैं द्रव्य से, क्षेत्रसे, कालसे व भावसे, द्रव्य से एकही जीव है वह द्रव्य से अंत सहित है. क्षेत्रसे असं-

शब्दार्थ अवगाहिक अ० है मे० उसका अं० अंत का० काल से जी० जीव न० नहीं क० कदापि नहीं हुवा णि० नित्य न० नहीं है से० उसका अं० अंत भा० भाव से जी० जीव अ० अनंत ना० ज्ञान पर्यव अ० अनंत द० दर्शन पर्यव अ० अनंत च० चारित्र पर्यव अ० अनंत गु० गुरुलघु पर्यव अ० अनंत अ० अगुरुलघु पर्यव न० नहीं है से० उसका अं० अंत द० द्रव्य से जी० जीव स० अंतसहित खे० क्षेत्र से स० अंतसहित का० काल से अ० अनंत भा० भाव से जी० जीव अ० अनंत ॥ १७ ॥ जे० जो खं०

सूत्र नत्थि पुणसे अंते, भावओणं जीवे अणंता णाणपज्जवा, अणंता दंसण पज्जवा, अणंता चरित्तपज्जवा, अणंता गुरुय लहुय पज्जवा, अणंता अगुरुय लहुय पज्जवा, नत्थि पुण से अंते । सेत्तं दव्वओ जीवे सअंते, खेत्तओ जीवे सअंते, कालओजीवे अणंते, भावओ जीवे अणंते ॥ १७ ॥ जीवेयणं तेखंदया पुच्छा अंतासिद्धी,

भावार्थ ख्यात प्रदेशात्मक है इसलिये अंत सहित है, कालसे जीव पहिले नहीं था वैसा नहीं, नहीं है वैसा नहीं व नहीं होगा वैसा नहीं, परंतु अतीत कालमें था, वर्तमानमें है और आगामिकमें होगा, वैसे ही वह नित्य, शाश्वत है, इसलिये काल से जीव अंत रहित है. भावसे जीव को अनंत ज्ञान पर्यव, अनंत दर्शन पर्यव, अनंत चारित्र पर्यव, अनंत गुरुलघु पर्यव है, इसलिये जीव अंत रहित है. इस तरह द्रव्यसे जीव अंत सहित है, क्षेत्र से जीव अंत सहित है, काल से व भाव से जीव अंत रहित है ॥ १७ ॥ अहो खंदक !

शब्दार्थ खंदक पु० पृच्छा अं० अंत सहित सि० सिद्धि अ० अनंत सिद्धि त० उनका अ० यह अ० अर्थ म० मैंने च० चार प्रकार की सि०सिद्धि प० प्ररूपी द० द्रव्य से ए०एकसिद्धि स०अंतसहित खे० क्षेत्र से प० पैंतालीस जो० योजन स० लक्ष आ० लंबी वि० चौडी ए० एक जो० योजन क्रोड बा० बीयालीस स० लक्ष ती० तीस स० सहस्र दो० दो उ० इगुणपच्चास जो० योजन स० शत किं० किंचित् वि० विशेषाधिक प० परिधि में प० प्ररूपी अ० है से०उसका अं०अंत का०काल से सि० सिद्धि न०नहीं क०कदापि न०नहीं

सूत्र अणंतासिद्धी, तस्सवियएण अयमट्ठे, मए चउव्विहासिद्धी पं० तं० दव्वओ खेत्तओ, कालओ, भावओ. दव्वओणं एगासिद्धी, सअंता । खेत्तओणंसिद्धी पणयालीस जोयणसयसहस्साइं आयाम विक्खंभेणं, एगाजोयण कोडी बायालीसं सयसहस्साइं तीसंच सहस्साइं दोण्णियअ उणापण्णे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता, अत्थिपुणसे अंते, कालओणंसिद्धी नकदाइनआसि, ॥ भावओय जहा

भावार्थ तुम को सिद्ध शिला अंत सहित है या अंत रहित है ऐसा प्रश्न पुछाथा उस का भी यह अर्थ है. सिद्धशिला चार प्रकार की कही है. द्रव्य से सिद्धशिला एक होने से अंत सहित है, क्षेत्र से सिद्धशिला ४५ लाख योजन की लम्बी व चौडी, वैसेही १४२३०२४९ से कुच्छ अधिक परिधि होने से अंत रहित है. काल से भूत भविष्य व वर्तमान ऐसे तीनों काल में शाश्वत होने

शब्दार्थ आ०श्री भा०भाव से ज० जैसे लो० लोक का त० तैसे भा० कहना त० उस में द्रव्य से सि० सिद्धि स० अंतसहित खे० क्षेत्र से स०अंतसहित का०काल से अ०अनंत भा०भाव से अ०अनंत॥१८॥ जे० जो खं० खंदक जा० यावत् किं० क्या अ० अनंत सिद्ध जा० यावत् द० द्रव्य से ए० एकसिद्ध स० अंतसहित खे० क्षेत्र से सि० सिद्ध अ० असंख्यात प्रदेशात्मक अ० असंख्यात प० प्रदेशावगाहिक अ० है अं० अंत

सूत्र लोयस्स तहा भाणियव्वा। तत्थ दव्वओसिद्धी सअंता, खेत्तओसिद्धी सअंता, कालओ सिद्धी अनंता भावओ सिद्धी अणंता॥ १८॥जेवियतेखंदया! जाव किं अनंते सिद्धे तंचेव जाव दव्वओणं एगे सिद्धे सअंते,खेत्तओणं सिद्धे असंखेज्ज पएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे, आत्थिपुण अंते. कालओणं सिद्धे सादीए अपजवसिए नात्थिपुणसे अंते, भाव

भावार्थ से अंतरहित है, और भाव से अंनत वर्ण, गंध रस व स्पर्श के पर्यव, अनंत संठानादिक अनंत गुरुलघु व अनंत अगुरुलघु के पर्यव होने से अंत रहित है. इस तरह सिद्ध शिला द्रव्यव क्षेत्रसे अंत सहित है, और काल व भाव से अंत रहित है. ॥ १८ ॥ अहो खंदक सिद्ध अंत सहित है या अनंत है उस के प्रश्न के उत्तर में सिद्ध के पूर्वोक्त प्रकार के द्रव्यादिचार भेद कहे हैं. द्रव्य से सिद्ध एक होने से अंत सहित है, क्षेत्रसे असंख्यात प्रदेशात्म सिद्ध होने से भी अंत सहित है, काल से एक सिद्ध आश्री आदि सहित व अंत रहित है इसलिये अनंत है और भाव से अनंत

शब्दार्थ खंदक पु० पृच्छा अं० अंत सहित सि० सिद्धि अ० अनंत सिद्धि त० उनका अ० यह अ० अर्थ म० मैंने च० चार प्रकार की सि०सिद्धि प० प्ररूपी द० द्रव्य से ए०एकसिद्धि स०अतंसहित खे० क्षेत्र से प० पैंतालीस जो० योजन स० लक्ष आ० लंबी वि० चौडी ए० एक जो० योजन क्रोड बा० बीयालीस स० लक्ष ती० तीस स० सहस्र दो० दो उ० इगुणपचास जो० योजन स० शत किं० किंचित् वि० विशेषाधिक प० परिधि में प० प्ररूपी अ० है से०उसका अं०अंत का०काल से सि० सिद्धि न०नहीं क०कदापि न०नहीं

सूत्र अणंतासिद्धी, तस्सवियएणं अयमट्ठे, मए चउव्विहासिद्धी पं० तं० दव्वओ खेत्तओ, कालओ, भावओ. दव्वओणं एगासिद्धी, सअंता । खेत्तओणंसिद्धी पणयालीस जोयणसयसहस्साइं आयाम विक्खंभेणं, एगाजोयण कोडी बायालीसं सयसहस्साइं तीसंच सहस्साइं दोण्णियअ उणापण्णे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता, अत्थिपुणसे अंते, कालओणंसिद्धी नकदाइनआसि, ॥ भावओय जहा

भावार्थ तुम को सिद्ध शिला अंत सहित है या अंत रहित है ऐसा प्रश्न पुछाथा उस का भी यह अर्थ है. सिद्धशिला चार प्रकार की कही है. द्रव्य से सिद्धशिला एक होने से अंत सहित है, क्षेत्र से सिद्धशिला ४५ लाख योजन की लम्बी व चौडी, वैसेही १४२३०२४९ से कुच्छ अधिक परिधि होने से अंत रहित है. काल से भूत भविष्य व वर्तमान ऐसे तीनों काल में शाश्वत होने

शब्दार्थ दु० दोप्रकार के म० मरण वा० बाल मरण प० पंडित मरण किं० कैसे वा० वाल मरण वा० बाल मरण दु० बारह प्रकारका व० क्षुधासे मरण व० इन्द्रिय वश मरण अं० अंतः शल्यमरण त० तद्भवमरण गि० गिरिपडन त० तरुपडन ज० जल प्रवेश ज० अग्निप्रवेश वि० विप भक्षण स० शस्त्र से मरना वे० फांसी देकर गि० गृद्ध के पृष्ट में प्रवेश करना खं० खंदक दु० बारह प्रकारका वा० वालमरण से म० मरता जी०

सूत्र तस्सावियणं अयमट्ठे एवं खलु खंदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते तंजहा-बालमरणेय, पंडियमरणेय. । से किं तं बालमरणे ? बालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते तंजहा वलयमरणे, वसट्टमरणे, अंतोसल्लमरणे, तब्भवमरणे, गिरिपडणे, तरुपडणे, जलप्पवेसे, जलणप्पवेसे विसभक्खणे, सत्थोवाडणे, वेहाणसे, गिद्धपिट्ठे । इच्चेएणं खंदया ? दुवालस-विहेणं बालमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइय भवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ;

भावार्थ तिर्यंच होना सो तद्भव मरण ५ पर्वत से पडकर मरना सो गिरिपडण मरण ६ वृक्ष से गिरकर मरना सो तरुपडण मरण ७ पानी में प्रवेश कर मरे सो जलप्रवेश मरण ८ अग्नि में प्रवेश कर मरना सो जलन प्रवेश मरण ९ विप खाकर मरना सो विप भक्षण मरण १० शस्त्रसे छेदकर मरना ११ वृक्षकी शाखादिक से फांसी खाकर मरना सो वेहानस और १२ गृद्धप्रमुख के मृतक शरीर में प्रवेश कर मरना. इस तरह बारह प्रकार के व अन्य भी बाल मरण से जीव अनंत बार नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव का भव ग्रहण करता

शब्दार्थ का० काल से सिद्ध सा० सादी अ० अपर्यवसित न०नहीं है पु० फीर मे० उसका अं० अंत भा० भाव से सि० सिद्ध अ० अनंत णा० ज्ञान पर्यव दं० दर्शन पर्यव अ० अगुरुलघु पर्यव न० नहीं है से० उसका अं० अंत॥१९॥ खं० खंदक ए० एतारूप अ० आत्मविषय चिं० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा के० किस म० मरण जी० जीव व० वृद्धि पावे हा० हीनपावे त० उसका अ० यह अर्थ खं० खंदक मे० मैंने

सूत्र ओणं सिद्धे अणंता णाणपज्जवा अणंता दंसणपज्जवा, अणंता अगुरुलहुय पज्जवा, नत्थिपुण से अंते ॥ सेत्तं दव्वओ सिद्धे सअंते, खेत्तओ सिद्धे सअंते, कालओ सिद्धे अणंते, भावओ सिद्धे अणंते ॥१९॥ जे विय ते खंदया ! इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था केणवा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्डइवा, हायइवा, ।

भावार्थ ज्ञानपर्यव, दर्शनपर्यव; व अनंत अगुरुलघु पर्यव होने से अंत रहित है. इस तरह सिद्ध द्रव्य क्षेत्र से अंत सहित व काल भाव से अंत रहित है ॥ १९ ॥ अहो खंदक ! तुम को ऐसा विचार हुवा कि किस मरण से जीव संसारकी वृद्धि या हानि कर सकता है ? अहो खंदक ! मरण दो प्रकार के कहे है बाल मरण व पंडित मरण. उस में से बाल मरण के बारह भेद कहे हैं १ धर्म से भ्रष्ट होकर या क्षुधा से बलबलाट करता मरन मरे सो वलय मरण २ इन्द्रियों के वश में पडकर मरे सो वशट मरण ३ अंतःकरण में शल्य रखकर मरे सो अंतःशल्य मरण ४ मनुष्य मरकर मनुष्य होना व

शब्दार्थ दु० दोप्रकार के म० मरण वा० बाल मरण प० पंडित मरण किं० कैसे वा० बाल मरण वा० बाल मरण दु० बारह प्रकारका व० क्षुधासे मरण व० इन्द्रिय वश मरण अं० अंतः शल्यमरण त० तद्भवमरण गि० गिरिपडन त० तरुपडन ज० जल प्रवेश ज० अग्निप्रवेश वि०विष भक्षण स० शस्त्र से मरना वे० फांसी देकर गि० गृद्ध के पृष्ट में प्रवेश करना खं० खंदक दु० बारह प्रकारका वा० बालमरण से म० मरता जी०

सूत्र तस्सावियणं अयमट्ठे एवं खलु खंदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते तंजहा-बालमरणेय, पंडियमरणेय. । से किं तं बालमरणे ? बालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते तंजहा वलयमरणे, वसट्टमरणे, अंतोसल्लमरणे, तब्भवमरणे, गिरिपडणे, तरुपडणे, जलप्पवेसे, जलणप्पवेसे विसभक्खणे, सत्थोवाडणे, वेहाणसे, गिद्धपिट्ठे । इच्चेएणं खंदया ? दुवालसविहेणं बालमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइय भवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ;

भावार्थ तिर्यंच होना सो तद्भव मरण ५ पर्वत से पडकर मरना सो गिरिपडण मरण ६ वृक्ष से गिरकर मरना सो तरुपडण मरण ७ पानी में प्रवेश कर मरे सो जलप्रवेश मरण ८ अग्नि में प्रवेश कर मरना सो जलन प्रवेश मरण ९ विष खाकर मरना सो विष भक्षण मरण १० शस्त्रसे छेदकर मरना ११ वृक्षकी शाखादिक से फांसी खाकर मरना सो वेहानस और १२ गृद्धप्रमुख के मृतक शरीर में प्रवेश कर मरना. इस तरह बारह प्रकार के व अन्य भी बाल मरण से जीव अनंत बार नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव का भव ग्रहण करता

शब्दार्थ जीव अ० अनंत ने० नारकी भवग्रहण से अ० आत्मा को सं० योजे ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव अ० अनादि अ० अनंत दी० दीर्घकाल चा० चतुर्गति सं० संसार कं० कंतार में अ० परिभ्रमण करे से० वह किं० कैसे पं० पंडित मरण पं० पंडितमरण दु० दोप्रकार का पा० पादोपगमन भ० भक्तप्रत्याख्यान पा० पादोपगमन दु० दोप्रकार नी० नीहारिम अ० अनीहारीम नि० निश्चय अ० प्रतिक्रमण रहित से०

सूत्र तिरिय मणुदेव अणाइयंचणं अणवदग्गं दीहद्धं, चाउरंत संसारकंतारं अणुपरियट्टइ. सेतं बालमरणेणं मरमाणे वड्ढइ । सेत्तं बालमरणे ॥ से किं तं पंडियमरणे ? पंडियमरणे ! दुविहे प० तं० (ग्रंथ संख्या १०००) पाओवगमणेय भत्त पच्चक्खाणेय । से किं तं पाओवगमणे ? पाओवगमणे ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-नीहारिमेय, अनीहा-

भावार्थ है व अनादि अनंत चतुर्गतिक संसार में पर्यटन करता है. इसलिये बाल मरण से संसार की वृद्धि होती है. पंडित मरण क्या है ? पंडित मरण के दो भेद कहे हैं. १ पादोपगमन अर्थात् वृक्ष की गिरी हुई शाखा की तरह अपने शरीर को स्थिर करे २ भक्त प्रत्याख्यान सो जीवन पर्यंत अशनादि चारों आहार का त्याग करे. उसमें से प्रथम पादोपगमन के दो भेद कहे हैं १ नीहारिम सो नगरमें मरे. उन के शरीर का निहारन (संस्कार) होवे और २ अनीहारिम. पर्वतादिक में करे. उन के शरीर का निहारन (संस्कार) होवे नहीं. पादोपगमन मरण मरने वाला प्रतिक्रमण नहीं करता है क्यों कि वह हलन चलनादि क्रिया

पदार्थ वह पा० पादोपगमन भ० भक्त प्रत्याख्यान दु० दोप्रकार का नी० नीहारिम अ० अनीहारिम नि० निश्चय स० प्रतिक्रमण भ० भक्त प्रत्याख्यान खं० खंदक दु० दोप्रकार का पं० पंडित मरण से म० मरता जी० जीव अ० अनंत ने० नारकी भ० भव से अ० आत्मा को वि० पृथक्करे जा० यावत् वी० तीरे इ० इन खं० खंदक दु० दोप्रकार के म० मरण से म० मरता जीव व० वृद्धि पावे हा० हानीपावे ॥ २० ॥ से०

सूत्र रिमेय. नियमा अपडिक्कमे. सेत्तं पाओवगमणे । से किं तं भत्तपच्चक्खाणे ? भत्तपच्चक्खाणे दुविहे प० तं० नीहारिमेय, अनीहारिमेय, नियमा सपडिक्कमे. सेत्तं भत्त पच्चक्खाणे इच्चेतेणं खंदया ! दुविहेणं पंडियमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइय भवग्गहणेहिं अप्पाणं विसंजोएइ जाव वीयीवियइ. सेतं मरमाणे हायइ. सेतं पंडियमरणे ॥ इच्चेएणं खंदया ! दुविहेणं मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढइ वा, हायइ वा॥ २०॥

भावार्थ नहीं करता है. भक्त प्रत्याख्यान के दो भेद कहे हैं नीहारिम और अनीहारिम. यह प्रतिक्रमण करता है क्यों कि इन को हलन चलनादि क्रिया होती है. इस तरह अहो खंदक! दो प्रकार के पंडित मरण मरने वाला नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव के भव में अनंतवार उत्पन्न नहीं होता है यावत् संसार में परिभ्रमण नहीं करता है. इसतरह मरण मरने वाला संसार का क्षय करता है. अहो खंदक! ऐसे दो मरण मरनेसे जीव संसार की वृद्धि व हानि करता है. ॥ २० ॥ इस तरह उत्तर सुनकर कात्यायन गोत्रीय खंदक परिव्राजक

शब्दार्थ — वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय सं० संबुद्ध स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदन कर न० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छता हूं भं० भगवन् तु० तुमारी अं० पास के० केवली प० प्ररूपा धर्म को नि० धारने को अ० यथासुख दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंध करो त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय ती० उस म० बडी म० महान् प०परिपदामें ध०धर्म प०कहा ध०धर्म कथा भा०कही॥२१॥ त०तब से०वह खं०खंदक क०कात्यायन गोत्रीय

सूत्र — एत्थणं से खंदए कच्चायण सगोत्ते संबुद्धे ! समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, नमंसइत्ता एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुज्झं अंतिए केवली पन्नत्तं धम्मं निसामित्तए. अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंधं ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे खंदयस्स कच्चायण सगोत्तस्स तीसेयमहइ महालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ. धम्मकहा भाणियव्वा

भावार्थ — प्रति बोध पाये और श्री श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर कहने लगे कि अहो भगवन् ! आप की समीप केवली प्ररूपित धर्म सुनने को मैं चाहता हूं. अहो देवानुप्रिय ! जैसा तुम को सुख होवे वैसा करो, विलम्ब मत करो. उस समय श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी ने उस महती परिषदा में खंदक परिव्राजक को धर्म कथा कही.॥ २१ ॥ उस समय कात्यायन गोत्रीय खंदक ने महावीर स्वामी की

शब्दार्थ स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीरकी अं० पास ध० धर्म सो० सुनकर नि० अवधारकर हृ० हृष्ट तु०तुष्ट जा० यावत् ह० हर्षहुवा हि० हृदयमें उ० स्थान से उ० खडे हुवे उ० खडे होकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को ति० तीनवार आ० आदान प० प्रदक्षिणा की क० करके ए० ऐसा व० बोले स० श्रद्धताहूं भं० भगवन् नि० निर्ग्रंथ पा० प्रवचन को प० प्रतीत करता हूं रो० रुचि करता हूं अ० उद्यम-करता हूं ए० ऐसे ही भं० भगवन् त० तैसे भं० भगवन् अ० सत्य अ० संदेहरहित इ० इच्छित प०

सूत्र तएणंसे खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हयहियए उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेइत्ता समणं भगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ करेइत्ता एवंवयासी, सद्दहामिणं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामिणं भंते निग्गंथं पावयणं रोएमिणं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमिणं भंते ! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयंभंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छिय

भावार्थ समीप धर्म सुनकर व अवधार कर अत्यंत हर्षित हुए. और तत्काल उठकर श्रमण भगवंत महावीर को तीन आदान प्रदक्षिणा कर के ऐसा कहा कि अहो भगवन् ! निर्ग्रन्थ वचन को मैं श्रद्धता हूं, उन की रुचि करता हूं, उन प्रवचनों की मैं प्रतीति करता हूं, उन प्रवचनों में मैं उद्यमवन्त बना हुआ हूं, अहो भगवन्! निर्ग्रंथ प्रवचन वैसे ही यथायोग्य है, संदेह रहित, इष्ट है. प्रतीच्छित है. ऐसा कहकर श्री महावीर स्वामी

शब्दार्थ यह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय सं० संबुद्ध स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदन कर न० नमस्कारकर ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छता हूं भं० भगवन् तु० तुमारी अं० पास के० केवली प० प्ररूपा धर्म को नि० धारने को अ० यथासुख दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंध करो त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय तीं० उस मं० बडी म० महान् प० परिषदामें ध० धर्म प० कहा ध० धर्म कथा भा० कही॥२१॥ त० तब से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय

सूत्र एत्थणं से खंदए कच्चायण सगोत्ते संबुद्धे ! समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, नमंसइत्ता एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुज्झं अंतिए केवली पन्नत्तं धम्मं णिसामित्तए. अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंधं ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे खंदयस्स कच्चायण सगोत्तस्स तीसेयमहइ महालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ. धम्मकहा भाणियव्वा

भावार्थ प्रति बोध पाये और श्री श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर कहने लगे कि अहो भगवन् ! आप की समीप केवली प्ररूपित धर्म सुनने को मैं चाहता हूं. अहो देवानुप्रिय ! जैसा तुम को सुख होवे वैसा करो, विलम्ब मत करो. उस समय श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी ने उस महती परिषदा में खंदक परिव्राजक को धर्म कथा कही.॥ २१ ॥ उस समय कात्यायन गोत्रीय खंदक ने महावीर स्वामी की

शब्दार्थ कोई गा० गाथापति आ० गृह में जि० जलते जे० जो त० तहां भं० भंडोपकरण भ० होवे अ० अल्पभार मो० बहुमूल्यवाली तं० उस को ग० ग्रहणकर आ० आत्मा से ए० एकान्त अ० अतिक्रमे. ए० यह नि० निकालते प० पीछे पु० पहिले हि० हितके लिये सु० सुख के लिये ख० क्षमाकेलिये नि० मुक्तिकेलिये अ० अनुगामिक भ० होगा ए० ऐसा दे०देवानुप्रिय म० मेरा आ०आत्मा ए० एकभंड इ० इष्ट कं० कान्त पि० प्रिय म० मनोज्ञ म० मनाम धि० धैर्य वि० विश्वास स० स्वमत व० बहुमत अ० अनुमत भं० आभरण क०

सूत्र आलित्तेणं भंते ! लोए पलित्तेणं भंते ! लोए, आलित्तपलित्तेणं भंते ! लोए जराए मरणेणय से जहा नामए केइ गाहावई आगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगुरुए तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ, एस मे नित्थारिए समाणे पच्छापुराए हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ. एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झवि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे धिज्जे विस्सासिए

भावार्थ बना हुवा देखकर उस में जो अल्प भार व बहुत मूल्यवाली वस्तु होती हैं उन्हें नीकालता है, और नीकाल कर एकान्त स्थान में रखता है. और ऐसा विचारता है कि इस अग्नि में से नीकाली हुई वस्तु पीछे से हित, सुख, कल्याण की कर्ता व दारिद्र्य को हरनेवाली होगी. इस प्रकार अहो देवानुप्रिय ! मुझे, मेरा आत्मारूप एक बहु मूल्य पदार्थ इष्टकारी, प्रियकारी, मनोज्ञ, मन को गमता, धैर्यता, स्थिरता व

शब्दार्थ विशेष इच्छित से० यह ज० जैसे तु० तुम व०कहते हो त्ति०ऐसाकरके स०श्रमण भ० भगवन्त म०महावीरको वं०वंदनाकर न० नमस्कार करे उ० ईशान कोन में अ० आकर ति० त्रिदंड कुं० कमंडल जा० यावत् धा० धातु से रक्त वस्त्र ए० एकान्त में ए०रखकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते०तहां आ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को ति० तीन वार आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करके जा० यावत् न० नमस्कार कर आ० आदीप्त हुवे लो०लोक प०प्रदीप्त हुवे ज०जरा म०मरण से ज०जैसे के०

सूत्र

मेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छियपडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुज्झे वदह-त्तिकट्टु, समणंभगवं महावीरं वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता, णमंसइत्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभायं अवक्कमइ, अवक्कमइत्ता तिदंडंच कुंडियंच जाव धाउरत्ताउय एगंते एडेइ एडेइत्ता जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं तिखुत्तो आदाहिणपयाहिणंकरेइ करेइत्ता जाव नमंसइत्ता एवं वयासी,

भावार्थ को वंदना नमस्कार कर के ईशान कोन में गया. वहां जाकर त्रिदंड कमंडल यावत् गेरु से रंगे हुवे वस्त्रों को एकान्त में रखकर श्रमण भगवन्त महावीर की पास आया. वहां आकर महावीर भगवन्त को तीन आदान प्रदक्षिणा की. प्रदक्षिणा कर यावत् नमस्कार कर ऐसा बोले की अहो भगवन्! यह जीवलोक जरा व मरण से ज्वलित बना हुवा है. जैसे कोई गृहपति अपने घर को अग्नि से प्रज्वलित

शब्दार्थ कोई गा० गाथापति आ० गृह में जि० जलते जे० जो त० तहां भं० भंडोपकरण भ० होवे अ० अल्पभार मो० बहुमूल्यवाली तं० उस को ग० ग्रहणकर आ० आत्मा से ए० एकान्त अ० अतिक्रमे. ए० यह नि० निकालते प० पीछे पु० पहिले हि० हितके लिये सु० सुख के लिये ख० क्षमाकेलिये नि० मुक्तिकेलिये अ० अनुगामिक भ० होगा ए० ऐसा दे०देवानुप्रिय म० मेरा आ०आत्मा ए० एकभंड इ० इष्ट कं० कान्त पि० प्रिय म० मनोज्ञ म० मनाम धि० धैर्य वि० विश्वास स० स्वमत ब० बहुमत अ० अनुमत भं० आभरण क०

सूत्र आलित्तेणं भंते ! लोए पलित्तेणं भंते ! लोए, आलित्तपलित्तेणं भंते ! लोए जराए मरणेणय से जहा नामए केइ गाहावई आगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगुरुए तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ, एस मे नित्थारिए समाणे पच्छापुराए हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ. एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झवि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे धिज्जे विस्सासिए

भावार्थ बना हुवा देखकर उस में जो अल्प भार व बहुत मूल्यवाली वस्तु होती हैं उन्हें नीकालता है, और नीकाल कर एकान्त स्थान में रखता है. और ऐसा विचारता है कि इस अग्नि में से नीकाली हुई वस्तु पीछे से हित, सुख, कल्याण की कर्ता व दारिद्य को हरनेवाली होगी. इस प्रकार अहो देवानुप्रिय ! मुझे, मेरा आत्मारूप एक बहु मूल्य पदार्थ इष्टकारी, प्रियकारी, मनोज्ञ, मन को गमता, धैर्यता, स्थिरता व

शब्दार्थ भाजन अ० जैसे मा० मत सी० शीत उ० ऊष्ण खु० क्षुधा पि० तृषा चो० चोर वा० सर्प दं० दंस म० मशक वा० वात पि० पीत सं० श्लेष्म स० स० सन्निपात वि० विविध रो० रोग आ० आतंक प० परिषह उ० उपसर्ग फ० स्पर्श वि० ऐसा क० करके नि० निकालते प० परलोक का हि० हितकेलिये सु० सुख केलिये ख० क्षमाकेलिये नि० मुक्तिके हेतु अ० अनुगामिक भ० होंगे ते० उसको इ० इच्छता हूं दे० देवानुप्रिय स० स्वतः प० प्रव्रजित मुं० मुंडहोकर से० शिक्षा ग्रहणकर सि० शिक्षा

मूल समए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे माणंसीयं, माणंउण्हं, माणंखुहा माणंपिवासा, माणंचोरा, माणंवाला, माणंदंसा, माणंमसगा माणंवाइय-पित्तिय-संभिय-साण्णिवाइय-विविहारोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु, एस नित्थारियसमाणे परलोयस्स हियाए,सुहाए,खमाए,निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ,तं इच्छामिणं देवाणुप्पिया! सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खावियं, सय-

भावार्थ विश्वास का कर्ता है. आत्मकृत कार्य के सम्मतपने से बहुमत व अनुमत है. आभरण के करंडिये समान है. इसे मैंने शीत, ऊष्ण, क्षुधा, तृषा चोर, सर्प, दंश, मशक, वात, पित्त, कफ, संनिपात आदि मारणान्तिक उपसर्ग व परिषह से बचाया है. इस आदीप्त प्रदीप्त में मेरा आत्मा की मैं रक्षा करूंगा. यह मुझे इस लोक व परलोक में हित, सुख, कल्याण, क्षमा, निस्तार के कर्ता व अनुगामी होगा. वैसे ही मुक्ति

शब्दार्थ — आ० आचार गो० गोचर वि० विनय वे० करता च० चरण क० करण जा० संयम यात्रा मा० मर्यादा ध० धर्म आ० कहो त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय को स० स्वतःने प० प्रव्रजा दी जा० यावत् ध० धर्म आ० कहा ए० ऐसा दे० देवानुप्रिय चि० खडा रहना गं० जाना ए० ऐसे नि० बैठना तु० सोना भुं० भोजन करना भा० बोलना ए० ऐसे उ० उठकर पा० प्राण भू० भूत

सूत्र — मेवआयारगोयरं विणय वेणयिय चरणकरण जाया मायावत्तियं धम्ममाइक्खियं तएणं समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्तं सयमेव पव्वावेइ, जाव धम्म: माइक्खाइ एवं देवाणुप्पिया ! चिट्ठियव्वं, गंतव्वं, एवं निसीइयव्वं, एवं तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं, एवं भासियव्वं, एवं उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं, भूतेहिं, जीवेहिं, सत्तेहिं

भावार्थ — देनेवाला होगा. इसलिये अहो देवानुप्रिय ! मैं स्वयं मुंडित होने को, आचार क्रिया करने को, सूत्रार्थ ग्रहण करने को, आचार, गोचर, विनय करने को, चरण, करण [illegible] की मर्यादा करने को और जैसे आप धर्म कहते हो वैसा अंगीकार करने को वांच्छता हूं. तब श्री श्रमण भगवन्तने दीक्षा दी यावत् सब जिन धर्मका स्वरूप कहा कि अहो देवानुप्रिय खंदक ! युग प्रमाण भूमि देखकर चलना, ऐसे ही निर्गम प्रवेश रूप स्थान देखकर खडे रहना, भूमि पूंजकर बैठना, यत्नापूर्वक शयन करना, यत्नापूर्वक भोजन करना

शब्दार्थ जी० जीव स० सत्व सं० संयम से सं० यतना करना अ० इस अ० अर्थ केलिये णो० नहीं किं० किंचित् प० प्रमाद करना ॥ २१ ॥ त० तब से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का ए० ऐसा ध० धर्म उ० उपदेश स० सम्यक् सं० अंगीकार किया त० उस आ० आज्ञाको त० जैसे ग० जावे चि० रहे नि० बैठे तु० सोवे भुं० भोजनकरे भा० बोले उ० खडाहोवे पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्व सं० संयम मं० यत्नकरे अ० इस अ० अर्थ में णो० नहीं प० प्रमादकरे

सूत्र संजमेणं संजमियव्वं. अस्सिंचणं अट्ठे णोकिंचि पमाइयव्वं. ॥ २१ ॥ तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इमं एयारूवं धाम्मियं उवएसं सम्मं संपडिवज्जइ, तमाणाए तहगच्छइ, तहचिट्ठइ, तहनिसीयइ, तहतुयट्टइ, तहभुंजइ तहभासइ, तहउट्ठाएइ तहपाणेहिं भूएहिंजीवेहिंसत्तेहिं संजमेणं संजमइ, आसिंचणंअट्ठेणोपमायइ ॥ २२ ॥

भावार्थ व यत्नापूर्वक बोलना. ऐसे ही उद्यमवन्त बनकरके प्राणभूत जीव व सत्व से संयम पालना. इस में किंचिन्मात्र प्रमाद करना नहीं ॥ २१ ॥ तब कात्यायन गोत्रीय खंदकने श्रमण भगवान् महावीर का ऐसा धार्मिक उपदेश सुनकर उसे सम्यक् प्रकारसे अंगीकार किया. और उनकी आज्ञामें यत्नापूर्वक जाना, खडे रहना, बैठना, सोना, भोजन करना, बोलना व सावध रहना ऐसे करने लगे. उद्यत होकर प्राणभूत जीव व सत्व की रक्षा कर संयम पालने लगे. इस में किंचिन्मात्र प्रमाद नहीं करने लगे ॥ २२ ॥ तब ईर्या स-

शब्दार्थ ॥ २२ ॥ से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय अ० अनगार जा० हुवा इ० ईर्यासमिति भा० भाषासमिति ए० एषणा समिति आ० आदान भंड मात्रा निक्षेपन समिति उ० उच्चार प्रश्रवण खेलसिंघाण ज० जल परिस्थापनिक समिति म० मनसमिति व० वचन समिति का० काय समिति म० मनगुप्ति व० वचनगुप्ति का० कायगुप्ति गु० गुप्त गु० गुप्तेन्द्रिय गु० गुप्त ब्रह्मचारी च० त्याग ल० लज्जा सहित ध० धन खं० क्षमा ख० सहनकरे जि० जितेन्द्रिय सो० मैत्रीभाव अ० निदान रहित अ० प्रार्थना रहित अ०

सूत्र

तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते अणगारे जाए इरिया समिए, भासा समिए, एसणा समिए, आयाण भंडमत्त निक्खेवणा समिए, उच्चारपासवणखेल सिंघाणजल्ल पारिट्ठा-वणिया समिए, मणसमिए, वयसमिए, कायसमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्ति-

भावार्थ मिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदान भंडमात्र निक्षेपना समिति, उच्चार प्रश्रवण खेलजल परिस्थापनीय समिति, मन समिति, वचन समिति, काय समिति, मन गुप्ति, वचन गुप्ति व काय गुप्तिवाले, गुप्त, गुप्तेन्द्रिय, गुप्त ब्रह्मचारी, त्यागी, लज्जायुक्त, धर्मरूप धन का संग्रह करनेवाला, शान्ति क्षमा के धारक, जितेन्द्रिय, नियाना नहीं करनेवाले, उत्सुकपना रहित, संयम में लेश्यावन्त, श्रामण्य-साधुपना में रत व दमितेन्द्रिय कात्यायन गोत्रीय खंदक अनगार जिन प्रवचन को आगे करके विचरने लगे अर्थात् जैसे

शब्दार्थ

जी० जीव स० सत्व सं० संयम से सं० यतना करना अ० इस अ० अर्थ केलिये णो० नहीं किं० किंचित् प० प्रमाद करना ॥ २१ ॥ त० तब से० वह खं० खंदक क० कात्यायन गोत्रीय स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का ए० ऐसा ध० धर्म उ० उपदेश स० सम्यक् सं० अंगीकार किया त० उस आ० आज्ञाको त० जैसे ग० जावे चि० रहे नि० बैठे तु० सोवे भुं० भोजनकरे भा० बोले उ० खडाहोने पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स०सत्व सं०संयम सं०यत्नकरे अ०इस अ० अर्थ में णो० नहीं प० प्रमादकरे

सूत्र

संजमेणं संजमियव्वं. अस्सिंचणं अट्ठे णोकिंचि पमाइयव्वं. ॥ २१ ॥ तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं संपडिवज्जइ,तमाणाए तहगच्छइ,तहचिट्ठइ,तहनिसीयइ,तहतुयट्टइ, तहभुंजइ तह भासइ,तहउट्ठाएइ तहपाणेहिं भूएहिंजीवेहिंसत्तेहिं संजमेणं संजमइ, अस्सिंचणंअट्ठेणोपमायइ ॥ २२ ॥

भावार्थ

व यत्नापूर्वक बोलना. ऐसे ही उद्यमवन्त बनकरके प्राणभूत जीव व सत्व से संयम पालना. इस में किंचिन्मात्र प्रमाद करना नहीं ॥ २१ ॥ तब कात्यायन गोत्रीय खंदकने श्रमण भगवान् महावीर का ऐसा धार्मिक उपदेश सुनकर उसे सम्यक् प्रकारसे अंगीकार किया. और उनकी आज्ञामें यत्ना पूर्वक जाना, खडे रहना, बैठना, सोना, भोजन करना, बोलना व सावध रहना ऐसे करने लगे. सावध होकर प्राणभूत जीव व सत्व की रक्षा कर संयम पालने लगे. इस में किंचिन्मात्र प्रमाद नहीं करने लगे ॥ २२ ॥ तब ईर्या स-

शब्दार्थ म० महावीर ते० तहां उ० आये उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त जा० यावत् न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छता हूं भं० भगवन् तु० तुमारी अ० आज्ञामिलते दो० दोमास की भि० भिक्षु प्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरने को अ० यथासुखम् दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंधकरो ए० ऐसे दो० दोमास की ति० तीनमास की च० चार मास की पं० पांच छ० छ स० सात

सूत्र समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, समणं भगवं जाव नमंसित्ता, एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुज्झेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपाज्जित्ताणं विहरित्तए. अहासुहं देवाणुप्पिया ! मापडिबंधं. तंचेव एवं दोमासियं, तिमासियं, चाउम्मासियं, पंचछसत्त पढमं सत्तराइंदियं, दोचं सत्तराइंदियं, तचं

भावार्थ भगवन्त को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! आपकी आज्ञा होवे तो दो मास की भिक्षु प्रतिमा अंगीकार कर विचरुं. अहो देवानुप्रिय ! जैसे तुम को सुख होवे वैसे करो. विलम्ब मत करो. तब सहर्ष आज्ञा लेकर दो मास पर्यंत दो दात आहार की व दो दात पानी की ग्रहण की. वैसे ही तीसरी तीन मास की भिक्षु प्रतिमा में तीन दात आहारकी व तीन दात पानीकी ग्रहण की. चार मासकी चौथी भिक्षु प्रतिमा में चार दात आहार की व चार दात पानी की ग्रहण की वैसेही पांच छ व सात मास की भिक्षु प्रतिमाओं में पांच, छ व सात मास तक पांच छ व सात दात आहार की व सात दात पानी की

शब्दार्थ हृष्ट तु०तुष्ट जा०यावत् न०नमस्कारकर मा०एकमासकी भि०भिक्षु प्रतिमा उ०अंगीकारकर वि०विचरनेलगे ॥ २५ ॥ से० वह खं० खंदक अ० अनगार मा० एकमास की भि० भिक्षु प्रतिमा अ० यथासूत्र अ० यथाकल्प अ० यथामार्ग अ० यथातथ्य अ० यथा सम्यक् का० काया से फा० स्पर्शे पा० पाले सो० संभाग करे ती० दापटाले पू० पूर्ण करे कि० कीर्तनकरे अ०पाले आ०आज्ञा से आ० आराधे स० सम्यक् का० काया से फा० स्पर्शकर जा० यावत् आ० आराधकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त

सूत्र अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठ जाव नमंसित्ता मासियंभिक्खुपडिमं उवसंपजित्ताणं विहरइ ॥२५॥ तएणं से खंदए अणगारे मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं, अहाकप्पं, अहामग्गं, अहातच्चं, अहासमं, सम्मं काएणं फासेइ, पालेइ, सोभेइ, तीरेइ, पूरेइ, किट्टेइ अणुपालेइ, आणाए आराहेइ; सम्मं काएण फासित्ता जाव आराहेत्ता, जेणेव

भावार्थ मा अंगीकार कर विचरने लगे ॥ २५ ॥ तब श्री खंदक अनगार जैसी सूत्र में एक मास की भिक्षु प्रतिमा की विधि कही है वैसी भिक्षु प्रतिमा को कल्प अनुसार, मार्ग अनुसार पालने लगे. वैसे ही क्षयोपशम भाव से अतिक्रमे नहीं. सम्यक् प्रकार से काया से स्पर्शी, विधि से ग्रहण की, वारंवार उपयोग रखकर पाली, पूर्ण की, कीर्ति की, अनुपालना की यावत् आज्ञा पूर्वक आराधी. सम्यक् प्रकार काया से स्पर्श कर यावत् आज्ञासे आराध कर जहां श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आये, आकर श्रमण

शब्दार्थ म० महावीर ते० तहां उ० आये उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त जा० यावत् न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले इ० इच्छना हूं भं० भगवन् तु० तुमारी अ० आज्ञामिलते दो० दोमास की भि० भिक्षु प्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरने को अ० यथासुखम् दे० देवानुप्रिय मा० मत प० प्रतिबंधकरो ए० ऐसे दो० दोमास की ति० तीनमास की च० चार मास की पं० पांच छ० छ स० सात

सूत्र समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, समणं भगवं जाव नमंसित्ता, एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुज्झेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपाज्जित्ताणं विहरित्तए. अहासुहं देवाणुप्पिया! मापडिबंधं. तंचेव एवं दोमासियं, तिमासियं, चाउम्मासियं, पंचछसत्त पढमं सत्तराइंदियं, दोच्चं सत्तराइंदियं, तच्चं

भावार्थ भगवन्त को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो भगवन्! आपकी आज्ञा होवे तो दो मास की भिक्षु प्रतिमा अंगीकार कर विचरूं. अहो देवानुप्रिय ! जैसे तुम को सुख होवे वैसे करो. विलम्ब मत करो. तब सहर्ष आज्ञा लेकर दो मास पर्यंत दो दात आहार की व दो दात पानी की ग्रहण की. वैसे ही तीसरी तीन मास की भिक्षु प्रतिमा में तीन दात आहारकी व तीन दात पानीकी ग्रहण की. चार मासकी चौथी भिक्षु प्रतिमा में चार दात आहार की व चार दात पानी की ग्रहण की वैसेही पांच छ व सात मास की भिक्षु प्रतिमाओं में पांच, छ व सात मास तक पांच छ व सात दात आहार की व सात दात पानी की

शब्दार्थ

हृष्ट तु०तुष्ट जा०यावत् न०नमस्कारकर मा०एकमासकी भि०भिक्षु प्रतिमा उ०अंगीकारकर वि०विचरनेलगे ॥ २५ ॥ से० वह खं० खंदक अ० अनगार मा० एकमास की भि० भिक्षु प्रतिमा अ० यथासूत्र अ० यथाकल्प अ० यथामार्ग अ० यथातथ्य अ० स० सम्यक् का० काया से फा० स्पर्शे पा० पाले सो० संभाल करे ती० दीपडाले पू० पूर्ण करे कि० कीर्तनकरे अ०पाले आ०आज्ञा से आ० आराधे स० सम्यक् का० काया से फा० स्पर्शकर जा० यावत् आ० आराधकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त

सूत्र

अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठ जाव नमंसित्ता मासियंभिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥२५॥ तएणं से खंदए अणगारे मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं, अहाकप्पं, अहा-मग्गं, अहातच्चं, अहासमं, सम्मं काएणं फासेइ, पालेइ, सोभेइ, तीरेइ, पूरेइ, किट्टेइ अणुपालेइ, आणाए आराहेइ; सम्मं काएण फासित्ता जाव आराहेत्ता, जेणेव

भावार्थ

मा अंगीकार कर विचरने लगे ॥ २५ ॥ तब श्री खंदक अनगार जैसी सूत्र में एक मास की भिक्षु प्रतिमा की विधि कही है वैसी भिक्षु प्रतिमा को कल्प अनुसार, मार्ग अनुसार पालने लगे. वैसे ही क्षयोपशम भाव से अतिक्रमे नहीं. सम्यक् प्रकार से काया से स्पर्शी, विधि मे ग्रहण की, वारंवार उपयोग रखकर पाली, पूर्ण की, कीर्ति की; अनुपालना की-यावत् आज्ञा पूर्वक आराधी. सम्यक् प्रकार काया से स्पर्श कर यावत् आज्ञासे आराध कर जहां श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आये, आकर श्रमण

शब्दार्थ उपवास से बा० बारवा मास में छ० बारउपवास से ते० तेरहमास में अ० तेरह उपवास से चो० चौदह मास में ती० चौदह उपवास से प० पन्नरह मास व० पन्नरह उपवास सो० सोलह मास में च० सोलह उपवास अ० निरंतर त० तप कर्म से दि० दिनको ठा० स्थान उ० उत्कट सू० सूर्य की सन्मुख आ० आतापना भू० भूमि में आ० आतापना लेते हुवे र० रात्रि में वी० वीरासन अ० नग्न त० तब खं० खंदक अ० अनगार गु० गणरत्न सं० संवत्सर त० तप कर्म अ० जैसा सुना अ० कल्प अनुसार जा० यावत् आ० आराध कर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर ते० वहां उ० आय उ० आकर व०

सूत्र मासं अट्ठावीसइमं अट्ठावीसइमेणं, चोद्दसमंमासं तीसइमं तीसइमेणं, पन्नरसमं मासं बत्तीसइमं बत्तीसइमेणं, सोलसमंमासं चउत्तीसइमं चउत्तीसइमेणं, अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे, आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणं, ॥ तएणंसे खंदए अणगारे गुणरयणं संवच्छरं तवोकम्मं अहासुत्तं, अहाकप्पं, जाव आराहित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ

भावार्थ करे. इस तरह सोलह मास तक आंतरा रहित तप करे. दिन को उत्कट आसन करे, सूर्य की आतापना लेवे और रात्रि में वीरासन से वस्त्र रहित रहे. इस तरह सूत्र व कल्प अनुसार गुणरत्न संवत्सर तप कर्म को आराधकर जहां श्रमण भगवन्त महावीर थे वहां आये. वहां आकर भगवन्त महावीर

शब्दार्थ दिवस में उ० उत्कट आसन से सू० सूर्याभिमुख आ० आताप भू० भूमि में आ० आतापनालेते र० रात्रि को वी० वीरासन से अ० वस्त्र रहित त० तीसरा मा० मास में अ० अष्ट अ० अष्ट से च० चौथा मास मे द० चार उपवास से पं० पांचवे मास में वा० पांच उपवास से छ० छठा मास में चो० छ उपवास से सा० सातवा मास में सो० सात उपवास से अ० आठवा मास में अ० आठ उपवास से न० नवमा मास में वी० नव उपवास से द० दसवा मास में वा० दशउपवास से ए० इग्यारह मास में च इग्यारह

मूल आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणय, एवं तच्चं मासं अट्ठमं अट्ठमेणं, चउत्थं मासं दसमंदसमेणं, पंचमंमासं बारसमं बारसमेणं छट्ठं मासं चोद्दसमं चोद्दसमेणं, सत्तमंमासं सोलसमं सोलसमेणं, अट्ठमंमासं अट्ठारसमं अट्ठारसमेणं, नवमंमासं बीसइमं बीसइमेणं, दसमंमासं बावीसइमं बावीसइमेणं, एक्कारसमं मासं चउवीसइमं चउवीसइमेणं, बारसमं मासं छव्वीसइमं छव्वीसइमेणं, तेरसमं

भावार्थ दूसरे महिने में दो दो उपवास का पारना, तीसरे महिने में तीन तीन उपवास, चौथे मास में चार चार उपवास, पांचवे में पांच पांच, छठे में छ छ उपवास, सातवे में सात सात उपवास, आठवे में आठ आठ उपवास, नवमे में नव नव उपवास, दशवे में दश दश उपवास, अग्यारहवे में अग्यारह २ बारहवे में बारह २ तेरवे में तेरह२, चौदवे में चौदह२, पंदरहवे में पंदरह २, और सोलहवे मास में सोलह२ उपवासका पारणा

शब्दार्थ अस्थि च० चमडा से अ० बंधा हुवा कि० कडकडाटभूत कि० कृश ध० नाडीयों की सं० संतती जा० हुइ हो० थी ॥ २७ ॥ जी० जीव से ग० जाता है चि० बैठता है भा० भाषा भा० बोलकर गि० ग्लानी पाता है भा० भाषा भा० बोलते गि० ग्लानि पाता है भा० भाषा भा० बोलूंगा गि० ग्लानि पाता है से० अथ ज० जैसे क० काष्टका स० गाडा प० पत्र का स० शकट प० पत्र ति० तील भं० भाजन का स० शकट ए० एरंड काष्ट का स० शकट इं० कोयला स० शकट उ० उष्ण दि० दिनको सु०

सूत्र

तवोकम्मेणं, सुक्के, लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियभूए, किसे, धमणिसंतए जाए यांवि होत्था॥२७॥जीवं जीवेणं गच्छइ,जीवं जीवेणं चिट्ठइ,भासं भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ भासं भासिस्सामीति गिलाइ।से जहा नामए कट्ठसगडियाइवा,पत्तसगडियाइवा, पत्तातिलभंडगसगडियाइवा,एरंडकट्ठ सगडियाइवा, इंगालसगडियाइवा, उण्हे

भावार्थ महानुभाग तप कर्म से शुष्क, रूक्ष, मांस विना का अस्थि व चर्म से बंधाया हुवा, बैठते खडे होते कडकडाट होवे वैसे, कृश, नाडियोंकी कीलियोंवाला होगया ॥२७॥ उन का शरीर इतना दुर्बल होगया कि जीव मात्र जीवकी सहायता से जाता है. जीव जीव की सहायता से खडा रहता है, भाषा बोलकर ग्लानि होती, भाषा बोलते ग्लानि होती, और भाषा बोलनेका विचार आते ग्लानि होती. जैसे कोई काष्ट से भरा हुवा गाडा,पलाश पत्र से भरा हुवा गाडा, पत्र सहित तील का भरा हुवा गाडा, मृत्तिका के भाजन से भरा हुवा गाडा, एरंड की

शब्दार्थ बहुत च० चार छ० छ अ० आठ द० दश दु० बारह मा० अर्ध मास मा० मासखमण वि० विचित्र त० तप कर्म से अ० आत्मा को भा० विचारते वि० विचरते है. ॥२५॥ त० तब खं० खंदक ते० उस उ० उदार वि० विपुल प० गुरु की आज्ञा से कराया हुवा (प० प्रमाद रहित कराया) प० मान पूर्वक रहा हुवा क० कल्याण कारी सि० मोक्ष के हेतु भूत ध० धर्म धनवाला मं० मंगल स० सुशोभित उ० प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त उ० उत्तम उ० उदार म० बहुत प्रभाव वाला त० तप कर्म से सु० शुष्क लु० रूक्ष नि० मांस रहित अ०

सूत्र उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ. बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठमदसम दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ २६ ॥ तएणंसेखंदए अणगारे तेणं उरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं, सिवेणं, धन्नेणं, मंगल्लेणं, सस्सिरीएणं, उदग्गेणं, उदत्तेणं, उत्तमेणं उदारेणं, महाणुभागेणं,

भावार्थ स्वामी को वंदना नमस्कार कर एक उपवास, दो उपवास, तीन उपवास यावत् पंदरह उपवास, मास खमण ऐसे विविध प्रकार के तप करते हुवे खंदक अनगार विचरने लगे ॥२६॥ उस समय में खंदक अनगार आशंसा रहित सो उदार, प्रधान, विपुल, गुरु की आज्ञा से कराया हुवा, बहुत मान पूर्वक कराया हुवा, कल्याणकारी, मंगलकारी, धर्मरूप धन करनेवाला, सुशोभनिक, उत्तरोत्तर वृद्धि करनेवाला, उत्तम, उदार व

अर्थ आस्थि च० चमडा से अ० बंधा हुवा कि० कडकडाटभूत कि० कृश ध० नाडीयों की सं० संतती जा० हुइ हो० थी ॥ २७ ॥ जी० जीव से ग० जाता है चि० बैठता है भा० भाषा भा० बोलकर गि० ग्लानी पाता है भा० भाषा भा० बोलते गि० ग्लानि पाता है भा० भाषा भा० बोलूंगा गि० ग्लानि पाता है से० अथ ज० जैसे क० काष्टका स० गाडा प० पत्र का स० शकट प० पत्र ति० तील भं० भाजन का स० शकट ए० एरंड काष्ट का स० शकट इं० कोयला स० शकट उ० उष्ण दि० दिनको सु०

सूत्र तवोकम्मेणं, सुक्के, लुक्खे निम्मंसे आट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियभूए, किसे, धमणिसंतए जाए यावि होत्था॥२७॥जीवं जीवेणं गच्छइ,जीवं जीवेणं चिट्ठइ,भासं भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ भासं भासिस्सामीति गिलाइ।से जहा नामए कट्ठसगडियाइवा,पत्तस गडियाइवा, पत्तातिलभंडगसगडियाइवा,एरंडकट्ठ सगडियाइवा, इंगालसगडियाइवा, उण्हे

भावार्थ महानुभाग तप कर्म से शुष्क, रूक्ष, मांस विना का आस्थि व चर्म से बंधाया हुवा, बैठते खडे होते कडकडाट होवे वैसे, कृश, नाडियोंकी कीलियोंवाला होगया ॥२७॥ उन का शरीर इतना दुर्बल होगया कि जीव मात्र जीवकी सहायता से जाता है. जीव जीव की सहायता से खडा रहता है, भाषा बोलकर ग्लानि होती, भाषा बोलते ग्लानि होती, और भाषा बोलनेका विचार आते ग्लानि होती. जैसे कोई काष्ट से भरा हुवा गाडा,पलाश पत्र से भरा हुवा गाडा, पत्र सहित तील का भरा हुवा गाडा, मृत्तिका के भाजन से भरा हुवा गाडा, एरंड की

शब्दार्थ सुकाया हुआ स० शब्द सहित ग० जाता है स० शब्द सहित चि० खडा रहता है ए० ऐसे खं० खंदक अ० अनगार स० शब्द सहित ग० जाता है स० शब्द सहित चि० बैठता है उ० पुष्ट त० तप से अ० दुर्बल मं० मांस सो० रुधिर से हु० अग्नि समान अ० भस्म में प० छुपा हुवा त० तपके ते० तेजसे त० तपतेज की सी० लक्ष्मी से अ० बहुत उ० शोभते चि० रहता है ॥ २८ ते० उसकाल ते० उस समय में रा० राजगृह न० नगर में स० समोसरण जा० यावत् प० परिषदा प० पीछीगई ॥ २९ ॥ त० तब त० उस

सूत्र दिण्णा सुक्कासमाणी ससद्दंगच्छइ, ससद्दंचिट्ठइ, एवामेव खंदए अणगारे ससद्दंगच्छइ ससद्दंचिट्ठइ । उवाचिते तवेणं अवाचिए मंससोणिएणं हुयासणेवि भासरासि पडिच्छण्णे, तवेणं तेएणं, तवतेय सिरीए अतीव उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ ॥ २८ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायागिहेनयरे समोसरणं जाव परिसा पडिगया ॥ २९ ॥ तएणं

भावार्थ लकडी से भरा हुवा गाडा, और कोयले से भरा हुवा गाडा है. उस में रही हुई वस्तु सूर्य की ऊष्णता से जब सुक जाती है और उस समय जब गाडा चलता है तब उस में जैसे कडकडाट शब्द नीकलता है वैसा ही शब्द खंदक अनगार के रक्तमांस विना के शरीरमें से नीकलता है. खंदक अनगार के शरीर में रक्त मांस नहीं होने पर तपरूप तेज से उन का शरीर भस्ममें ढकी हुई अग्नि समान तेजस्वी दीखता है ॥२८॥ उस काल उस समयमें श्री महावीर स्वामी राजगृह नगरमें पधारे और परिषदा वंदन करने को आई और धर्मोपदे

शब्दार्थ खं० खंदक अ० अनगार को अ० अन्यदा क० कदापि पु० पूर्व रात्रिके का० काल में ध० धर्म जा० जागरणा जा० करते इ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय चि० चिन्तवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे ख० निश्चय अ० मैं इ० इस उ० उदार जा० यावत् कि० कृश ध० नाडियों की सं० संतती जा० यावत् जी० जीव जी० जीव से ग० जाता हूं चि० खडा रहता हूं जा० यावत् गि० ग्लानि करता हूं जा० यावत् ए० ऐसे अ० मैंभी स० शब्द सहित ग० जाता हूं चि० खडा रहता हूं

सूत्र तस्स खंदयस्स अणगारस्स अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्त काल समयंसि धम्म जागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जेत्था, एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं उरालेणं जाव किसे धमाणिसंतए जाव जीवं जीवेणं गच्छामि जीवं जीवेणं चिट्ठामि, जाव गिलामि. एवामेव अहंपि ससद्दगच्छामि, ससद्दंचिट्ठामि तं अत्थि तामे उट्ठाणे

भावार्थ सुनकर पीछी गइ ॥ २१ ॥ उस समय में एकदा मध्यरात्रि में धर्म जागरणा करते खंदक अनगार को ऐसा अध्यवसाय यावत् चिंतवन उत्पन्न हुवा कि ऐसा उदार व प्रधान तपकर्म से मैं कृश बन गया हूं मेरी सब नाडियों दीख रही है, शरीर से मुझे कुच्छ भी होता नहीं है, हलन चलनादि क्रियाओं जो होती हैं वे सब जीव से होती हैं, यावत् भाषा बोलते भी मैं खेदित होता हूं, और काष्ट का गाडा यावत्

शब्दार्थ तं० इसलिये अ० है ता० उतने म० मेरे उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम तं० इसलिये जा० जहांलग ता० वे मे० मेरे अ० है उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम जा० जहांलग मे० मेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जि० जिन सु० सुस्वार्थी वि० विचरते हैं ता० वहांलग मे० मुझे से० श्रेय क० कल पा० प्रकट प० प्रभात में र० रात्रि को कु० विकशित उ० उत्पल क० हरिण के नेत्र को० कोमल उ० खुले

सूत्र

कम्मेबले वीरिए पुरिसकार परक्कमे तं जाव तामे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए
पुरिसक्कार परक्कमे जाव मम धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे
जिणे सुहत्थी विहरइ ताव तामे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल
कोमलुमिलियंभि, अहपंडुरे पभाए रत्तासोगप्पकासे,किंसुय सुयमुह गुंजद्ध रागसरिसे,

भावार्थ कोयले का गाडा चलते जैसा शब्द होवे वैसे ही मेरे चलने पर शब्द होता है. ताहंपि मेरे में उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम है. और जहां लग मेरे में उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम है और जहां लग मेरे धर्माचार्य: धर्म गुरु, रागद्वेष के जीतनेवाले व सुस्वार्थी श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी विचर रहे हैं वहां लग विकशित कोमल कमल (हरिण के नेत्र) से उन्मीलित, पांडुर

शब्दार्थ हुवे अ० अनंतर पं० पाण्डुर प० प्रभात में र० रक्त अ० अशोक प० प्रकाश किं० किंशुक सु० शुकमुख गुं० गुंजार्ध रा० रंग स० सदृश क० कमल का आ० गृह (द्रह) स० नलिनी खंड के० बोधक उ० उदित होते सू० सूर्य स० सहस्र किरणों वाला दि० दिनकर ते० तेजस ज० ज्वलंत स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को अ० आज्ञा देते स० स्वयं पं० पांच म० महाव्रत की आ० आराधना कर स० साधु स० साध्वी से खा० क्षमा याचकर त० तथारूप थे० स्थविर क० कृतयोगी की स० साथ वि०

सूत्र कमालगर संडबोहए उट्ठियंमि सूरे सहस्सरस्सिमि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासेत्ता, समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंचमहव्वयाणि आरोहेत्ता समणाय समणीओय खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं २ दुरूहित्ता मेहघण संनिगासं,

भावार्थ प्रभात में, रक्त वर्णवाले अशोककी प्रभा समान, किंशुक व शुक मुख व गुंजार्ध के रंग समान, कमल का आगर सो द्रह में कमलों को विकाशित करनेवाला व सहस्र किरणवाला दिनकरमणि सूर्य उदय होते श्री श्रमण भगवन्त को वंदना नमस्कार कर श्रमण भगवन्त की आज्ञा से स्वयं पांच व्रत की आराधना करके, गौतम स्वामी प्रमुख सब साधु व चंदन वाला प्रमुख सब साध्वीयों की क्षमा याचकर, तथारूप कृत-योगी स्थविर को साथ लेकर, बडा पर्वत पे शनैः २ चडकर, मेघ समान श्याम व देवताओं का संनिपात

शब्दार्थ तं० इसलिये अ० है ता० उतने म० मेरे उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम तं० इसलिये जा० जहांलग ता० वे मे० मेरे अ० है उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम जा० जहांलग मे० मेरे ध० धर्माचार्य ध० धर्मोपदेशक स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जि० जिन सु० सुस्वामी वि० विचरते हैं ता० वहांलग मे० मुझे से० श्रेय क० कल पा० प्रकट प० प्रभात में र० रात्रि को कु० विकाशित उ० उत्पल क० हरिण के नेत्र को० कोमल उ० खुले

सूत्र

कम्मेवले वीरिए पुरिसक्कार परकमे तं जाव तामे आत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार परकमे जाव मम धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ ताव तामे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल कोमलुमिलियंमि, अहपंडुरे पभाए रत्तासोगप्पकासे,किंसुय सुयमुह गुंजद्ध रागसरिसे,

भावार्थ कोयले का गाडा चलते जैसा शब्द होवे वैसे ही मेरे चलने पर शब्द होता है. तथापि मेरे में उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम है. और जहां लग मेरे में उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम है और जहां लग मेरे धर्माचार्य, धर्म गुरु, रागद्वेष के जीतनेवाले व सुस्वामी श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी विचर रहे हैं वहां लग विकशित कोमल कमल (हरिण के नेत्र) से उन्मीलित, पांडुर

शब्दार्थ इ० ये ए० ऐसा अ० अध्यवसाय च० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे अ० मैं इ० इस ए० ऐसा उ० उदार वि० विपुल जा० यावत् का० काल को अ० नहीं वांच्छते वि० विचरते को शि० ऐसा क० करके ए० ऐसा सं० विचारकरके क० कल प० प्रकट प० प्रभात में जा० यावत् ज० ज्वलंत जे० जहां म० मेरी अं० समीप ते० वहां ह० शीघ्र आ० आया हुवा है. से० अथ णू० शकादर्शी खं० खंदक

सूत्र तत्र खंदया ! पुव्वरत्तावरत्तं जाव जागरमाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु अहंइमेणं एयारूवेणं उरालेणं विउलेणं तंचेव जाव कालं अणवकंख-माणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ २ त्ता, कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते जेणेव ममअंतिए तेणेव हव्वमागए ॥ सेणूणं खंदया ! अट्ठेसमट्ठे ? हंताअत्थि.

भावार्थ गार को ऐसा बोले की अहो स्कंदक ! मध्य रात्रि में धर्म जागरणा करते तुम को ऐसा अध्यवसाय यावत् संकल्प हुवा कि मेरा शरीर क्षीण होगया है, यावत् मेरी सब नाडियों दीखती है, परंतु उत्थानादि होने से प्रभात में मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक की पास जाकर वंदना नमस्कार कर काल की वांच्छा नहीं करता हुवा संलेखना करना मुझे श्रेय है. और ऐसा विचार करके सूर्य का उदय होते ही तुम मेरी पास आये हो. अहो खंदक ! क्या यह बात सत्य है ? हां, भगवन् ! यह बात सत्य है. अहो देवानु-

शब्दार्थ — बडा प० पर्वत स० शनैः दु० चढकर मे० मेघघन सं० समान दे० देव सन्निपात पु० पृथ्वी शिलापट्ट प० देख कर द० दर्भ का सं० संथारा मं० बिछाकर, द० दर्भके सं० संथारेपर रहाहुवा सं० संलेखना को झू० सेवा से झू० सेवित भ० भक्त पानका प० प्रत्याख्यान करने वाला पा० पादोपगमन का का० काल अ० नहीं वांच्छता वि० विचरने को ते० ऐसा क० करना ॥ ३० ॥ ए० ऐसा सं० विचारता है से० विचारकर क० कल प० प्रगट प० प्रभात में र० रात्रि को जा० यावत् ज० ज्वलंत जा० यावत् प० पर्युपासना की ॥ ३१ ॥ खंदकादि त० तुम को णू० शंकादर्शी पु० पूर्वरात्रि में अ० अपरक्त जा० यावत् जा० जा[गते]

सूत्र — देवसन्निवायं, पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेत्ता, दब्भ संथारयं संथरित्ता, दब्भ संथारो-वगयस्स संलेहणा झूसणा झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु ॥ ३० ॥ एवं संपेहेइ एवं संपेहेइत्ता, कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पज्जुवासइ ॥ ३१ ॥ खंदयादि समणे भगवं महावीरे खंदयं अणगारं एवं वयासी सेणूणं

भावार्थ — होने से सुंदर ऐसी शिलापट्ट को देखकर दर्भ का संथारा बिछाकर दर्भ संथारा में रहा हुवा संलेखना से अपनी आत्मा को कर्म से निर्मल बना कर व भक्त पान का प्रत्याख्यान कर काल को नहीं वांच्छता हुवा विचरना मुझे श्रेय है ॥ ३० ॥ ऐसा विचार करके प्रभात होते जहां श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी थे वहां आकर वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना की ॥ ३१ ॥ श्रमण भगवंत महावीर, खंदक अन-

शब्दार्थ इ० ये ए० ऐसा अ० अध्यवसाय च० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा ए० ऐसे अ० मैं इ० इस ए० ऐसा उ० उदार वि० विपुल जा० यावत् का० काल को अ० नहीं वांच्छते वि० विचरते को ति० ऐसा क० करके ए० ऐसा सं० विचारकरके क० कल प० प्रकट प० प्रभात में जा० यावत् ज० ज्वलंत जे० जहां म० मेरी अं० समीप ते० वहां ह० शीघ्र आ० आया हुवा है. से० अथ णू० शकादर्शी खं० खंदक

सूत्र तत्र खंदया ! पुव्वरत्तावरत्तं जाव जागरमाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु अहंइमेणं एयारूवेणं उरालेणं विउलेणं तंचेव जाव कालं अणवकंख-माणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ २ त्ता, कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते जेणेव ममअंतिए तेणेव हव्वमागए ॥ सेणूणं खंदया ! अट्ठेसमट्ठे ? हंताअत्थि.

भावार्थ गार को ऐसा बोले की अहो स्कंदक ! मध्य रात्रि में धर्म जागरणा करते तुम को ऐसा अध्यवसाय यावत् संकल्प हुवा कि मेरा शरीर क्षीण होगया है, यावत् मेरी सब नाडियों दीखती है, परंतु उत्थानादि होने से प्रभात में मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक की पास जाकर वंदना नमस्कार कर काल की वांच्छा नहीं करता हुवा संलेखना करना मुझे श्रेय है. और ऐसा विचार करके सूर्य का उदय होते ही तुम मेरी पास आये हो. अहो खंदक ! क्या यह बात सत्य है ? हां, भगवन् ! यह बात सत्य है. अहो देवानु-

शब्दार्थ हंत भ० भगवन्त जा० यावत् सं० प्राप्त न० नमस्कार होवे स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को जा० यावत् सं० प्राप्त होने का का० कामी को वं० वंदना करता हूं भ० भगवन्त को त० वहां रहे हुवे इ० यहां रहाहुवा पा० देखो मे० मुझे भ० भगवन्त त० वहां रहेहुवे इ० यहां रहाहुवा ए० ऐसा बोले पु० पहिले म० मैंने स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अं० समीप स० सब पा० प्राणातिपात प० प्रत्याख्यान जा० जीवन पर्यंत मि० मिथ्यादर्शन शल्य प० प्रत्याख्यान इ० अभी स० श्रमण भ०

सूत्र भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामिणं भगवंतं तत्थगतं इहगओ पासउ मेसे भयवं तत्थगए इहगयंति त्तिकट्टु वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी पुव्विंपि मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाए जावज्जीवाए इदाणिंपि

भावार्थ श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार करता हूं. क्यों कि वहां रहे हुवे भी भगवन्त मुझे यहां पर देख सकते हैं. इस तरह वंदना नमस्कार कर के ऐसा बोले की मैंने जाव जीव तक भगवंत श्री महावीर स्वामी की पास से प्राणातिपात यावत मिथ्यादर्शन शल्य का प्रत्याख्यान किया है और फीर भी मैं महावीर स्वामी की पास प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्यका प्रत्याख्यान करता हूं. अशन, पान, खादिम व

शब्दार्थ भगवन्त म० महावीर की अं० समीप स० सब पा० प्राणातिपात का प० प्रत्याख्यान करता हूं जा० जीवन पर्यंत जा० यावत् मि० मिथ्या दर्शन शल्य का प० प्रत्याख्यान करता हूं स० सब अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम च० चार प्रकार का आ० आहार का प० प्रत्याख्यान करता हूं जं० जो इ० यह स० शरीर इ० इष्ट कं० कान्त पि० प्रिय जा० यावत् फु० स्पर्शा ति० ऐसा क० करके ए० इसे भी च० चरिम उ० उश्वास नि० निश्वास से वो० त्यजता हूं सं० संलेखना की झू० सेवासे झू० सेवित भ० भक्त पा० पान प० प्रत्याख्यान कराया हुवा पा० पादोपगम का० काल को अ० नहीं वांछता हुवा

सूत्र यणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं असणपाणखाइमसाइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जं पियं इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव फुसंतु त्तिकट्टु, एयंपिणं चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरामि त्तिकट्टु संलेहणा झूसणा झूसिए भत्तपाण पडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ

भावार्थ स्वादिम ऐसे चारों आहार का मैं प्रत्याख्यान करता हूं. इष्टकारी, कान्तकारी, और प्रियकारी ऐसा जो मेरा शरीर है उसे जीवन पर्यंत त्यजता हूं. और संलेखना से भक्तपान का प्रत्याख्यान करता हुवा व काल को नहीं वांच्छता हुवा विचरता हूं ॥ ३३ ॥ उस समय में खंदक अनगारने श्री श्रमण

शब्दार्थ

वि० विचरं ॥ ३३ ॥ त० तब खं० खंदक अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के त० तथारूप थे० स्थविर की अं० पास सा० सामायिकादि ए० अग्यारह अं० अंग अ० अध्ययन कर ब० बहुत प० पूर्ण दु० बारह वा० वर्ष सा० साधु की प० पर्याय पा० पालकर मा० मास की सं० संलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स० साठ भक्त अ० अनशन से छे० छेदकर आ० आलोचते प० प्रतिक्रमण करते स० समाधि प्राप्त आ० अनुक्रम से का० कालको पहुंचे ॥ ३४ ॥ त० तब थे० स्थविर भ० भगवन्त खं० खंदक अ० अनगार को का० काल को प्राप्त जा० जानकर प० परिनिर्वर्तिक

सूत्र

॥ ३३ ॥ तएणं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्झित्ता, बहु पडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्ण परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालं गए ॥ ३४ ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो खंदयं अणगारं कालगयं जाणित्ता, परिनिव्वाणवत्तियं काउ-

भावार्थ

भगवन्त महावीर स्वामी के तथारूप स्थविर की पास सामायिकादि छ आवश्यक व अग्यारह अंग का अध्ययन किया, और बारह वर्ष तक साधुपना पालकर एक मास की संलेखना सहित आत्मा को झूसकर साठ भक्त अनशन करके आलोचना प्रतिक्रमण करते हुवे अनुक्रम से समाधि सहित काल को प्राप्त हुवे

शब्दार्थ का० कायोत्सर्ग क० करे प० पात्र ची० उपकरन गि० ग्रहण करे वि० बडे प० पर्वत से स० शनैः २ प० उतरकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदना कर न० नमस्कार कर व० वोले दे० देवानुप्रिय का अं० अंतेवासी खं० खंदक अ० अनगार प० प्रकृति भद्रक प० प्रकृति उ० उपशांत प० पतला को० क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ मि० मृदु म० मार्दव सं० युक्त अ० अलीन भ० भद्रक वि० विनीत से० वह दे० देवानुप्रिय से

सूत्र सग्गं करेइ, पत्तचीवराणि गिण्हंति, विपुलाओ पव्वथाओ साणियं २ पच्चोरुहंति पच्चोरुहइत्ता जेणेवसमणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी एवं खलु- देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदए णामं अणगारे पगइभद्दए पगइउवसंते पगइ पयणु कोहमाण माया लोभे, मिउ मद्दव संपण्णे, अल्लीणे, भद्दए, विणीए सेणं देवाणुप्पिएहिं

भावार्थ ॥ ३४ ॥ उस समय में उन की पास रहे हुवे स्थविर भगवन्त खंदक अनगार को काल प्राप्त हुए जानकर निर्वाण संबंधि कायोत्सर्ग[1] करके व खंदक अनगार के पात्र वस्त्रादि लेकर उस पर्वत से उतरे. उतरकर श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की पास आये और भगवन्त को वंदना नमस्कार करके ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! आपका अंतेवासी भद्रिक प्रकृतिवाले, उपशान्त प्रकृतिवाले, स्वभाव से क्रोधादि को

१ साधु निर्वाण हुवे पीछे कायोत्सर्ग करना सो

शब्दार्थ

वि० विचरुं ॥ ३३ ॥ त० तब खं० खंदक अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के त० तथारूप थे० स्थविर की अं० पास सा० सामायिकादि ए० अग्यारह अं० अंग अ० अध्ययन कर ब० बहुत प० पूर्ण दु० बारह वा० वर्ष सा० साधु की प० पर्याय पा० पालकर मा० मास की सं० संलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स० साठ भक्त अ० अनशन से छे० छेदकर आ० आलोचते प० प्रतिक्रमण करते स० समाधि प्राप्त आ० अनुक्रम से का० कालको पहुंचे ॥ ३४ ॥ त० तब थे० स्थविर भ० भगवन्त खं० खंदक अ० अनगार को का० काल को प्राप्त जा० जानकर प० परिनिर्वर्तिक

मूल

॥३३॥ तएणं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्झित्ता, बहु पडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्ण परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालं गए ॥ ३४ ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो खंदयं अणगारं कालगयं जाणित्ता, परिनिव्वाणवत्तियं काउ-

भावार्थ

भगवन्त महावीर स्वामी के तथारूप स्थविर की पास सामायिकादि छ आवश्यक व अग्यारह अंग का अध्ययन किया, और बारह वर्ष तक साधुपना पालकर एक मास की संलेखना सहित आत्मा को झूसकर साठ भक्त अनशन करके आलोचना प्रतिक्रमण करते हुवे अनुक्रम से समाधि सहित काल को प्राप्त हुवे

शब्दार्थ गये क० कहां उ० उत्पन्न हुवे गो० गौतमादि स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर भ० भगवान् गो० गौतम को व० बोले गो० गौतम म० मेरा अं० अंतेवासी खं० खंदक अ० अनगार प० प्रकृति भद्रक जा० यावत् म० मेरी अ० आज्ञामिलते स० स्वयं पं० पांच महाव्रत आ० आराधकर स० सर्व अ० अव-शेष ने० जानना जा० यावत् आ० आलोचकर प० प्रतिक्रमणकर स० समाधि को प्राप्त का० काल के अवसर में का० काल करके अ० अच्युत दे० देवलोक में दे० देवपने उ० उत्पन्न हुवे त० तहां अ० कितनेक दे० देवताकी वा० बावीस सा० सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी खं० खंदक दे० देव

सूत्र समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी खंदए णामं अणगारे पगइभद्दए जाव सेणं मए अब्भणुणाए समाणे सयमेव पंचमहव्वयाइं आरा-हेत्ता तंचेव सव्वं अवसेसयं नेयव्वं जाव आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णे. तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं

भावार्थ देवानुप्रिय ! आपका अंतेवासी खंदक अनगार काल कर कहां गये, और कहां उत्पन्न हुवे ? अहो गौतम ! मेरा अंतेवासी खंदक नामक अनगार मेरी आज्ञा से पांच महाव्रत की आराधना यावत् संलेखनादि कर आलोचना प्रतिक्रम सहित काल करके अच्युत देवलोक में देवतापने उत्पन्न हुवे. वहांपर कितनेक देवताओं की बावीस सागरोपम की स्थिति कही. उस में खंदक देवता की भी बावीस सागरोपम की

शब्दार्थ अ० आज्ञा मिलते स० स्वतः पं० पांच महाव्रत आ० आराधकर स० साधु स० साध्वियों को खा० क्षमाकर अ० हमारी स० साथ वि० वडा प० पर्वत को नि० निरविशेष जा० यावत् आ० अनुक्रम से का० काल को प्राप्त हुवे इ० यह आ० आचार भ० भंडोपकरण ॥ ३५ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनाकर न० नमस्कार कर व० बोले दे० देवानुप्रिय का अं० अंतेवासी खं० खंदक अ० अनगार का० काल के अवसर में का० काल कर के क० कहां ग०

सूत्र अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाणि आराहेत्ता समणाय समणीओय खामेत्ता अम्हेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं तंचेव निरवसेसं जाव आणुपुव्वीए कालगए। इमेयसे आयारभंडए ॥ ३५ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदएणामं अणगारे कालमासे कालंकिच्चा कहिं गए कहिं उववण्णे ? गोयमादि,

भावार्थ पनता करनेवाले, मृदुता को धारन करनेवाले, अलीन, भद्रिक व विनीत खंदक अनगार आपकी आज्ञा मीलने पांच महाव्रत की आराधना कर और साधु साध्वी को खमाकर हमारी साथ पर्वत पर आये थे. वहां संलेखनादि करके काल को प्राप्त हुवे हैं. अहो भगवन्! इन के यह भंडोपकरण हैं ॥ ३५ ॥ उस समय में श्री गौतम स्वामी श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार करके बोले कि अहो

पदार्थ — क० कितनी भं० भगवन् स० समुद्घात प० प्ररूपी गो० गौतम स० सात स० समुद्घात प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे वे० वेदना समुद्घात ए० ऐसे स० समुद्घात प० पद छ० छद्मस्थ समुद्घात व० वर्ज कर भा० कहना जा० यावत् वे० वैमानिक क० कषाय समुद्घात अ० अल्पाबहुत ॥ १ ॥ अ० अनगार

सूत्र — कइणं भंते ! समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्त समुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेयणा समुग्घाए, एवं समुग्घायपयं, छउमात्थिय समुग्घाय वज्जं भाणियव्वं, जाव वेमाणियाणं, कसाय समुग्घाया अप्पाबहुयं ॥ १ ॥ अणगारस्सणं भंते ! भावि-

भावार्थ — पहिले उद्देशे के अंत में किस मरण से मरनेवाला जीव संसार की वृद्धि व हानि करता है ऐसा मरण का अधिकार कहा. वह मरण मारणान्तिक समुद्घात से होता है इसलिये मरण समुद्घात का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! समुद्घात कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! समुद्घात सात प्रकार की कही है. १ वेदना समुद्घात २ कषाय समुद्घात ३ मारणान्तिक समुद्घात ४ वैक्रेय समुद्घात ५ तेजस समुद्घात ६ आहारक समुद्घात और ७ केवली समुद्घात. इन सातों समुद्घात में शरीर से जीव प्रदेश का निर्गम होता है. केवली समुद्घात करते आठ समय लगता है और अन्य समुद्घात में अंतर्मुहूर्त काल व्यतीत होता है. नरक व वायुकाय में चार समुद्घात. चार स्थावर तीन विकलेन्द्रिय में तीन समुद्घात, देवता व तिर्यंच पंचेन्द्रिय में पांच समुद्घात, और मनुष्य व समुच्चय जीव में सात

शब्दार्थ की बा० बावीस सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी ॥ ३६ ॥ भं० भगवन् खं० खंदक दे० देवता में दे० देवलोक में से आ० आयुष्य क्षयसे भ० भवक्षय से अ० पीछे च० चवकर क० कहां ग० जावेंगे क० कहां उ० उत्पन्न होंगे गो० गौतम म० महाविदेह में सि० सिझेगा बु० बुझेगा मु० मुक्त होगा निर्वाण पावेगा स० सब दु० दुःखों का अं० अंतकरेगा ॥ २ ॥ १ ॥ ÷ ÷ ÷

सूत्र ठिई पण्णत्ता. तत्थणं खंदयस्सवि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ ३६ ॥ सेणं भंते! खंदए देवत्ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिति, कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! महाविदेहे सिज्झिहिति, बुज्झिहिति मुच्चिहिति, परिनिव्वाहिति, सव्वदुक्खाण मंतं करिहिति,॥खंदओ सम्मत्तो ॥३७॥ विईय सयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ १ ॥

भावार्थ स्थिति है ॥ ३६ ॥ वहां देवलोक में आयुष्य, भव व स्थिति का क्षय होने से चवकर खंदक अनगार कहां उत्पन्न होवेंगे? अहो गौतम! वहां से चवकर महाविदेह क्षेत्र में उत्तम कुल में जन्म लेकर वैराग्य को प्राप्त होकर सिझेंगे, बुझेंगे, मुक्त होवेंगे, निर्वाण को प्राप्त करेंगे यावत् सब दुःख का अंत करेंगे यह खंदक जीव का अधिकार समाप्त हुआ. यह दूसरा शतकका पाहिला उद्देशा सम्पूर्ण हुआ ॥ २ ॥ १ ॥

दार्थ क० कितनी भं० भगवन् स० समुद्घात प० प्ररूपी गो० गौतम स० सात स० समुद्घात प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे वे० वेदना समुद्घात ए० ऐसे स० समुद्घात प० पद छ० छद्मस्थ समुद्घात व० वर्ज कर भा० कहना जा० यावत् वे० वैमानिक क० कषाय समुद्घात अ० अल्पाबहुत ॥ १ ॥ अ० अनगार

सूत्र कइणं भंते ! समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्त समुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेयणा समुग्घाए, एवं समुग्घायपयं, छउमत्थिय समुग्घाय वज्जं भाणियव्वं, जाव वेमाणियाणं, कसाय समुग्घाया अप्पाबहुयं ॥ १ ॥ अणगारस्सणं भंते ! भावि-

भावार्थ पहिले उद्देशे के अंत में किस मरण से मरनेवाला जीव संसार की वृद्धि व हानि करता है ऐसा मरण का अधिकार कहा. वह मरण मारणान्तिक समुद्घात से होता है इसलिये मरण समुद्घात का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! समुद्घात कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! समुद्घात सात प्रकार की कही है. १ वेदना समुद्घात २ कषाय समुद्घात ३ मारणान्तिक समुद्घात ४ वैक्रेय समुद्घात ५ तेजस समुद्घात ६ आहारक समुद्घात और ७ केवली समुद्घात. इन सातों समुद्घात में शरीर से जीव प्रदेश का निर्गम होता है. केवली समुद्घात करते आठ समय लगता है और अन्य समुद्घात में अंतर्मुहूर्त काल व्यतीत होता है. नरक व वायुकाय में चार समुद्घात. चार स्थावर तीन विकलेन्द्रिय में तीन समुद्घात, देवता व तिर्यंच पंचेन्द्रिय में पांच समुद्घात, और मनुष्य व समुच्चय जीव में सात

शब्दार्थ की बा० बावीस सागरोपम की ठि० स्थिति प० प्ररूपी ॥ ३६ ॥ भं० भगवन् खं० खंदक दे० देवता में दे० देवलोक में से आ० आयुष्य क्षयसे भ० भवक्षय से अ० पीछे च० चवकर क० कहां ग० जावेंगे क० कहां उ० उत्पन्नहोंगे गो० गौतम म० महाविदेह में सि० सिझेगा बु० बुझेगा मु० मुक्तहोगा निर्वाण पावेगा स० सब दु० दुःखों का अं० अंतकरेगा ॥ २ ॥ १ ॥ ÷ ÷ ÷

सूत्र ठिई पण्णत्ता. तत्थणं खंदयस्सवि देवस्सं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ ३६ ॥ सेणं भंते ! खंदए देवत्ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिति, कहिं उववाजिहिति? गोयमा ! महाविदेहे सिज्झिहिति, बुज्झिहिति मुच्चिहिति, परिनिव्वाहिति, सव्वदुक्खाण मंतं करिहिति,॥खंदओ सम्मत्तो ॥३७॥ बिईय सयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ १ ॥

भावार्थ स्थिति है ॥ ३६ ॥ वहां देवलोक में आयुष्य, भव व स्थिति का क्षय होने से चवकर खंदक अनगार कहां उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! वहां से चवकर महाविदेह क्षेत्र में उत्तम कुल में जन्म लेकर वैराग्य को प्राप्त होकर सिझेंगे, बुझेंगे, मुक्त होवेंगे, निर्वाण को प्राप्त करेंगे यावत् सब दुःख का अंत करेंगे यह खंदक जीव का अधिकार समाप्त हुवा. यह दूसरा शतकका पाहिला उद्देशा सम्पूर्ण हुवा ॥ २ ॥ १ ॥

शब्दार्थ दूसरा उ० उद्देशा ण० जानना पु० पृथ्वी अ० अवगाहकर कर णि० नरकावास सं० संस्थान या० जाडपना वि० चौडा प० परिधि व० वर्ण गं० गंध का स्पर्श कि० क्या स० सब पा० प्राणी उ० उत्पन्न

सूत्र बितीओ उद्देसो सो नेयव्वो ॥ गाहा ॥ पुढवी ओगाहित्ता निरयासंठाणमेव बाहल्लं, विक्खंभ परिक्खेवो, वण्णो गंधोय फासोय ॥ किं सव्वपाणा उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो पुढवी उद्देसो ॥ बीइयसए तइओ उद्देसो ... ...

भावार्थ लाख नरकावास रहे हुवे हैं. ऐसे ही सब सातों पृथ्वी का कथन करना. जो आवलिका (पंक्ति) बंध नरकावास हैं वे वर्तुलाकार, त्र्यंस, चतुरंस हैं और दूसरे विविध प्रकार के हैं. नरक का जाडपना तीन हजार योजनका है नीचे एक हजार योजन का घन है, बीच में एक हजार योजन का सुसिर है, और उपर एक हजार योजन का संकुचित है. नरक का विष्कंभपना. संख्यात योजनवाले नरकावास का संख्यात योजन का है, और परिधि भी संख्यात योजन की है. जो असंख्यात योजन के हैं उन का विस्तार व परिधि असंख्यात योजन की है. नरक के वर्ण, गंध रस व स्पर्श अनिष्ट है इस का सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र के नरक नामक द्वितीय उद्देशे में कहा है वैसा जानना. रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासे में क्या सब प्राणी उत्पन्न हुवे हैं ? हां गौतम ! उन नरकावासों में सब प्राणी एकवार नहीं परंतु अनेक वार

शब्दार्थ को भं० भगवन् भा० भावितात्मा के० केवली समुद्घात जा० यावत् सा० शाश्वत अ० अनागतकाल चि० रहे स० समुद्घात प० पद ने० जानना ॥ २ ॥ २ ॥ * * क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम जी० जीवाभिगम ने० नारकी को वि०

सूत्र यप्पणो केवली समुग्घाय जाव सासय मणागयद्धं चिट्ठंति, समुग्घायपयं णेयव्वं ॥ २ ॥ बिईयसए बीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ २ ॥ * * कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जीवाभिगमो नेरइयाणं जो

भावार्थ समुद्घात. इस का सब अधिकार कषाय समुद्घात की अल्पाबहुत्व तक पन्नवणा सूत्र के समुद्घात पद जैसे कहना ॥ १ ॥ भावितात्मा अनगार को केवली समुद्घात यावत् शाश्वत अनागत काल तक रहे यह समुद्घात पद जैसे जानना. यह दूसरा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ २ ॥ २ ॥ *

गत उद्देशे में समुद्घात का कथन किया. जो जीव मारणान्तिक समुद्घात करता है वह जीव मरकर पृथ्वी में उत्पन्न होता है इसलिये पृथ्वी का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! पृथ्वी कितनी कही ? अहो गौतम ! पृथ्वी सात कही. उन के नाम रत्नप्रभा यावत् तमतम प्रभा. इन पृथ्वीयों को अवगाह कर कितने दूर नरकावास रहे है ! रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है उस में उपर नीचे एक २ हजार छोडकर बीच में एक लाख अठ्ठत्तर हजार की पोलार है. उस में तीस

शब्दार्थ दूसरा उ० उद्देशा णे० जानना पु० पृथ्वी अ० अवगाहकर कर नि० नरकावास सं० संस्थान वा० जाडपना वि० चौडा प० परिधि व० वर्ण गं० गंध फा स्पर्श कि० क्या स० सर्व पा० प्राणी उ० उत्पन्न

सूत्र "वितीओ उद्देसो सो नेयव्वो ॥ गाहा ॥ पुढवी ओगाहित्ता निरयासंठाणमेव बाहल्लं. विक्खंभ परिक्खेवो, वण्णो गंधोय फासोय ॥ किं सव्वपाणा उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो पुढवी उद्देसो ॥ बीईयसए तइओ उद्देसो ...

भावार्थ लाख नरकावास रहे हुवे हैं. ऐसे ही सब सातों पृथ्वी का कथन करना. जो आवालिका (पंक्ति) बंध नरकावास हैं वे वर्तुलाकार, त्र्यंस, चउरंस हैं और दुसरे विविध प्रकार के हैं. नरक का जाडपना तीन हजार योजनका है नीचे एक हजार योजन का घन है. बीच में एक हजार योजन का सुसिर है, और उपर एक हजार योजन का संकुचित है. नरक का विष्कंभपना. संख्यात योजनवाले नरकावास का संख्यात योजन का है, और परिधि भी संख्यात योजन की है. जो असंख्यात योजन के हैं उन का विस्तार व परिधि असंख्यात योजन की है. नरक के वर्ण, गंध रस व स्पर्श अनिष्ट है इस का सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र के नरक नामक द्वितीय उद्देशे में कहा है वैसा जानना. रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासे में क्या सब प्राणी उत्पन्न हुवे हैं ? हां गौतम! उन नरकावासों में सब प्राणी एकवार नहीं परंतु अनेक वार

शब्दार्थ को भं० भगवन् भा० भावितात्मा के० केवली समुद्घात जा० यावत् सा० शाश्वत अ० अनागतकाल चि० रहे स० समुद्घात प० पद ने० जानना ॥ २ ॥ २ ॥ * *

क० कितनी भं० भगवन् पु० पृथ्वी प० प्ररूपी गो० गौतम जी० जीवाभिगम ने० नारकी को वि०

सूत्र यप्पणो केवली समुग्घाय जाव सासय मणागयद्धं चिट्ठंति, समुग्घायपयं णेयव्वं ॥ २ ॥ विईयसए बीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ २ ॥ *

कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जीवाभिगमो नेरइयाणं जो

भावार्थ समुद्घात. इस का सब अधिकार कषाय समुद्घात की अल्पाबहुत्व तक पन्नवणा सूत्र के समुद्घात पद जैसे कहना ॥ १ ॥ भवितात्मा अनगार को केवली समुद्घात यावत् शाश्वत, अनागत काल तक रहे यह समुद्घात पद जैसे जानना. यह दूसरा शतक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ २ ॥ २ ॥ *

गत उद्देशे में समुद्घात का कथन किया. जो जीव मारणान्तिक समुद्घात करता है वह जीव मरकर पृथ्वी में उत्पन्न होता है इसलिये पृथ्वी का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! पृथ्वी कितनी कही ? अहो गौतम ! पृथ्वी सात कही. उन के नाम रत्नप्रभा यावत् तमतम प्रभा. इन पृथ्वीयों को अवगाह कर कितने दूर नरकावास रहे है ? रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है उस में उपर नीचे एक २ हजार छोडकर बीच में एक लाख अठ्ठत्तर हजार की पोलार है. उस में तीस

वन् ए० ऐसा गो० गौतम ज० जो अ० अन्य तीर्थिक ए० ऐसे आ० कहते हैं जा० यावत् इ० स्त्रीवेद पु० पुरुष वेद जे० जो ए० ऐसे आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० मैं गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं जा० यावत् प० प्ररूपता हूं नि० निर्ग्रंथ का० काल को प्राप्तहुवे अ० अन्यतर दे० देवलोक में दे०देवपने उ०उत्पन्न भ०होवे म०महार्द्धिक जा०यावत् म०महाशक्तिवंत दु०ऊंचे देवलोक में चि० लंबी स्थिति वाले त० तहां दे० देव भ० होवे म० महर्द्धिक जा० यावत् द० दशदिशा

सूत्र

वत्तव्वया णेयव्वा जाव इत्थिवेयंच, पुरिसवेयंच ॥ से कहमेयं भंते एवं ? गो-
यमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एव माइक्खंति जाव इत्थिवेयंच पुरिसवेयंच,
जे ते एव माहंसु मिच्छा ते एव माहंसु ॥ अहं पुण गोयमा ! एव माइक्खामि
जाव परूवेमि एवं खलु नियंठे कालगए समाणे अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उव-

भावार्थ

तीर्थिक एक समय में एक जीव दो वेद वेदने का बोलते हैं वे मिथ्या हैं अर्थात् उन का कथन असत्य है. क्योंकि देवको स्त्रीरूप करने पर भी पुरुषपना होने से पुरुष वेद का ही उदय होता है परंतु स्त्री वेद का उदय नहीं होता है. अहो गौतम ! मेरा कथन ऐसा ही कि कोई निर्ग्रंथ काल करके किसी महर्द्धिक यावत् महानुभाग बहुत स्थितिवाले उपर के देवलोक में देवतापने उत्पन्न हुवा. वहां पर वह देव महर्द्धिक,

शब्दार्थ

निर्ग्रंथ का० काल कियाहुवा दे० देव हुवे अ० स्वतः से० वह त० तहां नो० नहीं अ० अन्य देव नो० नहीं अ० अन्य दे० देवकी दे० देवीको अ० वशकरके प० परिचारणा करे णो० नहीं अ० अपनी दे० देवीको अ० वश कर के प० परिचारणाकरे अ० आत्माको वि० विकुर्वकर प० परिचारणा करे ए० एक जी० जीव ए० एक स० समय में दो० दोवेद वे० वेदे तं० वह ज० जैसे इ० स्त्रीवेद पु० पुरुष वेद ए० ऐसे अ० अन्यतीर्थिक की व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् इ० स्त्रीवेद पु० पुरुषवेद से० वह क० कैसे ए० यह भं० भग-

सूत्र

देवब्भूएणं अप्पाणेणं सेणं तत्थ णो अण्णदेवे नो अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुं-जिय अभिजुंजिय परियारेइ णो अप्पणिच्चियाओ देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणामेव अप्पाणं विउव्विय विउव्विय परियारेइ; एगेवियणं जीवे एगेणं समएणं दो वेदे वेदेइ तंजहा—इत्थिवेयंच, पुरिसवेयंच ॥ एवं अण्णउत्थिय-

अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि साधु निर्ग्रंथ यहां से काल कर देव होने पर आत्मा से अन्य देव या अन्य देव की देवियों को आलिंगन कर उन की साथ परिचारणा नहीं करते हैं. वैसे ही अपनी देवी की साथ भी परिचारणा नहीं करते हैं. परंतु स्वतः के शरीर को वैक्रेय बनाकर उस की साथ परिचारणा करते हैं. इस तरह करने से एक ही जीव एक समय में स्त्री वेद व पुरुष वेद ऐसे दो वेद वेदता है. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! जो अन्य

शब्दार्थ पुरुष वेद नो० नहीं वे० उस समय में इ० स्त्रीवेद वे० वेदे इ० स्त्रीवेद को उ० उदय में नो० नहीं पु० पुरुष वेद वे० वेदे पु० पुरुष वेदका उ० उदय में नो० नहीं इ० स्त्रीवेद वे० वेदे ए० ऐसे ए० एक जीव ए० एक समय में ए० एक वेद वे० वेदे इ० स्त्रीवेद पु० पुरुष वेद इ० स्त्री इ० स्त्रीवेद का उ० उदय में पु० पुरुष की प० प्रार्थना करे पु० पुरुष पु० पुरुष वेदका उ० उदय से इ० स्त्रीकी प० प्रार्थना करे दो० दोनों अ० अन्योन्य प० प्रार्थना करे इ० स्त्री पु० पुरुष को पु० पुरुष

सूत्र पुरिसवेदंवा. जं समयं इत्थिवेदं वेदेइ णो तं समयं पुरिसवेदं वेदेइ, जं समयं पुरिसवेदं वेदेइ णो तं समयं इत्थिवेदं वेदइ. इत्थिवेदस्स उदएणं नो पुरिसवेदं वेदेइ, पुरिसवेदस्स उदएणं णो इत्थिवेदं वेदेइ । एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं वेदं वेदेइ, तंजहा-इत्थिवेदंवा पुरिसवेदंवा. इत्थी इत्थिवेदेणं उदिण्णेणं पुरिसं पत्थेइ, पुरिसोपुरिसवेदेणं उदिण्णेणं इत्थिं पत्थेइ; दो वेति अण्णमण्णं पत्थेइ. तंजहा इत्थीवा पुरिसं,

भावार्थ वेद वेदता है. जिस समय में स्त्री वेद वेदता है उस समय में पुरुष वेद नहीं वेदता है, और जिस समय में पुरुष वेद वेदता है उस समय में स्त्री वेद नहीं वेदता है. स्त्री वेद के उदय में पुरुष वेद नहीं और पुरुष वेद के उदय में स्त्री वेद नहीं. इस तरह एक जीव एक समय में एक वेद वेदता है. क्यों कि स्त्री वेद के उदय में पुरुष की वांछा होती है और पुरुष वेद के उदय में स्त्री की वांछा होती है, इस तरह

शब्दार्थ — में उ० उद्योतकरनेवाला प० प्रकाश करनेवाला जा० यावत् प०प्रतिरूप से०वह त० तहां अ० अन्यदेव अ० अन्य देव की दे० देवीको अ० वशकर प० परिचारणा करे अ० अपनी. दे० देवीको अ० वशकर के प० परिचारणा करे णो० नहीं अ० आत्मा से अ० आत्मा को वि० विकुर्वकर प० परिचारणा करे ए० एक जी० जीव ए० एक स० समय में ए० एक वे० वेद वे० वेदे इ० स्त्रीवेद पु० पुरुष वेद जं०. जिस समय में इ० स्त्रीवेद वे० वेदे णो० नही तं० उस समय में पु० पुरुष वेद वे० वेदे जं० जिससमय में पु०

सूत्र — चत्तारो भवंति महिड्डिएसु जाव महाणुभागेसु दूरंगतीसु, चिरट्ठितीसु सेणं तत्थ देवे भवइ महिड्डिए जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे जाव पडिरूवे. सेणं तत्थ अण्णेदेवे अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणाच्चि-याओ देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, नो अप्पणामेव अप्पाणं वेउ-व्वियं परियारेइ. ! एगेविणं जीवे एगेणं समएणं एगं वेदं वेदेइ तंजहा इत्थिवेदं वा,

भावार्थ — यावत् दशों दिशि में प्रकाश करनेवाला, उद्योत करनेवाला यावत् प्रतिरूप हुवा. वह देवता अन्य देव को अथवा अन्य देवता की देवियोंको अपने वश में करके भोगता है या अपनी देवी को आलिंगन कर उस की साथ परिचारणा करता है; परंतु स्वयं स्वतः का शरीरको वैक्रेय बनाकर उस वैक्रेय-बनाहुवा शरीरसे परिचारणा नहीं करसकता है. इसलिये एक जीव एक समयमें स्त्री वेद अथवा पुरुषवेद इन दोनों में से एक ही

शब्दार्थ ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट बा० बारह सं० संवत्सर ॥ ४ ॥ का० काय भव में रहा हुवा का० कालसे के० कितना काल हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट च० चौवीस सं० संवत्सर ॥ ५ ॥ म० मनुष्य पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच बी० बीज से भं० भगवन् जो० योनिमें

सूत्र गब्भेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नं अंतो मुहुत्तं उक्कोसं बारस संवच्छराइं ॥ ४ ॥ कायभवत्थेणं भंते ! कायभवत्थेति कालओ केवाचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्ण मंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं चउवीसं संवच्छराइं ॥ ५ ॥ मणुस्सपांचिं-दिय तिरिक्ख जोणिय बीएणं भंते ! जोणियब्भूए केवइयं कालं संचिट्ठइ ? जहन्नेणं

भावार्थ मनुष्य का गर्भ कितने कालतक रहता है ? अहो गौतम ! मनुष्य का गर्भ जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह वर्ष ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! कायभवस्थ जीव कायभवस्थ में कितना कालतक रहे ? अहो गौतम ! कायभवस्थ जीव जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट चौवीस वर्ष. स्त्री के गर्भ में एक जीव बारह वर्ष रहकर काल कर आवे और पुनः वहांही उत्पन्न होकर बारह वर्ष रहे अथवा उस बारह वर्ष रहकर चवाहुवा जीव के शरीर में अन्य जीव आकर बारह वर्ष रहे ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! संज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य व संज्ञी पंचे-

१ जनन्युदरमध्यव्यवस्थितनिजदेह एव यो भवो जन्म स कायभवः तत्र तिष्ठति यः स कायभवस्थः। अर्थात् माताके उदरमें रहवाहुा निजदेहरूप भवमें रहनेवाला सो कायभवस्थ. ॥

शब्दार्थ इ० स्त्री को ॥ १ ॥ उ० पानी का ग० गर्भ का० काल मे के० कितना काल हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट छ० छमास ॥ २ ॥ ति० तिर्यंच का ग० गर्भ भं० भगवन् का० काल मे के० कितनाकाल हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य अं० अंतमुहूर्त उ० उत्कृष्ट अ० आठ सं० संवत्सर ॥ ३ ॥ म० मनुष्यणी का ग० गर्भ भं० भगवन् का० कालसे के० कितना काल हो० होवे गो० गौतम

मूत्र पुरिसोवा इत्थि ॥ १ ॥ उदगगब्भेणं भंते ! उदग गब्भेति कालओ केवाचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसं छम्मासा ॥ २ ॥ तिरिक्ख जोणिय गब्भेणं भंते ! तिरिक्ख जोणिय गब्भेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नं अंतो मुहुत्तं उक्कोसं अट्ठ संवच्छराइं ॥ ३ ॥ मणुस्सी गब्भेणं भंते ! मणुस्सी

भावार्थ पुरुष स्त्री को व स्त्री पुरुष को वेद का उदय होने पर प्रार्थना करते हैं. इसलिये एक समय में एक जीव एक ही वेद वेदता है ॥ १ ॥ परिचारणा से गर्भ रहता है इसलिये गर्भ का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! पानी का गर्भ कितने कालतक रहता है ? अहो गौतम ! पानी का गर्भ जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ मास तक रहता है ॥२॥ अहो भगवन् ! तिर्यंच योनि में तिर्यंचका गर्भ कितने कालतक रहता है? अहो गौतम ! तिर्यंच का गर्भ जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट आठ संवत्सर तक रहता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् !

अर्थ

जी० जीव पु० पुत्रपने ह० शीघ्र आ० आवे से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है जा० यावत् ह० शीघ्र आ० आवे गो० गोतम इ० स्त्री पु० पुरुषका क० किये कर्म जो० योनि में मे० मैथुन संबंधि सं० संयोगमें स० उत्पन्न होवे ते० वे दु० दोनों सि० स्निग्धता चि० इकठी करे त० तहां ज० जघन्य ए० एक दो० दो ति० तीन उ० उत्कृष्ट स० प्रत्येक लक्ष जी० जीव पु० पुत्रपने ह०

सूत्र

इक्कोवा, दोवा, तिण्णिवा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवाण पुत्तत्ताए हव्वमाग-च्छंति ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव हव्वमागच्छइ ? गोयमा ! इत्थीएय पुरिसस्सय कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिए नामं संजोए समुप्पज्जइ, ते दुहओ सिणेहं चि-णंति, तत्थणं जहन्नेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेणं सयसहस्स पुहत्तं जीवाणं

भावार्थ

गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट प्रत्येक लाख [नव लाख] जीव पुत्रपने उत्पन्न होवे. मत्स्यादिक को एक संयोग में माछली की योनि में नव लाख जीव गर्भपने उत्पन्न होवे और निष्पन्न भी होवे. मनुष्य को बहुत उत्पन्न होवे परंतु बहुत निष्पन्न नहीं होवे. अहो भगवन् ! एक भव में एक ही जीव को नव लाख जीव पुत्रपने किस तरह से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम! नाम कर्म निवर्तित (मदनोद्दीपक व्यापारवाली) योनि में स्त्री और पुरुषका मैथुन संबंधी संयोग हुवा, उस समय उन दोनों का स्नेह एकत्रित हुवा. उस में जघन्य एक दो, तीन उत्कृष्ट नवलक्ष जीव पुत्रपने उत्पन्न होवे इसलिये अहो गौतम ! नवलाख जीव

शब्दार्थ

रहा हुवा के० कितना काल सं० रहे गो० गौतम ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट वा० बारह मुहूर्त ॥ ८ ॥ ए० एक जी० जीव भं० भगवन् ए० एक भव में के० कितनेका पु० पुत्र पने ह० शीघ्र आ० आवे गो० गौतम ज० जघन्य इ० एक दो० दो ति० तीन उ० उत्कृष्ट स० प्रत्येक सो जी० जीवों का० पु० पुत्रपने ह० शीघ्र आ० आवे ॥ ७ ॥ ए० एक जी० जीव को भं० भगवन् ए० एक भव में के० कितने जीव पु० पुत्रपने ह० शीघ्र आ० आवे गो० गौतम ज० जघन्य इ० एक दो० दो ति० तीन उ० उत्कृष्ट स० प्रत्येक लक्ष

सूत्र

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥ ६ ॥ एग जीवेणं भंते ! एग भवग्गहणेणं केवइयाणं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ ? गोयमा ! जहण्णेणं इक्कस्सवा दोण्हस्सवा, तिण्हस्सवा उक्कोसं सयपुहत्तस्स जीवाणं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ ॥ ७ ॥ एग जीवस्सणं भंते एग भवग्गहणेणं केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! जहन्नेणं

भावार्थ

न्द्रिय तिर्यंच का बीजरूप वीर्य योनि में कितने कालतक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह मुहूर्त ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! एक जीव एक भव आश्रित कितने पिता का पुत्र होवे ? अहो गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन का पुत्र होवे, उत्कृष्ट प्रत्येक (नव) सो पिताका पुत्र होवे. क्योंकि बारह मुहूर्त तक योनि सचित रहती है; उस से नव सो का बीज योनि में प्रविष्ट होने से उन सब का वह पुत्र कहाता है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! एक भव में एक जीव को कितने जीव पुत्रपने उत्पन्न होवे ? अहो

दार्थ

महावीर रा० राजगृह न० नगरके गु० गुणशील चे० उद्यान से प० निकलकर व० बाहिर में वि० विचरनेलगे ॥ १० ॥ ते० उस काल ते० उस समय में तुं० तुंगीया न० नगरी हो० थे. वर्णनयुक्त ॥ ११ ॥ ती० उस तुं० तुंगीया नगरीकी ब० बाहिर उ० ईशान कौन में पु० पुष्पवती च० उद्यान हो० था त० तहां तुं० तुंगीया न० नगरी में ब० बहुत स० श्रमणोपासक प० रहते हैं अ० ऋद्धि-

सूत्र

समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनि क्खमइ पडिनिक्खमइत्ता बाहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ १० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं तुंगिया नामं नयरी होत्था. वण्णओ, तीसेणं तुंगियाए नयरीए बाहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए पुप्फवइए नामं चेइए होत्था. वण्णओ ॥ ११ ॥ तत्थणं तुंगियाए नयरीए बहवे समणोवासया परिवसंति. अड्ढा, दित्ता, विच्छिण्ण

भावार्थ

तब श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी राजगृह नगरके गुणशील नामक उद्यान में से नीकल-कर अन्यदेशमें विचरने लगे ॥ १० ॥ उस काल उस समय में तुंगिया नाम की नगरी थी. उस का वर्णन उववाई सूत्र में चंपा नगरी का वर्णन जैसे कहना. उस तुंगिया नगरी की ईशान कौन में पुष्प-वती नामक उद्यान था. उस का वर्णन उववाई में से जानना ॥ ११ ॥ उस तुंगीया नगरी में बहुत श्रमणोपासक (श्रावक) रहते थे. वे धन धान्य से परिपूर्ण, बलवंत, विस्तार युक्त बहुत भवन, शयन

शब्दार्थ शीघ्र आ० आवे ॥ ८ ॥ मे० मैथुन भं० भगवन् से० सेवता के० कैसे अ० असंयम क० करे गो० गौतम से० वह ज० जैसे के० कोइ पु० पुरुष रू० रूइकी नालिका बू० बांस के बूरेकी नालिका में त० तपा हुवा क० खिजा से स० जलावे ए० ऐसे गो० गौतम मे० मैथुन से० सेवता अ० असंयम क० करे म० यह ए० ऐसे भं० भगवन् त्ति० ऐसे जा० यावत् वि० विचरने लगे ॥ ९ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त प०

सूत्र पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति. से तेणट्ठेणं जाव हव्वमागच्छइ ॥ ८ ॥ मेहुणेणं भंते ! सेवमाणस्स केरिसे असंजमे कज्जइ ? गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे रूय-नालियंवा, बूरनालियंवा, तत्तेणं कणएणं समभिधंसेज्जा, एरिसएणं गोयमा ! मेहुणं सेवमाणस्स असंजमे कज्जइ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ ९ ॥ तएणं

भावार्थ एक जीव को पुत्रपने एक भव में उत्पन्न होते हैं. ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! मैथुन सेवने वाले को किस तरह असंयम होवे ? अहो गौतम ! जैसे कोई पुरुष रूइ या सूके काष्ट के बूरे को नालीका में भरे, फीर अग्नि में तपाकर रक्त बनाया हुवा लोहे का दंड उस नाली में डाले, इस से उस में रही हुई रूइ जैसे जलजाती है वैसे ही मैथुन करते योनि में रहे हुवे जीवों नष्ट होजाते हैं. और इस तरह जीव का नाश होने से असंयम होता है. अहो भगवन् ! आपके वचन यथातथ्य हैं ऐसा कहते श्री गौतम स्वामी विचर रहे हैं ॥ ९ ॥

शब्दार्थ आ० आश्रव सं० संवर नि० निर्जरा कि० क्रिया अ० अधिकरण बं० बंध मो० मोक्ष कु० कुशल अ० सहे नहीं दे० देव अ० असुर ना० नाग सु० सुवर्ण ज० यक्ष र० राक्षस कि० किन्नर किं० किंपुरुष ग० गरुड गं० गंधर्व म० महोरगादि दे० देवगण से नि० निर्ग्रंथके पा० प्रवचन को अ० अतिक्रमे नहीं नि० निर्ग्रंथ पा० प्रवचन में नि० शंकारहित नि० कांक्षारहित नि० संदेहरहित ल० प्राप्त-

सूत्र जक्ख रक्खस किण्णर किंपुरिस गरुल गंधव्व महोरगादीएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमाणिज्जा ॥ निग्गंथे पावयणे निस्संकिया, निक्कंखिया, निव्वितिगिच्छा, लद्धट्ठा, गहियट्ठा, पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा, विणिच्छियट्ठा, अट्ठिमिंजपेम्माणुरायरत्ता ॥ अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे,

भावार्थ पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, क्रिया, अधिकरण, बंध व मोक्ष को जानने में बहुत कुशल थे. आपत्ति काल में देव, असुर, नाग, सुवर्ण, यक्ष, किन्नर, किंपुरुष, गरुड, गंधर्व व महोरगादिक की सहायता नहीं लेने वाले थे. स्वयं कृत कर्म भोगने की मनोवांछावाले थे, वैसे ही उक्त देवों निर्ग्रंथ के प्रवचन से चलित करने पर भी वे श्रमणोपासक चालित नहीं होते थे. वैसे ही वे जीवादि तत्व है या नहीं ऐसी शंका, कांक्षा व अन्य दर्शनी की वांच्छा रहित थे. वैसे ही शास्त्र के अर्थ का उन को लाभ हुवा था. उनोंने अच्छी तरह सम्यक् प्रकार से ग्रहण किया था. किसी प्रकार का संशय उत्पन्न होने पर

शब्दार्थ वाले दि० बलवन्त वि० विस्तीर्ण वि० बहुत भ० भवन स० शयन आ० आसन जा० यान वा० वाहन युक्त ब० बहुत ध० धन ब० बहुत जा० सुवर्ण र० रूपा आ० आयोग प० प्रयोग सं० युक्त वि० उच्छिष्ट वि० बहुत भ० आहारपानी ब० बहुत दा० दासी दा० दास गो० गौ म० महिषी ग० बकरें प० बहुत ब० बहुत ज० मनुष्य से अ० अपराजित अ० जाने हुवे जी० जीवाजीव उ० ओलखे पु० पुन्य पा०

सूत्र विपुल भवण सयणासण जाण वाहणाइण्णा, बहुधण बहुजायरूवरयया, आओगप. ओगसंपउत्ता विच्छड्डियाविउल भत्त पाणा, बहुदासीदास गो महिसगवेलगप्पभूया, बहु जणस्स अपरिभूया, अभिगयजीवाजीवा, उवलद्धपुण्णपावा, आसव संवर निज्जर किरियाहिगरण बंधप्पमोक्ख कुसला ॥ असहेज्ज देवासुर नाग सुवण्ण

आसन, यान, सुवर्ण व वाहन से व्याप्त, वैसे बहुत धन सुवर्ण चांदी व आयोग प्रयोगसे संयुक्त थे. जिनकी भोजन शालामें इतना आहार निपजता था कि जिस को भोग कर पीछे जो बढता था उसमें से बहुत लोगोंकी आजीविका चलती थी, उन को बहुत दास दासी, गाय बैल, माहेषी, गाडर वगैरह का संग्रह था. उनकी पास इतनी ऋद्धिथी कि इतनी ऋद्धि बहुत से लोगों की पास नहीं थी. यह द्रव्य ऋद्धि का कथन किया. अब भाव ऋद्धि का कथन चलता है. जीव अजीव को जानने वाले थे.

१ लोगों को व्याज से देना २ व्यापार में लगाना.

शब्दार्थ आ० आश्रव सं० संवर नि० निर्जरा कि० क्रिया अ० अधिकरण बं० बंध प० मोक्ष कु० कुशल अ० सहे नहीं दे० देव अ० असुर ना० नाग सु० सुवर्ण ज० यक्ष र० राक्षस कि० किन्नर किं० किंपुरुष ग० गरुड गं० गंधर्व म० महोरगादि दे० देवगण से नि० निर्ग्रंथके पा० प्रवचन को अ० अतिक्रमे नहीं नि० निर्ग्रंथ पा० प्रवचन में नि० शंकारहित नि० कांक्षारहित वि० संदेहरहित ल० प्राप्त-

सूत्र जक्ख रक्खस किण्णर किंपुरिस गरुल गंधव्व महोरगादीएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जा ॥ निग्गंथे पावयणे निस्संकिया, निक्कंखिया,. निव्वितिगिच्छा, लद्धट्ठा, गहियट्ठा, पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा, विणिच्छियट्ठा, अट्ठिमिंजपेम्माणुरायरत्ता ॥ अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे,

भावार्थ पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, क्रिया, अधिकरण, बंध व मोक्ष को जानने में बहुत कुशल थे. आपत्ति काल में देव, असुर, नाग, सुवर्ण, यक्ष, किन्नर, किंपुरुष, गरुड, गंधर्व व महोरगादिक की सहायता नहीं लेने वाले थे. स्वयं कृत कर्म भोगने की मनोवृत्तिवाले थे, वैसे ही उक्त देवों निर्ग्रंथ के प्रवचन से चलित करने पर भी वे श्रमणोपासक चलित नहीं होते थे. वैसे ही वे जीवादि तत्व है या नहीं ऐसी शंका, कांक्षा व अन्य दर्शनी की वांच्छा रहित थे. वैसे ही शास्त्र के अर्थ का उन को लाभ हुवा था. उनोंने अच्छी तरह सम्यक् प्रकार से ग्रहण किया था. किसी प्रकार का संशय उत्पन्न होने पर

शब्दार्थ वाले दि० बलवन्त वि० विस्तीर्ण वि० बहुत भ० भवन स० शयन आ० आसन जा० यान वा० वाहन युक्त व० बहुत ध० धन व० बहुत जा० सुवर्ण र० रूपा आ० आयोग प० प्रयोग सं० युक्त वि० उच्छिष्ट वि० बहुत भ० आहारपानी व० बहुत दा० दासी दा० दास गो० गौ म० महिषी ग० बकरें प० बहुत व० बहुत ज० मनुष्य से अ० अपराजित अ० जाने हुवे जी० जीवाजीव उ० ओलखे पु० पुन्य पा०

सूत्र विपुल भवण सयणासण जाण वाहणाइण्णा, बहुधण बहुजायरूवरयया, आओगप ओगसंपउत्ता विच्छड्डियाविउल भत्त पाणा, बहुदासीदास गो महिसगवेलगप्पभूया, बहु जणस्स अपरिभूया, अभिगयजीवाजीवा, उवलद्धपुण्णपावा, आसव संवर निज्जर किरियाहिगरण बंधप्पमोक्ख कुसला ॥ असहेज्ज देवासुर नाग सुवण्ण

भा आसन, यान, सुवर्ण व वाहन से व्याप्त, वैसे बहुत धन सुवर्ण चांदी व आयोग प्रयोगसे संयुक्त थे. जिनकी भोजन शालामें इतना आहार निपजता था कि जिस को भोग कर पीछे जो बढता था उसमें से बहुत लोगोंकी आ-जीविका चलती थी, उन को बहुत दास दासी, गाय बैल, महिषी, गाडर वगैरह का संग्रह था. उनको पास इतनी ऋद्धिथी कि इतनी ऋद्धि बहुत से लोगों की पास नहीं थी. यह द्रव्य ऋद्धि का कथन किया. अब भाव ऋद्धि का कथन चलता है. जीव अजीव को जानने वाले थे.

१ लोगों को व्याज से देना २ व्यापार में लगाना.

शब्दार्थ सम्यक् अ० पालते स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ फा० प्रासुक ए० एषनिक अ० अशन पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम व० वस्त्र प० पात्र कं० कंबल पा० रजोहरण पी० आसन फ० पाट से० शैय्या सं० संथारा ओ० औषध भे० भेषज प० प्रातिलाभते अ० यथा प० ग्रहण किये त० तप कर्म से आ० आत्मा को भा० भावते वि०विचरते हैं ॥ १२ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में पा० पार्श्वनाथ के शिष्य थे० स्थविर भ० भगवन्त जा० जातिसंपन्न कु० कुलसंपन्न व० बलसंपन्न रू० रूपसंपन्न वि० विनय संपन्न

सूत्र खाइम साइमेणं वत्थ पडिग्गह कंबल पायपुंछणेणं, पीढफलग सेज्जा संथारएणं ओसहभेसजेणं पडिलाभेमाणा अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ १२ ॥ तेणं कालेणं तेणंसमएणं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जाइसंपण्णा, कुलसंपण्णा, बलसंपण्णा, रूवसंपण्णा, विणयसंपण्णा, णाणसंपण्णा

भावार्थ होते थे. वे श्रावकों बहुत शीलव्रत, अनुव्रत, गुनव्रत, प्रत्याख्यान, पोषध उपवास वगैरह करते थे. चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या व पूर्णिमा को प्रतिपूर्ण पोषध सम्यक् प्रकार से करते थे. अशन, पान, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, पात्र, कंबल, रजोहरण, बाजोठ, पाटिया, शैय्या, संथारा, व औषधादि श्रमण निर्ग्रंथ को प्रतिलाभते हुवे (देते हुवे) वैसे ही जैसा ग्रहण किया वैसा तप कर्म से आत्माको चिंतवते हुवे विचरते थे ॥ १२ ॥ उस काल उस समय में जाति संपन्न, कुल सम्पन्न, बल सम्पन्न, रूप सम्पन्न

शब्दार्थ अर्थ ग० ग्रहणकिया है अर्थ पु० पूछा है अर्थ अ० जाना है अर्थ वि० विशेष जाना है अ० अर्थ अ० हड्डी मिं० मिंज पे० प्रेमानुरक्त अ० यह आ० आयुष्यमान् नि० निर्ग्रंथ पा० प्रवचन अ० अर्थ प० परमार्थ से० शेष अ० अनर्थ उ० अच्छा फा० स्फटिक जैसे अ० खुला दु० द्वार चि० प्रसन्न अं० अंतः पुर प० परगृह प० प्रवेश व० बहुत सी० शीलव्रत गु० गुन वे० वेरमण प० प्रत्याख्यान पो० पोपध उप-वास से चा० चतुर्दशी अ० अष्टमी को स० अमावास्या पु० पूर्णीमा को प० प्रतिपूर्ण पो० पोपध स०

सूत्र सेसे अणट्ठे ॥ ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्तंतेउरपरघरप्पवेसा, बहूहिं सीलव्वय गुण वेरमण पच्चक्खाण पोसहोववासेहिं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्ममणुपालेमाणा समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाण

भावार्थ पूछकर निर्णय किया था, निर्णय वाले अर्थ को सम्यक् प्रकार से धार रखा था, निर्ग्रंथ प्रवचन में उन की हड्डी व हड्डी की मिंजिओं प्रेमानुराग से रक्त बनी हुई थी. जब किसी साथ वार्तालाप करने का प्रसंग आता तब ऐसा ही कहते कि अहो आयुष्यमन्तो ! यह निर्ग्रंथ के प्रवचन मोक्ष साधन का मार्ग है. यही अर्थ रूप है, परमार्थ रूप है, परमादरणीय है. इन सिवाय अन्य धन, पुत्रादि वैसे ही कुवचनादि अनर्थ हैं, मोक्ष के बाधक हैं. उन श्रावकों के हृदय स्फटिक रत्न की समान निर्मल थे, उन के गृह के द्वार दान देने के लिये सदैव खुले रहते थे, प्रीति करनेवाले अंतःपुर व परगृह में प्रवेश करते अप्रतीति के पात्र नहीं

शब्दार्थ यथा आ० अनुक्रम से च० विचरते गा० ग्रामानुग्राम दु० जाते सु० सुखसे वि० विचरते जे० जहां तुं० तुंगियानगरी जे० जहां पु० पुष्पवती चे० उद्यान ते० तहां उ० आकर अ० यथाप्रतिरूप उ० अनुग्रह ओ० ग्रहण कर सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावतेहुवे वि० विचरते हैं ॥१३॥ त० तब तुं० तुंगिया न० नगरी में सिं० सिंघाडे जैसे ति० तीनरस्ता च० चार रस्ता च० बहुत म० राजमार्ग में जा० यावत् ए० एकदिशा तरफ णि० जाते हैं ॥ १४ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक इ० इस क० कथा ल० प्राप्त होते ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् स० बोलाकर ए० ऐसे व० बोले दे० देवानुप्रिय पा०

सूत्र चेइए, तेणेव उवागच्छंति उवागच्छइत्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ १३ ॥ तएणं तुंगियाए नयरीए सिंघाडग-तिगचउक्कचच्चरच उम्मुहमहापहपहेसु जाव एगदिसाभिमुहा णिज्जायंति, ॥ १४ ॥ तएणं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठ तुट्ठा जाव सद्दावेंति

भावार्थ यथाक्रम से ग्रामानुग्राम सुखपूर्वक विचरते तुंगिया नगरी के पुष्पवती उद्यान में आये. वहां आकर यथा-योग्य अवग्रह याचकर संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरते थे ॥ १३ ॥ तब सिंघाडे के आका-रवाले रस्ते में, तीन रस्ता मिले वैसे स्थान में, चौक, बहुत रस्ते मीले वैसे स्थान व राजमार्ग में उन स्थविर भगवन्त के दर्शन केलिये एक ही दिशा में बहुत लोक जा रहे थे ॥ १४ ॥ तब वे श्रमणोपासक ऐसा

शब्दार्थ णा॰ ज्ञानवन्त दं॰ दर्शनवन्त च॰ चारित्रवन्त ल॰ लज्जा ला॰ लाघववन्त ओ॰ शरीर प्रभा युक्त ते॰ तेजस्वी व॰ वर्चस्वी ज॰ यशस्वी जि॰ जिता है क्रोध जि॰ जिता है मान मा॰ माया लो॰ लोभ नि॰ निद्रा इं॰ इन्द्रिय प॰ परिषह जी॰ जीवित आ॰ वांच्छा म॰ मरण भ॰ भय सो॰ शोकसे वि॰ रहित ब॰ बहु श्रुत ब॰ बहुत परिवार वाले पं॰ पांच अ॰ अनगार स॰ शत स॰ साथ सं॰ रहेहुवे अ॰

सूत्र दंसणसंपण्णा, चरित्तसंपण्णा, लज्जा लाघव संपण्णा, ओयंसी तेयंसी, वचंसी जसंसी; जियकोहा, जियमाणा, जियमाया, जियलोभा, जियनिद्दा, जियइंदिया, जियपरी-सहा, जीवियासा मरण भय सोक विप्पमुक्का, बहुस्सुया, बहुपरिवारा, पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा अहाणुपुव्विं चरमाणा, गामाणुगामं दूइज्जमाणा, सुहं सुहेणं विहरमाणा. जेणेव लुंगियानयरी जेणेव पुप्फवईए

भावार्थ विनय सम्पन्न, मतिज्ञानादि ज्ञान सहित, सम्यक्त्व सहित, सामायिकादि चारित्र सहित, लौकिक लोकोत्तर लज्जा सहित, द्रव्य से उपधि व भाव से सर्व था लघुतावाले, ओजस्वी, तेजस्वी, वचन की विशिष्टता युक्त सो वर्चस्वी, यशस्वी, क्रोध, मान, माया व लोभ को जीतनेवाले, निद्रा, इन्द्रिय, परिषह को जीतनेवाले, जीवित, मरण, भय व शोक से मुक्त, बहुत श्रुत के धारक और चारों तीर्थरूप बहुत परिवारवाले श्री पार्श्वनाथ स्वामी के शिष्यानुशिष्य स्थविर भगवंत पांचसो साधु के परिवार सहित

शब्दार्थ यथा आ० अनुक्रम से च० विचरते गा० ग्रामानुग्राम दु० जाते सु० सुखमे वि० विचरते जे० जहां तुं० तुंगियानगरी जे० जहां पु० पुष्पवती चे० उद्यान ते० तहां उ० आकर अ० यथाप्रतिरूप उ० अनुग्रह ओ० ग्रहण कर सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावतेहुवे वि० विचरते हैं ॥१३॥ त० तब तुं० तुंगिया न० नगरी में सिं० सिंघाडे जैसे ति० तीनरस्ता च० चार रस्ता च० बहुत म० राजमार्ग में जा० यावत् ए० एकदिशा तरफ णि० जाते हैं ॥ १४ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक इ० इस क० कथा ल० प्राप्त होते ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत स० बोलाकर ए० ऐसे वं० बोले दे० देवानुप्रिय पा०

सूत्र चेइए, तेणेव उवागच्छंति उवागच्छइत्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ १३ ॥ तएणं तुंगियाए नयरीए सिंघाडग-तिगचउक्कचच्चरच उम्मुहमहापहपहेसु जाव एगदिसाभिमुहा णिज्जायंति, ॥ १४ ॥ तएणं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठ तुट्ठा जाव सद्दावेंति

भावार्थ यथाक्रम से ग्रामानुग्राम सुखपूर्वक विचरते तुंगिया नगरी के पुष्पवती उद्यान में आये. वहां आकर यथा-योग्य अवग्रह याचकर संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरते थे ॥ १३ ॥ तब सिंघाडे के आकारवाले रस्ते में, तीन रस्ता मिले वैसे स्थान में, चौक, बहुत रस्ते मीले वैसे स्थान व राजमार्ग में उन स्थविर भगवन्त के दर्शन कोलिये एक ही दिशा में बहुत लोक जा रहे थे ॥ १४ ॥ तब वे श्रमणोपासक ऐसा

शब्दार्थ पार्श्वनाथ के संतानिये थे० स्थविर भं० भगवन्त जा० जातिवंत जा० यावत् अ० यथाप्रतिरूप उ० अनुज्ञा ओ० लेकर सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं म० महाफल दे० देवानुप्रिय त० तथारूप थे० स्थविर भ० भगवन्त के ना० नाम गो० गोत्र को स० सुनने से किं० क्या अ० अभिगमन वं० वंदन ण० नमस्कार प० पूछना प० पूजते जा० यावत् ग० ग्रहण करते तं०

सूत्र सद्दाविता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया। पासावच्चेज्जा थेरा भगवंतो जाति संपण्णा जाव अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा-विहरंति. तं महाफलं खलु देवाणुप्पिया तहारूवाणं थेराणं भगवंताणं नामगोयस्स सवणयाए किमंगपुण अभिगमण वंदण नमंसण पडिपुच्छण पज्जुवास-

भावार्थ वार्तालाप सुनकर बहुत आनंदित हुए. और परस्पर ऐसा बोलनेलगे कि अहो देवानुप्रिय! जातिसंपन्न यावत् यथाप्रतिरूप श्री पार्श्वनाथ स्वामी के शिष्यानुशिष्य श्री स्थविर भगवन्त पुष्पावती उद्यान में आज्ञा मांगकर संयम व तपसे आत्माको भावते हुवे विचर रहे हैं. ऐसे तथारूप स्थविर भगवन्त का नाम गोत्र सुनने से ही महा फल होता है तो फीर अभिगमन, वंदन, नमस्कार, प्रतिपृच्छा, पर्युपासना यावत् अर्थादिक का ग्रहण करने का तो कहना ही क्या? इसलिये अहो देवानुप्रिय! अपन वहां जावे और स्थविर भगवन्तको वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करे. यही इस भव व परभव में अनुगामीक होगा. ऐसा परस्पर वार्तालाप

शब्दार्थ उनकी पास ग० जावे दे० देवानुप्रिय थे० स्थविर भ० भगवन्त को वं० वंदनकरे णं० नमस्कारकरें जा० यावत प० पूजे इ० यह भव में प० परभव में जा० यावत् आ० आनुगामिक भ० होगा ति० ऐसा करके अ० अन्योन्यकी अं०पा स ए०यह अर्थ प० सुनकर जे० जहां स० अपने गे० गृह ते० तहां उ० आकर ण्हा०स्नानकीया क०पीठी लगायी क०कोगले किये पा०तिलक कीया सु०शुद्ध पो०प्रवेश करनेयोग्य मं०मांगलीक व०वस्त्र पं०पहिनकर अ०अल्प म०मूल्यवंत आ० आभरण अ० पहिनकर स०अपने गे०गृह से

सूत्र णयाए जाव गहणयाए तं गच्छामोणं देवाणुप्पिया थेरे भगवंते वंदामो णमं सामो जाव पज्जुवासामो । एयण्णे इहभवे परभवे जाव आणुगामियत्ताए भविस्सइ तिकट्टु ॥ अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणंति पडिसुणित्ता जेणेव सयाइं गेहाइं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छइत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगल पायाच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकिय सरीरा

भावार्थ सुना. सुनकर अपने गृह गये. वहां जाकर स्नान किया, पीठी प्रमुख का विलेपन किया, अंजली भरकर पानी के कोगले किये, तिलक मसादिक किये, और राजसभा में प्रवेश करने योग्य शुद्ध वस्त्र पहिने. फीर अल्प भार व बहुत मूल्यवाले आभरणों से अलंकृत बनकर अपने २ गृह से नीकले, और पांव से चलते हुवे तुंगिया नगरी के मध्य बजार से होकर जहां पुष्पवती नामक उद्यान था वहां आये.

शब्दार्थ प० नीकलकर ए० इकठे मि० मिले पा० पांव से चलकर तुं० तुंगिया न० नगरी की म० मध्य में नि० नीकलकर जे० जहां पु० पुष्पवती चे० उद्यान हो० था ते० तहां उ० आकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को पं० पांच प्रकार के अ० अभिगम से अ० जाते हैं तं० वह ज० जैसे स० सचित्त द० द्रव्य वि० त्यजकर अ० अचित्त द० द्रव्य अ० रखकर ए० एक पटका उ० उत्तरासन क० करके च० चक्षुदर्शन से

सूत्र सएहिं सएहिं गेहेहिंतो पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमइत्ता एगयओ मेलायंति, पायविहार-चारेणं तुंगियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति निग्गच्छइत्ता, जेणेव पुप्फवईए नामं चेइए होत्था तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइत्ता थेरे भगवंते पंचविहेणं अभि-गमेणं अभिगच्छंति तंजहा सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए, एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं,

भावार्थ स्थविर भगवंत की समीप आते हैं १. तांबूलादि सचित्त द्रव्य को अलग करना, २ वस्त्रादि अचित्त द्रव्य को अलग नहीं करना, ३ बीच में नहीं सीला हुवा ऐसा एक वस्त्र का उत्तरासन करना ४ चक्षु दृष्टि में आते ही दोनों हस्त की अंजली करना, और ५ अन्य सब छोडकर मन से साधु स्थविर भगवन्त की तरफ एकत्रता करना ऐसे पांच अभिगम किया. फीर उन स्थविर भगवन्त को तीन आदान प्रदक्षिणा करके तीन प्रकारसे

शब्दार्थ अं० अंजलि प० जोडकर म० मन से ए० स्थिर करके जे० जहां थे० स्थविर भ० भगवन्त ०ते तहां उ० आकर ति० तीनवार अ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करे जा० यावत् ति० त्रिविध प० सेवना से प० सेवे ॥१५॥ त० तब ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक को ती० उस म० बडी प० परिषदा में चा० चार या० याम ध० धर्म कहे ज० जैसे के० केशीस्वामी जा० यावत् स० श्रावकपना आ० आज्ञा आ० आराहित भ० होवे जा० यावत् ध० धर्म क० कहा ॥ १६ ॥ त० तब ते० वे स० श्रमणोपासक थे० स्थविर भ० भगवन्त की

सूत्र मणसा एगत्ती करणेणं, जेणेवथेरे भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइत्ता तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणंवा करेंति जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति ॥ ॥ १५ ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं तीसेय महइ महालियाए परिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेंति जहा केसिसामिस्स जाव समणोवासइत्ताए, आणाए आराहए भवइ जाव धम्मो कहिओ ॥ १६ ॥ तएणं ते समणोवासया

भावार्थ सेवा भक्ति की ॥ १५ ॥ तब उन स्थविर भगवन्तने श्रावकों को उस महती परिषदा में चार याम वाला धर्म कहा. जैसे रायप्रसेणी सूत्र में केशी अनगारने प्रदेशी राजा को धर्मोपदेश कहा था वैसे यावत् धर्म की सम्यक् प्रकार से आराधना करनेवाला श्रमणोपासक आराधक होता है वगैरह धर्मोपदेश कहा ॥ १६ ॥ तब उन स्थविर भगवन्त की पास धर्म सुनकर श्रमणोपासक हृष्ट तुष्ट चित्तवाले

शब्दार्थ प० नीकलकर ए० इकठे मि० मिले पा० पांव से चलकर तुं० तुंगिया न० नगरी की म० मध्य से नि० नीकलकर जे० जहां पु० पुप्पवती चे० उद्यान हो० था त० तहां उ० आकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को पं० पांच प्रकार के अ० अभिगम से अ० जाते हैं तं० वह ज० जैसे स० सचित्त द० द्रव्य वि० त्यजकर अ० अचित द० द्रव्य अ० रखकर ए० एक पटका उ० उत्तरासन क० करके च० चक्षुदर्शन से

सूत्र सएहिं सएहिं गेहेहिंतो पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमइत्ता एगयओ मेलायंति, पायविहार-चारेणं तुंगियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति निग्गच्छइत्ता, जेणेव पुप्फवईए नामं चेइए होत्था तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइत्ता थेरे भगवंते पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति तंजहा सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए, एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं,

भावार्थ स्थविर भगवंत की समीप आते ही १ तांबूलादि सचित्त द्रव्य को अलग करना, २ वस्त्रादि अचित्त द्रव्य को अलग नहीं करना, ३ बीच में नहीं सीला हुवा ऐसा एक वस्त्र का उत्तरासन करना ४ चक्षु दृष्टि में आते ही दोनों हस्त की अंजली करना, और ५ अन्य सब छोडकर मन से साधु स्थविर भगवन्त की तरफ एकत्रता करना ऐसे पांच अभिगम किया. फीर उन स्थविर भगवन्त को तीन आदान प्रदक्षिणा करके तीन प्रकारसे

सूत्र

मणसा एगत्ती करणेणं, जेणेवथेरे भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइत्ता तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणंवा करेंति जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति ॥ ॥ १५ ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं तीसेय महइ महालियाए परिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेंति जहा केसिसामिस्स जाव समणोवासइत्ताए, आणाए आराहए भवइ जाव धम्मो कहिओ ॥ १६ ॥ तएणं ते समणोवासया

पदार्थ

अं॰ अंजलि प॰ जोडकर म॰ मनसे ए॰ स्थिर करके जे॰ जहां थे॰ स्थविर भ॰ भगवन्त ॰ते तहां उ॰ आकर ति॰ तीनवार अ॰ आदान प॰ प्रदक्षिणा क॰ करे जा॰ यावत् ति॰ त्रिविध प॰ सेवना से प॰ सेवे ॥ १५ ॥ त॰ तब ते॰ वे थे॰ स्थविर भ॰ भगवन्त स॰ श्रमणोपासक को ती॰ उस म॰ बडी प॰ परिषदा में चा॰ चार या॰ याम ध॰ धर्म कहे ज॰ जैसे के॰ केशीस्वामी जा॰ यावत् स॰ श्रावकपना आ॰ आज्ञा आ॰ आराहित भ॰ होवे जा॰ यावत् ध॰ धर्म क॰ कहा ॥ १६ ॥ त॰ तब ते॰ वे स॰ श्रमणोपासक थे॰ स्थविर भ॰ भगवन्त की

भावार्थ

सेवा भक्ति की ॥ १५ ॥ तब उन स्थविर भगवन्तने श्रावकों को उस महती परिषदा में चार याम वाला धर्म कहा. जैसे रायप्रसेणी सूत्र में केशी अनगारने प्रदेशी राजा को धर्मोपदेश कहा था वैसे यावत् धर्म की सम्यक् प्रकार से आराधना करनेवाला श्रमणोपासक आराधक होता है वगैरह धर्मोपदेश कहा ॥ १६ ॥ तब उन स्थविर भगवन्त की पास धर्म सुनकर श्रमणोपासक हृष्ट तुष्ट चित्तवाले

शब्दार्थ अं० पास ध० धर्म सो० सुनकर नि० अवधारकर ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् हि० आनंदपामे ति० तीनवार आ० आदान प० प्रदक्षिणा क०करके ए० ऐसा व० बोले सं० संयम से भं० भगवन् किं० क्या फल त० तप से भं० भगवन् किं० क्याफल त० तब थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणो पासक को ए० ऐसा व० बोले सं० संयम से अ० आर्य अ० अनाश्रवफल त० तप से वो० कर्म छेदना

सूत्र थेराणं भगवंताणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जाव हियया,तिक्खुतो आया-हिणपयाहिणं करेंति करेइत्ता एवं वयासीसंजमेणं भंते किं फले तवेणंभंते किं फलेतएणं थेरा भगवंतो ते समणोवासए एवं वायसी संजमेणं अज्जो अणण्हयफले,तवे वोदाणफलेतएणं

भावार्थ हुवे और स्थविर भगवंत को तीन आदान प्रदक्षिणा करके ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! तप व संयम का क्या फल ! तब श्रमणोपासक को स्थविर भगवंत ऐसा कहने लगे कि संयम से आश्रव का निरुंधन होता है अर्थात् संयम पालने वाले को नविन कर्म का आगमन नहीं होता है. वैसे ही पूर्व-कृत कर्मों को छेदन करना यह तपका फल है. तब श्रमणोपासक बोले कि अहो भगवन् ! यदि संयम का आश्रव निरोध रूप व तपका कर्मक्षयरूप फल है तो संयम व तपके आराधन करने वाले किस कारन से देव होते हैं ? तब उन स्थविर भगवंत की पास रहने वाले स्थविरों ने इस प्रश्न का उत्तर

शब्दार्थ — का फल त० तव ते० वे स० श्रमणोपासक थें० स्थविर भ० भगवन्त को ए० ऐसा व० बोले ज० यदि भं० भगवन् सं० संयम से अ० अनाश्रवफल त० तप से वो० कर्म छेदना फल किं० क्या प० प्रत्येक अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक उ० उत्पन्न होवे त० तहां का० कालिक पुत्र अ० अनगार थे० स्थविर तें० उन स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले पु० पूर्व तप से अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे त० तहां म० महिल थे० स्थविर स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले पु० पूर्व

सूत्र — ते समणोवासया थेरे भगवंते एवं वयासी जइणं भंते! संजमे अणण्हयफले तवे वोदाणफले किंपत्तियं भंते देवा देवलोएसु उववज्जंति? तत्थणं कालिय पुत्तेनामं अनगारे थेरे समणोवासए एवं वयासी पुव्वंतवेणं अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जंति ॥ तत्थणं महिलेनामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी पुव्वसंजमेणं अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जंति ॥ तत्थणं आणंदरक्खिए नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी

भावार्थ — अलग २ दिया. उन में से कालिक पुत्र नामक अनगारने कहा कि अहो श्रमणोपासको! * पूर्व तप से देवता में देवपने उत्पन्न होते हैं २ मेहल नामक स्थविर बोले की पूर्व संयम-सराग संयम से

* यहां पूर्व शब्द वीतराग अवस्था की अपेक्षा से लिया है. अर्थात् पूर्व तप सो सरागभाव से तप करना. क्यों कि वीतराग अवस्था से सराग अवस्था पूर्व होती है इससे उसमें कराया हुवा तप सो पूर्वतप.

शब्दार्थ संयम से आ० आनंद रक्षित थे० स्थविर व० बोले क० कर्म से का० काश्यप थे० स्थविर व०बोले सं० संगत से दे० देवलोक में उ० उपजते हैं पु० पूर्वतप से पु० पूर्वसंयम से क० कर्म से सं० संगत से अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे स० सत्य ए० यह अर्थ आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता त० तब स० श्रमणोपासक थे० स्थविर भ० भगवन्त से ए० ऐसा वा० प्रश्नोत्तर वा० कहते ह० हृष्ट

सूत्र कम्मियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति ॥ तत्थणं कासवे नामं थेरे एवं वयासी संगियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति ॥ पुव्व तवेणं, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए, अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति. सच्चेणं एसअट्ठे नो चेवणं आयभाव वत्तव्वयाए ॥ तएणं ते समणोवासया थेरेहिं भगवंतेहिं इमाइं एयारूवाइं

भावार्थ देवलोक में देवताओ होते हैं. ३ आनंदरक्षित नामक स्थविर बोले कि कर्म के विकार से देवलोक में उत्पन्न होते हैं क्योंकि समस्त कर्म का क्षय नहीं किया है परंतु थोडे बहुत दोष रहेहुवे हैं. काश्यप नामक स्थविर बोले कि संगति से देवलोक में देव होते हैं अर्थात् मनुष्यादि की संगति से सराग भाव रहने से या द्रव्यादि में सराग भाव रहने से तप संयम के आराधक देवलोक में देवता होते हैं. इस तरह पूर्व तप, पूर्व संयम, कर्म विकार व संगति से देवलोक में संयम व तप करनेवाले देव होते हैं ऐसा जो कहा है वह सत्य है. हमने हमारा अहंभाव से नहीं कहा है. तब स्थविर

शब्दार्थ तु० तुष्ट हुवे स्थविर भं० भगवन्त को वं० वंदनाकर ण० नमस्कार कर प० प्रश्न पु० पूछे अ० अर्थ उ० ग्रहण करे उ० स्थान से उ० उठकर थे० स्थविर भ० भगवन्त को ति० तीन वार जा० यावत् वं० वंदना कर न० नमस्कार कर थे० स्थविर भ० भगवन्त की अं० पास से पु० पुष्पवती चे० उद्यान से प० नीकलकर जा० जिसदिशि से पा० आये ता० उसदिशा में प० पीछे गये ॥ १८ ॥ त० तत्र ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त अ० कोइ वक्त तुं० तुंगीआ न० नगरी के पु० पुष्पवती चे० उद्यान से प० नीकलकर प०

सूत्र वागरणाइं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठा थेरे भगवंते वंदंति णमंसंति वंदइत्ता नमंसइत्ता पसिणाइं पुच्छंति अट्ठाइं उवाहियंति, उट्ठाए उट्ठेंति थेरे भगवंते तिक्खुत्तो जाव वंदंति णमंसंति वंदित्ता नमंसइत्ता थेराणं भगवंताणं अंतियाओ पुप्फवईयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमइत्ता जामेवदिसं पाउब्भूया तामेवदिसं पडिगया ॥१८॥ तएणं ते थेरा भगवंतो अण्णयाकयाइं तुंगियाओ नयरीओ पुप्फवईयाओ

भावार्थ भगवन्त से पूछेहुवे प्रश्नोंका उत्तर सुनकर हृष्ट, तुष्ट हुवे और स्थविर भगवंत को अन्य भी प्रश्न पूछे, उन के अर्थ की धारणा की. फीर उठकर तिन वार आदान प्रदक्षिणा करके पुष्पवती उद्यान में से नीकलकर जिसदिशा में से आये थे उसी दिशा में अपने २ स्थान पीछे गये. ॥ १८ ॥ स्थविर भग-

शब्दार्थ पारणा में प० प्रथम पो० पोरसी में स०स्वाध्याय क० करे बी० दूसरी पो० पोरसी में झा० ध्यान करे त० तीसरी पो० पोरसी में अ० धीमे स अ० अचपल अ० असंभ्रांत मु० मुखवस्त्रिका प० देखकर भा० भाजन व० वस्त्र प० देखकर भा०भाजन को प० पुंजकर भा० भाजन उ० ग्रहणकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां उ० आकर स० श्रमण भ० भगवन्त को वं० वंदनकर ण० नमस्कार कर व० बोले इ० इच्छता हूं भं० भगवन् तु० तुमारी आ० आज्ञा होवेतो छ० छठ भक्त पा० पारणा में रा०

सूत्र क्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाए, तइयाए पोरिसीए अतुरिय मचवल मसंभंते, मुहपोत्तियं पडिलेहेइ पडिलेहेइत्ता, भायणाइं वत्थाइं पडिलेहेइ पडिलेहेइत्ता भायणाइं पमज्जइ पमज्जइत्ता, भायणाइं उग्गाहेइ उग्गाहेइत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदइत्ता णमंसइत्ता एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुज्झेहिं अब्भणुण्णाए समाणे

भावार्थ पारणे के दिन प्रथम प्रहर में भगवन्त गौतमने स्वाध्याय की, दूसरे प्रहर में ध्यान किया और तीसरे प्रहर में धैर्यता सहित व चपलता रहित मुख वस्त्रिका का प्रतिलेखन किया, भाजन वस्त्रकी प्रतिलेखना की. फीर भाजन को गोच्छेसे पुंजकर ग्रहण किये और श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की पास आये. महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसा बोले अहो भगवन् ! आपकी आज्ञा होवे तो इच्छादि

सूत्र

चेइयाओ पडिनिग्गच्छंति पडिनिग्गच्छइत्ता बहिया जणवय विहारं विहरंति ॥ १७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे जाव परिसा पडिगया ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूइणामं अणगारे जाव संखित्तविउलतेउलेस्से छट्ठं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १८ ॥ तएणं से भगवं गोयमे छट्ठ-

शब्दार्थ

बाहिर ज० अन्यदेश में व० विचरने लगे ॥ १७ ॥ ते० उस काल ते० उससमय में रा० राजगृह न० नगर जा० यावत् प० परिपदा प० पीछीगइ ते० उसकाल ते० उससमय में स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर का जे० ज्येष्ठ अं० अंतेवासी इं० इन्द्रभूति अ० अनगार जा० यावत् सं० संक्षिप्त वि० विपुल ते० तेजोलेश्या छ० छठ छठ से अ० अंतर रहित त० तपकर्म से सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावतेहुवे वि० विचरते थे ॥ १८ ॥ त० तब भ० भगवान् गो० गौतम छ० छठ भक्त का पा०

भावार्थ

वन्त भी तुंगिया नगरी के पुष्पवती उद्यान में से नीकलकर अन्य देशमें विहार करने लगे ॥ १७ ॥ उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था. वहां श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी आये. परिषदा को भगवन्त ने धर्मोपदेश कहा. धर्मोपदेश सुनकर परिषदा पीछी गई. उस काल उस समय में श्री महावीर स्वामी के ज्येष्ठ अंतेवासी विपुल तेजोलेश्याको संक्षिप्त करने वाले इन्द्रभूति नामक अनगार निरंतर छठ छठ (बेले बेले) का तप करते संयम व तप में मग्न होते विचरते थे ॥ १८ ॥ उस समय में छठ के

शब्दार्थ जाकर रा० राजगृह न० नगर में उ० ऊंच नी० नीच म०मध्यम कु०कुल के घ० गृह स० समुदानकी भि० भिक्षा के लिये अ० विचरते हैं ॥२०॥ त० तब भ०भगवान् गो०गौतम रा०राजगृह न०नगर में जा०यावत् अ० विचरते ब० बहुत ज० मनुष्यों के स० शब्द नि० सुने ए० ऐसे ख० निश्चय दे० देवानुप्रिय तुं० तुंगिया न० नगरी की ब० बाहिर पु० पुष्पवती चे० उद्यान में पा० पार्श्वनाथ के संतानिये थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक इ० इसरूप से वा० प्रश्न पु० पूछे सं० संयम से भं० भगवन् किं० क्या

सूत्र रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता, रायगिहे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं परघरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ ॥ २० ॥ तएणं से भगवं गोयमे रायगिहे नयरे जाव अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवईयाए चेइयाए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया संजमेणं भंते ! किं फले, तवे किं फले ?

भावार्थ नगरी में गये. और वहां ऊंच नीच व मध्यम कुल के घरों में भिक्षाचरी की ॥ २० ॥ उस समय में राजगृह नगर में गोचरी करते भगवन्त गौतम स्वामीने बहुत मनुष्यों से ऐसा सुना कि तुंगिया नगरी के बाहिर पुष्पवती नामक उद्यान में श्री पार्श्वनाथ भगवन्त के शिष्यानुशिष्य स्थविर भगवन्त को श्रमणोपासक (श्रावकों) ने ऐसा प्रश्न पूछा कि संयम का क्या फल व तप का क्या फल ? तब स्थविर भग-

शब्दार्थ राजगृह न नगरमें उ० ऊंच नी०नीच म०मध्यम कु०कुल के घ०गृहों को भि० भिक्षा के लिये अ० विचरने को अ० यथासुखं दे० देवानुप्रिय मा० मत् प० प्रतिबंध ॥ १९ ॥ त० तब भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर से अ० आज्ञामिलते स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अं० पास से गु० गुणशील चे० उद्यान से प० नीकलकर अ० धीमे से अ० अचपल अ० असंभ्रांत जु० धूंसरा प्रमाण प० प्रलोचना दि० दृष्टि से पु० आगे रि० जाते सो० शोधते जे० जहां रा० राजगृह न० नगर ते० तहां उ०

सूत्र छट्ठक्खमण पारणयंसि रायगिहे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं, घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए. अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंधं ॥ १९ ॥ तएणं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता अतुरिय मचवलमसंभंते जुगमंतर पलोयणाए दिट्ठीए पुरओरियं सोहेमाणे २ जेणेव

भावार्थ ऊंच, वैश्यादि मध्यम व क्षुद्रादि नीच कुल के गृहों में से छठ का पारणाके लिये भिक्षा लाने को मैं इच्छता हूं. अहो देवानुप्रिय ! जैसे को तुम सुख होवे वैसा करो विलम्ब मत करो ॥ १९ ॥ इस तरह भगवन्त की आज्ञा मीलनेसे गौतम स्वामी भगवन्त श्री महावीर स्वामी की पाससे गुणशील नामक उद्यान में से नीकलकर शीघ्रता व मंदता रहित असंभ्रान्त बने हुवे युग प्रमाण आगे जमीन को दृष्टि से देखते राजगृही

शब्दार्थ कथा का ल० प्राप्त होते अर्थ जा० श्रद्धा उत्पन्न हुइ जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा को० कुतुहल अ० यथा पर्याप्त स० भिक्षा गि०ग्रहणकर रा०राजगृह न०नगरसे प०नीकलकर अ०शीघ्रता रहित से जा०यावत् सो० शोधते जे० जहां गु० गुणशील चे० उद्यान जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां

सूत्र जाव समुप्पन्न कोउहल्ले अहापजत्तं समुदाणं गिण्हइ गिण्हइत्ता रायगिहाओ नयराओ पडिनिक्खमइ अतुरिय जाव सोहेमाणे जेणेव गुणासिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ एसण मणेसणं आलोएइ, भत्तपाणं पडिदंसेइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं जाव एवं वयासी एव खलु भंते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे रायगिहे नयरे उच्चनीय मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे

भावार्थ होने पर यथापर्याप्त [चाहिये उतना] आहार ग्रहण-करके शीघ्रता व मंदता रहित युगप्रमाण आगे भूमि देखते राजगृह नगर की बाहिर गुणशील नामक उद्यान में श्रमण भगवन्त महावीर की पास आये. वहां आकर महावीर स्वामी की पास गमन, आगमन में जो कोई जीव की विराधना हुई होवे उसकी निवृत्यर्थ कायोत्सर्ग करके जो आहार लाये थे उस के शुद्धाशुद्ध ऐसे दोनों को विचार कर भक्त पान बतलाया. बतलाकर श्री श्रमण भगवन्त महावीर को ऐसा कहा अहो भगवन् ! आपकी

शब्दार्थ फ० फल त० तप से किं० क्या फल त० तब ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक को ए० ऐसा व० बोले सं० संयम से अ० आर्य अ० अनाश्रवफल त० तप से वो० कर्म छेदन फल तं० तैसे जा० यावत् पु० पूर्वतप से पु० पूर्व संयम से क० कर्म से सं० संग से अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता से० वह क० कैसे ए० यह म० मानाजावे ए० ऐसे ॥ २१ ॥ त० तब भ० भगवान् गो० गौतम इ० इस क०

सूत्र तएणं ते थेरा भगवंतो समणोवासए एवं वयासी संजमेणं अज्जो अणण्हय फले, तवे वोदाणफले, तं चेव जाव पुव्वतवेणं; पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति सच्चेणं एसमट्ठे णो चेवणं आयभाववत्तव्वयाए. से कहमेयं मन्ने एवं ? ॥ २१ ॥ तएणं भगवं गोयमे इमीसे कहाए लद्धट्ठेसमाणे जायसड्ढे

भावार्थ वन्तने उत्तर दिया कि संयम का आश्रव निरोध व तप का पूर्व कृतकर्मों के क्षय का फल है. जब ऐसा है तो तपस्वी व संयमी देव क्यों होते हैं ! पूर्व सो सराग तप से, पूर्व संयम से, कर्म विकार से व संगति से देवलोक में देव होते हैं यह सत्य है. यह अहंभावबुद्धि से नहीं कहते हैं परंतु परमार्थ से कहते हैं. ऐसा स्थविर का वचन कैसे माननीय होवे ? ॥ २१ ॥ इस तरह नगर में वार्ता सुनकर श्रद्धा व कौतुक उत्पन्न

शब्दार्थ विचरता व० बहुत म० मनुष्यों का स० शब्द नि० सुने दे० देवानुप्रिय तुं० तुंगिया न० नगरी की ब० बाहिर पु० पुष्पवती चे० उद्यान में पा० पार्श्वनाथ के संतानिये थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक ए० ऐसे वा० प्रश्न पु० पूछे सं० संयम से किं० क्या फ० फल त० तप से किं० क्या फ० फल तं० तैसे जा० यावत् स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता प०

सूत्र तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए उदाहु असमिया? आउजियाणं भंते! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए उदाहु अणाउज्जिया? पलिउज्जियाणं भंते! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए उदाहु अपलिउज्जिया? पुव्वतवेणं अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति.

भावार्थ भगवन्! उन श्रावकोंने पूछे हुवे प्रश्नों का शास्त्र विधि से उत्तर देने को क्या वे समर्थ हैं या असमर्थ हैं? अथवा वे स्थविर भगवन्त उन श्रावकों के प्रश्नों का उत्तर देने में सम्यक् प्रकार से अभ्यासवाले हैं या अभ्यासवाले नहीं है? अथवा उन श्रावकों के प्रश्नों कहने को वे स्थविर भगवन्त क्या ज्ञानवन्त हैं या ज्ञानवन्त नहीं हैं? अथवा उन के प्रश्नों के उत्तर देने में वे स्थविर भगवन्त क्या परिज्ञानवाले हैं या परिज्ञान-

शब्दार्थ उ० आकर म० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अ० नजदीक ग० गमनागमनका प० प्रतिक्रमणकर ए० शुद्धाशुद्ध आ० आलोचकर भ० भक्त पानी प० देखाडकर स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे भं० भगवन् अ० मैं तु० तुमारी अ० आज्ञा मिलते रा० राज गृह न० नगर मे उ० ऊंच नी० नीच म० मध्यम कुल के घ० गृह समुदाय में भि० भिक्षा कोलिये अ०

सूत्र बहुजणसद्दं निसामेइ एवं खलु देवाणुप्पिया तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवईए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया, संजमेणं भंते ! किं फले ? तवे किं फले? तंचेव जाव सच्चेणं एसमट्ठे णो चेवणं आय भाववत्तव्वयाए ॥ तं पभूणं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए उदाहु अप्पभू ? समियाणं भंते ! ते थेरा भगवंतो

भावार्थ आज्ञा से राजगृह नगर में ऊंच नीच व मध्यम कुल में भिक्षा ग्रहण करने के लिये परिभ्रमण करते बहुत मनुष्यों से मैंने ऐसा सुना कि तुंगिया नगरी की बाहिर पुष्पवती उद्यान में श्री पार्श्वनाथ स्वामी के स्थविर भगवन्त को श्रमणोपासकोंने ऐसा प्रश्न पूछा कि संयम से क्या फल, तप से क्या फल ? वे स्थविर भगवन्तने संयम का आश्रव निरोध व तप का पूर्व कृतकर्म क्षय का फल कहा यावत् संगति से देवलोकमें देवतापने उत्पन्न होते हैं यह सत्य है, और उसे हम हमारी बुद्धि से नहीं कहते हैं ऐसा कहा. तो अहो

र्थ विचरता ब० बहुत म० मनुष्यों का स० शब्द नि० सुने दे० देवानुप्रिय तुं० तुंगिया न० नगरी की ब० बाहिर पु० पुष्पवती चे० उद्यान में पा० पार्श्वनाथ के संतानिये थे० स्थविर भ० भगवन्त स० श्रमणोपासक ए० ऐसे वा० प्रश्न पु० पूछे सं० संयम से किं० क्या फ० फल त० तप से किं० क्या फ० फल तं० तैसे जा० यावत् स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता प०

सूत्र

तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए उदाहु असमिया ? आउज्जियाणं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए उदाहु अणाउज्जिया ? पलिउज्जियाणं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए उदाहु अपलिउज्जिया ? पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति.

भावार्थ

भगवन् ! उन श्रावकोंने पूछे हुवे प्रश्नों का शास्त्र विधि से उत्तर देने को क्या वे समर्थ हैं या असमर्थ हैं ? अथवा वे स्थविर भगवन्त उन श्रावकों के प्रश्नों का उत्तर देने में सम्यक् प्रकार से अभ्यासवाले हैं या अभ्यासवाले नहीं है ? अथवा उन श्रावकों के प्रश्नों कहने को वे स्थविर भगवन्त क्या ज्ञानवन्त हैं या ज्ञानवन्त नहीं हैं ? अथवा उन के प्रश्नों के उत्तर देने में वे स्थविर भगवन्त क्या परिज्ञानवाले हैं या परिज्ञान-

शब्दार्थ

उ० आकर म० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अ० नजदीक ग० गमनागमनका प० प्रतिक्रमणकर ए० शुद्धाशुद्ध आ० आलोचकर भ० भक्त पानी प० देखाडकर म० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे भं० भगवन् अ० मैं तु० तुमारी अ० आज्ञा मिलते रा० राज गृह न० नगर मे उ० ऊंच नी० नीच म० मध्यम कुल के घ० गृह समुदाय में भि० भिक्षा कोलिये अ०

सूत्र

बहुजणसद्दं निसामेइ एवं खलु देवाणुप्पिया तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवईए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया, संजमेणं भंते ! किं फले ? तवे किं फले? तंचेव जाव सच्चेणं एसमट्ठे णो चेवणं आय भाववत्तव्वयाए ॥ तं पभूणं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए उदाहु अप्पभू ? समियाणं भंते ! ते थेरा भगवंतो

भावार्थ

आज्ञा से राजगृह नगर में ऊंच नीच व मध्यम कुल में भिक्षा ग्रहण करने के लिये परिभ्रमण करते बहुत मनुष्यों से मैंने ऐसा सुना कि तुंगिया नगरी की बाहिर पुष्पवती उद्यान में श्री पार्श्वनाथ स्वामी के स्थविर भगवन्त को श्रमणोपासकोंने ऐसा प्रश्न पूछा कि संयम से क्या फल, तप से क्या फल? वे स्थविर भगवन्तने संयम का आश्रव निरोध व तप का पूर्व कृतकर्म क्षय का फल कहा यावत् संगति से देवलोकमें देवतापने उत्पन्न होते हैं यह सत्य है, और उसे हम हमारी बुद्धि से नहीं कहते हैं ऐसा कहा. तो अहो

शब्दार्थ त॰तपसे अ॰ असमर्थ त॰तैसे ने॰जानना अ॰अवशेष जा॰यावत् प॰ समर्थ स॰ सम्यक् अ॰ अभ्यास वाले जा॰ यावत् स॰सत्य ए॰यह अर्थ णो॰नहीं आ॰आत्मभाव व॰वक्तव्यता ॥ २३ ॥ अ॰मैं गो॰गौतम ए॰ ऐसा आ॰ कहताहूं भा॰ बोलताहूं प॰ विशेष कहताहूं प॰ प्ररूपताहूं पु॰ पूर्व त॰ तप से पु॰ पूर्व संयम से दे॰ देव दे॰ देवलोकमें उ॰ उत्पन्न होवे क॰ कर्म से सं॰ संगसे दे॰ देव दे॰ देवलोक में उ॰ उत्पन्न होते हैं स॰ सत्य ए॰ यह अर्थ णो॰ नहीं आ॰ आत्मभाव व॰ वक्तव्यता ॥ २४ ॥ त॰ तथारूप

सूत्र सच्चेणं एसमट्ठे, णो चेवणं आयभाव वत्तव्वयाए ॥ २३ ॥ अहंपिणं गोयमा ! एव माइक्खामि, भासेमि, पन्नवेमि, परूवेमि पुव्वतवेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति, कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति, संगियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति. पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं कम्मियाए, संगियाए अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जंति. सच्चेणं एसमट्ठे णो चेवणं आयभाव वत्तव्वयाए

भावार्थ यह अर्थ सत्य है आत्म कल्पित नहीं है ॥ २४ ॥ यह सुनकर गौतम स्वामी साधु की सेवा से क्या फल होता है ऐसा प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! तथारूप श्रमण की सेवा करने वाले को क्याफल होवे ? अहो गौतम ! तथारूप श्रमण की सेवा करने से शास्त्र श्रवण का फल होवे. अहो भगवन् ! शास्त्र श्रवण से क्या फल होवे ? अहो गौतम ! शास्त्र श्रवण से श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है. अहो भगवन् ! ज्ञान से

शब्दार्थ रामथ भं० भगवन् ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक के ए० ऐसे वा० प्रश्न वा० कहने को अ० नहीं समर्थ स० अभ्यास वाले उ० अथवा अ० अभ्यास रहित आ० ज्ञानवंत अ० ज्ञानरहित प० विज्ञानवंत अ० विज्ञानरहित पु०पूर्वतपसे अ०आर्य दे०देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे पु० पूर्व संयम से क० कर्म से सं० संगसे दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्म भाव व० वक्तव्यता ॥ २२ ॥ प० समर्थ गो० गौतम ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक को ए० ऐसे वा० प्रश्न को वा० कहने को णो० नहीं

सूत्र

सच्चेणं एसमट्ठे णोचेवणं आयभाववत्तव्वयाए ॥ २२ ॥ पभूणं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए णो अप्पभू तहचेव नेयव्वं, अवसेसियं जाव पभू समियं आउज्जिय पलिउज्जिय जाव

भावार्थ

वाले नहीं हैं ? ॥ २२ ॥ अहो गौतम ! उन श्रावकों के प्रश्नों का उत्तर देने को वे स्थविर भगवन्त समर्थ, अभ्यासवाले, ज्ञानवन्त व परिज्ञानवन्त हैं परंतु असमर्थ, अनभ्यासवाले, अज्ञानवन्त व अपरिज्ञानवन्त नहीं हैं ॥ २३ ॥ अहो गौतम ! मैं भी ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि पूर्व-सराग-तप से देवता देवलोक में उत्पन्न होते हैं वैसे ही पूर्व संयम, कर्म विकार व संगति से देवता देवलोक में उत्पन्न होते हैं.

शब्दार्थ त०तपसे अ० असमर्थ त०तैसे ने०जानना अ०अवशेष जा०यावत् प० समर्थ स० सम्यक् अ० अभ्यास वाले से दे० देव दे० देवलोकमें उ० उत्पन्न होवे क० कर्म मे सं० संगसे दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होते हैं स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्मभाव व० वक्तव्यता ॥ २३ ॥ अ०मैं गो०गौतम ए० ऐसा आ० कहताहूं भा० बोलताहूं प० विशेष कहताहूं प० प्ररूपताहूं पु० पूर्व त० तप से पु० पूर्व संयम जा० यावत स०सत्य ए०यह अर्थ णो०नहीं आ०आत्मभाव व०वक्तव्यता ॥ २४ ॥ त० तथारूप

सूत्र सच्चेणं एसमट्ठे, णो चेवणं आयभाव वत्तव्वयाए ॥ २३ ॥ अहंपिणं गोयमा ! एव माइक्खामि, भासेमि, पन्नवेमि, परूवेमि पुव्वतवेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति, कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति, संगियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति. पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं कम्मियाए, संगियाए अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जंति. सच्चेणं एसमट्ठे णो चेवणं आयभाव वत्तव्वयाए

भावार्थ यह अर्थ सत्य है आत्म कल्पित नहीं है ॥ २४ ॥ यह सुनकर गौतम स्वामी साधु की सेवा से क्या फल होता है ऐसा प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! तथारूप श्रमण की सेवा करने वाले को क्याफल होवे ? अहो गौतम ! तथारूप श्रमण की सेवा करने से शास्त्र श्रवण का फल होवे. अहो भगवन् ! शास्त्र श्रवण से क्या फल होवे ? अहो गौतम ! शास्त्र श्रवण से श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है. अहो भगवन् ! ज्ञान से

शब्दार्थ रामथ भं० भगवन् ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक के ए० ऐसे वा० प्रश्न वा० कहने को अ० नहीं समर्थ स० अभ्यास वाले उ० अथवा अ० अभ्यास रहित आ० ज्ञानवंत अ० ज्ञानरहित प० विज्ञानवंत अ० विज्ञानराहित पु० पूर्वतपसे अ० आर्य दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे पु० पूर्व संयम से क० कर्म से सं० संगसे दे० देव दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होवे स० सत्य ए० यह अर्थ णो० नहीं आ० आत्म भाव व० वक्तव्यता ॥ २२ ॥ प० समर्थ गो० गौतम ते० वे थे० स्थविर भ० भगवन्त ते० उन स० श्रमणोपासक को ए० ऐसे वा० प्रश्न को वा० कहने को णो० नहीं

सूत्र सच्चेणं एसमट्ठे णोचेवणं आयभाववत्तव्वयाए ॥ २२ ॥ पभूणं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए णो अप्पभू तहचेव नेयव्वं, अवसेसियं जाव पभू समियं आउज्जिय पलिउज्जिय जाव

भावार्थ वाले नहीं हैं ? ॥ २२ ॥ अहो गौतम ! उन श्रावकों के प्रश्नों का उत्तर देने को वे स्थविर भगवन्त समर्थ, अभ्यासवाले, ज्ञानवन्त व परिज्ञानवन्त हैं परंतु असमर्थ, अनभ्यासवाले, अज्ञानवन्त व अपरिज्ञानवन्त नहीं हैं ॥ २३ ॥ अहो गौतम ! मैं भी ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि पूर्व-सराग-तप से देवता देवलोक में उत्पन्न होते हैं वैसे ही पूर्व संयम, कर्म विकार व संगति से देवता देवलोक में उत्पन्न होते हैं.

शब्दार्थ वो० कर्म छेदनफल वो० कर्म छेदनसे अ० अक्रिया फल भं० भगवन् अ० अक्रिया से किं० क्याफल सि० सिद्धि पर्यवसान फल प० प्ररूपा ॥ २८ ॥ अ० अन्यतीर्थिक भं० भगवन् ए० ऐसे आ० कहते हैं प० प्ररूपते हैं रा० राजगृह न० नगरकी व० बाहिर वे० वेभार प० पर्वत की अ० नीचे ए० तहां म० बडा ए० एकद्रह अ० पानीका अं० अनेक जो० योजन का आ० लम्बा वि० चौडा ना० नानाप्रकार

सूत्र सिद्धिपज्जवसाण फला पण्णत्ता गोयमा ! ॥ गाथा ॥ सवणे णाणेय विण्णाणे, पच्च-क्खाणेय संजमे ॥ अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥ १ ॥ २५ ॥ अण्णाउत्थियाणं भंते ! एव माइक्खंति भासंति पण्णवंति परूवंति एवं खलु रायगिहस्स नयरस्स बाहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे एत्थणं महं एगे हरए अघे पण्णत्ते अणेगाइं

भावार्थ कर्मों का क्षय होने से अक्रिया का फल होवे अर्थात् योग निरुंधन रूप फल होवे. अक्रिया से क्या फल? अहो गौतम ! अक्रिया से समस्त फल में सर्वोत्कृष्ट कर्मक्षयरूप मोक्षफल होवे. यों अनुक्रम से श्रवण, ज्ञान, विज्ञान, प्रत्याख्यान, संयम, आश्रवनिरोध तप, निर्जरा, अक्रिया, व मुक्ति का फल होता है. ॥ २८ ॥ अब साधु सेवा नहीं करने से विपरीत भाषी होते हैं सो बताते हैं ? अहो भगवन् ! अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि राजगृह नगर की बाहिर वेभार नामक पर्वत है उस की नीचे एक महान द्रह अनेक योजन की लम्बाइ व चौडाइ वाला है. विविध प्रकार के वृक्ष, व वनखंड

शब्दार्थ भं०भगवन् स०श्रमण की प०पर्युपासना करते किं०क्या फ०फल पु०पर्युपासना का गो०गौतम स० श्रवण फल स०श्रवण से णा०ज्ञानफल णा० ज्ञानसे किं०क्याफल वि०विज्ञानफल वि० विज्ञानसे किं०क्याफल प० प्रत्याख्यान फल प०प्रत्याख्यानसे सं०संयमफल सं०संयम से अ०अनाश्रवफल अ०अनाश्रवसे त०तपफल

सूत्र ॥ २४ ॥ तहारूवेणं भंते ! समणं वा पज्जुवासमाणस्स किं फला पज्जुवासणा? गोयमा ! सवणफला। से णं भंते ! सवणे किं फले ? गोयमा ! णाणफले। सेणं भंते ! णाणे किं फले ? गोयमा ! विण्णाणफले । से णं भंते ! विण्णाणे किं फले ? गोयमा ! पच्चक्खाण फले । सेणं भंते ! पच्चक्खाणे किं फले ? संजम फले । सेणं भंते ! संजमे किं फले ? अणण्हय फले । एवं अणण्हए तव फले । तवे वोदाण फले । वोदाणे अकिरिया फले। से णं भंते ! अकिरिया किं फले ?

भावार्थ क्या फल ? अहो गौतम ! ज्ञान से हेय ज्ञेय उपादेय जानने रूप विज्ञान फल होवे. अहो भगवन् ! विज्ञान से क्या फल ? अहो गौतम ! विज्ञान से पापकर्म के प्रत्याख्यान का फल होवे ? अहो भगवन् ! प्रत्याख्यान से क्या फल ? अहो गौतम ! पाप का प्रत्याख्यान करने से संयम का फल होता है. अहो भगवन् ! संयम से क्या फल होवे ? अहो गौतम ! संयम से नविन् कर्मों के आश्रव द्वारों का रुंधन करने का फल होवे और इस तरह लघु कर्म होने से तपस्यावंत होवे. तप से पूर्वकृत कर्मों का क्षय होवे. और पूर्वकृत

अ० नजदीक ए० तहां म० महातपोपतीरप्रभव पा० झरण प० प्ररूपा पं० पांच सो धनुष्य आ० लंबा वि० चौडा ना० नाना प्रकार दु० वृक्षवन खंड से मं०मंडित दे०प्रदेश स० शोभायमान पा०प्रसन्न चित्त करने वाला द० देखने योग्य अ० अभिरूपं प० प्रतिरूप त० तहां व० बहुत उ० ऊष्ण जो० योनिवाले जी० जीव पो० पुद्गल उ० पानीपने व० उत्पन्न होते हैं वि० विणसते हैं च० चवते हैं उं० पुष्ट होते हैं त० भरा

सूत्र. णयरस्स बहिया वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते एत्थणं महातवोवतीरप्पभवे नामं पासवणे पण्णत्ते पंच धणुसयाइं आयाम विक्खंभेणं नाणा दुमखंडमंडिउद्देसे, सस्सिरिए पासादीए दरिसणिज्जे, अभिरूवे पडिरूवे। तत्थणं बहवे उसिणजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति, चयंति उवचयंति। तव्वतिरित्तेवियणं सयासमियं उसिणे उसिणे आउआए अभिनिस्सवइ, एसणं गोयमा! महातवोवतीरप्पभवे पासवणे, एसणं

भावार्थ मिथ्या है. मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि राजगृह नगर की बाहिर वेभार पर्वत की पास अति ऊष्ण क्षेत्र है. उस की समीप एक महातपोपतीरप्रभव नामक ऊष्ण पानी का झरणा है. पांचसो धनुष्य का लम्बा व चौडा है. विविध प्रकार के वृक्ष, वनखंड से सुशोभित, प्रासादीक, दर्शनीय, अभिरूप यावत् प्रतिरूप है. उस में बहुत ऊष्ण योनिवाले जीव पानीपने उत्पन्न होते हैं. चवते हैं. उस में पानी भराये पीछे जो अधिक होता है वह ऊष्ण अप्कायपने झरता है. अहो गौतम! यह महातपोपतीर

शब्दार्थ

दु० वृक्षकेवनखंड से मं० शोभित दे० प्रदेश स० शोभायमान जा० यावत् प० प्रतिरूप त० तहां व० बहुत उ०.विस्तीर्ण व० बादल सं० सन्मुख होते हैं उ० उपजते हैं वा० वर्षते हैं त० भरा हुवा स० सदैव उ० ऊष्ण आ० पानी अ० झरता है से० वह क० कैसे भं० भगवन् गो० गौतम ज० जो अ० अन्य तीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे आ० कहते हैं अ० मैं पु०फीर ए०ऐसा आ०कहता हूं रा० राजगृह न०नगर की व०वाहिर वे०वेभार प०पर्वत की

सूत्र

जोयणाइं आयाम विक्खंभेणं नाणादुम खंडमंडिउद्देसे.सस्सिरीए जाव पडिरूवे,तत्थणंबहवे उदारा बलाहया संसेयंति संमुच्छियंति वासंति तव्वतिरित्तेवियणं सयासमिउं उसिणे आउकाए अभिनिस्सवइ, से कहमेयं भंते एवं ? गोयमा ! जण्णंते अणउत्थिया एवमाइक्खंति जाव जेते एव माइक्खंति मिच्छंते एवमाइक्खंति ॥ अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, भासामि, पण्णवेमि, परूवेमि एवं खलु रायगिहस्स

भावार्थ

वगैरह से सुशोभित यावत् प्रतिरूप है. इस द्रह में बहुत बद्दल उत्पन्न सन्मुख होते हैं, उत्पन्न होते हैं और वर्षते हैं. वह द्रह भरजाने से जो अधिक पानी नीकलता है वह पानी सदैव ऊष्ण योनिवाला रहता है अर्थात् जो पानी द्रह से बाहिर नीकलता है वह सदैव ऊष्ण रहता है. अहो भगवन् ! यह किस तरह से है ! अहो गौतम ! जो अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं वे मिथ्या ऐसा कहते हैं अर्थात् उन का कथन

पदार्थ

क० कितने भं० भगवन् दे० देव प० प्ररूपे गो० गौतम च० चार प्रकार के दे० देव प० प्ररूपे भ० भुवनपति वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक क० कहां भं० भगवन् भ० भुवनपति दे० देव के ठा० स्थान प० कहे गो० गौतम इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की ज० जैसे ठा० स्थान पद में

सूत्र

कइविहाणं भंते ! देवा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता तंजहा—भवणवइ, वाणमंतर, जोइस, वेमाणिया, । कहिणं भंते ! भवणवासीणं देवाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जहा ठाणपदे देवाणं वत्तव्वया,

भावार्थ

विशुद्ध भाषा बोलने से देव होवे इसलिये देवता का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! देवता के कितने भेद कहे हैं ? देवताओं के चार भेद कहे हैं. १ भुवनपति २ वाणव्यंतर ३ ज्योतिषी और ४ वैमानिक. अहो भगवन् ! भुवनपति देवों के स्थान कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्नवणा के दूसरे स्थान पद में इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड कहा है. उसमें एक२ हजार उपर व नीचे छोडने से एक लाख अठत्तर हजार योजन की पोलार है. उस में बारह आंतरे व तेरह पाथडे हैं. इस के आंतरे में भवनपति देवता के सात क्रोड बहोत्तर लाख भुवन कहे हैं. भवनपति देवलोक के असंख्यातवे भाग में उत्पन्न होते हैं. मारणान्तिक समुद्घातवर्ती लोक के असंख्यातवे भाग में भवनपति वर्तते हैं. स्वस्थान आश्री सात क्रोड बहोत्तर लाख भवन कहे हैं. वे भी लोक के असंख्यातवे

शब्दार्थ हुवा स० सदा उ० उष्ण आ० अप्कायपने अ० झरता है गो० गौतम म० महातपोपतीर प्रभव पा० झरण का अ० अर्थ प० प्ररूपा से० ऐसा भं० भगवन् भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भगवान् म० महावीर को वं० वंदना करते हैं न० नमस्कार करते हैं ॥ २ ॥ ५ ॥ *

से० वह भं० भगवन् म० मानता हूं ओ० अवधारणी भाषा भा० भाषापद भा० कहना ॥२॥६॥

सूत्र गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥ सेवं भंते भंतेत्ति, भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ ॥ बिईय सए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ५ ॥ * * *

सेणूणं भंते ! मणामीति ओहारणी भासा भासापदं भाणियव्वं ॥ बिईयसए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ६ ॥ * * *

भावार्थ प्रभव नामक झरणा व उस का अर्थ कहा. अहो भगवन् ! आपका वचन सत्य है. ऐसा कहकर भगवन्त गौतमने श्रमण भगवन्त को वंदना नमस्कार किया. यह दूसरा शतकका पांचवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥२॥५॥

गत उद्देश में मिथ्याभाषी कहे इसलिये भाषा का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! मैं ऐसा मानता हूं कि अवधारिणी भाषा इस सूत्रानुक्रम मे श्री पन्नवणा सूत्रका अग्यारहवा भाषापद कहना. भाषा को द्रव्य, क्षेत्र, काल व भाव ऐसे अनेक भेदों से विचारना. यह दूसरा शतकका छठा उद्देशा पूर्ण हुवा॥२॥६॥

शब्दार्थ वे० वैमानिक उ० उद्देशा भा० कहना ॥ २ ॥ ७ ॥ * *

क० कहां भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर कुमार राजा की स० सुधर्मा सभा गो० गौतम जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की दा० दाक्षिण में ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र वि० उलंघ कर अ० अरुणवर द्वीप की बा० बाहिर की वे० वेदिका से अं० अरुणोदय स० समुद्र में बा० बीयालीस जो० योजन सहस्र ओ० अवगाह कर च० चमर का अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का ति० तिगिच्छकूट

सूत्र उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ७ ॥ * * *

कहिणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार रण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबूद्दीवेद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरियमसंखेज्ज दीव समुद्दं विईवइत्ता अरुणवर दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयअंताओ अरुणोदयं समुद्दं

भावार्थ उद्देशे से जानना. यह दूसरा शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ २ ॥ ७ ॥ × +

सातवे उद्देशे में देवता का अधिकार कहा. इसलिये प्रथम भवनपति देवता संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! असुरकुमार के राजा चमर नामक असुरेन्द्र की सुधर्मा सभा कहां है ? अहो गौतम ! जंम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दाक्षिण दिशा में तिर्च्छा असंख्याते द्वीप समुद्र उल्लंघ कर जावे तो वहां अरुण वर द्वीप आता है. उस की बाहिर की वेदिकासे बेतालीस हजार योजन अवगाह कर अरुणोदय समुद्र

पदार्थ दे॰ देव की व॰ वक्तव्यता सा॰वद भा॰ कहना न॰ विशेष भ॰ भवन प॰ प्ररूपे उ॰ उपपात से लो॰ लोक का अ॰ असंख्यात का भाग ए॰ ऐसे स॰ सर्व भा॰ कहना जा॰ यावत् सि॰ सिद्धि स्थान स॰ संपूर्ण क॰ कल्प प॰ प्रतिस्थान वा॰ जाडपना उ॰ ऊंचा सं॰ संस्थान जी॰ जीवाभिगम में जा॰ यावत्

सूत्र सा भाणियव्वा. नवरं भवणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे, एवं सव्वं भाणियव्वं, जाव सिद्धगंडिया सम्मत्ता ॥ कप्पाण पइट्ठाणं, बाहल्लुच्चत्तमेव संठाणं जीवाभिगमे जाव वेमाणि उद्देसो भाणियव्वो ॥ बिईयसए सत्तमो

भावार्थ भाग में वर्तते हैं, उत्तर दक्षिण में रहनेवाले सब भुवनपति, वाणव्यंतर ज्योतिषी, व वैमानिकके स्थानक का वर्णन यावत् सिद्ध स्थान प्रतिपादक प्रकरणतक का सब वर्णन जीवाभिगम सूत्र से जानना. उस का किंचित् विस्तार यह है. १ कल्प में विमानों का आधार. सौधर्म ईशान देवलोक में विमानों घनोदधि प्रतिष्ठित हैं २ विमान का पिंड-सौधर्म ईशान देवलोक में २७०० योजन का पिण्ड है ३ ऊंचाइ-सौधर्म ईशान देवलोक में पांचसो योजन के ऊंचे विमान कहे हैं ४ संस्थान-सौधर्म ईशान देवलोक में आवलिका प्रविष्ट त्र्यंस, चउरंस व वर्तुलाकार विमानों हैं, और आवलिका बाहिर विविध प्रकार के संस्थान वाले हैं. इस सिवाय और भी विमानका आवलिका परिमाण, वर्ण, प्रभा, गंधादि जीवाभिगम सूत्रके वैमानिक

पदार्थ

वे० वैमानिक उ० उद्देशा भा० कहना ॥ २ ॥ ७ ॥ * *

क० कहां भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर कुमार राजा की स० सुधर्मा सभा गो० गौतम जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की दा० दाक्षिण में ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र वि० उलंघ कर अ० अरुणवर द्वीप की वा० बाहिर की वे० वेदिका से अं० अरुणोदय स० समुद्र में बा० बीयालीस जो० योजन सहस्र ओ० अवगाह कर च० चमर का अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का ति० तिगिच्छकूट

सूत्र

उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ७ ॥ * * *

कहिणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार रण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबूद्दीवेद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरियमसंखेज्ज दीवे समुद्दे विईवइत्ता अरुणवर दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयअंताओ अरुणोदयं समुद्दं

भावार्थ

उद्देशे से जानना. यह दूसरा शतक का सातवा उद्देशा पूर्ण हुआ ॥ २ ॥ ७ ॥ × +

सातवे उद्देशे में देवता का अधिकार कहा. इसलिये प्रथम भवनपति देवता संबंधी प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! असुरकुमार के राजा चमर नामक असुरेन्द्र की सुधर्मा सभा कहां है ? अहो गौतम ! जंम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दाक्षिण दिशा में तिर्च्छा असंख्याते द्वीप समुद्र उल्लंघ कर जावे तो वहां अरुण वर द्वीप आता है. उस की वाहिर की वेदिकासे बेतालीस हजार योजन अवगाह कर अरुणोदय समुद्र

शब्दार्थ दे॰ देव की व॰ वक्तव्यता सा॰वह भा॰ कहना न॰ विशेष भ॰ भवन प॰ प्ररूपे उ॰ उपपात से लो॰ लोक का अ॰ असंख्यात का भाग ए॰ ऐसे स॰ सर्व भा॰ कहना जा॰ यावत् सि॰ सिद्धि स्थान स॰ संपूर्ण क॰ कल्प प॰ प्रतिस्थान बा॰ जाडपना उ॰ ऊंचा सं॰ संस्थान जी॰ जीवाभिगम में जा॰ यावत्

सूत्र सा भाणियव्वा. नवरं भवणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे, एवं सव्वं भाणियव्वं, जाव सिद्धगंडिया सम्मत्ता ॥ कप्पाण पइट्ठाणं, बाहल्लुच्चत्तमेव संठाणं जीवाभिगमे जाव वेमाणि उद्देसो भाणियव्वो ॥ विईयसए सत्तमो

भावार्थ भाग में वर्तते हैं, उत्तर दक्षिण में रहनेवाले सब भुवनपति, वाणव्यंतर ज्योतिषी, व वैमानिकके स्थानक का वर्णन यावत् सिद्ध स्थान प्रतिपादक प्रकरणतक का सब वर्णन जीवाभिगम सूत्र से जानना. उस का किंचित् विस्तार यह है. १ कल्प में विमानों का आधार. सौधर्म ईशान देवलोक में विमानों घनोदधि प्रतिष्ठित हैं २ विमान का पिंड-सौधर्म ईशान देवलोक में २७०० योजन का पिण्ड है ३ ऊंचाइ-सौधर्म ईशान देवलोक में पांचसो योजन के ऊंचे विमान कहे हैं ४ संस्थान-सौधर्म ईशान देवलोक में आवलिका प्रविष्ट त्र्यंस, चउरंस व वर्तुलाकार विमानों हैं, और आवलिका बाहिर विविध प्रकार के संस्थान वाले हैं. इस सिवाय और भी विमानका आवलिका परिमाण, वर्ण, प्रभा, गंधादि जीवाभिगम सूत्रके वैमानिक

दार्थ तीन जो० योजन स० सहस्र दो० दो छ० छत्तीस जो० योजनशत किं० किंचित् वि० विशेषकम प० परिधि म० मध्य में ए० एक जो० योजन स० सहस्र ति० तीन इ० इकतालीस जो० योजनशत किं० किंचित् वि० विशेषकम प० परिधि उ० उपर दो०दो जो० योजन स० सहस्र दो० दो छ० छियासी जो० योजन शत किं० किंचित् वि० विशेषाधिक प० परिधि जा० यावत् मू० मूल में वि० विस्तार म० मध्य में सं० संक्षिप्त उ० उपर वि० विशाल म० मध्य में व० प्रधान व० वज्र वि० आकार व० वडा य० मृदंग

सूत्र क्खंभेणं, मज्झे चत्तारि चउव्वीसे जोयणसए विक्खंभेणं, उवरिं सत्ततेवीसे जोयणसए विक्खंभेणं, मूले तिण्णि जोयण सहस्साइं दोण्णिय छत्तीसुत्तरे जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, मज्झे एगं जोयणसहस्सं तिण्णियइगयाले जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, उवरिं दोण्णिय जोयण सहस्साइ दोण्णिय छलसीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं जावमूले वित्थेड मज्झे संखित्ते

भावार्थ जानना. उस की परिधि मूलमें ३२३६ योजन से कुच्छ कम, मध्य में १३४१ योजन से कुच्छ कम, और उपर २२८६ योजन से किंचित् विशेष जानना. मूलमें विस्तार वाला, मध्य में संकुचित और उपर फीर विस्तार वाला है. बीचमें श्रेष्ठवज्रके आकार वाला है. महामुकुद. डमरु के आकार वाला सब रत्नमय शोभनिक यावत् प्रतिरूप है. उस पर्वत को एक पद्मवरवेदिका और एक वनखंड है. वह

ना० नाम का उ० उत्पात प० पर्वत प० प्ररूपा स० सत्तरह ए० इक्कीस जो० योजन शत उ० ऊंचा उ० ऊंचपने च० चार ती० तीस जो० योजन शत को० कोश उ० ऊंडे गो० गौस्तूभ आवास पर्वत का प० प्रमाण से ने० जानना न० विशेष उ० उपर प० प्रमाण म० मध्य में भा० कहना मू० मूल में द० दश वा० बावीस जो० योजन स० शत वि० चौडा म० मध्य में च० चार च० चौवीस जो० योजन शत वि० चौडा उ० उपर स० सात ते० तेवीस जो० योजन शत वि० चौडा मु० मूल में ति०

बायालीसं जोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो तिगिच्छिकुडे नामं उप्पाय पव्वए पण्णत्ते सत्तरस एक्कवीसे जोयणसए उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारितीसे जोयणसए कोसंच उव्वेहेणं, गोथूभस आवासपव्वयस्स पमाणेणं णेयव्वं, नवरं उवरिल्लं पमाणं मज्झे भाणियव्वं, मूले दस बावीसे जोयणसए वि-

में जावे तो वहां चमर नामक असुरेन्द्र का तिगिच्छ कूट नामका उत्पात पर्वत कहा है. वह सत्तरह सो इक्कीस (१७२१) योजन का ऊंचा है और ४३० योजन और एक कोशका ऊंडा जमीन में है. जैसे लवण समुद्र में नागराजा का गौस्तूभ नामक आवास पर्वत है वैसे ही यहां जानना. विशेष इतना कि गोस्तूभ नीचे १०२२ योजन का, मध्यमें ७२३ योजन व उपर ४२४ योजन का चौडा कहा है परंतु तिगिच्छकूट पर्वत नीचे १०२२ योजन, मध्यमें ४२४ और उपर ७२३ योजन का चौडा है ऐसा

शब्दार्थ जो० योजन स० शत वि० चौडा पा० देखने योग्य व० वर्णन युक्त उ० उपर की भू० भूमि व० वर्णन युक्त अ० आठ जो० योजन की म० मणिपीठिका च० चमर का सी० सिंहासन स० परिवार सहित भा० कहना ॥ २ ॥ त० उस ति० तिगिच्छकूट की दा० दक्षिण में छ० छसो क्रोड प० पंचावन क्रोड प० पेंतीस लक्ष प० पच्चास सहस्र जो० योजन अ० अरुणोदय स० समुद्र में ति० तिर्च्छी वी० अतिक्रम से अ० अधो र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी में च० चालीस जो० योजन स० सहस्र आ० अवगाहकर कर

सूत्र पण्णत्ते, अड्ढाइज्जाइं जोयण सयाइं उड्ढउच्चत्तेणं, पणवीसं जोयण सयाइं विक्खंभेणं पासायवन्नओ उल्लोय भूमिवन्नओ; अट्ठजोयणाणि मणिपेढिया चमरस्स सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं ॥ २ ॥ तस्सणं तिगिच्छि कूडस्स दाहिणेणं छक्कोडिसए पणवण्णंच कोडीओ पणतीसंच सयसहस्साइं पण्णासंच सहस्साइं जोयणाइं अरु-णोदए समुद्दे तिरियं वीतिवइत्ता. अहे रयणप्पभाए पुढवीए चत्तालीसं जोयणं

भावार्थ में सब प्रासादों में श्रेष्ठ ऐसा एक प्रासाद है. वह २५० योजन का ऊंचा है १२५ योजन का चौडा है, और बहुत ऊंचा है. उस प्रासाद के मध्य में आठ योजन की मणिपिठिका है. उसमें चमरेन्द्र का सिंहासन व अन्य देव देवियों के सिंहासन रहे हुवे हैं ॥ २ ॥ उस तिगिच्छ कूट से दक्षिण दिशामें छसो पंचावन क्रोड पेंतीस लाख पच्चास हजार (६५५,३५,५०,०००) योजन अरुणोदय समुद्र में तिर्च्छी जाते चालिस हजार

शब्दार्थ सं० संस्थान से सं० संस्थित स० सर्व र० रत्नमय अ० स्वच्छ जा० यावत् प० प्रतिरूप से० उस ए० एक प० पद्मवर वे० वेदिका व० वनखंड स० सर्व बाजु सं० रहाहुवा प० पद्मवर वे० वेदिका व० वनखंड का व० वर्णन ॥ १ ॥ त० उस ति० तिगिच्छ कूटके उ० उत्पात प० पर्वत की उ० उपर व० बहुत र० रमणिक भू० भूमि भाग प० प्ररूपा व० वर्णन युक्त त० उस व० बहुत म० मध्य दे० देश भाग में म० बडा ए० एक पा० प्रासाद प० प्ररूपा अ० अढाइ सो योजन उ० ऊंचा उ० ऊंचपने प० पचीस

सूत्र

उप्पिं विसाले. मज्झे वरवइरविग्गहे, महामउंद संठाण संठिए सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥ सेणं एगाए पउमवरवेइयाए वणखंडेणय सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते पउमवर वेइयाए वणखंडस्स य वण्णओ ॥ १ ॥ तस्सणं तिगिच्छिकूडस्स उप्पाय पव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, वन्नओ तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स बहु मज्झ देसभाए एत्थणं महं एगे पासायवडिंसए

भावार्थ पद्मवर वेदिका अर्ध योजन की ऊंची व पांचसो धनुष्य की चौडी कही है. सब रत्नमय है. वह वेदिका तिगिच्छ कूट पर्वत के उपर के तल को चारों तरफ परिधि समानघेर कर रही है. उस वेदिका के चारों तरफ चार वनखण्ड दोकोश से कम के चोडे कहे हैं. ॥ १ ॥ उस तिगिच्छकूट पर्वत पर एक बहुत रमणिक भूमिभाग है जैसे नगारे का उपर का तल बराबर रहता है वैसाही उस का भूमिभाग है. मध्य

शब्दार्थ अर्धयोजन उ० उंचे उ० उंचपने ए० परस्पर बा० बाजु पं० पांच दा० द्वार स० शत अ० अढाइसो जो० योजन उ० उंचे उ० उंचपने ए० एक प० पच्चहत्त जो० योजन वि० चौडे उ० उपर त० तलमें सो० सोलह जो० योजन स० सहस्र आ० लंबा वि० चौडा प० पचास जो०योजन स०सहस्र पं० पांच स०सत्तानव जो० योजन शत किं० किंचित् वि० विशेष ऊन प० परिधि स० सर्व प्रमाण वे० वैमानिक का प० प्रमाण का अ० अर्ध ने० जानना ॥ २ ॥ ८ ॥ ÷ ÷ ÷

सूत्र एगं पणहत्तरी जोयणाइं विक्खंभेणं, उवरियतलेणं सोलस जोयण सहस्साइं आयाम विक्खंभेणं, पन्नासं जोयण सहस्साइं पंचयसत्ताणउय जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं सव्वप्पमाणं वेमाणियस्स पमाणस्स अद्धं नेयव्वं ॥ इइ बिइयसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ८ ॥ * *

भावार्थ के चौडे कहे हैं. घरके पीठ सोलह हजार योजन के चौडे कहे हैं. उसकी परिधि५०५९७योजन में कुछ कम की जानना. सब प्रमाण सौधर्मादि वैमानिक से आधा जानना. यह दूसरे शतक का आठवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ २ ॥ ८ ॥ + + ÷ +

गत उद्देशे में देवता का अधिकार कहा अब मनुष्य का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन्! समय-क्षेत्र क्यों कहता है? अहो गौतम! अढाइ द्वीप व दो समुद्र को समय क्षेत्र कहते हैं. समय का अर्थ काल

शब्दार्थ त० तहां च० चमरकी अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा के च० चमरचंचा रा० राज्यधानी प० प्ररूपी ए० एक योजन स० लक्ष आ० लम्बी वि० चौडी ज० जंबुद्वीप प्रमाण दि० द्वीपार्ध जो० योजन शत उ० ऊंचापने मू० मूल में प० पच्चास जो० योजन वि० चौडी उ० उपर स० साडीबारह जो० योजन क० कोसीसा कांगडा अ० अर्द्ध जो० योजन आ० लंबे को० कोश वि० चौडा दे० देसऊणा अ०

सूत्र सहस्साइं उग्गाहित्ता तत्थणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचानामं राय-हाणी पण्णत्ता । एगं जोयण सय सहस्सं आयाम विक्खंभेणं, जंबूद्दीवप्पमाणा दीवड्ढ जोयण सय उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं उवरिं अद्धतेरस जोय-णाइं कविसीसगा अद्धजोयणं आयामेणं, कोसं विक्खंभेणं देसूण अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं एग मेगाए बाहाए पंच २ दार सया अढाइ जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं

भावार्थ योजन रत्नप्रभा पृथ्वी को अवगाहकर चमर नामक असुरेन्द्र की चमरचंचा नामक राज्यधानी कही. यह राज्यधानी जंम्बूद्वीप प्रमाण एक लाख योजन की लम्बी चौडी कही. उस के कोट एक सो पचास योजनके ऊंचे कहे, मूलमें पचास योजनकी चौडी कही उपर साडी बारह योजन की चौडी कही. उस उपर कोटके कांगरे आधे कोशके लम्बे, एक कोश के चौडे व कुच्छकम आधेकोशके ऊंचे कहे. उस को-ट की एक २ बाजु पांचसो २ दरवज्जे हैं. वेद्वार अढाइसो योजन के ऊंचे व एकसो पचहत्तर योजन

शब्दार्थ अर्धयोजन उ० उंचे उ० उंचपने ए० परस्पर वा० बाजु पं० पांच दा० द्वार स० शत अ० अढाइसो जो० योजन उ० उंचे उ० उंचपने ए० एक प० पच्चहत्त जो० योजन वि० चौडे उ० उपर त० तलमें सो० सोलह जो० योजन स० सहस्र आ० लंबा वि० चौडा प० पच्चास जो०योजन स०सहस्र पं० पांच स०सत्तानव जो० योजन शत किं० किंचित् वि० विशेष ऊन प० परिधि स० सर्व प्रमाण वे० वैमानिक का प० प्रमाण का अ० अर्ध ने० जानना ॥ २ ॥ ८ ॥ ÷ ÷ ÷

सूत्र एगं पणहत्तरी जोयणाइं विक्खंभेणं, उवरियतलेणं सोलस जोयण सहस्साइं आयाम विक्खंभेणं, पन्नासं जोयण सहस्साइं पंचयसत्ताणउय जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं सव्वप्पमाणं वेमाणियस्स पमाणस्स अद्धं नेयव्वं ॥ इइ विईयसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ८ ॥ * *

भावार्थ के चौडे कहे हैं. घरके पीठ सोलह हजार योजन के चौडे कहे हैं. उसकी परिधि५०५९७योजन में कुछ कम की जानना. सब प्रमाण सौधर्मादि वैमानिक से आधा जानना. यह दूसरे शतक का आठवा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ २ ॥ ८ ॥ + + ÷ +

गत उद्देशे में देवता का अधिकार कहा अब मनुष्य का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! समय-क्षेत्र क्यों कहता है ? अहो गौतम ! अढाइ द्वीप व दो समुद्र को समय क्षेत्र कहते हैं. समय का अर्थ काल

शब्दार्थ कि० क्या इ० इसे भं० भगवन् स० समय क्षेत्र प० कहना गो० गौतम अ० अढाइ दी०द्वीप दो० दो समुद्र प० उपलक्षित स० समय क्षेत्र प० कहा है त० तहां अ० यह जं० जंबूद्वीप स० सर्व दी० द्वीप स० समुद्र की स० मध्य में ए० ऐसे जी० जीवाभिगम व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् अ० आभ्यंतर पु० पुष्करार्ध जो० ज्योतिषी वि० छोडकर ॥ २ ॥ ९ ॥ = =

सूत्र किमिदं भंते ! समयक्खेत्तेति पवुच्चइ ? गोयमा ! अड्ढाइज्जा दीवा दोय समुद्दा एसणं पवइए समयक्खेत्तेत्ति पवुच्चइ, तत्थणं अयं जंबूदीवे दीवे सव्वदीव समुद्दाणं सव्वब्भितरे, एवं जीवाभिगमवत्तव्वया नेयव्वा, जाव अब्भितर पुक्खरद्धं जोइस विहूणं ॥ इइ विईयसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ९ ॥ *

भावार्थ होता है अर्थात् जिस क्षेत्र में दिन, पक्ष, मास, वर्ष वगैरह काल उपलक्षित होवे-सूर्य की गति से जाना जावे उसे समय क्षेत्र कहा है. अढाई द्वीप की बाहिर सूर्यादि ज्योतिषी के विमानोंका हलन चलन नहीं होता है. अढाई द्वीप में सब द्वीप समुद्रों में छोटा प्रथम जम्बूद्वीप नामक द्वीप है वगैरह अढाइ द्वीप की वक्तव्यता जैसी जीवाभिगम में कही है वैसी यहां पर कहना. मात्र ज्योतिषी की वक्तव्यता नहीं कहना. यह दूसरे शतकका नववा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ २ ॥ ९ ॥ + + +

शब्दार्थ क० कितनी भं० भगवन् अ० अस्तिकाय गो० गौतम पं० पांच अ० अस्तिकाय ध० धर्मास्तिकाय अ० अधर्मास्ति काय आ० आकाशास्ति काय जी० जीवास्ति काय पो० पुद्गलास्ति काय ॥ १ ॥ ध० धर्मा-

सूत्र कइणं भंते ! अत्थिकाया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच अत्थिकाया पण्णत्ता तंजहा, धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए पोग्गलत्थि काए

भावार्थ गत उद्देशे में क्षेत्रका स्वरूप कहा है, उस में अस्तिकाय होने से अस्तिकाया का स्वरूप कहते हैं. अहो भगवन् ! अस्तिकाय कितनी कही ? अहो गौतम ! अस्तिकाय पांच कही. अस्ति शब्द से प्रदेश ग्रहण करना और कायशब्द से राशि अर्थात् प्रदेशों की राशि–समुदाय सो अस्तिकाय. अथवा अस्ति शब्द काल त्रय वाची अव्यय है इस से जो प्रदेश अतीत काल में थे, वर्तमान में हैं और आगामिक में होंगे सो अस्तिकाय. उस के नाम धर्मास्तिकाय * अधर्मास्ति काय, आकाशास्तिकाय, जीवास्ति काय

* धर्मास्तिकाय पद मांगलीक होने से प्रथम ग्रहण किया है, तत्पश्चात् धर्मास्किाय का विपरीत स्वभाव वाला अधर्मास्तिकाय, इन को आधार भूत आकाशास्तिकाय, अनंत अमूर्तत्व का साधर्म्य स्वभाव होने से जीवास्ति काय, और उस का उपष्टंभ करने वाला पुद्गल होने से पुद्गलास्ति काय ऐसा क्रम रक्खा गया है.

शब्दार्थ कि० क्या इ० इसे भं० भगवन् स० समय क्षेत्र प० कहना गो० गौतम अ० अढाइ दी० द्वीप दो० दो समुद्र प० उपलक्षित स० समय क्षेत्र प० कहा है त० तहां अ० यह जं० जंबूद्वीप स० सर्व दी० द्वीप स० समुद्र की स० मध्य में ए० ऐसे जी० जीवाभिगम व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् अ० आभ्यंतर पु० पुष्करार्ध जो० ज्योतिषी वि० छोडकर ॥ २ ॥ ९ ॥ = =

सूत्र किमिदं भंते ! समयक्खेत्तेति पवुच्चइ ? गोयमा ! अड्ढाइज्जा दीवा दोय समुद्दा एसणं पवइए समयक्खेत्तेत्ति पवुच्चइ, तत्थणं अयं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव समुद्दाणं सव्वाब्भितरे, एवं जीवाभिगमवत्तव्वया नेयव्वा, जाव आब्भितर पुक्खरद्धं जोइस विहूणं ॥ इइ बिईयसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ ९ ॥ *

भावार्थ होता है अर्थात् जिस क्षेत्र में दिन, पक्ष, मास, वर्ष वगैरह काल उपलक्षित होवे-सूर्य की गति से जाना जावे उसे समय क्षेत्र कहा है. अढाई द्वीप की बाहिर सूर्यादि ज्योतिषी के विमानोंका हलन चलन नहीं होता है. अढाई द्वीप में सब द्वीप समुद्रों में छोटा प्रथम जम्बूद्वीप नामक द्वीप है वगैरह अढाइ द्वीप की वक्तव्यता जैसी जीवाभिगम में कही है वैसी यहां पर कहना. मात्र ज्योतिषी की वक्तव्यता नहीं कहना. यह दूसरे शतकका नववा उद्देशा समाप्त हुवा ॥ २ ॥ ९ ॥

शब्दार्थ नहीं क० कदापि न० नहीं हैं जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श गु० गुण से ग० गमन गुण अ० अधर्मास्तिकाय ए० ऐसे न० विशेष गु० गुण से ठा० स्थानगुण आ० आकाशास्तिकाय ए० ऐसे न० विशेष खे० क्षेत्र से लो० लोकालोक प्रमाण अ० अनंत जा० यावत् गु० गुण से अ० अवगाहना गुण जी० जीवास्तिकाय में भं० भगवन् क० कितना व० वर्ण गं० गंध र० रस फा० स्पर्श गो० गौतम अ० अवर्ण जा० यावत् अ० अरूपी जी० जीव सा०

सूत्र न आसि न कयाइ नत्थि जाव निच्चे, भावओ अवन्ने अगंधे, अरसे,अफासे, गुणओ गमणगुणे अहम्मत्थि काएवि एवं चेव नवरं गुणओ ठाणगुणे ॥ आगासत्थि काएवि एवं चेव, नवरं खेत्तओणं आगासत्थिकाए, लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणंतेचेव, जाव गुणओ अवगाहगुणे ॥ जीवत्थिकाएणं भंते ! कइवण्णे, कइगंधे,

भावार्थ संपूर्ण लोक प्रमाण, काल से अतीत काल में नहीं था वैसा नहीं, वर्तमान में नहीं है वैसा नहीं, और अनागत में नहीं होगा वैसा नहीं परंतु अतीत काल में था, वर्तमान है और अनागत में होगा यावत् नित्य रहेगा. भाव से धर्मास्किाय में वर्ण, गंध, रस व स्पर्श नहीं होते हैं और गुण से धर्मास्तिकाया में गमन गुण जैसे मत्स्य को जल का आश्रय रहता है वैसे ही जीव पुद्गलको धर्मास्ति कायगति कराता है. अधर्मास्ति कायाका भी वैसे ही जानना मात्र स्थिर गुण ग्रहण करना. आकाशास्ति काय में भी धर्मास्ति

शब्दार्थ — स्तिकाय भं० भगवन् क० कितना व० वर्ण गं० गंध र० रस फा० स्पर्श गो० गौतम अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श अ० अरूपी अ० अजीव सा० शाश्वत अ० अवस्थित लो० लोक द्रव्य स० संक्षेप से पं० पांच प्रकार की द० द्रव्य से खे० क्षेत्र से का० काल से भा० भाव से गु० गुण से द०द्रव्य से ए०एकद्रव्य खे०क्षेत्र से लो०लोक प्रमाण का०कालसे न०नहीं क०कदापि न०नहीं आ०था न०

सूत्र — ॥ १ ॥ धम्मत्थि काएणं भंते ! कतिवण्णे, कतिगंधे, कतिरसे, कतिफासे ? गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे, अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे । से समासओ पंचविहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ । दव्व-ओणं धम्मत्थिकाए एगेदव्वे, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नकयाइं,

भावार्थ — और पुद्गलास्तिकाय ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाया में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श हैं. ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाया में पांच वर्ण में से एक भी वर्ण नहीं है, दोगंध में से एक भी गंध नहीं है, पांच रस में से एक भी रस नहीं है, आठ स्पर्श में से एक भी स्पर्श नहीं है. अरूपी, अजीव, शाश्वत अवस्थित व पंचास्ति कायिक लोक होने से [illegible] का एक अंशभूत द्रव्य है. उस के द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से, भाव से व गुण से ऐसे पांच भेद किये हैं. द्रव्य से धर्मास्तिकाय एक द्रव्य, क्षेत्र से धर्मास्तिकाय

पदार्थ नहीं क० कदापि न० नहीं हैं जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श गु० गुण से ग० गमन गुण अ० अधर्मास्तिकाय ए० ऐसे न० विशेष गु० गुण से ठा० स्थानगुण आ० आकाशास्तिकाय ए० ऐसे न० विशेष खे० क्षेत्र से लो० लोकालोक प्रमाण अ० अनंत जा० यावत् गु० गुण से अ० अवगाहना गुण जी० जीवास्तिकाय में भं० भगवन् क० कितना व० वर्ण गं० गंध र० रस फा० स्पर्श गो० गौतम अ० अवर्ण जा० यावत् अ० अरूपी जी० जीव सा०

सूत्र न आसि न कयाइ नात्थि जाव निच्चे, भावओ अवन्ने अगंधे, अरसे,अफासे, गुणओ गमणगुणे अहम्मात्थि काएवि एवं चेव नवरं गुणओ ठाणगुणे ॥ आगासत्थि काएवि एवं चेव, नवरं खेत्तओणं आगासत्थिकाए, लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणंतेचेव, जाव गुणओ अवगाहगुणे ॥ जीवत्थिकाएणं भंते ! कइवण्णे, कइगंधे,

भावार्थ संपूर्ण लोक प्रमाण, काल से अतीत काल में नहीं था वैसा नहीं, वर्तमान में नहीं है वैसा नहीं, और अनागत में नहीं होगा वैसा नहीं परंतु अतीत काल में था, वर्तमान है और अनागत में होगा यावत् नित्य रहेगा. भाव से धर्मास्किाय में वर्ण, गंध, रस व स्पर्श नहीं होते हैं और गुण से धर्मास्तिकाया में गमन गुण जैसे मत्स्य को जल का आश्रय रहता है वैसे ही जीव पुद्गलको धर्मास्ति कायगति कराता है. अधर्मास्ति कायाका भी वैसे ही जानना मात्र स्थिर गुण ग्रहण करना. आकाशास्ति काय में भी धर्मास्ति

शब्दार्थ

शाश्वत अ० अवस्थित लो० लोक द्रव्य स० संक्षेप से पं० पांच प्रकार का द० द्रव्य से जा० यावत् गु० गुण से द० द्रव्य से अ० अनंत जी० जीव द्रव्य खे० क्षेत्र से लो० लोक प्रमाण का० कालसे न० नहीं क० कदापि न० नहीं आ० था जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श गु० गुण से उ० उपयोग गुण पो० पुद्गलास्तिकाय भं० भगवन् क० कितने वर्ण क० कितने गंध र० रस फा० स्पर्श गो० गौतम पं० पांचवर्ण पं० पांचरस दु० दोगंध अ० आठ स्पर्श रू० रूपी अ० अजीव सा०

सूत्र

कइरसे कइफासे ? गोयमा ! अवन्ने जाव अरूवी, जीवे सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे, । से समासओ पंचविहे प० तं० दव्वओ जाव गुणओ. दव्वओणं जीवत्थिकाए अणंताइं जीवदव्वाइं; खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नकयाइ न आसि जाव निच्चे. भावओ पुण अवन्ने, अगंधे, अरसे अफासे, गुणओ उवओग गुणे । पोग्गलत्थि काएणं भंते ! कइवण्णे, कइगंधरसफासे ? गोयमा ! पचवन्ने पंचरसे, दुगंधे,

भावार्थ

काय जैसा परंतु क्षेत्र से आकाशास्ति काय लोकालोक प्रमाण अनंत, और गुण से अवगाहन—अवकाश देने वाला—गुण है. अहो भगवन् ! जीवास्ति काय में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श हैं ? अहो गौतम ! जीवास्ति काय में वर्ण, गंध, रस व स्पर्श नहीं है. यह अरूपी, जीव, शाश्वत, अवस्थित व लोक द्रव्य है. उसके पांच भेद किये गये हैं द्रव्य से यावत् गुण से. द्रव्य से जीव द्रव्य अनंत, क्षेत्र से लोक प्रमाण, काल से अतीत में

दार्थ शाश्वत अ० अवस्थित लो० लोक द्रव्य स० संक्षेप से पं० पांच प्रकार का द० द्रव्य से अ० अनंत द्रव्य खे० क्षेत्र से लो० लोक प्रमाण मात्र का० काल से न० नहीं क० कदापि व० थ आ० था जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से व० वर्ण वाला गं० गंधवाला र० रसवाला फा० स्पर्श वाला गु० गुण से ग०

सूत्र अट्ठकासे, रूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे. से समासओ पंचविहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ। दव्वओणंपोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं, खेत्तओ लोयप्पमाणमेत्ते, कालओ नकयाइ न आसि जाव निच्चे भावओ वण्णमंते,

भावार्थ नहीं था वैसा नहीं, वर्तमान में नहीं है वैसा नहीं है और अनागत में नहीं होगा वैसा नहीं परंतु अतीत काल में था, वर्तमान में है, और अनागत में होगा यावत् नित्य है. भाव से वर्ण, गंध, रस, स्पर्श रहित अरूपी है. गुण से उपयोग लक्षण वाला है. अहो भगवन् ! पुद्गलास्ति काय में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श हैं? अहो गौतम ! पुद्गलास्ति कायमें पांचवर्ण, पांचरस, दो गंध, और आठ स्पर्श हैं. वह रूपी, अजीव, शाश्वत, अवस्थित यावत् लोक द्रव्य है. उस के द्रव्य से यावत् गुण से ऐसे पांच भेद किये हैं. द्रव्य से पुद्गलास्तिकाय अनंत है, क्षेत्र से लोक प्रमाण है, काल से अतीत काल में नहीं था वैसा नहीं यावत् नित्य है भाव से वर्ण, गंध, रस स्पर्श सहित है, और गुण से ग्रहणगुण वाला है अर्थात् परस्पर मीलते परिण

शब्दार्थ शाश्वत अ० अवस्थित लो० लोक द्रव्य स० संक्षेप से पं० पांच प्रकार का द० द्रव्य से जा० यावत् गु० गुण से द० द्रव्य से अ० अनंत जी० जीव द्रव्य खे० क्षेत्र से लो० लोक प्रमाण का० कालसे न० नहीं क० कदापि न० नहीं आ० था जा० यावत् नि० नित्य भा० भाव से अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श गु० गुण से उ० उपयोग गुण पो० पुद्गलास्तिकाय भं० भगवन् क० कितने वर्ण क० कितने गंध र० रस फा० स्पर्श गो० गौतम पं० पांचवर्ण पं० पांचरस दु० दोगंध अ० आठ स्पर्श रू० रूपी अ० अजीव सा०

सूत्र कइरसे कइफासे ? गोयमा ! अवन्ने जाव अरूवी, जीवे सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे, । से समासओ पंचविहे प० तं० दव्वओ जाव गुणओ. दव्वओणं जीवत्थिकाए अणंताइं जीवदव्वाइं; खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नकयाइ न आसि जाव निच्चे. भावओ पुण अवन्ने, अगंधे, अरसे अफासे, गुणओ उवओग गुणे । पोग्गलत्थि काएणं भंते ! कइवण्णे, कइगंधरसफासे ? गोयमा ! पंचवन्ने पंचरसे, दुगंधे,

भावार्थ काय जैसा परंतु क्षेत्र से आकाशास्ति काय लोकालोक प्रमाण अनंत, और गुण से अवगाहन—अवकाश देने वाला—गुण है. अहो भगवन् ! जीवास्ति काय में कितने वर्ण, गंध, रस व स्पर्श हैं ? अहो गौतम ! जीवास्ति काय में वर्ण, गंध, रस व स्पर्श नहीं है. वह अरूपी, जीव, शाश्वत, अवस्थित व लोक द्रव्य है. उसके पांच भेद किये गये हैं द्रव्य से यावत् गुण से. द्रव्य से जीव द्रव्य अनंत, क्षेत्र से लोक प्रमाण, काल से अतीत में

पदार्थ — ऊणा को ध० धर्मास्तिकाय व० कहना णो० नहीं इ० यह अर्थ स०समर्थ से० वह के० कैसे ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० एक ध० धर्मास्तिकाया के प्रदेश को नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय व० कहना जा० यावत् ए० एक प्रदेश ऊणा ध० धर्मास्ति काया को नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय व० कहना गो० गौतम खं० खंडित च० चक्र स० संपूर्ण च० चक्र भ० भगवन् नो० नहीं खं० खंडित चक्र सं० संपूर्ण चक्र ए०

सूत्र — त्रियणं धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ एगे धम्मत्थिकायप्पदेसे नो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणे त्रियणं धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया, ॥ सेणूणं गोयमा ! खंडे चक्के सगले चक्के ? भगवं ! नो खंडे चक्के सगले चक्के। एवं छत्ते, चम्मे, दंडे,

भावार्थ — अहो भगवन् ! किस कारनसे धर्मास्तिकाय के एक प्रदेश को धर्मास्तिकाय नहीं कहना. ऐसे ही दो, तीन, चार, पांच, छ, सात, आठ, नव, दस, संख्यात, असंख्यात यावत् एक प्रदेश कम को धर्मास्ति काय नहीं कह सकते है ? अहो गौतम ! चक्र के टुकडे को क्या चक्र कहना ? अहो भगवन् ! चक्र के टुकडे को चक्र नहीं कहना परंतु पूर्ण चक्र को ही चक्र कहना और भी चमर के अमुक विभाग को क्या चमर कहना, छत्र के अमुक विभाग को क्या छत्र कहना, दंडके

शब्दार्थ

ग्रहणगुण ॥२॥ ए० एक भं० भगवन् ध० धर्मास्तिकाय का प०प्रदेश को ध० धर्मास्तिकाय व०कहना गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० ऐसे दो० दो ति० तीन च० चार पं० पांच छ० छ स० सात अ० आठ न० नव द० दश सं० संख्याते अ० असंख्याते भं० भगवन् ध० धर्मास्तिकाय का प०प्रदेश को ध० धर्मास्तिकाय व० कहना गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० एक प्रदेश

सूत्र

गंध रस फासमंते, गुणओ गहणगुणे ॥ २ ॥ एगे भंते ! धम्मत्थिकाय प्पदेसे धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे. एवं दोन्निवि तिन्निवि, चत्तारि, पंच, छ, सत्त, अट्ठ,नव, दस, संखेज्जा, असंखेज्जा भंते ! धम्मत्थिकाय-प्पदेसा धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे. एगपदेसूणे

भावार्थ

मने हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! धर्मास्ति काय के एक प्रदेश को क्या धर्मास्ति काय कहना ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय के दो, तीन चार, पांच, छ, सात, आठ, नव, दश, संख्याते या असंख्याते प्रदेश को क्या धर्मास्तिकाय कहना, ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय, के समस्त प्रदेशों में से एक प्रदेश कम होवे तो क्या उसे धर्मास्तिकाया कहना ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है

दार्थ ऊणा को ध० धर्मास्तिकाय व० कहना णो० नहीं इ० यह अर्थ स०समर्थ से० वह के० कैसे ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० एक ध० धर्मास्तिकाया के प्रदेश को नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय व० कहना जा० यावत् ए० एक प्रदेश ऊणा ध० धर्मास्ति काया को नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय व० कहना गो० गौतम खं० खंडित च० चक्र स० संपूर्ण च० चक्र भ० भगवन् नो० नहीं खं० खंडित चक्र सं० संपूर्ण चक्र ए०

सूत्र त्रियणं धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया? णो इणट्ठे समट्ठे. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ एगे धम्मत्थिकायप्पदेसे नो धम्मत्थियकाएत्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणे वियणं धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया, ॥ सेणूणं गोयमा! खंडे चक्के सगले चक्के? भगवं! नो खंडे चक्के सगले चक्के। एवं छत्ते, चम्मे, दंडे,

भावार्थ अहो भगवन्! किस कारनसे धर्मास्तिकाय के एक प्रदेश को धर्मास्तिकाय नहीं कहना. ऐसे ही दो, तीन, चार, पांच, छ, सात, आठ, नव, दश, संख्यात, असंख्यात यावत् एक प्रदेश कम को धर्मास्ति काय नहीं कह सकते है? अहो गौतम! चक्र के टुकडे को क्या चक्र कहना? अहो भगवन्! चक्र के टुकडे को चक्र नहीं कहना परंतु पूर्ण चक्र को ही चक्र कहना और भी चमर के अमुक विभाग को क्या चमर कहना, छत्र के अमुक विभाग को क्या छत्र कहना, दंडके

शब्दार्थ ऐसे छ० छत्र च० चमर दं० दंड दू० वस्त्र आ० आयुध मो० मोदक मे० वह ते० इसलिये गो० गौतम ए० ऐसा वु० कहा जाता है ए० एक ध० धर्मास्तिकाय प्रदेश नो० नहीं ध० धर्मास्ति काय व० कहना जा० यावत् ए० एक प्रदेश ऊणा ध० धर्मास्ति काय को णो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय न०कहना से०वह किं०क्या खा० ख्याति केलिये भं० भगवन् ध० धर्मास्तिकाय व०कहना गो०गौतम अ०असंख्यात ध०धर्मास्ति काय के प० प्रदेश ते०वे स० सर्व क० कृत्स्न प०प्रतिपूर्ण नि० निरावशेष ए० एक ग० ग्रहण

सूत्र दूसे, आउहे, मोयए, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ एगे धम्मत्थिकायप्पदेसे णो धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणेवियणं धम्मत्थिकाए नों धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया। से किं खाइएणं भंते ! धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! असंखेज्जा धम्मत्थि कायप्पएसा ते सव्वे कसिणा, पडिपुण्णा, निरवसेसा. एक्कग्गहण गहिया एसणं

भावार्थ टुकडे को दंड कहना, वस्त्र के टुकडे को वस्त्र कहना, आयुध के टुकडे को आयुध कहना, या लड्डुके टुकडे को क्या लड्डु कहना ? अहो भगवन् ! ऐसा नहीं कहा जाता है. इसी तरह अहो गौतम ! धर्मास्ति काय के एक प्रदेश यावत् एक प्रदेश कम को धर्मास्तिकाय नहीं कह सकते हैं * क्यों कि

* यह वचन निश्चय नयकी अपेक्षासे ग्रहण कियाहै क्योंकि व्यवहार नयसे खण्डित घडेको घडा कहते हैं वैसेही धर्मास्तिकायके एक प्रदेश वगैरह को भी धर्मास्तिकाय कह सकते हैं.

शब्दार्थ ग० ग्रहित को गो० गौतम ध० धर्मास्ति काय व० कहना ए० ऐसे अ० अधर्मास्ति काय आ० आका-शास्ति काय जी० जीवास्ति काय पो० पुद्गलास्ति ए० ऐसे ही न० विशेष ति० तीन का प०प्रदेश अ० अनंत भा० कहना ॥ ३ ॥ जी० जीव भं० भगवन् स० उत्थान सहित स० कर्म सहित स० वलसहित स वीर्यसहित स० पुरुषात्कार पराक्रम सहित आ० आत्म भाव से उ० देखाडे व० कहना हं० हां गो०

सूत्र गोयमा ! धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया एवं अहम्मत्थिकाएवि, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकाय, पोग्गलत्थि काएवि एवं चेव नवरं तिण्हंपि पएसा अणंता भाणियव्वा सेसं तंचेव ॥ ३ ॥ जीवेणं भंते ! सउट्ठाणे, सकम्मे, सबले, सवीरिए, सपुरि-सक्कार परक्कमे, आयभावेणं जीवभावं उवदंसेईति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा !

भावार्थ तब अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय किसको कहते हैं ? असंख्यात प्रदेशात्मक धर्मास्ति काय है यह सब कृत्स्न, प्रतिपूर्ण, निरविशेष और एकही शब्द कहनेसे सब आजावे वैसे होवे उसी ही धर्मास्तिकाया कहते हैं. ऐसेही अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय व पुद्गलास्ति कायका जानना. विशेष इतना कि आकाशास्तिकायादिक में प्रदेश अनंत होनेसे अनंत कहना. ॥ ३ ॥ उपयोग लक्षण वाला जीवास्ति काय पहिले कहा. अब जीव के उत्थानादि गुणों बताते हैं. अहो भगवन् ! उत्थान, कर्म, वल,

शब्दार्थ गौतम जी० जीव स० उत्थान सहित जा० यावत् उ० देखाडे व० कहना से० वह के० कैसे जा० यावत् व० कहना गो० गौतम जी० जीव अनंत आ० मतिज्ञान प० पर्यव ए० ऐसे सु० श्रुतज्ञान पर्यव ओ० अवधिज्ञान पर्यव म० मनःपर्यवज्ञान पर्यव के० केवलज्ञान के पर्यव म० मतिअज्ञान के पर्यव सु० श्रुतअज्ञान के पर्यव वि० विभंगज्ञान के पर्यव च० चक्षुदर्शन के पर्यव अ० अचक्षुदर्शन के पर्यव ओ० अव-दर्शन पर्यव के० केवलदर्शन के पर्यव उ० उपयोग को ग० जावे उ० उपयोग लक्षण से से० वह ते०

सूत्र जीवेणं सउट्ठाणे जाव उवदंसेईति वत्तव्वं सिया । सेकेणट्ठेणं जाव वत्तव्वं सिया ? गोयमा! जीवेणं अनंता आभिणिवोहियनाणपज्जवाणं, एवं सुयनाणपज्जवाणं, ओहिनाण पज्जवाणं, मणपज्जवनाणपज्जवाणं केवलणाणपज्जवाणं, मइअन्नाणपज्जवाणं, सुयअन्नाण पज्जवाणं विभंगनाणपज्जवाणं, चक्खुदंसणपज्जवाणं, अचक्खुदंसणपज्जवाणं, ओहिदंसण

भावार्थ वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम सहित जीव आत्मपरिणाम मे से क्या चैतन्यपना बताता है ! अहो गौतम ? उत्थानादि सहित जीव आत्मभाव से चैतन्यपना बताता है. अहो भगवन् ! किस तरह से उत्थानादि सहित जीव चैतन्यपना बताता है ! अहो गौतम ! जीव अनंत मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान, मति कज्ञान; श्रुत कज्ञान, विभंग ज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अव-धि दर्शन व केवल दर्शन के पर्यायात्मक चैतना लक्षण को कहा जाता है अर्थात आत्मभाव में वर्तता है

शब्दार्थ इसलिये ए० ऐसा वु० कहाजाता है गो० गौतम जी० जीव स० उत्थानसहित जा० यावत् व० कहना ॥ ४ ॥ क० कितना प्रकारका भं० भगवन् आ० आकाश गो० गौतम दु० दोप्रकार का आ०आकाश लो० लोक आकाश अ० अलोक आकाश लो०लोकाकाश में किं० क्या जी०जीव जी० जीवदेश जी० जीवप्रदेश अ० अजीव अ० अजीवदेश अ० अजीव प्रदेश गो० गौतम जी० जीव जी० जीवदेश जी० जीवप्रदेश अ० अजीव अ० अजीवदेश अ० अजीव प्रदेश जे० जो जी०जीव ते० वे नि०निश्चय ए०एकेन्द्रिय बे० बेइन्द्रिय

सूत्र पज्जवाणं, केवलदंसण पज्जवाणं, उवओगं गच्छइ, "उवओग लक्खणेणं जीवे" सेतेणट्ठे-णं एवं वुच्चइ, गोयमा ! जीवे सउट्ठाणे जाव वत्तव्वं सिया ॥ ४ ॥ कइविहेणं भंते ! आगासे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे आगासे प० तं० लोयागासेय, अलोया-गासेय । लोयागासेणं भंते ! किं जीवा, जीवदेसा, जीवपएसा; अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपएसा ? गोयमा ! जीवावि, जीवदेसावि, जीव पदेसावि; अजीवावि, अजीव-

भावार्थ उपयोग लक्षण वाला जीव कहाता है इससे अहो गौतम ! उत्थानादि सहित जीव आत्म-भाव से चैतन्यपना बताता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! आकाश के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! आकाश के दो भेद कहे हैं १ लोकाकाश और २ अलोकाकाश. अहो भगवन् ! लोकाकाश में क्या जीव, जीव के देश, जीव के प्रदेश, व अजीव, अजीव के देश या अजीव के प्रदेश हैं ? अहो गौतम !

शब्दार्थ गौतम जी० जीव स० उत्थान सहित जा० यावत् उ० देखाडे व० कहना से० वह के० कैसे जा० यावत् व० कहना गो० गौतम जी० जीव अनंत आ० मतिज्ञान प० पर्यव ए० ऐसे सु० श्रुतज्ञान पर्यव ओ० अवधिज्ञान पर्यव म० मनःपर्यवज्ञान पर्यव के० केवलज्ञान के पर्यव म० मतिअज्ञान के पर्यव सु० श्रुतअज्ञान के पर्यव वि० विभंगज्ञान के पर्यव च० चक्षुदर्शन के पर्यव अ० अचक्षुदर्शन के पर्यव ओ० अवदर्शन पर्यव के० केवलदर्शन के पर्यव उ० उपयोग का ग० जावे उ० उपयोग लक्षण से से० वह ते०

सूत्र जीवेणं सउट्ठाणे जाव उवदंसेईति वत्तव्वं सिया । सेकेणट्ठेणं जाव वत्तव्वं सिया ? गोयमा! जीवेणं अनंता आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, एवं सुयनाणपज्जवाणं, ओहिनाण पज्जवाणं, मणपज्जवनाणपज्जवाणं केवलणाणपज्जवाणं, मइअन्नाणपज्जवाणं, सुयअन्नाण पज्जवाणं विभंगनाणपज्जवाणं, चक्खुदंसणपज्जवाणं, अचक्खुदंसणपज्जवाणं, ओहिदंसण

भावार्थ वीर्य, व पुरुषात्कार पराक्रम सहित जीव आत्मपरिणाम मे से क्या चैतन्यपना बताता है ! अहो गौतम ? उत्थानादि सहित जीव आत्मभाव से चैतन्यपना बताता है. अहो भगवन् ! किस तरह से उत्थानादि सहित जीव चैतन्यपना बताता है ! अहो गौतम ! जीव अनंत मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान, मति कज्ञान; श्रुत कज्ञान, विभंग ज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधि दर्शन व केवल दर्शन के पर्यायात्मक चैतना लक्षण को कहा जाता है अर्थात आत्मभाव में वर्तता है

शब्दार्थ नहीं अ० अधर्मास्ति काय का देश अ० अधर्मास्ति काय का प्रदेश अ० काल ॥५॥ अ० अलोकाकाश में भं० भगवन् किं० क्या जी० जीव गो० गौतम नो० नहीं जीव जा० यावत् नो० नहीं अजीव प्रदेश ए० एक

सूत्र पंचविहा पण्णंता तंजहा धम्मात्थिकाए, नो धम्मात्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्सपदेसा अधम्मत्थिकाए, नो अधम्मात्थिकायस्स देसे, अधम्मात्थिकायस्स पदेसा । अद्धासमए ॥ ५ ॥ अलोयाकासेणं भंते ! किं जीवा पुच्छा तहचेव, गोयमा ! नो जीवा जाव

भावार्थ और ५ काल. * ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! अलोकाकाश में क्या जीव, जीव के देश व प्रदेश वगैरह हैं ? अहो गौतम ! अलोकाकाश में जीव, जीव के देश व प्रदेश यावत् अजीव के प्रदेश नहीं हैं परंतु अगुरुलघुभूत

---

* अजीव अरूपिके सब मीलकर दश भेद किये हैं; उसमेंसे यहां पांचही ग्रहण किये हैं उसका सबब यह है कि यहां पर आकाश आश्रित पृच्छाहै इससे आकाशास्तिकायाका स्कंध, देश व प्रदेश यह तीन नहीं ग्रहण कियेहैं मात्र धर्मास्तिकाया व अधर्मास्तिकायाके स्कंध व प्रदेश ग्रहण कियेहैं. धर्मास्ति काय व अधर्मास्तिकायके देश नहीं ग्रहण करनेका सबब यह है कि जब संपूर्ण वस्तुकी विवक्षा की जाती है तब धर्मास्तिकाय ऐसाही कहाजायगा और उसके अंशकी विवक्षा करे तब उसके प्रदेश ही ग्रहण किये जायेंगे. क्योंकि ये दोनों अवस्थित हैं इनकी हानि वृद्धि नहीं होतीहै इससे स्कंध व प्रदेश ग्रहण किये गये हैं और देशका प्रतिषेध कियाहै.

शब्दार्थ ते० तेइन्द्रिय च० चतुरेन्द्रिय पं० पंचेन्द्रिय अ० अनिन्द्रिय जे० जो जी० जीवदेश ते० वे नि० निश्चय ए० एकेन्द्रिय देश जा० यावत् अ० अनिन्द्रिय प० प्रदेश जे० जो अ० अजीव ते० वे दु० दो प्रकार के पं० प्ररूपे रू० रूपी अ० अरूपी जे० जो रू० रूपी ते० वे च० चार प्रकार के खं० स्कन्ध खं० स्कन्धदेश खं० स्कन्ध प्रदेश प० परमाणु पुद्गल जे० जो अ० अरूपी ते० वे पं० पांच प्रकार के ध० धर्मास्तिकाय नो० नहीं ध० धर्मास्तिकाय का देश ध० धर्मास्तिकाय काय का प्रदेश अ० अधर्मास्ति काय नो०

सूत्र देसावि, अजीव पदेसावि । जे जीवा ते नियमा एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया चउरिंदिया, पंचिंदिया, अणिंदिया. जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियपदेसा ॥ जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा रूवीय, अरूवीय । जे रूवी ते चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा; परमाणु पोग्गला । जे अरूवी ते

भावार्थ लोकाकाश में जीव, जीव के देश, जीव के प्रदेश, अजीव, अजीव के देश व अजीव के प्रदेश हैं. जो जीव हैं वे एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय व अनिन्द्रिय हैं. जो जीव के देश हैं वे भी एकेन्द्रिय यावत् अनिन्द्रिय के देश हैं और वैसे ही प्रदेश हैं. अजीव के दो भेद १ रूपी अजीव २ अरूपी अजीव. रूपी अजीव के चार भेद स्कंध, स्कंध देश, स्कंध प्रदेश व परमाणु पुद्गल. अरूपी अजीव के पांच भेद. १ धर्मास्तिकाय २ धर्मास्तिकाया का प्रदेश, ३ अधर्मास्तिकाय, ४ अधर्मास्तिकाया का प्रदेश

नहीं अ० अधर्मास्ति काय का देश अ० अधर्मास्ति काय का प्रदेश अ० काल ॥५॥ अ० अलोकाकाश में भं० भगवन् किं० क्या जी० जीव गो० गौतम नो० नहीं जीव जा० यावत् नो० नहीं अजीव प्रदेश ए० एक

सूत्र

पंचविहा पण्णंता तंजहा धम्मत्थिकाए, नो धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्सपदेसा अधम्मत्थिकाए, नो अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा । अद्धासमए ॥ ५ ॥ अलोयाकासेणं भंते ! किं जीवा पुच्छा तहचेव, गोयमा ! नो जीवा जाव

भावार्थ

और ५ काल. * ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! अलोकाकाश में क्या जीव, जीव के देश व प्रदेश वगैरह हैं ? अहो गौतम ! अलोकाकाश में जीव, जीव के देश व प्रदेश यावत् अजीव के प्रदेश नहीं हैं परंतु अगुरुलघुभूत

* अजीव अरूपिके सब मीलकर दश भेद किये हैं; उसमेंसे यहां पांचही ग्रहण किये हैं उसका सबब यह है कि यहां पर आकाश आश्रित पृच्छाहै इससे आकाशास्तिकायाका स्कंध, देश व प्रदेश यह तीन नहीं ग्रहण कियेहैं मात्र धर्मास्तिकाया व अधर्मास्तिकायाके स्कंध व प्रदेश ग्रहण कियेहैं. धर्मास्ति काय व अधर्मास्तिकायके देश नहीं ग्रहण करनेका सबब यह है कि जब संपूर्ण वस्तुकी विवक्षा की जाती है तब धर्मास्तिकाय ऐसाही कहाजायगा और उसके अंशकी विवक्षा करे तब उसके प्रदेश ही ग्रहण किये जायेंगे. क्योंकि ये दोनों अवस्थित हैं इनकी हानि वृद्धि नहीं होतीहै इससे स्कंध व प्रदेश ग्रहण किये गये हैं और देशका प्रतिषेध कियाहै.

शब्दार्थ

अ० अजीव द्र० द्रव्य देश अ० अगुरुलघु अ० अनंत अ० अगुरुलघु गु० गुण से सं० युक्त स० सर्व आकाश अ० अनंत भाग ऊणा ॥ ६ ॥ ध० धर्मास्तिकाय भं० भगवन् के० कितनी वडी गो० गौतम लो० लोक में लो० लोक मात्र लो० लोक प्रमाण लो० लोक को स्पर्शी लो० लोक को फु०स्पर्श कर चि० रही है ए० ऐसे अ० अधर्मास्ति काय लो० लोकाकाश जी० जीवास्ति काय पो० पुद्गलास्तिकाय पं०

मूल

नो अजीवप्पदेसा; एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुयलहुए, अणंतेहिं, अगुरुय लहुयगुणेहिं संजुत्ते, सव्वागासे अणंतभागूणे ॥ ६ ॥ धम्मत्थिकाएणं भंते ! के महालए पण्णत्ते ? गोयमा ! लोए, लोयमेत्ते, लोयप्पमाणे, लोयफुडे, लोयंचेव फुसित्ताणं, चिट्ठइ ॥ एवं अहम्मत्थिकाए, लोयाकासे, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए पंचाविएक्काभिलावा ॥७॥

भावार्थ

अजीव द्रव्य का एक देश है. क्यों कि संपूर्ण लोकालोक का आकाश मीलकर एक स्कंध होता है और अलोक में मात्र एक अलोकाकाश ही है. इसलिये एक अजीव द्रव्य का देश गिना गया है. वह अनंत स्वपर्यायरूप अगुरुलघु स्वभाव सहित है. लोकाकाश की अपेक्षा से अनंत भाग रूप है इस से सब आकाश के अनंतवे भाग कम बतलाया है ॥ ६ ॥ अब धर्मास्तिकायादि के प्रमाण का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय कितनी वडी है ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाय पंचास्तिकायमय लोक जैसी है, लोक मात्र है, लोक प्रदेश प्रमाण है, सब लोक के प्रदेश को स्पर्श कर रही है. ऐसे ही अधर्मास्तिकाय

शब्दार्थ पांच का ए० एक अ० अभिलाप ॥ ७ ॥ अ० अधो लोक में भं० भगवन् ध० धर्मास्तिकाय कि० कितनी फु० स्पर्शी है सा० कुच्छ अधिक अ० अर्ध से फु० स्पर्शे ति० तिर्च्छालोक में अ० असंख्यातवे भा० भाग क० फु० स्पर्शे उ० ऊर्ध्व लोक में दे० देशऊणा अ० अर्ध फु० स्पर्शे ॥ ८ ॥ र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी ध० धर्मास्तिकाय कि० क्या सं० संख्यातवे भा० भाग फु० स्पर्शे अ० असंख्यातवे भाग फु० स्पर्शे सं०

सूत्र अहो लोएणं भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसइ ? गोयमा ! सातिरेगं अद्धं फुसइ ॥ तिरिय लोएणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! असंखेज्जइ भागं फुसइ ॥ उड्ढलोएणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! देसूणं अद्धं फुसइ ॥ ८ ॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभाणं पुढवी धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइ भागं फुसइ, असंखेज्जइ भागं फुसइ संखेज्जे भागं फुसइ, असंखेज्जे भागं फुसइ सव्वं फुसइ ? गोयमा ! णो

भावार्थ य लोकाकाश का जान ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! अधोलोक में धर्मास्तिकाय कितनी स्पर्श कर रही है ? अहो गौतम ! आधे से कुछ अधिक धर्मास्तिकाया का विभाग स्पर्श कर रहा है. क्यों कि सब मीलकर चौदह राजु का लोक है; उस में से अधोलोक सात राजु से कुछ अधिक है. अहो भगवन् ! तिर्च्छालोक में कितनी धर्मास्तिकाय स्पर्श कर रही है ? अहो गौतम ! तिर्च्छा लोक में धर्मास्तिकाय असंख्यातवे भाग स्पर्श कर रही है क्यों कि १८०० योजन का तिर्च्छा लोक है. ऊर्ध्व लोक में धर्मास्तिकाय आधे से कुछ कम स्पर्श कर रही है क्यों कि सात राजू से कुछ कम ऊर्ध्व लोक है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् !

शब्दार्थ अ० अजीव द० द्रव्य देश अ० अगुरुलघु अ० अनंत अ० अगुरुलघु गु० गुण से सं० युक्त स० सर्व आकाश अ० अनंत भाग ऊणा ॥ ६ ॥ ध० धर्मास्तिकाय भं० भगवन् के० कितनी वडी गो० गौतम लो० लोक में लो० लोक मात्र लो० लोक प्रमाण लो० लोक को स्पर्शी लो० लोक को फु०स्पर्श कर चि० रही है ए० ऐसे अ० अधर्मास्ति काय लो० लोकाकाश जी० जीवास्ति काय पो० पुद्गलास्तिकाय पं०

सूत्र नो अजीवप्पदेसा; एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुयलहुए, अणंतेहिं, अगुरुय लहुयगुणेहिं संजुत्ते, सव्वागासे अणंतभागूणे ॥ ६ ॥ धम्मत्थिकाएणं भंते ! के महालए पण्णत्ते? गोयमा ! लोए, लोयमेत्ते, लोयप्पमाणे, लोयफुडे, लोयंचेव फुसित्ताणं, चिट्ठइ ॥ एवं अहम्मत्थिकाए, लोयाकासे, जीवत्थिकाए, पोग्गलात्थिकाए पंचावि एक्काभिलावा ॥७॥

भावार्थ अजीव द्रव्य का एक देश है. क्यों कि संपूर्ण लोकालोक का आकाश मीलकर एक स्कंध होता है और अलोक में मात्र एक अलोकाकाश ही है. इसलिये एक अजीव द्रव्य का देश गिना गया है. वह अनंत स्वपर्यायरूप अगुरुलघु स्वभाव सहित है. लोकाकाश की अपेक्षा से अनंत भाग रूप है इस से सब आकाश के अनंतवे भाग कम बतलाया है ॥ ६ ॥ अब धर्मास्तिकायादि के प्रमाण का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! धर्मास्तिकाय कितनी बडी है ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाय पंचास्तिकायमय लोक जैसी है, लोक मात्र है, लोक प्रदेश प्रमाण है, सब लोक के प्रदेश को स्पर्श कर रही है. ऐसे ही अधर्मास्तिकाय

शब्दार्थ र० रत्नप्रभा त० तैसे घ० घनोदधि घ० घनवात त० तनुवात ॥ १० ॥ इ० इस र० रत्नप्रभा का उ० आकाशांतर ध०धर्मास्तिकाया को किं०क्या गो०गौतम सं० संख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे अ०असंख्यात भाग को फु० स्पर्शे गो० गौतम सं० संख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे नो० नहीं अ० असंख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे नो० नहीं सं०संख्यात भाग को नो०नहीं अ०असंख्यात भाग को नो० नहीं स० सर्व को उ० आकाशान्तर स० सर्व ज० जैसे र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की व० वक्तव्यता भ० कही ए० ऐसे जा०

सूत्र

तहा घणोदहिघणवायतणुवायावि ॥ १० ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरे धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइ भागं फुसइ, असंखेज्जइ भागं फुसइ ? पुच्छा गोयमा संखेज्जइ भागं फुसइ, णो असंखेज्जइ भागं फुसइ, णो संखेज्जे,नो असंखेज्जे, नो सव्वं फुसइ. ॥ उवासंतराइं सव्वाइं जहा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया

भावार्थ जानना. इसी तरह घनवात व तनुवात का जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के आकाशान्तरको धर्मास्तिकाया क्या संख्यातवे भाग से स्पर्श कर रही है यावत् सब स्पर्श कर रही है ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के आकाशान्तर को धर्मास्तिकाय संख्यातवे भाग से स्पर्श कर रही है. जैसे रत्नप्रभा पृथ्वी का आकाशान्तर कहा वैसे ही सातवी पृथ्वी तक के सब आकाशान्तर का जानना ॥११॥

शब्दार्थ संख्यात भाग फु० स्पर्शे अ०असंख्यात भाग फु०स्पर्शे स० सर्व फु०स्पर्शे गो०गोतम नो०नहीं सं०संख्यातवे भाग फु० स्पर्शे अ० असंख्यातवे भाग फु० स्पर्शे णो० नहीं सं० संख्यात भाग फु० स्पर्शे नो० नहीं अ० असंख्यात भाग फु० स्पर्शे नो० नहीं स० सर्व फु० स्पर्शे ॥ १ ॥ इ० इस र० रत्नप्रभा पृथ्वी का घ० घनोदधि ध० धर्मास्ति काया को किं० क्या सं० संख्यातवे भाग फु० स्पर्शे गो० गौतम ज० जैसे

सूत्र संखेज्जइ भागं फुसइ, असंखेज्जइ भागं फुसइ, णो संखेज्जे भागं फुसइ, णो असंखेज्जे भागं फुसइ, नो सव्वं फुसइ, ॥ १ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदही धम्मात्थिकायस्स किं संखेज्जइ भागं फुसइ ? गोयमा ! जहा रयणप्पभाए

भावार्थ रत्नप्रभा पृथ्वी को धर्मास्तिकाय क्या संख्यात वे भाग से स्पर्श कर रही है, असंख्यातवे भाग से स्पर्श कर रही है, संख्यात भाग में या असंख्यात भाग में स्पर्शकर रही है या सब स्पर्शकर रही है ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी को धर्मास्तिकाय संख्यातवे भाग से स्पर्शकर नहीं रही है परंतु असंख्यातवे भाग से स्पर्शकर रही है. क्यों कि रत्नप्रभा का पृथ्वी पिंड एक लाख अस्सी हजार योजन का है. संख्यात व असंख्यात भाग में अथवा सब स्पर्शकर नहीं रही है ॥१॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी का घनोदधि को धर्मास्तिकाय क्या संख्यातवे भाग से स्पर्शकर रही है ? अहो गौतम ! जैसे रत्नप्रभा पृथ्वी का कहा वैसे ही

शब्दार्थ र० रत्नप्रभा त० तैसे घ० घनोदधि घ० घनवात त० तनुवात ॥ १० ॥ इ० इस र० रत्नप्रभा का उ० आकाशांतर ध०धर्मास्तिकाया को किं०क्या गो०गौतम सं० संख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे अ०असंख्यात भाग को फु० स्पर्शे गो० गौतम सं० संख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे नो० नहीं अ० असंख्यात वे भाग को फु० स्पर्शे नो० नहीं सं०संख्यात भाग को नो०नहीं अ०असंख्यात भाग को नो० नहीं स०सर्व को उ० आकाशान्तर स० सर्व ज० जैसे र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी की व० वक्तव्यता भ० कही ए० ऐसे जा०

सूत्र तहा घणोदहिघणवायतणुवायावि ॥ १० ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरे धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइ भागं फुसइ, असंखेज्जइ भागं फुसइ ? पुच्छा गोयमा संखेज्जइ भागं फुसइ, णो असंखेज्जइ भागं फुसइ, णो संखेज्जे,नो असंखेज्जे, नो सव्वं फुसइ. ॥ उवासंतराइं सव्वाइं जहा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया

भावार्थ जानना. इसी तरह घनवात व तनुवात का जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के आकाशान्तरको धर्मास्तिकाया क्या संख्यातवे भाग से स्पर्श कर रही है यावत् सब स्पर्श कर रही है ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के आकाशान्तर को धर्मास्तिकाय संख्यातवे भाग से स्पर्श कर रही है. जैसे रत्नप्रभा पृथ्वी का आकाशान्तर कहा वैसे ही सातवी पृथ्वी तक के सब आकाशान्तर का जानना ॥११॥

शब्दार्थ अ० अधो स० सातवी नरक ॥ ११ ॥ जं० जंबूद्वीपादि दी० द्वीप ल० लवण समुद्रादि स० समुद्र ए० ऐसे सो० सौधर्म देवलोक जा० यावत् इ० ईषत्प्रागभार पु० पृथ्वी ते० वे अ० असंख्यातवे भा० भाग को फु०

सूत्र एवं जाव अहेसत्तमाए॥११॥ जंबूदीवाइया दीवा, लवणसमुद्दाइया समुद्दा एवं सोहम्मेकप्पे जाव इसिपब्भाए पुढवीए तेसव्वेवि असंखेज्जइ भागं फुसइ । सेसा पडिसेहेयव्वा । एवं अधम्मात्थिकाए एवं लोयागासेवि ॥ गाथा ॥ पुढवीउदहिघणतणू । क-

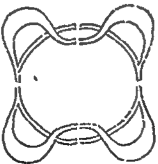
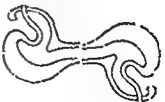
भावार्थ जम्बूद्वीप आदि सब द्वीप, लवण समुद्रादि सब समुद्र, सौधर्मादि देवलोक से लेकर बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान, और ईषत्प्राग्भार पृथ्वी इन सब को धर्मास्तिकाया का असंख्यातवा भाग स्पर्श कर रहा है परंतु संख्यातवा भाग व संख्यात व असंख्यात भाग में, वैसे ही सब धर्मास्तिकाय स्पर्श कर नहीं रही है. जैसे धर्मास्तिकाय की वक्तव्यता कही वैसे ही अधर्मास्तिकाया व लोकाकाश का जानना. सात पृथ्वी, सात घनोदधि, सात घनवात, सात तनुवात, बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान, सिद्धशिला इन सब में जो आकाशान्तर है उन को धर्मास्तिकायादि संख्यातवे भाग में स्पर्श कर रहे हैं. पृथ्वी, घनोदधि, घनवात, तनुवात व आकाश इन एकेक के सात २ सूत्र करने से ३५ हुए. बारह देवलोक के बारह, नव ग्रैवेयक के ३, पांच अनुत्तर विमान का १ और सिद्धशिलाका

पदार्थ स्पर्शे से० शेष प० प्रतिपेध ए० ऐसे अ० अधर्मास्तिकाय ए० ऐसे लो० लोकाकाश ॥२॥ १० ॥ २ ॥

सूत्र प्पागेवेज्जाणुत्तरासिद्धी संखेज्जइ भागं अंतरेसु सेसा असंखेज्जा ॥ बिईयसयस्स दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ १० ॥ बिईयं सययं सम्मत्तं ॥ २ ॥ *

भावार्थ एक मीलकर ८२ हुवे. इन सब के आकाशान्तरको धर्मास्तिकायादिक संख्यातवे भाग से स्पर्शती है. शेष सब के आकाशान्तर को असंख्यातवे भाग से स्पर्शती है. यह दूसरे शतकका दशवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ २ ॥ १० ॥ २ ॥

× ×

शब्दार्थ अ० अधो स० सातमी नरक ॥ ११ ॥ जं० जंबूद्वीपादि दी० द्वीप ल० लवण समुद्रादि सं० समुद्र ए० ऐसे सो० सौधर्म देवलोक जा० यावत् इ० ईसत्पागभार पु० पृथ्वी ते० वे अ० असंख्यातवे भा० भाग को फु०

सूत्र एवं जाव अहेसत्तमाए॥११॥ जंबूदीवाइया दीवा, लवणसमुदाइया समुदा एवं सोहम्मेकप्पे जाव इसिपब्भाए पुढवीए तेसव्वेवि असंखेज्जइ भागं फुसइ । सेसा पडिसेहेयव्वा । एवं अधम्मात्थिकाए एवं लोयागासेवि ॥ गाथा ॥ पुढवीउदहिघणतणू । क-

भावार्थ जम्बूद्वीप आदि सब द्वीप, लवण समुद्रादि सब समुद्र, सौधर्मादि देवलोक से लेकर बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान, और ईपत्प्राग्भार पृथ्वी इन सब को धर्मास्तिकाया का असंख्यातवा भाग स्पर्श कर रहा है परंतु संख्यातवा भाग व संख्यात व असंख्यात भाग में, वैसे ही सब धर्मास्तिकाय स्पर्श कर नहीं रही है. जैसे धर्मास्तिकाय की वक्तव्यता कही वैसे ही अधर्मास्तिकाया व लोकाकाश का जानना. सात पृथ्वी, सात घनोदधि, सात घनवात, सात तनुवात, बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमान, सिद्धशिला इन सब में जो आकाशान्तर है उन को धर्मास्तिकायादि संख्यातवे भाग में स्पर्श कर रहे हैं. पृथ्वी, घनोदधि, घनवात, तनुवात व आकाश इन एकेक के सात २ सूत्र करने से ३५ हुए. बारह देवलोक के बारह, नव ग्रैवेयक के ३, पांच अनुत्तर विमान का १ और सिद्धशिलाका

शब्दार्थ में सा० स्वामी स० समवसरण प० परिषदा नि० निर्गता प० परिषदा प० पीछीगई ॥ २ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के दो० दूसरे अं० अंतेवासी अ० अग्निभूति अ०अनगार गो० गौतम गो० गोत्र से स० सात हाथ ऊंचे जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसा व० बोले च० चमर भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा के० कितना म० महर्द्धिक म० महाद्युतिवन्त म०

सूत्र लेणं २ सामी समोसढे परिसा निग्गच्छइ, परिसा पडिगया॥ २ ॥ तेणं कालेणं २ समणस्स भगवओ महावीरस्स दोच्चे अंतेवासी अग्गिभूईणामं अणगारे, गोयम गोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी चमरेणं भंते ! असुरिंदे असुरराया के महिड्ढीए,केमहज्जुईए,केमहाबले, के महायसे केमहासोक्खे, के महाणुभागे,

भावार्थ नाम की नगरी थी. उस का वर्णन उववाइ सूत्र में चंपा नाम की नगरी जैसे कहना. उस मोया नगरी की ईशान कोन में नंदन नामक उद्यान था. उस का वर्णन भी उववाइ जैसे जानना. उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ग्रामानुग्राम विचरते उस नंदन उद्यान में पधारे. परिषदा धर्मोपदेश सुनने को आइ और सुनकर पीछीगइ ॥१॥ उस काल उस समय में भगवंत के दूसरे शिष्य गौतम गोत्रीय सात हाथ की अवगाहनावाले अग्निभूति नामक अनगार श्री भगवन्त को वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना करते पूछनेलगे कि अहो भगवन् ! चमर नामक असुरका राजा असुरेन्द्र कितनी ऋद्धिवाला है, कितनी द्युतिवाला है, कितना

॥ तृतीय शतकम् ॥

के० कैसी वि० विकुर्वणा च० चमर कि० क्रिया जा० यान त्थि० स्त्री न० नगर पा० लोकपाल अ० अधिपति इं० इन्द्रिय प० परिषदा त० तीसरा स० शतक में द० दशउद्देशा ॥ १ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में मो० मोया नामकी न० नगरी हो० थी व० वर्णनयुक्त ती० उस मो० मोया नगरी की व०बाहिर उ०ईशान कोन में नं०नंदन नाम का चे०उद्यान हो०था व०वर्णनयुक्त ते०उस काल ते०उस समय

केरिस विउव्वणा, चमर, किरिय, जाणि,त्थि; नगर, पालाय॥ अहिवइ, इंदिय,परिसा; तइयंमि सए दसुद्देसा॥ १॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं मोया नामं नयरी होत्था,वण्णओ,तीसेणं मोयानयरीए बाहिया उत्तर पुरच्छिमे दिसीभाए, नंदणे नामं चेइए होत्था, वण्णओ। तेणंका-

दूसरे शतकके अंतिम उद्देशे में अस्तिकायाका स्वरूप कहा. अब इस उद्देशे में जीवास्तिकायका विचार कहते हैं. इस के दश उद्देशे बताते हैं. जिन के नाम १ वैक्रेय करने की शक्ति व चमरेन्द्र आदि इन्द्रों का अधिकार २ चमर उत्पात अधिकार ३ कायिकादि क्रिया का अधिकार ४ वैक्रेय समुद्घात से देवता यान विकुर्वे सो साधु जाने ५ साधु बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर स्त्री आदि के रूप विकुर्वे ६ साधु वाणारसी में समुद्घात करके राजगृह का रूप देखे ७ सोम आदि लोकपाल ८ असुरादि देव के कितने अधिपति ९ इन्द्रिय का अधिकार १० चमर की परिषदा का अधिकार ॥ १ ॥ उस काल उस समय में मोया

शब्दार्थ से उ० युक्त सि० होवे ए० ऐसे गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा वे० वैक्रय स० समुद्घात स० पूर स० पूरकर सं० संख्यात जो० योजन उ० ऊंचा दं० दंड को नि० निकाले तं० वह ज० जैसे र० रत्न जा० यावत् रि० रिष्ट अ० यथा बा० बादर पो० पुद्गल प० दूरकर अ० यथा सु० सूक्ष्म पो० पुद्गल प० ग्रहणकरे दो० दूसरी वक्त वे० वैक्रेय स० समुद्घात से स० पूरे प० समर्थ गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा के० केवल कल्प जं० जंबूद्वीप य० बहुत अ० असुरकुमार दे०

सूत्र वा नाभी अरगाउत्तासिया एवामेव गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणइत्ता संखेज्जाणि जोयणाणि उड्ढंदंडं निसिरइ तंजहा रयणाणं जाव रिट्ठाणं अहा बायरे पोग्गले परिसाडेइ परिसाडेइत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाइयइ, परियाइयइत्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, पभूणं गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया केवलकप्पं

भावार्थ चमर नामक असुरेन्द्र वैक्रेय समुद्घात करे. वैक्रेय समुद्घात करके संख्यात योजन का ऊंचा दंड करे. बहुत दलवाला व शरीर जितना चौडा, जीव प्रदेश व कर्म पुद्गलों का समुह बनावे. उस में कर्केतनादि विविध

१ यद्यपि कर्केतनादिक रत्नके पुद्गल औदारिक शरीरमय हैं और वक्रेय समुद्घात वैक्रेय पुद्गल ग्रहण करनेसे होतीहै. परंतु यहांपर रत्नसार पदार्थ होनेसे कर्केतनादि जैसे पुद्गलों ऐसा अर्थ लेना. कितनेक ऐसाभी कहते हैं कि उदारिक पने ग्रहण किये पुद्गल वैक्रेय पने परिणमते हैं.

शब्दार्थ बलवन्त म० महायशस्वी म० महानुभाग के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम च० चमर अ० असुरराजा म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग से० उन को त० तहां चो० चोत्तीस भ० भुवन स० लक्ष च० चौसठ सा० सामानिक स० सहस्र ता० तेत्तीस ता० त्रायत्रिंशक जा० यावत् वि० विचरते हैं ए० ऐसे म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग ॥ ३ ॥ प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को से० वह ज० जैसे जु० युवति को जु० युवान ह० हाथ गे० ग्रहण करे च० चक्र की ना० नाभी अ० आरा

सूत्र केवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! चमरेणं असुरराया महिड्ढीए, जाव महाणुभागे सेणं तत्थ चोत्तीसाए भवणावास सय सहस्साणं चउसट्ठीए सामाणिय साहस्सीणं, तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं जाव विहरइ एवं महिड्ढीए जाव महाणुभागे ॥ ३ ॥ एवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए । से जहा नामए जुवतिं जुवणे हत्थेणं हत्थं गेण्हेज्जा, चक्कस्स-

भावार्थ बलवाला है, कितना सुखवाला है, कैसा महानुभागवाला है, और किस प्रकार कितने रूप करने को समर्थ है ? अहो गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र महर्द्धिक यावत् महानुभागवाला है. उन को चौतीस लाख भुवन, चौसठ हजार सामानिक, और तेत्तीस त्रायत्रिंशक ऐसी ऋद्धि है ॥ ३ ॥ अब इन की वैक्रेय करने की शक्ति बताते हैं. जैसे काम से पीडित कोई युवान पुरुष अपने हस्त से युवति का हस्त पकडे, और जैसे चक्र की नाभि को आरे से पूरे अर्थात् चक्र की नाभि के छिद्र में आरा डाले ऐसे ही अहो गौतम !

शब्दार्थ से उ० युक्त सि० होवे ए० ऐसे गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा वे० वैक्रय स० समुद्घात स० पूरे स० पूरकर सं० संख्यात जो० योजन उ० ऊंचा दं० दंड को नि० निकाले तं० वह ज० जैसे र० रत्न जा० यावत् रि० रिष्ट अ० यथा बा० बादर पो० पुद्गल प० दूरकर अ० यथा सु० सूक्ष्म पो० पुद्गल प० ग्रहणकरे दो० दूसरी वक्त वे० वैक्रेय स० समुद्घात से स० पूरे प० समर्थ गो० गौतम च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुरराजा कें० केवल कल्प जं० जंबूद्वीप ब० बहुत अ० असुरकुमार दे०

सूत्र वा नाभी अरगाउत्तासिया एवामेव गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणइत्ता संखेज्जाणि जोयणाणि उड्ढंदंडं निसिरइ तंजहा रयणाणं जाव रिट्ठाणं अहा बायरे पोग्गले परिसाडेइ परिसाडेइत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाइयइ, परियाइयइत्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, पभूणं गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया केवलकप्पं

भावार्थ चमर नामक असुरेन्द्र वैक्रेय समुद्घात करे. वैक्रेय समुद्घात करके संख्यात योजन का ऊंचा दंड करे. बहुत दलवाला व शरीर जितना चौडा, जीव प्रदेश व कर्म पुद्गलों का समुह बनावे. उस में कर्केतनादि विविध

१ यद्यपि कर्केतनादिक रत्नके पुद्गल औदारिक शरीरमय हैं और वैक्रेय समुद्घात वैक्रेय पुद्गल ग्रहण करनेसे होतीहै. परंतु यहांपर रत्नसार पदार्थ होनेसे कर्केतनादि जैसे पुद्गलों ऐसा अर्थ लेना. कितनेक ऐसाभी कहते हैं कि उदारिक पने ग्रहण किये पुद्गल वैक्रेय पने परिणमते हैं.

शब्दार्थ देव दे०देवी से आ० व्याप्त वि० विशेष व्याप्त उ० आच्छादित सं० संथरित फु० प्रगट अ० मीले हुवे अ० अवगाहे हुवे क० करे अ० अथवा गो० गौतम प० समर्थ च०चमर अ०असुरेन्द्र अ०असुरराजा ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र में व० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी से आ० व्याप्त वि० विशेष व्याप्त उ० आच्छादित सं० संथरित फु० प्रगट अ० मीले हुवे अ० अवगाहे हुवे

सूत्र जंबुदीवं दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अरगाढावगाढं करेत्तए ॥ अदुत्तरंचणं गोयमा पभूणं चमरे असुरिंदे असुरराया तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे संथडे फुडे अरगाढावगाढे करेत्तए; एसणं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए । णो चेवणं संपत्तीए

भावार्थ प्रकार के पुद्गल ग्रहण करे. उन ग्रहे हुवे पुद्गलों में से निःसार बादर पुद्गलों को दूर करके यथायोग्य सूक्ष्म पुद्गलों को ग्रहण करे, और वांच्छितरूप बनाने के लिये दूसरी वक्त वैक्रेय समुद्घात करे.. अहो गौतम ! वह चमर नामक असुरेन्द्र अपने रूप से विकुर्वणा करके संपूर्ण जम्बूद्वीप भरे और बहुत असुर कुमार के देवता, देवियों व तथा प्रकारके अन्य भी इच्छित रूप से एक लक्ष योजनका जम्बूद्वीप व्याप्त होवे; विशेष व्याप्त होवे, क्रीडा से आच्छादित, परस्पर-संथारित, प्रगट, व परस्पर संश्लेपणा युक्त होवे.

पदार्थ क० करे ए० यह गो० गौतम च०चमर अ०असुरेन्द्र अ०असुर राजा का ए०ऐसारूप त्रि०त्रिपय त्रि०विपय मात्र वु० कहा णो० नहीं सं० संपत्ति त्रि० विकुर्वणा की वि० विकुर्वणा करे त्रि०विकुर्वणा करेगा ॥ ४ ॥ ज०यदि भं०भगवन् च०चमर अ०असुरेन्द्र अ०असुरराजा ए० इतना म० महर्द्धिक जा०यावत् ए० ऐसे प०

सूत्र विकुव्विसुवा विकुव्वंतिवा, विकुव्विस्संतिवा ॥ ४ ॥ जइणं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्डीए जाव एवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणियदेवा के माहिड्डीया जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! चमरस्स असुररण्णो सामाणिय देवा महिड्डीया जाव महाणुभागा, तेणं तत्थ साणं साणं भवणाणं, साणं साणं सामाणियाणं, साणं साणं अग्गमहिसीणं, जाव

भावार्थ और भी अहो गौतम ! बहुत असुर के देव व देवियों से तिर्च्छे असंख्याते द्वीप समुद्र को आकीर्ण करने को यावत् परस्पर संश्लेपणा युक्त बनाने को चमर नामक असुरेन्द्र समर्थ है. परंतु इतना रूप बनाने की संपत्ति नहीं है. मात्र चमर नामक असुरेन्द्र की इतना वैक्रेय रूप बनाने की शक्ति है. इतने रूप उनोंने अतीत काल में नहीं किये हैं, वर्तमान में नहीं करते हैं और आगामिक में नहीं करेंगे ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जब चमर नामक असुरेन्द्र की इतनी ऋद्धि यावत् इतना वैक्रेय रूप करने की शक्ति है तो उनके सामानिक देवकी कितनी ऋद्धि व कितनी शक्ति है अर्थात् वे कितने वैक्रेय रूप करने को शक्तिवंत हैं.

शब्दार्थ देव दे०देवी से आ० व्याप्त वि० विशेष व्याप्त उ० आच्छादित सं० संथरित फु० प्रगट अ० मीले हुवे अ० अवगाहे हुवे क० करे अ० अथवा गो० गौतम प० समर्थ च०चमर अ०असुरेन्द्र अ०असुरराजा ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र में व० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी से आ० व्याप्त वि० विशेष व्याप्त उ० आच्छादित सं० संथरित फु० प्रगट अ० मीले हुवे अ० अवगाहे हुवे

सूत्र जंबूदीवं दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अरगाढावगाढं करेत्तए ॥ अदुत्तरंचणं गोयमा पभूणं चमरे असुरिंदे असुरराया तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे संथडे फुडे अरगाढावगाढे करेत्तए; एसणं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए । णो चेवणं संपत्तीए

भावार्थ प्रकार के पुद्गल ग्रहण करे. उन ग्रहे हुवे पुद्गलों में से निःसार बादर पुद्गलों को दूर करके यथायोग्य सूक्ष्म पुद्गलों को ग्रहण करे, और वांच्छितरूप बनाने के लिये दूसरी वक्त वैक्रेय समुद्घात करे. अहो गौतम ! वह चमर नामक असुरेन्द्र अपने रूप से विकुर्वणा करके संपूर्ण जम्बूद्वीप भरे और बहुत असुर कुमार के देवता, देवियों व तथा प्रकारके अन्य भी इच्छित रूप से एक लक्ष योजनका जम्बूद्वीप व्याप्त होवे; विशेष व्याप्त होवे, क्रीडा से आच्छादित, परस्पर-संथरित, प्रगट, व परस्पर संश्लेषणा युक्त होवे.

पदार्थ — स्वतः के भ० भुवन सा० स्वतः के सा० सामानिकदेव सा० स्वतः की अ० अग्रमहिषी जा० यावत् दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगवते वि० विचरते हैं ॥ ५ ॥ अ० असुरेन्द्र के ता० त्रायस्त्रिंशक देव ज०

सूत्र — केवलकप्पं जंबूद्दीवं दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अवगाढावगाढं करेत्तए ॥ अदुत्तरं च णं गोयमा ! पभू चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे तिरियमसंखेज्जे दीव समुद्दे बहूहिं असुर कुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे संथडे फुडे अवगाढावगाढे करेत्तए, एसणं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगस्स सामाणिय देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, णोचेवणं संपत्तीए, विकुव्विसुवा, विकुव्वितिवा, विकुव्विस्संतिवा ॥ ५ ॥ जइणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिय

भावार्थ — संपूर्ण जम्बूद्वीप को व्याप्त, विशेष व्याप्त, आच्छादित, यावत् प्रगट करने को शक्तिवंत हैं वैसे ही तिर्छे असंख्यात द्वीप समुद्र को व्याप्त यावत् प्रगट करने को शक्तिवंत हैं. अहो गौतम ! चमरेन्द्रके सामानिक का मात्र यह विषय कहा परंतु उन को इतनी संपत्ति नहीं होने से उनोंने अतीत कालमें इतने वैक्रेय किया नहीं वर्तमानमें करते नहीं हैं. और आगामिकमें करेंगे भी नहीं॥५॥ अहो भगवन्! चमरेन्द्रके सामानिक इतने महर्द्धिक

शब्दार्थ सन्दर्थ वि० विकुर्वणा करने को च० चमरेन्द्र का अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का सा० सामानिक दे० देव के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम च० चमर के अ० असुर राजा के सा० सामानिक देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग सा०

सूत्र दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति, एवं महिड्डीया जाव एवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए। से जहा नामए जुवइ जुवाणे हत्थेणं हत्थं गेण्हेज्जा, चक्करसवा नाभी अरया उत्तासिया एवामेव गोयमा ! चमरस्सवि असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिए देवे वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ २त्ता जाव दोच्चंपि वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ पभूणं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिए

भावार्थ अहो गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र असुरराजा के सामानिकदेव चमरेन्द्र जैसे महाऋद्धिवंत यावत् महानुभाग वाले हैं. वे अपने २ भवन, सामानिक अग्रमहिषी वगैरह के दीव्य सुख भोगवते हुवे रहते हैं. और जिस प्रकार कामसे पीडित युवान पुरुष अपने हस्तसे युवती का हस्त ग्रहण करता है, अथवा जैसे चक्र की नाभी में आरा निविड रहता है, वैसे ही चमर नामक असुरेन्द्र के सामानिक देव वैक्रेय समुद्घात करे. उस में से निस्सार बादर पुद्गलों को छोडकर सूक्ष्म पुद्गलों ग्रहण कर इच्छित रूप बनाने को दूसरा वैक्रेय रूप बनावे. और अहो गौतम ! वे एक २ सामानिक देव असुर कुमार के बहुत देव देवियों के रूप बनाकर

शब्दार्थ स्वतः के भ० भुवन सा० स्वतः के सा० सामानिकदेव सा० स्वतः की अ० अग्रमहिषी जा० यावत् दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगवते वि० विचरते हैं ॥ ५ ॥ अ० असुरेन्द्र के ता० त्रायस्त्रिंशक देव ज०

सूत्र केवलकप्पं जंबूद्दीवं दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अवगाढावगाढं करेत्तए ॥ अदुत्तरं च णं गोयमा ! पभू चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे तिरियमसंखेज्जे दीव समुद्दे बहूहिं असुर कुमारेहिं देवेहिं देवीहिय आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे संथडे फुडे अवगाढावगाढे करेत्तए, एसणं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगस्स सामाणिय देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, णोचेवणं संपत्तीए, विकुव्विसुवा, विकुव्वितिवा, विकुव्विस्संतिवा ॥ ५ ॥ जइणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिय

भावार्थ संपूर्ण जम्बूद्वीप को व्याप्त, विशेष व्याप्त, आच्छादित, यावत् प्रगट करने को शक्तिवंत हैं वैसे ही तिर्च्छे असंख्यात द्वीप समुद्र को व्याप्त यावत् प्रगट करने को शक्तिवंत हैं. अहो गौतम ! चमरेन्द्रके सामानिक का मात्र यह विषय कहा परंतु उन को इतनी संपत्ति नहीं होने से उनोंने अतीत कालमें इतने वैक्रेय किया नहीं वर्तमानमें करते नहीं हैं. और आगामिकमें करेंगे भी नहीं॥५॥ अहो भगवन्! चमरेन्द्रके सामानिक इतने महार्द्धिक

शब्दार्थ समर्थ वि० विकुर्वणा करने को च० चमरेन्द्र का अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा का सा० सामानिक दे० देव के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम च० चमर के अ० असुर राजा के सा० सामानिक देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग सा०

सूत्र दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति, एवं महिड्ढीया जाव एवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए। से जहा नामए जुवइ जुवाणे हत्थेणं हत्थं गेण्हेज्जा, चक्कस्सवा नाभी अरया उत्तासिया एवामेव गोयमा! चमरस्सवि असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिए देवे वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ २ त्ता जाव दोच्चंपि वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ पभूणं गोयमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिए

भावार्थ अहो गौतम! चमर नामक असुरेन्द्र असुरराजा के सामानिकदेव चमरेन्द्र जैसे महाऋद्धिवंत यावत् महानुभाग वाले हैं. वे अपने २ भवन, सामानिक अग्रमहिषी वगैरह के दीव्य सुख भोगवते हुवे रहते हैं. और जिस प्रकार कामसे पीडित युवान पुरुष अपने हस्तसे युवती का हस्त ग्रहण करता है, अथवा जैसे चक्रकी नाभी में आरा निबिड रहता है, वैसे ही चमर नामक असुरेन्द्र के सामानिक देव वैक्रेय समुद्घात करे. उस में से निस्सार बादर पुद्गलों को छोडकर सूक्ष्म पुद्गलों ग्रहण कर इच्छित रूप बनाने को दूसरा वैक्रेय रूप बनावे. और अहो गौतम! वे एक २ सामानिक देव असुर कुमार के बहुत देव देवियों के रूप बनाकर

शब्दार्थ देवी के० कितनी म० महर्द्धिक ज० जैसे लो० लोकपाल अ० अवशेष स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ ७ ॥ भ० भगवान् दो० दूसरा गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदना कर न०

सूत्र असुररण्णो भंते अग्गमहिसीओ देवीओ के महिड्ढीयाओ जाव केवइयंचणं पभू विउव्वित्तए? गोयमा! चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ महिड्ढीयाओ जाव महाणुभागाओ, ताओणं तत्थ साणं साणं भवणाणं, साणं साणं च सामाणिय साहस्सीणं, साणं साणं महत्तरियाणं, साणं साणं परिसाणं जाव महिड्ढीयाओ अण्णं जहा लोगपालाणं, अपरिसेसं॥ सेवं भंते २! त्ति ॥७॥ भगवं दोचे गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता जेणेव तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे तेणेव उवाग-

भावार्थ सकती हैं? अहो गौतम! चमरेन्द्र की अग्रमहिषियों महा ऋद्धिवाली यावत् महानुभागवाली हैं. वे अपने २ भुवन, अपने २ सामानिक देव, अपनी २ महत्तारिक देवियों, अपनी २ परिषदा की ऋद्धिवाली हैं वगैरह लोकपाल जैसे सब अधिकार कहना. इतना सुनकर गौतम गोत्रीय दूसरे गणधर श्री अग्निभूति बोले कि अहो भगवन्! जो आप कहते हैं वह सत्य है. जैसा आपका कथन है वैसा ही वस्तुस्वरूप है ॥७॥ इतना कहकर, श्री श्रमण भगवंतको वंदना नमस्कार करके अग्निभूतिने तीसरे गणधर गौतम गोत्रीय श्री वायुभूति की पास आकर कहा कि अहो गौतम! चमर नामक असुरेन्द्र की ऋद्धि

जैसे सा० सामानिक त० तैसे णे० जानना लो० लोकपाल त० तैसे न० विशेष सं० संख्यात दी० द्वीप स० समुद्र भा० कहना ब० बहुत अ० असुर कुमार से आ० आकीर्ण जा० यावत् वि० विकुर्वणा करेंगे ॥ ६ ॥ ज० यदि च० चमर के अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजाके लो० लोकपालदेव म० महर्द्धिक अ० अग्रमहिषी

सूत्र

देवाए महिड्ढीया जाव एवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए । चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो तावत्तीसया देवा केमहिड्ढीया, वत्तीसया जहा सामाणिया तहा णेयव्वा ॥ लोयपाला तहेव, नवरं संखेज्जा दीवसमुद्दा भाणियव्वा, बहूहिं असुरकुमारेहिं २ आइण्णे जाव विउव्विस्संतिवा ॥ ६ ॥ जइणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो लोगपाला देवाए महिड्ढीए जाव एवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए, चमरस्सणं असुरिंदस्स

भावार्थ

यावत् महानुभागवाले वैसे ही इतने वैक्रेय करने की शक्तिवाले हैं तब चमरेन्द्र के त्रायत्रिंशक कितने महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय करनेवाले हैं. अहो गौतम ! जैसे सामानिक का कहा वैसे ही त्रायत्रिंशक का जानना. और इसीतरह लोकपाल का जानना. मात्र इतना विशेष है की इसमें संख्याते द्वीप समुद्र लेना. त्रायत्रिंशक व लोकपाल संख्याते द्वीप समुद्र को असुर कुमार के देव व देवियों मे व्याप्त करने को समर्थ हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जब चमर नामक असुरेन्द्र के लोकपाल इतने महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेय करने को शक्तिवंत हैं तब चमरेन्द्र की अग्रमहिषियों कितनी ऋद्धिवाली हैं और कितने रूप वैक्रेय बना

शब्दार्थ देवी के० कितनी म० महर्द्धिक ज० जैसे लो० लोकपाल अ० अवशेष स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ॥ ७ ॥ भ० भगवान् दो० दूसरा गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदना कर न०

सूत्र असुररण्णो भंते अग्गमहिसीओ देवीओ के महिड्ढीयाओ जाव केवइयंचणं पभू विउव्वित्तए? गोयमा! चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ महिड्ढीयाओ जाव महाणुभागाओ, ताओणं तत्थ साणं साणं भवणाणं, साणं साणं च सामाणिय साहस्सीणं, साणं साणं महत्तरियाणं, साणं साणं परिसाणं जाव महिड्ढीयाओ अण्णं जहा लोगपालाणं, अपरिसेसं॥ सेवं भंते २! त्ति ॥७॥ भगवं दोच्चे गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसइत्ता जेणेव तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे तेणेव उवाग-

भावार्थ सकती हैं? अहो गौतम! चमरेन्द्र की अग्रमहिषियों महा ऋद्धिवाली यावत् महानुभागवाली हैं. वे अपने २ भुवन, अपने २ सामानिक देव, अपनी २ महत्तरिक देवियों, अपनी २ परिषदा की ऋद्धिवाली हैं वगैरह लोकपाल जैसे सब अधिकार कहना. इतना सुनकर गौतम गोत्रीय दूसरे गणधर श्री अग्निभूति बोले कि अहो भगवन्! जो आप कहते हैं वह सत्य है. जैसा आपका कथन है वैसा ही वस्तुस्वरूप है ॥७॥ इतना कहकर, श्री श्रमण भगवंतको वंदना नमस्कार करके अग्निभूतिने तीसरे गणधर गौतम गोत्रीय श्री वायुभूति की पास आकर कहा कि अहो गौतम! चमर नामक असुरेन्द्र की ऋद्धि

शब्दार्थ नमस्कारकर जे॰ जहां त॰ तीसरा गो॰ गौतम वा॰ वायुभूति अ॰ अनगार ते॰ तहां उ॰ आकर त॰ तीसरा गो॰ गौतम वा॰ वायुभूति अ॰ अनगार को ए॰ ऐसा व॰ कहा ए॰ ऐसे ख॰ निश्चय गो॰ गौतम च॰ चमर अ॰ असुरेन्द्र अ॰ असुर राजा म॰ महर्द्धिक तं॰ उसको ए॰ ऐसे स॰ सर्व अ॰ विना पूछे वा॰ कथन ने॰ जानना अ॰ संपूर्ण जा॰ यावत् अ॰ अग्रमहिषी व॰ वक्तव्यता स॰ संपूर्ण ॥ ८ ॥ त॰ तब से॰ वह त॰ तीसरा गो॰ गौतम वा॰ वायुभूति अ॰ अनगार को दो॰ दूसरा गो॰ गौतम अ॰ अग्निभूति अ॰ अनगार ए॰ ऐसे आ॰ कहतेको भा॰ बोलते को प॰ विशेष कहतेको प॰ प्ररूपते को ए॰ यह अर्थ

सूत्र च्छइ २ त्ता, तच्चं गोयमं वायुभूइं अणगारं एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्ढीए तंचेव एवं सव्वं अपुट्ठं वागरणं नेयव्वं अपरिसेसं जाव अग्गमहिसीणं वत्तव्वया सम्मत्ता ॥८॥ तएणं से तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे दोचस्स गोयमस्स अग्गिभूयस्स अणगारस्स एव माइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ, नो रोयइ; एयमट्ठं असद्दह-

भावार्थ यावत् वैक्रेय करनेकी इतनी शक्ति है. यावत् अग्रमहिषियोंतक का सब अधिकार ऐसा है. इस तरह जैसे भगवन्तने फरमाया था वैसा संपूर्ण अधिकार वायुभूति अनगारको कहा ॥ ८ ॥ इस तरह अग्निभूतिने जो कहा उस के अर्थ की श्रद्धा, प्रतीति व रुचि वायुभूति अनगार को हुई नहीं और श्रद्धा प्रतीति व रुचि नहीं होने से

पदार्थ नो० नहीं स० श्रद्धा नो० नहीं प० प्रतीत हुआ नो० नहीं रो० रुचा उ० स्थान से उ० उठकर जं०

सूत्र माणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेइत्ता, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—एवं खलु भंते ! मम दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे एवमाइक्खइ भासइ पण्णवइ परूवइ परूवइत्ता, एवं खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्ढीए जाव महाणुभागे. सेणं तत्थ चोत्तीसाए भवणावास सयसहस्साणं तंचेव सव्वं अपरिसेसं भाणियव्वं जाव अग्गमहिसीओ वत्तव्वया सम्मत्ता ॥ से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमादि समणे भगवं महावीरे तच्चं गोयमं वाउभूइं अणगारं एवं वयासी—जण्णं गोयमा ! तव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे

भावार्थ अपने स्थान से उठकर श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास गये. वहां जाकर वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना कर ऐसा बोले अहो भगवन् ! मुझे दूसरे गोतम गोत्रीय अग्निभूति नामक अनगार ऐसा कहते हैं. यावत् प्ररूपते हैं कि चमर नामक असुरेन्द्र महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले हैं. चौत्तीस लाख भुवन के मालीक हैं वगैरह अग्रमहिषियों तक सब संपूर्ण अधिकार कहा और पूछा कि अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? फीर श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने वायुभूति अनगार को ऐसा कहा कि अहो गौतम ! तुम को दूसरे गौतम गोत्रीय अग्निभूति अनगारने ऐसा कहा कि चमरेन्द्र महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले हैं यावत्

शब्दार्थ नमस्कारकर जे॰ जहां त॰ तीसरा गो॰ गौतम वा॰ वायुभूति अ॰ अनगार ते॰ तहां उ॰ आकर त॰ तीसरा गो॰ गौतम वा॰ वायुभूति अ॰ अनगार को ए॰ ऐसा व॰ कहा ए॰ ऐसे ख॰ निश्चय गो॰ गौतम च॰ चमर अ॰ असुरेन्द्र अ॰ असुर राजा म॰ महर्द्धिक तं॰ उसको ए॰ ऐसे स॰ सर्व अ॰ विना पूछे वा॰ कथन ने॰ जानना अ॰ संपूर्ण जा॰ यावत् अ॰ अग्रमहिषी व॰ वक्तव्यता स॰ संपूर्ण ॥ ८ ॥ त॰ तब से॰ वह त॰ तीसरा गो॰ गौतम वा॰ वायुभूति अ॰ अनगार को दो॰ दूसरा गो॰ गौतम अ॰ अग्निभूति अ॰ अनगार ए॰ ऐसे आ॰ कहतेको भा॰ बोलते को प॰ विशेष कहतेको प॰ प्ररूपते को ए॰ यह अर्थ

सूत्र च्छइ २ त्ता, तचं गोयमं वायुभूइं अणगारं एवं वयासी एवं खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्ढीए तंचेव एवं सव्वं अपुट्ठं वागरणं नेयव्वं अपरिसेसं जाव अग्गमहिसीणं वत्तव्वया सम्मत्ता ॥८॥ तएणं से तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे दोच्चस्स गोयमस्स अग्गिभूयस्स अणगारस्स एव माइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्ण-वेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ, नो रोयइ; एयमट्ठं असद्दह-

भावार्थ यावत् वैक्रेय करनेकी इतनी शक्ति है. यावत् अग्रमहिषियोंतकका सब अधिकार ऐसा है. इस तरह जैसे भगवन्तने फरमाया था वैसा संपूर्ण अधिकार वायुभूति अनगारको कहा ॥ ८ ॥ इस तरह अग्निभूतिने जो कहा उस के अर्थ की श्रद्धा, प्रतीति व रुचि वायुभूति अनगार को हुई नहीं और श्रद्धा प्रतीति व रुचि नहीं होने से

शब्दार्थ त० तब से० वह त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार दो० दूसरा गो० गौतम अ० अग्निभूति अ० अनगार की स० साथ जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसे व० वोले ज० यदि भं० भगवन् च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को ब० बलेन्द्र भं० भगवन् व० वैरोचन व० वैरोचनराजा के० कितना म० महर्द्धिक ज० जैसे च० चमर का त० तैसे ब० बलेन्द्र का ने० जानना ण० विशेष सा० अधिक के०

सूत्र से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चेणं गोयमेणं अग्गिभूइणा अणगारेण सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी जइणं भंते चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्डीए जाव एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए। वलीणं भंते ! वइरोयणिंदे वइरोयणराया केमहिड्डीए जाव केवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! बलीणं वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्डीए जहा चमरस्स तहा वलिस्सवि णेयव्वं

भावार्थ की पास गये और वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना कर ऐसा वोले. अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेयरूप करने को शक्तिवंत है तो वलि नामक वैरोचनेन्द्र कितना महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय करनेको शक्तिवंत है ? अहो गौतम ! जैसा चमरेन्द्रका कहा वैसा ही वलि नामक वैरोचनेन्द्र का जानना. विशेष इतना कि यह देव देवियों से कुछ अधिक जम्बूद्वीप भरे, शेप सब पूर्वोक्त जैसे

शब्दार्थ जहां म० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तहां जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसा व० बोले ॥ ९ ॥

सूत्र एवमाइक्खइ ४ । एवं खलु गोयमा! चमरे असुरिंदे असुररायामाहिड्डीए सोचेव सव्वं जाव अग्गमाहिसीओ। सच्चेणं एसमट्ठे, अहंपिणं गोयमा! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि एवं खलु गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया माहिड्ढीए सो चेव बितिओ गमो भाणियव्वो ! जाव अग्गमहिसीओ सच्चेणमेसअट्ठे, सेवं भंते भंते! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समणं भगवं वंदइ वंदइत्ता जेणेव दोच्चे गोयमे अग्गिभूती अणगारे तेणेव; उवागच्छइ उवागच्छइत्ता दोच्चं गोयमं अग्गिभूइं अणगारं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेइ ॥ ९ ॥ तएणं

भावार्थ अग्रमहिषियों तक का सब अधिकार ऐसा है. अहो गौतम ! यह अर्थ सत्य है. और मैं भी ऐसा ही कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं. और यह अर्थ भी सत्य है. अहो भगवन् ! आपका वचन सत्य है ऐसा कहकर वायुभूति अनगार भगवन्त श्री महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर अग्निभूति नामक दूसरे गणधर की पास आये आकर दूसरे गणधर श्री अग्निभूति को वंदना नमस्कार कर कहने लगे कि मैंने आप के वचन सुनकर श्रद्धे नहीं यावत् आप के वचन की प्रतीति की नहीं इसलिये मैं आपकी पुनः पुनः क्षमा याचता हूं ॥ ९ ॥ फीर अग्निभूति अनगार की साथ वायुभूति अनगार श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी

शब्दार्थ त० तब से० वह त० ती॰रा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार दो० दूसरा गो० गौतम अ० अग्निभूति अ० अनगार की स० साथ जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जा० यावत् प० पूजते ए० ऐसे व० बोले ज० यदि भं० भगवन् च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा म० महर्द्धिक जा०यावत् प०समर्थ वि०विकुर्वणा करने को ब०बलेन्द्र भं०भगवन् व० वैरोचन व०वैरोचनराजा के०कितना म० महर्द्धिक ज० जैसे च० चमर का त० तैसे ब० बलेन्द्र का ने० जानना ण० विशेष सा० अधिक के०

सूत्र से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चेणं गोयमेणं आग्गिभूइणा अणगारेण सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी जइणं भंते चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्डीए जाव एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए । बलीणं भंते ! वइरोयणिंदे वइरोयणराया केमहिड्डीए जाव केवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! बलीणं वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्डीए जहा चमरस्स तहा बलिस्सवि णेयव्वं

भावार्थ की पास गये और वंदना नमस्कार यावत् पर्युपासना कर ऐसा बोले. अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेयरूप करने को शक्तिवंत है तो बलि नामक वैरोचनेन्द्र कितना महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय करनेको शक्तिवंत है ? अहो गौतम ! जैसा चमरेन्द्रका कहा वैसा ही बलि नामक वैरोचनेन्द्र का जानना. विशेष इतना कि यह देव देवियों से कुछ अधिक जम्बूद्वीप भरे, शेष सब पूर्वोक्त जैसे

शब्दार्थ

केवल कल्प जं० जंबूद्वीप भा० कहना से० शेष तं० तैसे णि० निर्विशेष णे० जानना णा० नाना प्रकार जा० जानना भ० भवन सा० सामानिक से स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् त० तीसरे गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार वि० विचरते हैं ॥ १० ॥ त० तब दो० दूसरे गो० गौतम अ० अग्निभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त को वं० वंदना कर ए० ऐसा व० बोले ज० यदि ब० बलि व०

सूत्र

णवरं साइरेगं केवलकप्पं जंबूदीवं भाणियव्वं. सेसंतंचेव णिरवसेसं णेयव्वं, णवरं णाणत्तं जाणियव्वं, भवणेहिं, सामाणिएहिं सेवं भंते भंते! त्ति, तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे जाव विहरइ ॥ १० ॥ तएणं से दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ वंदइत्ता एवं वयासी, जइणं भंते ! बली वइरोयणिंदे वइरो-

भावार्थ

जानना. बलि नामक वैरोचनेन्द्र को तीस लाख भुवन व साठ सहस्र सामानिक देवता जानना. अहो भगवन् ! जैसे आप कहते हैं वैसे ही हैं. इस तरह सुनकर वंदना नमस्कार करके श्री वायुभूति अनगार विचरने लगे ॥ १० ॥ पुनः अग्निभूति नामक अनगारने श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार करके ऐसा प्रश्न पूछा कि अहो भगवन् ! बलि नामक वैरोचनेंद्र इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेय रूप करने को समर्थ है तब अहो भगवन् ! धरणेन्द्र नामक नाग कुमारेन्द्र कितना महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय रूप

शब्दार्थ व० वैरोचनेन्द्र व० वैरोचन राजा म० महर्द्धिक प० समर्थ जा० यावत् वि० विकुर्वणा करने को ध० धरणेन्द्र ना० नागकुमारेन्द्र ना० नागकुमार राजा के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम म० महर्द्धिक जा० यावत् त० तहां चो० चौंवालीस भ० भुवन स० लाख छ० छ सा० सामानिक स० सहस्र ता० तेत्तीस ता० त्रायत्रिंशक च० चार लो० लो-

सूत्र यणराया ए महिड्ढीए पभू जाव विउव्वित्तए धरणेणं भंते ! नागकुमारिंदे नाग-कुमारराया केमहिड्ढीए जाव केवइयं चणं पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! महिड्ढीए जाव सेणं तत्थ चोयालीसाए भवणवाससयसहस्साणं छण्हं सामाणिय साहस्सीणं, तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं, छण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं आणियाणं, सत्तण्हं अणीयाहिवईणं, चउवीसाए आयरक्ख-

भावार्थ करने को समर्थ है ? अहो गौतम ! धरण नामक नाग कुमारेन्द्र को ४४ लाख भुवन, छ हजार सामानिकदेव तेत्तीस त्रायत्रिंशक, चार लोकपाल, परिवार सहित छ अग्रमहिषियों, तीन परिषदा, सात आनिक, सात अनिक के अधिपति, चौवीस हजार आत्मरक्षक देव और अन्य भी अनेक प्रकार के देवों की ऋद्धि है. और जैसे काम पीडित पुरुष युवती का निरंतर हस्त ग्रहण कर रखता है या गाडे की नाभी में आरा रहता है वैसे ही नाग कुमार रत्नादिक सार पुद्गलों को ग्रहण कर वैक्रेय बनावे. उस में से बादर पुद्गलों

शब्दार्थ केवल कल्प जं० जंबूद्वीप भा० कहना से० शेष तं० तैसे णि० निर्विशेष णे० जानना णा० नाना प्रकार जा० जानना भ० भवन सा० सामानिक से स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् त० तीसरे गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार वि० विचरते हैं ॥ १० ॥ त० तब दो० दूसरे गो० गौतम अ० अग्निभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त को वं० वंदना कर ए० ऐसा व० बोले ज० यदि ब० बलि व०

सूत्र णवरं साइरेगं केवलकप्पं जंबूदीवं भाणियव्वं, सेसंतंचेव णिरवसेसं णेयव्वं, णवरं णाणत्तं जाणियव्वं, भवणेहिं, सामाणिएहिं सेवं भंते भंते! त्ति, तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे जाव विहरइ ॥ १० ॥ तएणं से दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ वंदइत्ता एवं वयासी, जइणं भंते! बली वइरोयणिंदे वइरो-

भावार्थ जानना. बलि नामक वैरोचनेन्द्र को तीस लाख भुवन व साठ सहस्र सामानिक देवता जानना. अहो भगवन्! जैसे आप कहते हैं वैसे ही हैं. इस तरह सुनकर वंदना नमस्कार करके श्री वायुभूति अनगार विचरने लगे ॥ १० ॥ पुनः अग्निभूति नामक अनगारने श्रमण भगवंत महावीर को वंदना नमस्कार करके ऐसा प्रश्न पूछा कि अहो भगवन्! बलि नामक वैरोचनेंद्र इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेय रूप करने को समर्थ है तब अहो भगवन्! धरणेन्द्र नामक नाग कुमारेन्द्र कितना महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय रूप

शब्दार्थ

दक्षिण का स० सर्व अ० अग्निभूति पु० पूछे उ० उत्तर का स० सर्व वा० वायुभूति पु० पूछे ॥१२॥ भं० भगवन् ति० ऐसे भ० भगवन्त गो० गौतम दो० दूसरा अ० अग्निभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त को वं० वंदना कर न० नमस्कारकर ए० ऐसे व० बोले ज० यदि भं० भगवन् जो० ज्योतिषी राजा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को स० शक्रेन्द्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देव राजा के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को

सूत्र

पुच्छइ, उत्तरिल्ले सव्वे वायुभूई पुच्छइ ॥१२॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे दोच्चे अग्गिभूई अणगारे समणं भगवं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एवं वयासी जइ णं भंते ! जोइसिंदे जोइसराया ए महिड्ढीए जाव एवइयंचणं पभू विउव्वित्तए सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया के महिड्ढीए जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! सक्केणं देविंदे देवराया महिड्ढीए जाव महाणुभागे सेणं बत्तीसाए विमाणावास सय सहस्साणं, चउरासीए

भावार्थ

अग्निभूतिने पुछा है ॥ १२ ॥ पुनः अग्निभूति नामक गणधर प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! जब ज्योतिषीका इन्द्र इतनी ऋद्धिवाला यावत् इतना वैक्रेय कर सकता है तब शक्रेन्द्र कितनी ऋद्धिवाला यावत् कितना वैक्रेय कर सके ? अहो गौतम ! शक्रेन्द्र को बत्तीस लाख विमान, चौरासी हजार सामानिक उस से चौगुने आत्मरक्षक, और अन्य भी परिवार कहा है. वैक्रेय करने की शक्ति वगैरह चमरेन्द्र जैसे

शब्दार्थ कपाल छ० छ अ० अग्रमहिषी स० परिवार सहित ति० तीन प० परिषदा स० सात अनिक स० सात अनिक के अधिपति च० चौवीस आ० आत्मरक्षक देव सा० सहस्र अ० अन्य जा० यावत् वि० विचरते हैं. ॥ ११ ॥ ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी ण० विशेष दा०

सूत्र देव सांहस्सीणं, अन्नेसिंच जाव विहरइ, एवइयंचणं पभू विउव्वित्तए । से जहा नामए जुवइ जुवाणे जाव पभू केवलकप्पं जंबूदीवं दीवं जाव तिरियं संखेज्जे दीव समुद्दे बहूहिं नाग कुमारीहिं जाव विउव्विस्संतिवा । सामाणिय तावत्तीस लोगपाल, अग्गमहिसीओय तहेव जहा चमरस्स णवरं संखेज्जे दीवसमुद्दे भाणियव्वं ॥ ११ ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ वाणमंतर जोइसियावि, णवरं दाहिणिल्ले सव्वे अग्गिभूई

भावार्थ को छोडकर दूसरी वक्त वैक्रेय बनावे और एक लाख योजन का जम्बूद्वीप यावत् तिर्छे संख्याते द्वीप समुद्र को देव देवियों के नविनरूप बनाकर भर देवे. इनके सामानिक, त्रायत्रिंशक, लोकपाल व अग्रमहिषियों का चमरेन्द्र जैसे जानना. इस में संख्याते द्वीप समुद्र पूरे उतने वैक्रेय रूप बनाने की शक्ति है वैसा कहना ॥ ११ ॥ ऐसे ही शेष सब भुवनपति वाणव्यंतर व ज्योतिषि का जानना. इस में इतना अधिक जानना कि उत्तर दिशाके देवता संबंधी प्रश्न वायुभूतिने पूछा है और दक्षिण दिशा संबंधी सब प्रश्न

सूत्र

दक्षिण का स० सर्व अ० अग्निभूति पु० पूछे उ० उत्तर का स० सर्व वा० वायुभूति पु० पूछे ॥१२॥ भं० भगवन् ति० ऐसे भ० भगवन्त गो० गौतम दो० दूसरा अ० अग्निभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त को वं० वंदना कर न० नमस्कारकर ए० ऐसे व० बोले ज० यदि भं० भगवन् जो० ज्योतिषी राजा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को स० शक्रेन्द्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देव राजा के० कितना म० महर्द्धिक जा० यावत् के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को

पुच्छइ, उत्तरिल्ले सव्वे वायुभूई पुच्छइ ॥१२॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे दोच्चे अग्गिभूई अणगारे समणं भगवं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एवं वयासी जइ णं भंते ! जोइसिंदे जोइसराया ए महिड्डीए जाव एवइयंचणं पभू विउव्वित्तए सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया के महिड्डीए जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! सक्केणं देविंदे देवराया महिड्डीए जाव महाणुभागे सेणं बत्तीसाए विमाणावास सय सहस्साणं, चउरासीए

भावार्थ

अग्निभूतिने पुछा है ॥ १२ ॥ पुनः अग्निभूति नामक गणधर प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! जब ज्योतिषीका इन्द्र इतनी ऋद्धिवाला यावत् इतना वैक्रेय कर सकता है तब शक्रेन्द्र कितनी ऋद्धिवाला यावत् कितना वैक्रेय कर सके ? अहो गौतम ! शक्रेन्द्र को बत्तीस लाख विमान, चौरासी हजार सामानिक उस से चौगुने आत्मरक्षक, और अन्य भी परिवार कहा है. वैक्रेय करने की शक्ति वगैरह चमरेन्द्र जैसे

गो० गौतम स० शक्रेन्द्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग व० बत्तीस वि० विमान स० लक्ष च० चौरासी सा० सामानिक सा० सहस्र जा० यावत् च० चार च० चौरासी आ० आत्मरक्षक सा० सहस्र अं० अन्य जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १३ ॥ ज० यदि भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को दे० देवानुप्रिय का अं० अंतेवासी ती० तिष्यक अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत छ०

सामाणिय साहस्सीणं, जाव चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेव साहस्सीणं अण्णेसिंच जाव विहरइ, ए महिड्डीए, जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए, एवं जहेव चमरस्स तहेव भाणियव्वं, णवरं दोकेवलकप्पे जंबूद्दीवे दीवे, अवसेसं तंचेव एसणं गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए णो चेवणं संपत्तीए, विकुव्विसुवा, विकुव्वइवा, विकुव्विस्संतिवा, ॥ १३ ॥ जइणं भंते !

कहना परंतु बहुत देव देवियों के रूप व अन्य अनेक प्रकार के रूप से दो जम्बूद्वीप संपूर्ण भर देवे इतनी शक्ति है परंतु संपत्ति नहीं है. ऐसा किसीने किया नहीं है, करते नहीं हैं और करेंगे भी नहीं ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! शक्रेन्द्र ऐसी ऋद्धिवाले यावत् इतना वैक्रेय रूप करने को शक्तिवंत हैं तब आपका अंतेवासी प्रकृतिभद्रिक यावत् विनीत तिष्यक नामक अनगार निरंतर छठ छठ के तप से आत्मा को भावते हुवे

शब्दार्थ छठ भक्त से अ० अंतर रहित त० तप कर्म से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण अ० आठवर्ष सा० दीक्षा पर्याय पा० पालकर मा० मासकी सं० संलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स० साठ भक्त अ० अनशन छे० छेदकर आ० आलोच कर प० प्रतिक्रमणकर स० समाधि प्राप्त का० काल के अवसर में का० काल करके सो० सौधर्म देवलोक में स० अपने वि० विमान में उ० उपपात

सूत्र सक्के देविंदे देवराया ए महिड्ढीए जाव एवइयं चणं पभूविकुव्वित्तए एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी तीसएनामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए छट्ठं छट्ठेणं आणिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं अट्ठ संवच्छराइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता, सट्ठिभत्ताइं अणसणाए छेदित्ताइं अणसणाए छेदित्ता, आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे का-

भावार्थ पूर्ण आठ वर्ष तक साधु की पर्याय पालकर, एक मास की संलेखना से आत्मा को झोंस कर, साठ भक्त अनशन करके, आलोचना प्रतिक्रमण करके समाधि प्राप्त हुए; और काल के अवसर में काल करके सौधर्म देवलोक में तिष्यक नामक विमान में उपपात सभा की देवशैय्या में देव दूष्य वस्त्र नीचे अंगुल के असंख्यातवे भाग प्रमाण की अवगाहना से शक्रेन्द्र देवेन्द्र के सामानिक देवतापने उत्पन्न हुए; वहां उत्पन्न होकर आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति; श्वासोश्वास पर्याप्ति व भाषा मन पर्याप्ति ऐसी पांच

शब्दार्थ गो० गौतम स० शक्रेन्द्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाव ब० बत्तीस वि० विमान स० लक्ष च० चौरासी सा० सामानिक सा० सहस्र जा० यावत् च० चार च० चौरासी आ० आत्मरक्षक सा० सहस्र अ० अन्य जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १३ ॥ ज० यदि भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा म० महर्द्धिक जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को दे० देवानुप्रिय का अं० अंतेवासी ती० तिष्यक अ० अनगार प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत छ०

सूत्र सामाणिय साहस्सीणं, जाव चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेव साहस्सीणं अण्णेसिंच जाव विहरइ, ए महिड्ढीए, जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए, एवं जहेव चमरस्स तहेव भाणियव्वं, णवरं दोकेवलकप्पे जंबूद्दीवे दीवे, अवसेसं तंचेव एसणं गोयमा ! सक्करस देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए णो चेवणं संपत्तीए, विकुव्विंसुवा, विकुव्वइवा, विकुव्विस्संतिवा, ॥ १३ ॥ जइणं भंते !

कहना परंतु बहुत देव देवियों के रूप व अन्य अनेक प्रकार के रूप से दो जम्बूद्वीप संपूर्ण भर देवे इतनी शक्ति है परंतु संपत्ति नहीं है. ऐसा किसीने किया नहीं है, करते नहीं है और करेंगे भी नहीं ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! शक्रेन्द्र ऐसी ऋद्धिवाले यावत् इतना वैक्रेय रूप करने को शक्तिवंत है तब आपका अंतेवासी प्रकृतिभद्रिक यावत् विनीत तिष्यक नामक अनगार निरंतर छठ छठ के तप से आत्मा को भावते हुवे

शब्दार्थ मनःपर्याप्ति तं० तत्र ती० तिष्यकदेव को पं० पांच प्रकार की प०पर्याप्ति के प०पर्याप्तिके भाव को, ग०गये हुवे सा० सामानिक प० परिपदा में उ० उत्पन्न हुवे दे० देव क० करतल प० जोडकर द० दशनख सि० शिर्पसे आ० आवर्तन म० मस्तक से अं० अंजली करके ज० जय वि० विजय से व० वधाकर ए० ऐसा

सूत्र दिव्वादेवजुत्ती, दिव्वे देवाणुभावे, लद्धे पत्ते आभिसमण्णागए जारिसाणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्डी, देवजुत्ती, दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते आभिसमण्णागए, तारिसियाणं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णो दिव्वादेविड्डी जाव आभिसमण्णागया,जारिसिणं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णो दिव्वादेविड्डि जाव आभिसमण्णागया, तारिसियाणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वादेविड्डी जाव आभिसमण्णागया सेणं भंते तीसए देवे के महिड्ढीए जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे, सेणं तत्थ सयस्स विमाणस्स चउण्हं सामाणिय साहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, सोलसण्हं आयरक्खदेव साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूणं वेमाणियाणं देवाणय जाव विहरइ, ए महि

भावार्थ वगैरा है वैसे ही आप को है. अहो भगवन् ! ऐसा तीसक नामक देवता कितनी ऋद्धिवाला यावत् कितने रूप वैक्रेय करने को समर्थ है ? अहो गौतम ! वह अपने विमान चार हजार सामानिक देवता, चार अग्रमहिपियों, तीन परिपदा, सात अनिक, सात अनिक के अधिपति, सोलह हजार आत्म-

शब्दार्थ सभा में दे० देवशैय्या में दे० देवदूष्य के अंतर में अं० अंगुल के अ० असंख्यातवे भा० भाग मात्र ओ० अवगाहना स० शक्रेन्द्र के दे० देवेन्द्र दे० देवराजा के सा० सामानिक दे० देवपने उ० उत्पन्न हुवा त० तब ती० तिष्यकदेव अ० तुर्त का उ० उत्पन्न हुवा पं० पांच प्रकार की प० पर्याप्ति से प० पर्याप्ति भाव को ग० जावे आ० आहार पर्याप्ति स० शरीर इं० इन्द्रिय आ० श्वासोश्वास पर्याप्ति भा० भाषा

सूत्र लंकिच्चा सोहम्मे कप्पे सयंसि विमाणंसि उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्ज भागमेत्तीए ओगाहणाए, सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणिय देवत्ताए उववण्णे। तएणं तीसए देवे अहुणोव वण्णमेत्ते समाणे पंचविहाए पज्जुत्तीए पज्जात्ति भावं गच्छइ तंजहा आहारपज्जत्ती सरीर इंदिय आणापाणपज्जत्तीए, भासामणपज्जत्तीए। तएणं तं तीसयं देवं पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभावं गयं समाणं सामाणिय परिसोव वण्णया देवया करयल परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावेइत्ता एवं वयासी अहोणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वं देविड्ढी,

भावार्थ पर्याप्ति से पर्याप्त बने. उन पर्याप्त बने हुवे देव को सामानिक परिषदावाले देवोंने हस्तद्वय जोडकर दश नख एकत्रित करके मस्तक को आवर्तन करके "जय-विजय" शब्दों से वधाये. वधाकर ऐसा बोले अहो ! आप देवानुप्रिय को दीव्य देव ऋद्धि, देवद्युति, व देवानुभाव प्राप्त हुवा है. जैसे आप को दीव्यदेव ऋद्धि, द्युति व महानुभाव है वैसे ही शक्रेन्द्र को है; और जैसे शक्रेन्द्र को दीव्य देव ऋद्धि कांति

शब्दार्थ मनःपर्याप्ति तं॰ तत्र ती॰ तिष्यकदेव को पं॰ पांच प्रकार की प॰ पर्याप्ति के प॰ पर्याप्तिके भाव को, ग॰ गये हुवे सा॰ सामानिक प॰ परिषदा में उ॰ उत्पन्न हुवे दे॰ देव क॰ करतल प॰ जोडकर द॰ दशनख सि॰ शिर्षसे आ॰ आवर्तन म॰ मस्तक से अं॰ अंजली करके ज॰ जय वि॰ विजय से व॰ वधाकर ए॰ ऐसा

सूत्र दिव्वादेवजुत्ती, दिव्वे देवाणुभावे, लद्धे पत्ते आभिसमण्णागए जारिसाणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी, देवजुत्ती, दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते आभिसमण्णागए, तारिसियाणं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णो दिव्वादेविड्ढी जाव आभिसमण्णागया, जारिसिणं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णो दिव्वादेविड्ढि जाव आभिसमण्णागया, तारिसियाणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वादेविड्ढी जाव आभिसमण्णागया सेणं भंते तीसए देवे के महिड्ढीए जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे, सेणं तत्थ सयस्स विमाणस्स चउण्हं सामाणिय साहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, सोलसण्हं आयरक्खदेव साहस्सीणं, अण्णेसिंच बहूणं वेमाणियाणं देवाणय जाव विहरइ, ए महि

भावार्थ वगैरह है वैसे ही आप को है. अहो भगवन् ! ऐसा तीसक नामक देवता कितनी ऋद्धिवाला यावत् कितने रूप वैक्रेय करने को समर्थ है ? अहो गौतम ! वह अपने विमान चार हजार सामानिक देवता, चार अग्रमाहिषियों, तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिक के अधिपति, सोलह हजार आत्म-

शब्दार्थ सभा में दे० देवशैय्या में दे० देवदूष्य के अंतर में अं० अंगुल के अ० असंख्यातवे भा० भाग मात्र ओ० अवगाहना स० शक्रेन्द्र के दे० देवेन्द्र दे० देवराजा के सा० सामानिक दे० देवपने उ० उत्पन्न हुवा त० तब ती० तिष्यकदेव अ० तुर्त का उ० उत्पन्न हुवा पं० पांच प्रकार की प० प्रर्याप्ति से प० प्रर्याप्ति भाव को ग० जावे आ० आहार पर्याप्ति स० शरीर इं० इन्द्रिय आ० श्वासोश्वास पर्याप्ति भा० भाषा

सूत्र लंकिच्चा सोहम्मे कप्पे सयंसि विमाणंसि उववायसभाए देवसयाणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्ज भागमेत्तीए ओगाहणाए, सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणिय देवत्ताए उववण्णे ।तएणं तीसए देवे अहुणोव वण्णमेत्ते समाणे पंचविहाए पज्जुत्तीए पज्जत्ति भावं गच्छइ तंजहा आहारपज्जत्ती सरीर इंदिय आणापाणपज्जत्तीए, भासामणपज्जत्तीए। तएणं तं तीसयं देवं पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभावं गयं समाणं सामाणिय परिसोव वण्णया देवया करयल परिग्गाहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावेइत्ता एवं वयासी अहोणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वं देविड्ढी,

भावार्थ पर्याप्ति से पर्याप्त बने. उन पर्याप्त बने हुवे देव को सामानिक परिषदावाले देवोंने हस्तद्वय जोडकर दश नख एकत्रित करके मस्तक को आवर्तन करके "जय-विजय" शब्दों से वधाये. वधाकर ऐसा बोले अहो ! आप देवानुप्रिय को दीव्य देव ऋद्धि, देवद्युति, व देवानुभाव प्राप्त हुवा है. जैसे आप को दीव्यदेव ऋद्धि, द्युति व महानुभाव है वैसे ही शक्रेन्द्र को है; और जैसे शक्रेन्द्र को दीव्य देव ऋद्धि कांति

पदार्थ समर्थ वि० विकुर्वणा करने को स० शक्र के अ० अवशेष सा० सामानिक दे० देव के० कितने म० महर्द्धिक त० तैसे स० सर्व जा० यावत् ए० यह गो० गौतम स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् ति० ऐसे दो० दूसरे गो० गौतम जा० यावत् वि० विचरते हैं ॥ १५ ॥ भं० भगवान् त० तीसरा गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ज० यदि भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा जा० यावत् प० समर्थ वि० विकुर्वणा करनेको ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे०

सूत्र विसए विसयमेत्ते बुइए णोचेवणं संपत्तीए विकुव्विसुवा ३ तावत्तीसया, लोगपाला, अग्गमहिसीणं, जहेव चमरस्स णवरं दो केवलकप्पे जंबूदीवे दीवे अण्णं तंचेव ॥ सेवं भंते भंते त्ति दोच्चे गोयमे जाव विहरइ ॥ १५ ॥ भंते त्ति भगवं तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे समणं भगवं जाव एवं वयासी जइणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया जाव महिड्ढीए एवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए । ईसाणेणं भंते ! देविंदे देव-

भावार्थ शक्र, लोकपाल, अग्रमहिषी का अधिकार चमरेन्द्र जैसे कहना. परंतु ये दो जम्बूद्वीप वैक्रेय रूप से भरने को समर्थ हैं. अहो भगवन् ! आपके वचन वैसे ही हैं ऐसा कहकर अग्निभूति अनगार विचरने लगे ॥ १५ ॥ अब वायुभूति नामक अनगार श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर ऐसे बोले कि अहो भगवन् ! जब शक्रेन्द्र इतनी ऋद्धिवाले हैं यावत् इतने रूप वैक्रेय कर सकते हैं तब ईशा-

शब्दार्थ

व० बोले अ० अहो दे० देवानुप्रिय दि०दीव्य दे० देवऋद्धि दे० देवद्युति दि०दीव्य देवानुभाव ल०लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुवे ॥ १४ ॥ ज० यदि भं० भगवन् ती० तिष्यकदेव म० महर्द्धिक जा० यावत् म०

सूत्र

ड्डीए जाव एवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए, से जहानामए जुवइ जुवाणे हत्थे गेण्हेज्जा, जहेव सक्कस्स तहेव जाव एसणं गोयमा ! तीसयस्स देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुच्चइ, नो चेवणं संपत्तीए विकुव्विसुवा ३ ॥ १४ ॥ जइणं भंते तीसए देवे महिड्ढीए जाव एवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए । सक्करसणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो अवसेसा सामाणिया देवा के महिड्ढीया तहेव सव्वं जाव एसणं गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एगमेगस्स सामाणियस्स देवस्स इमेयारूवे

भावार्थ

रक्षक देव, और बहुत अन्य देवता का स्वामी है और वैक्रेय करने की शक्ति शक्रेन्द्र जितनी है. यह मात्र विषय परंतु इतनी संपत्ति नहीं है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! जब तिष्यक नामक देवता इतना महर्द्धिक यावत् इतने वैक्रेय रूप करने को शक्तिवंत है तब अन्य सामानिक देव कितने महर्द्धिक यावत् कितने वैक्रेय रूप करने को समर्थ हैं ? अहो गौतम ! शक्रेन्द्र के एक २ सामानिक देव तिष्यक देव जितनी ऋद्धिवाले हैं. और वैक्रेय का विषय तीष्यक देव जितना है परंतु इतनी संपत्ति नहीं है. इतने रूप अतीत काल में किये नहीं, वर्तमान में करते नहीं हैं और आगामिक में करेंगे नहीं. उन के त्रायत्रिं-

र्थ ब्रह्मदेवलोक ण० विशेष अ० आठ ए० ऐसे लं० लंतक ण० विशेष सा० अधिक अ० आठ के० संपूर्ण म० महाशुक्र सो० सोलह स० सहस्रार में सा० अधिक सो० सोलह ए० ऐसे पा०

सूत्र सणंकुमाराओ आरद्ध उवरिल्ला, लोगपाला सव्वेवि असंखेज्जे दीवसमुद्दे विकुव्वंति एवं माहिंदेवि, णवरं साइरेगे चत्तारि केवलकप्पे जंबूदीवे दीवे एवं बंभलोएवि, णवरं अट्ठकप्पे ॥ एवं लंतएवि, णवरं साइरेगे अट्ठ केवलकप्पे महासुक्के सोलस

भावार्थ व अन्यदेव हैं. + ऐसेही इनके सामानिक देव, त्रायत्रिंशक, लोकपाल व अग्रमहिषियों असंख्यात द्वीप समुद्र वैक्रेय रूप से भरने को समर्थ हैं. माहेन्द्र चार जम्बूद्वीप से कुछ विशेष वैक्रेयरूप से भरने को समर्थ है, ब्रह्मेन्द्र आठ जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, लांतक साधिक आठ जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, महाशुक्र सोलह जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, सहस्रारेन्द्र साधिक सोलह जम्बूद्वीप भरने हैं. आणत प्राणत बत्तीस जम्बूद्वीप और आरण अच्युत साधिक बत्तीस जम्बूद्वीप भरने को समर्थ हैं. अन्य सब अधिकार पहिले जैसा है परंतु प्रथक् २ ऋद्धि बताते हैं. सौधर्म देवलोक में बत्तीस लाख, ईशान देवलोक में अठा-

+ सनत्कुमार नामक तीसरे देवलोकसे आगे देविओंकि उत्पत्ति नहीं है. तथापि प्रथम देवलोककी अपरिग्रही देवी एकसमयाधिक पल्योपम से दश पल्योपमकी स्थिति वाली बारह वे देवलोक के देवोंको उपभोगमें आती है इससे यहां उसका प्रतिषेध नहीं किया है.

शब्दार्थ ता० त्रायस्त्रिंशक लो० लोकपाल अ० अग्रमहिषी जा०यावत् वि०विकुर्वणा की ॥१८॥ ए०ऐसे स०सनत्कुमार ण० विशेष च० चार के० संपूर्ण जं० जंबूद्वीप अ० अथवा ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात ए० ऐसे सा० सामानिक ता० त्रायस्त्रिंशक लो० लोकपाल अ० अग्रमहिषी अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र स० सर्व वि० विकुर्वे स० सनत्कुमार से उ० उपर के लो० लोकपाल स०सर्व अ०असंख्यात दी० द्वीप समुद्र वि० विकुर्वे ए० ऐसे मा० माहेन्द्र ण० विशेष सा० अधिक च० चार के० संपूर्ण जं० जंबूद्वीप वं०

सूत्र तंचेव ॥ १७ ॥ एवं सामाणिय तावत्तीसग लोगपाल अग्गमहिसीणं जाव एसणं गोयमा ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो, एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए अयंमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए । णो चेवणं संपत्तीए विकुव्विसुवा ॥१८॥ एवं सणंकुमारेवि णवरं चत्तारि केवल कप्पे जंबूद्दीवे दीवे अदुत्तरं चणं, तिरिय मसंखेज्जे ॥ एवं सामाणिय, तावत्तीसग लोगपाल, अग्गमहिसीणं, असंखेज्जे दीवे समुद्दे सव्वे विकुव्वंति

भावार्थ त्रायस्त्रिंशक, लोकपाल, व अग्रमहिषियों का जानना. और वैक्रेय का विषय भी उतना ही जानना. परंतु इतनी संपत्ति नहीं है ॥ १८ ॥ जैसे ईशानेन्द्र का कहा वैसे ही सनत्कुमारेन्द्र का जानना. विशेष इतना कि सनत्कुमार चार जम्बूद्वीप प्रमाण वैक्रेय रूप से भरने को समर्थ है. असंख्यात द्वीप समुद्र भरने की शक्ति है परंतु संपत्ति नहीं है. इस में बारह लाख विमान, बहत्तर हजार सामानिक, चौगुने आत्मरक्षक,

अर्थ ब्रह्मदेवलोक ण० विशेष अ० आठ ए० ऐसे लं० लंतक ण० विशेष सा० अधिक अ० आठ के० संपूर्ण म० महाशुक्र सो० सोलह स० सहस्रार में सा० अधिक सो० सोलह ए० ऐसे पा०

सूत्र सणंकुमाराओ आरद्ध उवरिल्ला, लोगपाला सव्वेवि असंखेज्जे दीवसमुद्दे विकुव्वंति एवं माहिंदेवि, णवरं साइरेगे चत्तारि केवलकप्पे जंबूदीवे दीवे एवं बंभलोएवि, णवरं अट्ठकप्पे ॥ एवं लंतएवि, णवरं साइरेगे अट्ठ केवलकप्पे महासुक्के सोलस

भावार्थ व अन्यदेव हैं. + ऐसेही इनके सामानिक देव, त्रायस्त्रिंशक, लोकपाल व अग्रमहिषियों असंख्यात द्वीप समुद्र वैक्रेय रूप से भरने को समर्थ हैं. माहेन्द्र चार जम्बूद्वीप से कुछ विशेष वैक्रेयरूप से भरने को समर्थ है, ब्रह्मेन्द्र आठ जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, लांतक साधिक आठ जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, महाशुक्र सोलह जम्बूद्वीप भरने को समर्थ है, सहस्रारेन्द्र साधिक सोलह जम्बूद्वीप भरने हैं. आणत प्राणत बत्तीस जम्बूद्वीप और आरण अच्युत साधिक बत्तीस जम्बूद्वीप भरने को समर्थ हैं. अन्य सब अधिकार पहिले जैसा है परंतु पृथक् २ ऋद्धि बताते हैं. सौधर्म देवलोक में बत्तीस लाख, ईशान देवलोक में अठा-

+ सनत्कुमार नामक तीसरे देवलोकसे आगे देविओंकि उत्पत्ति नही है. तथापि प्रथम देवलोककी अपरिग्रही देवी एकसमयाधिक पल्योपम से दश पल्योपमकी स्थिति वाली बारह वे देवलोक के देवोंको उपभोगमें आती हैं इससे यहां उसका प्रतिषेध नहीं किया है.

शब्दार्थ पाणत ण० विशेष व० बत्तीस के० संपूर्ण ए० ऐसे अ० अच्युत में ण० विशेष सा० अधिक व० बत्तीस के० संपूर्ण जं० जंबूद्वीप अ० निश्चय स० वह ए० ऐसे भं० भगवान् त० तीसरे गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनाकर न० नमस्कार कर वि०

सूत्र केवलं सहस्सारे साइरेगे सोलस एवं पाणएवि, णवरं बत्तीस केवलं एवं अच्चुएवि, णवरं साइरेगे बत्तीसं केवलकप्पे जंबूद्दीवे दीवे, अण्णं तं चेव ॥ सेवं भंते भंते ! त्ति तच्चे गोयमे वाउभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ जाव विहरइ

भावार्थ इस लाख, सनत्कुमार में बारह लाख, माहेन्द्र में आठ लाख, ब्रह्मदेवलोक में चार लाख, लांतक में पचास हजार, महाशुक्र में चालीस हजार, सहस्त्रार में छ हजार, आणत प्राणत में चारसो, आरण अच्युत में तीनसो. अब सामानिक देव कहते हैं सौधर्मेन्द्र को चौरासी हजार, ईशानेन्द्र को अस्सी हजार, सनत्कुमारेन्द्र को बहत्तर हजार, माहेन्द्र को सीत्तर हजार, ब्रह्मेन्द्र को साठ हजार, लांतकेन्द्र को पचास हजार, महाशुक्रेन्द्रको चालिस हजार, सहस्रारेन्द्र को तीस हजार, प्राणतेन्द्र को वीस हजार, और अच्युतेन्द्र को दश हजार सामानिक जानना. सामानिक देवता से आत्मरक्षक चौगुने जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं ऐसा कहकर वायुभूति नामक अनगार श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर विचरने

शब्दार्थ विचरने लगे ॥ १९ ॥ त० तब स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर अ० कोई वक्त मो० मोया न० नगरी के नं० नंदन चे० उद्यान से प० निकलकर ब० बाहिर ज० अन्य देश में वि० विचरने लगे॥२०॥ ते० उस काल ते० उस समय में रा० राजगृह न० नगर हो०था व० वर्णनवाला जा० यावत् प० परिपदा प० पूजते ते० उस काल ते० उस समय में ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा सू० सूल पा० हस्त में व० वृषभ वा० वाहन वाले उ० उत्तरार्ध लोक के अ० अधिपति अ० अठावीस वि० विमान स० लक्ष के

सूत्र

॥ १९ ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइं मोयाओ नगरीओ नंदणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता बहिया जणवय विहारं विहरइ ॥ २० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे होत्था वण्णओ जाव परिसा पज्जुवासइ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया सूलपाणी, वसहवाहणे, उत्तरड्ढ-

भावार्थ लगे ॥ १९ ॥ एकदा श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी मोया नामक नगरी के नंदन नामक उद्यान में से विचरने लगे ॥ २० ॥ अब ईशानेन्द्र के पूर्व भव का तामली तापसका अधिकार कहते हैं. उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था. वहां श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी पधारे. परिपदा वंदन करने को आई. उस काल उस समय में हस्त में सूलका आयुध धारन करनेवाले, वृषभ का वाहन वाले, उत्तर के ऊर्ध्व दिशा के स्वामी, अठाइस लाख विमान के अधिपति, रजरहित वस्त्र धारन करनेवाले,

शब्दार्थ माणत ण० विशेप व० वत्तीस के० संपूर्ण ए० ऐसे अ० अच्युत में ण० विशेप सा० अधिक व० वत्तीस के० संपूर्ण जं० जंबूद्वीप अ० निश्चय स० वह ए० ऐसे भं० भगवान् त० तीसरे गो० गौतम वा० वायुभूति अ० अनगार स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनाकर न० नमस्कार कर वि०

सूत्र केवलं सहस्सारे साइरेगे सोलस एवं पाणएवि, णवरं बत्तीस केवलं एवं अच्चुएवि, णवरं साइरेगे वत्तीसं केवलकप्पे जंबूदीवे दीवे, अण्णं तं चेव ॥ सेवं भंते भंते ! त्ति तच्चे गोयमे वाउभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ जाव विहरइ

भावार्थ इस लाख, सनत्कुमार में बारह लाख, माहेन्द्र में आठ लाख, ब्रह्मदेवलोक में चार लाख, लांतक में पचास हजार, महाशुक्र में चालीस हजार, सहस्रार में [illegible] हजार, आणत प्राणत में चारसो, आरण अच्युत में तीनसो. अब सामानिक देव कहते हैं सौधर्मेन्द्र को चौरासी हजार, ईशानेन्द्र को अस्सी हजार, सनत्कुमारेन्द्र को बहत्तर हजार, माहेन्द्र को सीत्तर हजार, ब्रह्मेन्द्र को साठ हजार, लांतकेन्द्र को पचास हजार, महाशुक्रेन्द्रको चालिस हजार, सहस्रारेन्द्र को तीस हजार, प्राणतेन्द्र को वीस हजार, और अच्युतेन्द्र को दश हजार सामानिक जानना. सामानिक देवता से आत्मरक्षक चौगुने जानना. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं ऐसा कहकर वायुभूति नामक अनगार श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर विचरने

पदार्थ

भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनाकर व० बोले अ० अहो भं० भगवन् ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा म० महर्द्धिक ई० ईशान की भं० भगवन् सा० वह दि० दीव्य दे० देवऋद्धि क० कहां ग० गइ क० कहां अ० प्रवेश हुइ गो० गौतम स० शरीर में ग० गइ से० वह के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है स० शरीर में ग० गइ से० वह ज० जैसे कू० कूटागार सा० शाला सि० होवे दु० दोनो बाजु लि० लिप्त गु० गुप्त गु० गुप्तद्वार णि० वायुविना की नि० वायुरहित गंभीर ती० उस कू०

सूत्र

त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी अहोणं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया महिड्ढीए, ईसाणस्सणं भंते ! सा दिव्वा देविड्ढी कहिं गते कहिं अणुप्पविट्ठे? गोयमा ! सरीरंगए ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सरीरंगए? गोयमा ! से जहा नामए कूडागार साला सिया, दुहओ लित्ता, गुत्ता, गुत्तदुवारा णिवाया,

भावार्थ

वंदना नमस्कार कर ऐसा पूछा कि अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र देवताने जो ऐसी महा ऋद्धि बताई थी. वह ऋद्धि पीछी कहां गई ? अहो गौतम ! शरीर में गइ. अहो भगवन् ! किस तरह से यह ऋद्धि शरीरमें गई ? अहो भगवन् ! जैसे कोई कूटागारशाला होवे इस के दोनों पास लीपा हुवा होवे और उस के द्वार भी गुप्त होवे. वायु का संचार इस में नहीं हो सकता होवे. ऐसी कूटागार शाला की बाहिर बहुत जन-समुदाय एकत्रित हुवा होवे और मेघसमुख होता देखकर सब मनुष्यों उस कूटशाला में चले जाने से

शब्दार्थ अ० अधिपति अ० रजरहित व० श्रेष्ट व० वस्त्र ध० पहिनने वाले आ० रहीहुई मा० माला म० मुकुट न० नवा हे० सुवर्ण चा० सुंदर चि० चित्त चं० चंचल कुं० कुंडल वि० अंकित होवे गं० गंडस्थल जा० यावत् द० दशदिशा में उ० उद्योत करते प० प्रकाश करते ई० ईशान देवलोक ई० ईशान व० वडिंशक वि० विमान च० जहां रायप्रसेणी में जा० यावत् दी० दिव्य दे० देव ऋद्धि जा० यावत् जा० जिस दि० दिशिसे पा० आये ता० उसदिशि में प० गये ॥ २१ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ०

सूत्र लोगाहिवई, अट्ठावीस विमाण वास सयसहस्साहिवई, अरयंबरवत्थधरे, आलईय माल मउडे नवहेम चारु चित्तचल चंचल कुंडल विलिहिज्जमाणगंडे जाव दसदिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे, ईसाणेकप्पे, ईसाणवडिंसए विमाणे जहेव रायप्पसेणइज्जे जाव दिव्वं देविड्ढिं जाव जामेव दिसि पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए॥ २१ ॥ भंते !

भावार्थ यथायोग्य स्थान पर माला, मुकुटवाले, नविन सुवर्ण के मनोहर व चित्त समान चंचलकुंडल की रेसायुक्त गंडस्थल वालेयावत् दशोंदिशि में उद्योत करनेवाले ईशानेन्द्र ईशान देवलोक के ईशान वाडिंशक नामक विमान में रहते हुवे वगैरह सब अधिकार रायप्रसेणि सूत्र में जैसे सूर्याभ देवता का कहा, वैसे ही यहां कहना. ऐसी सब ऋद्धि सहित भगवंत को वंदना नमस्कार करने को आये. मनोज्ञ दीव्य देव ऋद्धि, कान्ति, प्रभाव वगैरह गौतमादि साधुओं को बताकर पीछे गये ॥ २१ ॥ उस समय में गौतम स्वामीने श्री भगवन्त को

शब्दार्थ

कूटागार जा० यावत् कू० कूटागार सा० शाला दि० द्रष्टान्त भा० कहना ॥ २२ ॥ ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजाको सा० वह दि० दीव्य दे० देवऋद्धि दे० देवद्युति दे० देवानुभाव कि० किससे ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुई के० कौन ए० यह आ० था० पु० पूर्व भव में कि० कौनसा ना० नाम कि० कौनसा गो० गोत्र क० कौनसे गा० गाव में न० नगर जा० यावत् स० सन्निवेश में कि० क्या द० देकर भो० भोगवकर कि० करके कि० क्या स० समाचर क० किम त० तथारूप स० श्रमण

सूत्र

णिवाय गंभीरा, तीसेणं कूडागारं जाव कूडागार सालादिट्ठंतो भाणियव्वो ॥२२॥ ईसाणेणं भंते ! देविंदे देवरण्णो सा दिव्वा देविड्ढी, दिव्वादेवजुत्ती, दिव्वे देवाणुभावे किण्णा लद्धे किण्णा पत्ते किण्णा अभिसमण्णागए, केवा एस आसि पुव्वभवे, किंणामएवा, किंगोत्तेवा, कयरंसि गामंसिवा नयरंसिवा जाव सण्णिवेसंसिवा, किंवा दच्चा, किंवा भोच्चा, किंवा किच्चा, किंवा समायरित्ता, कस्सवा तहारूवस्स समणस्सवा, माहणस्स वा

भावार्थ

बाहिर कोई नहीं दीखते हैं. इसी दृष्टांत से अहो गौतम ! सब ऋद्धि ईशानेन्द्र के शरीरमें चली गइ॥२२॥ अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र को ऐसी दीव्य देव ऋद्धि, देव कान्ति व ऐसा महानुभाव कैसे प्राप्त हुवा ? वे पूर्व भव में कौन थे, उन का पूर्व भव में नाम क्या था, गोत्र क्या था, किस ग्राम, नगर व सन्निवेश में रहते थे, इनोंने क्या दान दिया, क्या अंत प्रांतादि आहार भोगवा, क्या तप किया, क्या प्रति-

दार्थ मा० माहण की अं० पास ए० एक आ० आर्य ध० धर्म का सु० सुवचन सो० सुनकर नि० अवधारकर ज० जिससे ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की सा० वह दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् अ० सन्मुख हुइ ॥ २३ ॥ गो० गौतम ते० उस समय में इ० इस जं० जंबूद्वीप में भा० भरत क्षेत्र में ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी हो० थी व० वर्णन युक्त त० तहां वा० ताम्रलिप्ती न० नगरी में ता० तामली ना० नाम का मो० मौर्यपुत्र गा० गाथापति हो० था अ० ऋद्धिवंत दि० दिप्त जा० यावत् ब० बहुत मनुष्यों

सूत्र

अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा, निसम्म जण्णं ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागया ? ॥ २३ ॥ एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे तामलिचीनामं णयरी होत्था, वण्णओ । तत्थणं तामलिचीए नयरीए तामलीनामं मोरिय-

भावार्थ लेखनादि समाचारी की, अथवा कौनसे तथारूप श्रमण माहण की पास एकान्त आर्य धर्म श्रवण कर अवधारकर ऐसी ईशानेन्द्र की दीव्य ऋद्धि द्युति वगैरह प्राप्त की ? ॥ २३ ॥ अहो गौतम ! उस काल उस समय में जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भरत क्षेत्र में ताम्रलिप्ती नामक नगरी थी. उस नगरी में मौर्य पुत्र तामली नामक गाथापति रहता था. वह गाथापति बहुत ऋद्धिवंत, दीप्त यावत् अन्य जनों से अपराभूत

शब्दार्थ से अ॰ अपराजित हो॰ था॰ ॥ २४ ॥ त॰ तब त॰ उस मो॰ मौर्यपुत्र ता॰ तामलि गा॰ गाथापति अ॰ कोइ वक्त पु॰ पुर्वरात्रि अ॰ अपरात्रि का॰ वक्त में कु॰ कुटुंब जा॰ चिंता जा॰ करते ए॰ इसरूप अ॰ आत्मचिंतवन जा॰ यावत् स॰ उत्पन्न हुवा अ॰ है पु॰ पूर्व के पो॰ पुराणा सु॰ सुचरितरूप सु॰ अच्छा पराक्रम रूप सु॰ शुभ क॰ कल्याणरूप क॰ किये क॰ कर्म के क॰ कल्याण कारी फ॰ फल वि॰ विशेष जे॰ जिस से अ॰ मैं हि॰ चांदी से सु॰ सुवर्ण से ध॰ धन से ध॰ धान्य से पु॰ पुत्र से प॰ पशु

सूत्र पुत्ते गाहावई होत्था, अड्ढे दित्ते जाव बहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था ॥ २४ ॥

तएणं तस्स मोरियपुत्तस्स तामलिस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि, कुटुंबजागरियं जागरमाणस्स इमेएयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पण्णे, अत्थि तामे पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुप्परिक्कंताणं सुभाणं, कल्लाणाणं, कडाणं कम्माणं, कल्लाणफलवित्तिविसेसो, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि, सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि, पुत्तेहिंच, पसूहिंच वड्ढामि, विउल, धण, कणग

भावार्थ था ॥ २४ ॥ एकदा तामली गाथापति को मध्यरात्रि में कुटुम्ब जागरणा जागते हुवे ऐसा अध्यवसाय हुवा कि मैंने गतकाल में पूर्व जन्म में दानादि सुकृत किये हैं, तपश्चरणादि किये हैं, इस से ऐसे शुभ कल्याणकारी कर्म के अच्छे फल मुझे हो रहे हैं. और इस से मेरे हिरण्य, सुवर्ण, धन, धान्य बढ रहे हैं

शब्दार्थ से व० वृद्धिपाता हूं वि० विपुल ध० धन क० कनक र० रत्न म० मणि मो० मौक्तिक सं० शंख सि० शिला प० प्रवाल र० रक्त र० रत्न सं० विद्यमान सा० अच्छा सा० द्रव्य से अ० अतीव अ० वृद्धिपाता हूं जा० जहांलग मे० मुझे मि० मित्र ना० ज्ञाति नि० स्वजाति सं० संबंधि प० परिवार आ० आदर करते हैं प० अच्छा जाने स० सत्कारकरे स० सन्मानदेवे क० कल्याण कारी मं० मांगलीक दे० देव वि० विनय से चे० ज्ञानवन्त प० पूजते हैं ता० वहांलग मे० मुझ से० श्रेय क० काल पा० प्रभात में र० रजनी

सूत्र रयण, माणि, मोत्तिय संख, सिलप्पवाल, रत्त, रयण, संतसारसावएज्जेणं, अईव अईव आभिवड्ढामि. तं किणं अह पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं जाव कडाणं कम्माणं एगंत सोक्खयं उवेहमाणे विहरामि तं जाव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि, जाव अईव २ आभिवड्ढामि, जावं चमे मित्तानाइ नियग संबंधि परियणो आढाइ परियाणाइ, सक्कारेइ सम्माणेइ, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, विणएणं, चेइयं पज्जुवासेइ, ताव तामे सेयं कल्लं

भावार्थ वैसे ही पुत्र पशु वगैरह से मैं वढरहा हूं. और विपुल धन, कनक, रत्न, मणि, मौक्तिक, शंख, शिला, वगैरह श्रेष्ट द्रव्य मुझे वहुत २ वढरहा है. इस से मैं पूर्व के संचित किये हुवे शुभ कर्मों को एकान्त क्षय करता हुवा विचरता हूं. अब जहांलग मुझे मेरे मित्र, ज्ञाति, संबंधि परिजन आदर देते हैं, स्वामी तरीके मानते हैं, सत्कार करते हैं, सन्मान देते हैं, कल्याणकारी, मांगलीक, देवता समान पूजा करते हैं वहांलग

शब्दार्थ से अ० अपराजित हो० था० ॥ २४ ॥ त० तब त० उस मो० मौर्यपुत्र ता० तामलि गा० गाथापति अ० कोइ वक्त पु० पुर्वरात्रि अ० अपरात्रि का० वक्त में कु० कुटुंब जा० चिंता जा० करते ए० इसरूप अ० आत्मचिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा अ० है पु० पूर्व के पो० पुराणा सु० सुचरितरूप सु० अच्छा पराक्रम रूप सु० शुभ क० कल्याणरूप क० किये क० कर्म के क० कल्याण कारी फ० फल वि० विशेष जे० जिन से अ० मैं हि० चांदी से सु० सुवर्ण से ध० धन से ध० धान्य से पु० पुत्र से प० पशु

सूत्र पुत्ते गाहावई होत्था, अड्ढे दित्ते जाव बहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था ॥ २४ ॥ तएणं तस्स मोरियपुत्तास्स तामलिस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि, कुटुंबजागरियं जागरमाणस्स इमेएयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पण्णे, अत्थि तामे पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुप्परिक्कंताणं सुभाणं, कल्लाणाणं, कडाणं कम्माणं, कल्लाणफलवित्तिविसेसो, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि, सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि, पुत्तेहिंच, पसूहिंच वड्ढामि, विउल, धण, कणग

भावार्थ था ॥ २४ ॥ एकदा तामली गाथापति को मध्यरात्रि में कुटुम्ब जागरणा जागते हुवे ऐसा अध्यवसाय हुवा कि मैंने गतकाल में पूर्व जन्म में दानादि सुकृत किये हैं, तपश्चरणादि किये हैं, इस से ऐसे शुभ कल्याणकारी कर्म के अच्छे फल मुझे हो रहे हैं. और इस से मेरे हिरण्य, सुवर्ण, धन, धान्य बढ रहे हैं

दार्थ पा० प्रणाम प० प्रव्रज्यामें प० प्रवर्तनेको प० प्रवर्तता हुआ ए० इसरूप अ० अभिग्रह अ०ग्रहण करूंगा क० कल्पता है मे० मुझे जा० यावज्जीव छ० छठ भक्त से अ० अंतर रहित त० तप कर्म से उ० ऊर्ध्व वा० बाहु प० करके सू० सूर्याभिमुख आ० आतापनाभूमि में आ० आतापनालेता वि० विचरने को छ० छठ के पारणे में आ० आतापना भूमि से उ० नीकलकर स० स्वयं दा० काष्ट के प० पात्र ग०ग्रहण कर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी में ऊंच नी० नीच म० मध्यम कु० कुल के घ० गृह समुदाय में भि० भिक्षाचरी के

सूत्र आपुच्छित्ता सयमेव दारुमयं पडिग्गहं गहाय मुंडे भवित्ता, पाणामाए पव्वज्जाए, पव्वइत्तए, पव्वइएवियणं समाणे इमं एयारूवं आभिग्गहं आभिगिण्हिस्सामि. कप्पइ मे जावज्जीवाए छटुं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं, उढुं बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए, आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्सावियणं पारणयंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहित्ता, सयमेव दारुमयं पडिग्गहं गहाय तामलित्तीए णयरीए उच्चणीयमज्झिमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडेत्ता

भावार्थ मुझे श्रेय है. इस तरह प्रव्रज्या अंगीकार किये पीछे छठ २ का निरंतर तप करके ऊंचे बाहु से आतापना भूमि में आतापना लेना मुझे श्रेय है. वैसे ही छठ भक्त के पारणे के दिन उस आतापना भूमि से नीकलकर काष्टमय पात्र लेकर ताम्रलिप्ती नगरीमें उच्च, नीच, मध्यम कुलमें बहुत घरोंके समुदाय में फीरकर

शब्दार्थ जा० यावत् ज०सूर्य उदित होते स०स्वयं दा०काष्ट के प०पात्र क०करके वि० विपुल अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम उ० नीपजाकर मि० मित्र णा० ज्ञाति नि० स्वजन सं० संबंधि प०परिवार को आ० आमंत्रणकर तं० उन को अ० अशन पा० पान खा० खाइम सा० स्वादिम व० वस्त्र गं० गंध अ० अलंकार से स० सत्कारकर स० सन्मानदेकर तं० उन की पु० आगे जे० ज्येष्ठ पुत्र को कु० कुटुम्ब में ठा० स्थापकर तं० उन को आ० पूछकर स० स्वयं दा० काष्ट के प० पात्र ग० ग्रहणकर मुं० मुंड होकर

मूल पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते सयमेव दारुमयं पडिग्गहं करेत्ता, विउलं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं उवक्खडावेत्ता, मित्त, णाइ, नियग, सयण, संबंधि, परियणं आमंतेत्ता, तं मित्त, णाइ, नियग, सयण, संबंधि, परियणं विउलेणं असण पाणखाइमं साइमेणं वत्थगंध मल्लालंकारेणय सक्कारेत्ता, सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ नियग संबंधि परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे ठावित्ता, तं मित्त,नाइ, नियग, संबंधि, परियण, जेट्ठपुत्तंच

भावार्थ कलप्रभात में सूर्य का उदय होते स्वयं काष्टमय एक पात्र बनाकर, बहुत अशन, पान, खादिम स्वादिम बनाकर मित्र, ज्ञाति, सगे संबंधी को आमंत्रणा करके और उन मित्रादि वर्ग को अशन, पान, खादिम, स्वादिम वस्त्र, गंध, माला अलंकार वगैरह वस्तु से सत्कार करके उन की सन्मुख ज्येष्ट पुत्र को कुटुम्ब में स्थाप कर और उन मित्र ज्ञाति स्वजन तथा ज्येष्ट पुत्र को पूछकर पीछे स्वयमेव काष्ट मय पात्र को ग्रहण कर मुंड बनकर प्रणाम करने योग्य नाम की प्रव्रज्या अंगीकार करना

शब्दार्थ कर अ० अल्प म० मौंघे अ० अलंकृतकर स० शरीर भो० भोजन वक्त में भो० भोजन का मंडप में सु० शुभासन पे ग० बैठे त० तत्र मि० मित्र णा० ज्ञाति नि० स्वजन सं० संबंधि प० परिवार स० साथ

सूत्र किंयसरीरे, भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए. तएणं मित्तनाइ नियग सयण संबंधि परियणेणं सद्धिं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे वीसाएमाणे परिसाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ॥ जेमिय भुत्तुत्तरागएवियणं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्तं जाव परियणं विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणय सक्कारेइ, सक्कारेइत्ता तस्सेवामित्तनाइ जाव परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे ठावेइ २ त्ता तं मित्तनाइ जाव परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ २त्ता मुंडे भवित्ता, पाणामाए

भावार्थ अल्पभार व बहुत मूल्यवाले आभूषणों से शरीर अलंकृत किया, भोजन तैयार होने पर स्वजन मित्रजन की साथ भोजन मंडप में प्रवेश कर शुभसिंहासनपे बैठकर मित्रादि सब की साथ विपुल निपजाये हुए अशनादि स्वयं आस्वादते व अन्य को परूसते विचर रहे हैं. इस प्रकार जीमकर उपर जो कुच्छ भोगवना था उसे भोगवकर पानी के कुल्ले कर शुद्ध बने. फीर बहुत वस्त्र गंध व मालाअलंकार से आये हुए स्वजनादि का सत्कार सन्मान किया और सब स्वजन मित्र ज्ञाति प्रमुख की सन्मुख ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब में स्थापित किया. फीर ज्ञाति स्वजन व ज्येष्ठ पुत्र को पूछकर मुंड बनकर प्रणाम नाम की प्रवर्ज्या अंगीकार कर

शब्दार्थ लिये अ० विचरना सु० शुद्ध ओदन प० ग्रहणकर ति० तीन स० सात वक्त उ० पानी से प० धोकर त० पीछे आ० आहार करने को त्ति० ऐसा क० करके सं० विचार करे ॥ २५ ॥ सं० विचारकर क० काल पा० प्रभात में जा० यावत् ज० सूर्य उदित होते स० स्वयं दा० काष्ट का प० पात्र का० कराके वि० विपुल अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम उ० नीपजाकर त० पीछे ण्हा० स्नान किया क० पीठीलगाइ क० कोगले किये पा० तीलमसादि किये सु० शुद्ध मं० मांगलीक व० वस्त्र प० पहन

सूत्र सुद्धोदणं पडिग्गहेत्ता, तं तिसत्तक्खुत्तो उदएणं पक्खालेत्ता, तओपच्छा आहारं आहारित्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहइ ॥ २५ ॥ संपेहेइत्ता कल्लं पाउप्पाभायाए जाव जलंते सयमेव दारुमयं पडिग्गहयं कारेइ कारेइत्ता विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेइत्ता, तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे, कयकोउयमंगल पायच्छित्ते, सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवर परिहिए, अप्पमहग्घाभरणालं-

भावार्थ घृत शाकादि रहित शुद्ध ओदन ग्रहण करके फीर उसे इक्कीस वक्त पानी से धोकर उस का आहार करना मुझे श्रेय है ॥ २५ ॥ इस प्रकार का विचार करके सूर्योदय होते काष्टमय पात्र बनवाया और अशन, पान, खादिम व स्वादिम ऐसे चारों आहार निपजाये. पीछे स्नान किया, पीठी प्रमुख का विलेपन किया, पानी के कोगले किये, तिलमसादि शुभ चिन्ह किये और शुद्ध मंगलिक वस्त्र पहिने.

शब्दार्थ कर अ० अल्प म० मोंघे अ० अलंकृतकर स० शरीर भो० भोजन वक्त में भो० भोजन का मंडप में सु० शुभासन पे ग० वैठे त० तत्र मि० मित्र णा० ज्ञाति नि० स्वजन सं० संबंधि प० परिवार स० साथ

सूत्र कियसरीरे, भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए. तएणं मित्तनाइ नियग सयण संबंधि परियणेणं सद्धिं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे वीसाएमाणे परिसाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ ॥ जेमिय भुतुत्तरागएवियणं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्तं जाव परियणं विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणय सक्कारेइ, सक्कारेइत्ता तस्सेवमित्तनाइ जाव परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे ठावेइ २ त्ता तं मित्तनाइ जाव परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ २त्ता मुंडे भवित्ता, पाणामाए

भावार्थ अल्पभार व बहुत मूल्यवाले आभूषणों से शरीर अलंकृत किया, भोजन तैयार होने पर स्वजन मित्रजन की साथ भोजन मंडप में प्रवेश कर शुभसिंहासनपे बैठकर मित्रादि सब की साथ विपुल निपजाये हुए अशनादि स्वयं आस्वादते व अन्य को परुसते विचर रहे हैं. इस प्रकार जीमकर उपर जो कुच्छ भोगवना था उसे भोगवकर पानी के कुल्ले कर शुद्ध बने. फीर बहुत वस्त्र गंध व मालाअलंकार से आये हुए स्वजनादि का सत्कार सन्मान किया और सब स्वजन मित्र ज्ञाति प्रमुख की सन्मुख ज्येष्ट पुत्र को कुटुम्ब में स्थापित किया. फीर ज्ञाति स्वजन व ज्येष्ट पुत्र को पूछकर मुंड बनकर प्रणाम नाम की प्रवर्ज्या अंगीकार कर

शब्दार्थ वि० विपुल अ० असनं पा० पानं खा० खादिम सा० स्वादिम आ० आस्वादते वी० भोगवते प० परुसते प० जीमते वि० विचरतेहैं जे० जीमकर भु० जीमे पीछे आ० आचमन किया चो० शुद्ध हुवे प० बहुत शुद्ध हुवे

सूत्र पव्वज्जाए पव्वइएवियणं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, कप्पइ मे जाव-जीवाए छट्ठं छट्ठेणं जाव आहारित्तए त्तिकट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, अभिगिण्हइत्ता, जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं उड्ढं वाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहे आयावण भूमीए आयावेमाणे विहरइ ॥ २६ ॥ छट्ठस्स वियणं पारणयंसि, आयावण भूमीए पच्चोरुहइ, पच्चोरुहइत्ता, सयमेव दारुमयं पडिग्गहयं गहाय, तामलित्तीए नयरीए उच्चनीय मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुयाणस्स भिक्खायरियाए अडइ, अडइत्ता सुद्धोयणं पडिग्गहेइ २ त्ता तिसत्तखुत्तो उदएणं पक्खालेइ,

भावार्थ ऐसा अभिग्रह किया कि मुझे निरंतर छठ छठ का तप करना कल्पता है. इसतरह अभिग्रह ग्रहण करके ऊंचे बाहु रखकर सूर्याभिमुख आतापना भूमि में आतापना लेते हुवे विचरते हैं ॥ २६ ॥ छठ के पारणे के दिन आतापना भूमि से आकर स्वयमेव काष्ट पात्र लेकर ताम्रलिप्ती नगरी में ऊच नीच व मध्यम कुल के घर समुदाय में भिक्षाचरी के लिये परिभ्रमण करते हैं और शुद्धोदन (पकेहुवे चांवल) लेकर इक्कीस वार

शब्दार्थ

॥ २६ ॥ २७ ॥ से० वह कं० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसा वु० कहा जाता है पा० प्रणाम प० प्रवर्ज्या गो० गौतम पा० प्रणाम प्रवर्ज्या से प० दीक्षित हुवा जं० जिसको ज० जहां पा० देखे तं० उनको इं० इन्द्र खं० कार्तिकेय रु० महादेव सि० व्यंतर वे० वैश्रमण अ० चंडिका को० कोटिक रा० राजा जा० यावत् स० सार्थवाह का० काक सा० श्वान पा० चंडाल उ० ऊंच को पा० देखे उ० ऊंचको प० प्रणामकरे नी० नीच को पा० देखे नी० नीचको प० प्रणामकरे जं० जिसको ज० जैसे पा० देखे ए० उसको त०

सूत्र

पक्खालेइत्ता तओ पच्छा आहारं आहारेइ ॥ २७ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ पाणामाए पव्वज्जा? गोयमा ! पाणामाएणं पव्वजाए पव्वइए समाणे जं जत्थ पासइ तं इंदंवा, खंदंवा, रुद्दंवा, सिवंवा, वेसमणंवा, अज्जंवा, कोट्टाकिरियंवा, रायंवा जाव सत्थवाहंवा; काकंवा, साणंवा, पाणंवा, उच्चं पासइ, उच्चं पणामं करेइ, नीयं पासइ नीयं पणामं करेइ, जं जहा पासइ तस्स तहा पणामं करेइ. से तेणट्ठेणं जाव

भावार्थ

पानी से धोकर उस का आहार करते हैं ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! तामली तापसकी प्रणाम प्रवर्ज्या कैसे कही ? अहो गौतम ! प्रणाम प्रवर्ज्या अंगीकार करनेवाला इन्द्र, स्कंध, रुद्र, शिव, वैश्रमण, चंडिका, कोटिकादि, राजा को, शेठ को, सेनापति, सार्थवाह, काकपक्षी, श्वान, चांडाल को, ऊंचको देखकर ऊंचको प्रणाम करे, नीचको देखकर नीचको प्रणाम करे जिसे जहां देखे उसे वहां प्रणाम करे. इस से अहो गौतम !

शब्दार्थ वि० विपुल अ० असन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम आं० आस्वादते वी० भोगवते प० परसते प० जीमते वि०विचरतेहैं जे० जीमकर भु० जीमे पीछे आ०आचमन किया चो० शुद्ध हुवे प०बहुत शुद्धहुवे

सूत्र पव्वजाए पव्वइएवियणं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं आभिगिण्हइ, कप्पइ मे जाव-जीवाए छट्ठं छट्ठेणं जाव आहारित्तए त्तिकट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, अभिगिण्हइत्ता, जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं आनिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं उड्ढं वाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहे आयावण भूमीए आयावेमाणे विहरइ ॥ २६ ॥ छट्ठस्स वियणं पारणयंसि, आयावण भूमीए पच्चोरुहइ, पच्चोरुहइत्ता, सयमेव दारुमयं पडिग्गहयं गहाय, तामलित्तीए नयरीए उच्चनीय मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुयाणस्स भिक्खायरियाए अडइ, अडइत्ता सुद्धोयणं पडिग्गहेइ २ त्ता तिसत्तखुत्तो उदएणं पक्खालेइ,

भावार्थ ऐसा अभिग्रह किया कि मुझे निरंतर छठ छठ का तप करना कल्पता है. इसतरह अभिग्रह ग्रहण करके ऊंचे बाहु रखकर सूर्याभिमुख आतापना भूमि में आतापना लेते हुवे विचरते हैं ॥ २६ ॥ छठ के पारणे के दिन आतापना भूमि से आकर स्वयमेव काष्ट पात्र लेकर ताम्रलिप्ती नगरी में ऊंच नीच व मध्यम कुल के घर समुदाय में भिक्षाचरी के लिये परिभ्रमण करते हैं और शुद्धोदन (पकेहुवे चांवल) लेकर इक्कीस बार

पदार्थ

उ० उदात्त उ० उत्तम म० महानुभाग त० तपकर्म से सु० सुका भु० भुखा जा० यावत् ध० हड्डी नाडी जा० हुई अ० है जा० जितना मे० मेरा उ० उत्थान क० कर्म व० वल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ता० तहां लग मे० मुझे से० श्रेय क० कल्याण जा० यावत् ज० सूर्य उदीर होते ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी दि० देखकर भ० बोलाकर पा०परिचित गि० गृहस्थ पु० पूर्व संगति प०पीछे के संगति प० दीक्षाके संगति को आ० पुछकर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी को म० मध्य से नि० निकलकर पा०

सूत्र

कम्मणं सुक्के भुक्खे जाव धमणिसंतए जाए, तं अत्थि जामे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे ताव तामे सेयं कल्लं जाव जलंते तामलित्तीए णगरीए दिट्ठा भट्ठेय पासंडत्थेय, गिहत्थेय, पुव्वसंगतिएय, पच्छासंगतिएय, परियायसंगतिएय आपुच्छित्ता तामलित्तीए णयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छित्ता पाओगकुंडियमादीयं उवगरणं दारुमयंच

भावार्थ

मांस रहित नाडियोंवाला हुआ हूं। अब जहां लग मेरे में उत्थान कर्म, वल, वीर्य व पुरुषात्कार पराक्रम है वहां लग सूर्योदय होते ताम्रलिप्ती नगरी में रहनेवाले कि जिन को देखने का वहुत प्रसंग पडा है, जो मेरे भक्त है, पाखण्ड धर्म के आचरण करनेवाले हैं परंतु मेरे परिचय में आये हुवे है, जो गृहस्थ हैं, जो दर्शनाभिलाषी हैं, दीक्षा लीये पहिले जिन की संगति में रहा सो पूर्व संगतिवाले और दीक्षा लिये पीछे जिन की संगति में रहा सो पश्चात् संगतिवाले और अन्य तापसादि कि जो मेरे परिचित हैं उन

शब्दार्थ तेसे प० प्रणामकरे से० वह ते० इसलिये जा० यावत् प० प्रवर्ज्या ॥ २८ ॥ त० तब से० वह ता० तामलि मो० मौर्यपुत्र ते० उस उ० उदार वि०विपुल पं०अनुज्ञा प० ग्रहीहुई बा० अज्ञान त० तप कर्म से सु०सुका भु० भुखा जा० यावत् ध० नाडी हड्डी ज० हुइ हो० था ॥ २९ ॥ त० तब त० उस ता० तामली बा० अज्ञान त०तपस्वी को अ०कोई वक्त पु०रात्रिको अ०अनित्य जा०जागरण जा०जागते को ए०इसरूप अ० आत्मिक चिं० चिंतवन जा० यावत् स० उत्पन्न हुआ अ० मैं इ० इस उ० उदार वि० विपुल जा० यावत्

सूत्र पव्वजा॥२८॥तएणं से तामली मोरियपुत्ते तेणं उरालेणं विपुलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बालतवो कम्मेणं सुके भुक्खे जाव धमणिसंतए, जाएयावि होत्था ॥ २९ ॥ तएणं तस्स तामलिस्स बाल तवस्सिस्स अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि अणिच्च जागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं विपुलेणं जाव उदत्तेणं उत्तमेणं महाणुभागेणं तवो

भावार्थ प्रणाम प्रवर्ज्या कही है ॥ २८ ॥ तब वह तामली मौर्य पुत्र उदार, विपुल, गुरुकी आज्ञा से कराया हुवा, बहुत मान पूर्वक कराया हुवा बाल तप कर्म से शुष्क यावत् रक्त मांस रहित नसोंवाला हुवा ॥ २९ ॥ एकदा मध्यरात्रि में उस तामली मौर्य पुत्र तपस्वी को अनित्य जागरणा जागते हुवे ऐसा अध्यवसाय चिन्तवन उत्पन्न हुवा कि ऐसे उदार, विपुल, उदात्त, उत्तम, व महानुभाग तप कर्म से शुष्क यावत् रक्त-

शब्दार्थ उ० उदात्त उ० उत्तम म० महानुभाग त० तपकर्म से सु० सुका भु० भुखा जा० यावत् ध० हड्डी नाडी जा० हुई अ० है जा० जितना मे० मेरा उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम ता० तहां लग मे० मुझे से० श्रेय क० कल्याण जा० यावत् ज० सूर्य उदीर होते ता० ताम्र लिप्ती न० नगरी दि० देखकर भ० बोलाकर पा०परिचित गि० गृहस्थ पु० पूर्व संगति प०पीछे के संगति प० दीक्षाके संगति को आ० पुछकर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी को म० मध्य से नि० निकलकर पा०

सूत्र कम्मेणं सुक्के भुक्खे जाव धमणिसंतए जाए, तं अत्थि जामे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे ताव ताम सेयं कल्लं जाव जलंते तामलित्तीए णगरीए दिट्ठा भट्ठेय पासंडत्थेय, गिहत्थेय, पुव्वसंगतिएय, पच्छासंगतिएय, परियायसंगतिएय आपुच्छित्ता तामलित्तीए णयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छित्ता पाओगकुंडियमादीयं उवगरणं दारुमयंच

भावार्थ मांस रहित नाडियोंवाला हुवा हूं। अब जहां लग मेरे में उत्थान कर्म, बल, वीर्य व पुरुषात्कार पराक्रम है वहां लग सूर्योदय होते ताम्रलिप्ती नगरी में रहनेवाले कि जिन को देखने का बहुत प्रसंग पडा है, जो मेरे भक्त है, पाखण्ड धर्म के आचरण करनेवाले हैं परंतु मेरे परिचय में आये हुवे है, जो गृहस्थ हैं, जो दर्शनाभिलाषी हैं, दीक्षा लीये पहिले जिन की संगति में रहा सो पूर्व संगतिवाले और दीक्षा लिये पीछे जिन की संगति में रहा सो पश्चात् संगतिवाले और अन्य तापसादि कि जो मेरे परिचित हैं उन

शब्दार्थ

पादुका कुं० कमंडल आ० वगैरह उ० उपकरण दा० काष्ट के प० पात्र ए० एकान्त में ए० रखकर ता० ताम्रलिप्ती नगरी की उ० ईशान कोन में णि० प्रमाण मात्र भूमि आ० देखकर सं० संलेखना झू० झूसणा झू० झूसकर भ० भक्त पा० पानी प० प्रत्याख्याकर पा० पादोपगमन का० काल को अ० नहीं वांछता वि० विचरने को त्ति० ऐसा करके सं० संकल्पकर ॥ ३० ॥ क० काल जा० यावत् ज० सूर्य उदीत होते जा० यावत् आ० पूछकर ता० तामली ए० एकान्त में ए० रखे जा० यावत् भ० भक्त

सूत्र

पडिग्गहयं एगंते एडेत्ता तामलित्तीए णगरीए उत्तर पुरच्छिमे दिसीभाए णियत्तणि-यमंडलं आलिहित्ता संलेहणा झूसणा झूसियस्स भत्तपाण पडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए, त्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहेइत्ता ॥ ३० ॥ कल्लं जाव जलंते जाव आपुच्छइ, आपुच्छइत्ता तामली एगंते एडेइ,

भावार्थ

सब से मीलकर व उन को पूछकर ताम्रलिप्ती नगरी की मध्य में से नीकलकर मेरी पादुका, कमंडल, काष्ट-मय पात्र वगैरह सब को एकान्त में डालकर इस नगरी की ईशान कोन में मेरे शरीर प्रमाण क्षेत्र की मर्यादा करके शरीर दुर्बल होवे वैसी संलेखना झूसणा युक्त भक्त पानी का प्रत्याख्यान करके कालको नहीं वांच्छता हुवा विचरूंगा ॥ ३० ॥ ऐसा विचार कर सूर्योदय होते सब को पूछकर व भंडोपकरण एका-

शब्दार्थ

पा० पानी के प० प्रत्याख्यान कर पा० पादोपगमन से नि० रहा ॥३१॥ ते० उस काल ते० उस समय में ब०वलीचंचा रा०राज्यधानि अ०इन्द्र रहित अ० पुरोहित रहित हो०थी ॥३२॥ त० तत्र ते उस व०वली चंचा रा० राज्यधानि में व० रहने वाले व० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी ता० तामली बा० बाल तपस्वी को ओ० अवधिज्ञान से आ० देखकर अ० अन्योन्य स० तेडाकर ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय व० बलिचंचा रा० राज्यधानी अ० इन्द्र विना की अ० पुरोहित विना की अ० अहो

सूत्र

जाव भत्तपाण पडियाइक्खिए; पाओवगमणं निवण्णे ॥ ३१ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं बलिचंचारायहाणी आणिंदा अपुरोहिया याविहोत्था ॥ ३२ ॥ तएणं तेबलिचं-चारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तामलिं बालतवस्सिं ओ-हिणा आहोयंति आहोयंतित्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेंतित्ता, एवं वयासी एवं

भावार्थ

न्तमें रखकर आहार पानीका प्रत्याख्यान कर काल को नहीं वांच्छता हुवा पादोपगमन संथारा ग्रहण किया ॥ ३१ ॥ उस काल उस समय में वलीचंचा राज्यधानी में इन्द्र काल कर जाने से इन्द्र रहित बनी हुई थी ॥ ३२ ॥ तब वलीचंचा राज्यधानी में रहनेवाले बहुत देव व देवियोंने तामली तापस को संलेखना करते हुवे देखे. और परस्पर बोलने लगे कि अहो देवानुप्रिय ! वलीचंचा राज्यधानी इन्द्र रहित, पुरोहित-रहित है. और हम इन्द्राधीन, इन्द्राधिष्ठित व इन्द्र के आधीन कार्य करनेवाले हैं. और अहो देवानुप्रिय ! ता-

शब्दार्थ पादुका कुं० कमंडल आ० वगैरह उ० उपकरण दा० काष्ट के प० पात्र ए० एकान्त में ए० रखकर ता० ताम्रलिप्ती नगरी की उ० ईशान कोन में णि० प्रमाण मात्र भूमि आ० देखकर सं० संलेखना झू० झूसणा झू० झूसकर भ० भक्त पा० पानी प० प्रत्याख्याकर पा० पादोपगमन का० काल को अ० नहीं वांछता वि० विचरने को त्ति० ऐसा करके सं० संकल्पकर ॥ ३० ॥ क० काल जा० यावत् ज० सूर्य उदीत होते जा० यावत् आ० पूछकर ता० तामली ए० एकान्त में ए० रखे जा० यावत् भ० भक्त

सूत्र पडिग्गहयं एगंते एडेत्ता तामलित्तीए णगरीए उत्तर पुरच्छिमे दिसीभाए णियत्तणियमंडलं आलिहित्ता संलेहणा झूसणा झूसियस्स भत्तपाण पडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए, त्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहेइत्ता ॥ ३० ॥ कल्लं जाव जलंते जाव आपुच्छइ, आपुच्छइत्ता तामली एगंते एडेइ,

भावार्थ सब से मीलकर व उन को पूछकर ताम्रलिप्ती नगरी की मध्य में से नीकलकर मेरी पादुका, कमंडल, काष्टमय पात्र वगैरह सब को एकान्त में डालकर इस नगरी की ईशान कोन में मेरे शरीर प्रमाण क्षेत्र की मर्यादा करके शरीर दुर्बल होवे वैसी संलेखना झूसणा युक्त भक्त पानी का प्रत्याख्यान करके कालको नहीं वांच्छता हुवा विचरूंगा ॥ ३० ॥ ऐसा विचार कर सूर्योदय होते सब को पूछकर व भंडोपकरण एका-

शब्दार्थ

रा० राज्यधानी में ठिं० स्थिति प० संकल्प प० करानेको ॥ ३३ ॥ अ० अन्योन्य की अं० पास ए० यह अर्थ प० सूनकर ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी की म० मध्य से नि० निकले जे० जहां रु० रुचकेन्द्र उ० उत्पातपर्वत ते० तहां उ० आये वे० वैक्रेय स० समुद्घात स० नीकाले जा० यावत् उ० उत्तर वैक्रेय रू० रूप वि० विकुर्वणाकर ता० उस उ० उत्कृष्ट तु० त्वरासे चं० रौद्रगति से ज० अन्यगति सं छे०

सूत्र

ठिइप्पकप्पं पकरावेत्तए त्तिकट्टु,॥ ३ ३॥अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणंति पडिसुणं- तित्ता बलिचंचाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छंति २ त्ता, जेणेव रुयइंद उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छंति, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणंति २ त्ता जाव उत्तर वेउव्वियाइं रूवाइं विकुव्वंति, विकुव्वंतित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए, चवलाए, चंडाए, जयणाए, छेयाए, सीहाए, सिग्घाए, दिव्वाए, उद्धुयाए, देवगईए, तिरियं असंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं म- ज्झं मज्झेणं जेणेव जंबूदीवे दीवे, जेणेव भारहेवासे, जेणेव तामलित्तीए णगरीए,

भावार्थ

चपलतावाली, क्रोध में आकर चले ऐसी रौद्र, अन्य गति का जय करे वैसी, निपुणतावाली, शीघ्र- तावाली, दीव्य, और वस्त्रादिक के उद्धूनपने की देवगति से तिर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र की मध्य में होकर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में ताम्रलिप्ती नामक नगरी में तामली मौर्य पुत्र की पास आये. वहां आकर तामली तपस्वी की उपर, व दिशी विदिशी में खडे रहकर मनोज्ञ दीव्य देव ऋद्धि, मनोज्ञकान्ति, दीव्य

शब्दार्थ दे० देवानुप्रिय इं० इन्द्राधीन इं० इन्द्राधिष्ठित इं० इन्द्राधीन क० कार्य अ० इसलिये दे० देवानुप्रिय ता० तामली बा० बालतपस्वी ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी की ब० बाहिर उ० ईशान कोन में नि० प्रमाण मात्र भूमि आ० देखकर सं० संलेखना झू० झूसकर भ० भक्त पा० पानी प० प्रत्याख्यान कर पा० पादोप गम से णि० रहा तं० उन को से० श्रेय दे० देवानुप्रिय ता० तामलि बा० बालतपस्वी को ब० बलिचंचा

सूत्र खलु देवाणुप्पिया ! बलिचंचारायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हेणं देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा, इंदाहिट्ठिया, इंदाहीण कज्जा, अयंचणं देवाणुप्पिया ! तामली बालतवस्सी तामलित्तीए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए नियत्तणियमंडलं आलिहित्ता संलेहणा झूसणा झूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमणं निवण्णे ॥ तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तामलिं बालतवस्सिं बलिचंचाए रायहाणीए

भावार्थ ली तपस्वीने ताम्रलिप्ती नगरी की बाहिर ईशान कोनमें शरीर प्रमाण क्षेत्र मंडल आलेख कर संलेखना से झूसित भक्तपान का प्रत्याख्यान करके पादोपगमन अनशन किया है. इसलिये तामली तपस्वी को बलिचंचा राज्यधानी में रहनेका संकल्प कराना श्रेष्ठ है ॥ ३३ ॥ परस्पर ऐसे वार्तालाप सुनकर बलिचंचा राज्यधानी की मध्य में से नीकलकर रुचकेन्द्र नाम का उत्पात पर्वत पर आये. वहां आकर वैक्रेय समुद्घात प्रदेश बाहिर नीकालकर उत्तर वैक्रेय रूप बनाये. वैक्रेय रूप बनाकर उत्कृष्ट, आकुलतावाली,

शब्दार्थ

रा० राज्यधानी में ठिं० स्थिति प० संकल्प प० करानेको ॥ ३३ ॥ अ० अन्योन्य की अं० पास ए० यह अर्थ प० सूनकर ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी की म० मध्य से नि० निकले जे० जहां रु० रुचकेन्द्र उ० उत्पातपर्वत ते० तहां उ० आये वे० वैक्रेय स० समुद्घात स० नीकाले जा० यावत् उ० उत्तर वैक्रेय रू० रूप वि० विकुर्वणाकर ता० उस उ० उत्कृष्ट तु० त्वरासे चं० रौद्रगति से ज० अन्यगति से छे०

सूत्र

ठिइप्पकप्पं पकरावेत्तए त्तिकट्टु,॥ ३ ३॥अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणंति पडिसुणंतित्ता बलिचंचाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छंति २ त्ता, जेणेव रुयइंदे उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छंति, वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणंति २त्ता जाव उत्तर वेउव्वियाइं रूवाइं विकुव्वंति, विकुव्वंतित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए, चवलाए, चंडाए, जयणाए, छेयाए, सीहाए, सिग्घाए, दिव्वाए, उद्धुयाए, देवगईए, तिरियं असंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं जेणेव जंबूद्दीवे दीवे, जेणेव भारहेवासे, जेणेव तामलित्तीए णगरीए,

भावार्थ

चपलतावाली, क्रोध में आकर चले ऐसी रौद्र, अन्य गति का जय करे वैसी, निपुणतावाली, शीघ्रतावाली, दीव्य, और वस्त्रादिक के उद्धूनपने की देवगति से तिर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र की मध्य में होकर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में ताम्रलिप्ती नामक नगरी में तामली मौर्य पुत्र की पास आये. वहां आकर तामली तपस्वी की उपर, व दिशी विदिशी में खडे रहकर मनोज्ञ दीव्य देव ऋद्धि, मनोज्ञकान्ति, दीव्य

शब्द निपुनगति सी० सिंहगति सि० शीघ्रगति से दि० दीव्यगति से उ० उद्धूत दे० देवगति से ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र म० मध्य में जे० जहां भा० भरत क्षेत्र जे० जहां ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी जे० जहां ता० तामलि मो० मौर्यपुत्र ते० तहां उ० आकर ता० तामलि बा० बालतपस्वी की उ० उपर स० सर्वदिशा में स० प्रतिदिशा में ठि० रहकर दि० दीव्य दे० देवऋद्धि

सूत्र जेणेव तामली मोरियपुत्ते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छंतित्ता तामलिस्स बालतव-सिस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं ठिच्चा, दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवजुत्तिं, दिव्वं देवाणुभावं, दिव्वं बत्तीसइविहं नट्टविहिं उवदंसंति, उवदंसंतित्ता, तामलिं बालतवस्सिं [illegible] आयाहिणपयाहिणं करंति वंदंति नमंसंति, नमंसंतित्ता, एवं वयासी एवं [illegible]णुप्पिया ? अम्हे बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया, बहवे असुर कुमारा देवाय [illegible] देवाणुप्पिया ! वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो । अम्हाणं देवाणुप्पिया !

अमोलक [illegible] और देवता के बत्तीस प्रकार के नाटक बतलाये. बतलाकर तामली तापस को तीन बार प्रद-[illegible]रके वंदना नमस्कार किया. और ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! हम बलिचंचा राज्यधानी में [र]हने वाले देव व देवियों तुम को वांदते हैं यावत् तुम्हारी पर्युपासना करते हैं. अहो देवानुप्रिय हमारी बलिचंचा राज्यधानी इन्द्र रहित व पुरोहित रहित है. और हम इन्द्राधीन, इन्द्राधिष्टित, व इन्द्राधीन कार्य करने-

शब्दार्थ दे० देवद्युति दे० देवानुभाव दि० दीव्य ब० बत्तीस प्रकार के न० नाटकविधि उ० बताकर ता० तामलि बा० बालतपस्वी को ति० तीनवार आदान प० प्रदक्षिणा क० करे वं० वांदे न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले दे० देवानुप्रिय अ० हम ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी वं० वंदन करते हैं न० नमस्कार करते हैं प० पर्युपासना करते हैं ॥ ३३ ॥ त० तब से० वह ता० तामलि बालतपस्वी ते० उन ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब०

सूत्र बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हेणं देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा, इंदाहिट्ठिया, इंदाहीणकज्जा तं तुब्भेणं देवाणुप्पिया बलिचंचा रायहाणिं आढह, परियाणह, सुमरह, अट्ठंबंधह, निहाणं पकरेह; ठिइप्पकप्पं पकरेह; तएणं तुज्झे कालमासे कालं किच्चा बलिचंचा रायहाणीए उववाज्जिस्सह, तएणं तुब्भे अम्हं इंदा भविस्सइ तएण तुब्भे अम्हेहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरिस्सह॥ ३३॥ तएणं से ता-

भावार्थ वाले हैं. इसलिये अहो देवानुप्रिय ! तुम बलिचंचा राज्यधानी का आदर करो, अच्छी जानो, उस का मन में स्मरण करो, वहां उत्पन्न होने का निदान (नियाणा) करो और वहां रहने का संकल्प करो. इस से तुम वहां से काल के अवसर में काल कर के बलिचंचा राज्यधानी में उत्पन्न होवोगे और हमारी साथ दीव्य भोगोपभोग भोगते हुवे विचरोगे ॥३३॥ इस तरह बलिचंचा राज्यधानी के रहने वाले बहुत असुर

निपुनगति सी० सिंहगति सि० शीघ्रगति से दि० दीव्यगति से उ० उद्धत दे० देवगति से ति० तिर्च्छी अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र म० मध्य में जे० जहां भा० भरत क्षेत्र जे० जहां ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी जे० जहां ता० तामलि मो० मौर्यपुत्र ते० तहां उ० आकर ता० तामलि वा० वालतपस्वी की उ० उपर स० सर्वादिशा में स० प्रतिदिशा में ठि० रहकर दि० दीव्य दे० देवऋद्धि

सूत्र

जेणेव तामली मोरियपुत्ते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छंतित्ता तामलिस्स बालतव-स्सिस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा, दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवजुत्तिं, दिव्वं देवाणु-भावं, दिव्वं बत्तीसइविहं नट्टविहिं उवदंसंति, उवदंसंतित्ता, तामलिं बालतवस्सिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करंति वंदंति नमंसंति, नमंसंतित्ता, एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ? अम्हे बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया, बहवे असुर कुमारा देवाय देवीओय देवाणुप्पिया ! वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो । अम्हाणं देवाणुप्पिया !

भावार्थ

महानुभाव और देवता के बत्तीस प्रकार के नाटक बतलाये. बतलाकर तामली तापस को तीन वार प्रद-क्षिणा करके वंदना नमस्कार किया. और ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! हम बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देव व देवियों तुम को वांदते हैं यावत् तुम्हारी पर्युपासना करते हैं. अहो देवानुप्रिय हमारी बलिचंचा राज्यधानी इन्द्र रहित व पुरोहित रहित है. और हम इन्द्राधीन, इन्द्राधिष्टित, व इन्द्राधीन कार्य करने-

दार्थ

वा० बालतपस्वी से अ० अनादर कराये हुवे अ० अच्छा नहीं जाने हुवे जा० जिस दि० दिशिसे पा० आये ता० उसदिशि में प० पीछेगये ॥ ३६ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में ई० ईशान देवलोक अ० इन्द्र रहित अ० पुरोहित रहित हो० था ॥ ३७ ॥ त० तब से० वह ता० तामली बा० बालतपस्वी ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण स० साठ सहस्रवर्ष प० पर्याय पा० पालकर दो० दोमास की सं० संलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स० वीससहित भ० भक्त शत अ० अनशन छे० छेदकर का० काल के अवसर में का०

सूत्र

रायहाणि वत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तामलिणा बालतवस्सिणा अणाढाइज्जमाणा अपरियाइज्जमाणा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया॥ ३६॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे कप्पे अणिंदे अपुरोहिए यावि होत्था; ॥ ३७॥ तएणं से तामली बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं सट्ठिं वास सहस्साइं परियागं पाउणित्ता दो मासियाए संलेहणाए अत्ताणंझूसित्ता, सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेदित्ता, कालमासे कालं किच्चा

भावार्थ

इस तरह बलिचंचा राज्यधानी में रहने वाले देवता देवियों का कहना तामली तापस ने सुना नहीं वैसे ही अच्छा जाना नहीं इस से वे जहां से आये थे वहां पीछे गये ॥ ३६ ॥ उस काल उस समय में ईशान नामक देवलोक में इन्द्र चवने से वह भी इन्द्र रहित पुरोहित रहित हुवा ॥ ३७ ॥ तामली तापस साठ हजार वर्ष पर्यंत प्रवर्ज्या पालकर, दो मास की संलेखना से आत्मा को झूसकर, एकसो वीस भक्त अनशन

शब्दार्थ वहुतं अ० असुर.कुमार के दे० देव देवी से ए० ऐसे वु० कहते हुवे ए० इस अर्थ को नो० नहीं आ० आदरकरे नो० नहीं प० अच्छा जाने तु० तुष्णित सं० रहे ॥ ३४ ॥ त० तव ते० वे व० बलिचंचा रा० राज्यधानि में व० रहते व० वहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवीं ता० तामलि मो० मोर्यपुत्र को दो० दूसरीवक्त त० तीसरी वक्त ति० तीनवक्त आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करके ॥ ३५ ॥ ता० तामलि

सूत्र मली बालतवस्सी तेहिं बलिचंचारायराणि वत्थव्वेहिं बहुहिं असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय, एवं वुत्तेसमाणे, एयमट्ठं णो आढाइ, णो परियाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ ॥ ॥ ३४ ॥ तएणं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तामलिं मोरियपुत्तं दोच्चंपि तच्चंपि तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ करेइत्ता, जाव अम्हं चणं देवाणुप्पिया ! बलिचंचारायहाणी आणिंदा जाव ठिइप्पकप्पं पकरेह जाव दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तेसमाणे जाव तुसिणीए संचिट्ठइ॥३५॥तएणं ते बलिचंचा-

भावार्थ कुमार देवत देवियोंने जो कहा उस का अज्ञान तपस्या करने वाला तामली तापस ने आदर नहीं किया अच्छा नहीं जाना परंतु मौन रहा ॥ ३४ ॥ पुनः वे असुर कुमार देवताओंने तीन वक्त प्रदक्षिणा कर दो तीन वार वैसा ही कहा कि अहो देवानुप्रिय हम इस बलिचंचा राज्यधानी में रहने वाले देव हैं यावत् तुम वहां उत्पन्न होने का नियाना करो परंतु तामली तापस मौन खडा रहा. ॥ ३५ ॥

शब्दार्थ में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी ता० तामलि बा० बालतपस्वी को का० काल को प्राप्त जा० जानकर ई० ईशान देवलोक में दे० देवेन्द्रपने उ० उत्पन्न हुवा पा० देखकर आ० आसुरक्त कु० कुपित हुवे चं० रौद्ररूप वाले हुवे मि० देदीप्यमान होते ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी के म० मध्य से नि० नीकलकर ता० उस उ० उत्कृष्टगति से जा० यावत् जे० जहां भा० भरत क्षेत्र जे० जहां ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी जे० जहां ता० तामलि बा० बालतपस्वी का स० शरीर तं० तहां उ० आकर

सूत्र

देवीओय तामलिं बालतवस्सिं कालगयं जाणित्ता ईसाणेय कप्पे देविंदत्ताए उववण्णं पासित्ता, आसुरुत्ता कुविया चंडिकिया, मिसिमिसेमाणा बलिचंचाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निगच्छंति, निगच्छंतित्ता, ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव भारहेवासे जेणेव ता. मलित्ती णयरी, जेणेव तामलिस्स बाल तवसिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छंति, उवाग-

भावार्थ देव देवियोंने तामली तपस्वी को काल प्राप्त हुवा जानकर व ईशान देवलोक में इन्द्र बना हुवा देख कर क्रोध में आसुरक्त हुए, कोप में धमधमायमान हुए, अत्यंत द्वेष भाव प्रगट हुवा, और मीसमीस दांत पीसने लगे. फीर बलिचंचा राज्यधानी में से नीकलकर उत्कृष्ट चंडा, चपला, शीघ्र, दीव्य देवगति से ताम्रलिप्ती नगरी के बाहिर तामली तापसका शरीर था वहां आये. और उस का बायां पांव रस्सी से बांधकर तीन

शब्दार्थ

काल करके ई० ईशान क० देवलोक में ई० ईशान वडिंशक विमान में उ० उपपात सभा में दे० देवशैय्या में दे० देवदूष्य वस्त्र के अं० अतर में अं० अंगुलका अं० असंख्यातवा भाग ओ० अवगाहना ई० ईशान दे० देवेन्द्र वि० विरह काल में ई० ईशान देवेन्द्रपने उ० उत्पन्न हुवा ॥ ३८ ॥ त० तब से० वह ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा अ० तुर्त का उत्पन्न पं० पांच प्रकार की प० पर्याप्ति से, पं० पर्याप्त भाव को ग० जावे तं० वह ज० जैसे आ० आहार पर्याप्ति जा० यावत् भा० भाषामनः पर्याप्ति ॥ ३९ ॥ त० तब ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी

सूत्र

ईसाणे कप्पे ईसाणवाडिंसए विमाणे उववाय सभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरियं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणे देविंदे विरहिय कालसमयंसि ईसाण देविंदत्ताए उववण्णे ॥ ३८ ॥ तएणं से ईसाणे देविंदे देवराया अहुणोववण्णे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ तंजहा आहार पज्जत्तीए, जाव भासामन पज्जत्तीए ॥ ३९ ॥ तएणं बलिचंचा रायहाणि वत्थव्वया, बहवे असुरकुमारा देवाय

अर्थ

करके काल के अवसर में काल कर ईशान देवलोक के ईशान वडिंशक नामक विमान की उपपात सभा में देवशैय्या में देवदूष्य वस्त्र की नीचे अंगुल के असंख्यात भाग की अवगाहना से ईशान देवेन्द्र के विरह काल में ईशानेन्द्रपने उत्पन्न हुवे ॥ ३८ ॥ वह तत्काल का उत्पन्न हुवा ईशानेन्द्र आहार पर्याप्ति आदि पांच प्रकार की पर्याप्ति से पर्याप्त हुवा ॥ ३९ ॥ उस समय में बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले बहुत

दार्थ

में व० रहने वाले व० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी ता० तामलि बा० बालतपस्वी को का० काल को माप्त जा० जानकर ई० ईशान देवलोक में दे० देवेन्द्रपने उ० उत्पन्न हुवा पा० देखकर आ० आसुरक्त कु० कुपित हुवे चं० रौद्ररूप वाले हुवे मि० देदीप्यमान होते ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी के म० मध्य से नि० नीकलकर ता० उस उ० उत्कृष्टगति से जा० यावत् जे० जहां भा० भरत क्षेत्र जे० जहां ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी जे० जहां ता० तामलि बा० बालतपस्वी का स० शरीर तं० तहां उ० आकर

सूत्र

देवीओय तामलिं बालतवस्सिं कालगयं जाणित्ता ईसाणेय कप्पे देविंदत्ताए उववण्णं पासित्ता, आसुरुत्ता कुविया चंडिक्किया, मिसिमिसेमाणा बलिचंचाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निगच्छंति, निगच्छंतित्ता, ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव भारहेवासे जेणेव ता- मलित्ती णयरी, जेणेव तामलिस्स बाल तवसिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छंति, उवाग-

भावार्थ

देव देवियोंने तामली तपस्वी को काल माप्त हुवा जानकर व ईशान देवलोक में इन्द्र बना हुवा देख कर क्रोध में आसुरक्त हुए, कोप में धमधमायमान हुए, अत्यंत द्वेष भाव प्रगट हुवा, और मीसमीस दांत पीसने लगे. फीर बलिचंचा राज्यधानी में से नीकलकर उत्कृष्ट, चंडा, चपला, शीघ्र, दीव्य देवगति से ताम्रलिप्ती नगरी के बाहिर तामली तापसका शरीर था वहां आये. और उस का बायां पांव रस्सी से बांधकर तीन

शब्दार्थ

वा० बाये पांव सुं० रस्सी से वं० बांधे वं० बांधकर ति० तीनवार मु० मुख में उ० थुंके उ० थुंककर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी में सिं० सिंघाडे जैसे ति० तीन च० चार च० चच्चर च० चतुर्मुख म० बडा रस्तापर आ० इधर उधर क० करते म० मोटे मोटे स० शब्द से उ० उद्घोषणा करते ए० ऐसा व० बोले से० वह के० कोन ता० तामली बा०बाल तपस्वी स०स्वयं ग०लीया हुवा पा०प्रणाम प्रव्रज्यासे प०दीक्षित के० कोन से० वह ई० ईशान देवलोक में ई० ईशान देवेन्द्र दे० देवराजा ति० ऐसा करके ता० तामली बा० बालतपस्वी का स० शरीर की ही० हीलनाकरे निं० निंदाकरे खिं० विशेष निंदाकरे ग० गर्हा करे

सूत्र

च्छइत्ता, वामे पाए सुंवेणं बंधंति बंधइत्ता, तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुहंति २ त्ता तामलि-त्तीए णयरीए सिंघाडग तिय चउक्क चच्चर चउम्मुह महापह पहेसु आकड्ढविकड्ढि करेमाणा महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयासी सेकेणं भो तामली बालतवस्सी सयं गहियलिंगे पाणामाए पव्वजाए पव्वइए, के सणं से ईसाणे कप्पे ईसाणे देविंदे देवरायातिकट्टु, तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलेंति, निंदंति

भावार्थ

वक्त उस के मुंह में थुंके. थुंककर उस नगरी के सिंघाडे के आकारवाले यावत् बहुत रस्तेवाले चौक में रस्सी से उस के शरीर को घसीटते हुवे लाये. और उद्घोषणा करने लगे कि अहो लोको ! स्वयं मनः कल्पित प्रणाम प्रव्रज्या अंगीकार करनेवाला ऐसा तामली तापस कोन ? ईशान देवलोक में देवतापने

शब्दार्थ अ० अवज्ञाकरे त० तर्जनाकरे ता० ताडनकरे प० कदर्थनाकरे प० दुःखदे आ० इधर उधर क० करे हीं० हीलनाकर जा० यावत् आ० इधर उधर क० करके ए० एकान्त में ए० रखकर दा० जिसदिशि से पा० आये ता० उसदिशि में प० पीछेगये ॥ ४० ॥ त० तब ई० ईशान देवलोक में रहने वाले वे० वैमानिक दे० देव दे० देवी व० बलीचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी से ता० तामलि बा० बालतपस्वी का स० शरीर को हीं० हीलना करने निं० निंदाकरते जा० यावत् आ०इधर उधर की०करते पा०देखकर आ०शीघ्र आसुरक्त जा०यावत् मि० देदीप्यमान होते जे०जहां

सूत्र खिंसंति, गरहंति, अवमण्णंति, तज्जिंति, तालेंति, परिवहेंति, पव्वहेंति, आकड्ढ विकड्ढिं करंति, हीलेत्ता जाव आकड्ढ विकड्ढिंकरेत्ता, एगंते एडंति २ त्ता, जामेवदिसिं पाउब्भूया, तामेवादिसिं पडिगया ॥ ४० ॥ तएणं ते ईसाण कप्पवासी बहवे वेमाणिया देवाय देवीओय बलिचंचा रायहाणि वत्थव्वएहिं, बहूहिं असुरकुमारेहिं, देवेहिय देवीहिय तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलिज्जमाणं, निंदिज्जमाणं, खिंसिज्जमाणं जाव

भावार्थ उत्पन्न हुवा सो कौन ? इस तरह तामली तापस के शरीर की हिलना, निंदा तिरस्कार व गर्हा करनेलगे. अवगणना करने लगे, हस्तादि से ताडना करने लगे, और जात्यादिक की हिलना, विशेष हिलना करने लगे. ऐसा करके उस के शरीर को एकान्त में डालकर जहां से आये थे वहां पीछे चलेगये ॥ ४० ॥ उस समय में ईशान देवलोक में रहनेवाले बहुत देव व देवियोंने बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देव देवी को

शब्दार्थ वा० बाये पांव सुं० रस्सी से बं० बांधे बं० बांधकर ति० तीनवार मु० मुख में उ० थुंके उ० थुंककर ता० ताम्रलिप्ती न० नगरी में सिं० सिंघाडे जैसे ति० तीन च० चार च० चचर च० चतुर्मुख म० बडा रस्तापर आ० इधर उधर क० करते म० मोटे मोटे स० शब्द से उ० उद्घोषणा करते ए० ऐसा व० बोले से० यह के० कोन ता० तामली बा०बाल तपस्वी स०स्वयं ग०लीया हुवा पा०प्रणाम प्रवर्ज्यासे प०दीक्षित के० कोन से० यह ई० ईशान देवलोक में ई० ईशान देवेन्द्र दे० देवराजा ति० ऐसा करके ता० तामली बा० बालतपस्वी का स० शरीर की ही० हीलनाकरे नि० निंदाकरे खि० विशेष निंदाकरे ग० गर्हा करे

सूत्र च्छइत्ता, वामे पाए सुंबेणं बंधंति बंधइत्ता, तिक्खुत्तो मुहे उठ्ठुहंति २ त्ता तामलित्तीए णयरीए सिंघाडग तिय चउक्क चच्चर चउम्मुह महापह पहेसु आकड्ढविकड्ढिं करेमाणा महया महया सद्दणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयासी सेकेणं भो तामली बालतवस्सी सयं गहियलिंगे पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए, के सणं से ईसाणे कप्पे ईसाणे देविंदे देवरायातिकट्टु, तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलेंति, निंदंति

भावार्थ पक्ष उस के मुंह में थुंके. थुंककर उस नगरी के सिंघाडे के आकारवाले यावत् बहुत रस्तेवाले चौक में रस्सी से उस के शरीर को घसीटते हुवे लाये. और उद्घोषणा करने लगे कि अहो लोको ! स्वयं मनः कल्पित प्रणाम प्रवर्ज्या अंगीकार करनेवाला ऐसा तामली तापस कोन ? ईशान देवलोक में देवतापने

शब्दार्थ

पा० आये ता० उसदिशि में प० पीछेगये ॥ ४१ ॥ त० तब से० वह ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा ते० उन ई० ईशान देवलोक निवासी ब० बहुत वे० वैमानिक दे० देव दे० देवी अं० पास ए० यह अर्थ सो०सूनकर नि० अवधार कर आ० असुरक्त जा० यावत् मि० देदीप्यमान त० तहां स० शैयापे ग० गये हुवे ति० त्रिवली भि० भृकुटी सा० चढाकर ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी अ० अधो स० दिशा म० विदिशा को स० देखे ॥ ४२ ॥ त० तब सा० वह ब० बलिचंचा रा० राज्यानी ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे०

सूत्र

जाव एगंते एडंति एडंतित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ ४१ ॥ तएणं से ईसाणे देविंदे देवराया, तेसिं ईसाणकप्पवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय अंतिए एयमट्ठं सोच्चानिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलीयं भिउडिं निडाले साहट्टु बलिचंचा रायहाणिं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोएइ॥४२॥ तएणं सा बलिचंचा रायहाणी ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा अहे सपक्खिं

भावार्थ

लना, निंदा की. फीर आप के शरीर को एकान्त में डालकर अपने २ स्थान पीछे गये ॥ ४१ ॥ फीर ईशान देवलोक में रहनेवाले देव देवियों से ऐसा सुननेसे ईशानेन्द्रने क्रोधित बनकर वहां ईशान देवलोक में शैयया पर बैठे हुए ललाट में भृकुटि चढाकर बलिचंचा राज्यधानी की नीचे, उपर सब दिशा व विदिशिओं में अवलोकन किया ॥ ४२ ॥ इस तरह बलिचंचा राज्यधानी की ऊपर, नीचे, दिशी विदिशिओं में

ई० ईशान देवेन्द्र दे० देवराजा जं० जहां उ० जाकर क० करके तल प०इकठेकर द०दशनख शि० शिर से आ० आवर्तन म० मस्तक से अं० अंजलि करके ज० जयविजय व० वधाकर ए० ऐसा व० बोले दे० देवानुप्रिय व० बलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले व० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी दे० देवानुप्रिय का० काल को प्राप्त जा० जानकर ई० ईशान देवलोक में इं० इंद्रपने उ० उत्पन्न हुवे पा०देखकर आ० शीघ्रअसुरक्त जा० यावत् ए० एकान्त में ए०रखकर जा० यावत् जा० जिसदिशि से

सूत्र

आकड्ढ विकड्ढिं कारमाणं पासंति, पासइत्ता आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव ईसाणे देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छइत्ता, करयल परिग्गहियं दसनहं सिरसा-वत्तं मत्थए अंजलिंकट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावइत्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय देवाणुप्पिए कालगए जाणेत्ता, ईसाणेयकप्पे इंदत्ताए उववण्णे पासेत्ता, आसुरुत्ता

अर्थ

तामली तापस के शरीर की हीलना, निन्दा, खिंसना करते और उन के शरीर को मार्ग में घसीटते हुवे देखा. इस से बहुत क्रोधित बनकर ईशानेन्द्र की पास आये और हस्तद्वय से मस्तक को आवर्तना करके जय विजय शब्द से वधाये. वधाकर ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! आप को काल प्राप्त हुवे व ईशानेन्द्र बने हुवे जानकर बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देव देवियोंने आपका मृतक शरीर की हिं-

शब्दार्थ

पा० आये ता० उसदिशि में प० पीछेगये ॥ ४१ ॥ त० तव से० वह ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा ते० उन ई० ईशान देवलोक निवासी व० वहुत वे० वैमानिक दे० देव दे० देवी अं० पास ए० यह अर्थ सो० सूनकर नि० अवधार कर आ० असुरक्त जा० यावत् मि० देदीप्यमान त० तहां स० शैयापे गं० गये हुवे ति० त्रिवली भि० भृकुटी सा० चढाकर व० वलिचंचा रा० राज्यधानी अ० अधो स० दिशा स० विदिशा को स० देखे ॥ ४२ ॥ त० तव सा० वह व० वलिचंचा रा० राज्धानी ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे०

सूत्र

जाव एगंते एडंति एडंतित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ ४१ ॥ तएणं से ईसाणे देविंदे देवराया, तेसिं ईसाणकप्पवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलीयं भिउडिं निडाले साहट्टु बलिचंचा रायहाणिं अहे सपक्खि सपडिदिसिं समभिलोएइ ॥ ४२ ॥ तएणं सा बलिचंचा रायहाणी ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा अहे सपक्खि

भावार्थ

लना, निंदा की. फीर आप के शरीर को एकान्त में डालकर अपने २ स्थान पीछे गये ॥ ४१ ॥ फीर ईशान देवलोक में रहनेवाले देव देवियों से ऐसा सुननेसे ईशानेन्द्रने क्रोधित बनकर वहां ईशान देवलोक में शैय्या पर बैठे हुए ललाट में भृकुटि चढाकर वलिचंचा राज्यधानी की नीचे, उपर सब दिशा व विदिशिओं में अवलोकन किया ॥ ४२ ॥ इस तरह वलिचंचा राज्यधानी की ऊपर, नीचे, दिशी विदिशिओं में

शब्दार्थ देवराजा अ० अधो स० दिशा स० प्रतिदिशा को स० देखते ते० उस दि० दिव्य प्रभाव से इं० अंगार सारिखा मु०मुर्मुरभूत त०तप्त वेलुकण त०तप्त अग्निसारिखी जा०उत्पन्न हुइ॥४३॥त० तब ते० वे ब०बलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव देवी तं० उस ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी को इं० अग्निभूत जा० यावत् स० समज्योति भूत पा० देखकर भी० डरेहुवे उ० कंपहुवे ता० त्रासेहुवे उ० उद्वेग पायेहुवे सं० भयसे व्याप्त स० सबबाजु आ० दौडे प० विशेष दौडे अ० अन्योन्य

सूत्र सपडिंदिसिं समभिलोइया समाणा तेणं दिव्वप्पभावेणं, इंगालभूया, मुम्मुरभूया छारिभूया, तत्त-कवेल्लुयभूया, तत्तासमजोइभूया जाया यावि होत्था. ॥ ४३ ॥ तएणंते बलिचंचा राय-हाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तं बलिचंचा रायहाणिं इंगालभूयं जाव समजोइभूयं पासंति पासतित्ता भीया उतत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता आधावंति परिधावंति परिधावतित्ता अण्णमण्णस्सकायं समतुरंगेमाणा चिट्ठंति

भावार्थ देखने से उन के दीव्य प्रभाव से वह राज्यधानी अग्नि के अंगार समान, मुर्मुरे समान, राख समान, तप्तरेती समान व अति ऊष्ण अग्नि समान हुई ॥ ४३ ॥ उस समय में बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देवों नगरी को अंगारे समान यावत् अग्नि समान देखकर भयभीत हुवे, कंपनेलगे, उद्वेग करने लगे. इस तरह भयभीत बने हुवे चारों तरफ दौडने लगे और एक २ की काया में प्रवेश करने लगे ॥ ४४ ॥

पदार्थ

की का० काय को स० प्रवश करते चि० रहते हैं ॥ ४४ ॥ त० तब ते० वे ब० बलिचंचा रा० राज्य धानी में व० रहने वाले व० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव दे० देवी ई० ईशान दे० देवेन्द्र को प० कुपित हुवे जा० जानकर ई० ईशान दे० देवेन्द्र दि० दीव्य दे० देवऋद्धि दे० देवद्युति दे० देवानुभाग ते० तेजोलेश्या अ० नहीं सहते हुवे स० सब स० सर्वदिशा में स० प्रतिदिशा में ठि० रहकर क० करके तल द० दशनख सि० शिर्ष से आ० आवर्तन म० मस्तक से अं० अंजलि क० करके ज० जयतिजय से व०

सूत्र

॥ ४९ ॥ तएणं ते बलिचंचा रायहाणि वत्थव्वा बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय ईसाणं देविंदं देवरायं परिकुवियं जाणित्ता ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो तंदिव्वं देविड्ढिं दिव्वदेवजुत्तिं, दिव्वं देवाणुभागं, दिव्वं तेयलेस्सं असहमाणा सव्वे सपक्खि सपडि दिसिं ठिच्चा करयल परिग्गहियं दसनहं सिरसा वत्तं मत्थए अंजलिंकट्टु जएणं विजएणं

भावार्थ

उस समय में बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले असुर कुमार जाति के बहुत देव देवियोंने ईशानेन्द्र को कुपित जानकर उन की ऐसी दीव्य देवर्द्धि, देवद्युति, देवमहानुभाग, और दीव्य तेजोलेश्या नहीं सहन करने से सब दिशी विदिशी में रहकर हस्तद्वय के दश नखों को एकत्रित कर मस्तक से आवर्तना करके जय विजय शब्द से वधाये. और ऐसा बोले—अहो देवानुप्रिय ! आपको प्राप्त

शब्दार्थ देवराजा अ० अधो स० दिशा स० प्रतिदिशा को स० देखते तें० उस दि० दिव्य प्रभाव से इं० अंगार सारिखा मु० मुंमुरभूत त० तप्त वेलुकण त० तप्त अग्निसरिखी जा० उत्पन्न हुई॥४३॥त० तब ते० वे ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव देवी तं० उस ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी को इं० अग्निभूत जा० यावत् स० समज्योति भूत पा० देखकर भी० डरेहुवे उ० कंपेहुवे ता० त्रासेहुवे उ० उद्वेग पायेहुवे सं० भयसे व्याप्त स० सबबाजु आ० दोडे प० विशेष दोडे अ० अन्योन्य

सूत्र सपडिंदिसिं समभिलोइया समाणा तेणं दिव्वप्पभावेणं, इंगालभूया, मुम्मुरभूया छारिभूया, तत्त कवेल्लुयभूया, तत्तासमजोइभूया जाया यात्रिहोत्था. ॥ ४३ ॥ तएणंते बलिचंचा रायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तं बलिचंचा रायहाणिं इंगालभूयं जाव समजोइभूयं पासंति पासतित्ता भीया उतत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता आधावंति परिधावंति परिधावतित्ता अण्णमण्णस्सकायं समतुरंगेमाणा चिट्ठंति

भावार्थ देखने से उन के दीव्य प्रभाव से वह राज्यधानी अग्नि के अंगार समान, मुर्मुरे समान, राख समान, तप्तरेती समान व अति उष्ण अग्नि समान हुई ॥ ४३ ॥ उस समय में बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देवों नगरी को अंगारे समान यावत् अग्नि समान देखकर भयभीत हुवे, कंपनेलगे, उद्वेग करने लगे. इस तरह भयभीत बने हुवे चारों तरफ दौडने लगे और एक २ की काया में प्रवेश करने लगे ॥ ४४ ॥

शब्दार्थ कुमार दे० देव देवी के ए० इस अर्थ म० सम्यक् वि० विनय से भुं० वारंवार खा० खमाते तं० उस दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् ते० तेजोलेश्या प० साहरण करे॥४८॥ त० उस दिन गो० गौतम ते० वे व० बलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले व० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव देवी ई० ईशान दे० देवेन्द्र को आ० आदरकरे जा०यावत् प०पर्युपासना करे ई० ईशान दे० देवेन्द्र की आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहे गो० गौतम ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की सा०

सूत्र असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामिएसमाणे तं दिव्वं देविड्ढिं जाव तेयलेस्सं पडिसाहरइ ॥४६॥ तप्पाभिइंचणं गोयमा ! ते बलि-चंचारायहाणिवत्थव्वा बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय ईसाणं देविंदं देवरायं आढंति जाव पज्जुवासंति ईसाणस्सयरस देविंदस्स देवरण्णो आणा उववाय वयण निद्देसे चिट्ठंति ॥ एवंखलु गोयमा ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी जाव

भावार्थ ईशानेन्द्रने अपनी दीव्य देवर्द्धि यावत् तेजोलेश्या पीछी ले ली ॥ ४६ ॥ उस दिन से बलिचंचा राज्यधानी के असुर कुमार देव ईशानेन्द्रका आदर सत्कार करते हैं यावत् उन की पर्युपासना करते हैं. और उन की आज्ञा, उपपात, वचन व निर्देश में रहते हैं. अहो गौतम ! ईशानेन्द्रने ऐसी दीव्य देवर्द्धि

शब्दार्थ

यथाकर ए० ऐसा व० बोले अ० अहो दे० देवानुप्रिय दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् अ० सन्मुख हुई दि० देखी दे० देवानुप्रिय की दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् ल० लब्ध प०प्राप्त स० सन्मुखहुई खा० खमाते हैं दे० देवानुप्रिय ख० क्षमाकरो तु० तुम्हे ण० नहीं भु० वारंवार ए० ऐसा क० करने को ए० ऐसे स० सम्यक् वि० विनय से भुं० वारंवार खा० खमाते हैं ॥ ४५ ॥ त० तब से० वह ई० ईशान दे० देवेन्द्र ते० उन ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर

सूत्र

बद्धवंति बद्धावतित्ता एवं वयासी अहोणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागया तं दिट्ठाणं देवाणुप्पियाणं दिव्वा देविड्ढी जावलद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, खामेमोणं देवाणुप्पिया ? खमं तुमं देवाणुप्पिया ! खमंतुमरिहंतुणं देवाणुप्पिया ! णाइभुज्जो भुज्जो एवं करणयाएत्तिकट्टु, एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामंति ॥ ४५ ॥ तएणं से ईसाणे देविंदे देवराया तेहिं बलिच्चंचारायहाणि वत्थव्वेहिं बहूहिं

भावार्थ

हुई यावत् सन्मुख ऋद्धि हमने देखी हुई है अहो देवानुप्रिय ! हम आपका अपराध खमाते हैं. तुम हमारा अपराध की क्षमा करो. अहो देवानुप्रिय ! तुम हमारा अपराध क्षमा करने योग्य हो. हम ऐसा कार्य वारंवार नहीं करेंगे. इस तरह समभावसे विनय नम्रता सहित क्षमा मांगने लगे॥४५॥ जब बलिचंचा राज्यधानी में रहनेवाले देवों इस तरह बहुत विनय व नम्रता सहित समभाव से वारंवार खमानेलगे तब

पदार्थ

कुमार दे० देव देवी के ए० इस अर्थ म० सम्यक् वि० विनय से भुं० वारंवार खा० खमाते तं० उस दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् ते० तेजोलेश्या प० साहरण करे॥४८॥ त० उस दिन गो० गौतम ते० वे ब० बलिचंचा रा० राज्यधानी में व० रहने वाले ब० बहुत अ० असुर कुमार दे० देव देवी ई० ईशान दे० देवेन्द्र को आ० आदरकरे जा०यावत् प०पर्युपासना करे ई० ईशान दे० देवेन्द्र की आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहे गो० गौतम ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की सा०

सूत्र

असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामिएसमाणे तं दिव्वं देविड्ढिं जाव तेयलेस्सं पडिसाहरइ ॥४६॥ तप्पाभिइचणं गोयमा ! ते बलि-चंचारायहाणिवत्थव्वा बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय ईसाणं देविंदं देवरायं आढंति जाव पज्जुवासंति ईसाणस्सयस्स देविंदस्स देवरण्णो आणा उववाय वयण निद्देसे चिट्ठंति ॥ एवंखलु गोयमा ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी जाव

भावार्थ

ईशानेन्द्रने अपनी दीव्य देवर्द्धि यावत् तेजोलेश्या पीछी ले ली ॥ ४६ ॥ उस दिन से बलिचंचा राज्यधानी के असुर कुमार देव ईशानेन्द्रका आदर सत्कार करते हैं यावत् उन की पर्युपासना करते हैं. और उन की आज्ञा, उपपात, वचन व निर्देश में रहते हैं. अहो गौतम ! ईशानेन्द्रने ऐसी दीव्य देवर्द्धि

शब्दार्थ

यह दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् अ० सन्मुख हुइ ॥ ४७ ॥ ई० ईशान भं० भगवन् दे० देवेन्द्र की के० कितनी ठि० स्थिति गो० गौतम सा० अधिक दो० दोसागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ४८ ॥ ई० ईशान भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देवराजा ता० उस दे० देवलोक से आ० आयुष्य क्षय से जा० यावत् क० कहां ग० जावेंगे क० कहां उ० उपजेंगे गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि०. सिझेंगे जा० यावत् अं० अंतकरेंगे ॥ ४९ ॥ स० शक्रेन्द्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र का वि० विमान से ई० ईशान का

सूत्र

अभिसमण्णागए ॥ ४७ ॥ ईसाणस्स भंते देविंदस्स देवरण्णो केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! साइरेगाइं दो सागरोवमाणि ठिई प० ॥४८॥ ईसाणेणं भंते ! देविंदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं गच्छहिंति कहिं उववज्जिहिंति गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति जाव अंतं काहिंति ॥ ४९ ॥ सक्कस्सणं भंते !

भावार्थ

यावत् महानुभाव ऐसे प्राप्त किया॥४७॥अहो भगवन्! ईशानेन्द्रकी कितनी स्थिति कही? अहो गौतम! ईशानेन्द्र की दो सागरोपमसे अधिक स्थिति कही ॥४८॥ अहो भगवन्! ईशानेन्द्र आयुष्य का क्षय होने पर कहां उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! ईशानेन्द्र महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होकर सीझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ ४९ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र के विमान से ईशानेन्द्रके विमान क्या ऊंचे व

शब्दार्थ

वि० विमान ई० थोडे उ० ऊंचे ई० थोडे उ० उन्नत ई० ईशान दे० देवेन्द्र के विमान से स० शक्र दे० देवेन्द्र के वि० विमान ई० थोडे नी० नीचे णि० न्यून हं० हां गो० गौतम स० शक्र का स० सर्व ने० जानना से० वह के० कैसे गो० गौतम ज० जैसे क० हथेली सि० होवे दे० देश मे उ० ऊंची उ० उन्नत णी० नीची नि० न्यून से० वह ते० इसलिये ॥ ५० ॥ प० समर्थ भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र ई० ईशान दे०

सूत्र

देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं उच्चयरा ईसिं उण्णयराचेव; ईसाणस्सवा देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं णीययराचेव, ईसिं निण्णयराचेव ? हंता गोयमा ! सक्कस्स तंचेव सव्वं नेयव्वं । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! से जहा नामए करयले सिया देसे उच्चे, देसे उण्णए, देसे णीए, देसे णिण्णे से तेणट्ठेणं ॥ ५० ॥ पभूणं भंते ! सक्के

भावार्थ

उन्नत (गुण में अधिक) हैं ? अथवा ईशानेन्द्र के विमान से शक्रेन्द्र के विमान क्या नीचे या न्युन हैं ? हां गौतम ! शक्रेन्द्र से ईशानेन्द्र के विमान ऊंचे व उन्नत हैं. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! जैसे हस्त का तला क्वचित् देश से ऊंचा, क्वचित् देश से उन्नत, क्वचित् देश से नीचा व क्वचित् देश से न्युन होता है वैसे ही अहो गौतम ! शक्रेन्द्र देवेन्द्र के विमान हैं ॥ ५० ॥ अहो

यह दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् अ० सन्मुख हुइ ॥ ४७ ॥ ई० ईशान भं० भगवन् दे० देवेन्द्र की के० कितनी ठि० स्थिति गो० गौतम सा० अधिक दो० दोसागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ४८ ॥ ई० ईशान भं० भगवन् दे० देवेन्द्र दे० देवराजा ना० उस दे० देवलोक से आ० आयुष्य क्षय से जा० यावत् क० कहां ग० जावेंगे क० कहां उ० उपजेंगे गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि०- सिझेंगे जा० यावत् अं० अंतकरेंगे ॥ ४९ ॥ स० शक्रेन्द्र भं० भगवन् दे० देवेन्द्र का वि० विमान से ई० ईशान का

सूत्र

अभिसमण्णागए ॥ ४७ ॥ ईसाणस्स भंते देविंदस्स देवरण्णो केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! साइरेगाइं दोसागरोवमाणि ठिई प० ॥४८॥ ईसाणेणं भंते ! देविंदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं गच्छहिंति कहिं उववज्जिहिंति गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति जाव अंतं काहिंति ॥ ४९ ॥ सक्करसणं भंते!

भावार्थ

यावत् महानुभाव ऐसे प्राप्त किया॥४७॥अहो भगवन्! ईशानेन्द्र की कितनी स्थिति कही? अहो गौतम! ईशानेन्द्र की दो सागरोपमसे अधिक स्थिति कही ॥४८॥ अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र आयुष्य का क्षय होने पर कहां उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! ईशानेन्द्र महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होकर सीझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ ४९ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र के विमान से ईशानेन्द्रके विमान क्या ऊंचे व

शब्दार्थ

कि० क्या आ० बोलाया अ० विना बोलाया गो० गौतम आ० बोलाया अ० विना बोलाया ॥ ५२ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् स० शक्रेंद्र दे० देवेंद्र ई० ईशान दे० देवेंद्र को स० सब दिशा स० विदिशाएं स० देखने को ज० जैसे पा० आने में त० तैसे दो० दो आ० आलापक ने० जानना ॥ ५३ ॥ प० समर्थ स० शक्र दे० देवेन्द्र ई० ईशान दे० देवेन्द्र की स० साथ आ० आलाप सं० संलाप क० करने को हं० हां प० समर्थ ॥ ५४ ॥ अ० है भं० भगवन् तें० उन स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र को कि० कार्य क०

सूत्र

गोयमा ! आढामाणेवि पभू, अणाढामाणेवि पभू ॥ ५२ ॥ पभूणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणं देविंदं देवरायं सपक्खि सपडिदिसिं समभिलोएत्तए? जहा पाउब्भवणा तहा दोवि आलावगा णेयव्वा ॥ ५३ ॥ पभूणं भंते! सक्के देविंदे देवराया ईसाणेणं देविंदेणं सद्धिं आलावंवा संलावंवा करेत्तए? हंता पभू, जहा पाउब्भवणा॥ ५४॥

भावार्थ

और विना बोलाये हुए भी आने को समर्थ है ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की बाजु पर या उस की दिशी विदिशी में देखने को समर्थ है ? अहो गौतम ! जैसे आने के दो आलापक कहे वैसे ही देखने के दो आलापक जानना ॥ ५३ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की साथ आलाप सलाप करने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की साथ आलाप सलाप करने को समर्थ है. वगैरह आने के दो आलापक जैसे कहना ॥ ५४ ॥ अहो भगवन् ! क्या उन शक्र ईशानेन्द्र देवों को करने

शब्दार्थ देवेन्द्र की अं० पास पा० आने को हं० हां प० समर्थ से० वह भं० भगवन् किं० क्या आ० बोलाया अ० विना बोलाया गो० गौतम आ० बोलाया णो० नहीं अ० विना बोलाया ॥ ५१ ॥ प० समर्थ ई० ईशान दे० देवेंद्र स० शक्र दे० देवराजा की अं० पास पा० आने को हं० हां प० समर्थ से० वह भं० भगवन्

मूल देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ? हंता पभू । से भंते किं आढाभाणे पभू अणाढामाणे पभू ? गोयमा ! आढामाणे पभू, णो अणाढामाणे पभू ॥ ५१ ॥ पभूणं भंते ईसाणे देविंदे देवराया सक्कस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आढामाणे पभू, अणाढामाणे पभू ?

भावार्थ भगवन् ! शक्र देवेन्द्र ईशान देवेन्द्र की पास प्रगट होने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की पास आने को समर्थ है. तब अहो भगवन् ! क्या वह बोलाये हुवे या विना बोलाये हुए आने को समर्थ है ? अहो गौतम ! ईशानेन्द्रकी पास शक्रेन्द्र बोलानेपर आने को समर्थ है परंतु विना बोलाये आने को समर्थ नहीं है ॥ ५१ ॥ अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र शक्रेन्द्र की पास आने को समर्थ है ? हां गौतम ! ईशानेन्द्र शक्रेन्द्र की पास आने को समर्थ है. अहो भगवन् ! वह क्या बोलाये हुए आने को समर्थ है या विना बोलाये हुए आने को समर्थ है ? अहो गौतम ! बोलाये हुए भी आने को समर्थ है,

शब्दार्थ

आ० बोलाया अ० विना बोलाया ॥ ५२ ॥ कि० क्या आ० बोलाया अ० विना बोलाया गो० गौतम आ० बोलाया अ० विना बोलाया ॥ ५२ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् स० शक्रेंद्र दे० देवेंद्र ई० ईशान दे० देवेंद्र को स० सब दिशा स० विदिशाओं स० देखने को ज० जैसे पा० आने में त० तैसे दो० दो आ० आलापक ने० जानना ॥ ५३ ॥ प० समर्थ स० शक्र दे० देवेन्द्र ई० ईशान दे० देवेन्द्र की स० साथ आ० आलाप सं० संलाप क० करने को हं० हां प० समर्थ ॥ ५४ ॥ अ० है भं० भगवन् तें० उन स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र को कि० कार्य क०

सूत्र

गोयमा ! आढामाणेवि पभू, अणाढामाणेवि पभू ॥ ५२ ॥ पभूणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणं देविंदं देवरायं सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोएत्तए? जहा पाउब्भवणा तहा दोवि आलावगा णेयव्वा ॥ ५३ ॥ पभूणं भंते! सक्के देविंदे देवराया ईसाणेणं देविंदेणं सद्धिं आलावंवा संलावंवा करेत्तए ? हंता पभू, जहा पाउब्भवणा॥ ५४॥

भावार्थ

और विना बोलाये हुए भी आने को समर्थ है ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की बाजु पर या उस की दिशी विदिशी में देखने को समर्थ है ? अहो गौतम ! जैसे आने के दो आलापक कहे वैसे ही देखने के दो आलापक जानना ॥ ५३ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की साथ आलाप सलाप करने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की साथ आलाप सलाप करने को समर्थ है. वगैरह आने के दो आलापक जैसे कहना ॥ ५४ ॥ अहो भगवन् ! क्या उन शक्र ईशानेन्द्र देवों को करने

शब्दार्थ करने का हं० हां अ० है से० वह क० क्या प० करे गो० गौतम से० वह स० शक्र दे० देवेन्द्र ई० ईशान दे० देवेन्द्र की अं० पास पा० जावे ई० ईशान दे० देवेन्द्र स० शक्र दे० देवेन्द्र की अं० पास पा० जावे स० शक्र दे० देवेन्द्र दा० दक्षिणार्ध लोक के अ० अधिपति ई० ईशान दे० देवेन्द्र उ० उत्तरार्ध लोकके अ० अधिपति ते० वे अ० अन्योन्य के कि० कार्य क० करने योग्य प० करते हुवे वि० विचरते हैं ॥ ५५ ॥

सूत्र आत्थिणं भंते! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं किच्चाइं करणिज्जाइं? हंता अत्थि, । से कहमियाणिं पकरेइ? गोयमा! ताहे चेवणं से सक्के देविंदे देवराया, ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवइ । ईसाणेवा देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवइ । इति भो सक्का देविंदा देवराया दाहिणड्ढलोगाहिवई । इति भो ईसाणा देविंदा देवराया उत्तरड्ढ लोगाहिवई । इति भो इति भोत्ति, ते अण्णमण्णस्स किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥ ५५ ॥

भावार्थ योग्य कार्य हैं? हां गौतम! उन को कार्य है. अहो भगवन्! वे कैसे करते हैं? अहो गौतम! शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की पास प्रगट होवे. ईशानेन्द्र शक्रेन्द्र की पास प्रगट होवे. और भी शक्रेन्द्र दक्षिणार्ध लोक का अधिपति है और ईशानेन्द्र उत्तरार्ध लोक का आधिपति है. इति भो इति भो ऐसे परस्पर वार्तालाप करते परस्पर के कार्य करते हुवे विचरते हैं ॥ ५५ ॥ अहो भगवन्! शक्रेन्द्र व ईशानेन्द्र को

शब्दार्थ अ० है भं० भगवन् ते० उन स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्रको वि० विवाद स० उत्पन्न होता है हं० हां अ० है से० वह क० क्या इ० उसवक्त प० करे गो० गौतम स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र म० सनत्कुमार दे० देवेन्द्रको म० मनसे चिन्तवना क० करे त० तब से० वह म० सनत्कुमार तं० उन स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र से म० चिन्तवन क० कराये खि० शीघ्र स० शक्र ईशान दे० देवेन्द्र की अं० पास पा० जावे जं० जो से० वह व० कहे त० उन को आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देशमें चि० रहे ॥ ५६ ॥ स० सनत्कु

सूत्र आत्थिणं भंते ! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं विवादा समुप्पज्जंति? हंता आत्थि। से कहमिदाणिं पकरेइ ? गोयमा ! ताहेचेवणं सक्कीसाणा देविंदा देवरायाणो सणंकुमारं देविंदं देवरायं मणसी करेइ, । तएणं से सणंकुमारे देविंदे देवराया तेहिं सक्कीसाणेहिं देविंदेहिं देवराईहिं मणसी कएसमाणे खिप्पामेव सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं अंतियं पाउब्भवंति । जं से वयइ तस्स आणाउववायवयणणिद्दसे चिट्ठंति॥५६॥सणंकुमा-

भावार्थ क्या विवाद उत्पन्न होता है ? हां गौतम ! उन को विवाद उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! विवाद के अवसर में वे क्या करे ? अहो गौतम ! वे दोनों सनत्कुमारेन्द्रकी मनसे चिन्तवना करे. इस तरह उनको चिन्तवना करते हुये जानकर सनत्कुमारेन्द्र शीघ्र शक्रेन्द्र ईशानेन्द्र की पास आवे. और जो वह कहे वैसे उन की आज्ञा, उपपात, वचन व निर्देश में रहे ॥ ५६ ॥ अहो भगवन् ! सनत्कुमारेन्द्र क्या भवसिद्धिक है

शब्दार्थ मार भं० भगवन् किं० क्या भ० भवसिद्धिक अ० अभवसिद्धिक स० समदृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि प० परत्त संसारी अ० अनंत संसारी सु० सुलभबोधि दु० दुर्लभ बोधि आ० आराधिक वि० विराधिक च० चरम अ० अचरम गो० गौतम स० सनत्कुमार दे० देवेन्द्र भ० भवसिद्धिक णो० नहीं अ० अभवसिद्धिक ए० ऐसे स० समदृष्टि प० परत सु० सुलभ बोधि आ० आराधिक च० चरम म० प्रशस्त ने० जानना से० वह के० कैसे भं० भगवन् गो० गौतम स० सनत्कुमार दे० देवेन्द्र ब० बहुत स० साधु स० साध्वी सा०

रेणं भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धिए, अभवसिद्धिए, सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी परित्तससारिए, अणंतसंसारिए, सुलहबोहिए, दुल्लभबोहिए, आराहए, विराहए, चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सणंकुमारेणं देविंदे देवराया भवसिद्धिए णो अभवसिद्धिए, एवं सम्ममिच्छ, परित्त अणंत, सुलहबोहिए दुल्लभबोहिए, आराहए विराहिए चरिमे पसत्थं नेयव्वं ॥ से केणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! सणंकुमारे देविंदे देवराया बहूणं सम-

या अभवसिद्धिक है, सम्यग् दृष्टि है या मिथ्यादृष्टि है, परत संसारी है या अनंत संसारी है, सुलभ बोधी है या दुर्लभ बोधी है, आराधक है या विराधक है और चरिम या अचरिम है ? अहो गौतम ! सनत्कुमारेन्द्र भव सिद्धिक, सम्यग् दृष्टि, परत संसारी, सुलभ बोधी, आराधक व चरिम शरीरी हैं. अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! सनत्कुमारेन्द्र बहुत साधु साध्वी, श्रावक, श्राविका के

शब्दार्थ श्रावक सा० श्राविका का हि० हितका इच्छक सु० सुख का इच्छक प० पथ्य का इच्छक अ० अनुकंपा सहित नि० मोक्ष हि० हित सुख नि० मोक्ष का इच्छक ते० इसलिये गो० गौतम स० सनत्कुमार भ० भवसिद्धिक जा० यावत् नो० नहीं अ० अचरिम ॥ ५७ ॥ स० सनत्कुमार भं० भगवन् दे० देवेन्द्र की के० कितनी ठि० स्थिति प० प्ररूपी स० सात सा० सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ५८ ॥ से० वह भं०

सूत्र णाणं, बहूणं समणीणं, बहूणं सावयाणं, बहूणं सावियाणं हियकामए, सुहकामए, पत्थकामए, आणुकंपिए, निस्सेयसिए, हिय, सुह, निस्सेसकामए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! सणंकुमारेणं भवसिद्धिए जाव णो अचरिमे ॥ ५७ ॥ सणंकुमारस्स भंते ! देविंदस्स देवरण्णो केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्तसागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥५८॥ सेणं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा !

भावार्थ हित के कामी, सुख के कामी, पथ्य के कामी, अनुकम्पावाले, मोक्षके वांच्छक वैसे ही हित, सुख, व मोक्ष के कामी हैं; इसलिये अहो गौतम ! वे समदृष्टि यावत् चरिम शरीरी हैं ॥५७॥ अहो भगवन् सनत्कुमारेन्द्र की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! सनत्कुमारेन्द्र की स्थिति सात सागरोपम की कही ॥ ५८ ॥ अहो भगवन् ! वह सनत्कुमारेन्द्र आयुष्य का क्षय हुवे पीछे वहां से कहां उत्पन्न होवेंगे ? अहो गौतम ! महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होवेंगे सिझेंगे, बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे अब इस उद्देशे में जो आधि-

शब्दार्थ भगवन् ता० उस दे० देवलोक से आ०-आयुष्य क्षय से जा० यावत् क० कहां उ० उपजेगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सिझेगा जा० यावत् अं० अंतकरेगा स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् त्ति० ऐसे ॥ ३ ॥ १ ॥

* * *

सूत्र महाविदेह वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ सेवं भंते भंते त्ति ॥ गाहाओ छट्ठट्ठममासोअद्धअद्ध, मांसो वासाइं अद्ध छम्मासा, तीसग कुरुदत्ताणं, तव भत्त परित्त परियाओ ॥ १ ॥ उच्चत्त विमाणाणं पाउब्भव पेच्छणाय संलावे ॥ किच्चवि वादुप्पत्ती, सणंकुमारेय भवियत्तं ॥२॥ मोया सम्मत्ता ॥ इति तइए सए पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ १ ॥

* * * *

भावार्थ कार कहा है उस का संक्षेप से गाथा द्वारा बतलाते हैं. तिष्यक अनगारने, बेले २ पारणे किये, कुरुदत्त अनगारने तेले तेले पारने किये, तिष्यक अनगार का एक मासका संथारा और कुरुदत्त को १५ दिन का संथारा तिष्यक अनगार को आठ वर्ष की दीक्षा और कुरुदत्त को छ मास की दीक्षा. विमानों की ऊंचाई इन्द्रों का मीलना, इन्द्रों का अवलोकन, इन्द्रों का संभाषण, इन्द्रों का कार्य, इन्द्रों का विवाद, सनत्कुमारेन्द्र द्वारा समाधान और भव्य अभव्य का प्रश्न कहा. यह मोया नामक नगरी का अधिकार समाप्त हुवा. यह तीसरे शतकका प्रथम उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ १ ॥

शब्दार्थ

ते० उस काल ते० उस समय में रा० राजगृह न० नगर हो० था जा० यावत् प०परिषदा प० पर्युपासना करते ॥ * ॥ ते० उस काल ते० उस समय में च० चमर अ० असुरेन्द्र च० चमर चंचा रा० राज्यधानी स० सभा सु० सुधर्मा के च०चमर सी० सिंहासन च० चौसठ सा० सामानिक सा०सहस्र जा०यावत् न० नाट्यविधि उ० बताकर जा० जिसदिशि से पा० आया ता० उसदिशि में प० पीछागया ॥ १ ॥

सूत्र

तेणं कालेणं, तेणं समएणं रायगिहे नयरे होत्था, जाव परिसा पज्जुवासइ, ॥ * ॥ तेणं कालेणं, तेणं समएणं चमरे असुरिंदे असुरराया चमर चंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणिय साहस्सीहिं जाव नट्टविहं उवदंसेत्ता जामेवदिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ १ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे

भावार्थ

प्रथम उद्देशे में देवता की विकुर्वणा का स्वरूप कहा. अब दूसरे उद्देशे में देव की शक्ति का प्रश्न पूछते हैं. उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था. उस के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे. परिषदा आकर सेवा भक्ति करने लगी.॥*॥ उस काल उस समय में चमर नामक असुरेन्द्र असुरदेव के राजा चमर चंचा राज्यधानि में सुधर्मा सभा के चमर नामक सिंहासन पर चौसठ हजार सामानिक देव सहित बैठे हुए थे. श्री श्रमण भगवन्त को राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में बैठे हुवे अवधि ज्ञान से देखकर सब परिवार सहित वंदन करने को आये, यावत्

शब्दार्थ भगवन् ता० उस दे० देवलोक से आ० आयुष्य क्षय से जा० यावत् क० कहां उ० उपजेगा गो० गौतम म० महाविदेह क्षेत्र में सि० सिझेगा जा० यावत् अं० अंतकरेगा स० वह ए० ऐसे भं० भगवन् त्ति० ऐसे ॥ ३ ॥ १ ॥

* * *

सूत्र महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ सेवं भंते भंते त्ति ॥ गाहाओ छट्ठट्ठमासोअद्धअद्ध, मासो वासाइं अद्ध छम्मासा, तीसग कुरुदत्ताणं, तव भत्त परित्त परियाओ ॥ १ ॥ उच्चत्त विमाणाणं पाउब्भव पेच्छणाय संलावे ॥ किंचावि वादुप्पत्ती, सणंकुमारेय भवियत्तं ॥२॥ मोया सम्मत्तो ॥ इति तइए सए पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ १ ॥

* * * *

भावार्थ कार कहा है उस का संक्षेप से गाथा द्वारा बतलाते हैं. तिष्यक अनगारने, बेले २ पारणे किये, कुरुदत्त अनगारने तेले तेले पारने किये; तिष्यक अनगार का एक मासका संथारा और कुरुदत्त को १५ दिन का संथारा तिष्यक अनगार को आठ वर्ष की दीक्षा और कुरुदत्त को छ मास की दीक्षा. विमानों की ऊंचाई इन्द्रों का मीलना, इन्द्रों का अवलोकन, इन्द्रों का संभाषण, इन्द्रों का कार्य, इन्द्रों का विवाद, सनत्कुमारेन्द्र द्वारा समाधान और भव्य अभव्य का प्रश्न कहा. यह मोया नामक नगरी का अधिकार समाप्त हुवा. यह तीसरे शतकका प्रथम उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ १ ॥

पदार्थ

ते० उस काल ते० उस समय में रा० राजगृह न० नगर हो० था जा० यावत् प०परिषदा प० पर्युपासना करते ॥ * ॥ ते० उस काल ते० उस समय में च० चमर अ० असुरेन्द्र च० चमर चंचा रा० राज्यधानी स० सभा सु० सुधर्मा के च०चमर सी० सिंहासन च० चौसठ सा० सामानिक सा०सहस्र जा०यावत् न० नाट्यविधि उ० बताकर जा० जिसदिशि से पा० आया ता० उसदिशि में प० पीछागया ॥ १ ॥

सूत्र

तेणं कालेणं, तेणं समएणं रायगिहे नयरे होत्था, जाव परिसा पज्जुवासइ, ॥ * ॥ तेणं कालेणं, तेणं समएणं चमरे असुरिंदे असुरराया चमर चंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणिय साहस्सीहिं जाव नट्टविहिं उवदंसेत्ता जामेवदिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए ॥ १ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे

भावार्थ

प्रथम उद्देशे में देवता की विकुर्वणा का स्वरूप कहा. अब दूसरे उद्देशे में देव की शक्ति का प्रश्न पूछते हैं. उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था. उस के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे. परिषदा आकर सेवा भक्ति करने लगी.॥*॥ उस काल उस समय में चमर नामक असुरेन्द्र असुरदेव के राजा चमर चंचा राज्यधानि में सुधर्मा सभा के चमर नामक सिंहासन पर चौसठ हजार सामानिक देव साहित बैठे हुए थे. श्री श्रमण भगवन्त को राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में बैठे हुवे अवधि ज्ञान से देखकर [redacted] परिवार साहित वंदन करने को आये, यावत्

शब्दार्थ

भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदनाकर न० नमस्कारकर ए० ऐसे व० बोले अ० है भं० भगवन् इ० इस र० रत्नप्रभा पृथ्वी की अ० नीचे अ० असुर कुमार देव प० रहते हैं गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० ऐसे जा० यावत् अ० नीचे स० सातवी पु० पृथ्वी की सो० सौधर्म क० देवलोक की अ० नीचे जा० यावत् ई० ईषत्प्रागभार पृं० पृथ्वी की अ० असुर कुमार दे० देव प० रहते हैं णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ २ ॥ से० वे क० किस

सूत्र

समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एवं वयासी अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसंते, ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे. एवं जाव अहे सत्तमाए पुढवीए, सोहम्मस्स कप्पस्स अहे जाव अत्थिणं भंते ! ईसिप्पभाए पुढवीए असुरकुमारा देवा परिवसंति ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥२॥ से कहिं

भावार्थ

बत्तीस प्रकार के नाटक बताकर जहां से आये थे वहां पीछे गये ॥ १ ॥ उस समय में श्री गौतम स्वामीने श्रमण भगवंत श्रीमहावीर को वंदना नमस्कारकर ऐसा प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! असुर कुमार जाति के देव क्या रत्नप्रभा पृथ्वी की नीचे रहते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! क्या वे दूसरी, तीसरी यावत् सातवी पृथ्वी की नीचे रहते हैं अथवा सौधर्म देवलोक यावत् ईषत् प्राग्भार पृथ्वी की नीचे रहते हैं ! अहो गौतम ? यह अर्थ योग्य नहीं है. ॥ २ ॥ जब अहो

शब्दार्थ स्थान भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव प० रहते हैं गो० गौतम इ० इस र०रत्नप्रभा पु०पृथ्वी का अ० असी उ० उत्तर जो० योजन स० लाख बा० जाडपने ए० ऐसे अ० असुर कुमारदेव व० वक्तव्यता जा० यावत् दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगते वि० विचरते हैं ॥ ३ ॥ अ० है भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव अ० अधोगति में वि० विषय हं० हां अ० है के० कितना भं० भगवन् अ०

मूत्र खाइणं भंते ! असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स, बाहल्लाए, एवं असुर देव वत्तव्वयाए, जाव दिव्वाइं भोग भोगाइं भुंजमांणा विहरंति ॥३॥ अत्थिणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गति

भावार्थ भगवन् ! वे असुर कुमार कहां रहते हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है. इस में एक हजार उपर व एक हजार नीचे छोड कर एक लाख अठ्हत्तर हजार योजन की पोलार है. जिस में प्रथम नरक के बारह आंतरे व तेरह पाथडे हैं. जिस में उपर का एक व नीचे का एक ऐसे दो आंतरे छोडकर शेष दश आंतरे में दश जातिके भुवनपति देव के सात क्रोड बहत्तर लाख विमान हैं. प्रथम अंतर में असुरकुमार जाति के देवता के ६४०००० भवन हैं. वहां असुरकुमार देवता दीव्य ऋद्धि व उत्तम भोग भोगवते हुए विचरते हैं. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार जाति के देवों को नीचे जाने की क्या शक्ति है?

असुर कुमार दे० देवका अ० अधो ग० गति में वि० विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० अधो स० सातवी पु० पृथ्वी त० तीसरी पु० पृथ्वी को गये ग० जावेंगे ॥४॥ किं० क्या प० प्रयोजनसे भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव त० तीसरी पु० पृथ्वी में ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम पु० पूर्व वैरी की वे० वेदना उ० उदीरना करने को पु० पूर्वसंगति की वे० वेदना उ० उपशमाने को ॥ ५ ॥ अ० है

विसए? हंता अत्थि केवयाणं भंते! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गतिविसए पण्णत्ते? गोयमा! जाव अहे सत्तमाए पुढवीए, तच्चं पुण पुढविं गयाय गमिस्संतिय, ॥ ४ ॥ किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गयाय, गमिस्संतिय ? गोयमा ! पुव्ववेरियस्सवा, वेयणउदीरणयाए, पुव्वसंगइयस्स वेयण उवसामणयाए ; एवंखलु असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गयाय गमिस्संतिय ॥ ५ ॥ अत्थिणं भंते ! असुरकुमाराणं

हां गौतम ! वे नीचे सातवी नरक तक जासकते हैं परंतु तीसरी पृथ्वी तक गये है और जावेंगे ॥४॥ अहो भगवन् ! किस कारनसे देवता नीचे तीसरी पृथ्वी तक गये हैं और जावेंगे ? अहो गौतम ! पूर्व जन्म का वैरी नरक में उत्पन्न हुवा होवे तो उन की वेदना की उदीरणा करने केलिये अथवा पूर्व जन्म का मित्र नरक में उत्पन्न हुवा होवे उन की वेदना उपशमाने के लिये असुरकुमार जाति के देव तीसरी नरक तक गये हैं और जावेंगे ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ? असुरकुमार देव तिर्च्छा गमन कर सकते हैं ? हां गौतम !

शब्दार्थ भं० भगवन् अ० असुरकुमार दे० देवका ति० तिर्यक् गति में वि० विषय हं० हां अ० है कें० कितना भं० भगवन् अ० असुरकुमार देवोंका तिं० तिर्यक् गति में वि० विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र नं० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे किं० क्या प० कारन से भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव नं० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे जे० जो अ० अरिहंत भ० भगवन्त का ज० जन्म महोत्सव नि० दीक्षा महोत्सव णा० ज्ञान उत्पात महोत्सव प० निर्वाण महोत्सव में

सूत्र देवाणं तिरियगति विसए पण्णत्ते ! हंता अत्थि। केवइयाणं भंते असुरकुमाराणं देवाणं तिरियगइविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जाव असंखेज्जा दीव समुद्दा नंदिस्सरवरं पुण दीवं गयाय गमिस्संतिय ॥ किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारा देवा नंदिस्सरवरं दीवं गयाय, गमिस्संतिय? गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो एएसिणं जंमणमहेसुवा, निक्खमण महेसुवा, णाणुप्पायमहिमासुवा, परिनिव्वाण महिमासुवा, एवंखलु असुर

भावार्थ असुरकुमार देव तिर्छे जाते हैं. अहो भगवन् ! असुरकुमार देव तीर्छे कहांतक जाते हैं ? अहो गौतम ! उन की जाने की शक्ति असंख्यात द्वीप समुद्र तक की है परंतु आठवा नंदीश्वर द्वीप तक गये हैं और जावेंगे. अहो भगवन् ! वे असुर कुमार देव किस कारनसे नंदीश्वर द्वीप में गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! अरिहंत भगवंत के जन्म महोत्सव, दीक्षा महोत्सव, ज्ञान का उत्पन्न होने का

शब्दार्थ

असुर कुमार दे० देवका अ० अधो ग० गति में वि० विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० अधो स० सातवी पु० पृथ्वी त० तीसरी पु० पृथ्वी को गये ग० जावेंगे ॥४॥ किं० क्या प० प्रयोजनसे भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव त० तीसरी पु० पृथ्वी में ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम पु० पूर्व वैरी की वे० वेदना उ० उदीरना करने को पु० पूर्वसंगाति की वे० वेदना उ० उपशमाने को ॥ ५ ॥ अ० है

सूत्र

विसए? हंता अत्थि केवयाणं भंते! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गतिविसए पण्णत्ते? गोयमा! जाव अहे सत्तमाए पुढवीए, तच्चं पुण पुढविं गयाय गमिस्संतिय, ॥ ४ ॥ किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गयाय, गमिस्संतिय ? गोयमा ! पुव्ववेरियस्सवा, वेयणउदीरणयाए, पुव्वसंगइयस्स वेयण उवसामण्णयाए ; एवंखलु असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गयाय गमिस्संतिय ॥ ५ ॥ अत्थिणं भंते ! असुरकुमाराणं

भावार्थ

हां गौतम ! वे नीचे सातवी नरक तक जासकते हैं परंतु तीसरी पृथ्वी तक गये है और जावेंगे ॥४॥ अहो भगवन् ! किस कारनसे देवता नीचे तीसरी पृथ्वी तक गये हैं और जावेंगे ? अहो गौतम ! पूर्व जन्म का वैरी नरक में उत्पन्न हुवा होवे तो उन की वेदना की उदीरणा करने केलिये अथवा पूर्व जन्म का मित्र नरक में उत्पन्न हुवा होवे उन की वेदना उपशमाने के लिये असुरकुमार जाति के देव तीसरी नरक तक गये हैं और जावेंगे ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ? असुरकुमार देव तिर्च्छा गमन कर सकते हैं ? हां गौतम !

शब्दार्थ

भं० भगवन् अ० असुरकुमार दे० देवका ति० तिर्यक् गति में वि० विषय हं० हां अ० है के० कितना भं० भगवन् अ० असुरकुमार देवोंका तिं० तिर्यक् गति में वि० विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० असंख्यात दी० द्वीप स० समुद्र नं० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे किं० क्या प० कारन से भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देव नं० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे जे० जो अ० अरिहंत भ० भगवन्त का ज० जन्म महोत्सव नि० दीक्षा महोत्सव णा० ज्ञान उत्पात महोत्सव प० निर्वाण महोत्सव में

सूत्र

देवाणं तिरियगति विसए पण्णत्ते ! हंता अत्थि। केवइयाणं भंते असुरकुमाराणं देवाणं तिरियगइविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जाव असंखेज्जा दीव समुद्दा नंदिस्सरवरं पुण दीवं गयाय गमिस्संतिय ॥ किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारा देवा नंदिस्सरवरं दीवं गयाय, गमिस्संतिय? गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो एएसिणं जंमणमहेसुवा, निक्खमण महेसुवा, णाणुप्पायमहिमासुवा, परिनिव्वाण महिमासुवा, एवंखलु असुर

भावार्थ

असुरकुमार देव तिर्छे जाते हैं. अहो भगवन् ! असुरकुमार देव तीर्छे कहांतक जाते हैं ? अहो गौतम ! उन की जाने की शक्ति असंख्यात द्वीप समुद्र तक की है परंतु आठवा नंदीश्वर द्वीप तक गये हैं और जावेंगे.. अहो भगवन् ! वे असुर कुमार देव किस कारनसे नंदीश्वर द्वीप में गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! अरिहंत भगवंत के जन्म महोत्सव, दीक्षा महोत्सव, ज्ञान का उत्पन्न होने का

शब्दार्थ

भ० असुर कुमार देव नं० नंदीश्वर द्वीप को ग० गये ग० जावेंगे ॥ ६ ॥ अ० है भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देवका उ० ऊर्ध्वगति विषय हं० हां अ० है के० कितनी भं० भगवन् अ० असुर कुमार देवका उ० ऊर्ध्वगति विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० अच्युत देवलोक सो० सौधर्म देवलोक ग० गये ग० जावेंगे किं० किस प० प्रयोजन से भं० भगवन् अ० असुर कुमारदेव सो० सौधर्म देवलोक को ग० गये ग० जावेंगे गो०गौतम ते० उन दे० देवों का भ०भवप्रत्यय का वे० वैरसे ते०वे दे०देव वि०

सूत्र

कुमारा देवा नंदिस्सरवरं दीवं गयाय गमिस्संतिय ॥ ६ ॥ अत्थिणं भंते ! असुर कुमाराणं देवाणं उड्डगइविसए ? हंता अत्थि । केवइयं चणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं उड्डं गतिविसए ? गोयमा ! जाव अच्चुएकप्पे सोहम्मं पुणकप्पं गयाय गमिस्संतिय, । किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्पं गयाय गामिस्संतिय ?

भावार्थ

महोत्सव और निर्वाण का महोत्सव इन चार कारन से नंदीश्वर द्वीप को असुर कुमार देवता गतकाल में गये और भविष्य में जावेंगे ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार देवों को उपर जाने की शक्ति का विषय है ? हां गौतम! असुर कुमार देवों को उपर जाने की शक्ति है. अहो भगवन् ! वे ऊर्ध्व लोकमें कहां लग जा सकते हैं ! अहो गौतम ! उन मे अच्युत देवलोक तक जाने की शक्ति है किन्तु सौधर्म देवलोक तक गये हैं और जावेंगे. अहो भगवन् ! असुर कुमार देव किस कारन से सौधर्म देवलोक में

शब्दार्थ विकुर्वणा करते प० परिचारणा करते आ० आत्मरक्षकदेव को त्रि० त्रास उपजावे अ० यथा ल० लघु र० रत्न ग० ग्रहणकर आ० स्वतः ए० एकान्त में अ० जावे ॥ ७ ॥ अ० है भं० भगवन् ते० उन दें० देवोको अ० यथा ल० लघु र० रत्न हं० हां अ० है से० वह क० क्या इ० इनको प० करे त० पीछे का० काया को प० पीडा उपजावे ॥ ८ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् अ० असुर कुमार देव त० तहां

सूत्र गोयमा ! तेसिणं देवाणं भवपच्चइय वेराणुबंधे तेणं देवा विकुव्वमाणा परियारेमाणावा, आयरक्खे देवे वित्तासेंति, अहा लहुसगाइं रयणाइं गहाय आयाए एगंतमंतं अव-क्कमंति ॥७॥ अत्थिणं भंते ! तेसिं देवाणं अहा लहुसगाइं रयणाइं ? हंता अत्थि। से कहमिदाणि पकरेइ, तओसे पच्छाकायं पव्वहंति ॥ ८ ॥ पभूणं भंते ! तेसिं अ-

भावार्थ गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! भवप्रत्ययिक वैरसे वे देव विकुर्वणा करते हुए या अन्य देवी की साथ परिचारणा करने की वांच्छा करते हुए आत्म रक्षक देवको त्रास उत्पन्न करते हैं. अथवा बहुत छोटे रत्नों ग्रहण करके एकान्त में चलेजाते है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! उन वैमानिक देवों को क्या यथा-योग्य छोटे रत्न है ? हां गौतम ! उन को छोटे रत्नों रहे हुवे हैं. फीर उन रत्नों की चौरी करनेवाले को क्या करते हैं ? अहो गौतम ! उन लेनेवाले को रत्नका मालिक देवता प्रहार करता है जिस से उन को महावेदना होती वह जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट छमास तक रहती है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार

अ० असुर कुमार देव नं० नंदीश्वर द्वीप को गं० गये ग० जावेंगे ॥ ६ ॥ अ० है भं० भगवन् अ० असुर कुमार दे० देवका उ० ऊर्ध्वगति विषय हं० हां अ० है के० कितनी भं० भगवन् अ० असुर कुमार देवका उ० ऊर्ध्वगति विषय गो० गौतम जा० यावत् अ० अच्युत देवलोक सो० सौधर्म देवलोक ग० गये ग० जावेंगे कि० किस प० प्रयोजन से भं० भगवन् अ० असुर कुमारदेव सो० सौधर्म देवलोक को ग० गये ग० जावेंगे गो०गौतम ते० उन दे० देवों का भ०भवप्रत्यय का वे० वैरसे ते०वे दे०देव नि०

सूत्र

कुमारा देवा नंदिस्सरवरं दीवं गयाय गामिस्संतिय ॥ ६ ॥ अत्थिणं भंते ! असुर कुमाराणं देवाणं उड्डुगइविसए ? हंता अत्थि । केवइयं चणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं उड्डुं गतिविसए ? गोयमा ! जाव अच्चुएकप्पे सोहम्मं पुणकप्पं गयाय गामिस्संतिय, । किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्पं गयाय गामिस्संतिय ?

भावार्थ

महोत्सव और निर्वाण का महोत्सव इन चार कारन से नंदीश्वर द्वीप को असुर कुमार देवता गतकाल में गये और भविष्य में जावेंगे ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार देवों को उपर जाने की शक्ति का विषय है ! हां गौतम! असुर कुमार देवों को उपर जाने की शक्ति है. अहो भगवन् ! वे ऊर्ध्व लोकमें कहां तक जा सकते हैं ! अहो गौतम ! उन मे अच्युत देवलोक तक जाने की शक्ति है किन्तु सौधर्म देवलोक तक गये हैं और जावेंगे. अहो भगवन् ! असुर कुमार देव किस कारन से सौधर्म देवलोक में

शब्दार्थ कुमारदेव ता० उन अ० देवियों की स० साथ दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगवते वि० विचरने को ए० ऐसे गो० गौतम अ० असुर कुमारदेव सो० सौधर्म देवलोक में ग० गये ग० जावेंगे ॥ ९ ॥ के० कितने काल में अ०असुर कुमार देव उ०ऊर्ध्व उ०ऊडे जा०यावत् सो०सौधर्म दे०देवलोक में ग० गये ग०जावेंगे गो० गौतम अ० अनंत ओ० उत्सर्पिणी अ० अवसर्पिणी स० समय व्यतीत हुवे अ० है ए० ऐसे लो०

सूत्र पभू ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा वि-हरित्तए ॥ एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्पं गयाय गमिस्संति ॥९॥ केवइयकालस्सणं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मं कप्पं गयाय गमिस्संतिय ? गोयमा ! अणंताहिं ऊसप्पिणीहिं अणंताहिं अवसप्पिणीहिं समइक्कंताहिं । अत्थिणं एस भवे लोयत्थेरयभूए समुप्पज्जइ, जण्णं असुरकुमारा देवा

भावार्थ समर्थ हैं परंतु यदि वे अप्सराओं उन को आदर करे नहीं या उन को स्वामीपने जाने नहीं तो उन की साथ भोग भोगने को वे समर्थ नहीं हैं. अहो गौतम ! इस कारन से असुर कुमार देव सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! कितने काल में असुर कुमार देव ऊंचे जावे यावत् सौधर्म देवलोक में गये या जावेंगे ? अहो गौतम ! अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हुए पीछे ऐसा होता

शब्दार्थ

ग० गये हुवे ता० उन अ० अप्सरा की स० साथ दि० दीव्य भो० भोगोपभोग भुं० भोगवते वि० विचरने को णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ त० तहां से प० नीकलकर इ० यहां आ० आकर ज० जो अ० देवियों आ० आदर करती हैं प० परिचारणा इच्छे प० समर्थ ते० वे अ० असुर कुमार दे० देव ता० उन अ० देवियों की स० साथ दि० दिव्य भो० भोग भुं० भोगते वि० विचरने को अ० अथवा ता० वे अ० देवियों नो० नहीं आ० आदर करे नो० नहीं प० परिचारणा इच्छे णो० नहीं प० समर्थ ते० वे अ० असुर

सूत्र

सुरकुमारा देवा तत्थगया चेव समाणा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोग भोगाइं भुंजमाणा विहारित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे । तेणं तओ पडिनियत्तंति पडिनियत्त इत्ता इहमागच्छइ इहमागच्छइत्ता, जइणं ताओ अच्छराओ आढायंति परियाणंति पभूण ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोग भोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए ॥ अहणं ताओ अच्छराओ नो आढायंति नो परियाणंति णोपं

भावार्थ

देव वैमानिक में रही हुई अप्सराओं की साथ भोग भोगवने को क्या समर्थ हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. अर्थात् वे वैमानिक देवलोक में वहां की अप्सराओं की साथ भोग भोगवने को समर्थ नहीं हैं. वे असुर कुमार देव वहां से अप्सराओं को लेकर पीछे अपने विमान में आते हैं, विमान में आये पीछे यदि वे अप्सराओं उन को आलिंगन करे या समीपने जाने तो वे उन की साथ भोग भोगने को

शब्दार्थ

कुमारदेव ता० उन अ० देवियों की स० साथ दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगवते वि० विचरने को ए० एसे गो० गौतम अ० असुर कुमारदेव सो० सौधर्म देवलोक में ग० गये ग० जावेंगे ॥ ९ ॥ के० कितने काल में अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊडे जा० यावत् सो० सौधर्म दे० देवलोक में ग० गये ग० जावेंगे गो० गौतम अ० अनंत ओ० उत्सर्पिणी अ० अवसर्पिणी म० समय व्यतीत हुवे अ० है ए० ऐसे लो०

सूत्र

पभू ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए ॥ एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्पं गयाय गमिस्संति ॥९॥ केवइयकालस्सणं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मं कप्पं गयाय गमिस्संतिय ? गोयमा ! अणंताहिं ऊसप्पिणीहिं अणंताहिं अवसप्पिणीहिं समइक्कंताहिं । अत्थिणं एस भवे लोयत्थेरयभूए समुप्पज्जइ, जण्णं असुरकुमारा देवा

भावार्थ

समर्थ हैं परंतु यदि वे अप्सराओं उन को आदर करे नहीं या उन को स्वामीपने जाने नहीं तो उन की साथ भोग भोगने को वे समर्थ नहीं हैं. अहो गौतम ! इस कारन से असुर कुमार देव सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! कितने काल में असुर कुमार देव ऊंचे जावे यावत् सौधर्म देवलोक में गये या जावेंगे ? अहो गौतम ! अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हुए पीछे ऐसा होता

आश्रय भूत स० उत्पन्न होवे ज० जिससे अ० असुर कुमारदेव उ० ऊर्ध्व जा० यावत् सो०सौधर्म देवलोक में॥ १० ॥ किं० किस नि० निश्राय से भं० भगवन् अ० असुरकुमार देव उ०ऊर्ध्व जा०यावत् सो०सौधर्म देवलोक गो० गौतम से० वह ज० जैसे इ० यहां स०अनार्य व०बर्बर के अनार्य के टं० टकण देशके अनार्य भू०भूचुकदेश के प० मश्नदेश के पु०भिल्लादि ए०एक म०बडा व० वन ग० खड्डा दु० दुर्ग द० गुफा वि० विषम प० पर्वतकी णी० निश्राय सु० अतिशय अ० अश्वबल ह० हस्तिबल जो० योधबल ध० धनुष्यबल

सूत्र

उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मेकप्पे ॥ १० ॥ किं निस्साएणं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ? गोयमा ! से जहानामए इह सव्वराइवा, बव्व-राइवा, टंकणाइवा, भूचुयाइवा, पण्हायाइवा, पुलिंदाइवा, एगं महं वणंवा, गड्डंवा, दुग्गंवा, दरिंवा, विसमवा, पव्वयंवा, णीसाए सुमहल्लमवि, अस्सबलंवा, हत्थिबलंवा, जोहबलंवा धणुबलंवा, आगिलंति; एवामेव असुरकुमारा देवा णण्णत्थ अरहंतेवा,

भावार्थ

है. और जब ऐसा होता है तब यहां मनुष्य लोक में आश्चर्यरूप (अच्छेरा) गिना जाता है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार देव किस की नेश्राय (आश्रय) लेकर उपर जाते हैं ? अहो गौतम ! जैसे जंगल के निवासी भील लोक, बब्बर देश के अनार्य लोक, टंकण देश के अनार्य लोक, भूच देश के अ-नार्य लोक, मश्न देश के अनार्य लोक, और भील्ल वगैरह लोकों एक बडा वन, खड्डा, दुर्ग, गुफा, विषम-

शब्दार्थ को आ०खेदित करे ए०ऐसे अ०असुरकुमार देव अ०अरिहंत अ०छद्मस्थ अरिहंत अ०अनगार भा० भवितात्मा की नि० नेश्राय उ० ऊर्ध्व जा० यावत् सौधर्म देवलोक ॥११॥ स० सब अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊडे जा० यावत् सो०सौधर्म देवलोक गो०गौतम नो०नहीं इ०यह अर्थ स०समर्थ म०महर्द्धिक अ०असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ०ऊडे जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक ॥१२॥ ए०यह भं०भगवन् अ०असुरेन्द्र अ०

सूत्र अरहंतचेइयाणिवा, अणगारे, भावियप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ॥ ११ ॥ सव्वेवियणं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ! गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे ! महिड्ढियाणं, असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ॥ १२ ॥ एसवियणं भंते ! चमरं असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्प-

भावार्थ स्थान व पर्वत के आश्रय से बहुत बडा अश्वबल, हस्ती बल, योध बल, और धनुष्य बल को पराजित कर सकते हैं; ऐसे ही असुर कुमार देव आरिहंत भगवन्त, आरिहंत चैत्य सो द्रव्य आरिहंत छद्मस्थ, अनगार और भवितात्मा का आश्रय लेकर ऊंचे सौधर्म देवलोक तक जाते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब असुर कुमार देव ऊंचे जाने की शक्तिवाले यावत् सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. महर्द्धिक असुरकुमार देव मात्र सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ॥ १२ ॥

आश्रय भूत स० उत्पन्न होवे ज० जिससे अ० असुर कुमारदेव ऊ० ऊर्ध्व जा० यावत् सो०सौधर्म देवलोक में॥ १० ॥ किं० किस नि० निश्राय से भं० भगवन् अ० असुरकुमार देव ऊ०ऊर्ध्व जा०यावत् सो०सौधर्म देवलोक गो० गौतम से० वह ज० जैसे इ० यहां स०अनार्य व०बर्बर के अनार्य के टं० टंकण देशके अनार्य भू०भूचुकदेश के प० पण्हदेश के पु०भिल्लादि ए०एक म०बडा व० वन ग० खड्डा दु० दुर्ग द० गुफा वि० विषम प० पर्वतकी णी० निश्राय सु० अतिशय अ० अश्वबल ह० हस्तिबल जो० योधबल ध० धनुष्यबल

सूत्र

उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मेकप्पे ॥ १० ॥ किं निस्साएणं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ? गोयमा ! से जहानामए इह सव्वराइवा, बव्वराइवा, टंकणाइवा, भूचयाइवा, पण्हयाइवा, पुलिंदाइवा, एगं महं वणंवा, गड्डंवा, दुग्गंवा, दरिंवा, विसमंवा, पव्वयंवा, णीसाए सुमहल्लमवि, अस्सबलंवा, हत्थिबलंवा, जोहबलंवा धणुबलंवा, आगिलंति; एवामेव असुरकुमारा देवा णण्णत्थ अरहंतेवा,

भावार्थ

है. और जब ऐसा होता है तब यहां मनुष्य लोक में आश्चर्यरूप (अच्छेरा) गिना जाता है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार देव किस की नेश्राय (आश्रय) लेकर उपर जाते हैं ? अहो गौतम ! जैसे जंगल के निवासी भील लोक, बर्बर देश के अनार्य लोक, टंकण देश के अनार्य लोक, भूच देश के अनार्य लोक, पण्ह देश के अनार्य लोक, और भील वगैरह लोकों एक बडा वन, खड्डा, दुर्ग, गुफा, विषम-

शब्दार्थ को आ० खेदित करे ए० ऐसे अ० असुरकुमार देव अ० अरिहंत अ० छद्मस्थ अरिहंत अ० अनगार भा० भवितात्मा की नि० नेश्राय उ० ऊर्ध्व जा० यावत् सौधर्म देवलोक ॥११॥ स० सब अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊडे जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ म० महर्द्धिक अ० असुर कुमार देव उ० ऊर्ध्व उ० ऊडे जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक ॥१२॥ ए० यह भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ०

सूत्र अरहंतचेइयाणिवा, अणगारे, भावियप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ॥ ११ ॥ सव्वेवियणं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । महिड्ढियाणं, असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे ॥ १२ ॥ एसवियणं भंते ! चमरं असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्प-

भावार्थ स्थान व पर्वत के आश्रय से बहुत बडा अश्वबल, हस्ती बल, योध बल, और धनुष्य बल को पराजित कर सकते हैं; ऐसे ही असुर कुमार देव अरिहंत भगवन्त, आरिहंत चैत्य सो द्रव्य आरिहंत छद्मस्थ, अनगार और भवितात्मा का आश्रय लेकर ऊंचे सौधर्म देवलोक तक जाते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! क्या सब असुर कुमार देव ऊंचे जाने की शक्तिवाले यावत् सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. महर्द्धिक असुरकुमार देव मात्र सौधर्म देवलोक में गये और जावेंगे ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

अमुर राजा ऊ० ऊर्ध्व जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक ॥ १२ ॥ अ० अहो भं० भगवन् च० चमर राजा की म० महा ऋद्धि मं० महाद्युति जा०यावत् क०कहां प० प्रवेश हुइ कू०कूडागार शाला दि० दृष्टान्त भा० कहना ॥ १४ ॥ च० चमर भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर राजा की सा० वह दीव्य दे० देवऋद्धि कि० किमसे ल० लब्ध ए० ऐसे गो० गौतम ते० उस काल से० उस समय में इ० इस जं० जंबूद्वीप में भ० भरत क्षेत्र में विं० विंध्याचल पर्वत की प० नजदीक बे० बेभेल स० सन्निवेश हो० था

सूत्र

इयं पुव्वे जाव सोहम्मे कप्पे ? हंता गोयमा ! एसत्रियणं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्डं उप्पइयं पुव्वे जाव सोहम्मे कप्पे ॥ १३ ॥ अहोणं भंते चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए महज्जुत्तीए जाव कहिं पविट्ठा ? कूडागारसाला दिट्ठंतो भाणियव्वो॥ १४॥ चमरेणं भंते ! असुरिंदेणं असुररण्णो सा दिव्वा देवड्ढी तंचेव किण्णालद्धा २, एवं खलु

भावार्थ

अहो भगवन् ! यह चमर नामक असुरेंद्र पहिले क्या सौधर्म देवलोक में गया ? हां गौतम ! यह चमर नामक असुरेंद्र पहिले सौधर्म देवलोक में गया ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! इस चमर नामक असुरेंद्र की महाऋद्धि महाद्युति वगैरह कहां चलीगई ? अहो गौतम ! कूटागार शाला जैसे पीछी शरीर में चलीगई ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेंद्र असुरराजाको ऐसी दीव्य देवर्द्धि कैसे प्राप्त हुई यावत् सन्मुख हुई ? अहो गौतम ! उस काल उस समय में इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में विन्ध्याचल पर्वत

शब्दार्थ व० वर्णन युक्त त० तहां बे० बेभेल सन्निवेश में पू० पूरण गा० गाथापति प० रहता था अ० ऋद्धिवंत दि० दिप्त ज० जैसे ता० तामली की व० वक्तव्यता त० तैसे ने० जानना ण० विशेष च० चारपुड वाला

सूत्र गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं, इहेव जंबूद्दीवेदीवे भारहेवासे विंझगिरिपायमूले बेभेले नामं सण्णिवेसे होत्था वण्णओ तत्थणं बेभेले सण्णिवेसे पूरणेनामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे दित्ते जहा तामलिस्स वत्तव्वया तहा नेयव्वा, णवरं चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहयं करेत्ता जाव विपुलं असणं पाणं, खाइमं, साइमं, जाव सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहयं गहाय मुंडे भवित्ता दाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए, पव्वइएवियणं समाणे तंचेव जाव आयावण भूमीए पच्चोरुहित्ता, सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडि-

भावार्थ की मूल में बेभेल नामक सन्निवेश था. उस सन्निवेश में पूरण नामक गाथापति रहता था. वह गाथापति ऋद्धिवंत, दीप्त यावत् सब अधिकार तामली तापस जैसे कहना. अर्थात् पूरण गाथापति को कुटुम्ब जागरणा करते विचार हुवा कि मुझे पूर्व संचित पुण्य के उदय से कुटुम्ब आदि सब सुख की सामग्री मीली है इस से जहां लग मेरे पुण्य प्रबल हैं और शरीर में शक्ति है वहां लग प्रभात होते चार पुडवाला काष्टमय पात्र बनाकर अशनादि चारों आहार नीपजाकर, ज्ञाति स्वजनादि की साथ भोजन कर, सब को यथोचित् सत्कारादि कर, ज्येष्ट पुत्र को गृह के कार्य पर रखकर सब को पूछकर मुंडित बनकर दान

शब्दार्थ प० प्रथम पु० पुड में प० डाले क० कल्पता है मे० मुझे प० अर्पित प० पथिक को द० देनेको जं० जो दो० दूसरे पु० पुड में प० डाले क० कल्पता है मे० मुझे का० काक सु० श्वान को द० देना जं० जो

सूत्र ग्गहयं गहाय वेभेल सण्णिवेसे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडेत्ता जंमे पढमे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं पत्थिय पहियाणं दलइत्तए, जंमे दोच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे कागसुणयाणं दलायित्तए, जंमे तच्चे पुडए पडइ कप्पइ मे तं मच्छ कच्छभाणं दलइत्तए, जं मे चउत्थे पुडए पडइ कप्पइमे तं अप्पणा आहारं आहरेत्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ संपेहइत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए तं चेव निरवसेसं चउत्थे पुडए पडइ तं अप्पणा आहारं आहारेइ ॥ १५ ॥ तएणं

भावार्थ नामक प्रव्रज्या ग्रहण करना मुझे श्रेय है. दान प्रव्रज्या अंगीकार किये पीछे आतापना भूमि से पीछे आकर स्वयं ही चार पुडवाला काष्टमय पात्र लेकर वेभेल सन्निवेश में ऊंच, नीच व मध्यम कुल के गृहों की भिक्षाचरी ग्रहण करूंगा. और चार पुडवाले पात्र में से प्रथम पुड में जो भिक्षा डालेंगे उसे मैं पथिक जनों को देऊंगा, दूसरे पुड में भीक्षा डालेंगे उसे मैं काग प्रमुख पक्षी व श्वान प्रमुख को डालूंगा, तीसरे पुड में जो भीक्षा डालेंगे उसे मत्स्य कच्छ वगैरह को डालूंगा और चौथे पुड में जो भीक्षा डालेंगे उस का मैं आहार करूंगा. ऐसा विचार करके प्रभात होते सब क्रिया की यावत्

शब्दार्थ काल ते० उस समय में अ० मैं गो० गौतम छ० छद्मस्थ अवस्था में ए० अग्यारह वर्षकी प० दीक्षा से छ० छठ भक्त अ० अंतर रहित त० तपकर्म से सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावता पु० अनुक्रम से च० चलता गा० ग्रामानुग्राम दू०जाता जे० जहां सुं०सुंसुमार पुर न०नगर जे० जहां अ० शोक वनखंड उ० उद्यान जे० जहां अ० अशोक वृक्ष जे० जहां पु० पृथ्वी शिलापट उ० आकर अ० अशोक वृक्ष की हे० नीचे पु० पृथ्वी शिलापट पे अ० अठम भक्त प० ग्रहणकर दो० दोपाँव सा०

तेणं कालेणं, तेणं समएणं अहं गोयमा ! छउमत्थकालियाए एक्कारसवासपरियाए छट्ठं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे, जेणेव सुंसुमार पुरे नगरे जेणेव असोयवणसंडे उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढविसिलापट्टए तेणेव उवागच्छामि उवाग-

भावार्थ र्ष की साधु की पर्याय पालता हुवा, निरंतर छठ के पारणे का तप कर्म व संयम से आत्मा को चिन्तवता हुवा, पूर्वानुपूर्व चलता हुवा और ग्रामानुग्राम विचरता हुवा मैं सुंसुमारपुर नगर के अशोक वनखंड नामक उद्यान में अशोक वृक्ष की नीचे पृथ्वी शिलापट की पास आया. वहां आकर अशोक वृक्ष नीचे पृथ्वी शीला पटपर अठम भक्त (तेला) किया. दोनों पांव संहर कर (जिन मुद्रासे) लम्बी बाहु करके एक ही पुद्गल पर दृष्टिस्थापकर, अनिमेष-दृष्टि रखकर, थोडासा मस्तक नमाकर यथास्थित गात्रों को

पदार्थ इकठेकर उ०लंबा पा०हस्त ए०एक पुद्गल में नि०स्थापन की दि०दृष्टि अ०अनिमिषनेत्र ई०थोडी प०नमीहुइ का० काया से अ० यथा प० स्थापित ग० गात्र स० सर्व इ० इन्द्रिय गु० गुप्त ए० एकरात्रि की म० महाप्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरता हूं ॥ १७ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में च० चमर चंचा रा० राज्यधानी अ० इन्द्र रहित अ० पुरोहित रहित हो० थी ॥ १८ ॥ त० तत्र मे० वह पू० पूरण बा० बालतपस्वी ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण दु० बारह वा० वर्ष प० पर्याय पा०पालकर मा०मासकी सं०

सूत्र च्छइत्ता असोयवर पायवस्स हेट्ठे पुढविसिला पट्टयंसि अट्ठमभत्तं पगिण्हामि दोवि पाए साहट्टु वग्घारियपाणी, एगपोग्गल निविट्ठदिट्ठी, अणिमिसनयणे, ईसिं पब्भार-गएणं काएणं अहापणिहिएहिं गत्तेहिं, सव्विंदिएहिं गुत्तेहिं, एगराइयं महापडिमं उव-संपज्जित्ता विहरामि ॥ १७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरचंचा रायहाणी अणिं-दा अपुरोहिया यावि होत्था, ॥ १८ ॥ तएणं से पूरणे बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं

भावार्थ स्थापकर सब इन्द्रियों को गोपकर एक रात्रि की महापडिमा अंगीकार करता हुवा विचरता था ॥ १७ ॥ उस काल उस समय में चमर चंचा राज्यधानी इन्द्र रहित पुरोहित रहित थी ॥ १८ ॥ उस समय में वह पूरण नामक बालतपस्वी बारह वर्ष पर्यंत दान प्रवर्ज्या पालकर एक मास की संलेखना से आत्मा को

शब्दार्थ काल ते० उस समय में अ० मैं गो० गौतम छ० छद्मस्थ अवस्था में ए० अग्यारह वर्षकी प० दीक्षा से छ० छठ भक्त अ० अंतर रहित त० तपकर्म से सं० संयम से त० तप से अ० आत्मा को भा० भावता पु० अनुक्रम से च० चलता गा० ग्रामानुग्राम दू०जाता जे० जहां सुं०सुंसुमार पुर न०नगर जे० जहां अ० अशोक वनखंड उ० उद्यान जे० जहां अ० अशोक वृक्ष जे० जहां पु० पृथ्वी शिलापट उ० आकर अ० अशोक वृक्ष की हे० नीचे पु० पृथ्वी शिलापट पे अ० अठम भक्त प० ग्रहणकर दो० दोपाँव सा०

मूल तेणं कालेणं, तेणं समएणं अहं गोयमा ! छउमत्थकालियाए एकारसवासपरियाए छट्ठं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे, जेणेव सुंसुमार पुरे नगरे जेणेव असोयवणसंडे उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढविसिलापट्टए तेणेव उवागच्छामि उवाग-

भावार्थ वर्ष की साधु की पर्याय पालता हुवा, निरंतर छठ्ठ के पारणे का तप कर्म व संयम मे आत्मा को चिन्तवता हुवा, पूर्वानुपूर्व चलता हुवा और ग्रामानुग्राम विचरता हुवा मैं सुंसुमारपुर नगर के अशोक वनखंड नामक उद्यान में अशोक वृक्ष की नीचे पृथ्वी शिलापट की पास आया. वहां आकर अशोक वृक्ष नीचे पृथ्वी शीला पटपर अठम भक्त (तेला) किया. दोनों पांव मेहर कर (जिन मुद्रासे) लम्बी बाहु करके एक ही पुद्गल पर दृष्टिस्थापकर, अनिमेष-दृष्टि रखकर, थोडासा मस्तक नमाकर यथास्थित गात्रों को

शब्दार्थ यावत् सो० सौधर्म देवलोक प० देखे ॥ २१ ॥ त० तहां स० शक्र दे० देवेन्द्र म० मघव पा० पाक शासन स० शतक्रतु स० सहस्रनेत्र वाला व० वज्र पा० हस्त में पु० पुरंदर जा० यावत् द० दशदिशा में उ० उद्योत करते प० प्रकाश करते सो० सौधर्म देवलोक सो० सौधर्म व० वडिंशक विमान सु० सुधर्मा सभा में स० शक्र के सी० सिंहासनपे जा० यावत् दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगते पा० देखे पा० देखकर॥२२॥ ए० इसरूप अ० आत्मिक चिं० चिन्तवन प० स्मरण रूप म० मनोगत सं० संकल्प स० उत्पन्न हुवा

सूत्र गए समाणे उड्डुं वीससाए ओहिणा आभोइए जाव सोहम्मे कप्पे पासइय ॥ २१ ॥ तत्थ सक्कं देविंदं देवरायं मघवं, पागसासणं, सयक्कउं, सहस्सक्खं, वज्जपाणिं, पुरंदरं, जाव दसदिसाओ उज्जोवेमाणं, पभासेमाणं सोहम्मेकप्पे सोहम्म वडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ,

भावार्थ देवलोक देखने लगा ॥ २१ ॥ वहां पर मेघमाली को वश में रखनेवाला, पाक नामक बलिष्ट रिपु को पराजित करनेवाला, कार्तिक शेठ के भव में एक सो प्रतिमा का अभिग्रह करनेवाला, सहस्र नयनवाला, हस्त में वज्र धारण करनेवाला, और असुर कुमार देव का विदारन करनेवाला ऐसा शक्रेन्द्र को उद्योत करता व प्रकाशता हुवा सौधर्म देवलोक में सौधर्म वडिंसग नामक विमान की सुधर्मा सभा में सिंहासन पर दीव्य भोग भोगवता हुवा देखा॥२२॥फीर ऐसा अध्यवसाय, चिन्तवन, मनोगत संकल्प हुवा कि अप्रार्थित की

पदार्थ संलेखना से अ० आत्मा को झू० झूसकर स० साठभक्त अ० अनशन छे० छेद्कर का० काल के अवसर में का० काल करके च० चमर चंचा रा० राज्यधानी में उ० उपपात सभा में जा० यावत् इं० इन्द्रपने उ० उत्पन्न हुवा ॥ १९ ॥ त० तब से० वह च० चमर अ० असुरेंद्र अ० तुरत का उत्पन्न पं० पांच प्रकार की प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त भाव को ग० जावे तं० वह ज० जैसे आ० आहार पर्याप्ति जा० यावत् भा० भाषा मनपर्याप्ति ॥ २० ॥ त० तब च० चमर अ० असुरेंद्र पं० पांच प० पर्याप्ति से प० पर्याप्त भाव को ग० प्राप्त उ० ऊर्ध्व वी० स्वभाव से ओ० अवधि ज्ञान से आ० देखे जा०

मूत्र अणसणाए छेदेत्ता कालमासे कालंकिच्चा चमरचंचाए रायहाणीए उववायसभाए जाव इंदत्ताए उववन्ने ॥ १९ ॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया अहुणोववन्ने पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ तंजहा आहार पज्जत्तीए जाव भासामण पज्जत्तीए॥२०॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं

भावार्थ सूनकर, साठ भक्त अनशन कर व काल के अवसर में काल करके चमर चंचा राज्यधानी में उपपात सभा में देव दूष्य वस्त्र की नीचे इन्द्रपने उत्पन्न हुवा ॥ १९ ॥ वहां चमर नामक असुरेन्द्र आहारादि पांच प्रकार की पर्याप्ति से पर्याप्त बना ॥ २० ॥ फीर पांच पर्याप्ति से पर्याप्त बना हुवा अवधि ज्ञान से देखते सौधर्म

पदार्थ विचरता है ॥ २३ ॥ तं० तब मे० ये सा० सामानिक दे० देव च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसे वु० बोलाते हुये ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् इ० आनंद पामे क० करके तले प० जोडकर द० दशनख सि० शिर्ष से आ० आवर्तन म० मस्तक से अं० अंजलि क० करके ज० जय वि० विजय से व० वधाकर ए० ऐसे व० बोले ए० यह दे० देवानुप्रिय स० शक्र दे० देवेन्द्र जा० यावत् वि० विचरता है ॥ २४ ॥ त० तब च० चमर अ० असुरेंद्र अ० असुर राजा ने० उन सा० सामानिक दे० देवों की अं० पास ए०

सूत्र एवं संपेहेइ २ त्ता सामाणिय परिसोववण्णए देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी केसणं एस देवाणुप्पिया ! अप्पत्थिय पत्थए जाव भुंजमाणे विहरइ ॥ २३ ॥ तएणं से सामाणिय परिसोववण्णगा देवा चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णो एवं वुत्तासमाणा हट्ठतुट्ठ जावं हय-हियया करयल परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिंकट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति एवं वयासी एसणं देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया जाव विहरइ ॥ २४ ॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया तेसिं सामाणिय परिसोववण्णगाणं देवाणं अंतिए

भावार्थ यह कौन है ? ॥ २३ ॥ जब चमरेन्द्रने सामानिक परिषदा के देवों को ऐसा कहा तब वे बहुत हृष्ट तुष्ट हुये और हस्त द्वय जोडकर मस्तकों से आवर्तना देकर जय विजय शब्द से वधाये और कहा. अहो देवानुप्रिय ! यह शक्रेन्द्र ऐसा भोग भोगवता हुवा विचरता है ॥ २४ ॥ तब चमरेन्द्र उन सामानिक की

शब्दार्थ के० कोन ए० यह अ० अप्रार्थित की प० प्रार्थना करता है दु० दुष्ट अंत पं० अमनोज्ञ ल०लक्षण वाला हि० लज्जा सि० लक्ष्मी प० रहित ही० हीन पु० पुन्य चतुर्दशी को जन्मा जे० जिससे म० मेरा इ० यह ए० ऐसे दि० दीव्य दे० देवऋद्धि जा० यावत् दे० देवानुभाव ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुवा उ० उपर अ० थोडा उ० उछंग दि० दीव्य भो० भोग भुं० भोगते वि० विचरता है ए० ऐसा सं० विचार कर सा० सामानिक प० परिषदा में उ० उत्पन्न दे० देवोंको स० बोलाकर ए० ऐसा व० बोला के० कोन ए० यह दे० देवानुप्रिय अ० अप्रार्थित की प० प्रार्थना करता है जा० यावत् भुं० भोगवता वि०

सूत्र ॥ २२ ॥ पासइत्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए, पत्थिए, मणोगए संकप्पे समुप्प-ज्जित्था. केसणं एस अप्पत्थिय पत्थए दुरंतपंतलक्खणे हिरिसिरिपरिवज्जिए, हीणपुण्णचाउद्दसे जेणं मम इमे एयारूवाए दिव्वाए देवड्ढीए जाव दिव्वे देवाणुभावे लद्धे, पत्ते, अभिसमण्णागए उप्पिं अप्पुस्सुए दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ

भावार्थ प्रार्थना करनेवाला [मरण की वांच्छा करनेवाला] अमनोज्ञ लक्षणवाला, लज्जा, लक्ष्मी रहित, हीन पुण्य चतुर्दशी में उत्पन्न होनेवाला ऐसा यह कोन है, मुझे जो ऐसी दीव्य देवर्द्धि यावत् दीव्य महानुभाग प्राप्त हुवा है उसकी उपर यह अल्प उत्सुक बनकर दीव्य भोग भोगवता हुवा विचरता है. ऐसा विचार करके सामानिक परिषदा के देवोंको बोलाये और पूछाकि मरण की वांच्छा करनेवाला यावत् भोग भोगवता हुवा जो विचरता है

पदार्थ विचरता है ॥ २३ ॥ तं० तब मे० वे सा० सामानिक दे० देव च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसे बु० बोलाते हुये ह० हृष्ट तु० तुष्ट जा० यावत् इ० आनंद पामे क० करके तले प० जोडकर द० दशनख सि० शिर्ष से आ० आवर्तन म० मस्तक से अं० अंजलि क० करके ज० जय वि० विजय से व० वधाकर ए० ऐसे व० बोले ए० यह दे० देवानुप्रिय स० शक्र दे० देवेन्द्र जा० यावत् वि० विचरता है ॥ २४ ॥ त० तब च० चमर अ० असुरेंद्र अ० असुर राजा ने० उन सा० सामानिक दे० देवों की अं० पास ए०

सूत्र एवं संपेहेइ २ त्ता सामाणिय परिसोववण्णए देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी केसणं एस देवाणुप्पिया ! अप्पत्थिय पत्थए जाव भुंजमाणे विहरइ ॥ २३ ॥ तएणंसे सामाणिय परिसोववण्णगा देवा चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णो एवं वुत्तासमाणा हट्ठतुट्ठ जाव हय-हियया करयल परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिंकट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति एवं वयासी एसणं देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया जाव विहरइ ॥ २४ ॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया तेसिं सामाणिय परिसोववण्णगाणं देवाणं अंतिए

भावार्थ यह कौन है ? ॥ २३ ॥ जब चमरेन्द्रने सामानिक परिषदा के देवों को ऐसा कहा तब वे बहुत हृष्ट तुष्ट हुवे और हस्त द्वय जोडकर मस्तकों से आवर्तना देकर जय विजय शब्द से वधाये और कहा. अहो देवानुप्रिय ! यह शक्रेन्द्र ऐसा भोग भोगवता हुवा विचरता है ॥ २४ ॥ तब चमरेन्द्र उन सामानिक की

शब्दार्थ वह अर्थ सो० सुनकर नि०अवधार कर आ० आसुरत्व रु० रुष्ट कु० कुपित चं०विशेष कुपित मि० देदीप्यमान ते० उन सा० सामानिक दे० देवको ए० ऐसे व० बोले अ० अन्य से० वह स० शक्र दे० देवेन्द्र अ० अन्य से० वह च० चमर अ० असुरेंद्र अ० असुर राजा म० महर्द्धिक से० वह स० शक्र दे० देवेन्द्र अ० अल्पऋद्धि वाला से० वह च० चमर अ० असुरेन्द्र तं० उस इ० इच्छता हूं दे० देवानुप्रिय स० शक्र दे० देवेन्द्र को स० स्वयं अ० भ्रष्ट करने को ति० ऐसा करके उ० अत्यंत कुपित जा० हुवा हो० था

सूत्र एयमट्ठं सोचा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिकिए मिसिमिसेमाणे ते सामाणिय परिसोववण्णए देवे एवं वयासी अण्णे खलु भो! से सक्के देविंदे देवराया अन्नेखलु भो! से चमरे असुरिंदे असुरराया, महिड्ढीए खलु भो ! से सक्के देविंदे देवराया, अप्पिड्ढिए खलुभो ! से चमरे असुरिंदे असुरराया. तं इच्छामिणं देवाणुप्पिया ! सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाहित्तए त्तिकट्टु, उसिणे उसिणब्भूए, जाएयावि होत्था ॥ २५ ॥

भावार्थ पास से ऐसा वचन सुनकर हृदय में धारकर आसुरत्व को प्राप्त हुवा, (क्रोधित बना) रुष्ट हुवा, कुपित हुवा, रौद्र बना, दांत पीसने लगा और सामानिक देव से कहने लगा, अहो शक्र नामक देवेन्द्र देवता का राजा दूसरा है और चमर नामक असुरेन्द्र भी दूसरा है. वह शक्रेन्द्र निश्चय ही महर्द्धिक है और चमरेंद्र अल्प ऋद्धिवाला है. उस को शोभा से भ्रष्ट करने को मैं स्वयं वहां जाऊं ऐसा करके कोप संताप से

सूत्र

तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया ओहिं पउंजइ, पउंजइत्ता ममं ओहिणा आभोएइ आभोएइत्ता इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, एवंखलु समणे भगवं महावीरे जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे सुंसुमारपुरे नगरे असोगवणसंडे उज्जाणे, असोगवरपायवस्स अहे पुढवि सिला पट्टयंसि, अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता, एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥ २६ ॥ तं सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं

पदार्थ

॥ २५ ॥ त० तब से० वह च० चमर अ० असुरेंद्र ओ० अवधिज्ञान को प० प्रयुंजकर म० मुझे आ० देखकर ए० इसरूप अ० अध्यवसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा एं० ऐसे स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जं० जंबूद्वीप में भ० भरत क्षेत्र में सुं० सुंसुमार न० नगर में अ० अशोक वनखंड उ० उद्यान में अ० अशोक वृक्ष की अ० नीचे पु० पृथ्वी शिलापट्टे अ० अठम भक्त प० ग्रहणकर ए० एक रात्रिकी म० महाप्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरते हैं ॥ २६ ॥ तं० वह से० श्रेय मे० मुझे स० श्रमण भ०

भावार्थ

कृष्ण हुवा ॥ २५ ॥ उस समय में चमरेन्द्रने अवधि ज्ञान प्रयुंजा और मुझे देखा. मुझे देखकर ऐसा अध्यवसाय यावत् चिन्तवन उत्पन्न हुवा कि श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सुंसुमारपुर नामक नगर के अशोक वन खंड उद्यान में अशोक वृक्ष की नीचे पृथ्वीशीला पटपर अठम भक्त का प्रत्याख्यान कर एक रात्रि की महा प्रतिमा अंगीकार करते हुवे विचरते हैं ॥ २६ ॥ इस से

सूत्र

नीसाए सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ, संपेहेइत्ता, सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता, देवदूसं परिहेइ, परिहेइत्ता जेणेव सभा सुहम्मा, जेणेव चोप्पाले पहरणकोसे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता फलिहरयणं परामुसइ, परामुसइत्ता एगे अबीए फलिहरयणमयाए महया अमरिसं वहमाणे चमरचंचाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छइत्ता, जेणेव तिगिच्छकूडे

शब्दार्थ

भगवन्त म० महावीर की नी० नेश्राय से स० शक्र दे० देवेन्द्र को स० स्वयं अ० भ्रष्ट करने को त्ति० ऐसा करके सं० विचारकर स० शैय्या से अ० उठकर दे० देवदूष्य प० पहिनकर जे० जहां स० सुधर्मा सभा जे० जहां चो० चउफाले प० आयुधशाला ते० तहां उ० आकर फ० परिघ र० रत्न प० ग्रहणकर ए० एक अ० अद्वितीय फ० परिघ र० रत्नमय म० बडा अ० अमर्श व० धरता च० चमर चंचा रा० राज्यधानी की म० मध्य से नि० नीकलकर जे० जहां ति० तिगिंच्छ कूट उ० उत्पात प० पर्वत ते० तहां

भावार्थ

श्री श्रमण भगवंत महावीर की नेश्राय लेकर शक्र देवेन्द्र की आसातना करना मुझे श्रेय है ऐसा विचार कर अपने आसन से उठकर देव दूष्य वस्त्र पहिना और चउफाल नामक शस्त्र का भंडार था वहां आया. वहां आकर परिघ रत्न नामक आयुध को हस्त में धारन किया. परिघ रत्न को धारन करके अन्य किसी को साथ नहीं लेते हुवे अमर्षभाव धारण करके चमर चंचा राज्यधानी की बीच में होकर तिगिच्छकूट

शब्दार्थ उ० आकर वे० वैक्रेय समुद्घात स० नीकालकर जा० यावत् उ० उत्तर वैक्रेय रूप वि० विकुर्वणा कर ता० उस उ० उत्कृष्ट जे० जहां पु० पृथ्वी शिलापट जे० जहां म० मेरी पास ते० तहां उ० आकर म० मुझे ति० तीनवक्त आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० कर जा० यावत् न० नमस्कार कर व० बोले इ० इच्छताहूं भं० भगवन् तु० तुमारी नी० नेश्राय से स० शक्र दे० देवेन्द्र को स० स्वयं अ० भ्रष्ट करने को ति० ऐसा करके ॥ २७ ॥ उ० ईशान कोन का अ० अतिक्रम वे० वैक्रेय समुद्घात स० नीकालकर

सूत्र उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ, समोहणइत्ता जाव उत्तर वेउव्वियरूवं विकुव्वइ ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव पुढवि सिलावट्टए जेणेव मम अंतिए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता ममं तिक्खुत्तो आ-याहिण पयाहिणं करेइ जाव नमंसित्ता एवं वयासी इच्छामिणं भंते ! तुब्भं नीसाए सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्तिकट्टु ॥ २७ ॥ उत्तर पुरच्छिमंदिसी

भावार्थ नामक उत्पात पर्वत पर आये, वहां आकर वैक्रेय समुद्घात यावत् उत्तर वैक्रेय रूप करके मेरी समीप आया. और मुझे तीन आदान प्रदक्षिणा यावत् नमस्कार करके ऐसा बोला कि अहो पूज्य ! तुमारी नेश्राय से मैं स्वयं शक्रेन्द्र की आसातना करने को इच्छता हूं ॥ २७ ॥ ऐसा कहकर ईशान कोन में गया वहां जाकर

सूत्र

भागं अवक्कमइ अवक्कमइत्ता वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ समोहणइत्ता जाव दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणइत्ता, एगं महं घोरं, घोरागारं, भीमं, भीमागारं, भासुरं, भयाणीयं, गंभीरं उत्तासणयं कालड्ढरत्तंमासरासि संकासं जोयण सयसाहस्सीयं महाबोंदिं विउव्वइ, विउव्वइत्ता अप्फोडेइ, अप्फोडेइत्ता वग्गइ वग्गइत्ता गज्जइ, गज्जइत्ता हयहेसियं करेइ, करेइत्ता हत्थिगुलगुलाइयं करेइ, करेइत्ता

शब्दार्थ

जा० यावत् दो० दूसरी वक्त वे० वैक्रेय समुद्घात स० नीकालकर ए० एक म० बडा घो० घोर घो० घोराकार भी० विकराल भा० भयंकर भ० भयानीत गं० गंभीर उ० उद्वेग उपजावे का० कृष्ण मध्य रात्रि मा० उडद सं० सरिखा जो० योजन स० लाख प० बडा शरीर को वि० विकुर्वणा कर अ० पछाडे व० कूदकर ग० गर्जना कर ह० हयस्वर क० करके ह० हस्तिका शब्द क० करके र० रथका घन घन क० करके पा० पांव पछाड कर भू० भूमि को च० चपेटा द० देकर सी० सिंहनाद न० करके उ० उछा

भावार्थ

वैक्रेय समुद्घात करके प्रदेश बाहिर नीकाले यावत् दूसरी वक्त वैक्रेय समुद्घात करके एक बडा, घोर, घोर आकारवाला, भीम, भीम आकारवाला, देदीप्यमान, भयलानेवाला, गंभीर, उद्वेग उत्पन्न करनेवाला, श्याम आधीरात्रि व उडद समान एक लक्ष योजन का शरीर बनाया. शरीर बना करके दोनों हाथ की हथेलियों या दोनों भुजाओं को करस्फोट करता, हाथ से कूदता हुवा, जोर से वगासी खाता हुवा, घन

अर्थ ला उ० उछलकर प० पछोडा पछोडकर ति० त्रिपद छि० छेदकर वा० वायां हाथ को ऊ० ऊंचाकर दा० दक्षिण हाथ को प० नीचाकर अं० अंगुठा के नख ति० तिर्च्छा मु० मुख वि० विटम्बनाकर म० बडे बडे स० शब्द से क० कल कल अवाज क० करके ए० एक अ० अद्वितीय फ० परिघ र० रत्नमय उ० ऊर्ध्व वि० आकाश में उ० उछालता खो० क्षोभ पमाडता अ० अधोलोक को कं० कंपावता मे० पृथ्वी

सूत्र रहघण घणाइयं करेइ, करेइत्ता पायदद्दरगं करेइ, करेइत्ता भूमिचवेडं दलयइ, दलय-इत्ता सीहनादं नदइ, नदइत्ता उच्छोलेइ, उच्छोलेइत्ता पच्छोलेइ, पच्छोलेइत्ता ति-वतिं छिंदइ, तिवतिं छिंदइत्ता वामं भुयं ऊसवेइ, ऊसवेइत्ता दाहिण हत्थपएसिणीए अंगुट्ठनहेणय, वितिरिच्छं मुहं विडंवइ, विडंवइत्ता महया महया सद्दणं कलकलरवं

भावार्थ गर्जारव समान शब्द करता हुवा, घोडे के हेंसार समान हेंकार करता हुवा, हाथी की समान गुलगुलाट करता हुवा, रथ की समान घणघणाट करता हुवा, भूमि पर पांव आस्फालता हुवा, हाथों के चपेटे भूमि पर मारता हुवा, सिंहसमान नाद करता हुवा, मर्कट की तरह उछल उछल कर आता हुवा, मल्ल की माफक रंगभूमि में त्रिपद छेद करता हुवा, बॉयी भुजा को उपर ऊंची रखता हुवा, दक्षिण भुजा के पांव की अंगुलीयों मरोडता हुवा, मुच्छों को वल घालता हुवा, अत्यंत जोर से कल कलाट करता हुआ, मात्र परिघ रत्न नामक आयुध को धारण करता हुआ, ऊर्ध्व आकाश में ऊछाला खाता हुआ, क्षोभ उत्पन्न करता

शब्दार्थ आत्मरक्षक देव सा० सहस्र क० कहां ता० उन की अ० अनेक अ० अप्सरा को० कोडी अ० आज ह० हनता हूं म० मन्थन करताहूं व० वधकरताहूं अ० आज म० मुझे अ० अवश अ० अप्सरा व० वशसे उ० नमस्कार करो ति० ऐसा करके तं० उन को अ० अनिष्ट अ० अकान्त अ० अप्रिय अ० अशुभ अ० अमनोज्ञ अ० अमनाम फ० कठोर गि० भाषा नि० कही ॥२८॥ त० तब स० शक्र दे० देवेन्द्र तं० उस अ० अनिष्ट जा० यावत्

सूत्र चउरासीइ सामाणिय साहस्सीओ, जाव कहिणं ताओ चत्तारिचउरासीओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ, कहिणं ताओ अणेगाओ अच्छराकोडीओ? अज्ज हणामि, अज्ज महेमि, अज्जवहेमि, अज्जममं अवसाओ अच्छराओ वसमुवणमंतु त्तिकट्टु, तं आणिट्ठं, अकंतं, अप्पियं, असुभं, अमणुण्णं, अमणामं, फरुसंगिरं निसिरइ ॥ २८ ॥ तएणं

मारा और बडे बडे शब्द से बोलने लगा अरे शक्र देवेन्द्र देवराजा कहां हैं? उसके चौरासी हजार सामानिक यावत् तीन लाख छत्तीस हजार आत्म रक्षक देव और अनेक क्रोड अप्सरा का परिवार कहां है? आज मैं उन को मारूंगा, इन सब का मैं वध करूंगा, आज मैं दधि समान मन्थन करूंगा, आजदिन तक तू मेरे वश में नहीं था अब देवियों सहित वश होकर मुझे नमस्कार करो ऐसा अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमणाम यावत् कठोर वचन निकालने लगा. ॥ २८ ॥ उस समय में ऐसी अनिष्ट

शब्दार्थ अ० अमनाम अ० नहीं सुनी फ० कठोर गि० भाषा सो० सूनकर नि० अवधारकर आ० आसुरत्व जा० यावत् मि० देदीप्यमान ति० तीनरेखा रूप भिं० भृकुटी नि० कपाल में सा० चढाकर च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसा व० बोले च० चमर अ० असुरेंद्र अ० अप्रार्थितका प० प्रार्थित जा० यावत् ही० हीन पु० पुन्य चतुर्दशी वाला अ० आज न० नहीं भ० है ना० नहीं ते० तुझे सु० सुख अ० है त्ति० ऐसा करके सी० सिंहासन पे ग० बैठे हुवे व० वज्र प० ग्रहणकर तं० उस को ज० जलता फु० फुट फुट शब्द

सूत्र से सक्के देविंदे देवराया तं आणिट्ठं जाव अमणामं अस्सुयपुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निलाडे साहट्टु चमरं असुरिंदं असुररायं एवं वयासी हं भो चमरा असुरिंदा असुरराया अप्पत्थियपत्थिया जाव हीणपुण्णचाउद्दसा ! अज्ज न भवसि, नाहि ते सुहमत्थि त्तिकट्टु, तत्थेव सीहासणवरगए वज्जं परामुसइ परामुसइत्ता, तं जलंतं, फुडंतं, तथतडंतं उक्कासहस्साइं

भावार्थ यावत् अमनोज्ञ, पहिले कदापि नहीं सुनी वैसी कठोर भाषा सुनकर शक्रेन्द्र क्रोधित हुवा, और दांत पीसता हुवा भृकुटी चढाकर चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा को ऐसा कहा अरे असुरेन्द्र, असुर का राजा चमर ! तु अप्रार्थित की प्रार्थना करनेवाला यावत् हीन पुण्यचतुर्दशी में उत्पन्न होनेवाला है. आज तुझे सुख नहीं होगा. ऐसा कहकर सिंहासन पर बैठे हुवे शक्रदेवेन्द्र देवराजाने वज्र उठाया उठाकर

शब्दार्थ करता त० त्रट त्रट अवाज करता उ० उल्का सहस्र मु० मूकता हुवा जा० ज्वाला सहस्र मु० मुकता इं० अंगारे म० शत सहस्र प० विखरता फु० अग्नि कण जा० ज्वाला मा० माल्य स० सहस्र च० चक्षु वि० विक्षेप दृष्टि का प० प्रतिघात प० करता हु० अग्नि व० बहुत ते० तेज दिं० देदीप्यमान वे० वेगवन्त फु० फूला हुवा किं० किंशुक समान म० महाभयंकर च० चमर अ० असुरेंद्र का व०, वध केलिये व० वज्र नि० नीकाला ॥ ५९ ॥ त० तब च० चमर अ० असुरेंद्र तं० उस ज० जलता जा० यावत् भ० भयंकर

मूल विणि मुयमाणं २ जाला सहस्साइं मुयमाणं इंगाल सय सहस्साइं पविक्खिरमाणं; पविक्खिरमाणं, फुलिंग जाला माला सहस्सेहिं चक्खु विक्खेवदिट्ठिपडिघायं वि पकरेमाणे हुयवहुयतिरगतेयदिप्पंतं, जइणवेगं, फुल्लकिंसुयसमाणं महब्भयं भयंकरं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो वहाए वज्जं निसिरइ, ॥ २९ ॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया तं जलंतं जाव भयंकरं वज्जमभिमुहं आवयमाणं पासइ, पासइत्ता

भावार्थ अग्नि समान जलता हुआ, फुट फुट शब्द करताहुवा, और त्रट त्रट करता हुवा सहस्र विद्युत समान भलभलाट करता हुवा, ज्वाला को छोडता हुवा, हजारों अंगार की वर्षा वर्षाता हुवा, बहुत प्रकाश करता हुवा, अग्निसे अधिक तेजवाला, किंशुक कुसुम समानफुला हुवा, और महाभय उत्पन्न करता हुवा ऐसा भयंकर वज्र चमर असुरेन्द्र के वध के लिये छोडा ॥ २९ ॥ फीर ऐसा जलता हुवा यावत् महाभय करने-

शब्दार्थ व० वज्र अ० सन्मुख आ० आता पा० देखकर झि० चिन्तवनकर पि० इच्छकर त० तैसे सं० भगा हुवा म० मुकुट वि० विस्तार सा० आलंवन सहित ह० हस्त आ० आभरण उ० उर्ध्व पांव अ० नीचाशिर क० कक्षा ग० रहा हुवा से० स्वेद मु० मूकता ता० उस उ० उत्कृष्ट जा० यावत् ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र म० मध्य से वी० अतिक्रमता जे० जहां जं० जंबुद्वीप जा० यावत् म० मेरी अं०

सूत्र झियाइ, पिहाइ, झियाइत्ता पिहाइत्ता तहेव संभग्ग मउड विडए, सालंबहत्थाभरणे उड्ढंपाए अहो सिरे कक्खागयसेयंपिव विणिं मुयमाणे मुयमाणे ताए उक्किट्ठाए जाव तिरिय मसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं वीईवयमाणे २ जेणेव जंबूद्दीवे दीवे जाव जेणेव असोगवर पायवे, जेणेव ममअंतिए तेणेव उवागच्छइ उवा-

भावार्थ वाला वज्र को सामने आता हुवा देखकर वह चमरेन्द्र यह क्या होगा ऐसा चिन्तवन करने लगा, यह मुझे होवे ऐसी इच्छा करने लगा, अपने स्थान जाने को वांच्छने लगा, और वज्र का आताप नहीं सहन होने से चक्षु बंध करता हुवा व्याकुल होने लगा. इस तरह चिन्तवन करके पीछा फीरा, सिर का मुकुट नीचे पडने लगा, आभरणों हस्त से पकडे, अधो गमन होने से ऊंचे पांव नीचा सिर हुवा और जैसे मनुष्य के शरीर में से स्वेद छूटता है वैसे ही चमरेन्द्र के शरीर में से स्वेद रूप पुद्गल टपकनेलगा. फीर देव की दीव्य गति से यावत् असंख्यात दीप समुद्र की मध्य में होकर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में संसुमार नगर के

व० वज्र दो० दो से जं० जिस को व० वज्र दो० दो से त० उसको च० चमर ति० तीन से स० सर्व से थोडा स० शक्र दे० देवेन्द्र का उ० ऊर्ध्व लोक कं० कंड अ० अधोलोक कं० कंड सं० संख्यात गुणा जा० जितना खि० क्षेत्र च० चमर अ० अधो उ० जावे ए० एक समय में तं० उस को स० शक्र दो० दो से व० वज्र ति० तीन से स० सर्वसे थोडा च० चमर अ० असुरेंद्र का अ० अधोलोक कं० कंड उ० ऊर्ध्व लोक का कंड सं०

वं वज्जे दोहिं, तं चमरे तिहिं ॥ सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उड्ढलोयकंडए अहेलोय कंडए संखेज्जगुणे जावइयंखेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया अहे उवयइ एक्केणं समएणं, तं सक्के दोहिं, तं वज्जे तिहिं, ॥ सव्वत्थोवे चमरस्स असुरिंदस्स [अ]सुररण्णो अहेलोयकंडए, उड्ढलोयकंडए संखेज्जगुणे, एवं खलु गोयमा ! सक्केणं

[सम]य में जाता है और चमरेन्द्र तीन समय में जाता है. शक्र देवेन्द्रको उपर जाने में सब से थोडा काल लगता है उस से अधो लोक में जाने में संख्यात गुना (द्विगुना.) काल लगता है. * एक समय में [च]मरेंद्र जितना नीचे उतरता है उतना शक्रेंद्र दो समय में उतरता है और वज्र तीन समय में उतरता है

* यहां पर द्विगुना काल लेनेका मतलब यह है कि शक्रेंद्रको ऊंचा जानेका व चमरेंद्र को नीचा आने में दोनों बराबर हैं. एक समय में चमरेंद्र जितना नीचे जाता है उतनाही क्षेत्र नीचे आने में [शक्रेंद्र]को दो समय लगते हैं.

शब्दार्थ व० वज्र अ० सन्मुख आ० आता पा० देखकर झि० चिन्तवनकर पि० इच्छकर त० तैसे सं० भगा हुवा म० मुकुट वि० विस्तार सा० आलंबन सहित ह० हस्त आ० आभरण उ० उर्ध्व पांव अ० नीचाशिर क० कक्षा ग० रहा हुवा से० स्वेद मु० मूकता ता० उस उ० उत्कृष्ट जा० यावत ति० तिर्च्छा अ० असंख्यात दी० द्वीप समुद्र म० मध्य से वी० अतिक्रमता जे० जहां जं० जंबुद्वीप जा० यावत् म० मेरी अं०

सूत्र झियाइ, पिहाइ, झियाइत्ता पिहाइत्ता तहेव संभग्ग मउड विडए, सालंबहत्थाभरणे उड्ढंपाए अहो सिरे कक्खागयसेयंपिव विणि मुयमाणे मुयमाणे ताए उक्किट्ठाए जाव तिरिय मसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं वीईवयमाणे २ जेणेव जंबूदीवे दीवे जाव जेणेव असोगवर पायवे, जेणेव ममअंतिए तेणेव उवागच्छइ उवा-

भावार्थ वाला वज्र को सामने आता हुवा देखकर वह चमरेन्द्र यह क्या होगा ऐसा चिन्तवन करने लगा, यह मुझे होवे ऐसी इच्छा करने लगा, अपने स्थान जाने को वांच्छने लगा, और वज्र का आताप नहीं सहन होने से चक्षु बंध करता हुवा व्याकुल होने लगा. इस तरह चिन्तवन करके पीछा फीरा, सिर का मुकुट नीचे पडने लगा, आभरणों हस्त से पकडे, अधो गमन होने से ऊंचे पांव नीचा सिर हुवा और जैसे मनुष्य के शरीर में से स्वेद छूटता है वैसे ही चमरेन्द्र के शरीर में से स्वेद रूप पुद्गल टपकनेलगा. फीर देव की दीव्य गति से यावत् असंख्यात दीप समुद्र की मध्य में होकर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में संसुमार नगर के

शब्दार्थ पास उ० आकर भी० डरा हुवा भ० भय से ग० घर्घर स्वर भ० भगवन् स० सरण मे० मुझे त्ति० एसो बू० कहता प० मेरे दो० दोनों पा० पांव के अं० अंतर में वे० त्वरासे स० पडा ॥ ३० ॥ त० तब त० उस स० शक्र दे० देवेन्द्र को ए० इसरूप अ० अध्यसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा णो० नहीं ख० निश्चय प० शक्ति वंत च० चमर अ० असुरेंद्र णो० नहीं० स० समर्थ च० चमर असुरेंद्र नो० नहीं वि० विषय च० चमर अ० असुरेंद्र का आ० स्वत की णि० नेश्राय से उ० ऊर्ध्व उ० उडकर जा० यावत् सो० सौधर्म देव-

सूत्र गच्छइत्ता, भीए भयगग्गरसरे भगवं सरणं मेत्ति बूयमाणे ममं दोण्हवि पायाणं अंतरंसि झत्तिवेगेणं समोवडिए ॥ ३० ॥ तएणं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था णो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया णोखलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, णो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो णिस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मेकप्पे. णण्णत्थ अरिहंतेवा,

भावार्थ अशोक वनखण्ड के अशोक वृक्ष नीचे पृथ्वी शिला पट्टपर जहां मैं ध्यानस्थ था वहां वह चमरेन्द्र आया. आकरके डरता हुवा भय स्वर से अहो भगवन् ! आपका मुझे शरण हो ऐसे बोलता हुवा मेरे दोनों पांवों की बीच में शीघ्र वेग से गिरपडा ॥ ३० ॥ फीर शक्रेन्द्र को ऐसा अध्यवसाय यावत् चिन्तवन हुवा कि स्वयं चमरेंद्र यहां आने को समर्थ नहीं है वैसे ही अन्य किसी की नेश्राय विना ऊंचे सौधर्म देवलोक में

शब्दार्थ लोक ण० नहीं अ० अन्यथा अ० अरिहंत अ० छद्मस्थ अरिहंत अ० अनगार भा० भवितात्मा णि०नेश्राय से उ० ऊर्ध्व उ० उडे जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक तं० वह म० महा दुःख त० तथारूप अ० अरिहंत भ० भगवन्त अ० अनगारकी अ० आशातनाकरे॥३१॥ ति० ऐसा करके ओ० अवधिज्ञान को प०प्रयुंजकर म०मुझे ओ०अवधि ज्ञान से आ०देखकर हा०हाहा अ० अहो ह०हणाया अ०मैं अ०हूं त्ति०ऐसा करके ता० उस उ०उत्कृष्ट जा०यावत् दि०दीव्य दे०देवगति से व०वज्र की वी० रस्ते भ०पीछे जाना ति०तिर्च्छा अ०

सूत्र अरिहंतचेइयाणिवा, अणगारेवा भावियप्पाणो णिस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मे कप्पे तं महादुक्खं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं अणगाराणय अच्चासायणयाए ॥ ३१ ॥ त्तिकट्टु, ओहिं पउंजइ, पउंजइत्ता ममं ओहिणा आभोएइ २ त्ता, हाहा अहो हतो अहंमासि त्तिकट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव दिव्वाए देव गईए वज्जस्स

भावार्थ आने का विषय नहीं है. अरिहंत, अरिहंत चैत्य सो छद्मस्थ, अनगार और भवितात्मा की नेश्राय विना ऊंचे उडने को यावत् सौधर्म देवलोक में आने को समर्थ नहीं है. इस से अरिहंत भगवंत यावत् अनगार को आसातना से महा दुःख होगा ॥ ३१ ॥ ऐसा करके अवधि ज्ञान प्रयुंजा. (लगाया) और अवधि ज्ञान से मुझे देखकर हा हा अरे अरे ऐसा खेद करके उस उत्कृष्ट यावत् देव की दीव्य गति से वज्र के

शब्दार्थ

पास उ० आकर भी० डरा हुवा भ० भय से ग० गद्गद स्वर भ० भगवन् स० सरण मे० मुझे त्ति० एसो वू० कहता म० मेरे दो० दोनों पा० पांव के अं० अंतर में वे० त्वरासे स० पडा ॥ ३० ॥ त० तव त० उस स० शक्र दे० देवेन्द्र को ए० इसरूप अ० अध्यसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा णो० नहीं ख० निश्चय प० शक्ति वंत च० चमर अ० असुरेंद्र णो० नहीं० स० समर्थ च० चमर असुरेंद्र नो० नहीं त्रि० त्रिपय च० चमर अ० असुरेंद्र का आ० स्वत की णि० नेश्राय से उ० ऊर्ध्व उ० उडकर जा० यावत् सो० सौधर्म देव-

मूल

गच्छइत्ता, भीए भयगग्गरसरे भगवं सरणं मेत्ति बूयमाणे ममं दोण्हवि पायाणं अंतरंसि झत्तिवेगेणं समोवडिए ॥ ३० ॥ तएणं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था णो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया णोखलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, णो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो णिस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मेकप्पे. णण्णत्थ अरिहंतेवा,

भावार्थ

अशोक वनखण्ड के अशोक वृक्ष नीचे पृथ्वी शिला पट्टपर जहां मैं ध्यानस्थ था वहां वह चमरेन्द्र आया. आकरके डरता हुवा भग्न स्वर से अहो भगवन् ! आपका मुझे शरण हो ऐसे बोलता हुवा मेरे दोनों पांवों की बीच में शीघ्र वेग से गिरपडा ॥ ३० ॥ फीर शक्रेन्द्र को ऐसा अध्यवसाय यावत् चिन्तवन हुवा कि स्वयं चमरेंद्र यहां आने को समर्थ नहीं है वैसे ही अन्य किसी की नेश्राय विना ऊंचे सौधर्म देवलोक में

दार्थ तब कु० कुपित होते च० चमर अ० असुरेंद्र का व० वध केलिये व० वज्र नि० नीकाला त० तब म० मुझे ए० इसरूप अ० अध्यवसाय जा० यावत् स०उत्पन्न हुवा णो०नहीं प० समर्थ च० चमर अ० असुरेंद्र त० तैसे जा० यावत ओ० अवधि ज्ञान को प० प्रयुंजता हूं दे० देवानुप्रिय को ओ० अवधिज्ञान से आ० देखे जा० यावत् जे० जहां दे० देवानुप्रिय ते० तहां उ० आया दे० देवानुप्रिय का च० चार अंगुल अ० अप्राप्त व० वज्र प० ग्रहण करता हूं व० वज्र को प० ग्रहण करने केलिये आ० आया इ० यहां

सूत्र अहं तुब्भं नीसाए चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णो सयमेव अच्चासाइए, तएणं मए कुविएणं समाणेणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो वहाए वज्जे निसिट्ठे, तएणं ममं इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था, णो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया तहेव जाव ओहिं पउंजामि, देवाणुप्पिए ओहिणा आभोएमि, हाहा जाव जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि देवाणुप्पियाणं चउरंगुलमसंपत्तं वज्जं पाडिसाहरामि. वज्जं पडिसाहरणट्ठयाएणं इह मागए,

भावार्थ का शरण लेकरके चमरेन्द्रने मेरी आसातना की इस से बहुत क्रोधित होकर मैंने असुरेन्द्र का वध के लिये वज्र फेंका. फीर मुझे ऐसा अध्यवसाय यावत् चिन्तवन हुवा कि चमर असुरेन्द्र ऊर्ध्व सौधर्म देवलोक में आने को समर्थ नहीं है, अरिहंत यावत् अनगार का शरण लिये विना नहीं आसकता है. इस से मैंने अवधि ज्ञान प्रयुंजा और अवधि ज्ञान से आप को देखे. फीर खेद करता हुवा आपकी समीप आया

शब्दार्थ

असंख्यात दी० द्वीप समुद्र म० मध्य से जा० यावत् जे० जहां अशोक पा० वृक्ष म० मेरी अं० पास ते० तहां उ० आकर मं० मुझे च० चार अंगुल अ० अप्राप्त व० वज्र प० संहरन करे मु० मुष्टिकेवात से के० केशाग्र वी० चलित हुवे ॥ ३२ ॥ त० तब से० वह स० शक्र दे० देवेन्द्र व० वज्र को प० संहरन कर म० मुझे ति० तीनवक्त आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० करके न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले भं० भगवन् अ० मैं तु० तुमारी नी० नेश्राय से च० चमर अ० असुरेंद्र स० स्वयं अ० भ्रष्टकरने को त०

सूत्र

वीहिं अणुगच्छमाणे तिरिय मसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं जाव जेणेव असोगवरपायवे जेणेव मंम अंतिए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, ममंचणं चउ-रंगुलमसंपत्तं वज्जं पडिसाहरइ अभियाइमे गोयमा ! मुट्ठिवाएणं केसग्गे वीइत्था ॥ ३२ ॥ तएणं से सक्के देविंदे देवराया वज्जं पडिसाहरित्ता, ममं तिक्खुत्तो आया-हिणं पयाहिणं करेइ करेइत्ता वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता एवं वयासी एवं खलुभंते !

भावार्थ

रस्ते को अनुसरता हुवा असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघ कर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में सुंसुमार नामक नगर के अशोक वनखण्ड के अशोक वृक्ष नीचे मेरी समीप आया. और मेरे से चार अंगुल दूर रहते वज्र पीछा खींच लिया. वज्र खींचने के लिये जो मुष्टिबंध की, उस के वायु से मेरे केशाग्र चले ॥ ३२ ॥ वज्र खींचे पीछे मुझे तीन आदान प्रदक्षिणाकर वंदना नमस्कार कर ऐसा बोला अहो भगवन् ! आप

शब्दार्थ कहा मु० मुक्त अ० है भो० भो च० चमर अ० असुरेंद्र स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के प० प्रभाव से न० नहीं ते० तुझे इ० अब म० मुझ से भ० भय अ० है. त्ति० ऐसा करके ज० जिस दिशि से पा० आये ता० उसदिशा में प० पीछे गये ॥ ३३ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को न० नमस्कार कर व० बोले दे० देव भं० भगवन्त म० महाऋद्धि म० महाद्युति जा० यावत् म० महानुभाग पु० पहिले पो० पुद्गल खि० फेंक कर प० समर्थ तं० उसको अ० पीछे जाकर गे०

सूत्र असुरिंदं असुररायं एवं वयासी-मुक्कोसि णं भो चमरा असुरिंदा असुरराया । समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेणं, नाहिं तेदाणिं ममाओ भयमत्थि त्तिकट्टु, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ ३३ ॥ भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एवं वयासी देवेणं भंते ? महिड्ढीए महज्जुईए जाव महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ताणं गेण्हित्तए

भावार्थ अरे असुरेन्द्र असुरका राजा चमर ! श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के प्रभाव से मेरी तर्फ से तुझे भय नहीं है ऐसा करके जहां से आया था वहां पीछा गया ॥ ३३ ॥ यहां पर प्रस्तरादि [पत्थर] पुद्गल फेंके पीछे मनुष्य पीछा लेने को समर्थ नहीं होता है तो देव क्या समर्थ होवे. शक्रने वज्र फेंका और पीछा वज्र ले लिया इसलिये उस का यहां पर प्रश्न करते हैं. श्री गौतम स्वामी महावीर

शब्दार्थ मं० प्राप्त इ० यहां अ० आज उ० उपशम को प्राप्त होकर वि० विचरता हूं खा० क्षमाता हूं दे० देवानुप्रिय ख०क्षमाकरो मं०मुझे ख०क्षमाकरने अ० योग्य दे० देवानुप्रिय न०नहीं भु०वारंवार ए०ऐसा क० करने को त्ति० ऐसा करके म० मुझे वं० वंदना कर न० नमस्कार कर उ० ईशान कोन में अ० अतिक्रम, वा० बांया पा० पांव से ति० तीनवक्त भू० भूमि को दा० विदार च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसा व०

सूत्र इह समोसढे, इह संपत्ते, इहेव अज्ज उवसंपजित्ताणं विहरामि ॥ तं खामेमिणं देवाणुप्पिया ? खमं तुमं देवाणुप्पिया ? खंतुमरिहंतुणं देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो २ एवं करणयाए त्तिकट्टु ममं वंदइ नमंसइ, नमंसइत्ता उत्तर पुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ अवक्कमइत्ता, वामेणं पादेणं तिक्खुत्तो भूमिं दालेइ: चमर अ-

भावार्थ और आप से चार अंगुल प्रमाण वज्र दूर रहते मैंने पीछा खींच लीया. वज्र पीछा खींचने के लिये मैं यहां पर आया हुआ हूं. यहां समोसर्या, व प्राप्त हुआ हूं. यहां पर इस उद्यान में आज पाप को उपशमाता हुवा विचरता हूं. इस से अहो देवानुप्रिय ! मैं आप की क्षमा याचता हूं, आप मुझे क्षमा करें. आप क्षमा करने योग्य हो. अब मैं वारंवार ऐसा नहीं करूंगा ऐसा कहकर वंदना नमस्कार करके ईशान कोन में गया. और बायें पांव से भूमि को तीन वक्त विदार कर चमरेन्द्र को ऐसा कहने लगा कि

शब्दार्थ कहा मु० मुक्त अ० है भो० भो च० चमर अ० असुरेंद्र स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के प० प्रभाव से न० नहीं ते० तुझे इ० अत्र म० मुझ से भ० भय अ० है. त्ति० ऐसा करके ज० जिस दिशि से पा० आये ता० उसदिशा में प० पीछे गये ॥ ३२ ॥ भ० भगवान् गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को न० नमस्कार कर व० बोले दे० देव भं० भगवन्त म० महाऋद्धि म० महाद्युति जा० यावत् म० महानुभाग पु० पहिले पो० पुद्गल खि० फेंक कर प० समर्थ तं० उसको अ० पीछे जाकर गे०

सूत्र असुरिंदं असुररायं एवं वयासी-मुक्कोसि णं भो चमरा असुरिंदा असुरराया। समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेणं, नाहिं तेदाणिं ममाओ भयमत्थि त्तिकट्टु, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ ३२ ॥ भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता, एवं वयासी देवेणं भंते ? महिड्ढीए महज्जुईए जाव महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ताणं गेण्हित्तए

भावार्थ अरे असुरेन्द्र असुरका राजा चमर ! श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के प्रभाव से मेरी तर्फ से तुझे भय नहीं है ऐसा करके जहां से आया था वहां पीछा गया ॥ ३२ ॥ यहां पर प्रस्तरादि [पत्थर] पुद्गल फेंके पीछे मनुष्य पीछा लेने को समर्थ नहीं होता है तो देव क्या समर्थ होवे. शक्रने वज्र फेंका और पीछा वज्र ले लिया इसलिये उस का यहां पर प्रश्न करते हैं. श्री गौतम स्वामी महावीर

शब्दार्थ

सं० प्राप्त इ० यहां अ० आज उ० उपशम को प्राप्त होकर वि० विचरता हूं खा० क्षमाता हूं दे० देवानुप्रिय ख०क्षमाकरो में०मुझे ख०क्षमाकरने अ० योग्य दे०देवानुप्रिय न०नहीं भु०वारंवार ए०ऐसा क० करने को त्ति० ऐसा करके म० मुझे वं० वंदना कर न० नमस्कार कर उ० ईशान कोन में अ० अतिक्रम, वा० वांया पा० पांव से ति० तीनवक्त भू० भूमि को दा० विदार च० चमर अ० असुरेंद्र को ए० ऐसा व०

सूत्र

इह समोसढे, इह संपत्ते, इहेव अज्ज उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ तं खामेमिणं देवाणुप्पिया ? खमं तुमं देवाणुप्पिया ? खंतुमरिहंतुणं देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो २ एवं करणयाए त्तिकट्टु ममं वंदइ नमंसइ, नमंसइत्ता उत्तर पुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ अवक्कमइत्ता, वामेणं पादेणं तिक्खुत्तो भूमिं दालेइः चमर अ-

भावार्थ

और आप से चार अंगुल प्रमाण वज्र दूर रहते मैंने पीछा खींच लीया. वज्र पीछा खींचने के लिये मैं यहां पर आया हुवा हूं. यहां समोसर्या, व प्राप्त हुवा हूं. यहां पर इस उद्यान में आज पाप को उपशमाता हुवा विचरता हूं. इस से अहो देवानुप्रिय ! मैं आप की क्षमा याचता हूं,. आप मुझे क्षमा करें. आप क्षमा करने योग्य हो. अब मैं वारंवार ऐसा नहीं करूंगा ऐसा कहकर वंदना नमस्कार करके ईशान कोन में गया. और वायें पांव से भूमि को तीन वक्त विदार कर चमरेन्द्र को ऐसा कहने लगा कि

शब्दार्थ संख्यात गुणा ए० ऐसे ॥ ३९ ॥ स० शक्र दे० देवेंद्र का उ० ऊर्ध्व अ० अधो ति० तिर्च्छा ग० गति विषय क०कितना क०किससे अ०अल्प ब०बहुत तु०तुल्य वि०विशेषाधिक गो०गौतम स०सर्व से थोडा खे० क्षेत्र स० शक्र दे० देवेन्द्र अ० अधो उ० जावे ए० एक समय में ति० तिर्च्छा सं० संख्यातवा भागमें ग०

सूत्र देविंदेणं देवरण्णो चमरे असुरिंदे असुरराया नो संचाएइ साहत्थिं गेण्हित्तए ॥ ३५ ॥ सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो उड्ढं अहेतिरियंच गइविसययस्स कयरे कयरे-हिंतो अप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तं सक्के दे-विंदे देवराया अहे उवयइ, एक्केणं समएणं तिरियं संखेज्जेभागे गच्छइ, उड्ढं संखे-

भावार्थ चमर असुरेंद्र को नीचे आने में सब से थोडा काल लगता है उस से ऊर्ध्व जाने में संख्यात गुना काल लगता है. इस से अहो गौतम ! शक्रेन्द्र असुरेन्द्र को हाथ से पकडने को समर्थ नहीं है ॥ ३९ ॥ अब शक्रेंद्र, चमरेंद्र व वज्र इन की गति का अल्पाबहुत्व करते हैं. अहो भगवन् ! शक्र देवेंद्र का ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् गति विषय में से कौन किस से अल्प, बहुत, तुल्य या विशेषाधिक है ?, अहो गौतम ! सब से थोडा क्षेत्र शक्र देवेंद्र नीचे उतरता है, इस से संख्यात भाग अधिक तिर्च्छी दिशा के क्षेत्रका आक्रमण करता है उस से ऊर्ध्व दिशा का क्षेत्र संख्यात भाग अधिक जाता है. जैसे शक्र नामक देवेन्द्र एक समय में एक योजन नीचे आवे, उस के दो भाग करके उस में का एक भाग उक्त योजन में मीलाने से

शब्दार्थ व० वज्र दो० दो से जं० जिस को व० वज्र दो० दो से ते० उसको च० चमर ति० तीन से स० सर्व से थोडा स० शक्र दे० देवेन्द्र का उ० ऊर्ध्व लोक कं० कंड अ० अधोलोक कं० कंड सं० संख्यात गुणा जा० जितना खि० क्षेत्र च० चमर अ० अधो उ० जावे ए० एक समय में तं० उस को स० शक्र दो० दो से व० वज्र ति० तीन से स० सर्व से थोडा च० चमर अ० असुरेंद्र का अ० अधोलोक कं० कंड उ० ऊर्ध्व लोक का कंड सं०

सूत्र वं वज्जे दोहिं, तं चमरे तिहिं ॥ सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उड्डुलोयकंडए अहेलोय कंडए संखेज्जगुणे जावइयंखेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया अहे उवयइ एक्केणं समएणं, तं सक्के दोहिं, तं वज्जे तिहिं, ॥ सव्वत्थोवे चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अहेलोयकंडए, उड्डुलोयकंडए संखेज्जगुणे, एवं खलु गोयमा ! सक्केणं

भावार्थ दो समय में जाता है और चमरेन्द्र तीन समय में जाता है. शक्र देवेन्द्रको उपर जाने में सब से थोडा काल लगता है उस से अधो लोक में जाने में संख्यात गुना (द्विगुना,) काल लगता है. * एक समय में असुरेंद्र जितना नीचे उतरता है उतना शक्रेंद्र दो समय में उतरता है और वज्र तीन समय में उतरता है

* यहां पर द्विगुना काल लेनेका मतलब यह है कि शक्रेंद्रको ऊंचा जानेका व चमरेंद्र को नीचा आने का काल में दोनों बराबर हैं. एक समय में चमरेंद्र जितना नीचे जाता है उतनाही क्षेत्र नीचे आने में शक्रेंद्र को दो समय लगते हैं.

दार्थ अधो ति० तिर्च्छा ग० गति विषय क० कितना क० किस से अ० अल्प ब० बहुत तु० तुल्य वि० विशेषाधिक गो० गौतम स० सर्व से थोडा खे० क्षेत्र च० चमर अ० असुरेंद्र उ० ऊर्ध्व उ० जावे ए० एक समय में ति० तिर्च्छा सं० संख्यातवा भाग में अ० अधो सं० संख्यातवा भाग में स० शक्र दे० देवेन्द्र

सूत्र रियंच गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा, बहुएवा तुल्लेवा, विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवं खेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पयइ एक्केणं समएणं, तिरियं संखेज्जेभागे गच्छइ, अहे संखेज्जेभागे गच्छइ । सक्के देविंदे देवराया उड्ढं

भावार्थ भाग ऊना तीन गाउं, इस प्रकार एकेक गाउ के तीन भाग करने से एक योजन के बारह और दो योजन के चौवीस भाग होते हैं इस से यहां विचारते हैं तीन भाग कम तीन गाउ तब आठ भाग रहे इतना एक समय में ऊंचे जावे, उस से तिर्च्छा उक्त आठ भाग से दुगुने करे इतना क्षेत्र अधिक जावे इतना तिर्च्छा गति का विषय शीघ्र कहा है. उक्त दो विभाग कम छ गाऊ है उस में एक विभाग कम तीन गाऊ मीलाने से अर्थात् दो योजन पूर्ण होवे उतना अधिक अधो लोक में जावे. अहो भगवन् ! वज्र का ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् गति में ज्यादा, कमी, बराबर किस प्रकार कहा है ? अहो गौतम ! जैसे शक्रेन्द्र का कहा वैसे ही वज्र का जानना. वज्र सब से थोडा अधो गति में जावे, क्यों कि अधो गति में जाने में उन की गति की मंदता है. तिर्च्छा विशेषाधिक जावे और ऊर्ध्व गति में विशेषाधिक जावे. यहां

शब्दार्थ जावे उ० ऊर्ध्व सं० संख्यातवा भाग में ग० जावे ॥ ३६ ॥ च० चमर अ० असुरेंद्र उ० ऊर्ध्व अ०

सूत्र ज्जेभागे गच्छइ ॥ ३६ ॥ चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो उड्ढं अहे ति-

भावार्थ देढ योजन होवे इसलिये तीन संख्यात भाग तिर्च्छा लोक में जावे. तिर्च्छा लोक में योजन का आधा विभाग रहा था वह आधा विभाग उक्त देढ योजन में मीलाने से पूरे चार भाग संख्यात गुने होते हैं + ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र का ऊर्ध्व अधो व तिर्यक् गति का विषय में कौन किससे अल्प, बहुत, तुल्य या विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! एक समय में चमर असुरेन्द्र सब से थोडा ऊर्ध्व लोक में जाता है इस से तिर्च्छा लोक में संख्यात गुणा अधिक क्षेत्र जाता है और उस से अधो लोक में संख्यात भाग अधिक जाता है. एक समय ऊर्ध्व गति के विषय में उस के मंदपने की कल्पना से तीन

+ यहां कोई प्रश्न करे कि सूत्र में संख्यात भाग मात्र ही ग्रहण किया है और यह नियमित भाग कैसे बना सकते हो ? जितना क्षेत्र चमरेंद्र नीची दिशामें एक समय में जाता है उतना क्षेत्र जाने को शक्र देवेन्द्र को दो समय लगता है वैसे ही शक्रेन्द्र का ऊर्ध्व गमन काल और चमरेन्द्र का अधो गमन काल तुल्य है इस से निश्चय होता है कि दो समय में जितना क्षेत्र शक्रेन्द्र नीचे आता है उतना क्षेत्र उपर एक समय में जाता है. इस से अधो क्षेत्र दुगुना कहा. और बीच का तीर्च्छा क्षेत्र देढ गुना कहा. वैसे ही चूर्णिकाकार भी कहते हैं कि एगे समएणं तिरियं दिवड्ढं गच्छइ उड्ढं दो जोयणाणि सक्कोत्ति ॥

पदार्थ — अधो ति० तिर्च्छी ग० गति विषय क० कितना क० किस से अ० अल्प ब० बहुत तु० तुल्य वि० विशेषाधिक गो० गौतम स० सर्व से थोडा खे० क्षेत्र च० चमर अ० असुरेंद्र उ० ऊर्ध्व उ० जावे ए० एक समय में ति० तिर्च्छा सं० संख्यातवा भाग में अ० अधो सं० संख्यातवा भाग में स० शक्र दे० देवेन्द्र

सूत्र — रियंच गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा, बहुएवा तुल्लेवा, विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवं खेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पयइ एक्केणं समएणं, तिरियं संखेज्जेभागे गच्छइ, अहे संखेज्जभागे गच्छइ । सक्के देविंदे देवराया उड्ढं

भावार्थ — भाग ऊना तीन गाउ, इस प्रकार एकेक गाउ के तीन भाग करने से एक योजन के बारह और दो योजन के चौवीस भाग होते हैं इस से यहां विचारते हैं तीन भाग कम तीन गाउ तब आठ भाग रहे, इतना एक समय में ऊंचे जावे, उस से तिर्च्छा उक्त आठ भाग से दुगुने करे इतना क्षेत्र अधिक जावे इतना तिर्च्छा गति का विषय शीघ्र कहा है. उक्त दो विभाग कम ▪ गाऊ है उस में एक विभाग कम तीन गाऊ मीलाने से अर्थात् दो योजन पूर्ण होवे उतना अधिक अधो लोक में जावे. अहो भगवन् ! वज्र का ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् गति में ज्यादा, कमी, बराबर किस प्रकार कहा है ? अहो गौतम ! जैसे शक्रेन्द्र का कहा वैसे ही वज्र का जानना. वज्र सब से थोडा अधो गति में जावे, क्यों कि अधो गति में जाने में उन की गति की मंदता है. तिर्च्छा विशेषाधिक जावे और ऊर्ध्व गति में विशेषाधिक जावे. यहां

शब्दार्थ उ० ऊर्ध्व उ० जावे ए० एक स० समय में तं० उस को व० वज्र दो० दो से च० चमर ति० तीन से न० विशेष वि० विशेषाधिक का०कहना ॥ ३७ ॥ स० शक्र दे० देवेंद्र का उ० नीचे आनेका उ० उपर जाने का का० काल क० कितना क० किससे अ० अल्प गो० गौतम स० सर्व थोडा स० शक्र दे० देवेंद्र

सूत्र उप्पयइ एक्केणं समएणं तं वज्जे दोहिं, तं चमरे तिहिं, वज्जं जहा सक्कस्स तहेव, नवरं विसेसाहियं कायव्वं ॥ ३७ ॥ सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो उवयण-कालस्सय उप्पयणकालस्सय कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा ?

भावार्थ कल्पना से तीसरा भाग कम एक योजन अधोलोक में जावे. उक्त आठ भाग में से एक गाऊ का तीन भाग करे ऐसे दो भाग आधिक तिर्च्छालोक में जाने से विशेषाधिक, ऊर्ध्व गति में एक योजन पूर्ण जावे इस से विशेषाधिक. यहां कोई प्रश्न करे कि सामान्य से विशेषाधिकपना कहा है तब उस के नियमित भाग कैसे हो सकते हैं ? एक समय में जितना क्षेत्र चमरेन्द्र अधो गति में उल्लंघता है उतना क्षेत्र शक्रेन्द्र दो समय में उल्लंघता है और वज्र तीन समय में उल्लंघता है. इस तरह शक्रेन्द्र की अधोगति की अपेक्षा से वज्र के तीन भाग कम अधोगति हुई. शक्र का नीचे जानेका काल और वज्र का ऊंचा जाने का काल बराबर है इस से जाना जाता है कि जितने समय में शक्रेन्द्र नीचे जाता है उतने समय में वज्र ऊंचे जाता है. ऊर्ध्व व अधोगति के बीच में तिर्च्छी गति है. इन दोनों के बीच में तिर्च्छीगति रही हुई है. इन दोनों के बीच में एक गाऊ के तीन भाग करे ऐसे दश भागवाला तिर्च्छीगति का प्रमाण कहा ॥३७॥

शब्दार्थ

का उ० ऊर्ध्व उ० चडने का काल उ० उतरने का काल सं० संख्यात गुणा च० चमर का ज० जैसे स० शक्र का ण० विशेष स० सर्व से थोडा उ० उतरने का काल उ० उपर जाने का सं० संख्यात गुणां व० वज्र की पु० पृच्छा गो० गौतम स० सर्व से थोडा उ० उपर जाने का उ० नीचे आने का वि० विशेषाधिक ॥ ३८ ॥ ए० इस व० वज्र का व० वज्र के अधिपति का च० चमर अ० असुरेंद्र का उ०

सूत्र

गोयमा ! सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उड्ढं उप्पयण काले, उवयणकाले संखेज्जगुणे, ॥ चमरस्सवि जहा सक्कस्स णवरं सव्वत्थोवे उवयणकाले, उप्पयणकाले संखेज्जगुणे ॥ वज्जस्स पुच्छा गोयमा ! सव्वत्थोवे उप्पयणकाले, उवयणकाले विसेसाहिए, ॥ ३८ ॥ एयस्सणं भंते ! वज्जस्स वज्जाहिवइस्स, चमरस्सय, असुरिंदस्स

भावार्थ

स्वामी	शक्र	वज्र	चमर
ऊर्ध्व	२४	१२	८
तिर्च्छा	१८	१०	१६
अधो	१२	८	२४

अब काल की अल्पाबहुत्व करते हैं. अहो भगवन् ! शक्रेंद्र को नीचे उतरने के काल में, उंचे चडने के काल में कोनसा अल्प, बहुत, तुल्य या विशेषाधिक है ? अहो गोतम ! शक्रेंद्र को ऊंचे जाने में सब से थोडा काल लगता है, क्यों की शक्र की ऊर्ध्व गति शीघ्र है. इस से नीचे उतरने का काल संख्यात गुना. चमरेंद्र को सब से थोडा नीचे उतरने का काल और उस से उपर जाने का काल संख्यात गुना. वज्र को सब से थोडा काल ऊंचे जाने में लगता है उस से नीचे आने में विशेषाधिक काल लगता है ॥ ३८ ॥ अब

शब्दार्थ उ० ऊर्ध्व उ० जावे ए० एक स० समय में तं० उस को व० वज्र दो० दो से च० चमर ति० तीन से न० विशेष वि० विशेषाधिक का०कहना ॥ ३७ ॥ स० शक्र दे० देवेंद्र का उ० नीचे आनेका उ० उपर जानेका का० काल क० कितना क० किससे अ० अल्प गो० गौतम स० सर्व थोडा स० शक्र दे० देवेंद्र

सूत्र उप्पयइ एकेणं समएणं तं वज्जे दोहिं, तं चमरे तिहिं, वज्जं जहा सक्कस्स तहेव, नवरं विसेसाहियं कायव्वं ॥ ३७ ॥ सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो उवयण-कालस्सय उप्पयणकालस्सय कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा ?

भावार्थ कल्पना से तीसरा भाग कम एक योजन अधोलोक में जावे. उक्त आठ भाग में से एक गाऊ का तीन भाग करे ऐसे दो भाग अधिक तिर्च्छालोक में जाने से विशेषाधिक, ऊर्ध्व गति में एक योजन पूर्ण जावे इस से विशेषाधिक. यहां कोई प्रश्न करे कि सामान्य से विशेषाधिकपना कहा है तब उस के नियमित भाग कैसे हो सकते हैं ? एक समय में जितना क्षेत्र चमरेन्द्र अधो गति में उल्लंघता है उतना क्षेत्र शक्रेन्द्र दो समय में उल्लंघता है और वज्र तीन समय में उल्लंघता है. इस तरह शक्रेन्द्र की अधोगति की अपेक्षा से वज्र के तीन भाग कम अधोगति हुई. शक्र का नीचे जानेका काल और वज्र का ऊंचा जाने का काल बराबर है इस से जाना जाता है कि जितने समय में शक्रेन्द्र नीचे जाता है उतने समय में वज्र ऊंचे जाता है. ऊर्ध्व व अधोगति के बीच में तिर्च्छी गति है. इन दोनों के बीच में तिर्च्छीगति रही हुई है. इन दोनों के बीच में एक गाऊ के तीन भाग करे ऐसे दश भागवाला तिर्च्छीगति का प्रमाण कहा ॥३७॥

शब्दार्थ हणाया म० मनसंकल्प चिं० चिंताशोक सा० सागर में सं० प्रविष्ट क० करतल में प० रहा हुवा मु० मुख अ० आर्तध्यान उ० ध्याते भू० भूमि में दि० दृष्टि झि० ध्यानकरे ॥४०॥ तं० तब तं० उन च० चमर अ० असुरेंद्र को सा० सामानिक देव ओ० हणाया म० मनसंकल्प जा० यावत् झि० ध्यानकरते पा० देखकर क० करतल जा० यावत् व० बोले किं० क्या दे० देवानुप्रिय उ० हणाया म० मनसंकल्प जा० यावत् झि०

सूत्र सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि उवहयमणसंकप्पे चिंतासोयसागरसंपविट्ठे करयल पल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए, भूमिगयदिट्ठीए झियाइ ॥ ४० ॥ तएणं तं चमरं असुरिंदं असुररायं सामाणियपरिसोववण्णया देवा ओहयमणसंकप्पं जाव झियाइमाणं पासइ पासइत्ता करयल जाव एवं वयासी किण्हं देवाणुप्पिया उवहयमणसंकप्पा जाव झियायह ॥ ४१ ॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया ते सामाणिय-

भावार्थ असुरेंद्र वज्र भयसे मुक्त हुवा, और शक्रेंद्र देवेंद्र से अपमान कराया हुवा, चमर चंचा राज्यधानी में सुधर्मा सभा में चमर नामक सिंहासन पर बैठा हुवा व मन का अभिमान हणाने से शोक सागर में डुबा हुवा गंडस्थलपर हथेली रखकर व भूमि पर दृष्टि रखकर आर्तध्यान करने लगा ॥४०॥ तब चमर असुरेंद्र की परिषदा के सामानिक देवोंने चमरेन्द्रको ऐसा आर्तध्यान करता हुवा देखकर पूछा कि अहो देवानुप्रिय! आप क्यों ऐसा आर्तध्यान करते हो ? ॥४१॥ उस समय में चमर नामक असुरेंद्रने उन सामानिक परिषदा के

शब्दार्थ नीचे आने का उ० ऊपर जाने का क० कितना क० किस से अ० अल्प ॥ ३९ ॥ त० तब च० चमर अ० असुरेंद्र व० वज्र का भ० भय से वि० मुक्त स० शक्र दे० देवेंद्र से व० बहुत अ० अपमान से अ० अपमानित हुवा च० चमर चंचा रा० रज्यधानी की स० सुधर्मा सभा में च० चमर सी० सिंहासनपे उ०

सूत्र असुररण्णो उवयणकालस्सय, उप्पयणकालस्सय, कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा ४, ? गोयमा ! सक्कस्सय उप्पयणकाले चमरस्सय उवयणकाले एसणं दोण्हवि तुल्ले, सव्वत्थोवे सक्कस्सय उवयण काले, वज्जस्सय उप्पयणकाले एसणं दोण्हवि तुल्ले संखेज्जगुणे, चमरस्सय उप्पयणकाले वज्जस्सय उवयणकाले एसणं दोण्हवि तुल्ले विसेसाहिए ॥ ३९ ॥ तएणं से चमरे असुरिंदे असुरराया वज्जभयविप्पमुक्के सक्केणं देविंदेणं देवरण्णो महया अवमाणेणं अवमाणिए समाणे चमरचंचाए रायहाणीए सभाए

तीनों की परस्पर अल्पाबहुत्व करते हैं अहो भगवन् ! वज्र, वज्राधिपति जो शक्र और चमर इन तीनों को ऊपर, नीचे जाने का काल में अल्प, बहुत्व तुल्य या विशेषाधिक यह किस प्रकार है ? अहो गौतम ! शक्र को ऊपर जाने का काल और चमर को नीचे जानेका काल परस्पर तुल्य व सब से थोडा, इस से शक्र का नीचे उतरने का और वज्र का ऊपर जाने का काल परस्पर तुल्य और संख्यात गुना इस से चमर का ऊपर जाने का और वज्र का नीचे आने का काल परस्पर तुल्य और विशेषाधिक ॥ ३९ ॥ अब चमर

सूत्र समं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव नमंसित्ता एवं वयासी एवं खलु भंते! मए तुब्भं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए जाव तं भद्दणं भवतु देवाणुप्पियाणं जस्संमि पभावेण आकिट्ठे जाव विहरामि. तं खामेमि णं देवाणुप्पिया जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ अवक्कमइत्ता जाव बत्तीसइबद्धं नट्टविहिं उवदंसेइ उवदंसेइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए एवं खलु गोयमा! चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णो सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, ठिई सागरोवमं, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं काहिइ ॥४२॥ किं पत्तियणं भंते!

भावार्थ शोक वृक्ष की नीचे पृथ्वी शीला पटपर मेरी पास आया और मुझे वंदना नमस्कार कर ऐसा कहा अहो भगवन्! आपकी नेश्राय से मैं शक्र देवेन्द्र की आसातना करने को गया यावत् आपका कल्याण होवो कि आप के प्रभाव से मैं बाधा पीडा रहित फीरता हूं. इस से अहो देवानुप्रिय! आप की मैं क्षमा चाहता हूं यावत् ईशान कौन में गया और बत्तीस प्रकार के नाटक बताकर जिस दिशा से आया था उसी दिशा में गया. इस तरह अहो गौतम! चमर असुरेन्द्रको ऐसी दीव्य देवर्द्धि प्राप्त हुई है. स्थिति एक सागरोपम की है और महा विदेह क्षेत्र में उत्पन्न होवेगा यावत् सब दु:खों का अंत करेगा ॥ ४२ ॥

शब्दार्थ ध्याते हो ॥ ५१ ॥ पूर्ववत् ॥ ४२ ॥ किं० किस प० प्रयोजन से भं० भगवन् अ० असुर कुमार देव उ०

सूत्र पारिसोववण्णए देवे एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया मए समणं भगवं महावीरं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए. तएणं तेणं परिकुविएणं समाणेणं ममं वहाए वज्जे निसिट्ठे, तं भद्दणं भवतु देवाणुप्पिया समणस्स भगवओ महावीरस्स जस्संमि पभावेण अकिट्ठे अव्वाहिए अपरितावए इह मागए, इह समोसढे, इह संपत्ते, इहेव अज्ज उवसंपज्जित्ताणं विहरामि तं गच्छामोणं देवाणुप्पिया समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो तिकट्टु चउसट्ठीए सामाणिय साहस्सीहिं जाव सव्विड्डीए जाव जेणेव असोगवर पायवे जेणेव मम अंतिए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता.

भावार्थ देवों को ऐसा कहा अहो देवानुप्रिय ! मैंने श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की नेश्राय से शक्र देवेंद्र को भ्रष्ट करनेकी इच्छा की इससे उसने क्रोधित होकर मेरा वध करने को वज्र छोडा. अहो देवानुप्रिय ! उन महावीर स्वामी का कल्याण होवो कि जिनके प्रभाव से मैं क्लिष्टता, बाधा, परितापना रहित यहांपर आया हुवा हूं, यहांपर समोसर्या हूं यावत् यहां पर प्रशान्त बना हुवा विचरता हूं. इस से अपन श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीकी पास जावे और उन को वंदना नमस्कार करे यावत् उनकी पर्युपासना करे. इस से चौसठ हजार सामानिक यावत् सब ऋद्धि सहित सुंसुमार नगर के अशोक वन खंड में अ

सूत्र मम्मं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव नमंसित्ता एवं वयासी एवं खलु भंते ! मए तुब्भं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए जाव तं भद्दणं भवतु देवाणुप्पियाणं जस्संमि पभावेण आकिट्ठे जाव विहरामि. तं खामेमि णं देवाणुप्पिया जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ अवक्कमइत्ता जाव बत्तीसइबद्धं नट्टविहिं उवदंसेइ उवदंसेइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए एवं खलु गोयमा ! चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णो सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, ठिई सागरोवमं, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं काहिइ ॥४२॥ किं पत्तियणं भंते !

भावार्थ शोक वृक्ष की नीचे पृथ्वी शीला पटथर मेरी पास आया और मुझे वंदना नमस्कार कर ऐसा कहा अहो भगवन् ! आपकी नेश्राय से मैं शक्र देवेन्द्र की आशातना करने को गया यावत् आपका कल्याण होवो कि आप के प्रभाव से मैं बाधा पीडा रहित फीरता हूं. इस से अहो देवानुप्रिय ! आप की मैं क्षमा चाहता हूं यावत् ईशान कौन में गया और बत्तीस प्रकार के नाटक बताकर जिस दिशा से आया था उसी दिशा में गया. इस तरह अहो गौतम ! चमर असुरेन्द्रको एसी दीव्य देवर्द्धि प्राप्त हुई है. स्थिति एक सागरोपम की है और महा विदेह क्षेत्र में उत्पन्न होवेगा यावत् सब दुःखों का अंत करेगा ॥ ४२ ॥

शब्दार्थ भद्रिक जा॰ यावत् प॰ पर्युपासना करते ए॰ ऐसे व॰ बोले क॰ कितनी भं॰ भगवन् कि॰ क्रिया प॰ प्ररूपी मं॰ मंडितपुत्र पं॰ पांच क्रिया प॰ प्ररूपी का॰ कायिकी अ॰ अधिकरणि की पा॰ प्रद्वेषिकी पा॰ पारितापनिकी पा॰ प्राणातिपात क्रिया ॥ १ ॥ का॰ कायिकी भं॰ भगवन् कि॰ क्रिया क॰ कितने

सूत्र पज्जुवासमाणे एवं वयासी कइणं भंते किरियाओ पण्णत्ताओ ? मंडियपुत्ता ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ तंजहा काइया, अहिगरणिया, पाओसिया, पारियावणिया, पाणाइवायकिरिया ॥ १ ॥ काइयाणं भंते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ? मंडियपुत्ता !

भावार्थ धा. यहां श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदन करने को आई, धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस समय में प्रकृति भद्रिक यावत् विनीत श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी का मंडितपुत्र नामक शिष्य पर्युपासना करते ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! क्रियाओं कितनी कही हैं ? अहो मंडित पुत्र ! कर्म के हेतु रूप क्रिया के पांच भेद कहे हैं. १ शरीर से होवे सो कायिकी क्रिया २ खड्ग शस्त्रादि अधिकरण से होवे सो अधिकरणिकी ३ मत्सरभाव से होवे सो प्रद्वेषिकी ४ अन्य को परितापना (दुःख) देने से होवे सो परितापनिकी और ५ प्राणों की घात करने से होवे सो प्राणातिपातिकी क्रिया ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! कायिकी क्रिया के कितने भेद कहे हैं ? कायिकी क्रिया के दो भेद १ अनुपरत कायिकी क्रिया-प्रत्याख्यान करके

प्रकार की मं० मंडितपुत्र दु० दोप्रकार की अ० अनुपरत कायक्रिया दु० दुमयुक्त कायक्रिया ॥ १ ॥ अ० अधिकरणिकी भं० भगवन् कि० क्रिया क० कितने प्रकार की मं० मंडित पुत्र दु० दोप्रकार की सं० संयोजन अधिकरण क्रिया नि० निवर्तन अधिकरण क्रिया ॥ ३ ॥ पा० प्रद्वेपिकी भं० भगवन् कि० क्रिया क० कितने प्रकार की मं० मंडितपुत्र दु० दोप्रकार की जी० जीव प्रद्वेपिकी अ० अजीव प्रद्वेपिकी

सूत्र

दुविहा पण्णत्ता, तंजहा अणुवरयकाय किरियाय, दुप्पउत्तकाय किरियाय ॥ २ ॥ अहिगराणियाणं भंते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ? मंडियपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा संजोयणाहिगरण किरियाय, निव्वत्तणाहिगरण किरियाय ॥ ३ ॥ पाओसियाणं भंते ! किरिया कइविहा प० ? मंडियपुत्ता ! दुविहा प० तंजहा जीव पाओसियाय अजीव पाओसियाय ॥ ४ ॥ पारियावणियाणं भंते ! किरिया कइ-

भावार्थ

पाप से निवर्तना नहीं सो और दुमयुक्त सो दुष्ट मयोग के सद्भाव से ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! अधिकरणिकी क्रिया के कितने भेद कहे हैं ? अहो मंडित पुत्र ! हल घर वगैरह में जो कोई यंत्रादि न होवे उस का संयोग मीलाने से जो क्रिया लगे सो संगोयणाधिकरण क्रिया और खड्गादि नविन उत्पन्न करना सो निवर्तनाधिकरण क्रिया ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! मद्वेपिकी क्रिया के कितने भेद कहे हैं ? अहो मंडितपुत्र ! जीव पर मत्सर भावरखे सो जीव मद्वेपिकी और अजीव पर मत्सर भाव रखे सो अजीव

शब्दार्थ भद्रिक जा० यावत् प० पर्युपासना करते एं० ऐसे व० बोले क० कितनी भं० भगवन् क्रि० क्रिया प० प्ररूपी मं० मंडितपुत्र पं० पांच क्रिया पं० प्ररूपी का० कायिकी अ० अधिकरणि की पा० प्रद्वेषिकी पा० पारितापनिकी पा० प्राणातिपात क्रिया ॥ १ ॥ का० कायिकी भं० भगवन् क्रि० क्रिया क० कितने

सूत्र पज्जुवासमाणे एवं वयासी कइणं भंते किरियाओ पण्णत्ताओ ? मंडियपुत्ता ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ तंजहा काइया, अहिगरणिया, पाओसिया, पारियावणिया, पाणाइवायकिरिया ॥ १ ॥ काइयाणं भंते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ? मंडियपुत्ता !

भावार्थ था. वहां श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदन करने को आई, धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस समय में प्रकृति भद्रिक यावत् विनीत श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी का मंडितपुत्र नामक शिष्य पर्युपासना करते ऐसा बोले कि अहो भगवन् ! क्रियाओं कितनी कही हैं ? अहो मंडित पुत्र ! कर्म के हेतु रूप क्रिया के पांच भेद कहे हैं. १ शरीर से होवे सो कायिकी क्रिया २ खड्ग शस्त्रादि अधिकरण से होवे सो अधिकरणिकी ! ३ मत्सरभाव से होवे सो प्रद्वेषिकी ४ अन्य को परितापना (दुःख) देने से होवे सो परितापनिकी और ५ प्राणों की घात करने से होवे सो प्राणातिपातिकी क्रिया ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! कायिकी क्रिया के कितने भेद कहे हैं ? कायिकी क्रिया के दो भेद १ अनुपरत कायिकी क्रिया-प्रत्याख्यान करके

पदार्थ

कि० क्रिया ॥ ७ ॥ अ० है भं० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को कि० क्रिया क० करे हं० हां अ० है क० कैसे भं० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ कि० क्रिया क० करे मं० मंडितपुत्र प० प्रमाद प्रत्ययिक जो० योग निमित्त ॥ ८ ॥ जी० जीव भं० भगवन् स० सदैव ए० कम्पे वे० विशेष कम्पे च० चले फं० थोडाकंपे घ० सर्वदिशा में चले खु० क्षोभपावें उ० उदीरे तं० उस उस भाव को प० परिण

सूत्र

पुव्विं किरिया पच्छा वेयणा णो पुव्विं वेयणा पच्छाकिरिया ॥७॥ अत्थिणं भंते समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ? हंता अत्थि. कहिणं भंते ! समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ? मंडियपुत्ता ! पमायपच्चया, जोग निमित्तंच. एवं खलु समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ॥८॥ जीवेणं भंते ! सयासमियं एयइ, वेयइ, चलइ, फंदइ, घट्टइ, खुब्भइ, उदीरेइ, तंतं

भावार्थ

पीछे क्रिया होती है ? अहो मण्डितपुत्र ! पहिले कर्मबंध के कारण भूत क्रिया होती है फीर उन का उदय होने से वेदना होती है. इस से पहिले क्रिया और पीछे वेदना होती है; परंतु पहिले वेदना और पीछे क्रिया नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ क्या क्रिया करते हैं ? हां मण्डित पुत्र ! श्रमण निर्ग्रन्थ क्रिया करते हैं. अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ कैसे क्रिया करते हैं ? अहो मण्डित पुत्र ! प्रमाद प्रत्ययिक और योग निमित्त श्रमण निर्ग्रंथ क्रिया करते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! सयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त क्या चले, विशेष चले, एक स्थान से अन्य स्थान जावे, स्पर्श करे, क्षुब्ध होवे

शब्दार्थ ॥ ४ ॥ पा० पारितापनिकी दु० दोप्रकार की स० अपने हस्त से प० दुसरे के हस्त से ॥ ५ ॥ पा० प्रणातिपातिकी क्रिया दु० दोप्रकार की स० स्वहस्त प्राणातिपात क्रिया प० परहस्त प्राणातिपात क्रिया ॥ ६ ॥ पु० पहिली भं० भगवन् किं० क्रिया प० पीछे वे० वेदना पु० पहिली वे० वेदना प० पीछे कि० क्रिया मं० मंडित पुत्र पु० पहिली क्रिया प० पीछे मं०वेदना णो० नहीं पु० पहिली वेदना प० पीछे

सूत्र विहा प० ? मंडियपुत्ता ! दुविहा प० तंजहा सहत्थ पारियावणियाय, परहत्थ पारियावणियाय, ॥ ५ ॥ पाणाइवाय किरियाणं भंते ! पुच्छा मंडियपुत्ता ! दुविहा प० तंजहा सहत्थ पाणाइवायाकिरिया परहत्थ पाणाइवाय किरियाय ॥ ६ ॥ पुव्विं भंते ! किरिया पच्छा वेयणा ; पुव्विं वेयणा पच्छा किरिया ? मंडियपुत्ता !

भावार्थ प्रद्वेषिकी ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! परितापनिकी क्रिया के कितने भेद ? अहो मण्डित पुत्र ! परितापनिकी क्रिया के दो भेद १ स्वहस्त से स्वतः को तथा अन्य को परितापना उत्पन्न करे और २ पर हस्त से स्वतः को तथा अन्य को परितापना उत्पन्न करे ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! प्राणातिपातिकी क्रिया के कितने भेद ? प्राणातिपातिकी क्रिया के दो भेद १. स्वहस्त से स्वतः की तथा अन्य की घात करे सो और २ पर हस्त से स्वतः की तथा अन्य की घात करे ॥ ६ ॥ क्रिया से वेदना होती है इस से वेदना का प्रश्न पुछते हैं. अहो भगवन् ! पहिले क्रिया और पीछे वेदना होती है अथवा पहिले वेदना होती है और

शब्दार्थ कि० क्रिया ॥ ७ ॥ अ० है भं० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को कि० क्रिया क० करे हं० हाँ अ० है क० कैसे भं० भगवन् स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ कि० क्रिया क० करे मं० मंडितपुत्र प० प्रमाद प्रत्ययिक जो० योग निमित्त ॥ ८ ॥ जी० जीव भं० भगवन् स० सदैव ए० कम्पे वे० विशेष कम्पे च० चले फं० थोडाकंपे घ० सर्वदिशा में चले खु० क्षोभपावे उ० उदीरे तं० उस उस भाव को प० परिण

सूत्र पुव्विं किरिया पच्छा वेयणा णो पुव्विं वेयणा पच्छाकिरिया ॥७॥ अत्थिणं भंते समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ? हंता अत्थि. कहिणं भंते ! समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ? मंडियपुत्ता ! पमायपच्चया, जोग निमित्तंच. एवं खलु समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ॥८॥ जीवेणं भंते ! सयासमियं एयइ, वेयइ, चलइ, फंदइ, घट्टइ, खुब्भइ, उदीरेइ, तंतं

भावार्थ पीछे क्रिया होती है ? अहो मण्डितपुत्र ! पहिले कर्मबंध के कारण भूत क्रिया होती है फीर उन का उदय होने से वेदना होती है. इस से पहिले क्रिया और पीछे वेदना होती है; परंतु पहिले वेदना और पीछे क्रिया नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ क्या क्रिया करते हैं ? हां मण्डित पुत्र ! श्रमण निर्ग्रन्थ क्रिया करते हैं. अहो भगवन् ! श्रमण निर्ग्रन्थ कैसे क्रिया करते हैं ? अहो मण्डित पुत्र ! प्रमाद प्रत्ययिक और योग निमित्त श्रमण निर्ग्रंथ क्रिया करते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! सयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त क्या चलें, विशेष चले, एक स्थान से अन्य स्थान जावे, स्पर्श करे, क्षुब्ध होवे

शब्दार्थ में हं० हां मं० मंडितपुत्र जी० जीव स० सदैव ए० कंपे जा० यावत् प० परिणमे ॥ ९ ॥ जा० जितना भं० भगवन् जी०जीव स०सदैव जा०यावत् प०परिणमता ता० उतना त० उस जीव की अं० अंत में अं० अक्रिया भ० होवे णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ से० वह के० कैसे भं० भगवन् मं० मंडितपुत्र जा० जितना से० वह जी० जीव स० सदैव जा० यावत् प० परिणमे ता० उतना से० वह जी० जीव आ० आरंभ करे सा० सारंभ करे स० समारंभ करे आ० आरंभ में व० वर्ते सा० सारंभ में व० वर्ते

सूत्र भावं परिणमइ ? हंता मंडियपुत्ता ! जीवेणं सयासमियं एयइ जाव तंतं भावं परिणमइ ॥ ९ ॥ जावंचणं भंते ! से जीवे सयासमियं जाव परिणमइ तावंचणं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया भवइ ? णोइणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, जावंचणं से जीवे सयासमियं जाव अंते अंतकिरिया न भवइ ? मंडियपुत्ता ! जावंचणं से जीवे सयासमियं जाव परिणमइ तावंचणं से जीवे आरंभइ, सारंभइ, समा-

भावार्थ उदीरे वगैरह पूर्वोक्त भावों में परिणवे ? हां मण्डित पुत्र ! सयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त चलता है यावत् पूर्वोक्त भावों में परिणमता है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! जहां लग सयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त चलता है यावत् पूर्वोक्त भावों में परिणमता है वहां लग क्या उन को अंत क्रिया होती है ? यह अर्थ योग्य नहीं है. किस कारन से यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो मण्डित पुत्र ! जहां लग सयोगी जीव

शब्दार्थ स० समारंभ में व० वर्ते आ० आरंभ करता सा० सारंभ करता स० समारंभ करता था० आरंभ में सा० सारंभ में स० समारंभ में व० वर्तता व० वहुत पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्त्व के दुःख देने से सो० शोचकराने से जू० जूरणा कराने से ति० आक्रंद कराने से पि० मारने से प० परितापना उपजाने से व० वर्ते से० वह ते० इसलिये मं० मंडित पुत्र ॥ १० ॥ से० वह ज० जैसे के० कोई

सूत्र रंभइ ; आरंभे वट्टइ, सारंभेवट्टइ, समारंभेवट्टइ; आरंभमाणे, सारंभमाणे, समारंभमाणे, आरंभेवट्टमाणे, सारंभेवट्टमाणे, सामारंभेवट्टमाणे, बहूणं पाणाणं, भूयाणं, जीवाणं, सत्ताणं दुक्खावणताए, सोयावणताए, जूरावणताए, तिप्पावणताए, पिट्टावणताए, परियावणताए वट्टइ से तेणट्टेणं मंडियपुत्ता ! एवं वुच्चइ, जावंचणं से जीवे सयासमियं एयइ जाव परिणमइ, तावंचणं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया न भवइ ॥ १० ॥

भावार्थ सदैव चलता है यावत् उन पूर्वोक्त भावों में परिणमता है वहां लग वह जीवों का आरंभ, सारंभ व समारंभ करता है, आरंभ, सारंभ व समारंभ में वर्तता है. इस तरह आरंभ, सारंभ व समारंभ करता हुवा यावत् उन में प्रवर्तता हुवा प्राण, भूत, जीव व सत्वोंको दुःख, शोक, झुरणा, वेदना, पिटना व परितापना करने में प्रवर्तता है. इस से अहो मण्डित पुत्र ! ऐसा कहा गया है कि सयोगी जीव जहां लग चलता है यावत् उन पूर्वोक्त भावों में परिणमता है वहांलग उन को अंत क्रिया नहीं होती है ॥ १० ॥ अहो

शब्दार्थ पुरुष सु० सुका तु० तृण कापूला जा० अग्नि में प० डाले से० वह मं० मंडितपुत्र सु०० शुष्क त० तृणका पुला आ० अग्नि में प० डालते खि० शीघ्र म० जल जावे हं० हां म० जल जावे, ज० जैसे के० कोई पुरुष त० तप्त अ० लोहेके गोलेपे उ० पानी का बिंदु प० डाले से० वह मं० मंडितपुत्र उ० पानी का बिन्दु त०

सूत्र जीवेणं भंते! सयासमियं णो एयइ जाव णो तंतं भावं परिणमइ ? हंता मंडियपुत्ता! जीवेणं सयासमियं जाव णो परिणमइ जावंचणं भंते ! से जीवे नो एयइ जाव नो तंतं भावं परिणमइ, तावंचणं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया भवइ ? हंता जाव भवइ ॥ से केणट्ठेणं जाव भवइ ? मंडियपुत्ता ! जावंचणं च से जीवे सयासमियं णोएयइ जाव परिणमइ, तावंचणं से जीवे णो आरंभइ, णोसारंभइ, णोसमारंभइ, णो आरंभेवट्टइ, णो सारंभेवट्टइ णो समारंभेवट्टइ, अणारंभमाणे, असारंभमाणे,

भावार्थ भगवन् ! अयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त क्या नहीं चलते हैं यावत् उक्त भावों में नहीं परिणमते हैं ? हां मण्डित पुत्र ! वे अयोगी जीव नहीं चलते हैं यावत् पूर्वोक्त भावों में नहीं परिणमते हैं. अहो भगवन् ! जहांलग वे जीवों नहीं चलते हैं यावत् नहीं परिणमते हैं वहांलग उन को क्या अंत क्रिया होती है ? हां मण्डित पुत्र ! उन को अंत क्रिया होती है. किस तरह उन को अंत क्रिया होती है ? अहो मण्डित पुत्र ! जहांलग वे जीव चलते नहीं हैं यावत् नहीं परिणमते हैं वहांलग वे आरंभ, सारंभ

पदार्थ तप्त अ० लोहे के कडे पे प० डाला हुवा खि० शीघ्र वि० नाशपावे हं० हां वि० विनाश पावे ज० जैसे ह० द्रह पु० पूर्ण पु० पूर्ण प्रमाण वो० उछलता वो० उल्लास पामता स० भरा हुवा चि० होवे अ० अब के० कोई पुरुष तं० उस ह० द्रह में ए० एक वडा ना० नाव स० शतछिद्रवाली ओ० रखे मं० मंडितपुत्र सा०

सूत्र असमारंभमाणे; आरंभे अवट्टमाणे, सारंभे अवट्टमाणे, समारंभे अवट्टमाणे बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खावणत्ताए, जाव अपरियावणत्ताए वट्टइ, से जहा नामए केइपुरिसे सुक्कतणहत्थयं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा, सेणूणं मंडियपुत्ता! से सुक्के तणहत्थए जायतेयंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसा विज्जइ ? हंता मसमसा विज्जइ ॥ सेजहा नामए केइपुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि उदयबिंदु पक्खिवेज्जा ? सेनूणं मंडियपुत्ता ! से उदयबिन्दु तत्तंसि अयकवल्लंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव

भावार्थ व समारंभ नहीं करते हैं यावत् उन में नहीं परिणमते हैं. इस तरह आरंभ, सारंभ व समारंभ नहीं करने वाला यावत् उस में नहीं प्रवर्तनेवाला प्राण, भूत, जीव व सत्वों को दुःख यावत् परितापना नहीं करता है. परंतु योग निरुंधन रूप शुक्ल ध्यान से सकल कर्म ध्वंस रूप अंत क्रिया करता है. उस के उपर तीन दृष्टांत कहते हैं. १. जैसे सूका हुवा घास अग्नि में डालने से क्या भस्म होता है ! हां भगवन् ! वह भस्म होता है, अहो मण्डित पुत्र ! तप्त लोहे पर पानी का बिन्दु पडने से क्या वह शीघ्र नष्ट होता है ? हां भग-

शब्दार्थ पुरुष सु० सुका तु० तृण कापूला जा० अग्नि में प० डाले हं० वह मं० मंडितपुत्र सु०० शुष्क त० तृणका पुला अ० अग्नि में प० डालते खि० शीघ्र म० जल जावे हं० हां म० जल जावे, ज० जैसे के० कोई पुरुष त० तप्त अ० लोहेके गोलेप उ० पानी का बिंदु प० डाले से० वह मं० मंडितपुत्र उ० पानी का विन्दु त०

सूत्र जीवेणं भंते! सयासमियं णो एयइ जाव णो तंतं भावं परिणमइ ? हंता मंडियपुत्ता! जीवेणं सयासमियं जाव णो परिणमइ जावंचणं भंते! से जीवे नो एयइ जाव नो तंतं भावं परिणमइ, तावंचणं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया भवइ ? हंता जाव भवइ ॥ से केणट्ठेणं जाव भवइ ? मंडियपुत्ता! जावंचणं च से जीवे सयासमियं णोएयइ जाव परिणमइ, तावंचणं से जीवे णो आरंभइ, णोसारंभइ, णोसमारंभइ, णो आरंभेवट्टइ, णो सारंभेवट्टइ णो समारंभेवट्टइ, अणारंभमाणे, असारंभमाणे,

भावार्थ भगवन्! अयोगी जीव सदैव प्रमाण युक्त क्या नहीं चलते हैं यावत् उक्त भावों में नहीं परिणमते हैं? हां मण्डित पुत्र! वे अयोगी जीव नहीं चलते हैं यावत् पूर्वोक्त भावों में नहीं परिणमते हैं. अहो भगवन्! जहांलग वे जीवों नहीं चलते हैं यावत् नहीं परिणमते हैं वहांलग उन को क्या अंत क्रिया होती है? हां मण्डित पुत्र! उन को अंत क्रिया होती है. किस तरह उन को अंत क्रिया होती है? अहो मण्डित-पुत्र! जहांलग वे जीव चलते नहीं हैं यावत् नहीं परिणमते हैं वहांलग वे आरंभ, सारंभ

शब्दार्थ पानी में उ० नीकालते खि० शीघ्र उ० उपरं उ० आवे हं० हां उ० आवे एं० ऐसे मं० मंडितपुत्र अ० अत्मा से संवृत अ० अनगार इ० ईर्या समिति वाले जा० यावत् वं० गुप्तब्रह्मचारी आ० उपयोग पूर्वक ग० जाते चि० खडा रहते नि० बैठते तु० सोते व० वस्त्र प० पात्र कं० कंबल पा० रजोहरण गे० ग्रहण करते नि० रखते जा० यावत् च० चक्षु पक्ष नि० निपात वे० बेमात्रा सु० सूक्ष्म इ० ईर्या पथिक क्रिया क० करे सा० वह प० प्रथम समय में ब० बंधी पु० स्पर्शी बि० दूसरा समय में वे० वेदी त०

सूत्र अत्ता संवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स जाव बंभगुत्तयारिस्स आउत्तं गच्छमाणस्स, चिट्ठमाणस्स. निसियमाणस्स, तुयट्टमाणस्स, आउत्तं वत्थ पडिग्गह कंबल पायपुंछणं गेण्हमाणस्स निक्खेवमाणस्स जाव चक्खुपम्ह निवायमवि बेमाया सुहुमा इरियावहिया किरिया कज्जइ, सा पढमसमय बद्धा पुट्ठा, बितिय समय वेइया, तइय समय निज्जरिया, सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेदिया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्मं-

भावार्थ साफ करनो क्या वह नावा शीघ्र पानीपर आती है ? हां भगवन्! खाली नावा पानीपर आती है. वैसेही अहो मंडित पुत्र ! आत्मा को संवरने वाले, ईर्यासमिति यावत् गुप्त ब्रह्मचर्य पालने वाले, यत्ना पूर्वक चलने वाले, खडे रहने वाले, बैठने वाले, सोने वाले, वस्त्र, पात्र, कम्बल, रजोहरण ग्रहण करने वाले, रखने वाले अनगार को उन्मेष निमेष मात्र ईर्या पथिक क्रिया लगती है. उसक्रिया का प्रथम समयमें बंध होता है

शब्दार्थ वह नाव उ० उस आ० आश्रव द्वार से आ० भरी हुई पु० पूर्ण वो० उछलती वो० उल्लास पामती स० भरी हुई चि० रहे हं० हां चि० रहे के० कोई पुरुष ता० उस नाव को स० सब बाजु आ० आश्रव द्वार पि० ढांक कर ना० नाव का उ० बरतन से उ० पानी उ० नीकाले सा० वह ना० नाव तं० उस उ०

सूत्र विद्धंसमागच्छइ ? हंता विद्धंसमागच्छइ ॥ से जहा नामए हरएसिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठइ, अहेणं केइपुरिसे तंसि हरयंसि एगंमहं णावं सयायंसयच्छिद्दं उग्गहेज्जा ? सेनूणं मंडियपुत्ता ! सा नावा तिहिं आसवद्दारेहिं आपूरमाणी आपूरमाणी पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठइ ? हंता चिट्ठइ ॥ अहेणं केइपुरिसे तीसे नावाए सव्वओ समंता आसवदाराइं पिहेइ २ त्ता नावा उस्सिंचणएणं उदयं उस्सिंचेज्जा ? सेणूणं मंडियपुत्ता ! सा नावा तंसि उदयंसि उस्सित्तंसि समाणंसि खिप्पामेव उड्ढं उदाइ ? हंता उदाइ, एवामेव मंडिय पुत्ता !

भावार्थ ! वह विन्दु शीघ्र नष्ट होता है. और जैसे बहुत परिपूर्ण घट समान एक द्रह है, पानी बाहिर नीकल रहा है ऐसा वह भराहुवा है. अब कोई पुरुष छिद्रवाली नावा इस मे डाले तो छिद्रसे नावा में पानी आने से क्या वह नावा पानी के तल में जाकर बैठती है ? हां वह नावा छिद्रों से पानी भर जाने से तलेपर जाकर बैठती है. यदि कोई पुरुष उस के छिद्रों बंधकर के उस में रहा हुवा पानी नीकालकर

शब्दार्थ पानी में उ० नीकालते खि० शीघ्र उ० उपरं उ० आवें हं० हां उ० आवे ए० ऐसे मं० मंडितपुत्र अ० अत्मा से संवृत अ० अनगार इ० ईर्या समिति वाले जा० यावत् बं० गुप्तब्रह्मचारी आ० उपयोग पूर्वक ग० जाते चि० खडा रहते नि० बैठते तु० सोते व० वस्त्र प० पात्र कं० कंबल पा० रजोहरण गे० ग्रहण करते नि० रखते जा० यावत् च० चक्षु पक्ष नि० निपात वे० वेमात्रा सु० सूक्ष्म इ० ईर्या पथिक क्रिया क० करे सा० वह प० प्रथम समय में व० बंधी पु० स्पर्शी बि० दूसरा समय में वे० वेदी त०

सूत्र अत्ता संवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स जाव बंभगुत्तयारिस्स आउत्तं गच्छमाणस्स, चिट्ठमाणस्स, निसियमाणस्स, तुयट्टमाणस्स, आउत्तं वत्थ पडिग्गह कंबल पायपुंछणं गेण्हमाणस्स निक्खेवमाणस्स जाव चक्खुपम्ह निवायमवि वेमाया सुहुमा इरियावहिया किरिया कज्जइ, सा पढमसमय बद्धा पुट्ठा, बितिय समय वेइया, तइय समय निज्जरिया, सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेदिया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्मं-

भावार्थ साफ करनेसे क्या वह नावा शीघ्र पानीपर आती है ? हां भगवन्! खाली नावा पानीपर आती है. वैसेही अहो मंडित पुत्र ! आत्मा को संवरने वाले, ईर्यासमिति यावत् गुप्त ब्रह्मचर्य पालने वाले, यत्ना पूर्वक चलने वाले, खडे रहने वाले, बैठने वाले, सोने वाले, वस्त्र, पात्र, कम्बल, रजोहरण ग्रहण करने वाले, रखने वाले अनगार को उन्मेष निमेष मात्र ईर्या पथिक क्रिया लगती है. उसक्रिया का प्रथम समयमें बंध होता है

शब्दार्थ तीसरा समय नि० निर्जरी सा० वह ब० बंधी पु० स्पर्शी उ० उदीरी वे० वेदी नि० निर्जरी से० आगामिक काल में अ० अकर्म भ० होवे से० वह ते० इसलिये ॥ ११ ॥ प० प्रमत्त संयति भं० भगवन् प० प्रमत्त संयम में व० वर्तता स० सर्व प० प्रमत्त अ० काल से के० कितना हो० होवे मं० मंडितपुत्र ए० एक जीव प० आश्री ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट दे० देशऊणा पु० पूर्वक्रोड णा० विविध जीव प० आश्री स० सर्व काल ॥ १२ ॥ अ० अप्रमत्त संयति भं० भगवन् अ० अप्रमत्त स० संयम में व०

सूत्र वात्रि भवइ । से तेणट्ठेणं मंडियपुत्ता ! एवं वुच्चइ जाव चणं से जीवे सयासमियं नो एयइ जाव अंते अंतकिरिया ॥ ११ ॥ पमत्त संजयस्सणं भंते ! पमत्तसंजमे वट्टमाणस्स सव्वावियणं पमत्तद्धाकालओ केवचिरं होइ ? मंडिया ! एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं एकं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥ णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा ॥ १२ ॥

दूसरे समय में वेदना होती है और तीसरे समय में नीर्जरा होती है. इस तरह बंध, स्पर्श, उदीरणा, वेदना, व निर्जरा होने से अनागत काल में कर्म रहित जीव होता है. इस से अहो मंडित पुत्र ? अयोगी जीव नहीं चलता है यावत् उन को अंतक्रिया होती है ऐसा कहा है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! प्रमत्त संयत गुण स्थान में रहने वाला प्रमत्त संयतीकी सब काल आश्रित कितनी स्थिति है. ? अहो मंडित पुत्र ? एक जीव आश्रित जघन्य एक समय उत्कृष्ट देशऊणी क्रोडपूर्व और बहुत जीव आश्री सदा काल रहते हैं. क्यों कि इन का विरह नहीं होता है वे महा विदेह क्षेत्र में सदैव रहते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! अप्रमत्त संयम

शब्दार्थ वर्तता अ० अप्रमत्त काल से के० कितना हो० होवे मं० मंडित ए० एक जीव प० आश्री ज०जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट पु० पूर्वक्रोड दे० देशऊणा णा० विविध जीव प० आश्री स० सर्व काल ॥ १३ ॥ भं०भगवान् मं० मंडितपुत्र अ० अनगार स०श्रमण भं०भगवान् म०महावीर को न०नमस्कार कर सं०संयम त० तप से अ० आत्मा को भा० भावते हुवे वि० विचरते हैं ॥ १४ ॥ भं० भगवान् गो० गौतम स०

सूत्र अप्पमत्त संजयस्सणं भंते ! अप्पमत्ता संजमे वट्टमाणस्स सव्वाविियणं अप्पमत्तद्धाकालओ केवचिरं होइ ? मंडिया ! एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी-देसूणा णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धं ॥ १३ ॥ सेवं भंते, भंतेत्ति भयवं मंडियपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, नमंसइत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १४ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमं-

भावार्थ में रहनेवाला अप्रमत्त संयति सब काल आश्री कितने काल तक रहता है ? अहो मण्डितपुत्र ! एक जीव आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट देश ऊना पूर्व क्रोड; क्यों कि अप्रमत्त अवस्था में रहनेवाला जीव अंतर्मुहूर्त से पहिले काल नहीं करता है और आठ वर्ष कम क्रोड पूर्व सो केवल ज्ञान आश्री जानना. बहुत जीव आश्री निरंतर सब काल जानना. क्योंकि अप्रमत्त संयति सदैव पाते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! आप के वचन तथ्य हैं ऐसा कहकर श्री श्रमण भगवन्त महावीर को वंदना नमस्कार कर मण्डित

शब्दार्थ तीसरा समय नि० निर्जरी मा० वह ब० बंधी पु० स्पर्शी उ० उदीरी वे० वेदी नि० निर्जरी से० आगामिक काल में अ० अकर्म भ० होवे से० वह ते० इसलिये ॥ ११ ॥ प० प्रमत्त संयति भं० भगवन् प० प्रमत्त संयम में व० वर्तता स० सर्व प० प्रमत्त अ० काल से के० कितना हो० होवे मं० मंडितपुत्र ए० एक जीव प० आश्री ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट दे० देशऊणा पु० पूर्वक्रोड णा० विविध जीव प० आश्री स० सर्व काल ॥ १२ ॥ अ० अप्रमत्त संयति भं० भगवन् अ० अप्रमत्त स० संयम में व०

सूत्र वावि भवइ । से तेणट्ठेणं मंडियपुत्ता ! एवं वुच्चइ जाव चणं से जीवे सयासमियं नो एयइ जाव अंते अंतकिरिया ॥११॥ पमत्त संजयस्सणं भंते ! पमत्तसंजमे वट्टमाणस्स सव्वावियणं पमत्तद्धाकालओ केवचिरं होइ ? मंडिया ! एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥ णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा ॥ १२ ॥

दूसरे समय में वेदना होती है और तीसरे समय में निर्जरा होती है. इस तरह बंध, स्पर्श, उदीरणा, वेदना, व निर्जरा होने से अनागत काल में कर्म रहित जीव होता है. इस से अहो मंडित पुत्र ! अयोगी जीव नहीं चलता है यावत् उन को अंतक्रिया होती है ऐसा कहा है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! प्रमत्त संयत गुण स्थान में रहने वाला प्रमत्त संयतीको सब काल आश्रित कितनी स्थिति है ? अहो मंडित पुत्र ! एक जीव आश्रित जघन्य एक समय उत्कृष्ट देशऊणी क्रोडपूर्व और बहुत जीव आश्री सदा काल रहते हैं. क्यों कि इन का विरह नहीं होता है ये महा विदेह क्षेत्र में सदैव रहते हैं. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! अप्रमत्त संयम

शब्दार्थ लोकस्थिति लो० लोकानुभाव ॥ ३ ॥ ३ ॥ ÷ ÷

अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा दे० देव को वे० वैक्रेय स० समुद्घात से स० नीकालता जा० यानरूप से जा० जाते को जा०जाने पा० देखे गो० गौतम अ०कितनेक दे० देवको पा० देखे नो० नहीं जा० यान को पा० देखे अ० कितनेक नो० नहीं दे० देवको नो० नहीं जा० यान को पा० देखे

रिया सम्मत्ता ॥ तइयसयस्स तईओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ३ ॥ * ॥

सूत्र अणगारेणं भंते भावियप्पा देवं वेउव्विय समुग्घाएणं समोहय जाणरूवेणं जायमाणं जाणइ पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए देवं पासइ नो जाणं पासइ, अत्थेगइएणं जाणं पासइ नो देवं पासइ, अत्थेगइए देवंपि जाणंपि पासइ, अत्थे-

भावार्थ जानना. अहो भगवन् ! आप जो कहते हैं वह सत्य है ऐसा कहकर गौतम स्वामी विचरने लगे. यह क्रिया का अधिकार संपूर्ण हुवा यह तीसरे शतकका तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ३ ॥ ÷

तीसरे उद्देशे में क्रिया का अधिकार कहा. वह ज्ञानवंत को प्रत्यक्ष होती है सो बताते हैं. श्री गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन्! वैक्रेय समुद्घात से उत्तर वैक्रेय करके विमानादि रूप बना कर जाते हुवे देव को भावितात्मा अनगार क्या ज्ञान से जानते हैं और दर्शन से देखते हैं ? यहां पर अवधिज्ञान की विचित्रता से चौभंगी जानना. १ कितनेक देव को देखते हैं परंतु विमान को नहीं देखते हैं २ कितनेक विमान को देखते हैं परंतु देव को नहीं देखते हैं ३ कितनेक देव व विमान दोनों

शब्दार्थ श्रमण भगवंत म० महावीर को न० नमस्कार कर ए० ऐसा व० बोले क० कैसे भं० भगवन् ल० लवण समुद्र चा० चतुर्दशी उ० अमावास्या पु० पूर्णिमा को अ० अपेक्षा से व० वृद्धिपावे हा० हानिपावे ज० जैसे जी० जीवा भिगम में ल० लवण समुद्र की व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् लो०

मूत्र सइ, नमंसइत्ता एवं वयासी-कम्हाणं भंते ! लवणसमुद्दे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठ पुण्णमासिणीसु अइरेगं वड्ढइवा हायइवा ? जहा जीवाभिगमे लवण समुद्द वत्तव्वया नेयव्वा ॥ जाव लोयट्ठिइ । लोयाणुभावे ॥१४॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ कि-

भावार्थ पुत्र संयम व तप से आत्मा को भावते हुवे विचरने लगे ॥ १४ ॥ भगवान् गौतम श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर पूछने लगे कि अहो भगवन् ! अन्य तिथी की अपेक्षासे चतुर्दशी अमावास्या व पूर्णिमाको लवण समुद्र में पानी क्यों अधिक बढता है व क्षीण होता है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की चारों दिशी में चार महा पाताल कलश एक२ लक्ष योजन के ऊंडे कहे हैं. उनको तीन २ कांड है उन चारों कलश की बीच में एक २ हजार योजन के छोटे कलश की ९ लडों कही है. उन को भी तीन २ काण्ड हैं. उन के नीचे के काण्ड में वायु है, बीच के काण्ड में वायु और हवा है व उपर के काण्ड में पानी है. नीचे के काण्ड का वायु गुंजायमान होने से सोलह हजार योजन की दगमाले पर दो कोश पानी चढता है इस से इन तिथियों में पानी प्रसरता है वगैरह अधिकार जीवाभिगम सूत्र से

शब्दार्थ लोकस्थिति लो॰ लोकानुभाव ॥ ३ ॥ ३ ॥

अ॰ अनगार भं॰ भगवन् भा॰ भावितात्मा दे॰ देव को वे॰ वैक्रेय स॰ समुद्घात से स॰ नीकालता जा॰ यानरूप से जा॰ जाते को जा॰जाने पा॰ देखे गो॰ गौतम अ॰कितनेक दे॰ देवको पा॰ देखे नो॰ नहीं जा॰ यान को पा॰ देखे अ॰ कितनेक नो॰ नहीं दे॰ देवको नो॰ नहीं जा॰ यान को पा॰ देखे

सूत्र रिया सम्मत्ता ॥ तइयस्स सयस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ३ ॥ * ॥

अणगारेणं भंते भावियप्पा देवं वेउव्विय समुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जायमाणं जाणइ पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए देवं पासइ नो जाणं पासइ, अत्थेगइए जाणं पासइ नो देवं पासइ, अत्थेगइए देवंवि जाणंवि पासइ, अत्थे-

भावार्थ जानना. अहो भगवन् ! आप जो कहते हैं वह सत्य है ऐसा कहकर गौतम स्वामी विचरने लगे. यह क्रिया का अधिकार संपूर्ण हुवा यह तीसरे शतकका तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ३ ॥

तीसरे उद्देशे में क्रिया का अधिकार कहा. वह ज्ञानवंत को प्रत्यक्ष होती है सो बताते हैं. श्री गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन्! वैक्रेय समुद्घात से उत्तर वैक्रेय करके विमानादि रूप बना कर जाते हुवे देव को भावितात्मा अनगार क्या ज्ञान से जानते हैं और दर्शन से देखते हैं ? यहां पर अवधिज्ञान की विचित्रता से चौभंगी जानना. १. कितनेक देव को देखते परंतु विमान को नहीं देखते हैं. २ कितनेक विमान को देखते हैं परंतु देव को नहीं देखते हैं ३. कितनेक देव व विमान दोनों

शब्दार्थ ॥ १ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा दे० देवी को वि० वैक्रेय स० समुद्घात से स० किया हुवा यानरूप से जा० जाती जा० जाने पा० देखे गो० गौतम ए० ऐसे ही ॥ २ ॥ पूर्ववत् ॥ ३ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा रु० वृक्ष की अं० अंतर पा० देखे बा० बाहिर पा० देखे

सूत्र गइए नो देवं पासइ नो जाणं पासइ ॥ १ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा देविं विउव्विय समुग्घाएणं समोहिय जाणरूवेणं जायमाणिं जाणइ पासइ ? गोयमा ! एवं चेव ॥ २ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा देवं सदेवीयं विउव्विय समुग्घाएणं समोहय जाणरूवेणं जायमाणं जाणइ पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए देवं सदेवीयं पासइ, नो जाणं पासइ, एएणं अभिलावेणं चत्तारिभंगा ॥ ३ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा रुक्खस्स किं अंतो पासइ बाहिं पासइ चउभंगो, ॥ एवं किं मूलं पासइ,

भावार्थ को देखते हैं और ४ कितनेक देव व विमान दोनों को नहीं देखते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! वैक्रेय समुद्घात से उत्तर वैक्रेय करके यानरूप जाती हुई देवी को क्या भावितात्मा अनगार ज्ञान से जानते हैं व दर्शन से देखते हैं ? अहो गौतम ! देव जैसे यहां पर चौभंगी जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! वैक्रेय समुद्घात से उत्तर वैक्रेय करके यान रूप से देवी सहित जाते हुवे देव को भावितात्मा अनगार क्या ज्ञान से जानता है व दर्शन से देखता है ? अहो गौतम ! देव जैसे इस के भी चार भांगे जानना ॥ ३ ॥

शब्दार्थ च० चारभांगे ए० ऐसे किं० क्या मू० मूल को पा० देखे कं० कंदको पा० देखे च० चारभांगे मू० मूल को पा० देखे खं० स्कन्ध को पा० देखे च० चारभांगे ए० ऐसे मू० मूल से बी० बीज को सं० जोडना कं० कंद से स० सम्यक् सं० जोडना जा० यावत् बी० बीज को ए० ऐसे पु० पुष्प से बी० बीज को सं०

सूत्र कंदं पासइ चउभंगो, मूलं पासइ खंधं पासइ चउभंगो, एवं मूलेणं बीजं संजोए-यव्वं एवं कंदणवि समं संजोएयव्वं जाव बीयं। एवं जाव पुप्फेण समं बीयं संजोएयव्वं

भावार्थ अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार अवधिज्ञानादि लब्धि से क्या वृक्षको अंदरसे देखे या बाहिरसे ? अहो गौतम ! अवधि ज्ञान की विचित्रता से इसके चार भांगे होते हैं. १ कितनेक वृक्ष को अंदर से देखते हैं और बाहिर से नहीं देखते हैं २ कितनेक बाहिर से देखे परंतु अंदर से नहीं देखे ३ कितनेक अंदर से व बाहिर से देखे और ४ कितनेक अंदर से व बाहिर से नहीं देखे. ऐसे ही मूल और कंद के चार भांगे, मूल और स्कंध के चार भांगे; मूल और बीज के चार भांगे जानना. तैसे ही कंद और खंध, कंद और बीज, ऐसे ही पुष्प और बीज का जानना. ॥ ४ ॥ १ मूल २ कन्द ३ स्कन्ध ४ त्वचा ५ शाखा ६ प्रवाल ७ पत्र ८ पुष्प ९ फल और १० बीज. यह दश प्रकार की वनस्पति कही है. इन की द्विसंयोगी ४५ चौभंगी होती हैं १ मूल और कंद २ मूल स्कंध ३ मूल त्वचा ४ मूल शाखा ५ मूल प्रवाल ६ मूल पत्र ७ मूल पुष्प ८ मूल फल और ९ मूल बीज ये नव भांगे मूल के साथ वैसे ही कंद के

सूत्र

॥ ४ ॥ अणगारेणं भंते भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ बीयं पासइ चउभंगो.

॥ ५ ॥ * ॥ पभूणं भंते ! वाउकाएणं एगं महं इत्थिरूवंवा, पुरिसरूवंवा, हत्थि रूवंवा जाणरूवंवा, एवं जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणियरूवंवा विउव्वित्तए ?

शब्दार्थ

जोडना ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप पु० पु० पुरुषरूप ह० हस्तीरूप जा० यानरूप जु० घूसरा गि० अंबाडी थि० ऊंटकी पिल्लिका सी० शीविका सं० रथरूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ वा० वायुकाय वि० विकुर्वणा करते ए० एक

भावार्थ

८ भांगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती हैं इस में से फल की ४५ वी चौभंगी बताते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परंतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, धुंसरे का, हस्ती की अंबाडीका ऊंट की पिल्लिका का, शिविका का, बैलगाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ

शब्दार्थ म० बडा प० पताका का सं० संस्थानरूप वि० विकुर्वणा करे ॥ ६ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायु काय ए० एक म० बडा प० पताका रूप की वि०विकुर्वणा कर अ० अनेक जो० योजन ग०जाने को हं० हां प० समर्थ से० वह किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से ग० जावे प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि से णो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे ज० जैसे आ० आत्म ऋद्धि से

सूत्र गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाएणं विकुव्वमाणा एगं महं पडागा संठियंरूवं वि-कुव्वइ ॥ ६ ॥ पभूणं भंते ! वाउकाए एगं महं पडागारांठियं रूवं विउव्वित्ता अणे-गाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए ग-च्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ णो परिड्ढीएं गच्छइ । जहा आयड्ढीए एवं चेव

भावार्थ योग्य नहीं है. वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से मात्र पताका का संस्थानवाला रूप बनाती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से पताका रूप संठाण का वैक्रेय बना करके क्या अनेक योजन तक जासकती है ? हां गौतम ! वायुकाय पताका का रूप बनाकर अनेक योजन तक जासकती है. अहो भगवन् ! वह क्या स्वतः की ऋद्धि से जाती है या अन्य की ऋद्धि से जाती है ? अहो गौतम ! स्वतः की ऋद्धि से जा सकती है परंतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जासकती है. ऐसे ही स्वतः के कर्म से जाती है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाती है, स्वतः के प्रयोग से जा सकती है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं

शब्दार्थ जोड़ना ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप पु० पुरुषरूप ह० हस्तीरूप जा० यानरूप जु० घूसरा गि० अवाडी थि० ऊंटकी पिल्लिका सी० शिबिका सं० रथरूप त्रि० त्रिकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ वा० वायुकाय त्रि० त्रिकुर्वणा करते ए० एक

सूत्र ॥ ४ ॥ अणगारेणं भंते भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ बीयं पासइ चउभंगो ॥ ५ ॥ * ॥ पभूणं भंते ! वाउकाएणं एगं महं इत्थिरूवंवा, पुरिसरूवंवा, हत्थि रूवंवा जाणरूवंवा, एवं जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणियरूवंवा विउव्वित्तए ?

भावार्थ ८ भांगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती हैं इस में से फल की ४५ वी चौभंगी बताते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परंतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, धुंसर का, हस्ती की अंबाडीका ऊंट की पिल्लिका का, शिबिका का, बैलगाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ

शब्दार्थ म० बडा प० पताका का सं० संस्थानरूप वि० विकुर्वणा करे ॥ ६ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायु काय ए० एक म० बडा प० पताका रूप की वि०विकुर्वणा कर अ० अनेक जो० योजन ग०जाने को हं० हां प० समर्थ से० वह किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से ग० जावे प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि से णो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे ज० जैसे आ० आत्म ऋद्धि से

सूत्र गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाएणं विकुव्वमाणा एगं महं पडागा संठियंरूवं वि-कुव्वइ ॥ ६ ॥ पभूणं भंते ! वाउकाए एगं महं पडागासंठियं रूवं विउव्वित्ता अणे-गाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए ग-च्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ णो परिड्ढीएं गच्छइ । जहा आयड्ढीए एवं चेव

भावार्थ योग्य नहीं है. वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से मात्र पताका का संस्थानवाला रूप बनाती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से पताका रूप संठाण का वैक्रेय बना करके क्या अनेक योजन तक जासकती है ? हां गौतम ! वायुकाय पताका का रूप बनाकर अनेक योजन तक जासकती है. अहो भगवन् ! वह क्या स्वतः की ऋद्धि से जाती है या अन्य की ऋद्धि से जाती है ? अहो गौतम ! स्वतः की ऋद्धि से जा सकती है परंतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जासकती है. ऐसे ही स्वतः के कर्म से जाती है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाती है, स्वतः के प्रयोग से जा सकती है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं

शब्दार्थ जोड़ना ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप पु० पुरुषरूप ह० हस्तीरूप जा० यानरूप जु० धूंसरा गि० अंबाडी थि० ऊंटकी पिल्लिका सी० शिविका सं० रथरूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ वा० वायुकाय वि० विकुर्वणा करते ए० एक

सूत्र ॥ ४ ॥ अणगारेणं भंते भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ बीयं पासइ चउभंगो ॥ ५ ॥ * ॥ पभूणं भंते ! वाउकाएणं एगं महं इत्थिरूवंवा, पुरिसरूवंवा, हत्थि रूवंवा जाणरूवंवा, एवं जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणियरूवंवा विउव्वित्तए ?

भावार्थ ८ भांगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती हैं इस में से फल की ४५ वी चौभंगी बताते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परंतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, धुंसरे का, हस्ती की अंबाडीका ऊंट की पिल्लिका का, शिबिका का, बैलगाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ

शब्दार्थ म० बडा प० पताका का सं० संस्थानरूप वि० विकुर्वणा करे ॥ ६ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायु काय ए० एक म० बडा प० पताका रूप की वि०विकुर्वणा कर अ० अनेक जो० योजन ग०जाने को हं० हां प० समर्थ से० वह किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से ग० जावे प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि से णो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे ज० जैसे आ० आत्म ऋद्धि से

सूत्र गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाएणं विकुव्वमाणा एगं महं पडागा संठियंरूवं विकुव्वइ ॥ ६ ॥ पभूणं भंते ! वाउकाए एगं महं पडागासंठियं रूवं विउव्वित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ णो परिड्ढीए गच्छइ । जहा आयड्ढीए एवं चेव

भावार्थ योग्य नहीं है. वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से मात्र पताका का संस्थानवाला रूप बनाती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से पताका रूप संठाण का वैक्रेय बना करके क्या अनेक योजन तक जासकती है ? हां गौतम ! वायुकाय पताका का रूप बनाकर अनेक योजन तक जासकती है. अहो भगवन् ! वह क्या स्वतः की ऋद्धि से जाती है या अन्य की ऋद्धि से जाती है ? अहो गौतम ! स्वतः की ऋद्धि से जा सकती है परंतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जासकती है. ऐसे ही स्वतः के कर्म से जाती है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाती है, स्वतः के प्रयोग से जा सकती है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं

शब्दार्थ जोड़ना ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप पु० पुरुषरूप ह० हस्तीरूप जा० यानरूप जु० धूंसरा गि० अंबाडी थि० ऊंटकी पिल्लिका सी० शिबिका सं० रथरूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ वा० वायुकाय वि० विकुर्वणा करते ए० एक

सूत्र ॥ ४ ॥ अणगारेणं भंते भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ बीयं पासइ चउभंगो ॥ ५ ॥ * ॥ पभूणं भंते ! वाउकाएणं एगं महं इत्थिरूवंवा, पुरिसरूवंवा, हत्थि रूवंवा जाणरूवंवा, एवं जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणियरूवंवा विउव्वित्तए ?

भावार्थ ८ भांगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती हैं इस में से फल की ४५ वीं चौभंगी बताते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परंतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, धुंसरे का, हस्ती की अंबाडीका ऊंट की पिल्लिका का, शिबिका का, वैलगाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ

शब्दार्थ म० बडा प० पताका का सं० संस्थानरूप वि० विकुर्वणा करे ॥ ६ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायु काय ए० एक म० बडा प० पताका रूप की वि०विकुर्वणा कर अ० अनेक जो० योजन ग०जाने को हं० हां प० समर्थ से० वह किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से ग० जावे प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि से णो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे ज० जैसे आ० आत्म ऋद्धि से

सूत्र गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाएणं विकुव्वमाणा एगं महं पडागा संठियंरूवं वि- कुव्वइ ॥ ६ ॥ पभूणं भंते ! वाउकाए एगं महं पडागासंठियं रूवं विउव्वित्ता अणे- गाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए ग- च्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ णो परिड्ढीए गच्छइ । जहा आयड्ढीए एवं चेव

भावार्थ योग्य नहीं है. वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से मात्र पताका का संस्थानवाला रूप बनाती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वैक्रेय समुद्घात से पताका रूप संठाण का वैक्रेय बना करके क्या अनेक योजन तक जासकती है ? हां गौतम ! वायुकाय पताका का रूप बनाकर अनेक योजन तक जासकती है. अहो भगवन् ! वह क्या स्वतः की ऋद्धि से जाती है या अन्य की ऋद्धि से जाती है ? अहो गौतम ! स्वतः की ऋद्धि से जा सकती है परंतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जासकती है. ऐसे ही स्वतः के कर्म से जाती है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाती है, स्वतः के प्रयोग से जा सकती है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं

शब्दार्थ जोड़ना ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् वा० वायुकाय ए० एक म० बड़ा इ० स्त्रीरूप पु० पुरुषरूप ह० हस्तीरूप जा० यानरूप जु० घूंसरा गि० अंबाडी थि० ऊंटकी पिल्लिका सी० शिबिका सं० रथरूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ सं० समर्थ वा० वायुकाय वि० विकुर्वणा करते ए० एक

सूत्र ॥ ४ ॥ अणगारेणं भंते भावियप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ बीयं पासइ चउभंगो ॥ ५ ॥ * ॥ पभूणं भंते ! वाउकाएणं एगं महं इत्थिरूवंवा, पुरिसरूवंवा, हत्थिरूवंवा जाणरूवंवा, एवं जुग्ग गिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणियरूवंवा विउव्वित्तए ?

भावार्थ ८ भांगे, स्कंध के ७, त्वचा के ६, शाखाके ५, प्रवालके ४, पत्रके ३, पुष्पके २ और फलका १ यों सब मील कर ४५ चौभंगी होती हैं इस में से फल की ४५ वी चौभंगी बताते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार क्या अवधि ज्ञान से फल को देखे या बीज को देखे ? अहो गौतम ! कितनेक फल को देखे परंतु बीज को देखे नहीं २ कितनेक बीज को देखे परंतु फल को देखे नहीं ३ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे और ४ कितनेक फल और बीज दोनों को देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या वायुकाय वैक्रेय समुद्घात करके स्त्री का, पुरुषका, हस्ती का, विमान का, धुंसरे का, हस्ती की अंबाडीका ऊंट की पिल्लिका का, शिबिका का, बैलगाडी इत्यादिकका रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ

शब्दार्थ वा० वायुकाय प० पताका गो० गौतम वा०. वायुकाय से० वह नो० नहीं सा० वह प० पताका ॥ ८ ॥ पं० समर्थ व० मेघ ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप जा० यावत् सं० रथरूप प० परिणमाने को

सूत्र से नो खलु सा पडागा ॥ ८ ॥ पभूणं भंते! बलाहगे एगंमहं इत्थिरूवंवा जाव संद-माणियरूवंवा परिणामेत्तए? हंता पभू ॥ १३ ॥ पभूणं भंते! वलाहए एगं महं इत्थिरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए? हता पभू। से भंते! किं आ-यड्डीए गच्छइ परिड्डीए गच्छइ? णो आयड्डीए गच्छइ, परिड्डीए गच्छइ. एवं णो आयकम्मुणा, परकम्मुणा। नो आयप्पओगेणं, परप्पओगेणं, ऊसितोदयंवा गच्छइ, पयोदयवा गच्छइ, । से भंते किं बलाहए इत्थी? गोयमा! बलाहएणं से णो खलु सा इत्थी। एवं

भावार्थ उसे वायुकाया कहना परंतु पताका नहीं कहना. ॥ ८ ॥ अहो गौतम! क्या मेघ एक बडा स्त्री का रूप यावत् शिविका का रूप परिणमाने में समर्थ है? अथवा अनेक योजन तक जाने को समर्थ है? हां भगवन्! वह स्त्री यावत् शिविकाकारूप बनाने को समर्थ है. वह क्या स्वतः की ऋद्धि से या अन्य की ऋद्धि से जासकते हैं? अहो गौतम! वह मेघ अजीव होने से स्वतः की शक्ति से नहीं जासकते हैं परंतु अन्य की शक्ति से जासकते हैं. वैसे ही स्वतः के कर्म से नहीं जासकते है परंतु अन्य के कर्मों से जा सकते हैं, स्वतः के प्रयोग से नहीं जासकते हैं परंतु अन्य के प्रयोग से जाते हैं. अहो भगवन्!

शब्दार्थ पृ० ऐसे आ० आत्म कम से आ० आत्म प्रयोग से भा० कहना ॥ ७ ॥ मू० वह किं० क्या ऊ० ऊर्ध्व पताका जैसे ग० जावे प० नीचीपताका जैसे ग० जावे गो० गौतम ऊ० ऊर्ध्व पताका जैसे ग० जावे प० नीचीपताका जैसे ग० जावे से० वह भं० भगवन् किं० क्या ए० एक दिशा में प० पताका जैसे ग० जावे दु० दोनों दिशामें प० पताका जैसे ग० जावे गो० गौतम ए० एकदिशा में प० पताका जैसे ग० जावे नो० नहीं दु० दोनों दिशा में प० पताका जैसे ग० जावे से० वह भं० भगवन् किं० क्या

मूल आयकम्मुणावि, आयप्पयोगेणवि भाणियव्वं ॥ ७ ॥ से भंते ! किं ऊसिओदयं गच्छइ, पतोदयं गच्छइ ? गोयमा ! ऊसिओदयंपि गच्छइ पयोदयंपि गच्छइ, ॥ से भंते ! किं एगओ पडागं गच्छइ, दुहओ पडागं गच्छइ ? गोयमा ! एगओ पडागं गच्छइ, नो दुहओ पडागं गच्छइ, ॥ से भंते ! किंवाउकाए पडागा ? गोयमा ! वाउकाएणं

भावार्थ सकती है. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! क्या वह वायुकाय ऊंची पताका के आकार से जाती है या नीची पताका के आकार से जाती है ? अहो गौतम ! ऊंची पताका के आकार से भी जाती है और नीची पताका के आकार से भी जाती है. अहो भगवन् ! क्या यह एक पताका या दो पताका से जाती है ? अहो गौतम ! एक पताका का रूप बनाकर जाती है परंतु दो पताका का रूप बनाकर नहीं जाती है. अहो भगवन् ! उसे क्या वायुकाय कहना या पताका कहना ? अहो गौतम !

शब्दार्थ वा० वायुकाय प० पताका गो० गौतम वा० वायुकाय से० वह नो० नहीं सा० वह प० पताका ॥ ८ ॥ पं० समर्थ व० मेघ ए० एक म० बडा इ० स्त्रीरूप जा० यावत् सं० रथरूप प० परिणमाने को

सूत्र से नो खलु सा पडागा ॥ ८ ॥ पभूणं भंते ! बलाहगे एगंमहं इत्थिरूवंवा जाव संदमाणियरूवंवा परिणामेत्तए ? हंता पभू ॥ १३ ॥ पभूणं भंते ! बलाहए एगं महं इत्थिरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ ? णो आयड्ढीए गच्छइ, परिड्ढीए गच्छइ. एवं णो आयकम्मुणा, परकम्मुणा नो आयप्पओगेणं, परप्पओगेणं, ऊसितोदयंवा गच्छइ, पयोदयवां गच्छइ, । से भंते किं बलाहए इत्थी ? गोयमा ! बलाहएणं से णो खलु सा इत्थी। एवं

भावार्थ उसे वायुकाया कहना परंतु पताका नहीं कहना. ॥ ८ ॥ अहो गौतम ! क्या मेघ एक बडा स्त्री का रूप यावत् शिबिका का रूप परिणमाने में समर्थ है ? अथवा अनेक योजन तक जाने को समर्थ है ? हां भगवन् ! वह स्त्री यावत् शिबिकाकारूप बनाने को समर्थ है. वह क्या स्वतः की ऋद्धि से या अन्य की ऋद्धि से जासकते हैं ? अहो गौतम ! वह मेघ अजीव होने से स्वतः की शक्ति से नहीं जासकते हैं परंतु अन्य की शक्ति से जासकते हैं. वैसे ही स्वतः के कर्म से नहीं जासकते है परंतु अन्य के कर्मों से जा सकते हैं, स्वतः के प्रयोग से नहीं जासकते हैं परंतु अन्य के प्रयोग से जाते हैं. अहो भगवन् !

शब्दार्थ हं० हां प० समर्थ ॥ ९ ॥ जी० जीव भं० भगवन् जे० जो ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे से० वह भं० भगवन् कि० किस ले० लेश्या से उ० उत्पन्न होवे गो० गौतम जं० जिस ले० लेश्या

सूत्र पुरिसे, आसे, हत्थी । पभूणं भंते बलाहए एगं महं जाणरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए, जहा इत्थिरूवं तहा भाणियव्वं । नवरं एगओ चक्कवालंपि, दुहओ चक्कवालंपि भाणियव्वं ॥ जुग्गगिल्लिथिल्लिसीयासंदमाणियाणंतहेव ॥ ९ ॥ जीवेणं भंते जेभविए नेरइएसु उववज्जित्तए, सेणं भंते ! किं लेस्सेसु उववज्जइ ? गो-

भावार्थ जब मेघ स्त्री आदि का रूप बना सकता है तब क्या उसे स्त्री वगैरह कहना. अहो गौतम ! उसे मेघही कहना परंतु स्त्री पुरुष वगैरह नहीं कहना. अहो भगवन् ! वे बद्दल विमान का रूप बनाकर अनेक योजन तक क्या जा सकते हैं ? हां गौतम ! वे जा सकते हैं वगैरह जैसा स्त्री का अधिकार कहा वैसे ही यहां कहना. विशेष उपर जो यान का रूप बनाकर विमान की गति का कथन किया सो एक चक्र से भी जासकते हैं, और दो चक्र से भी जासकते हैं. इसी प्रकार धूंसरा, अंबाडी, थिल्ली शिविका, व संदमनी वगैरह का कथन जानना. ॥ ९ ॥ गमन के अधिकार से गति गमनका प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! जो जीव नारकी में उत्पन्न होनेवाला है वह कृष्ण लेश्यादि छ लेश्या में से कौनसी लेश्या सहित उत्पन्न

शब्दार्थ के द० द्रव्य को प० ग्रहणकर का० काल करे त० उस लेश्या में उ० उत्पन्न होवे तं० वह ज० जैसे क० कृष्ण लेश्या नी० नीललेश्या का० कापोत लेश्या ए० ऐसे ज० जिसको जा० जो लेश्या सा० वह भा० कहना जा० यावत् जी० जीव भं० भगवन् जे० जो भ० ज्योतिषी में उ० उत्पन्न होने की

सूत्र यमा ! जं लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ, तल्लेसेसु उववज्जइ. तंजहा कण्हलेसेसुवा, नीललेसेसुवा, काउलेसेसुवा, एवं जस्स जा लेसा सा तस्स भाणियव्वा, जाव जीवेणं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए पुच्छा ? गोयमा ! जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ, तंजहा तेउलेस्सेसु। जीवेणं भंते ! जे भविए वेमाणिएसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! किं लेस्सेसु उववज्जइ ? गोयमा ! जल्ले-

भावार्थ होता है ? अहो गौतम ! जिस लेश्या के द्रव्य एकत्रित कर काल करता है उसी लेश्या में उत्पन्न होता है. नरक में तीन लेश्या सहित जीव जाता है. कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या. यावत् कृष्ण, नील, कापोत और तेजोलेश्यावाले दश प्रकार के भवनपति में उत्पन्न होते हैं. इनही चार लेश्यावाले पृथ्वी, पानी व वनस्पति में उत्पन्न होते हैं. कृष्ण, नील और कापतवाले तेउ वायु और विकलेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं. कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म, और शुक्ल लेश्यावाले मनुष्य तीर्यंच में उत्पन्न होते हैं. पहिली चार लेश्यावाले वाणव्यंतर में, मात्र एक तेजो लेश्यावाले ज्योतिषी और प्रथम द्वितीय देवलोक में

शब्दार्थ — भ० भव्य पु० पृच्छा गो० गौतम ज० जिस ले० लेश्या द० द्रव्य भाव से प० ग्रहणकर का० काल करे त० उस ले० लेश्या में उ० उत्पन्न होवे ते० तेजो लेश्या ॥ १० ॥ पूर्ववत् ॥ ११ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा बा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहण करे प० समर्थ वे० वेभार प० पर्वत को

सूत्र — साइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ, तंजहा तेउ लेसेसुवा, पम्ह-लेसेसुवा, सुक्कलेसेसुवा ॥ १०—११ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू वेभार पव्वयं उल्लंघेत्तएवा, पल्लंघेत्तएवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । अणगारेणं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू वेभारपव्वयं

भावार्थ — उत्पन्न होते हैं. पद्म लेश्यावाले तीसरे, चौथे, पांचवे देवलोक में; शुक्ल लेश्यावाले छठे देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध तक में उत्पन्न होते हैं. अर्थात् वैमानिक देवों में तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्याही है ॥ १०—११ ॥ शुभ लेश्यावाले साधु लब्धिवंत होते हैं इस से लब्धि आश्री प्रश्न पुछते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार बाहिर के वैक्रेय शरीर के पुद्गल ग्रहण किये विना राजगृही नगरी की पास का वेभार पर्वत क्या उल्लंघने को समर्थ होते हैं ! अहो गौतम वे बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये विना वेभार पर्वत उल्लंघने को समर्थ नहीं होसकते हैं. अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण

शब्दार्थ उ० उल्लंघन करने को प० विशेष उल्लंघन करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥१२॥ अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा बा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहण कर जा० यावत् इ० इतने रा० राजगृह न० नगर में रू० रूप वि० विकुर्वणा कर वे० वेभार पर्वत की अं० अंदर अ० प्रवेश कर प० समर्थ स० सम को वि० विषम क० करने को वि० विषम को स० सम क० करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० ऐसे वि० दूसरा आ० आलापक ण० विशेष प० ग्रहणकर

सूत्र उल्लंघेत्तएवा पल्लंघेत्तएवा ? हंता पभू ॥ १२ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा बाहिरएपोग्गले अपरियाइत्ता जाव इयाइं रायगिहे नयरे रूवाइं एवइयाइं विउव्वित्ता वेभारं पव्वयं अंतो अणुप्पविसित्ता पभू समंवा विसमंवा करेत्तए विसमंवा समं करेत्तए ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ एवं चेव बितीओवि आलावगो णवरं परियाइ-

भावार्थ कर क्या वेभार पर्वत उल्लंघ सकते हैं ? हां गौतम ! वे भावितात्मा अनगार बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर वेभार पर्वत का उल्लंघन कर सकते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! भावितात्मा लब्धिवंत साधु बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये विना राजगृही नगरी में जितने मनुष्य पशु हैं उतने रूप बनाकर वेभार पर्वत में प्रवेश कर सम को विषम व विषम को सम करने क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् लब्धिवन्त साधु बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये विना उक्त कार्य करने को समर्थ नहीं होते हैं. परंतु

शब्दार्थ — प० समर्थ ॥ १३ ॥ से० वह भं० भगवन् किं० क्या मा० मायी वि० विकुर्वणा करे अ० अमायी वि० विकुर्वणा करे गो० गौतम मा० मायी वि० विकुर्वणा करे नो० नहीं अ० अमायी वि० विकुर्वणा करे से० वह के० कैसे गो० गौतम मा० मायी प० स्निग्ध पा० पानी भो० भोजन भो० भोगवकर वा० वमनकरे त० उन को ते० उस प० स्निग्ध पा० पानी भो० भोजन से अ० अस्थि अ० अस्थिमिंज व० पुष्ट

सूत्र — त्था पभू ॥ १३ ॥ से भंते ! किं माई विकुव्वइ अमाई विकुव्वइ ? गोयमा ! माई विकुव्वइ, णो अमाई विकुव्वइ । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव नो अमाई विकुव्वई ? गोयमा ! माईणं पणीयं पाणभोयणं भोच्चा भोच्चा वामेइ, तस्सणं तेणं पणीएणं पाण भोयणेणं अ[illegible] अट्ठिमिंजा बहुली भवंति, पयणुए मंससोणिए भवइ, जेवियसे अहाबायरा पोग्गला तेवियसे परिणमंति ॥ सोइंदियत्ताए जाव फा-

भावार्थ — बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण कर राजगृही में रहेहुवे मनुष्य व पशु जितने रूप बनाकर वैभार पर्वत में प्रवेश करके सम की विषम भूमि और विषम की सम भूमि कर सकते हैं ॥ १३ ॥ अब वैक्रेय रूप कौन बनाते हैं सो कहते हैं. अहो भगवन् ! उक्त प्रकार के रूप क्या मायावी बनाते हैं या अमायी-माया कपट रहित पुरुष बनाते हैं ? अहो गौतम ! उक्त प्रकार के रूप मायी प्रमादी साधु करते हैं परंतु अमायी नहीं करते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से मायी विकुर्वणा करता है और अमायी नहीं करता है ?

शब्दार्थ भ० होवे प० पतला मं० मांस सो० रुधिर भ० होवे जे० जो अ० यथा वा० बादर पो० पुद्गल ते० वे प० परिण में सो० श्रोतेन्द्रियपने जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रियपने अ० अस्थि अ० अस्थिमिंज के० केश मं० दाढी रो० रोम न० नखपने सु० शुक्रपने सो० रुधिरपने अ० अमायी लू० रूक्ष पा० पानी

सूत्र सिंदियत्ताए, अट्ठिअट्ठिमिंजकेसमंसुरोमनहत्ताए सुक्कत्ताए सोणियत्ताए। अमाईणं लूहं पाण-भोयणं भोच्चा भोच्चा णो वामेइ, तस्सणं तेणं लूहेणं पाण भोयणेणं अट्ठि अट्ठिमिंजा पयणु भवंति, बहले मंस सोणिए जेवियसे अहाबादरा पोग्गला तेवियसे परिणमंति, तंजहा-उच्चारत्ताए, जाव सोणियत्ताए से तेणट्ठेणं जाव नो अमाई विकुव्वइ॥ माईणं तस्स ठाणस्स

भावार्थ अहो गौतम ! जो मायावी साधु होते हैं वे स्निग्ध सरस आहार पानी का भोजन करते हैं. बलवृद्धि के लिये वमन विरेचनादिक क्रियाओं करते हैं. ऐसे स्निग्ध पान भोजन से उन की हड्डीव हड्डीकी मिंजी बढती है मांस शोणित पतले होते हैं यथाबादर पुद्गल श्रोतेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय, अस्थी, अस्थि की मिंजी, केश, श्मश्रु, रोम, नख, शुक्र व रुधिरपने परिणमते हैं और इस से वैक्रेय रूप बना सकते हैं. जो अमायी होते हैं वे रूक्ष निरस आहार करते हैं और वमन विरेचनादि क्रियाओं नहीं करते हैं. उन को रूक्ष आहार से हड्डी और हड्डी की मींजी पतली होती है. मांस व लोही सघन होता है. उन को पानी व आहार रूप से ग्रहण किये हुवे पुद्गल बडीनीत, लघुनीत, श्लेष्म, खेंकार, वमन, पित्त, यावत् रुधिरपने

शब्दार्थ पः समर्थ ॥ १३ ॥ से० वह भं० भगवन् किं० क्या मा० मायी वि० विकुर्वणा करे अ० अमायी वि० विकुर्वणा करे गो० गौतम मा० मायी वि० विकुर्वणा करे नो० नहीं अ० अमायी वि० विकुर्वणा करे से० वह के० कैसे गो० गौतम मा० मायी प० स्निग्ध पा० पानी भो० भोजन भो० भोगवकर वा० वमनकरे त० उन को ते० उस प० स्निग्ध पा० पानी भो० भोजन से अ० अस्थि अ० अस्थिमिंज व० पुष्ट

सूत्र रा पभू ॥ १३ ॥ से-भंते ! किं माई विकुव्वइ अमाई विकुव्वइ ? गोयमा ! माई विकुव्वइ, णो अमाई विकुव्वइ । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव नो अमाई विकुव्वइ ? गोयमा ! माईणं पणीयं पाणभोयणं भोच्चा भोच्चा वामेइ, तस्सणं तेणं पणीएणं पाण भोयणेणं अट्ठि अट्ठिमिंजा बहुली भवंति, पयणुए मंससोणिए भवइ, जेवियसे अहावायरा पोग्गला तेवियसे परिणमंति ॥ सोइंदियत्ताए जाव फा-

भावार्थ ... के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण कर राजगृही में रहेहुवे मनुष्य व पशु जितने रूप बनाकर वैभार पर्वत में प्रवेश ... सम भूमि और विषम की सम भूमि कर सकते हैं ॥ १३ ॥ अब वैक्रेय रूप कौन बनाते ... अहो भगवन् ! उक्त प्रकार के रूप क्या मायावी बनाते हैं या अमायी-माया कपट ... बनाते हैं ? अहो गौतम ! उक्त प्रकार के रूप मायी प्रमादी साधु करते हैं परंतु अमायी नहीं करते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से मायी विकुर्वणा करता है और अमायी नहीं करता है ?

शब्दार्थ म० होवे प० पतला मं० मांस सो० रुधिर भ० होवे जे० जो अ० यथा बा० बादर पो० पुद्गल ते० वे प० परिणमे सो० श्रोतेन्द्रियपने जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रियपने अ० अस्थि अ० अस्थिमिंज के० केश मं० दाढी रो० रोम न० नखपने सु० शुक्रपने सो० रुधिरपने अ० अमायी लू० रूक्ष पा० पानी

सूत्र सिंदियत्ताए, अट्ठिअट्ठिमिंजकेसमंसुरोमनहत्ताए सुक्कत्ताए सोणियत्ताए। अमाईणं लूहं पाण-भोयणं भोच्चा भोच्चा णो वामेइ, तस्सणं तेणं लूहेणं पाण भोयणेणं अट्ठि अट्ठिमिंजा पयणु भवंति, बहले मंस सोणिए जेवियसे अहाबादरा पोग्गला तेवियसे परिणमंति, तंजहा-उच्चारत्ताए, जाव सोणियत्ताए से तेणट्ठेणं जाव नो अमाई विकुव्वइ॥ माईणं तस्स ठाणस्स

भावार्थ अहो गौतम ! जो मायावी साधु होते हैं वे स्निग्ध सरस आहार पानी का भोजन करते हैं. बलवृद्धि के लिये वमन विरेचनादिक क्रियाओं करते हैं. ऐसे स्निग्ध पान भोजन से उन की हड्डी व हड्डी की मिंजी बढती है मांस शोणित पतले होते हैं यथाबादर पुद्गल श्रोतेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय, अस्थी, अस्थि की मिंजी, केश, श्मश्रु, रोम, नख, शुक्र व रुधिरपने परिणमते हैं और इस से वैक्रेय रूप बना सकते हैं. जो अमायी होते हैं वे रूक्ष निरस आहार करते हैं और वमन विरेचनादि क्रियाओं नहीं करते हैं. उन को रूक्ष आहार से हड्डी और हड्डी की मींजी पतली होती है. मांस व लोही सघन होता है. उन को पानी व आहार रूप से ग्रहण किये हुवे पुद्गल बडीनीत, लघुनीत, श्लेष्म, खेंकार, वमन, पित्त, यावत् रुधिरपने

शब्दार्थ भो॰ भोजन भो॰ भोगव कर णो॰ नहीं वा॰ वमनकरे त॰ उन को ते॰ उस लू॰ रूक्ष पा॰ पानी भो॰ भोजन से॰ अस्थि अ॰ अस्थिमिंज प॰ पतली भ॰ होती है ॥ ३ ॥ ५ ॥ *

अ॰ अनगार भं॰ भगवन् भा॰ भावितात्मा वा॰ बाह्य पो॰ पुद्गल अ॰ विना ग्रहण किये प॰ समर्थ ए॰

मूत्र अणालोइय पडिक्कंते कालं करेइ, नत्थितस्स आराहणा अमाईणं तस्स ठाणस्स आले.इय पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति तईयसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ४ ॥ × × +

अणगारेणं भंते ! भावियअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं इत्थिरू-

भावार्थ परिणमते हैं इस तरह शक्ति कम होने से अमायी वैक्रेयादि लब्धि नहीं करते हैं. अब मायी और अमायी को फल बताते हैं. मायावी प्रमादी वैक्रेय करनेमें लब्धि फोडने से अथवा सरस आहारादि के दोष लगने से यदि उस की आलोचना प्रतिक्रमण करे नहीं तो वह जिनाज्ञा का आराधक नहीं होसकता है. और जो अमायी अप्रमादी होते हैं वे निर्दोष आहार भोगवने से व वैक्रेयादि नहीं करने से अल्प दोषी होते हैं. जो कुच्छ छद्मस्थपना से दोष लगता है उस की गुरु की समक्ष आलोचना करने से जिनाज्ञा का आराधक होता है. अहो भगवन् ! आपके वचन तथ्य हैं. आप जैसे कहते हैं वैसे ही हैं. यह तीसरा शतकका चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ४ ॥ = =

शब्दार्थ एक म० वडा इ० स्त्रीरूप जा० यावत् सं० पालखी रूप वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम नो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ १ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् भ० भावितात्मा के० कितना प० समर्थ वि० विकुर्वणा करने को गो०गौतम ज०जैसे जु०यवतीको जु०युवान ह०हस्त से ह०हस्त में गे०ग्रहण करे च०चक्र

सूत्र वंत्रा जाव संदामाणियरूवं वा विकुव्वित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । अणगारेणं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं इत्थिरूवं वा जाव संदामाणियरूवं वा विकुव्वित्तए ? हंता पभू ॥ १ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा केवइयाइं पभू इत्थिरूवाइं विउव्वित्तए ? गोयमा ! से जहानामए जुवइं जुवाणे हत्थेणं

भावार्थ अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार बाहिरके वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये विना क्या एक महा स्त्री का रूप यावत् पालखी का रूप बनाने को समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अर्थात् वे वैसा वैक्रेय रूप नहीं बनासकते हैं. तब अहो भगवन् ! क्या वह बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण कर एक महा स्त्रीका रूप यावत् पालखी का रूप बनाने को समर्थ है? हां गौतम! वह महा स्त्रीका रूप यावत् पालखी बनाने को समर्थ है ॥ १ ॥ अहो भगवन्! भावितात्मा साधु स्त्री के कितने रूप बनासकते हैं ? अहो गौतम ! जैसे काम पीडित पुरुष अपने हस्त से स्त्री का हस्त मजबुत पकडता है अथवा जैसे गाडी के चक्र की नाभीं

शब्दार्थ भो० भोजन भो० भोगव कर णो० नहीं वा० वमनकरे त० उन को ते० उस रू० रूक्ष पा० पानी भो० भोजन से० अस्थि अ० अस्थिमिंज प० पतली भ० होती है ॥ ३ ॥ ४ ॥ * अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा वा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहण किये प० समर्थ ए०

सूत्र अणालोइय पडिक्कंते कालं करेइ, नत्थितस्स आराहणा अमाईणं तस्स ठाणस्स आलं.इय पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति तईयसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ४ ॥ × × +

अणगारेणं भंते ! भावियअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं इत्थिरू-

भावार्थ परिणमते हैं इस तरह शक्ति कम होने से अमायी वैक्रेयादि लब्धि नहीं करते हैं. अब मायी और अमायी को फल बताते हैं. मायावी प्रमादी वैक्रेय करनेमें लब्धि फोडने से अथवा सरस आहारादि के दोष लगने से यदि उस की आलोचना प्रतिक्रमण करे नहीं तो वह जिनाज्ञा का आराधक नहीं होसकता है. और जो अमायी अप्रमादी होते हैं वे निर्दोष आहार भोगवने से व वैक्रेयादि नहीं करने से अल्प दोषी होते हैं. जो कुच्छ छद्मस्थपना मे दोष लगता है उस की गुरु की समक्ष आलोचना करने से जिनाज्ञा का आराधक होता है. अहो भगवन् ! आपके वचन तथ्य हैं. आप जैसे कहते हैं वैसे ही हैं. यह तीसरा शतकका चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ४ ॥ = =

शब्दार्थ — जैसे के० कोई पुरुष अ० खड्ग च० चर्मका पा० पात्र ग० ग्रहण कर ग० जावे ए० ऐसे अ० अनगार भा० भावितात्मा अ० म्यान पा० पात्र ह० हस्त में लेकर अ० आत्मा से उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० जावे हं० हां उ० जावे ॥ २ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा ए० एकदिशि में प०

सूत्र — रिसे असिचम्मपायं गहाय गच्छेज्जा एवामेव अणगारेवि भावियप्पा असिचम्मपायं हत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ? हंता उप्पइज्जा। अणगारेणं भंते ! भावियप्पा केवइयाइं पभू असिचम्महत्थकिच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए ? गोयमा ! से जहा नामए जुवइं जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा तं चेव जाव विउव्विंसु वा ३ ॥३॥ से जहा नामए केइपुरिसे एगओ पडागं काउं गच्छेज्जा एवामेव अ-

भावार्थ — खड्ग का म्यान हस्त में लेकर कोई पुरुष जावे वैसे ही क्या गगनगामिनी विद्या से भावितात्मा साधु खड्ग चर्म पत्र [म्यान] हस्त में लेकर आकाश में जावे ? हां गौतम ! वैसे आकाश में जावे. अहो भगवन् ! हस्त में म्यान होवे वैसे कितने रूप वह भावितात्मा अनगार बनावे ? अहो गौतम ! जैसे काम पीडित युवान पुरुष युवती को अपने हस्त से पकडता है यावत् एक लक्ष योजन का जम्बूद्वीप भरे. यह मात्र वैक्रेय का विषय है परंतु इतना रूप किसीने किया नहीं, करते नहीं, और करेंगे नहीं ॥३॥ अहो भगवन् !

शब्दार्थ की ना० नाभी अ० आरासे उ० युक्त सि० होवे ए० ऐसे अ० अनगार भा० भावितात्मा वि० वैक्रेय स० समुद्घात स० नीकाले जा० यावत् प० समर्थ गो० गौतम अ० अनगार भा० भावितात्मा के० संपूर्ण जं० जम्बूद्वीप को ब० बहुत इ० स्त्रीरूप से आ० आकीर्ण वि० विकीर्ण जा० यावत् ए० यह गो० गौतम अ० अनगार भा० भावितात्मा का अ० यह ए० ऐसा वि० विषय वि० विषय मात्र वु० कहा नो० नहीं सं० संपत्ति वि० विकुर्वणा की ए० ऐसे प० परिपाटी ने० जानना जा० यावत् सं० पालखीरूप ॥ २ ॥ ज०

सूत्र हत्थंसि गेण्हेज्जा, चक्कस्सवा नाभी अरगाउत्ता सिया एवामेव अणगारेवि भावियप्पा विउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ जाव पभूणं ? गोयमा ! अणगारेणं भावियप्पा केवलकप्पं जंबूद्दीवं दीवं बहूहिं इत्थिरूवेहिं आयन्नं वितिकिण्णं जाव एसणं गोयमा ! अणगारस्स भावियप्पणो अयमेवारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए नोचेवणं संपत्तीए, विकुव्विसुवा ३, एवं परिवाडीए नेयव्वं जाव संदमाणिया ॥ २ ॥ सेजहा नामए केइपु-

भावार्थ में आरे को भीडते हैं वैसे ही लब्धिवंत साधु वैक्रेय समुद्घात करके एक लक्ष योजन का जम्बूद्वीप स्त्रीके रूप से भरने को समर्थ है. अहो गौतम ! भावितात्मा अनगार को वैक्रेय करने का यह विषय कहा है परंतु इतने रूप किसीने गत काल में किये नहीं है, वर्तमान में नहीं करते हैं, और आगामिक में करेंगे नहीं. जैसे स्त्री रूप का कहा वैसे ही पुरुष वगैरह का अनुक्रम से पालखी तक का कहना ॥ २ ॥ जैसे

शब्दार्थ ऊडे ॥ ४ ॥ से० वह ज० जैसे के० कोई पुरुष ए० एकादिशा में प० पलांठी का० करके चि० खडारहे ॥ ५ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् वा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहण किये प० समर्थ ए० एक म०

सूत्र ॥ ४ ॥ से जहा नामए केइपुरिसे एगओ पल्हात्थियं काउं चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे भावियप्पा तं चेव जाव विकुव्विसुवा ३ । एवं दुहओ पल्हात्थियंपि । से जहा नामए केइ पुरिसे एगओ पलियंकं काउं चिट्ठिज्जा तं चेव विकुव्विसुवा ३ । एवं दुहओ पलियंकंपि ॥ ५ ॥ अणगारेणं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं आसरूवंवा, हत्थिरूवंवा, सीहरूवं वा वग्घ-वग्ग-दीविय-अच्छ-तरच्छ-परासर-

भावार्थ कार कहा वैसे ही यहां जानना ऐसे ही दो उपवितों का जानना. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जैसे कोई पुरुष एक तरफ पल्हांठी से खडा रहता है, ऐसे ही क्या भावितात्मा अनगार आकाश में गमन कर सकते हैं ? हां गौतम ! वे आकाश में गमन कर सकते हैं यावत् एक लक्ष योजन जम्बूद्वीप भर सकते हैं. ऐसे दो पल्हांठी से भी आकाश में जा सकते हैं. ऐसे ही एक पर्यंकासन और दो तरफ पर्यंकासन मे आकाश में जा सकते हैं यावत् एक लक्ष योजन का जम्बूद्वीप भर सकते है. परंतु इतना किसीने किया नहीं, करते नहीं व करेंगे नहीं. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! लब्धिवंत भावितात्मा अनगार बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना क्या अश्व का रूप, हस्ती का रूप, सिंह का रूप, व्याघ्र का रूप, चित्ता का

शब्दार्थ पताका जैसे ह० हस्त में लेकर अ० स्वतः से उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० ऊडे अ० अनगार भा० भावितात्मा ए० एकदिशा में ज० यज्ञोपवित कि० लेकर अ० स्वतः से उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ०

सूत्र णगारे भाविअप्पा एगओ पडागाहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढंवेहासं उप्पएज्जा? हंता गोयमा ! अणगारेणं भंते ! भावियप्पा केवइयाइं पभू एगओ पडागा हत्थकिच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए, एवं जाव विकुव्विसुवा ३। एवं दुहओ पडागंपि। से जहानामए केइपुरिसे एगओ जणोवइ तंकाउं गच्छेज्जा, एवामेव अणगारेवि भावियप्पा एगओ जनोवइयं किच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पाएज्जा? हंता उप्पाएज्जा। अणगारेणं भंते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू एगओ जणोवइयं किच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए तं चेव जाव विकुव्विसुवा ३,। एवं दुहओ जणोवइयंपि

भावार्थ जैसे कोई पुरुष एकदिशी में पताका करके जावे वैसे ही कोई भावितात्मा अनगार वैक्रेय रूप से एकदिशा की पताका हस्त में रखकर क्या जाने को समर्थ है? हां गौतम ! वह जासकते हैं वगैरह सब पहिले जैसे कहना. ऐसे ही दो पताका का अधिकार जानना. अहो भगवन् ! जैसे कोई एक तरफ यज्ञोपवित धारन कर जावे वैसे ही क्या भावितात्मा साधु एकदिशा की उपवित का रूप धारन कर आकाश में जावे ? हां गौतम ! जासकते है अहो भगवन् ! ऐसे कितने रूप बना सकते हैं ? अहो गौतम ! जैसे म्यान का अधि

शब्दार्थ हां प० समर्थ से॰ वह भं० भगवन् किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से प० दूसरे की ऋद्धि से ग० जावे

सूत्र माईणं भंते ! तस्सठाणस्स अणालोइय पडिकंते कालं करेइ कहिं उववज्जइ ? गोयमा ! अण्णयरेसु अभियोगेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ अमाईणं तस्स ठाणस्स आलोइय पडिकंते कालं करेइ कहिं उववज्जइ; गोयमा ! अण्णयरेसु अणाभियोगिएसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जइ सेवंभंते भंतेत्ति ॥ गाहा-इत्थी, असी,

भावार्थ है या अन्य की ऋद्धि से जाता है ? अहो गौतम ! आत्म ऋद्धि से जाता है परंतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जाता है. आत्म कर्म से जाता है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाता है, आत्म प्रयोग से जाता है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं जाता है, ऊर्ध्व पताका के आकार से जाता है परंतु अधो पताका के आकार से नहीं जाता है. अहो भगवन् ! क्या वह अनगार अश्व कहाता है ? अहो गौतम ! अनगार अश्व नहीं कहाता है परंतु अनगार कहाता है. ऐसे ही अष्टापद तक जानना. अहो भगवन् ! उक्त प्रकार के रूप क्या मायावी बनाते हैं या अमायावी-अप्रमादी बनाते हैं ? अहो गौतम! वे रूप मायावी साधु बनाते हैं परंतु अमायावी नहीं बनाते हैं वगैरह सब चौथे उद्देशे जैसे जानना. अहो भगवन् ! मयावी उस की आलोचना प्रतिक्रमण वगैरह किये विना वहांपर काल कर जावे तो कहां जावे ? अहो गौतम ! वैसे प्रथम देवलोक से बारहवे देवलोक तक में इन्द्रादि देवों के सेवकपने उत्पन्न होवे हैं अहो भगवन् ! अमायावी आलोचना प्रतिक्रमण वगैरह करके कहां उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वे सेवकपने नहीं उत्पन्न होते हैं परंतु सामानिक देव व अहमेंद्र देवपने सर्वार्थ सिद्ध विमान तक

शब्दार्थ बडा आ० अश्वरूप ह० हस्ति सी० सिंहरूप व० व्याघ्र व० चित्ता दी० दीपडा अ० रींछ त० तरख प० अष्टापद अ० वैक्रेय करने को णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ॥ ८ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् भा० भावितात्मा ए० एक म० बडा आ० अश्वरूप अ० वैक्रेयकर अ० अनेक जो० योजन ग० जाने को हं०

सूत्र रूवंवा अभिजुंजित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अणगारेणं एवं बाहिरए पोग्गले परिया-इत्ता पभू ॥ ६ ॥ अणगारेणं भंते ! भाविअप्पा एगं महं आसरूवंवा अभिउंजित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंता पभू । से भंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ णो परिड्ढीए एवं आयकम्मुणा परकम्मुणा, आयप्पयोगेणं परप्पयोगेण, उस्सिओदयंवा गच्छइ, पयोदयंवा गच्छइ । सेणं भंते ! किं अणगारे आसे ? गोयमा ! अणगारेणंसे नो खलु से आसे एवं जाव परासर रूवं वा से भंते किं माई विकुव्वइ, अमाई विकुव्वइ ? गोयमा ! मायी विकुव्वइ, नो अमायीविकुव्वइ ।

भावार्थ का, दीपडीका रूप, रींछका रूप, तरखका रूप, अष्टापदका रूप और अन्य भी ऐसे रूप क्या बना सकते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है, अर्थात् बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना वैसे रूप नहीं बना सकते हैं. परंतु बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर ऐसे रूप बनासकते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार एक बडा अश्वका रूप बनाकर अनेक योजन तक जाने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! अश्वका रूप बनाकर अनेक योजन तक जाने को समर्थ है. अहो भगवन् ! क्या वह आत्म ऋद्धि से जाता

शब्दार्थ हां प० समर्थ से० वह भं० भगवन् किं० क्या आ० आत्म ऋद्धि से प० दूसरे की ऋद्धि से गा० जावे

सूत्र माईणं भंते ! तस्सठाणस्स अणालोइय पडिकंते कालं करेइ कहिं उववज्जइ ? गोयमा ! अण्णयरेसु अभियोगेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ अमाईणं तस्स ठाणस्स आलोइय पडिकंते कालं करेइ कहिं उववज्जइ; गोयमा ! अण्णयरेसु अणाभियोगिएसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जइ सेवंभंते भंतेत्ति ॥ गाहा-इत्थी, असी,

भावार्थ हैं या अन्य की ऋद्धि से जाता है ? अहो गौतम ! आत्म ऋद्धि से जाता है परंतु अन्य की ऋद्धि से नहीं जाता है. आत्म कर्म से जाता है परंतु अन्य के कर्म से नहीं जाता है, आत्म प्रयोग से जाता है परंतु अन्य के प्रयोग से नहीं जाता है, ऊर्ध्व पताका के आकार से जाता है परंतु अधो पताका के आकार से नहीं जाता है. अहो भगवन् ! क्या वह अनगार अश्व कहाता है ? अहो गौतम ! अनगार अश्व नहीं कहाता है परंतु अनगार कहाता है. ऐसे ही अष्टापद तक जानना. अहो भगवन् ! उक्त प्रकार के रूप क्या मायावी बनाते हैं या अमायावी-अप्रमादी बनाते हैं ? अहो गौतम! वे रूप मायावी साधु बनाते हैं परंतु अमायावी नहीं बनाते हैं वगैरह सब चौथे उद्देशे जैसे जानना. अहो भगवन् ! मायावी उस की आलोचना प्रतिक्रमण वगैरह किये बिना वहांपर काल कर जावे तो कहां जावे ? अहो गौतम ! वैसे प्रथम देवलोक से बारहवे देवलोक तक में इन्द्रादि देवों के सेवकपने उत्पन्न होवे हैं अहो भगवन् ! अमायावी आलोचना प्रतिक्रमण वगैरह करके कहां उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! वे सेवकपने नहीं उत्पन्न होते हैं परंतु सामानिक देव व अहमेंद्र देवपने सर्वार्थ सिद्ध विमान तक

शब्दार्थ गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि नो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से पूर्ववत् ॥ ३ ॥ ५ ॥ ×

अ० अनगार भं० भगवन् मा० मायी मि० मिथ्या दृष्टि वी० वीर्य लब्धि से वि० विभंग ज्ञान. लब्धि से वा० वाणारसी न० नगरी में स० विकुर्वणा कर रा० राजगृह न० नगर में रू० रूप जा० जाने पा०

सूत्र पडागा, जण्णोवइएय होइ बोधव्वे । पल्हत्थिय पलियंके, अभियोगविकुव्वणा मायी तइयसए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ५ ॥ * ॥ ÷ ÷ ÷

अणगारेणं भंते भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंग-

भावार्थ उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन्! आपने कहा सो सत्य है. अब इस में उद्देशा का स्वरूप गाथा द्वारा संक्षेप से कहते हैं. स्त्रीरूप का, खड्ग म्यान का, पताका का, उपवित का, पलहांठी का, पर्यंकासन का, और मायी आभियोगिक देव-सेवकपने उत्पन्न होते हैं वैसा कहा. यह तीसरा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ ३ ॥ ५ ॥ + ÷

अब इस छठे उद्देशे में भी वैक्रेय संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन्! मायी मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से वाणारसी नगरी की विकुर्वणा करके क्या राजगृही नगरी में मनुष्य पशु वगैरह के रूप जाने देखे? हां गौतम! विभंग ज्ञान से जाने और अवधि दर्शन से देखे. अहो भगवन्! क्या वे यथातथ्य भाव जाने, देखे या अन्यथा भाव जाने देखे? अहो गौतम! यथा

र्थ देखे हं० हां जा० जाने पा० देखे से० वह किं० क्या त० तथा भाव जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भा० भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम णो० नहीं त० तथाभाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखे से० वह के० कैसे ए० एसा वु० कहा जाता है णो० नहीं त० तथा भाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम त० उसको ए० ऐसा भ० होवे अ० मैं रा० राजगृहनगर की स० विकुर्वणा कर वा० वाणारसी न० नगरी में रू०

सूत्र नाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ से भंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ, अण्णहा भावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहा भावं जाणइ पासइ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णो तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहा भावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं रायगिहे नयरे समोहए समोह-

भावार्थ तथ्य जाने नहीं व देखे नहीं परंतु अन्यथा भाव जाने व देखे. अहो भगवन् ! किस तरह वह यथातथ्य भाव जाने, देखे नहीं; परंतु अन्यथा भाव जाने, देखे ? अहो गौतम ! उन को ऐसा होवे कि अहो मैंने राजगृह नगरी का वैक्रेय किया और वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह के रूप देख रहा हूं. इस तरह उन अन्य दर्शनियों को दृष्टि की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है. जैसे

शब्दार्थ

गो० गौतम आ० आत्म ऋद्धि नो० नहीं प० दूसरे की ऋद्धि से पूर्ववत् ॥ ३ ॥ ५ ॥ ×

अ० अनगार भं० भगवन् मा० मायी मि० मिथ्या दृष्टि वी० वीर्य लब्धि से वि० त्रिभंग ज्ञान लब्धि से वा० वाणारसी न० नगरी में स० विकुर्वणा कर रा० राजगृह न० नगर में रू० रूप जा० जाने पा०

सूत्र

पडागा, जण्णोवइएय होइ बोधव्वे । पल्हात्थिय पलियंके, अभियोगविकुव्वणा मायी तइयसए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ५ ॥ * ॥ ÷ ÷ ÷

अणगारेणं भंते भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंग-

भावार्थ

उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन्! आपने कहा सो सत्य है. अब इस में उद्देशा का स्वरूप गाथा द्वारा संक्षेप से कहते हैं. स्त्रीरूप का, खड्ग म्यान का, पताका का, उपवित का, पल्हांठी का, पर्यंकासन का, और मायी आभियोगिक देव-सेवकपने उत्पन्न होते हैं वैसा कहा. यह तीसरा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ ३ ॥ ५ ॥ + ÷

अब इस छठे उद्देसे में भी वैक्रेय संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन्! मायी मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से वाणारसी नगरी की विकुर्वणा करके क्या राजगृही नगरी में मनुष्य पशु वगैरह के रूप जाने देखे ? हां गौतम ! विभंग ज्ञान से जाने और अवधि दर्शन से देखे. अहो भगवन् ! क्या वे यथातथ्य भाव जाने, देखे या अन्यथा भाव जाने देखे ? अहो गौतम ! यथा

ार्थ देखे हं० हां जा० जाने पा० देखे से० वह किं० क्या त० तथा भाव जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भा० भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम णो० नहीं त० तथाभाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखे से० वह के० कैसे ए० एसा वु० कहा जाता है णो० नहीं त० तथा भाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम त० उसको ए० ऐसा भ० होवे अ० मैं रा० राजगृहनगर की स० विकुर्वणा कर वा० वाणारसी न० नगरी में रू०

सूत्र नाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ से भंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ, अण्णहा भावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहा भावं जाणइ पासइ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णो तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहा भावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं रायगिहे नयरे समोहए समोह-

भावार्थ तथ्य जाने नहीं व देखे नहीं परंतु अन्यथा भाव जाने व देखे. अहो भगवन् ! किस तरह वह यथातथ्य भाव जाने, देखे नहीं; परंतु अन्यथा भाव जाने, देखे ? अहो गौतम ! उन को ऐसा होवे कि अहो मैंने राजगृह नगरी का वैक्रेय किया और वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह के रूप देख रहा हूं. इस तरह उन अन्य दर्शनियों को दृष्टि की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है. जैसे

शब्दार्थ गो॰ गौतम आं॰ आत्म ऋद्धि, नो॰ नहीं प॰ दूसरे की ऋद्धि से पूर्ववत् ॥ ३ ॥ ५ ॥ ×

अ॰ अणगार भं॰ भगवन् भा॰ भावी मि॰ मिथ्या दृष्टि वी॰ वीर्य लब्धि से वि॰ विभंग ज्ञान, लब्धि से वा॰ वाणारसी न॰ नगरी में स॰ विकुर्वणा कर रा॰ राजगृह न॰ नगर में रू॰ रूप जा॰ जाने पा॰

सूत्र पड़ागा, जण्णाइइए हाइ णोबाले । पल्हात्थिय पलियंके, अभियोगविकुव्वणा मायी

तइयसए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ५ ॥ * ॥ ÷ ÷ ÷

अणगारेणं भंते भावियप्पा मायी मिच्छादिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंग-

भावार्थ उत्पन्न होते हैं. अहो भगवन्! आपने कहा सो सत्य है. अब इस में उद्देशा का स्वरूप गाथा द्वारा संक्षेप से कहते हैं. स्त्रीरूप का, खड्ग म्यान का, पताका का, उपवित का, पल्हांठी का, पर्यंकासन का, और मायी आभियोगिक देव-सत्कपने उत्पन्न होते हैं ऐसा कहा. यह तीसरा शतक का पांचवा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ ३ ॥ ५ ॥ + ÷

अब इस छठे उद्देश में भी वैक्रेय संबंधी प्रश्न करते हैं. अहो भगवन्! मायी मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से वाणारसी नगरी की विकुर्वणा करके क्या राजगृही नगरी में मनुष्य पशु वगैरह के रूप जाने देखे ! हां गौतम ! विभंग ज्ञान से जाने और अवधि दर्शन से देखे. अहो भगवन् ! क्या वे यथातथ्य भाव जाने, देखे या अन्यथा भाव जाने देखे ? अहो गौतम ! यथा

शब्दार्थ देखे हं० हां जा० जाने पा० देखें से० वह किं० क्या त० तथा भाव जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भा० भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम णो० नही त० तथाभाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखे से० वह के० कैसे ए० एसा वु० कहा जाता है णो० नहीं त० तथा भाव को जा० जाने पा० देखे अ० अन्यथा भाव को जा० जाने पा० देखे गो० गौतम त० उसको ए० ऐसा भ० होवे अ० मैं रा० राजगृहनगर की स० विकुर्वणा कर वा० वाणारसी न० नगरी में रू०

सूत्र नाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ से भंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ, अण्णहा भावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहा भावं जाणइ पासइ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णो तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहा भावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं रायगिहे नयरे समोहए समोह-

भावार्थ तथ्य जाने नहीं व देखे नहीं परंतु अन्यथा भाव जाने व देखे. अहो भगवन् ! किस तरह वह यथातथ्य भाव जाने, देखे नहीं; परंतु अन्यथा भाव जाने, देखे ? अहो गौतम ! उन को ऐसा होवे कि अहो मैंने राजगृह नगरी का वैक्रेय किया और वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह के रूप देख रहा हूं. इस तरह उन अन्य दर्शनियों को दृष्टि की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है. जैसे

शब्दार्थ रूप जा० जानता हूं पा० देखता हूं से० उस से०उस दं०दर्शन में वि० विपरीतता भ०होवे ते०इस लिये जा० यावत् पा० देखे ॥ १ ॥ पूर्ववत् ॥ २ ॥ अ० अणगार भं० भगवन् मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि वी०

सूत्र णित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणामि पासामि, से से दंसणे विवच्चासे भवइ, से तेणट्ठेणं जाव पासइ ॥ १ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छादिट्ठी जाव रायगिहे नयरे समोहए समोहएत्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ। तंचेव जाव तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइं जाणामि पासामि। से से दंसणे विवच्चासे भवइ से तेणट्ठेणं जाव अण्णहाभावं जाणइ पासइ ॥ २ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा मायी

भावार्थ किसी दिशी मूढ पुरुष पूर्वादि दिशा नहीं जानसकता है; वैसे ही वह भी नहीं जान सकता है. इसलिये अहो गौतम ! वैसा अनगार यथातथ्य भाव नहीं जानसकता है परंतु अन्यथा भाव जान सकता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मायी मिथ्या दृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्यलब्धि, वैक्रेय लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से राजगृह नगर का वैक्रेय करके क्या वाणारसी में मनुष्यादि के रूप जान व देख सकता है ? हां गौतम ! वह राजगृहीकी विकुर्वणा करके वाणारसीमें मनुष्यादिक के रूप जान व देख सकता है वगैरह सब अधिकार पहिले जैसे कहना. और उसे भी ऐसा विचार होवे कि मैंने वाणारसी का रूप

र्थ वीर्यलब्धि से वि० वैक्रेय लब्धिसे वि० विभंगज्ञान लब्धिसे वा० वाणारसी नगरी रा० राजगृह न० नगर की अं० वीच में ए० एक म० वडा ज० देशसमुह स० त्रिकुर्वणा कर वा० वाणारसी नगरी. रा० राजगृह न० नगर की अं०वीचमें ए० एक म०वडा ज०देश समुह जा०जाने पा०देखे हं०हां जा०जाने पा० देखे त०

सूत्र मिच्छदिट्ठी वीरिय लद्धीए विउव्वियलद्धीए विभंग णाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं रायगिहंच नगरं अंतरा य एगं महं जणवयवग्गं समोहए समोहएत्ता वाणारसिं नगरिं रायगिहं तंच अंतरा एगं महं जणवयवग्गं जाणइ पासइ? हंता जाणइ पासइ। से भंते! किं तहाभावं जाणइ पासइ, अण्णहाभावं जाणइ पासइ? गोयमा! णो तहाभावं

भावार्थ बनाया और राजगृही में मनुष्यादि के रूप जान व देख सकता हूं. इस तरह दृष्टि की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है. इस से वह यथार्थ भाव नहीं जान सकता है व देख सकता है परंतु अन्यथा भाव जान सकता है व देख सकता है ॥ २ ॥ अहो भगवन्! मायी, मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से राजगृही व वाणारसी नगरी के वीच में एक वडाजनपद की विकुर्वणा करके क्या इन दोनों नगरी के वीच के जनपद को जान व देख सकता है? हां गौतम! ऐसा मायावी मिथ्यादृष्टि भावितात्मा अनगार जान व देख सकता है. अहो भगवन्! क्या वह तथा भाव जाने या अन्यथा भाव जाने? अहो गौतम! वह तथा भाव जाने परंतु अन्यथा भाव जाने नहीं.

शब्दार्थ रूप जा० जानता हूं पा० देखता हूं से० उस से०उस दं०दर्शन में वि० विपरीतता भ०होवे ते०इस लिये जा० यावत् पा० देखे ॥ १ ॥ पूर्ववत् ॥ २ ॥ अ० अणगार भं० भगवन् मा० मायी मि० मिथ्यादृष्टि वी०

सूत्र णित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणामि पासामि, से से दंसणे विवच्चासे भवइ, से तेणट्ठेणं जाव पासइ ॥ १ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छादिट्ठी जाव रायगिहे नयरे समोहए समोहएत्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ । तंचेव जाव तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए समोहए समोहणित्ता रायगिहे नयरे रूवाइं जाणामि पासामि । से से दंसणे विवच्चासे भवइ से तेणट्ठेणं जाव अण्णहाभावं जाणइ पासइ ॥ २ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा मायी

भावार्थ किसी दिशी मूढ पुरुष पूर्वादि दिशा नहीं जानसकता है; वैसे ही वह भी नहीं जान सकता है. इसलिये अहो गौतम ! वैसा अनगार यथातथ्य भाव नहीं जानसकता है परंतु अन्यथा भाव जान सकता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! मायी मिथ्या दृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्यलब्धि, वैक्रेय लब्धि व विभंग ज्ञान लब्धि से राजगृह नगर का वैक्रेय करके क्या वाणारसी में मनुष्यादि के रूप जान व देख सकता है ? हां गौतम ! वह राजगृहीकी विकुर्वणा करके वाणारसीमें मनुष्यादिक के रूप जान व देख सकता है वगैरह सब अधिकार पहिले जैसे कहना. और इसे भी ऐसा विचार होवे कि मैंने वाणारसी का रूप

शब्दार्थ प्राप्त अ० सन्मुख हुवे से०उस से०उस दं० दर्शन की वि० विपरीतता भ०होवे से०वह ते०इसलिये जा० यावत् पा०देखे ॥ ३ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् अ० अमायी स० सम्यक् दृष्टि वी० वीर्य लब्धि से वे० वैक्रेय

सूत्र भिसमण्णागए से से दंसणे विवच्चा से भवइ से तेणट्ठेणं जाव पासइ ॥ ३ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा अमायी सम्मादिट्ठी वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए, ओहिनाणलद्धीए रायगिहे नयरे समोहए समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ । से भंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहाभावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तहा भावं जाणइ पासइ, णो अण्णहाभावं जाणइ पासइ से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं रायगिहे

भावार्थ सम्यग् दृष्टि अनगार वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि व अवधि ज्ञान की लब्धि से राजगृह नगर की विकुर्वणा कर वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह को क्या जान व देख सके ? हां गौतम ! वे जान व देख सके. अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने व देखे या अन्यथा भाव जाने व देखे ? अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं. अहो भगवन् ! किस कारण से वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं ? अहो गौतम ! उन को ऐसा विचार होवे कि मैं राजगृही नगरी की विकुर्वणा करके वाणारसी नगरी में मनुष्यादिक के रूप देखता हूं इस

शब्दार्थ उस को ए० ऐसा भ० होवे ए० यह वा० वाणारसी न० नगरी ए० यह रा० राजगृह न० नगर ए० यह अं० बीच में ज० देश नो० नहीं ए० यह मु० मुझे वी० वीर्य लब्धि वे० वैक्रेय लब्धि वि० विभंग ज्ञान लब्धि इ० ऋद्धि जु० द्युति ज० यश व० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार पराक्रम ल० लब्ध प०

सूत्र जाणइ पासइ, अण्णहाभावं जाणइ पासइ ॥ से केणट्ठेणं भंते जाव पासइ ? गोयमा ! तस्स खलु एवं भवइ एस खलु वाणारसीए नयरीए एस खलु रायगिहे नयरे, एस खलु अंतरा एगं महं जणवयवग्गं, नो खलु एस महं वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी, विभंगनाणलद्धी, इड्ढी, जुत्ती, जसे, बले, वीरिए, पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अ-

भावार्थ अहो भगवन् ! वह किस कारन से तथा भाव जाने व देखे अन्यथा भाव जाने नहीं देखे नहीं ? अहो गौतम ! उसे ऐसा विचार होवे कि यह वाणारसी नगरी है, यह राजगृही नगरी है. यह इन दोनों की बीच का प्रदेश है. परंतु वह ऐसा नहीं जान सकता है कि यह मुझे वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि, ज्ञान लब्धि, ऋद्धि, द्युति, कान्ति, यश, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम से मीला है, प्राप्त हुवा है यावत् सन्मुख हुवा है. इस तरह उसे दर्शन की विपरीतता से मति की विपरीतता होती है अर्थात् ये मेरे बनाये हुवे नहीं है परंतु स्वाभाविक है. यों विभंग ज्ञान से विपरीत मानता है. इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि यथार्थ भाव नहीं जान व देख सकता है परंतु अन्यथा भाव जान व देख सकता है ॥ ३ ॥ अमायी

शब्दार्थ माप्त अ० सन्मुख हुवे से०उस से०उस दं० दर्शन की वि० विपरीतता भ०होवे से०वह ते०इसलिये जा० यावत् पा०देखे ॥ ३ ॥ अ० अनगार भं० भगवन् अ० अमायी स० सम्यक् दृष्टि वी० वीर्य लब्धि से वे० वैक्रेय

सूत्र भिसमण्णागए से से दंसणे विवच्चा से भवइ से तेणट्ठेणं जाव पासइ ॥ ३ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा अमायी सम्मादिट्ठी वीरियलद्धीए, वेउव्विय लद्धीए, ओहि नाणलद्धीए रायगिहे नयरे समोहए समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ। से भंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ अण्णहाभावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तहा भावं जाणइ पासइ, णो अण्णहाभावं जाणइ पासइ से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ एवं खलु अहं रायगिहे

भावार्थ सम्यग् दृष्टि अनगार वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि व अवधि ज्ञान की लब्धि से राजगृह नगर की विकुर्वणा कर वाणारसी नगरी में रहे हुवे मनुष्य पशु वगैरह को क्या जान व देख सके ? हां गौतम ! वे जान व देख सके. अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने व देखे या अन्यथा भाव जाने व देखे ? अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं. अहो भगवन् ! किस कारण से वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं ? अहो गौतम ! उन को ऐसा विचार होवे कि मैं राजगृही नगरी की विकुर्वणा करके वाणारसी नगरी में मनुष्यादिक के रूप देखता हूं इस

शब्दार्थ ल० लब्धि से ओ० अवधि ज्ञान लब्धि से रा० राजगृह नगर में स० विकुर्वणा कर वा० वाणारसी न०

सूत्र नगरे समोहए समोहाणित्ता वाणारसीए नगरीए रूवाइं जाणामि पासामि, से से दंसणे अविवच्चा से भवइ से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ ॥ बीओवि आलावगो एवं चेव, णवरं वाणारसीए नयरीए समोहणा वेयव्वो ॥ रायगिहे नयरे रूवाइं जाणइ पासइ ॥ ४ ॥ अणगारेणं भंते भावियप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरिय लद्धीए वेउव्विय लद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिहं वाणारसिं नगरिंच अंतरा एगं महं जणवयवग्गं समोहए समोहएत्ता रायगिहं नगरं वाणारसिं च नगरिं तंच अंतरा एगं महं जणवयवग्गं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ से भंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ

भावार्थ तरह उन को दर्शन के समपने से मति की विपरीतता नहीं होती है इसलिये अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने व देखे नहीं. इसी तरह दुसरा आलापक जानना. परंतु इस में राजगृही का वैक्रेय करके वाणारसी में मनुष्यादि के रूप देखने के स्थान वाणारसी का वैक्रेय करके राजगृही में मनुष्यादिक के रूप देखे ॥ ४ ॥ अमायी सम्यग् दृष्टि भावितात्मा अनगार वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि, व अवधि ज्ञान की लब्धि से राजगृह नगर व वाणारसी के मध्य का एक बडा जनपद देश की विकुर्वणा करके उन दोनों की बीच का जनपद को क्या जाने व देखे ? हां गौतम ! वे जाने देखे. अहो भगवन् !

शब्दार्थ नगरी में रू० रूप जा० जाने पा० देखे हं० हां जा० जाने पा० देखे ॥ ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ५ ॥ अ० अण-

सूत्र अण्णहाभावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तहाभावं जाणइ पासइ, नो अण्णहा भावं जाणइ पासइ । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ नो खलु एस रायगिहे, णो खलु एस बाणारसी नगरी णो खलु एस अंतरा एगे जणवयवग्गे, एस खलु ममं वीरिय लद्धी वेउव्विय लद्धी, ओहिनाण लद्धी, इड्ढी, जुत्ती, जसे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, सेसे दंसणे अविवच्चासे भवइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, तहा भावं जाणइ पासइ, नो अण्हाभावं जाणइ पासइ ॥ ५ ॥ अण-

भावार्थ क्या वे यथातथ्य भाव जाने देखे या अन्यथा भाव जाने देखे ? अहो गौतम ! वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने व देखे नहीं. अहो भगवन् ! किस कारन से वे यथातथ्य भाव जाने देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं ? अहो गौतम ! उन को ऐसा विचार होवे कि यह राजगृह नगर नहीं है, यह बाणारसी नगरी नहीं है यह उन के बीचका जनपद नहीं है, परंतु यह वीर्य लब्धि, वैक्रेय लब्धि, अवधि ज्ञान की लब्धि, ऋद्धि, द्युति, यश, बल, वीर्य, पुरुषात्कार पराक्रम मुझे प्राप्त हुवा है. इस तरह दर्शन के समपरिणाम से मति सम होती है. इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है कि वे यथातथ्य भाव जाने व देखे परंतु अन्यथा भाव जाने देखे नहीं ॥ ५ ॥ अहो

शब्दार्थ गार भं० भगवन् भा० भवितात्मा वा० बाह्य पो० पुद्गल अ० विना ग्रहणकिये प० समर्थ ए० एक म० बडा गा० ग्रामरूप न० नगर रूप जा० यावत् स० सन्निवेश वि० विकुर्वणा करने को गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ ए० ऐसे वि० दूसरा आ० आलापक न० विशेष वा० बाह्य पो० पुद्गल प० ग्रहण कर प० समर्थ ॥ ६ ॥ पूर्ववत् ॥ ७ ॥ च० चमर भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र को क० कितने

सूत्र गारेणं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं गामरूवंवा, नगररूवंवा, जाव सण्णिवेसरूवंवा विकुव्वित्तए ? गोयमा ! णोइणट्ठेसमट्ठे, एवं विती ओवि आलावओ । नवरं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता, पभू ॥६॥ अणगारेणं भंते ! केइवयाइं पभू गामरूवाइं, विकुव्वित्तए ? गोयमा ! से जहा नामए जुवइं जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, तं चेव जाव विकुव्वितिवा ३, ॥ एवं जाव सण्णिवेसरूवंवा

भावार्थ भगवन् ! भावितात्मा अनगार बाहिर के वैक्रेय पुद्गल ग्रहण किये विना क्या ग्राम, नगर यावत् सन्निवेश के रूप बनासकते हैं ? अहो गौतम ! वे बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना ऐसे रूप नहीं बना सकते हैं. परंतु बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर ऐसे रूप बना सकते हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वे भावितात्मा अनगार कितने वैक्रेय रूप बना सकते हैं ? अहो गौतम ! जैसे काम पीडित तरुण पुरुष तरुणी स्त्री को अपने हस्त से पकडता है ऐसे ही वे अनगार एक लक्ष योजन का जम्बूद्वीप को ग्राम नगर यावत् सन्निवेश

शब्दार्थ आ० आत्मरक्षक देव सा० सहस्र गो० गौतम च० चार च० चौसठ आ० आत्मरक्षक देव सा० सहस्र ए० इस आ० आत्म रक्षक का व० वर्णन स० सर्व इं० इन्द्रका ज० जिस को ज० जितने आ० अतमरक्षक ते० उतने भा० कहना ॥ ३ ॥ ६ ॥ = = =

रा० राजगृह न० नगर में जा० यावत् प० पर्युपासना करते ए० ऐसा व० बोले स० शक्र दे० देवेन्द्र

सूत्र ॥ ७ ॥ चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ आयरक्खदेवसाहस्सीओ ? गोयमा ! चत्तारि चउसट्ठीओ आयरक्खदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ एएणं आयरक्खवण्णओ ॥ एवं सव्वेसिं इंदाणं जस्स जत्तिया आयरक्खा ते भाणियव्वा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ तईय सए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ६ ॥ *

रायगिहे नयरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो

भावार्थ के रूप से भर देवे. यह मात्र विषय है. इतने रूप किसीने किये नहीं, करते नहीं व करेंगे नहीं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र को कितने हजार आत्मरक्षक देव कहे हैं ? अहो गौतम ! चमरेंद्र को दो लाख छप्पन्न हजार आत्म रक्षक देव कहे हैं. ऐसे ही सब भुवनपति यावत् अच्युतेंद्र तक के भिन्न २ आत्म रक्षक देव जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं ऐसा कहकर तप व संयम से आत्मा को भावते हुवे श्री गौतम स्वामी विचरने लगे. यह तीसरा शतकका छट्ठा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥३॥६॥

शब्दार्थ को क० कितने लो० लोकपाल गो० गौतम च० चार लोकपाल प० प्ररूपे सो० सोम ज० यम व० वरुण वे० वैश्रमण ॥ १ ॥ ए० इन भं० भगवन् च० चार लो० लोकपाल के क० कितने विमान प० प्ररूपे गो० गौतम च० चार वि० विमान प० प्ररूपे सं० संध्यप्रभ व० वरशिष्ट स० स्वयंजल व० वल्गु ॥ २ ॥

सूत्र कइलोगपाला पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता तंजहा-सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥ १ ॥ एएसिणं भंते ! चउण्हं लोगपालाणं कइविमाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि विमाणा प० तंजहा-संझप्पभे, वरसिट्ठे, सयंजले, वग्गू ॥ २ ॥

भावार्थ छट्ठे उद्देशे के अंत में आत्मरक्षक देव का वर्णन कहा. आगे उद्देशे में लोकपालोंका वर्णन कहते हैं. राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में भगवंत पधारें परिषदा वंदन करने को आइ और धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस समय में श्री गौतम स्वामी श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न करनेलगे कि अहो भगवन्! शक्र देवेंद्र को कितने लोकपाल कहे हैं ? अहो गौतम ! शक्रदेवेंद्र को चार लोकपाल कहे हैं. उन के नाम सोम, यम, वरुण और वैश्रमण. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! उन चार लोकपालों के कितने विमान कहे हैं अहो गौतम ! उन के चार विमान कहे हैं १ सोम का संध्यप्रभ २ यम का वराशिष्ट ३ वरुण का स्वयंजल और ४ वैश्रमण का वल्गु ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शक्रदेवेंद्र देवराजा

शब्दार्थ

क० कहां भं० भगवन् स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा का सं० संध्यप्रभ म० महाविमान गो० गौतम जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की दा० दक्षिण में इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी के ब० बहुत स० समरमणीय भूमिभाग से उ० ऊर्ध्व चं० चंद्र सू० सूर्य ग० ग्रह ग० समुह न० नक्षत्र ता० तारे ब० बहुत जो० योजन जा० यावत् पं० पांच अ० अवतंसक अ० अशोक अवतंसक स०सप्तपर्ण अवतंसक चं० चंपक अवतंसक चू० च्युत अवतंसक म० मध्य में सो० सौधर्म अवतंसक त० उस सो० सौधर्म अव-

सूत्र

कहिणं भंते ! सक्करस देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो संझप्पभे णामं महावि-माणे प० ? गोयमा ! जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारा-रूवाणं बहूइं जोयणाइं जाव पंच वडंसया प० तंजहा-असोयवडंसए, सत्तिवण्णं वडं-सए, चंपयवडंसए, चूयवडंसए, मज्झे सोहम्म वडंसए ॥ तस्सणं सोहम्मवडंसयस्स

भावार्थ

का सोम नामक लोकपाल का संध्यप्रभ नामक विमान किस स्थान पर है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण दिशामें रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत मध्य भाग से बहुत योजन ऊंचे चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारे रहे हुवे हैं. वहां से सो, हजार, क्रोड व क्रोड क्रोड योजन उपर ऊंचे सौधर्म देवलोक रहा हुवा है. वह पूर्व पश्चिम लम्बा व उत्तर दक्षिण चौडा, अर्धचंद्रमां के आकार वाला महातेजवाला देदीप्यमान असंख्यात

शब्दार्थ तसक म० महाविमान की पु० पूर्व में सो० सौधर्म देवलोक में अ० असंख्यात योजन वी० अतिक्रमकर ए० तहां स० शक्र दे० देवेन्द्र का सो० सोम म० महाराजा का सं० संध्यप्रभ म० महाविमान अ० अर्ध ते० तेरह जो० योजन स० लाख आ० लंबा वि० चौडा उ० गुनचालीस जो० योजन ल० लाख बा० बावन स० सहस्र अ० आठ अ० उडतालीस जो० योजन स० शत किं० किंचित् वि० विशेषाधिक

सूत्र महाविमाणस्स पुरच्छिमेणं सोहम्मेकप्पे असंखेज्जाइं जोयणाइं वीईवइत्ता एत्थणं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो संज्झप्पभेनामं महाविमाणे प० अद्धते-रस जोयण सय सहस्साइं आयाम विक्खंभेणं उयालीसं जोयणसयसहस्साइं बाव-ण्णचसहस्साइं अट्ठ अडयाले जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥

भावार्थ योजन का लम्बा चौडा व असंख्यात योजन की परिधि वाला है. उस में बत्तीस लाख विमान हैं वे सब रत्नमय निर्मल यावत् दर्शनीय हैं. उस के बहुत मध्य भाग में सब विमानों में मुकुट समान श्रेष्ठ पांच महा विमान हैं. जिन के नाम. १ अशोकावतंसक २ सप्तपर्णावतंसक ३ चम्पकावतंसक ४ चूतावतंसक और ५ मध्य में सौधर्मावतंसक विमान हैं. उस सौधर्मावतंसक विमान से पूर्व में असंख्यात योजन जावे तो वहां शक्र देवेंद्र का सोम नामक लोकपाल का स्वयंप्रभ नामक विमान कहा है. वह सादेबारह लाख योजन का लम्बा चौडा है. उस की परिधि ३९५२८४८ योजन से कुछ अधिक की है. इस का सब वर्णन

शब्दार्थ प० परिधि ज० जैसे सू० सूर्याभ वि० विमान की व० वक्तव्यता सा० वह अ० निर्विशेष भा० कहना जा० यावत् अ० अभिषेक न० विशेष सो० सोमदेव ॥ ३ ॥ सं० संध्यप्रभ म० महाविमान की अ० नीचे स० दिशा स० विदिशा में अ० असंख्यात जो० योजन स० लाख ओ० अवगाहकर स० शक्र दे० देवेन्द्र का सो० सोम म० महाराजा की सो० सोमा रा० राज्यधानी ए० एक जो० योजन स० लाख आ० लंबी वि० चौडी जं० जंबूद्वीप प्रमाण वे० वैमानिक के प० प्रमाण से अ० अर्ध ने० जानना जा०

सूत्र

जहेव सूरियाभ विमाणस्स वत्तव्वया सा अपरिसेसा भाणियव्वा जाव अभिसेयो। नवरं सोमे देवे ॥ ३ ॥ संझप्पभस्सणं महाविमाणस्स अहे सपक्खि सपडिदिसिं असंखेज्जाइं जोयण सय सहस्साइं उगाहित्ता एत्थणं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्समहारण्णो सोमानामं रायहाणी पण्णत्ता, एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं जंबूदीव

भावार्थ

सूर्याभ देवता के विमान का अधिकार में जैसा कहा है वैसे ही कहना मात्र यहां सोम देव कहना. ॥ ३ ॥ इस संध्यप्रभ विमान से असंख्यात योजन नीचे अवगाहकर चारों विदिशि में जावे तो वहां शक्र देवेंद्र के सोम महाराजा की सोमा नामक राज्यधानी कही है. एक लक्ष योजन की लम्बी व चौडी है. इस में प्रासाद द्वारादिक के सब प्रमाण सौधर्म देवलोक के प्रासादिक से आधा है. अर्थात् १५० योजन का कोट है, २५० योजन का प्रासाद ऊंचा है, चारों तरफ चार प्रासाद १२५ योजन के हैं, इस के परिवारवाले १६

शब्दार्थ

यावत् उ० चौकी पीठ सो० सोलह जो० योजन स० सहस्र आ० लम्बे वि० चौडे प० पचास स०सहस्र योजन पं० पांच स० सत्तानव जो० योजन स० शत कि० किंचित् वि० विशेषकम प० परिधि पा० प्रासाद की च० चार प० परिपाटी ने० जानना से० शेष न० नहीं है ॥४॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा के इ० ये दे० देव आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि०निर्देश में चि० रहे सो० सोमनिकाय सो० सोमदेव निकाय वि० विद्युत्कुमार वि० विद्युत्कुमारी अ० अग्निकुमार

मूल

प्पमाणा वेमाणियाणं पमाणस्स अद्धं नेयव्वं जाव उवगारियलेणं सोलस जोयण सहस्साइं आयाम विक्खंभेणं पण्णासं जोयण सहस्साइं पंचय सताणउए जोयणसए किंचिविसेसुणे परिक्खेवेणंप०।पासायाणंचत्तारि परिवाडीओ नेयव्वाओ सेसानत्थि।४।सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा आणा उववाय वयण निद्देसे चिट्ठंति तंजहा सोमकाइयाइवा, सोमदेवयकाइयाइवा, विज्जुकुमारा, विज्जुकुमारीओ, अग्गिकुमारा,

भावार्थ

विमान ६२॥ योजन के हैं और परिवारवाले ६४ विमान ३१। योजन के हैं. यावत् वे सोलह हजार योजन के लम्बे चौडे कहे हैं ५०५९७ योजन से कुछ अधिक की परिधि कही है. इस में सौधर्म सभा, उत्पत्ति स्थान, व्यवसाय सभा वगैरह नहीं है ॥ ४ ॥ शक्र देवेन्द्र के सोम महाराजा की आज्ञा, उपपात व निर्देश में सोम महाराजा की जाति के देव, सोम देव की जाति के देव, विद्युत् कुमार, अग्नि कुमार व

अर्थ अ० अग्निकुमारी वा० वायुकुमार वा० वायुकुमारी चं० चंद्र सू० सूर्य ग० ग्रह न० नक्षत्र ता० तारा जे० जो अ० अन्य त० तथा प्रकार स० सर्व ते० वे उ० उन के सेवक त० उन के साहायक त० उन की भार्या जैसे स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा के आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहे ॥ ५ ॥ जं० जम्बूद्वीप में मं० मेरु की दा० दक्षिण में जा० जो इ० ये स० उत्पन्न होते हैं तं० वह ज० जैसे ग० ग्रहदंड ग० ग्रहमुशल ग० ग्रह गर्जना ग० ग्रहयुद्ध ग० ग्रह शृंगा-

सूत्र अग्गिकुमारीओ, वायुकुमारा, वायुकुमारीओ, चंदा, सूरा, गहा, नक्खत्ता, तारारूवा, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया तप्पक्खिया तब्भारिया. ॥ सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो आणा उववाय वयणनिद्देसे चिट्ठंति ॥ ५ ॥ जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति तं० गहदंडाइवा, गहमुस-

भावार्थ वायुकुमार जाति के देव देवियों और चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र तारे व ऐसे अन्य भी देव रहते हैं. वे सोम महाराजा की भक्ति करते हैं, उन के पक्ष में रहते हैं, उन से बताया हुवा कार्य पूर्ण करते हैं. इस तरह वे उन की आज्ञा में प्रवर्तते हैं ॥ ५ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण में जब दंड की तरह तीच्छें श्रेणी बन्ध मंगलादि तीन चार ग्रह का दंडाकार होवे, मूशल जैसे उपर नीचे श्रेणीबंध ग्रह होवे,

शब्दार्थ यावत् उ० चौकी पीठ सो० सोलह जो० योजन स० सहस्र आ० लंबे वि० चौडे प० पचास स०सहस्र योजन पं० पांच स० सत्तानव जो० योजन स० शत किं० किंचित् वि० विशेषकम प० परिधि पा० प्रासाद की च० चार प० परिपाटी ने० जानना से० शेष न० नहीं है ॥४॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा के इ० ये दे० देव आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि०निर्देश में चि० रहे सो० सोमनिकाय सो० सोमदेव निकाय वि० विद्युत्कुमार वि० विद्युत्कुमारी अ० अग्निकुमार

मूल प्पमाणा वेमाणियाणं पमाणस्स अद्धं नेयव्वं जाव उवगारियलेणं सोलस जोयण सहस्साइं आयाम विक्खंभेणं पण्णासं जोयण सहस्साइं पंचय सत्ताणउए जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणंप०।पासायाणंचत्तारि परिवाडीओ नेयव्वाओ सेसानत्थि।४।सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा आणा उववाय वयण।निद्देसे चिट्ठंति तंजहा सोमकाइयाइवा, सोमदेवयकाइयाइवा, विज्जुकुमारा, विज्जुकुमारीओ, अग्गिकुमारा,

विमान ६२॥ योजन के हैं और परिवारवाले ६४ विमान ३१। योजन के हैं. यावत् वे सोलह हजार योजन के लम्बे चौंडे कहे हैं ५०५९७ योजन से कुछ अधिक की परिधि कही है. इस में सौधर्म सभा, उत्पत्ति स्थान, व्यवसाय सभा वगैरह नहीं है ॥ ४ ॥ शक्र देवेन्द्र के सोम महाराजा की आज्ञा, उपपात व निर्देश में सोम महाराजा की जाति के देव, सोम देव की जाति के देव, विद्युत कुमार, अग्नि कुमार व

शब्दार्थ अ० अमोघ पा० पूर्वका वायु प० पश्चिम का वायु जा० यावत् सं० संवर्तक वायु गा० ग्राम में दा०अग्नि जा० यावत् सं० सन्निवेश में दा० अग्नि पा० प्राणक्षय ज० जनक्षय ध० धनक्षय कु० कुलक्षय व० व्यसन भूत अ० अनार्य जे० जो अ०अन्य त० तथा प्रकार स० शक्र दे०देवेन्द्र का सो० सोम म०महाराजा का

सूत्र जाव संवट्टयवायाइवा, गामदाहाइवा, जाव सन्निवेसदाहाइवा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, वसणब्भूया. अणारिया जेयावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अण्णाया, अदिट्ठा, असुया, अमुया, अवि-

भावार्थ श्वेत वर्ण से धूंअर पडे. दिशा का रजस्वलपना होवे, चंद्र ग्रहण होवे, सूर्य ग्रहण होवे, चंद्र की चारों बाजु में कुंडाला, सूर्य की चारों बाजु में कुंडाला, दो चंद्र देखने में आवे, दो सूर्य देखने में आवे, इन्द्र धनुष्य होवे, इन्द्र धनुष्य के खंड होवे, बद्दल रहित आकाश में कपिहसन समान विद्युत् होवे, सूर्य के उदय व अस्त समय में किरणों के विकार से रक्त कृष्णवर्ण वाले गाडे की धूरीके आकारवाला दंड होवे, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण की वायु संवर्तक होवे, ग्राम दाह यावत् सन्निवेश दाह वगैरह लक्षण होवे तब प्राणियों का, बल का, मनुष्य का, धन का, कुल का क्षय होवे, आपत्ति में पडे, अनार्य लोगों का आगमन होवे वगैरह अनेक प्रकार के उपद्रव होवे. उक्त बातों शक्र देवेन्द्र के सोम महाराजा से अजानपने से नहीं हैं, विना देखी, विना सुनी, स्मरण विना की, या अवधि ज्ञान से नहीं देखी वैसी नहीं हैं.

शब्दार्थ

र्क ग० ग्रह का अ० बद्दल होवे अ० बद्दल के वृक्ष होवे सं० संध्या होवे गं० गंधर्व नगर होवे उ० उल्का पात होवे दि० दिशा में दाह होवे ग० गर्जना वि०विजली होवे पं० धूलकी वु० वर्षा होवे जु०वाल चंद्र ज० वयंतर से अग्नि ध० धूमर म० महिका र० दिशाका रजस्वलपना चं० चंद्रका ग्रहण सू०सूर्य का उ०उपराग चं०चंद्र परिवेष सू०सूर्यपरिवेष प०प्रतिचंद्र प०प्रतिसूर्य इं०इंद्र धनुष्य उ०बहुत इंद्रधनुष्य के खण्ड क०कपिहसन

सूत्र

लाइवा, गहगज्जियाइवा, एवं गहजुद्धाइवा, गहसिंघाडगाइवा, गहावसव्वाइवा, अब्भरुक्खाइवा, अब्भाइवा, संझाइवा, गंधव्वनगराइवा, उक्कापायाइवा, दिसादाहाइवा, गज्जियाइवा, विज्जुयाइवा, पंसुवुट्ठीइवा, जुयजक्खालित्तय, धूमियमाहियरउग्घाय, चंदोवरागाइवा, सूरोवरागाइवा, चंद परिवेसाइवा, सूरपरिवेसाइवा, पडिचंदाइवा, पडिसूराइवा, इंदधणूइवा, उदगमच्छकइहसियअमोह पाईणवायाइवा, पडीणं

भावार्थ

ग्रह चलने से मेघ समान गर्जना होवे, एक नक्षत्र में दक्षिण उत्तर श्रेणि के ग्रह का रहना सो ग्रह युद्ध होवे, शृंगाटक के आकार से ग्रह होवे, ग्रह पीछे जावे, बद्दल होवे, वृक्षाकार बद्दल होवे, संध्या फूले, आकाश में वयंतर के बनाये हुवे नगर होवे, उद्योत सहित ताराओं का पडना ऐसा उल्कापात होवे, दिशाओं में रक्त-पीत समान रंगवाला दाह होवे, मेघादिक की गर्जना होवे विद्युतका उद्योत होवे, रजोवृष्टि होवे, प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीयाके दिन भी चंद्र रहे वहां लग संध्या फूली हुई रहे, व्यंतरोंने किया हुवा अग्नि आकाशमें रहे, धूंअर पडे,

शब्दार्थ सो० सोम महाराजा ॥ ७ ॥ क० कहां ज० जम म० महाराजा का व० वरशिष्ठ म० महाविमान प० प्ररूपा गो० गौतम सो० सौधर्म अवतंसक म० महाविमान की दा० दक्षिण में सो० सौधर्म देवलोक की अ० असंख्यात जो० योजन वी० व्यतिक्रान्त हुवे ए० तहां स०शक्र के ज०यमका व०वरशिष्ठ वि० विमान प० प्ररूपा अ० अर्ध ते० तेरह जो० योजन स० लाख ज० जैसे सो० सोम का वि० विमान त० तैसे

सूत्र एगं पलिओवमंठिईं पण्णत्ता. ए महिड्ढीए जाव ए महाणुभागे सोमे महाराया ॥ ७ ॥ कहिणं भंते सक्करस देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठेणामं महाविमाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोहम्मवडंसयस्स महाविमाणस्स दाहिणेणं सोहम्मे कप्पे अ-संखेज्जाइ जोयण सहस्साइं वीईवइत्ता एत्थणं सक्करस देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठेनामं विमाणे पण्णत्ते. अद्धतेरस्स जोयण सयसहस्साइं जहा सोमस्स

भावार्थ पूर्व दिशा के लोकपाल सोम की यह ऋद्धि और यह विवक्षा की है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र के यम महाराजा का वराशिष्ठ नामक महा विमान कहां कहा है ? अहो गौतम ! सौधर्म देवलोक में सौधर्मावतंसक नामक महा विमान से दक्षिण में असंख्यात योजन जावे तब वहां यम महाराजा का वराशिष्ट नामक विमान कहा है. वह साढे बारह योजन का लम्बा चौडा वगैरह सोम महाराजा का

शब्दार्थ अ० अजान अ० अदृष्ट अ० नहीं सूना अ० नहीं स्मरा अ० नहीं जाना ॥ ६ ॥ ते० उन सो० सोम निकाय स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराजा को इ० यह अ० अपत्यदेव अ० जानेहुवे हो० थे इं० अंगारक वि० वैताल लो० लोहिताक्ष स० शनैश्चर चं० चन्द्र सू० सूर्य सु० शुक्र बु० बुध ब० बृहस्पति रा० राहु स० शक्र दे० देवेन्द्र के सो० सोम म० महाराज की स० तीनभाग प० पल्योपम की ठि० स्थिति अ० अपत्यदेव की ए० एक प० पल्योपम की ठि० स्थिति म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महानुभाग

सूत्र णणाया ॥ ६ ॥ तेसिंचा सोमकाइयाणं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे अहावच्चादेवा अभिण्णाया होत्था तंजहा-इंगालए, वियालए, लोहियक्खे, सणिंचरे, चंदे, सूरे, सुक्के, बुहे, बहस्सई, राहू ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सइभागं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ॥ अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं

भावार्थ अर्थात् सोम महाराजा उक्त सब बातों को जानते हैं यावत् देखते हैं ॥ ६ ॥ उन शक्र देवेन्द्र के सोम महाराजा को पुत्रवत् आज्ञा पालनेवाले मंगल, केतु, लोहिताक्ष, शनैश्चर, चंद्र, सूर्य, शुक्र ब्रहस्पति, वराह नामक देव हैं. उन की स्थिति एक पल्योपम व एक पल्योपम के तीन भाग में का एक भाग अधिक की कही. और उन के अपत्य स्थान जो देव हैं उन की एक पल्योपम की स्थिति कही. ÷ अहो गौतम !

÷ यद्यपि चंद्र की एक लक्ष वर्ष अधिक व सूर्य की एक सहस्र वर्ष अधिक की स्थिति कही है. परंतु यहां पर अधिकता की विवक्षा नहीं की गई है.

पदार्थ इ० इसे म० उत्पन्न करते हैं डिं० विघ्नहोवे ड० राजकुमार कृत उपद्रव क० कलह बो० महाध्वनि होवे खा० मत्सर होवे म० महायुद्ध होवे म० महासंग्राम होवे म० बडे नि०पडे ए०ऐसे म० महान् पुरुषका नि० पडे म० बहुतरुधिर नि० पडे दु० दुर्भूव कु० कुलरोग होवे गा० ग्रामरोग होवे मं० मंडलरोग न० नगर रोग सी० शीर्ष अ० अक्षि क० कर्ण न० नख दं० दांत वे०वेदना इं० इंद्रग्रह खं० स्कन्धग्रह कु० कुमारग्रह ज० यक्षग्रह भू० भूतग्रह ए० ज्वरविशेष बे०दो दिनांतर ते० तीन दिनांतर चा० चार दिनांतर उ० उद्वेग

सूत्र इमाई समुप्पज्जंति, तंजहा-डिम्बाइवा, डमराइवा, कलहाइवा, बोलाइवा, खाराइवा, महाजुद्धाइवा, महासंगामाइवा, महासत्थ निवडणाइवा, एवं महापुरिस निवणइवा, महारुहिर निवडणाइवा, दुब्भूयाइवा, कुलरोगाइवा, गामरोगाइवा, मंडलरोगाइवा, नगररोगा-सीस-अच्छि-कण्ण-नह-दंत-वेयणा, इंदग्गहा, खंदग्गहाइवा, कुमारग्गह, जक्खग्गह, भूयग्गह, एगाहियाइवा, वेहिय, तेहिय चाउत्थयाइवा, उव्वेगाइवा, का-

भावार्थ क्लेश वृद्धि करनेवाले शब्दोच्चार, परस्पर कुसंप, महायुद्ध, महा संग्राम, महा शस्त्रका निपात, महा पुरुष का काल होना, महा रुधिर का पडना, सर्प वृश्चिकादिक की उत्पत्ति, कुल में क्षय रूप रोग, ग्राम में क्षय रूप रोग, बहुत ग्राम के मनुष्यों में क्षय रूप रोग, नगर जन में क्षय रूप रोग, मस्तक, आंख, कर्ण, नख व दांत की वेदना, इन्द्र ग्रहादिके उपद्रव, स्कंध देवादि के उपद्रव, कुमार ग्रह, यक्ष ग्रह, भूतग्रह के उपद्रव, एकान्तर

शब्दार्थ जा० यावत् अ० अभिषेक रा० राज्यधानी त० तैसे जा० यावत् पा० प्रासादपंक्ति ॥ ८ ॥ स० शक्र के ज० यम के इं०ये दे०देव आ०आज्ञा उ०उपपात जा०यावत् चि०रहे ज०यम के परिवार ज०यम के सामानिक के परिवार अ० असुर कुमार अ० असुर कुमारी कं० कंदर्प नि० नरक रक्षक अ० अभियोग जे० जो अ० अन्य त० तथा प्रकार स० सर्व ते० वे ॥ ९ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की दा० दक्षिण में

सूत्र विमाणं तहा जाव अभिसेओ रायहाणी तहेव जाव पासायपंतीओ ॥ ८ ॥ सक्करसणं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा आणा उववाय जाव चिट्ठंति, तंजहा-जमकाइयाइवा, जमदेवयकाइयाइवा, पेयकाइयाइवा, पेयदेवकाइयाइवा, असुरकुमारा, असुरकुमारीओ, कंदप्पा निरयपाला, अभियोगा, जेयावण्णे तहप्पगारा, सव्वे ते तब्भत्तिया, तप्पक्खिया, तब्भारिया, सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो, ॥ ९ ॥ जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाई

भावार्थ विमान जैसे कहना ॥ ८ ॥ यम कायिक, यमदेव कायिक, प्रेत कायिक, प्रेतदेव कायिक, असुर कुमार, असुर कुमार की देवियों, कंदर्प, नरकपाल, अभियोगिक-सेवक और भी ऐसे अन्य देव यम महाराजा की आज्ञा, निर्देश व उपपात में रहते हैं, वैसे ही वे उन का पक्ष धारन करते हैं, और उन की भार्या की समान सेवा करते हैं ॥ ९ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण में विघ्न, एक राजकुमारादिकृत उपद्रव,

पदार्थ अनार्य ॥ १० ॥ इ० ये दे० देव अ० यथा अपत्य अ० जाने हो० थे अं० अंब अंबरिष सा० श्याम स० सबल रु० रुद्र वे० वैरुद्र का० काल म० महाकाल अ० असिपत्र ध० धनुष्य कुं० कुंभ वा० वालुक वे० वैतरणी ख० खर स्वर म० महाघोष प० पन्नरह आ० कहे ज० यम म० महाराजा की स० तीन भाग प० पल्योपम की ठि० स्थिति अ० यथाअपत्य की ए० एक प० पल्योपम की म० महर्द्धिक जा० यावत्

सूत्र णो तहप्पगारा न ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो अण्णाया ॥१०॥ तेसिंवा जमकाइयाणं देवाणं सक्कस्स जमस्स इमेदेवा अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तंजहा-अंबे, अंबरिसे चेव; सामे, सबलेत्तियावरे; रुद्दे, वरुद्दे, कालेय; महाकाले त्तियावरे (१) असिपत्ते, धणूकुंभे वालुया; वेयरणीतिय; खरस्सरे, महाघोसे, एमेपण्णर साहिया। सक्करसणं देविंदस्स देवरण्णो जम्मस्स महारणो सति भागं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता ॥ अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता। ए माहिड्डीए जाव

भावार्थ गुप्त नहीं होती है इन को जानते हैं, देखते हैं, व स्मरण करते हैं ॥ १० ॥ अम्ब, अम्बरिश, साम, सबल, रुद्र, वैरुद्र, काल, महाकाल, असिपत्र, धनुष्य, कुंभ, वालुक, वैतरणी, खरस्वर और महाघोष ये पंद्रह परमाधर्मी यम महाराजा को अपत्यवत् विनयवंत रहते हैं. यम महाराजा की एक पल्योपम और एक पल्योपम के तीसरे भाग अधिक की स्थिति कही है. इन के पुत्र स्थान कार्य करनेवाले देव की एक

पदार्थ — का० काम खा० खासी सा० श्वास ज० ज्वर दा० दाह क० कच्छ को० कोढ अ० अजीर्ण पं० पांडुरोग अ० हरसरोग भ० भगंदर हि० हृदयशूल म० मस्तकशूल जो० योनिशूल पा० पसली शूल कु० कुक्षिशूल गा० ग्राममरकी न० नगर खे० खेड क० कर्बट दो० द्रोणमुख म० मडंप प० पाट्टन आ० आश्रम सं० संवाह स० सन्निवेश मरकी पा० प्राणक्षय ध० धनक्षय ज० जनक्षय कु० कुलक्षय व० वसनभूत अ०

सूत्र — साइवा, खासाइवा, जराइवा, दाहाइवा, कच्छ कोहाइवा, अजीरया, पंडुरोगा ; अरसाइवा, भगंदलाइवा, हियय सूलाइवा मत्थय सूलाइवा, जोणिसूल, पाससुऊ, कुच्छिसूल, गाममारीइवा, नगर खेड-कव्वड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसमसंवाह-सण्णिवेस मारीइवा, पाणक्खय, धणक्खय-जणक्खय-कुलक्खय-वसणब्भूयमणारिया जेयाव-

भावार्थ — ज्वर, दो दिनांतर ज्वर, तीन दिनांतर ज्वर, चार दिनांतर ज्वर, इष्ट के वियोग से उद्वेग, श्वास, खांसी, ज्वर, दाह, कच्छ, कोड, अजीर्ण, पांडुरोग, हरस (मसा) भगंदर, हृदय शूल, मस्तक शूल, योनि शूल, पसली शूल, कुक्षि शूल, ग्राम की मारी, नगर, खेड, कवड, द्रोण मुख, मंडप, पट्टण, आश्रम, संवाह व सन्निवेश में मरकी, प्राणियों का क्षय, धन का क्षय, मनुष्योंका क्षय, गृहों का क्षय, वस्त्राभूषणोंका क्षय, व अनार्य म्लेच्छ लोगों का आगमन होवे वैसे, ही अन्य भी ऐसे उपद्रव होवे. उक्त बातों यम महाराजा से

शब्दार्थ अनार्य ॥ १० ॥ इ० ये दे० देव अ० यथा अपत्य अ० जाने हो० थे अं० अंब अंबरिष सा० श्याम स० सबल रु० रुद्र वे० वैरुद्र का० काल म० महाकाल अ० असिपत्र ध० धनुष्य कुं० कुंभ वा० वालुक वे० वैतरणी ख० खर स्वर म० महाघोष प० पन्नरह आ० कहे ज० यम म० महाराजा की स० तीन भाग प० पल्योपम की ठि० स्थिति अ० यथाअपत्य की ए० एक प० पल्योपम की म० महर्द्धिक जा० यावत्

सूत्र णे तहप्पगारा न ते सक्करस देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो अण्णाया ॥१०॥ तेसिंवा जमकाइयाणं देवाणं सक्कस्स जमस्स इमेदेवा अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तंजहा-अंबे, अंबरिसे चेव; सामे, सबलेत्तियावरे; रुद्दे, वरुद्दे, कालेय; महाकाले त्तियावरे (१) असिपत्ते, धणूकुंभे वालुया; वेयरणीतिय; खरस्सरे, महाघोसे, एमेपण्णर साहिया। सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो जम्मस्स महारणो सति भागं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता ॥ अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता। ए माहिड्डीए जाव

भावार्थ गुप्त नहीं होती है इन को जानते हैं, देखते हैं, व स्मरण करते हैं ॥ १० ॥ अम्ब, अम्बरिश, साम, सबल, रुद्र, वैरुद्र, काल, महाकाल, असिपत्र, धनुष्य, कुंभ, वालुक, वैतरणी, खरस्वर और महाघोष ये पंद्रह परमाधर्मी यम महाराजा को अपत्यवत् विनयवंत रहते हैं. यम महाराजा की एक पल्योपम और एक पल्योपम के तीसरे भाग अधिक की स्थिति कही है. उन के पुत्र स्थान कार्य करनेवाले देव की एक

पदार्थ
का० काम खा० खासी सा० श्वास ज० ज्वर दा० दाह क० कच्छ को० कोड अ० अजीर्ण पं० पांडुरोग अ० हरसरोग भ० भगंदर हि० हृदयशूल म० मस्तकशूल जो० योनिशूल पा० पसली शूल कु० कुक्षिशूल गा० ग्राममरकी न० नगर खे० खेड क० कर्बट दो० द्रोणमुख म० मडंप प० पाटन आ० आश्रम सं० संवाह स० सन्निवेश मरकी पा० प्राणक्षय ध० धनक्षय ज० जनक्षय कु० कुलक्षय व० वसनभूव अ०

सूत्र
साइवा, खासाइवा, जराइवा, दाहाइवा, कच्छ कोहाइवा, अजीरया, पंडुरोगा; अरसाइवा, भगंदलाइवा, हियय सूलाइवा मत्थय सूलाइवा, जोणिसूल, पाससुल, कुच्छिसूल, गाममारीइवा, नगर खेड-कव्वड-दोणमुह-मडंव-पट्टण-आसमसंवाह-सण्णिवेस मारीइवा, पाणक्खय, धणक्खय-जणक्खय-कुलक्खय-वसणब्भूयमणारिया जेयाव-

भावार्थ
ज्वर, दो दिनांतर ज्वर, तीन दिनांतर ज्वर, चार दिनांतर ज्वर, इष्ट के वियोग से उद्वेग, श्वास, खांसी, ज्वर, दाह, कच्छ, कोड, अजीर्ण, पांडुरोग, हरस (मसा) भगंदर, हृदय शूल, मस्तक शूल, योनि शूल, पसली शूल, कुक्षि शूल, ग्राम की मारी, नगर, खेड, कवड, द्रोण मुख, मंडप, पट्टण, आश्रम, संवाह व सन्निवेश में मरकी, प्राणियों का क्षय, धन का क्षय, मनुष्योंका क्षय, गृहों का क्षय, वस्त्राभूषणोंका क्षय, व अनार्य म्लेच्छ लोगों का आगमन होवे वैसे, ही अन्य भी ऐसे उपद्रव होवे. उक्त बातों यम महाराजा से

शब्दार्थ कुमार ना० नाग कुमारी उ० उदधिकुमार उ० उदधिकुमारी थ० स्थनित कुमार थ० स्थनित कुमारी जे० जो अ० अन्य त० तथारूप स० सर्व ते० वे उ० उन के सेवक जा० यावत् चि० रहते हैं ॥ १३ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की दा० दक्षिण में जा० जो इ० ये स० उत्पन्न होवे अ० अतिवृष्टि मं० मंदवृष्टि सु० सुवृष्टि दु० खराब वृष्टि उ० पानीका उद्भेद उ० तलावादि भरावे उ० थोडा पानी वहे उ० बहुत पानी वहे प० प्रवाहचले गा० ग्राम में पानीचले जा० यावत् स० सन्निवेश में पानी चले पा० प्राणक्षय जा०

सूत्र नागकुमारा, नागकुमारीओ, उदहिकुमारा, उदहिकुमारीओ, थणियकुमारा, थणियकुमारीओ, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया. जाव चिट्ठंति ॥ १३ ॥ जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तंजहा-अइवासाइवा, मंदवासाइवा, सुवुट्ठीइवा, दुवुट्ठीइवा, उदुब्भेयाइवा, उदप्पीलाइवा, उदवाहाइवा, पवाहाइवा, गामवाहाइवा, जाव सन्निवेसवाहाइवा, पाणक्खया जाव तेसिं वा,

भावार्थ कुमार, उदधि कुमारियों, स्थनित कुमार व स्थनित कुमारियों यावत् उनका भार्यासमान कार्य करते हैं ॥१३॥ जम्बूद्वीपके मेरुकी दक्षिणमें अतिवृष्टि, मंदवृष्टि, सुवृष्टि, दुवृष्टि, पर्वतकेतट व नदियोंमें पानीका चलना, तलावादिक भर कर पानी का चलना, थोडा पानी चलना, बहुत पानी चलना, ग्राम यावत् सन्निवेश वह जावे इतना पानी चलना वगैरह होवे. इस से प्राणियों का क्षय यावत् धन वगैरह का क्षय होवे. यह सब वरुण

शब्दार्थ

ज० यम म० महाराजा ॥ ११ ॥ क० कहां भं० भगवन् व० वरुण म० महाराजा का स० स्वयं जल म० महाविमान गो० गौतम त० उस सो० सौधर्म अवतंसक म० महाविमान की प० पश्चिम में सो० सौधर्म देवलोक में अ० असंख्यात जा० यावत् ज० जैसे सो० सोम का त० तैसे वि० विमान राज्यधानी भा० कहना जा० यावत् पा० प्रासाद अवतंसक ण० विशेष ना० नाम ना० नाना प्रकार ॥ १२ ॥ व० वरुण के जा० यावत चि० रहते हैं व० वरुण का परिवार व० वरुण के० सामानिक का परिवार ना० नाग

सूत्र

जमे महाराया महाराया ॥ ११ ॥ कहिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुण-स्स महारन्नो, सयंजले नामं महाविमाणे पन्नते ? गोयमा ! तस्सणं सोहम्मवडं सयस्स महाविमाणस्स पच्चत्थिमेणं सोहम्मेकप्पे असंखेज्जाइं, जहा सोमस्स तहा विमाण रायहाणीओ भाणियव्वा जाव पासाय वडेंसया. णवरं नामं नाणत्तं ॥ १२ ॥ सक्कस्सणं वरुणस्सणं जाव चिट्ठंति तंजहा-वरुणकाइयाइवा, वरुणदेवकाइयाइवा,

भावार्थ

पल्योपम की स्थिति कही है. इस तरह अहो गौतम ! यह महर्द्धिक यावत् महाराजा है.॥११॥ अहो भगवन्! शक्र देवेन्द्र के वरुण नामक महाराजा का सतंजल नामक महाविमान कहां है ? अहो गौतम ! सौधर्मावतं-सक विमान की पश्चिम में असंख्यात योजन जावे वहां वरुण महाराजा की सतंजला नामक राज्यधानी कही उसका वर्णन सोममहाराजा जैसे करना॥१२॥वरुण कायिक,वरुणदेव कायिक,नागकुमार,नागकुमारियों ...

शब्दार्थ कुमार ना० नाग कुमारी उ० उदधिकुमार उ० उदधिकुमारी थ० स्थनित कुमार थ० स्थनित कुमारी जे० जो अ० अन्य त० तथारूप स० सर्व ते० वे उ० उन के सेवक जा० यावत् चि० रहते हैं ॥ १३ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की दा०दक्षिण में जा०जो इ० ये स० उत्पन्न होवे अ० अतिवृष्टि मं० मंदवृष्टि सु० सुवृष्टि दु० खराब वृष्टि उ० पानीका उद्भेद उ० तलावादि भरावे उ० थोडा पानी वहे उ०बहुत पानी वहे प० प्रवाहचले गा० ग्राम में पानीचले जा० यावत् स० सन्निवेश में पानी चले पा० प्राणक्षय जा०

सूत्र नागकुमारा, नागकुमारीओ, उदहिकुमारा, उदहिकुमारीओ, थणियकुमारा, थणियकुमारीओ, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया. जाव चिट्ठंति ॥ १३ ॥ जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तंजहा-अइवासाइवा, मंदवासाइवा, सुवुट्ठीइवा, दुवुट्ठीइवा, उदुब्भेयाइवा, उदप्पीलाइवा, उदवाहाइवा, पवाहाइवा, गामवाहाइवा, जाव सन्निवेसवाहाइवा, पाणक्खया जाव तेसिं वा,

भावार्थ कुमार, उदधि कुमारियों, स्थनित कुमार व स्थनित कुमारियों यावत् उनका भार्यासमान कार्य करते हैं ॥१३॥ जम्बूद्वीपके मेरुकी दक्षिणमें अतिवृष्टि, मंदवृष्टि, सुवृष्टि,दुवृष्टि,पर्वतकेतट व नदियोंमें पानीका चलना,तलावादिक भर कर पानी का चलना, थोडा पानी चलना, बहुत पानी चलना, ग्राम यावत् सन्निवेश वह जावे इतना पानी चलना वगैरह होवे. इस से प्राणियों का क्षय यावत् धन वगैरह का क्षय होवे. यह सब वरुण

शब्दार्थ

ज० यम म० महाराजा ॥ ११ ॥ क० कहां भं० भगवन् व० वरुण म० महाराजा का स० स्वयं जल म० महाविमान गो० गौतम त० उस सो० सौधर्म अवतंसक म० महाविमान की प० पश्चिम में सो० सौधर्म देवलोक में अ० असंख्यात जा० यावत् ज० जैसे सो० सोम का त० तैसे वि० विमान राज्यधानी भा० कहना जा० यावत् पा० प्रासाद अवतंसक ण० विशेष ना० नाम ना० नाना प्रकार ॥ १२ ॥ व० वरुण के जा० यावत चि० रहते हैं व० वरुण का परिवार व० वरुण के० सामानिक का परिवार ना० नाग

सूत्र

जमे महाराया महाराया ॥११॥ कहिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुण-स्स महारन्नो, सयंजले नामं महाविमाणे पन्नते ? गोयमा ! तस्सणं सोहम्मवडं सयस्स महाविमाणस्स पच्चत्थिमेणं सोहम्मेकप्पे असंखेज्जाइं, जहा सोमस्स तहा विमाण रायहाणीओ भाणियव्वा जाव पासाय वडेंसया. णवरं नामं नाणत्तं ॥ १२ ॥ सक्करसणं वरुणस्सणं जाव चिट्ठंति तंजहा-वरुणकाइयाइवा, वरुणदेवकाइयाइवा,

भावार्थ

पल्योपम की स्थिति कही है. इस तरह अहो गौतम ! यह महर्द्धिक यावत महाराजा है.॥११॥ अहो भगवन्! शक्र देवेन्द्र के वरुण नामक महाराजा का सतंजल नामक महाविमान कहां है ? अहो गौतम ! सौधर्मावतं सक विमान की पश्चिम में असंख्यात योजन जावे वहां वरुण महाराजा की सतंजला नामक राज्यधानी कही इसका वर्णन सोममहाराजा जैसे करना॥१२॥वरुण कायिक,वरुणदेव कायिक,नागकुमार,नागकुमारियों, उदधि

शब्दार्थ के० वल्गु ना० नाम का म० महाविमान गो० गौतम त० उस सो० सौधर्मावतंसक म० महाविमान की उ० उत्तर में ज० जैसे सो० सोम वि० विमान की रा०राज्यधानी की व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् वा० प्रासादावतंसक ॥ १५ ॥ स० शक्र के वे० वैश्रमण को इ० ये दे० देव आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहते हैं वे० वैश्रमण कायिक वे० वैश्रमण देव कायिक सु० सुवर्ण कुमार सु० सुवर्ण कुमारिका दी० द्वीपकुमार दी० द्वीप कुमारी का दि० दिशाकुमार दि० दिशा कुमारी का वा०

सूत्र महाविमाणे पं० ? गोयमा ! तस्सणं सोहम्मवडंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरेणं जहा सोमस्स विमाणस्स रायहाणियवत्तव्वया तहा नेयव्वा जाव पासायवडंसया ॥ १५ ॥ सक्कस्सणं वेसमणस्स इमे देवा आणाउववायवयणानिद्देसे चिट्ठंति, तंजहा-वेसमण काइयाइवा, वेसमणदेवकाइयाइवा, सुवण्णकुमारा, सुवण्णकुमारीओ, दीवकुमारा,

भावार्थ मण महाराजा का वल्गु नामक महा विमान कहां है ? अहो गौतम ! सौधर्म देवलोक में सौधर्मावतंसक महाविमान की उत्तर में असंख्यात योजन जावे वहां वल्गु नाम का महा विमान आता है. उस का सब वर्णन सोम महाराजा की राज्यधानी जैसे कहना ॥ १५ ॥ वैश्रमण कायिक, वैश्रमण देवकायिक, सुवर्ण कुमार, द्वीप कुमार, दिशा कुमार व वाणव्यंतर देव व उन की देवियों वैश्रमण महाराजा की

शब्दार्थ यावत् ते० उन व० वरुण के० जा० यावत् अ० यथा अपत्य क० कर्कोटक क० कर्दम अं० अंजन सं० शंखपाल पुं० पुंड्र प० पलाश मो० मोज ज० जय द० दधिमुख अ० अयंपुल का० कातरिक व० वरुण की दे० देशऊणे दो० दोपल्योपम की ठि० स्थिति अ० अपत्य देव की ए० एक पल्योपम की म० महर्द्धिक प० कहे व० वरुण म० महाराजा ॥ १४ ॥ क० कहां भं० भगवन् स० शक्र के वे० वैश्रमण

सूत्र वरुणकाइयाणं देवाणं सक्कस्सणं वरुणस्स जाव अहावच्चाभिण्णाया होत्था, तंजहा-कक्कोडए, कद्दमए, अंजणे, संखवालए, पुंडे, पलासे, मोये, जये, दहिमुहे, अयंपुले, कायरिए ॥ सक्कस्सणं वरुणस्स देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं एगंपलिओवमं ठिई पण्णत्ता, ए महिड्ढीए जाव वरुणे महाराया ॥ १४ ॥ कहिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो वग्गूनामं

भावार्थ महाराजा जानते हैं यावत् याद करते हैं. वरुण महाराजा को कर्कोटक, कर्दमक, अंजन, शंखपाल, पुंड्र, पलाश, मोय, जय, दधिमुख, अयंपुल कातरिकनामक देवों पुत्रवत् विनयवाले आदेशमें प्रवर्तनेवाले होते हैं. इन की देशऊने दो पल्योपम की स्थिति कही है, और अपत्य समान देवकी एक पल्योपम की स्थिति कही. अहो गौतम ! वरुण राजा की ऐसी ऋद्धि कही है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र का वैश्र-

शब्दार्थ के० वल्गु ना० नाम का म० महाविमान गो० गौतम त० उस सो० सौधर्मावतंसक म० महाविमान की उ० उत्तर में ज० जैसे सो० सोम वि० विमान की रा०राज्यधानी की व० वक्तव्यता ने० जानना जा० यावत् पा० प्रासादावतंसक ॥ १५ ॥ स० शक्र के वे० वैश्रमण को इ० ये दे० देव आ० आज्ञा उ० उपपात व० वचन नि० निर्देश में चि० रहते हैं वे० वैश्रमण कायिक वे० वैश्रमण देव कायिक सु० सुवर्ण कुमार सु० सुवर्ण कुमारिका दी० द्वीपकुमार दी० द्वीप कुमारी का दि० दिशाकुमार दि० दिशा कुमारी का वा०

सूत्र महाविमाणे पं० ? गोयमा ! तस्सणं सोहम्मवडंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरेणं जहा सोमस्स विमाणस्स रायहाणियवत्तव्वया तहा नेयव्वा जाव पासायवडंसया ॥१५॥ सक्कस्सणं वेसमणस्स इमे देवा आणाउववायवयणानिद्देसे चिट्ठंति, तंजहा-वेसमण काइयाइवा, वेसमणदेवकाइयाइवा, सुवण्णकुमारा, सुवण्णकुमारीओ, दीवकुमारा,

भावार्थ मण महाराजा का वल्गु नामक महा विमान कहां है ? अहो गौतम ! सौधर्म देवलोक में सौधर्मावतंसक महाविमान की उत्तर में असंख्यात योजन जावे वहां वल्गु नाम का महा विमान आता है. उस का सब वर्णन सोम महाराजा की राज्यधानी जैसे कहना ॥ १५ ॥ वैश्रमण कायिक, वैश्रमण देवकायिक, सुवर्ण कुमार, द्वीप कुमार, दिशा कुमार व वाणव्यंतर देव व उन की देवियों वैश्रमण महाराजा की

शब्दार्थ वाणव्यंतर वा० वाण व्यंतरी जे० जो अ० अन्य त० तैसे स० सब ए० ये त० उस की भक्तिवाले जा० यावत् चि० रहते हैं ॥ १६ ॥ जं० जम्बूद्वीप के मं० मेरु की दा० दक्षिण में जा० जो इ० ये स० उत्पन्न होते हैं तं० वह ज० जैसे अ० लोहे की खान त० चांदीकी खान तं० तांबेकी खान ए० ऐसें सी० सीसे की खान हि० चांदीकी खान सु० सुवर्ण की खान र० रत्नकी खान व० वज्र रत्न की खान व० द्रव्य वृष्टि हि० चांदी सु० सुवर्ण की वर्षा र० रत्न व० वज्र आ० आभरण प० पत्र पु० पुष्प फ० फल बी० बीज म० माला व० वर्ण चु० चूर्ण गं० गंध व० वस्त्र की वा० वर्षा हि० हिरण्य की वु० वृष्टि सु० सुवर्ण

सूत्र दीवकुमारीओ ; दिसाकुमारा, दिसाकुमारीओ, वाणमंतरा, वाणमंतरीओ, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वेते तब्भत्तिया जाव चिट्ठंति ॥१६॥ जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति. तंजहा-अयागराइवा, तउयागराइवा, तंबागराइवा; एवं सीसागराइवा, हिरण्ण सुवण्ण रयण वइरागराइवा, वसुहाराइवा, हिरण्णवासाइवा, सुवण्णवासाइवा, रयण-वइर-आभरण-पत्त-पुप्फ-फल-बीय-मल्ल-वण्ण-चुण्ण-गंध-वत्थ-

भावार्थ आज्ञा, निर्देश व उपपात में रहते हैं उन की सेवा भक्ति करते हैं यावत् उनका भार्या समान कार्य करते हैं ॥ १६ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण में लोहे की खान, ताम्बे की खान, सीसे की खान, हिरण्य [चांदी] की खान, सुवर्ण की खान, रत्न, वज्र, आभरण, पत्र, पुष्प, फल, बीज, माल्य, वर्ण, चूर्ण,

शब्दार्थ की र० रत्न व० वज्र आ० आभरण प० पत्र पु० पुष्प फ० फल बी० बीज म० माल्य व० वर्ण गं० गंध व० वस्त्र भा० भाजन की वु० वृष्टि खी० क्षीर की वु० वृष्टि सु० सुकाल दु० दुष्काल अ० अल्पर्घ्य म० महर्घ्य सु० सुभिक्ष दु० दुर्भिक्ष क० क्रय वि० विक्रय स० सन्निधि सं० संचय नि० निधि नि० निधान चि० बहुत काल के पो० जीर्ण प० रहित सा० स्वामीवाले प० सेवक रहित प० मार्ग रहित ग० गोत्रा

सूत्र वासाइवा, हिरण्णवुट्ठीइवा, सुवण्ण-रयण-वइर-आभरण-पत्त-पुप्फ-फल-बीय-मल्ल-वण्ण-गंध-वत्थ भायण-वुट्ठीइवा, खीरवुट्ठीइवा-सुयालाइवा, दुकालाइवा, अप्पुग्घाइवा, महग्घाइवा, सुभिक्खाइवा दुब्भिक्खाइवा, कयविक्कयाइवा, सन्निहीइवा, सन्निचयाइवा, निहीइवा; निहाणाइवा, चिरपोराणाइं, पहीणसामियाइवा, पहीणसेउयाइवा, पहीण-मग्गाणिवा, पहीण गोत्तागाराइवा, उच्छिण्ण सामियाइवा, उच्छिण्णसेउयाइवा, उच्छिन्नगोत्तागाराइवा, सिंघाडग-तिग - चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु, नगर-

भावार्थ गंध व वस्त्र की वर्षा, हिरण्य, सुवर्ण, रत्न, वज्र, आभरण, यावत् वस्त्र भाजन की वृष्टि, क्षीर की वृष्टि, सुकाल, दुष्काल, अल्प मूल्य, बहु मूल्य, सुभिक्ष, दुभिक्ष, क्रयविक्रय, संचय, संग्रह, निधि, निधान, बहुत काल का संचित कियाहुवा द्रव्य, स्वामी रहित बना हुवा द्रव्य, सेवक रहित बना हुवा द्रव्य, नष्ट मार्ग, नष्ट गोत्राकार, विच्छिन्न स्वामी, विच्छिन्न सेवक, विच्छिन्न गोत्राकार वैसे ही शृंगाटक के आकार में

शब्दार्थ गार रहित उ० विछिन्न स्वामी वाले सिं० शृंगाटक ति० तीन च० चौक च० चच्चर च० चउमुख म० महापथ प० पथ में न० नगर की मोरी में सु० श्मशान में गि० पर्वत कं० गुफा सं० शान्ति स्थान से० शैलोपस्थान भ० भवन गृहमें स० रखा हुवा चि० रहता है ण० नहीं ता० उसे स० शक्र दे० देवेंद्र दे० देवराजा का वे० वैश्रमण म० महाराजा अ० अज्ञात अ० अश्रुत अ० अजान अ० अविज्ञात ॥ १७ ॥ ते० उन वे० वैश्रमण कायिक दे० देवों को स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा वे० वैश्रमण को इ० ये

सूत्र निद्धमणेसुवा, सुसाण गिरि कंदर संति सेलोवट्ठाण भवणगिहेसु सण्णिक्खित्ताइं चिट्ठंति, ण ताइं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा, अस्सुया, अम्मुया, अविण्णाया, ॥ १७ ॥ तेसिंवा वेसमणकाइयाणं देवाणं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया होत्था,

भावार्थ तीन रस्ते मीले वहां, चौक, चच्चर, चउमुख, महापथ, राजमार्ग, नगर की नालियों में, श्मशान, गिरि, गुफा, शान्तिगृह, शैलोपस्थान, व भवनगृहमें रखाहुवा द्रव्य वगैरह होते हैं वे शक्र देवेन्द्रके वैश्रमण महाराजा से अज्ञात, अदृष्ट, अश्रुत, अविज्ञात नहीं हैं. वे सब बातों जानते हैं ॥ १७ ॥ पूर्णभद्र, माणभद्र, शालिभद्र, सुवर्णभद्र, शक्ररक्ष, पूर्णरक्ष, सर्वाण, सर्वयश, सर्व कार्य समिद्ध, अमोघ अशान्त वगैरह

शब्दार्थ दे०देव अ०यथाअपत्य अ०अभिज्ञात हो० हैं पु०पूर्णभद्र मा० माणिभद्र सा०शालिभद्र सु०सुमन भद्र च०चक्र रक्ष पु० पूर्णरक्ष स० सर्वाण स० सर्व यश स० सर्व कामसिद्ध अ०अमोघ अ०अशान्त स०शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की वे० वैश्रमण म० महाराजा की दो० दोपल्योपम की ठि० स्थिति प० परूपी अ० यथा अपत्य अ० अभिज्ञात दे० देवों की ए० एक प० पल्योपम की ठि० स्थिति प०परूपी ए० यह म०महर्द्धिक जा० यावत् वे० वैश्रमण म० महाराजा से० ऐसे ही भं० भगवन् ॥ ३ ॥ ७ ॥ =

सूत्र तंजहा-पुण्णभद्दे, माणिभद्दे, सालिभद्दे, सुमणभद्दे, चक्करक्खे, पुण्णरक्खे, सव्वाणे, सव्वजसे, सव्वकाम सामिद्धे, अमोहे, असंते, ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो दो पलिओवमाइं ठिई प० ॥ अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं, एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ए महिड्ढीए जाव वेसमणे महाराया. सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तइयसए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ७ ॥ * *

भावार्थ वैश्रमण महाराजा को अपत्यवत् विनय करनेवाले देवों हैं. उन की दो पल्योपम की स्थिति कही है और अपत्य देवों की एक पल्योपम की स्थिति कही है. अहो गौतम ! यह वैश्रमण की ऋद्धि यावत् महानुभाग का वर्णन कहा ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! आप जैसे फरमाते हो वैसे ही हैं. यह तीसरा शतकका सातवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ७ ॥ ÷ ÷

शब्दार्थ रा० राजगृह न० नगर जा० यावत् प० पर्युपासना करते ए० ऐसे व० बोले अ० असुर कुमार भं० भगवन् दे० देव को क० कितने दे० देव आ० आधिपत्य जा० यावत् चि० रहते हैं गो० गौतम द० दश दे० देव आ० आधिपत्य जा० यावत् वि० विचरते हैं तं० वह ज० यथा च० चमर अ० असुरेन्द्र सो० सोम ज० यम व० वरुण वे० वैश्रमण व० बलि व० वैरोचनेन्द्र व० वैरोचन राजा ॥ १ ॥ ना० नाग

सूत्र रायगिहे नगरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी- असुरकुमाराणं भंते देवाणं कइ-देवा आहेवच्चं जाव चिट्ठंति ? गोयमा ! दसदेवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तंजहा- चमरे असुरिंदे असुरराया सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥ बली वइरोयाणिंदे वइरोयण-राया, सोमे, जमे वरुणे, वेसमणे ॥ १ ॥ नागकुमाराणं भंते ! पुच्छा। गोयमा !

भावार्थ सातवे उद्देशे में लोकपालों की वक्तव्यता कही. अब इस उद्देशे में देवताओं के स्वामी का कथन करते हैं. राजगृही नगरी में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी पधारे. परिषदा वंदन करने को आई, धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस समयमें श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी ऐसा प्रश्न पूछने लगे कि अहो भगवन्! असुरकुमार जाति के देवों को कितने देव स्वामीपने रहते हैं? अहो गौतम ! असुर कुमार जाति के देवों को दश देव स्वामीपने रहते हैं. दक्षिण दिशा के चमर नामक असुर का राजा असुरेन्द्र और सोम, यम, वरुण व वैश्रमण यह चार उन के लोकपाल. उत्तर दिशा के

शब्दार्थ कुमार की पु० पृच्छा गो० गौतम द० दश दे० देव आ० आधिपत्य जा० यावत् वि० विचरते हैं ध० धरण ना० नागकुमारेन्द्र ना० नाग कुमार राजा का० कालवाल को० कोलवाल सं० शंखवाल से० शेलवाल भू० भूतानेन्द्र ज० जैसे ना० नागकुमारेन्द्र की ए० इस व० वक्तव्यता से ए० यह ए० ऐसे इ० इनका ने० जानना ॥ २ ॥ सु० सुवर्ण कुमार का वे० वेणुदेव वे० वेणुदाल चि० चित्र वि० विचित्र

सूत्र दसदेवा आहेवच्चं जाव विहरंति तंजहा-धरणे, नागकुमारिंदे, नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले, सेलवाले, संखवाले ॥ भूयाणिंदे नागकुमारिंदे नागकुमारराया कालवाले, कोलवाले, संखवाले, सेलवाले ॥ जहा नागकुमारिंदाणं एयाए वत्तव्वयाए, एतं एवं इमाणं नेयव्वं ॥ २ ॥ सुवण्णकुमाराणं वेणुदेवे, वेणुदाली, चिते, विचित्ते ।

भावार्थ बलि नामक वैरोचनेन्द्र और उन के सोम, यम, वरुण व वैश्रमण नामक लोकपाल यह दश हुए ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नाग कुमार देव के कितने आधिपति देव कहे हैं ? अहो गौतम ! दश आधिपति देव कहे हैं. दक्षिण दिशा के धरण नामक नाग कुमारेन्द्र और उन के कालवाल, कोलवाल, संखवाल व सेलवाल यह चार लोकपाल; और उत्तर दिशा के भूतानेन्द्र व उन के कालवालादि चार लोकपाल मीलकर दश हुए ॥ २ ॥ सुवर्ण कुमार को दश देव आधिपतिपना करनेवाले हैं. वेणुदेव और वेणुदाल ये दोनों

शब्दार्थ चि० चित्रपक्ष वि० विचित्रपक्ष वि० विद्युत्कुमार [redacted] ह० हरिकंत ह० हरिसिंह प० प्रभ सु० सुप्रभ प० प्रभकान्त सु० सुप्रभकान्त ॥ ४ ॥ अ० अग्निकुमार को अ० अग्निसिंह अ० अग्निमानव ते० तेउ ते० तेउ सिंह ते० तेउकान्त ते० तेउप्रभ ॥ ५ ॥ दी० द्वीप कुमार को पु० पूर्ण व० वसिष्ठ रू० रूप रू० रूपांश रू० रूपसिंह रू० रूपप्रभ ॥ ६ ॥ उ० उदधिकुमार को ज० जलकान्त ज० जलप्रभ ज० जल ज० जल

सूत्र चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे, ॥ ३ ॥ विज्जुकुमाराणं-हरिकंते, हरिस्सहे. पभे, सुप्पभे, पभकंते, सुप्पभकंते ॥ ४ ॥ अग्गिकुमाराणं-अग्गिसीहे, अग्गिमाणवे, तेउ, तेउ-सीहे, तेउकंते, तेउप्पभे ॥ ५ ॥ दीवकुमाराणं-पुण्ण वसिट्ठ रूय, रूयंस, रूयसीह, रूयप्पभा ॥ ६ ॥ उदहिकुमाराणं-जलकंत, जलप्पभ, जल, जलरूय, जलकंत,

भावार्थ इन्द्र और प्रत्येक के चित्र, विचित्र, चित्रपक्ष व विचित्र पक्ष ये चार लोकपाल कहे हैं ॥ ३ ॥ विद्युत् कुमार को दश देव अधिपतिपना करनेवाले हैं. हरिकंत हरिसिंह ये दो इन्द्र और प्रत्येक को प्रभ, सुप्रभ, प्रभकान्त, सुप्रभकान्त ये चार २ लोकपाल मीलकर दश हुए ॥ ४ ॥ अग्निकुमार को अग्निसिंह व अग्नि मानव ये दो इन्द्र और उन के तेउ, तेउसिंह, तेउ कान्त व तेउ प्रभ ऐसे चार २ लोकपाल कहे हैं ॥ ५ ॥ द्वीप कुमार को पूर्ण व वशिष्ठ ऐसे दो इन्द्र और उन के रूप, रूपांश, रूपसिंह व रूपप्रभ ऐसे चार २ लोकपाल ॥ ६ ॥ उदधि कुमार के जलकान्त और जलप्रभ ऐसे दो इन्द्र उन के जल, जलरूप, जलकांत व

शब्दार्थ रूप ज० जलकान्त ज० जलप्रभ ॥ ७ ॥ दि० दिशाकुमार को अ० अमितगति अ० अमितवाहन तु० त्वरितगति खि० क्षिप्रगति सी० सिंहगति सी० सिंह विक्रमगति ॥ ८ ॥ वा० वायुकुमार को वे० वेलंब प० प्रभंजन का० काल म० महाकाल अं० अंजन रिं० रिष्ठ ॥ ९ ॥ थ० स्थनित कुमार को घो० घोष म० महाघोष आ० आवर्त वि० व्यावर्त नं० नांदियावर्त म० महानंदियावर्त ऐ० ऐसे भा० कहना ज० जैसे अ० असुरकुमार को ॥ १० ॥ पि० पिशाच की पु० पृच्छा गो० गौतम दो० दो दे० देव आ० आधि

सूत्र जलप्पभा ॥ ७ ॥ दिसाकुमाराणं अमियगई, अमियवाहणे, तुरियगई, खिप्पगई, सीहगई, सीहविक्कमगई ॥ ८ ॥ वाउकुमाराणं वेलंब, पभंजण, काल, महाकाल, अंजण, रिट्ठा, ॥ ९ ॥ थणियकुमाराणं घोस, महाघोस, आवत्त, वियावत्त, नंदियावत्त, महानंदियावत्ता एवं भाणियव्वं ॥ जहा असुरकुमाराणं ॥ १० ॥ सोमेय.

भावार्थ जलप्रभ ऐसे चार २ लोकपाल कहे हैं. ॥७॥ दिशा कुमार को अमितगति अमितवाहन ऐसे दो इन्द्र उन के त्वरित गति, क्षिप्रगति, सिंहगति व सिंह विक्रमगति ऐसे चार २ लोकपाल हैं ॥८॥ वायुकुमार को वेलम्ब व प्रभंजन ऐसे दो इन्द्र और उन के काल, महाकाल, अंजन व रिष्ट ऐसे चार २ लोकपाल ॥९॥ स्थनित कुमार के घोष व महाघोष ऐसे दो इन्द्र और आवर्त, वियावर्त, नंदियावर्त व महानंदियावर्त ऐसे चार २ लोकपाल इन तरह भुवनपति के २० इन्द्र व ८० लोकपाल मीलकर १०० हुए. ॥१०॥ सोम नामक लोकपाल का नाम कहते

सूत्र

चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे, ॥ ३ ॥ विज्जुकुमाराणं-हरिकंते, हरिस्सहे. पभे, सुप्पभे, पभकंते, सुप्पभकंते ॥ ४ ॥ अग्गिकुमाराणं-अग्गिसीहे, अग्गिमाणवे, तेउ, तेउ-सीहे, तेउकंते, तेउप्पभे ॥ ५ ॥ दीवकुमाराणं-पुण्ण वासिट्ठ रूय, रूयंस, रूयसीहे, रूयप्पभा ॥ ६ ॥ उदहिकुमाराणं-जलकंत, जलप्पभ, जल, जलरूय, जलकंत,

शब्दार्थ

चि० चित्रपक्ष वि० विचित्रपक्ष वि० विद्युत्कुमार को ह० हरिकंत ह० हरिसिंह प० प्रभ सु० सुप्रभ प० प्रभकान्त सु० सुप्रभकान्त ॥ ४ ॥ अ० अग्निकुमार को अ० अग्निसिंह अ० अग्निमानव ते० तेउ ते० तेउ सिंह ते० तेउकान्त ते० तेउप्रभ ॥ ५ ॥ दी० द्वीप कुमार को पु० पूर्ण व० वसिष्ठ रू० रूप रू० रूपांश रू० रूपसिंह रू० रूपप्रभ ॥ ६ ॥ उ० उदधिकुमार को ज० जलकान्त ज० जलप्रभ ज० जल ज० जल

भावार्थ

इन्द्र और प्रत्येक के चित्र, विचित्र, चित्रपक्ष व विचित्र पक्ष ये चार लोकपाल कहे हैं ॥ ३ ॥ विद्युत् कुमार को दश देव अधिपतिपना करनेवाले हैं. हरिकंत हरिसिंह ये दो इन्द्र और प्रत्येक को प्रभ, सुप्रभ, प्रभकान्त, सुप्रभकान्त ये चार २ लोकपाल मीलकर दश हुए ॥ ४ ॥ अग्निकुमार को अग्निसिंह व अग्नि मानव ये दो इन्द्र और उन के तेउ, तेउसिंह, तेउ कान्त व तेउ प्रभ ऐसे चार २ लोकपाल कहे हैं ॥ ५ ॥ द्वीप कुमार को पूर्ण व वशिष्ट ऐसे दो इन्द्र और उन के रूप, रूपांश, रूपसिंह व रूपप्रभ ऐसे चार २ लोकपाल ॥ ६ ॥ उदधि कुमार के जलकान्त और जलप्रभ ऐसे दो इन्द्र उन के जल, जलरूप, जलकांत व

शब्दार्थ जो॰ ज्योतिषियों के दो॰ दो दे॰ देव च॰ चंद्र सू॰ सूर्य ॥ १३ ॥ सो॰ सौधर्म ई॰ ईशान में क॰ कितने दे॰ देव आ॰ आधिपत्य वि॰ विचरते हैं गो॰ गौतम द॰ दशदेव वि॰ विचरते हैं स॰ शक्र दे॰ देवेन्द्र दे॰ देवराजा सो॰ सोम ज॰ यम व॰ वरुण वे॰ वैश्रमण ई॰ ईशान ए॰ यह व॰ वक्तव्यता स॰

सूत्र वाणं दो देवा आहेवच्चं जाव विहरंति. तंजहा- चंदे, सूरेय ॥ १३ ॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! कप्पेसु कइदेवा आहेवच्चं जाव विहरंति ? गोयमा ! दसदेवा जाव विहरंति, तंजहा-सक्के देविंदे देवराया, सोमे, जमे, वरुणे वेसमणे ; ईसाणे देविंदे देवराया सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥१४॥ एसा वत्तव्वया सव्वेसुवि कप्पेसु एएचेव

भावार्थ जाति के देव कहते हैं. आणपन्नी, पाणपन्नी, इसीवाय, भुइवाय, कन्दिय, महाकन्दिय, कोहंग व पयंग देव. इन आठों को दो २ देव अधिपतिपना करते हैं. उन के नाम सन्निहित, सामानिक, घाइ, वघाइ, इसी, इसीवाल, ईश्वर, महेश्वर, सुवत्थ, विशाल, हास, हासराति, सेय, महासेय, पयग, पयगवाति. यों सोलह वाणव्यंतर के ३२ देव होते हैं ॥ १२ ॥ ज्योतिषी देव को दो देव अधिपतिपना करते हैं. चन्द्र व सूर्य ॥ १३ ॥ सौधर्म ईशान देवलोक में दश देव आधिपतिपना करते हैं. शक्र देवेन्द्र, ईशान देवेन्द्र और उन के सोम, यम, वरुण व वैश्रमण नामक चार २ लोकपाल ॥ १४ ॥ तीसरे चौथे देवलोक में दश देव अधिपति हैं. सनत्कुमारेन्द्र व माहेन्द्र और उन के सोमादि चार २ लोकपाल. ऐसे ही पांचवे छठे

शब्दार्थ पत्य जा० यावत् वि० विचरते हैं का० काल म० महाकाल सु० सुरूप प० प्रतिरूप पु० पूर्णभद्र अ० देवपति मा० माणिभद्र भी० भीम त० तैसे म० महाभीम किं० किंनर किं० किंपुरुप स० सत्पुरुप म० महापुरुष अ० अतिकाय म० महाकाय गी० गीतरति गी० गीतयश ऐ० ऐसे वा० वाणव्यंतर ॥ १२ ॥

सूत्र कालवाले, चित्त, पभ, तेओ, तहरुवेचेव, जल, तहतुरियगतिया काल, आवत्त पढमाओ ॥ ११ ॥ पिसायकुमाराणं पुच्छा ? गोयमा ! दो देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तंजहा-कालेय, महाकाले, सुरूव, पडिरूव ; पुण्णभद्देय, अमरवइ, माणिभद्दे, भीमेय तहा महाभीमे ॥१॥ किंनर किंपुरिसे खलु, सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे। अइकाय महाकाए-गीयरई चेवगीयजसे एए वाणमंतराणं ॥१२॥ जोइसियाणं दे-

भावार्थ हैं १ सोम, २ कालवाल ३ चित्र ४ प्रभ, ५ तेउ, ६ रूप ७ जल ८ त्वरितगति ९ काल व १० आवर्त ॥११॥ अब व्यंतर जाति के देवता का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! पिशाच जाति के देव को कितने देव अधिपति हैं ? अहो गौतम ! दो देव अधिपति हैं, काल व महाकाल. ऐसे ही भूत के दो देव रूप, प्रतिरूप, यक्ष के दो देव पूर्णभद्र, मान भद्र, राक्षस के दो देव भीम, महाभीम, किन्नरजाति के दो देव किन्नर, किंपुरुप, किं पुरुप के दो देव सत्पुरुष महापुरुष; महोरग के दो देव अतिकाय, महाकाय; गंधर्व के दो देव १ गीतरति २ गीतयश यह आठ व्यंतर जाति के देव कहे; और अन्यभी आठ व्यंतर

शब्दार्थ जो॰ ज्योतिषियों के दो॰ दो दे॰ देव चं॰ चंद्र सू॰ सूर्य ॥ १३ ॥ सो॰ सौधर्म ई॰ ईशान में क॰ कितने दे॰ देव आ॰ आधिपत्य वि॰ विचरते हैं गो॰ गौतम द॰ दशदेव वि॰ विचरते हैं स॰ शक्र दे॰ देवेन्द्र दे॰ देवराजा सो॰ सोम ज॰ यम व॰ वरुण वे॰ वैश्रमण ई॰ ईशान ए॰ यह व॰ वक्तव्यता स॰

सूत्र वाणं दो देवा आहेवच्चं जाव विहरंति. तंजहा- चंदे, सूरेय ॥ १३ ॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! कप्पेसु कइदेवा आहेवच्चं जाव विहरंति ? गोयमा ! दसदेवा जाव विहरंति, तंजहा-सक्के देविंदे देवराया, सोमे, जमे, वरुणे वेसमणे ; ईसाणे देविंदे. देवराया सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥१४॥ एसा वत्तव्वया सव्वेसुवि कप्पेसु एएचेव

भावार्थ जाति के देव कहते हैं. आणपन्नी, पाणपन्नी, इसीवाय, भुइवाय, कान्दिय, महाकान्दिय, कोहंग व पयंग देव. इन आठों को दो २ देव अधिपतिपना करते हैं. उन के नाम सन्निहित, सामानिक, धाइ, वधाइ, इसी, इसीवाल, ईश्वर, महेश्वर, सुवत्थ, विशाल, हास, हासराति, सेय, महासेय, पयग, पयगवाति. यों सोलह वाणव्यंतर के ३२ देव होते हैं ॥ १२ ॥ ज्योतिषी देव को दो देव अधिपतिपना करते हैं. चन्द्र व सूर्य ॥ १३ ॥ सौधर्म ईशान देवलोक में दश देव आधिपतिपना करते हैं. शक्र देवेन्द्र, ईशान देवेन्द्र और उन के सोम, यम, वरुण व वैश्रमण नामक चार २ लोकपाल ॥ १४ ॥ तीसरे चौथे देवलोक में दश देव अधिपति हैं. सनत्कुमारेन्द्र व माहेन्द्र और उन के सोमादि चार २ लोकपाल. ऐसे ही पांचवे छठे

शब्दार्थ सत्र में क० देवलोक में ए० यही भा० कहना जे० जो इं० इन्द्र ते० वे भा० कहना ॥ ३ ॥ ८ ॥

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले क० कितने भं० भगवन् इं० इन्द्रिय विषय प० कहे गो० गौतम पं० पांच प्रकार के इं० इन्द्रिय विषय प० कहे तं० वह ज० जैसे सो० श्रोतेन्द्रिय विषय जी०

सूत्र भाणियव्वा ॥ जे य इंदा ते भाणियव्वा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तईयसए अट्ठमोद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ८ ॥ * * *

रायगिहे जाव एवं वयासी कइविहेणं भंते ! इंदिय विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इंदियविषए पण्णत्ते, तंजहा-सोइंदिय विसए, जीवाभिगमे जोइसियउद्देसओ

भावार्थ सातवे आठवे, नववे दशवे, अग्यारहवे, बारहवे तक का जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन तथ्य हैं. यह तीसरा शतकका आठवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ८ ॥ ÷ ÷

राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में भगवंत पधारे. परिपदा वंदने को आई धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर को भगवंत गौतम स्वामीने प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! इन्द्रिय के विषय कितने प्रकार के हैं ? अहो गौतम ! इन्द्रिय के विषय पांच प्रकार के हैं. १. श्रोतेन्द्रिय का विषय, चक्षुइन्द्रिय का विषय, घ्राणेन्द्रिय का विषय, रसनेन्द्रिय का विषय, व स्पर्शेन्द्रिय का विषय. अहो भगवन् ! श्रोतेन्द्रिय का विषय कितने प्रकार का कहा है. अहो गौतम ! श्रोतेन्द्रिय

शब्दार्थ जीवाभिगम में जो० ज्योतिषि का उ० उद्देशा ने० जानना अ० अपरिशेष ॥ ३ ॥ ९ ॥ *

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसे व० बोले च० चमर का भं० भगवन् अ० असुरेन्द्र अ० असुर

सूत्र नेयव्वो अपरिसेसो । सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तईयसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ९ ॥

रायगिहे जाव एवं वयासी-चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तंजहा-समिया, चंडा, जाया.

भावार्थ का विषय दो प्रकार का कहा है. सुशब्द व दुशब्द, ऐसे ही पांचो इन्द्रियों के विषय जानना. इस का विस्तार पूर्वक कथन जीवाभिगम सूत्र के ज्योतिषी उद्देशे में से जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन यथातथ्य हैं. यह तीसरा शतकका नववा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ ९ ॥ +

राजगृही नगरी के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदने को आई धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस समय में गौतम स्वामीने वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न पूछा कि अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र को कितनी परिषदा कही हैं ? अहो गौतम ! उन को समिया, चंडा व जाया ऐसी तीन परिषदा कही हैं. समिया आभ्यंतर परिषदा है, इन के देव बोलाये आते हैं. विना बोलाये नहीं आते हैं. चंडा बीचकी परिषदा है, इन के देव बोलाये, विना बोलाये आते हैं. जाया बाहिरकी परि-

शब्दार्थ राजा की क० कितनी प० परिषदा प० कही गो० गौतम त० तीन प० परिषदा प० कही तं० वह ज० जैसे स० समिता चं० चंडा जा० जाया ए० ऐसे ज० जैसे अ० अनुक्रम से जा० यावत् अ० अच्युत कल्प ॥ ३ ॥ १० ॥ ३ ॥ × +

सूत्र एवं जहाणुपुव्वीए जाव अच्चुओ कप्पो । सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तईय सए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ १० ॥ तईयं सयं सम्मत्तं ॥ ३ ॥ * *

भावार्थ पदा है. इन के देव बिना बोलाये कार्य करने के अवसर पर हाजर रहते हैं. समिया के चौवीस हजार, चंडा के अठावीस हजार व जाया के ३२ हजार देव कहे हैं. ऐसे ही तीन प्रकार की देवी की परिषदा कही है. उस में समिया की ३५० चंडा की ३०० और जाया की २५० देवियों कही हैं. आभ्यंतर परिषदा की देवियों का अढाइ पल्योपम का, मध्य परिषदा की देवियों का दो पल्योपम का और बाह्य परिषदा की देवियों का १॥ पल्योपम [redacted] आयुष्य जानना. जैसे असुरेन्द्र की तीन परिषदा कही वैसे ही बलेन्द्र की तीन परिषदा जानना. ऐसे ही अच्युतेन्द्रतक के चौसठ इन्द्र की तीन २ परिषदाओं का अधिकार जानना. उन का आयुष्य वगैरह सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र से जानना. अहो भगवन्! आपके वचन सत्य हैं. ऐसा कहकर तप व संयम से आत्मा को भावते हुए विचरने लगे. यह तीसरा शतकका दशवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ १० ॥ तीसरा शतकका भावार्थ संपूर्ण हुवा ॥ ३ ॥

* चतुर्थ शतकम्. *

शब्दार्थ च० चमर वि० विमान से च० चार हो० होते हैं रा० राज्यधानी मे ने० नारकी ले० लेश्या से द० दश उ० उद्देशा च० चौथे शतक में ॥ १ ॥ रा० राजगृह न० नगर में जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा को क० कितने लो० लोकपाल गो० गौतम च० चार लो० लोकपाल तं० वह ज० जैसे सो० सोम ज० यम व० वरुण वे० वैश्रमण ए० इन भं० भगवन् लो०लोकपालोंका क०

सूत्र चत्तारि विमाणेहिं, चत्तारिय होंति रायहाणीहिं । नेरइए लेस्साहिय, दस उद्देसा चउत्थसए ॥ १ ॥ रायगिहे णगरे जाव एवं वयासी- ईसाणस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कइलोगपाला पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तंजहा-

भावार्थ तीसरे शतक में देवता का अधिकार कहा है. इस में भी देवता का अधिकार कहते हैं. इस शतक के दश उद्देशे कहे हैं. पहिले चार उद्देशे में ईशानेन्द्र के चार लोकपालों के चार विमानोंका कथन है. पांचवे, छट्ठे, सातवे व आठवे में उन की चार राज्यधानियों का कथन है. नववे में नरक के जीवों का और दशवे में लेश्या का वर्णन है. ॥ १ ॥ राजगृह नगरी के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे, परिषदा वंदन करने को आई धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई. उस समय में श्री श्रमण भगवंत

शब्दार्थ राजा की क० कितनी प० परिषदा प० कही गो० गौतम त० तीन प० परिषदा प० कही तं० वह ज० जैसे स० समिता चं० चंडा जा० जाया ए० ऐसे ज० जैसे अ० अनुक्रम से जा० यावत् अ० अच्युत कल्प ॥ ३ ॥ १० ॥ ३ ॥ × +

मूल एवं जहाणुपुव्वीए जाव अच्चुओ कप्पो । सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तईय सए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ १० ॥ तईयं सयं सम्मत्तं ॥ ३ ॥ * *

भावार्थ पदा है. इन के देव बिना बोलाये कार्य करने के अवसर पर हाजर रहते हैं. सामिया के चौवीस हजार, चंडा के अठावीस हजार व जाया के ३२ हजार देव कहे हैं. ऐसे ही तीन प्रकार की देवी की परिषदा कही है. उस में समिया की ३५० चंडा की ३०० और जाया की २५० देवियों कही हैं. आभ्यंतर परिषदा की देवियों का अढाइ पल्योपम का, मध्य परिषदा की देवियों का दो पल्योपम का और बाह्य परिषदा की देवियों का १॥ पल्योपम का आयुष्य जानना. जैसे असुरेन्द्र की तीन परिषदा कही वैसे ही बलेन्द्र की तीन परिषदा जानना. ऐसे ही अच्युतेन्द्रतक के चौसठ इन्द्र की तीन २ परिषदाओं का अधिकार जानना. उन का आयुष्य वगैरह सब अधिकार जीवाभिगम सूत्र से जानना. अहो भगवन्! आपके वचन सत्य हैं. ऐसा कहकर तप व संयम से आत्मा को भावते हुए विचरने लगे. यह तीसरा शतकका दशवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ १० ॥ तीसरा शतकका भावार्थ संपूर्ण हुवा ॥ ३ ॥

पदार्थ — वतंसक फ० स्फटिकावतंसक र० रत्नावतंसक जा० जातिरूपावतंसक म०मध्य में ई०ईशानावतंसक म० महाविमान पु० पूर्व में ति० तीर्च्छे अं० असंख्यात जो० योजन वी० व्यतिक्रान्त होते ए० यहां ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा का सो० सोम म० महाराजा का सु० सुमन म० महाविमान अ० अर्ध तेरह जो० योजन ज० जैसे स० शक्र की व० वक्तव्यता त० तीसरे स० शतक में त० तैसे ई० ईशान की भी जा०

सूत्र — कवडंसए, फलिह वडंसए, रयण वडंसए, जाइरूव वडंसए, मज्झे तत्थ ईसाण वडंसए ॥ तत्थणं ईसाणं वडंसयस्स महाविमाणस्स पुरच्छिमेणं तिरिय मसंखेज्जाइं जोयणाइं वीइवइत्ता एत्थणं ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणे नामं महाविमाणे पण्णत्ते अद्धतेरस जोयण जहा सक्कस्स वत्तव्वया, तईयसए, तहा

भावार्थ — हुवे हैं. उन से क्रोडा क्रोड योजन ऊंचे ईशान नामक दूसरा महा विमान रहा हुवा है. उस में पांच अवतंसक (मुकुट समान) विमान हैं. १ अंकावतंसक, २ स्फटिकावतंसक ३ रत्नावतंसक ४ जातिरूपावतंसक और मध्य में ईशानावतंसक. उन ईशानावतंसक से पूर्व में असंख्यात योजन तीर्च्छा जावे वहां ईशानेन्द्र के सोम महाराजा का सुमन नामक महा विमान कहा है. वह साढे बारह योजन का लम्बा चौडा यावत् सब वक्तव्यता शक्रेन्द्र के सोम महाराजा जैसे कहना. जैसे ईशानेन्द्र के सोम महाराजा की वक्तव्यता कही वैसे ही यम का स्फटिकावतंसक, वरुण का रत्नावतंसक, व वैश्रमण का जातरूपावतंसक का जानना.

शब्दार्थ

कितने वि० विमान प० प्ररूपे गो० गौतम च० चार वि० विमान प० प्ररूपे सु० सुमन स० सर्वतोभद्र व० वल्गु सु० सुवल्गु ॥ २ ॥ क० कहां ई० ईशान के सो० सोम म० महाराजा का सु० सुमन म० महा-विमान प० प्ररूपा गो० गौतम जं० जम्बूद्वीप में मं० मेरु प० पर्वत की उ० उत्तर में इ० इस र० रत्न प्रभा पु० पृथ्वी से जा० यावत् ई० ईशान क० कल्प दे० देवलोक में त० वहां पं० पांच व० अवतंसक अं० अंका-

सूत्र

सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे ॥ एएसिणं भंते ! लोगपालाणं कइ विमाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता तंजहा-सुमणे, सव्वओभद्दे, वग्गू, सुवग्गू ॥ २ ॥ कहिणं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणेनामं महाविमाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव ईसाणे नामं कप्पे पण्णत्ते ? तत्थणं जाव पंचवडेंसया प० तं० अं-

भावार्थ

महावीर स्वामी को श्री गौतम स्वामी ने प्रश्न पूछा कि अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र को कितने लोकपाल कहे है ? अहो गौतम ! सोम, यम, वरुण व वैश्रमण ऐसे चार लोकपाल कहे हैं. अहो भगवन् ! उन के विमान कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! उन के चार विमान कहे हैं. सुमन, सर्वतोभद्र, वल्गु और सुवल्गु के ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! ईशान देवेन्द्र का सोम नामक महा विमान कहां है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की उत्तर में इस रत्नप्रभा पृथ्वी से अनेक सो योजन ऊपर चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारे यह

पदार्थ रा० राज्यधानी में च० चार उ० उद्देशा भा० कहना जा० यावत् व० वरुण म० महाराजा ॥४॥८॥ ने० नारकी ने० नारकी में उ० उत्पन्न होते हैं अ० नारकी से, अन्य प० पन्नवणा में ले० लेश्या पद

अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ८ ॥ × × ×

सूत्र नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ, अनेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ ? पण्णवणाएवि लेस्सापए तईओ उद्देसओ भाणियव्वो जाव नाणाइं चउत्थसए नवमो

भावार्थ स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र के सोम महाराजा की सोमा नामक राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! सुमन नामक महा विमान की नीचे वगैरह सब वर्णन शक्रेन्द्र के सोम महाराजा जैसे जानना. यों चारों राज्यधानी अपने २ विमान नीचे तीर्च्छे लोक में रही हुई हैं. यों चारों राज्यधानी के चार उद्देशे भिन्न२ कहना. यह चौथा शतकका पांचवा, छठा, सातवा, व आठवा ऐसे चार उद्देशे पूर्ण हुए॥४॥८॥

उक्त उद्देशे में देवता का अधिकार कहा. देव वैक्रेय शरीर करनेवाले होते हैं. वैसे ही नरक के जीव भी वैक्रेय शरीर करनेवाले होते हैं. इसलिये आगे नरक का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! नरक के आयुष्यका बंध करनेवाले नरक में उत्पन्न होते हैं या अन्य जीव नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जिनोंने नरक के आयुष्य का बंध किया है वेही नरक में उत्पन्न होते हैं; परंतु अन्य जीव नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं. जो नरक में उत्पन्न हुवे हैं उन को आयुष्य बंध से छोडाने को कोई भी समर्थ नहीं है

शब्दार्थ यावत् अ० अर्चनीय स० संपूर्ण च० चार लो० लोकपालों का वि० विमान २ का उ० उद्देशा च० चार वि० विमान के चा० चार उ० उद्देशे अ० अपरिशेष न० विशेष ठि० स्थिति में णा० नाना प्रकार आ० आदि दु० दो ति० तीन भाग ऊ० कम प० पल्योपम व० वैश्रमण की हो० है दो० दो स० तीन भाग व० वरुण प० पल्योपम अ० अपसत्त् दे० देवोंकी ॥४॥४॥

सूत्र ईसाणस्सवि जाव अच्चणिया सम्मत्ता चउण्हविलोगपालाणं विमाणे २ उद्देसओ. चउसुवि विमाणेसु चत्तारि उद्देसा अपरिसेसा णवरं ठिईए नाणत्तं, आइ दुय ति भागूणा पलिया धणयस्स होंति दो चेव ॥ दोसइ भाग वरुणे पलिय महा-वच्च देवाणं ॥ १ ॥ चउत्थसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ४ ॥ * * रायहाणिसुवि चत्तारि उद्देसया भाणियव्वा । जाव वरुणे महाराया ॥ चउत्थसए

भावार्थ मात्र स्थिति में भिन्नता है. सोम व यम महाराजा की स्थिति त्रीभाग कम दो पल्योपम, वैश्रमण की दो पल्योपम की, और वरुण की स्थिति त्रीभाग अधिक दो पल्योपम जानना. इन के अपत्य देवों की एक पल्योपम की स्थिति जानना. यह चौथे शतक के चार उद्देशे पूर्ण हुवे ॥ ४ ॥ ४ ॥

राजगृह नगर के गुणशील नामक उद्यान में श्री श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम

शब्दार्थ रा० राज्यधानी में च० चार उ० उद्देशा भा० कहना जा० यावत् व० वरुण म० महाराजा ॥४॥८॥
ने० नारकी ने० नारकी में उ० उत्पन्न होते हैं अ० नारकी से, अन्य प० पन्नवणा में ले० लेश्या पद

अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ८ ॥ × × ×

सूत्र नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ, अनेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ ? पण्णवणाएवि लेस्सापए तईओ उद्देसओ भाणियव्वो जाव नाणाइं चउत्थसए नवमो

भावार्थ स्वामी पूछने लगे कि अहो भगवन् ! ईशानेन्द्र के सोम महाराजा की सोमा नामक राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! सुमन नामक महा विमान की नीचे वगैरह सब वर्णन शक्रेन्द्र के सोम महाराजा जैसे जानना. यों चारों राज्यधानी अपने २ विमान नीचे तीर्च्छे लोक में रही हुई हैं. यों चारों राज्यधानी के चार उद्देशे भिन्न२ कहना. यह चौथा शतकका पांचवा, छठा, सातवा, व आठवा ऐसे चार उद्देशे पूर्ण हुए॥४॥८॥

उक्त उद्देशे में देवता का अधिकार कहा. देव वैक्रेय शरीर करनेवाले होते हैं. वैसे ही नरक के जीव भी वैक्रेय शरीर करनेवाले होते हैं. इसलिये आगे नरक का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! नरक के आयुष्यका बंध करनेवाले नरक में उत्पन्न होते हैं या अन्य जीव नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जिनोंने नरक के आयुष्य का बंध किया है वेही नरक में उत्पन्न होते हैं; परंतु अन्य जीव नरक में नहीं उत्पन्न होते हैं. जो नरक में उत्पन्न हुवे हैं उन को आयुष्य बंध से छोडाने को कोई भी समर्थ नहीं है

शब्दार्थ का त० तीसरा उ० उद्देशा भा० कहना जा० यावत् ना० ज्ञान ॥४॥२॥

से० अथ कृ० कृष्ण लेश्या वाला नी० नील लेश्या को प० प्राप्त कर के त० तद्रूप ता० तद्वर्णपने

सूत्र उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ९ ॥ * * *

से नूणं भंते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए एवं चउत्थो

भावार्थ पावत् कृष्ण लेश्यावाले जीव नीची दो नरक में उत्पन्न होते हैं वगैरह सब अधिकार पन्नवणा सूत्र जैसे कहना. यह चौथा शतक का नववा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ४ ॥ ९ ॥ * *

इस उद्देशे में लेश्याका अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्यावाला नील लेश्या के द्रव्य ग्रहण कर यदि काल करतो क्या वह नील लेश्या में उत्पन्न होता है ? हां गौतम ! जिस लेश्या के पुद्गल परिणमा कर काल करता है उसी लेश्या में उत्पन्न होता है. अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्यावाला नील लेश्या पने वारंवार परिणमता है तो किस प्रकार वह परिणमता है ? अहो गौतम ! जैसे दूध तकर (छाछ) रूप परिणमता है, अथवा शुद्ध श्वेत वस्त्र को जैसे रंग चढावे वैसे रूपपने परिणमता है इसी प्रकार कृष्ण लेश्या वाला नीललेश्या पने परिणमता है, नील कापोत पने, कापोत तेजोपने, तेजो पद्मपने, व पद्म शुक्ल लेश्या पने परिणमे. अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या का वर्ण कैसा है ? अहो गौतम ! कृष्ण लेश्या का वर्ण मेघ की घटा समान श्याम, नील लेश्या का तोते के रंग समान, कापोत लेश्या का कबुतर जैसा,

शब्दार्थ ऐसे च० चौथा उ० उद्देशा प० पन्नवणा में ले० लेश्या पद में ने० जानना जा० यावत् परिणाम व० वर्ण र० रस गं० गंध सु० शुद्ध अ० अप्रशस्त सं० संक्लिष्ट उ० ऊष्ण ग० गतिपरिणाम प० प्रदेश ओ० अव-

सूत्र उद्देसओ पण्णवणाए चेव लेस्सापदे नेयव्वो । जाव परिणाम वण्ण रसगंध सुद्ध अपसत्थ संकिलिट्ठुण्हा, गइ परिणाम पएसोगाहण वग्गणाट्ठाण मप्पबहुं । सेवं भंते

भावार्थ तेजो लेश्या का उदित होता सूर्य जैसा, पद्म लेश्या का हलदी जैसा व शुक्ल लेश्या का चन्द्र जैसा श्वेत वर्ण है. अब छ लेश्या के रस कहते हैं. कृष्ण लेश्या का निम्ब वृक्ष जैसा कटु, नील लेश्या का नागर जैसा कटु, कापोत लेश्या का कच्चे बोर जैसा कपायला तेजो लेश्या का आम्र फल जैसा खट्टामिठ पद्म लेश्या का खारक जैसा मधुर और शुक्ल लेश्या का खांड सक्कर जैसा मिष्ट. अब गंध कहते हैं. कृष्ण, नील व कापोत लेश्या के पुद्गलों की मृतक देहकी गंध समान गंध, और तेजो, पद्म व शुक्ल की कुसुम समान. पहिली तीन लेश्या अशुभ है और पीछे की तीन लेश्या शुभ है. पहिले की तीन लेश्या संक्लिष्ट हैं और पीछे की तीन लेश्या संक्लिष्ट नहीं हैं. पहिले की तीन लेश्या शीत व रूक्ष हैं, और पीछे की तीन लेश्या ऊष्ण व स्निग्ध हैं. पहिली तीन लेश्या दुर्गति में लेजानेवाली हैं, और पीछे की तीन लेश्या सुगति में लेजाने वाली हैं. जघन्य, उत्कृष्ट व मध्यम तथा उत्पातादि भेद से परिणाम विचारना. सब लेश्या के अनंत प्रदेश हैं. प्रत्येक प्रदेश असंख्यात प्रदेशावगाढ है. कृष्ण लेश्या योग्य पुद्गल वर्गणा अनंत हैं वह उदारिक

शब्दार्थ गाहना व॰ वर्गणा ठा॰ स्थान अ॰ अल्पा बहुत्व ॥ ४ ॥ १० ॥ ४ ॥

मूल भंतेत्ति ॥ चउत्थसए दसमो उद्देसो ॥ ४ ॥ १० ॥ चउत्थं सयं सम्मत्तं ॥ ४ ॥

भावार्थ जैसे जानना. तारतम्यता की विचित्रता से अध्यवसाय; निरन्य कृष्णादि द्रव्य समुह असंख्यात हैं. इस लिये अध्यवसाय स्थानक असंख्यात हैं. अल्पाबहुत्व सब से थोडा जघन्य कापोत लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान, उससे जघन्य नील लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुन, उस से जघन्य कृष्ण लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने, उस से जघन्य तेजो लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने उस से जघन्य पद्म लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने उस से शुक्ल लेश्या के जघन्य द्रव्यार्थ स्थान, असंख्यात गुने. अहो भगवन्! आपके वचन सत्य हैं. यह चौथा शतक का दशवा उद्देशा पूर्ण हुवा, यह चौथा शतक समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४ ॥

॥ पंचम शतकम् ॥

(पदार्थ) चं० चंपा र० सूर्य अ० वायु गं० ग्रन्थि स० शब्द छ० छद्मस्थ आ० आयुष्य ए० कंपना नि० निर्ग्रन्थ रा० राजगृह चं० चंपा चं० चंद्र द० दश पं० पाचवे स० शतक में ॥ १ ॥ तं० उस का० काल तें० उस स० समय में चं० चंपा ना० नाम की न० नगरी हो० थी व० वर्णन योग्य ती० उस चं०

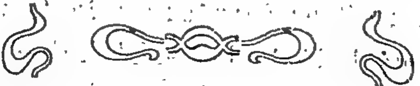
सूत्र — चंपाए, रवि, अनिल, गंठिय सद्दे, छउ, माउ, एयण, णियंठे ॥ रायगिहं चंपा चंदिमाय दस पंचमम्मि सए ॥१॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपानामं नयरी होत्था, वण्णओ ॥ तीसेणं चंपाए नयरीए पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था, वण्णओ सामीस-

भावार्थ — चौथे शतक के अंत में लेश्या कही. वह लेश्या लेश्यावन्त पुरुषों को आयुष्य का बंध करती है. आयुष्य का बंध को क्षय करनेवाला काल है इसलिये पांचवे शतक में काल की वक्तव्यता करेंगे. इस पांचवे शतक के दश उद्देशे कहे हैं. प्रथम उद्देशे में चंपा नगरी में सूर्य संबंधि प्रश्न पूछे हैं, दूसरे में वायु संबंधी प्रश्न पूछे हैं, तीसरे में जालग्रन्थिका निर्णय किया है, चौथे में शब्द का निर्णय, पांचवे में छद्मस्थ की वक्तव्यता, छठे में आयुष्य के बंध का अधिकार, सातवे में पुद्गल चलने का अधिकार, आठवे में निग्रन्थ पुत्र के प्रश्नोत्तर, नववे में राजगृह नगर का अधिकार व दशवे में चंपा में चंद्रमा संबंधि प्रश्न ॥१॥ उस काल उस समय में चंपा नामकी नगरी थी. उस का वर्णन उववाइ सूत्र से जानना. उस चंपा नगरी

शब्दार्थ गाहना व॰ वर्गणा ठा॰ स्थान अ॰ अल्पा बहुत्व ॥ ४ ॥ १० ॥ ४ ॥

मूत्र भंतेत्ति ॥ चउत्थसए दसमो उद्देसो ॥ ४ ॥ १० ॥ चउत्थं सयं सम्मत्तं ॥ ४ ॥

भावार्थ जैसे जानना. तारतम्यता की विचित्रता से अध्यवसाय निबन्ध कृष्णादि द्रव्य समुह असंख्यात हैं. इसा लिये अध्यवसाय स्थानक असंख्यात हैं. अल्पाबहुत्व सब से थोडा जघन्य कापोत लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान, उससे जघन्य नील लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुन, उस से जघन्य कृष्ण लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने, उस से जघन्य तेजो लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने उस से जघन्य पद्म लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान असंख्यात गुने उस से शुक्ल लेश्या के जघन्य द्रव्यार्थ स्थान, असंख्यात गुने. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं यह चौथा शतक का दशवा उद्देशा पूर्ण हुआ, यह चौथा शतक समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४ ॥



शब्दार्थ उदित होकर प० वायव्य कौन में आ० जाता है प० वायव्य कौन में उ० उदित होकर उ० ईशान कौन में आ० जाता है हं० हां गो० गौतम जं० जम्बूद्वीप में सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ० उदित होकर जा० यावत् उ० ईशान कौन में आ० जाता है ॥ ३ ॥ ज० जब भं० भगवन् जं० जम्बूद्वीप में

सूत्र पाईणदाहिण मुग्गच्छ दाहिणपडीण मागच्छंति, दाहिण पडीण मुग्गच्छ पडीण-उदीण मागच्छंति, पडीणउदीण मुग्गच्छ उदीचिपाईण मागच्छंति? हंता गोयमा! जंबुद्दीवेणं दीवे सूरिया उदीचिपाईण मुग्गच्छ जाव उदीचि पाईण मागच्छंति ॥३॥ जयाणं भंते! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तयाणं

भावार्थ वायव्य कौन में अस्त होता है? और वायव्य कौन में उदित होकर क्या ईशान कौन में अस्त होता है? हां गौतम! जम्बूद्वीप में सूर्य ईशान कौन में उदित होकर अग्नि कौन में अस्त होता है. यावत् वायव्य कौन में उदित होकर ईशान कौन में अस्त होता है * ॥ ३ ॥ यद्यपि सूर्य का सब दिशि में गमन है तथापि प्रकाशके भेद से रात्रि दिन के विभाग किये हैं. अहो भगवन्! जब जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण

* यहां पर सूर्य का उदय व अस्त देखनेवाले लोकों की विवक्षा से लिया है. अदृश्य सूर्य दीखने में आवे जब उदय कहाजाता है, और दृश्य सूर्य अदृश्य होवे तब अस्त कहा जाता है. परंतु वास्तविक रीति से सूर्य का उदय अस्त नहीं है.

शब्दार्थ चंपा न० नगरी से पू० पूर्णभद्र चे० उद्यान हो० था सा० स्वामी प० पधारे जा० यावत् प० परिषदा प० पीछीगइ ॥ २ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भगवन्त म० महावीर के जे० ज्येष्ठ अं० शिष्य इं० इन्द्रभूति अ० अनगार गो० गौतम गो० गौत्र से जा० यावत् ए० ऐसे व० बोले जं० जम्बूद्वीप में भं० भगवन् दी० द्वीप में सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ० उदित होकर पा० अग्नि कौन में आ० जाता है पा० अग्नि कौन में उ० उदित होकर दा० नैऋत्य कौन में आ० जाता है दा० नैऋत्य कौन में उ०

सूत्र मोसढे, जाव परिसा पडिगया ॥ २ ॥ तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणस्स भगव-
ओ महावीरस्स जेट्ठ अंतेवासी इंदभूईणामे अणगारे गोयम गोत्तेणं जाव एवंवयासी-
जंबुद्दीवेणं भंते ! दीवे सूरिया उईणपाईण मुग्गच्छ पाईणदाहिण मागच्छंति ।

भावार्थ की ईशान कौन में पूर्णभद्र यक्ष का उद्यान था. उस का वर्णन उववाइ सूत्र से जानना. वहां पर तप संयम से आत्मा को भावते हुवे श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी पधारे. परिषदा वंदन करने को आई. धर्मोपदेश सुनकर पीछी गई ॥ २ ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के ज्येष्ठ अंतेवासी गौतम गोत्रीय इन्द्रभूति अनगारने ऐसा प्रश्न किया कि अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में सूर्य उत्तर पूर्व-ईशान-कौन में उदित होकर पूर्वदक्षिण-अग्नि कौन में क्या अस्त होता है ? अग्नि कौन में उदित होकर दक्षिणपश्चिम-नैऋत्य कौन में क्या अस्त होता है ? नैऋत्य कौन में उदित होकर पश्चिमउत्तर

शब्दार्थ पु० पूर्व में प० पश्चिम रा० रात्रि भ० होती है हं० हां गो० गौतम ज० जब जं० जम्बूद्वीप में दा० दक्षिणार्ध में दि० दिन भ० होता है जा० यावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ ४ ॥ ज० जब भं० भगवन् जं० जम्बूद्वीप में दा० दक्षिणार्ध में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है त० तब उ० उत्तर में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है ज० जब

सूत्र भवइ, तयाणं जंबुदीवेदीवे मंदरस्स उत्तरदाहिणेणं राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबूमंदरस्स पुरच्छिमेणं दिवसे जाव राई भवइ ॥ ४ ॥ जयाणं भंते ! जंबूदीवेदीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तयाणं उत्तर जाव उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥ जयाणं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते

भावार्थ व दश भाग में का छ भाग रात्रि क्षेत्र होवे. यह दिन के ताप क्षेत्र व रात्रि क्षेत्र की स्थापना कही. जब दिन छोटा होवे तब रात्रिक्षेत्र जितना तापक्षेत्र व तापक्षेत्र जितना रात्रिक्षेत्र जानना. जब जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की पूर्व में दिन होता है तब पश्चिम में भी दिन होता है और जब पूर्व पश्चिम में दिन होता है, तब क्या जम्बूद्वीप के उत्तर व दक्षिण में रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बूद्वीप के पूर्व पश्चिम में दिन होता है तब उत्तर दक्षिण में रात्रि होती है ॥४॥ अहो भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के दक्षिण विभाग में अठारह मुहूर्तका दिन होता है तब उत्तर विभाग में भी अठारह मुहूर्तका दिन होता है

शब्दार्थ मं० मेरु पर्वत के दा० दक्षिणार्ध में दि० दिन भ० होता है त० तब उ० उत्तरार्ध में दि० दिन भ० होता है. ज० जब उ० उत्तरार्ध में दि० दिन भ० होता है त० तब जं० जम्बूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की

सूत्र उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ जयाणं उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ तयाणं जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ जाव राई भवइ ॥ जयाणं भंते ! जंबूमंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं दिवसे भवइ, तयाणं पच्चच्छिमेणवि दिवसे भवइ, जयाणं पच्चच्छिमेणं दिवसे

भावार्थ में दिन होता है तब मेरु से उत्तर में भी दिन होता है; और जब उत्तर दिशा में दिन होता है तब क्या मेरु पर्वत की पूर्व पश्चिम में रात्रि होती है ? हां गौतम ! मेरु पर्वत की उत्तर दिशा में जब दिन होता है तब पूर्व पश्चिम दिशा में रात्रि होती है. जम्बूद्वीप में दो चंद्र व दो सूर्य फीरते हैं. अब जम्बूद्वीप के उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम ऐसे चार विभाग करना. जब उत्तर दक्षिण में दोनों सूर्य रहने से दिन होता है तब पूर्व पश्चिम में दोनों सूर्य के अभावसे रात्रि होती है. मेरु पर्वत की पास ९४०० योजन व एक योजन के दश भाग में का नव भाग इतने क्षेत्र में दिन रहता है और, लवण समुद्र की पास ९४८६८ और एक योजन के दश भाग में का चार भाग दिन रहता है. मेरु पर्वत की पास ३१२४ योजन और दश के छ भाग रात्रिक्षेत्र होता है और लवण समुद्र की पास ६३२४९ योजन

पदार्थ पु० पूर्व में प० पश्चिम रा० रात्रि भ० होती है हं० हां० गो० गौतम ज० जब जं० जम्बूद्वीप में दा० दक्षिणार्ध में दि० दिन भ० होता है जा० यावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ ४ ॥ ज० जब भं० भगवन् जं० जम्बूद्वीप में दा० दक्षिणार्ध में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है त० तब उ० उत्तर में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है ज० जब

सूत्र भवइ, तयाणं जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स उत्तरदाहिणेणं राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबूमंदरस्स पुरच्छिमेणं दिवसे जाव राई भवइ ॥ ४ ॥ जयाणं भंते ! जंबूदीवेदीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तयाणं उत्तर जाव उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥ जयाणं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारस मुहुत्ते

भावार्थ व दश भाग में का ६ भाग रात्रि क्षेत्र होवे. यह दिन के ताप क्षेत्र व रात्रि क्षेत्र की स्थापना कही. जब दिन छोटा होवे तब रात्रिक्षेत्र जितना तापक्षेत्र व तापक्षेत्र जितना रात्रिक्षेत्र जानना. जब जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की पूर्व में दिन होता है तब पश्चिम में भी दिन होता है और जब पूर्व पश्चिम में दिन होता है, तब क्या जम्बूद्वीप के उत्तर व दक्षिण में रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बूद्वीप के पूर्व पश्चिम में दिन होता है तब उत्तर दक्षिण में रात्रि होती है ॥४॥ अहो भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के दक्षिण विभाग में अठारह मुहूर्तका दिन होता है तब उत्तर विभाग में भी अठारह मुहूर्तका दिन होता है

शब्दार्थ उ० उत्तरार्ध में उ० उत्कृष्ट अ० अठारह मु० मुहूर्त का दि० दिन भ० होता है त० तब जं० जम्बूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की पु० पूर्व में प० पश्चिम में ज० जघन्य दु० द्वादश मु० मुहूर्त की रा० रात्रि भ० होती है हं० हां गो० गौतम ज० जब जा० यावत् दु० द्वादश मुहूर्त की रा० रात्रि भं० होती है ॥५॥

सूत्र दिवसे भवइ, तयाणं जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबू जाव दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ॥ ५ ॥ जयाणं भंते ! जंबू मंदरस्स पुरच्छिम उक्कोसए अट्ठारस जाव

भावार्थ और जब उत्तर दिशा में अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब क्या पूर्व पश्चिम दिशा में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बूद्वीप के उत्तर व दक्षिण विभाग में अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब पूर्व, पश्चिम दिशा में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है = ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के

= सूर्य के सब १८४ मांडले हैं इस में से ६५ मांडले जगति सहित जम्बूद्वीप मे हैं और ११९ मांडले लवण समुद्र मे हैं. जब सब आभ्यंतर मांडले में सूर्य आता है तब उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होता है. और जब सब बाहिर मांडले पर सूर्य चलता है तब बारह मुहूर्तका दिन होता है, वहां से सूर्य पलटता है तब दूसरे मांडले से प्रत्येक मांडले पर एक मुहूर्त के एकसठीये दो भाग दिन बढता है. ऐसे १८२ वे मांडले पर छ मुहूर्त दिन बढकर १८ मुहूर्त का दिन होता है.

शब्दार्थ — ज० जब भं० भगवन् ज० जम्बू के मेरु पर्वत की पु० पूर्व में अ० अठारह जा०यावत् त० तब भं०भगवन् जं० जम्बूद्वीप के उ० उत्तर में दु० बारह मु० मुहूर्त की रा० रात्रि भ० होती है हं० हां गो० गौतम जा० यावत् भ० होती है ॥ ६ ॥ ज० जब भं० भगवन् जं० जम्बूद्वीप के दा० दक्षिणार्ध में अ० अठारह मु० मुहूर्तांतर दि० दिन भ० होता है त० तब उ० उत्तरार्ध अ० अठारह मु० मुहूर्तांतर दि० दिन भ० होवे पु० पूर्व प० पश्चिम में सा० अधिक दु० बारह मु० मुहूर्त रा० रात्रि भ० होती है हं०

मूल — तयाणं भंते ! जंबू उत्तरं दुवालस जाव राई भवइ ? हंता गोयमा ! जाव भवइ ॥ ६ ॥ जयाणं भंते ! जंबू दाहिणड्ढे अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तयाणं उत्तरड्ढे अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, जयाणं उत्तरड्ढे अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तयाणं जंबू मंदर पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं साइरेगा दुवालस मुहुत्ता

भावार्थ — मेरु से पूर्व दिशा में उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त का दिन होता है, तब क्या उत्तर दक्षिण में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त का दिन होता है तब उत्तर दक्षिण में बारह मुहूर्त की रात्रि होती है. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बू के मेरु की दक्षिण में अठारह मुहूर्त की अंतर में दिन होताहै तब उत्तर में भी इतनाही दिन होता है. जब उत्तर में अठारह मुहूर्त के अंतर में दिन है तब पूर्व पश्चिम में बारह मुहूर्त से अधिक की रात्रि होती है ? हां गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर दक्षिण

शब्दार्थ हां गो० गौतम ज० जब ज० जम्बूद्वीप जा० जावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ ७ ॥ पूर्ववत् ॥ ८ ॥ ए० ऐसे इ० इस क० क्रम से उ० कहना स० सत्तरह मु० मुहूर्त का दि० दिन ते० तेरह मु० मुहूर्त की रा० रात्रि भ० होती है स० सत्तरह मु० मुहूर्तान्तर दि० दिवस सा०अधिक ते० तेरह मु० मुहूर्त की रा०

सूत्र राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबू जाव राई भवइ ॥ ७ ॥ जयाणं भंते ! जंबू मंदरस्स पुरच्छिमेणं अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तयाणं पच्चच्छिमेणं अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, जयाणं पच्चच्छिमेणं अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तयाणं जंबूमंदरउत्तर दाहिणेणं साइरेगा दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ?हंता गोयमा! जाव भवइ ॥८॥ एवं एएणं कमेणं उच्चारेयव्वं सत्तरस मुहुत्ते दिवसे, तेरस मुहुत्ता राई भवइ। सत्तरस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगतेरसमुहुत्ता राई । सोलसमुहुत्ते दिवसे चोदस मुहुत्ता राई. सोलस मुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेग चोद्दस मुहुत्ताराई ॥ पण्ण-

भावार्थ में जब अठारह मुहूर्त से कम का दिन होता है तब पूर्व पश्चिम में बारह मुहूर्त से अधिक रात्रि होती है. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बू मंदर की पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त के अंतर का दिन होता है तब क्या उत्तर दक्षिणमें बारह मुहूर्त से अधिक रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बू मंदर के पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त के अंतर का दिन होता है तब बारह मुहूर्त से अधिक की रात्रि होती है. ॥ ८ ॥ ऐसे ही अनुक्रम से सत्तरह मुहूर्त का दिन तेरह मुहूर्त की रात्रि, सत्तरह मुहूर्त से कुछ कम दिन व तेरह मुहूर्त

शब्दार्थ राात्रे स० सोलह मु० मुहूर्त का दि० दिन चो० चौदह मुहूर्त की रा० रात्रि सो० सोलह मु० मुहूर्तान्तर

सूत्र रसमुहुत्ते दिवसे, पण्णरस मुहुत्ताराई पण्णरस मुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेग पण्णरस मुहूत्ता राई चोद्दसमुहुत्ते दिवसे सोलस मुहुत्ताराई। चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेगा सोलस मुहुत्ता राई॥ तेरस मुहुत्ते दिवसे सत्तरस मुहुत्ता राई। तेरस मुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा सत्तरस मुहुत्ता राई॥ जयाणं जंबू दाहिणड्ढे जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवइ तयाणं उत्तरड्ढेवि। जयाणं उत्तरड्ढे तयाणं जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई ? हंता गोयमा ! एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव राई भवइ ॥ १ ॥ जयाणं भंते ! जंबू मंदर पुरच्छिमेणं जहण्णए दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवति तयाणं

भावार्थ से अधिक रात्रि, सोलह मुहूर्त का दिन चौदह मुहूर्त की रात्रि; सोलह मुहूर्त से कुच्छ कम दिन; चौदह मुहूर्त से अधिक रात्रि; पन्नरह मुहूर्त का दिन, पन्नरह मुहूर्तकी रात्रि, पन्नरह मुहूर्त में कुछ कम दिन व पन्नरह मुहूर्त से अधिक रात्रि; चौदह मुहूर्त का दिन सोलह मुहूर्त की रात्रि, चौदह मुहूर्त से कम दिन सोलह मुहूर्त से अधिक रात्रि तेरह मुहूर्तका दिन सत्तरह मुहूर्तकी रात्रि, तेरह मुहूर्त से कम दिन व सत्तरह मुहूर्त से अधिक रात्रि और बारह मुहूर्त का दिन व अठारह मुहूर्तकी रात्रि जानना. ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बू मंदर की पूर्व में जघन्य बारह मुहूर्त का दिन है तब क्या उत्तर दक्षिण में उत्कृष्ट अठारह मुहूर्त की रात्रि होती

शब्दार्थ हां गो० गौतम ज० जब ज० जम्बूद्वीप जा० जावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ ७ ॥ पूर्ववत् ॥ ८ ॥ ए० ऐसे इ० इस क० क्रम से उ० कहना स० सत्तरह मु० मुहूर्त का दि० दिन ते० तेरह मु० मुहूर्त की रा० रात्रि भ० होती है स० सत्तरह मु० मुहूर्तान्तर दि० दिवस सा०अधिक ते० तेरह मु० मुहूर्त की रा०

सूत्र राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबू जाव राई भवइ ॥ ७ ॥ जयाणं भंते ! जंबू मंदरस्स पुरच्छिमेणं अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तयाणं पच्चच्छिमेणं अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, जयाणं पच्चच्छिमेणं अट्ठारस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तयाणं जंबूमंदरउत्तर दाहिणेणं साइरेगा दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ?हंता गोयमा! जाव भवइ ॥८॥ एवं एएणं कमेणं उच्चारेयव्वं सत्तरस मुहुत्ते दिवसे, तेरस मुहुत्ता राई भवइ। सत्तरस मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगतेरसमुहुत्ता राई। सोलसमुहुत्ते दिवसे चोद्दस मुहुत्ता राई. सोलस मुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेग चोद्दस मुहुत्ताराई ॥ पण्ण-

भावार्थ में जब अठारह मुहूर्त से कम का दिन होता है तब पूर्व पश्चिम में बारह मुहूर्त से अधिक रात्रि होती है. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बू मंदर की पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त के अंतर का दिन होता है तब क्या उत्तर दक्षिणमें बारह मुहूर्त से अधिक रात्रि होती है ? हां गौतम ! जब जम्बू मंदर के पूर्व पश्चिम में अठारह मुहूर्त के अंदर का दिन होता है तब बारह मुहूर्त से अधिक की रात्रि होती है. ॥ ८ ॥ ऐसे ही अनुक्रम से सत्तरह मुहूर्त का दिन तेरह मुहूर्त की रात्रि, सत्तरह मुहूर्त से कुछ कम दिन व तेरह मुहूर्त

पदार्थ जं० जम्बूद्वीप के दा० दक्षिण में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तैसे ही जा० यावत् प० होता है. ॥ ११ ॥ ज० जब भं० भगवन् जं० जम्बूद्वीप के मं मेरु की पु० पूर्व में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तब प० पश्चिम में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय में प० होता है. ज० जब प० पश्चिम में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तब जा० यावत् मं० मेरु पर्वत की उ० उत्तर दा० दक्षिण में अ० अनंतर प० पश्चात् कृत स० समय में

सूत्र पुरक्खकडं समयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबू दाहिणड्ढे वासाणं पढमसमए पडिवज्जइ, तहचेव जाव पडिवज्जइ ॥ ११ ॥ जयाणं भंते ! जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पुरच्छिमेणं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तयाणं पच्चाच्छिमेणंवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, जयाणं पच्चाच्छिमेणं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तयाणं जाव मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं अणंतर पच्छाकड

भावार्थ ऋतु का प्रथम समय होता है तब पूर्व पश्चिम में अनंतर आगामिक वर्षाऋतु का प्रथम समय होता है. ॥ ११ ॥ जब जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की पूर्व व पश्चिम दिशा में वर्षा का प्रथम समय होता है तब क्या उत्तर व दक्षिण दिशा में अनंतर अतीत काल में वर्षा का प्रथम समय होता है ? हां गौतम ! जब पूर्व पश्चिम में वर्षा का प्रथम समय होता है तब उत्तर व दक्षिण में

शब्दार्थ दिवस सा० कुछ अधिक चो० चौदह मुहूर्त रा० रात्रि प० पन्नरह शेष पूर्ववत् ॥ ९ ॥ १० ॥ ज० जब ज० जम्बूद्वीप के दा० दक्षिणार्ध में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तब उ० उत्तरार्ध में भी वा० वर्षा का प०प्रथम समय प०होता है ज०जब उ०उत्तरार्ध में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है त० तब जं० जम्बूद्वीप में मं० मेरु की पु० पूर्व में प० पश्चिम में अ० अनंतर पु० आगामिक स० समय में वा० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० होता है हं० हां गों० गौतम ज० जब

सूत्र पच्चत्थिमेण वि जयाणं पच्चत्थिमेण वि तयाणं जंबू मंदर उत्तरदाहिणेणं उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई? हंता गोयमा! जाव राई भवइ ॥ १० ॥ जयाणं भंते! जंबूदीवेदीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तयाणं उत्तरड्ढेवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, जयाणं उत्तरड्ढे वासाणं पढमे समये पडिवज्जइ तयाणं जंबूदीवेदीवे मंदर पुरच्छिमे पच्चच्छिमेणं अणंतर

भावार्थ है? हां गौतम! जब जम्बू मंदर की पूर्व पश्चिम में बारह मुहूर्त का दिन होता है तब दक्षिण में अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है ॥ १० ॥ अहो भगवन्! जब जम्बूद्वीप के मेरु की दक्षिण में वर्षा ऋतु का प्रथम समय होता है तब उत्तर में वर्षा ऋतु का प्रथम समय होता है. जब उत्तर में वर्षाऋतु का प्रथम समय होता है तब क्या जम्बू मंदर की पूर्व पश्चिम मे अनंतर आगामिक काल का वर्षाऋतु का प्रथम समय होता है? हां गौतम! जब उत्तर दक्षिण में वर्षा

शब्दार्थ प० होता है ज० जैसे वा० वर्षा का अ० अभिलाप त० तैसे हे० हेमंत का गि० ग्रीष्म का भी भा० कहना जा० यावत् उ० ऋतु ए० ऐसे ए०उन ति० तीन प० पद की साथ ती०तीस आ०आलापक भा० कहना ॥१३॥ ज०जब दा० दक्षिण में प०प्रथम अ०अयन प० होती है त०तब उ०उत्तरार्ध में प०प्रथम अ० अयन प० होती है ज० जैसे स० समय का अ० अभिलाप त० तैसे अ० अयन से भा० कहना जा०

सूत्र हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ, जहेव वासाणं अभिलावो तहेव हेमंताणवि गिम्हाणवि भाणियव्वो जाव उऊ ॥ एवं एए तिण्णिवि पएसिं तीसं आलावगा भाणियव्वा ॥ १३ ॥ जयाणं भंते ! जंबू दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तयाणं उत्तरड्ढेवि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जहा समएणं अभिलावो तहेव अयणेणवि

भावार्थ मेरु पर्वत की उत्तर, दक्षिण में हेमन्त ऋतु का प्रथम समय होता है तब क्या पूर्व पश्चिम में अनंतर अनागत काल में हेमन्त का प्रथम समय होता है ? अहो गौतम ! जैसे वर्षा ऋतु का कहा, वैसे ही हेमन्त ऋतु का जानना. और ऐसे ही ग्रीष्म ऋतु का जानना. इस तरह तीन ऋतु की साथ समयादिक के तीस आलापक हुए ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! जब दक्षिण व उत्तर विभाग में अयन होती है तब क्या पूर्व पश्चिम में अनंतर आगामिक अयन होती है ? हां गौतम ! इस का सब कथन समय जैसे कहना

शब्दार्थ व० वर्षा का प० प्रथम स० समय प० हुवा भ० होता है. हं० हां गो० गौतम ज० जब जं० जम्बू मं० मेरु पु० पूर्व में ए० ऐसे उ० कहना जा० यावत् प० हुवा भ० होवे ए० ऐसे जं० जैसे स० समय से अ० अभिलाप भा० कहा व० वर्षा का त० तैसे आ० आवलिका से भा० कहना आ० श्वासोश्वास थो० थोव ल० लव मु० मुहूर्त अ० अहोरात्रि प० पक्ष मा० मास उ० ऋतु से ए० इन स० सब से ज० जैसे स० समय का अ० अभिलाप त० तैसे भा० कहना ॥ १२ ॥ ज० जब हे० हेमंत का प० प्रथम स० समय

सूत्र समयंसि वासाणं पढमे समए पडिवण्णे भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबूमंदर पुरच्छिमेणं एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव पडिवण्णे भवइ, एवं जहा समएणं अभिलावो भणिओ वासाणं तहा आवलियाएवि भाणियव्वो, आणा पाणूणवि, थोवेणवि, लवेणवि, मुहुत्तेणवि, अहोरत्तेणवि, पक्खेणवि, मासेणवि, उऊणावि । एएसिं सव्वेसिं जहा समयस्स अभिलावो तहा भाणियव्वो ॥ १२ ॥ जयाणं भंते ! जंबूदीवेदीवे

भावार्थ अनंतर अतीत काल में वर्षा का प्रथम समय होता है. अर्थात् प्रथम दक्षिण उत्तर विभाग में वर्षा काल होता है फीर पूर्व पश्चिम में होता है. ऐसे ही जैसे समय का कहा वैसे ही आवलिका, श्वासोश्वास, स्तोक, लव, मुहूर्त, अहोरात्रि, पक्ष, मास व ऋतुका जानना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जब जम्बूद्वीप के

शब्दार्थ द्वीप के दा० दक्षिण में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० है त० तब उ० उत्तर में भी प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० होती है ज० जब उ० उत्तर में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी जं० जम्बूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की पु० पूर्व में प० पश्चिम में भी ने० नहीं अ० है ओ० अवसर्पिणी उ० उत्सर्पिणी अ० अवस्थित त० वहां का० काल प० परूपा स० श्रमण आ० आयुष्मन् हं० हां गो० गौतम तं० वैसे ही उ० कहना जा० यावत् स० श्रमण आ० आयुष्मन् ज० जैसे ओ० अवसर्पिणी आ० आलापक भा० कहना ए० ऐसे

सूत्र पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तयाणं उत्तरड्ढेवि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; जयाणं भंते ! उत्तरड्ढे पडिवज्जइ तयाणं जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणवि नेवत्थि ओसप्पिणी उस्सप्पिणी अवट्ठिएणं तत्थकाले पण्णत्ते समणाउसो ? हंता गोयमा ? तंचेव उच्चारेयव्वं जाव समणाउसो जहा ओसप्पिणीए

भावार्थ दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब उत्तरविभाग में भी अवसर्पिणी होती है और जब उत्तर विभाग में अवसर्पिणी है तब क्या पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी नहीं है ? क्या वहां अवस्थित काल होता है ? हां गौतम ! जब उत्तर दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुच्छ नहीं होती है परंतु वहां पर अवस्थित काल होता है. ऐसे उत्सर्पिणी का

शब्दार्थ यावत् अ० अनंतर प० पश्चात् क० कृत स० समय में प० प्रथम अ० अयन प० प्रतिपन्न भ० होती है. ज० जैसा अ० अयन का अ० अभिलाप त० तैसे सं० संवत्सर से भा० कहना जु० युग वा० शतवर्ष वा० सहस्र वर्ष से वा० वर्ष लक्ष पु० पूर्वांग से पु० पूर्व से तु० त्रुटितांग तु० तुटित ए० ऐसे पु० पूर्व तु० तुटित अ० अडड अ० अवव हू० हूहूय उ० उप्पल प० पद्म न० नलिन अ० अत्थिनिउर अ० अउय न० नउय प० पउय चू० चूलिका सी० शीर्षप्रहेलिका प० पल्योपम सा० सागरोपम भा० कहना ॥ १४ ॥ ज० जब जं० जम्बू-

सूत्र भाणियव्वो, जाव अणंतरपच्छाकडसमयंसि पढमे अयणे पडिवन्ने भवइ. ॥ जहा अयणेणं अभिलावा तहा संवच्छरेणवि भाणियव्वो ॥ जुएणवि, वाससएणवि, वाससहस्सेणवि, वाससयसहस्सेणवि, पुव्वंगेणवि, पुव्वेणवि, तुडियंगेणवि, तुडिएणवि, एवं पुव्वे, २ तुडिए २, अडडे २, अववे २, हूहूय २ उप्पले २, पउमे २, नलिणे २, अत्थिणेउरे २, अउए २, णउए २, पउए २, चूलिए २, सीसपहेलिया पलिओवमेणवि, सागरेणवि, भाणियव्वो ॥ १४ ॥ जयाणं भंते ! जंबूदीवेदीवे दाहिणड्ढे

भावार्थ जैसे अयन का कहा वैसे ही दो अयन का संवत्सर, पांच संवत्सर का युग, सो वर्ष, सहस्र वर्ष, लक्षवर्ष, चौरासी लक्ष वर्ष का एक पूर्वांग, चौरासी पूर्वांग का पूर्व, वैसे ही हूहूय २ उप्पल २ पद्म २ नलिण २ अत्थिणेउर २ अउय २ नउय २ पउय २ चूलिए, शीर्षप्रहेलिका, पल्योपम व सागरोपम का जानना ॥१४॥ जब जम्बूद्वीप के

शब्दार्थ द्वीप के दा० दक्षिण में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० है त० तब उ० उत्तर में भी प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० होती है ज० जब उ० उत्तर में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी जं० जम्बूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की पु० पूर्व में प० पश्चिम में भी ने० नहीं अ० है ओ० अवसर्पिणी उ० उत्सर्पिणी अ० अवस्थित त० वहां का० काल प० प्ररूपा स० श्रमण आ० आयुष्मन् हं० हां गो० गौतम तं० वैसे ही उ० कहना जा० यावत् स० श्रमण आ० आयुष्मन् ज० जैसे ओ० अवसर्पिणी आ० आलापक भा० कहना ए० ऐसे

सूत्र पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तयाणं उत्तरड्ढेवि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; जया- णं भंते ! उत्तरड्ढे पडिवज्जइ तयाणं जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणवि नेवत्थि ओसप्पिणी उस्सप्पिणी अवट्ठिएणं तत्थकाले पण्णत्ते समणा- उसो ? हंता गोयमा ? तंचेव उच्चारेयव्वं जाव समणाउसो जहा ओसप्पिणीए

भावार्थ दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब उत्तरविभाग में भी अवसर्पिणी होती है और जब उत्तर विभाग में अवसर्पिणी है तब क्या पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी नहीं है ? क्या वहां अवस्थित काल होता है ? हां गौतम ! जब उत्तर दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुच्छ नहीं होती है परंतु वहां पर अवस्थित काल होता है. ऐसे उत्सर्पिणी का

शब्दार्थ उ० उत्सर्पिणी भा० कहना ॥ १५ ॥ ल० लवण स० समुद्र में सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ० उदित होकर ज० जैसी जं० जम्बूद्वीप की व० वक्तव्यता भा० कही स० वैसी ही स० सब अ० विशेषता रहित ल० लवण समुद्र की भा० कहना न० विशेष अ० अभिलाप इ० यह जा० जानना. ज० जब ल० लवण समुद्र में दा० दक्षिण में दि० दिन भ० होता है तं० वैसे ही जा० यावत् त० तब ल० लवण समुद्र की पु० पूर्व पश्चिम में रा० रात्रि भं० होती है ए० इस अ० अभिलाप से ने० जानना जा० यावत् ज० जब भं० भगवन् ल० लवण समुद्र में दा० दक्षिण में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी प० होती है त०

सूत्र आलावओ भाणियव्वो । एवं उस्सप्पिणीएवि भाणियव्वो ॥ १५ ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे सूरिया उदीचिपाईण मुग्गच्छ जच्चेव जंबूद्वीवस्स वत्तव्वया भाणिया, सच्चेव सव्वा अपरिसेसिया लवणसमुद्दस्सवि भाणियव्वा, णवरं अभिलावो इमो जाणियव्वो जयाणं भंते ? लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तंचेव जाव तयाणं लवण समुद्दे पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं राई भवइ ॥ एएणं अभिलावेणं नेयव्वं जाव जयाणं भंते ?

भावार्थ जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में सूर्य ईशान कौन में उदित होकर अग्नि कौन में क्या अस्त होता है ? हां गौतम ! इस का सब वर्णन जम्बूद्वीप जैसे जानना यावत् लवण समुद्र में दक्षिण भाग में दिन होता है तब पूर्व पश्चिम में रात्रि होती है यावत् लवण समुद्र के दक्षिण भाग में प्रथम अ-

शब्दार्थ तव उ० उत्तरार्ध में प० प्रथम ओ० अवसर्पिणी ज० जब उ० उत्तरार्ध में ओ० अवसर्पिणी प० है त० तव ल० लवण समुद्र में पु० पूर्व प० पश्चिम में नं० नहीं है ओ० अवसर्पिणी उ० उत्सर्पिणी स० श्रमण आ० आयुष्मन् हं० हां गो० गौतम जा० यावत् स० श्रमण आ० आयुष्मन् ॥ १८ ॥ धा० धातकी खंड में भं० भगवन् दी० द्वीप में सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ० उदित होकर ज० जैसे जं० जम्बू द्वीप की व० वक्तव्यता स० सब धा० धातकी खंडकी भा० कहना ण० विशेष इ० इस आ० अभिलाप से स० सब आ० आलापक भा० कहना ॥ १७ ॥ ज० जब भं० भगवन् धा० धातकी खंड दी० द्वीप

सूत्र लवण समुद्दे दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तयाणं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, जयाणं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ तयाणं लवण समुद्दे पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं नेवत्थि ओसप्पिणी उस्सप्पिणी समणाउसो ? हंता गोयमा ! जाव समणाउसो ॥ १८ ॥ धायइखंडेणं भंते ! दीवे सूरिया उदीचिपाईण मुग्गच्छ जहेव जंबूदीवस्स वत्तव्वया, सव्वेव धायइखंडस्सवि भाणियव्वा, णवरं इमेणं अभिलावेणं सव्वे आलावगा भाणियव्वा ॥ १७ ॥ जयाणं भंते ! धायइखंडेदीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तयाणं उत्तरड्ढेवि

भावार्थ वसर्पिणी है तव पूर्व पश्चिम में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुच्छ नहीं है, वगैरह अधिकार जानना. ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! धातकीखंड में सूर्य ईशान कौन में उदित होकर अग्नि कौन में क्या अस्त होता है ? हां गौतम ! इस का सब अधिकार जम्बूद्वीप जैसे कहना ॥ १७ ॥ जब धातकी खंड के दक्षिण विभाग

शब्दार्थ में दा० दक्षिण में दि० दिन भ० होता है त० तब उ० उत्तर में भी दि० दिन भ० होता है ज० जब उ० उत्तर में भी त० तब धा० धातकी खंड दी० द्वीपमें मं० मेरु प० पर्वतोंकी पु० पूर्व प० पश्चिम में रा० रात्रि भ० होती है हं० हां गो० गौतम जा० यावत् रा० रात्रि भ० होती है ॥ १८ ॥ पूर्ववत् ॥ १९ ॥ ए०

सूत्र जयाणं उत्तरड्ढेवि तयाणं धायइखंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं राई भवइ ? हंता गोयमा ! जाव राई भवइ ॥ १८ ॥ जयाणं भंते ! धायइ खंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरच्छिमेणं दिवसे भवइ, तयाणं पच्चच्छिमेणावि, जयाणं पच्चच्छिमेणवि तयाणं धायइ खंडे मंदराणं पव्वयाणं उत्तर दाहिणेणं राई भवइ ? हंता गोयमा ! जाव भवइ ॥ १९ ॥ एवं एएणं आभिलावेणं नेयव्वं जाव जयाणं भंते ! दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी तयाणं उत्तरड्ढे, जयाणं उत्तरड्ढे तयाणं धायइ

भा में दिन होता है तब उत्तर विभाग में दिन होता है और जब उत्तर विभाग में दिन होता है तब पूर्व पश्चिम विभाग में रात्रि होती है ॥ १८ ॥ जब पूर्व पश्चिम विभाग में दिन होता है तब उत्तर दक्षिण विभाग में रात्रि होती है ॥ १९ ॥ इसी तरह अवसर्पिणी उत्सर्पिणी तक जानना. जब धातकी खंड के उत्तर दक्षिण विभाग में अवसर्पिणी होती है तब पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुच्छ

शब्दार्थ इस अ० अभिलाप से ने० जानना. शेप पूर्ववत् ॥ २० ॥ ज० जैसे ल० लवण समुद्र की व० वक्तव्यता त० तैसे का० कालोदधि की भा० कहना न० विशेष का० कालोदधि ना० नाम भा० कहना. ॥ २१ ॥ अ० आभ्यंतर पु० पुष्करार्ध में भं० भगवन् सू० सूर्य उ० ईशान कौन में उ० उदित होकर ज० जैसे धा० धातकी खंड की व० वक्तव्यता त० तैसे अ० आभ्यंतर पु० पुष्करार्ध की भा० कहना ण० विशेष अ० अभिलाप जा० जानना जा० यावत् त० तव अ० आभ्यंतर पु० पुष्करार्ध मं० मेरु की पु० पूर्व में प० पश्चिम से णे० नहीं है ओ० अवसर्पिणी णे० नहीं है उ० उत्सर्पिणी, अ० अवस्थित त० वहां का०

सूत्र मंदराणं पव्वयाणं पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं नेवत्थि ओसप्पिणी जाव समणाउसो ? हंता गोयमा ! जाव समणाउसो ॥ २० ॥ जहा लवणसमुद्द वत्तव्वया तहा कालोदहिस्सवि भाणियव्वा, णवरं कालोदहिस्स नामं भाणियव्वं ॥ २१ ॥ अब्भिंतर पुक्खरद्धेणं भंते ! सूरिया उदीचिपाईण मुग्गच्छ जहेव धायइ खंडस्स वत्तव्वया तहेव अब्भिंतर पुक्खरद्धस्सवि भाणियव्वा। णवरं आभिलावो जाणियव्वो, जाव तयाणं अब्भिंतर पुक्खरद्धे मंदराणं पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं, णेवत्थि ओसप्पिणी, णेव-

भावार्थ नहीं होते हैं ॥ २० ॥ जैसे लवण समुद्र की वक्तव्यता कही वैसे ही कालोदधि समुद्र की वक्तव्यता जानना. इस में कालोदधि नाम कहना ॥ २१ ॥ आभ्यंतर पुष्करार्ध द्वीप का धात की खंड जैसे सब

शब्दार्थ काल प० कहा स० श्रमण आ० आयुष्मन् से० वैसे ही भं० भगवन् पं० पांचवा स० शतक का प० प्रथम उ० उद्देशा सं० संपूर्ण ॥ ५ ॥ १ ॥

÷ ÷

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले अ० है भं० भगवन् ई० अल्प पु० स्नेह वा० वायु प० पथ्य वायु मं० मंदवायु म० महावायु वा० चलता है हं० हां अ० है ॥ १ ॥ अ० है

सूत्र त्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिएणं तत्थकाले पण्णत्ते समणाउसो ! सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचमसयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ १ ॥

* *

रायगिहे णगरे जाव एवं वयासी-अत्थिणं भंते ! ईसिं पुरेवाया, पत्थावाया, मंदावाया महावाया वायंति ? हंता अत्थि ॥ १ ॥ अत्थिणं भंते ! पुरिच्छिमेणं ईसिं पुरेवाया

भावार्थ आलापक कहना. यावत् पुष्करार्ध द्वीप में पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुछ नहीं है. परंतु अवस्थित काल रहा हुवा है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह पांचवा शतकका पहिला उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ १ ॥

÷ ÷

प्रथम उद्देशे में दिशि में दिवसादिक के विभाग कहे. अब इस में वायु के भेद कहते हैं. राजगृही नगरी में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी ऐसा पूछने लगे कि अहो भगवन् ! अल्प स्नेह सहित वायु, वनस्पत्यादिकको पथ्यकारी वायु, मंद वायु व महा वायु

शब्दार्थ मं० भगवन् पु० पूर्व में ए० ऐसे प० पश्चिम में दा० दक्षिण में उ० उत्तर में उ० ईशान में दा० अग्नि दा० नैऋत्य उ० वायव्य ॥ २ ॥ ज० जब मं० भगवन् पु० पूर्व में ई० थोडा पु० सस्नेह वायु प० पथ्य वायु मं० मंदवायु म० महावायु वा० चलता है त० तब प० पश्चिम में हं० हां गो० गौतम ए०

सूत्र पत्थावाया, मंदावाया, महावाया वायंति ? हंता अत्थि ॥ एवं पच्चाच्छिमेणं, दाहिणेणं उत्तरेणं, उत्तरपुरच्छिमेणं, दाहिणपुरच्छिमेणं, दाहिपच्चाच्छिमेणं, उत्तरपच्चच्छिमेणं ॥ २ ॥ जयाणं भंते ! पुरच्छिमेणं ईसिं पुरेवाया, पत्थावाया, मंदावाया, महावाया वायंति; तयाणं पच्चच्छिमेणंवि ईसिं पुरेवाया, जयाणं पच्चच्छिमेणं ईसिं पुरेवाया, तयाणं पुरच्छिमेणवि ? हंता गोयमा ! जयाणं पुरच्छिमेणं तयाणं पच्चच्छिमेणवि ईसिं) जयाणं पच्च-

भावार्थ क्या चलते हैं ? हां गौतम ! उक्त प्रकार के वायु चलते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या पूर्व दिशा में अल्प स्नेहवाला वायु, पथ्यकारी वायु, मंद वायु व महा वायु चलते हैं ? हां गौतम ! पूर्व दिशा में उक्त प्रकार के वायु चलते हैं. ऐसे ही पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, अग्नि, नैऋत्य व वायव्य कोन में भी ऐसे चार प्रकार के वायु चलते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जब पूर्व दिशि में स्नेहमय, पथ्य, मंद व महा वायु चलते हैं तब पश्चिम दिशा में क्या स्नेहमयादि वायु चलते हैं ? हां गौतम ! जब पूर्व में उक्त प्रकार के वायु चलते हैं तब पश्चिम में भी वैसे वायु चलते हैं. और जब पश्चिम में वैसे वायु चलते

शब्दार्थ काल पं० कहा स० श्रमण आ० आयुष्मन् से० वैसे ही भं० भगवन् पं० पांचवा स० शतक का प० प्रथम उ० उद्देशा सं० संपूर्ण ॥ ५ ॥ १ ॥

÷ ÷

रा० राजगृह जा० यावत् ए० ऐसा व० बोले अ० है भं० भगवन् ई० अल्प पु० स्नेह वा० वायु प० पथ्य वायु मं० मंदवायु म० महावायु वा० चलता है हं० हां अ० है ॥ १ ॥ अ० है

सूत्र त्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिएणं तत्थकाले पण्णत्ते समणाउसो ! सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचमसयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ १ ॥

* *

रायगिहे णगरे जाव एवं वयासी-अत्थिणं भंते ! ईसिं पुरेवाया, पत्थावाया, मंदावाया महावाया वायंति ? हंता अत्थि ॥ १ ॥ अत्थिणं भंते ! पुरिच्छिमेणं ईसिं पुरेवाया

भावार्थ आलापक कहना. यावत् पुष्करार्ध द्वीप में पूर्व पश्चिम विभाग में अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कुछ नहीं है. परंतु अवस्थित काल रहा हुवा है. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह पांचवा शतकका पहिला उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ १ ॥

÷ ÷

प्रथम उद्देशे में दिशि में दिवसादिक के विभाग कहे. अब इस में वायु के भेद कहते हैं. राजगृही नगरी में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार कर श्री गौतम स्वामी ऐसा पूछने लगे कि अहो भगवन् ! अल्प स्नेह सहित वायु, वनस्पत्यादिकको पथ्यकारी वायु, मंद वायु व महा वायु

शब्दार्थ इ० यह अ० अर्थ स० योग्य से० अब के० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे वु० कहा जाता है गो० गौतम ते० उन वा० वायु को अ०परस्पर वि० विपरीतता से० उस से ल० लवण समुद्र में वे० शिखा ना० उल्लंघे नहीं से० अब ते० इसलिये जा० यावत् वा० वायु वा० वाते हैं ॥ ४ ॥ अ० है भं० भगवन् ई० अल्प पु० स्नेहयम वायु प० पथ्य वायु मं० मंदवायु म० महावायु वा० चलता है हं० हां अ० है क० कब

सूत्र मट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! एवंवुच्चइ, जयाणं दीविच्चया ईसिं णो णंतया सामुद्दिया ईसिं जयाणं सामुद्दिया ईसिं णो णंतया दीविच्चया ईसिं ? गोयमा ! तेसिणं वायाणं अण्णमण्ण विवच्चासेणं लवणसमुद्देवेलं नाइक्कमइ, से तेणट्ठेणं जाव वाया वायंति ॥ ४ ॥ अत्थिणं भंते ! ईसिं पुरेवाया पच्छावाया, मंदावाया, महावाया, वायंति ? हंता अत्थि । कयाणं भंते ईसिं जाव वाया वायंति ? गोयमा ! जयाणं वाउयाए अहारियं

भावार्थ हजार योजन की पानी की वेल रही हुई है, उसे लोक के स्वभाव से वायु नहीं उल्लंघ सकता है. इस से अहो गौतम ! जब द्वीप के वायु चलते हैं तब लवण समुद्र के वायु नहीं चलते हैं और जब लवण समुद्र के वायु चलते हैं तब द्वीप के वायु नहीं चलते हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! स्नेहमय वायु, पथ्य वायु, मंद वायु व महावायु चलते हैं ? हां गौतम ! चलते हैं. अहो भगवन् ! वे वायु कब चलते हैं ? अहो गौतम ! जब यथारीति से वह वायुकाय जावे या उसका गमन होवे तब वायुकाय चले. अहो भगवन् ! क्या

शब्दार्थ ऐसे दि० दिशि वि० विदिशि में ॥ ३ ॥ अ० है भं० भगवन् दी० द्वीप प्रत्यायिक ई० अल्प हं० हां अ० है अ० है भं० भगवन् सा० समुद्र संबंधी ई० अल्प हं० हां अ० है जं० जब भं० भगवन् दि० द्वीप प्रत्यायिक ई० अल्प पु० स्नेहमय वायु त० तब सा० समुद्र का ई० अल्प पु० स्नेहमय वा० वायु णो० नहीं

सूत्र च्छिमेणावि ईसिं तयाणं पुरच्छिमेणवि ईसिं ॥ एवं दिसासु, विदिसासु, ॥ ३ ॥ अत्थिणं भंते दीविच्चया ईसिं ? हंता अत्थि ॥ अत्थिणं भंते सामुद्दिया ईसिं ? हंता अत्थि ॥ जयाणं भंते ! दिविच्चया ईसिं पुरेवाया, तयाणं सामुद्दिया वि ईसिं पुरेवाया, जयाणं सामुद्दियाईसिं तयाणं दीविच्चया ईसिं ? णोइणट्ठे स-

भावार्थ हैं तब पूर्व में भी वैसे ही वायु चलते हैं, यों चारों दिशि विदिशि का जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! द्वीप संबंधी स्नेहमय वायु क्या होता है ? हां गौतम ! द्वीपसंबंधी स्नेहमय वायु होता है. वैसे ही समुद्र संबंधी भी स्नेहमय वायु होता है. अहो भगवन् ! जब द्वीपसंबंधी स्नेहमय, पथ्य वायु, मंद वायु, व महा वायु चलते हैं: तब क्या लवण समुद्र संबंधी उक्त प्रकार के वायु चलते हैं ? अथवा जब समुद्रके वायु चलते हैं तब क्या द्वीप के वायु चलते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! यह अर्थ किस कारन से योग्य नहीं है ? अहो गौतम ! उक्त द्वीप व समुद्र ऐसे दोनों प्रकार के वायु में परस्पर विपरीतपना है अर्थात् ऐसा उन वायुओं का स्वभाव ही रहा हुवा है. अथवा लवण समुद्र में सोलह

शब्दार्थ का आ० ऊंचाश्वासलेना पा० नीचाश्वासलेना ज० जैसे खं० स्कंदक त० तैसे च० चार आ० आलापक ने० जानना अ० अनेक ग० लक्ष पु० स्पर्याहुआ उ० घातकर स० शरीर सहित नि० नीकले ॥ ७ ॥ उ० चांवल कु० कुलथ सु० मदिरा ए० ये किं० कौन से स० शरीर वाले व० कहना गो० गौतम उ० चावल कु० कुलथ सु० मदिरा जे० जो घ० घन द० द्रव्य ए० ये पु० पहिले के भा० भाव प० कहा हुवा प० आश्रित व० वनस्पति जी० जीव स० शरीर त० उस प० पश्चात् स० शस्त्र से अ० अतिक्रमे

सूत्र भंते ! वाउयं चेव आणमंतिवा, पाणमंतिवा, जहा खंदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगलयसहस्सपुट्ठे उद्दाय ससरीरी निक्खमइ ॥ ७ ॥ अह भंते ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा, एएणं किं सरीराति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा य जे घणे दव्वे, एएणं पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च वणस्सइजीव सरीरा

भावार्थ चलती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वायुकाय का क्या श्वासोश्वास लेती है? अहो गौतम ! स्कन्दक के अधिकारमें वायुकाय वायुकायाका श्वासोश्वास लेती है. अनेक लक्षवार मरकर वायुकायके जीव वायुकायमें उत्पन्न होते हैं. वायुकाय शस्त्रादिक के स्पर्श से मरती है, वैक्रेय व उदारिक शरीर की अपेक्षा से वायुकाय के जीव शरीर छोडकर जाते हैं, तेजस कार्माण की अपेक्षा से शरीर सहित जाते हैं ऐसे चार आलापक जानना॥७॥ अब अहो भगवन् ! ओदन, (चांवलं) कुलथ व सूरा इन तीनों को कोनसा शरीर कहा है ? अहो

शब्दार्थ भं० भगवन् ई० अल्प जा० यावत् वा० वायु वा० वाता है गो० गौतम ज० जब वा० वायु अ० यथरूछ रि० जाता है त० तब ई० अल्प जा० यावत् वा० चलता है. ॥ ५ ॥ वा० वायु काय उ० उत्तर वैक्रेय वा० वायु कुमार वा० वायु कुमारी अ० स्वतः के प० अन्य के उ० दोनों के अ० लिये वा० वायु काया की उ० उदीरणा करे त० तब ई० अल्प पु० स्नेहवाला वायु ॥ ६ ॥ वा० वायु काय वा० वायु

सूत्र रियंति तयाणं ईसिं जाव वायंति ॥ अत्थिणं भंते ईसिं ? हंता अत्थि! कयाणं भंते ! ईसिं जाव वायंति ? गोयमा ! जयाणं वाउयाए उत्तरकिरियं रियइ, तयाणं ईसिं ॥ ५ ॥ अत्थिण भंते! ईसिं ? हंता अत्थि । कयाणं भंते ! ईसिं पुरेवाया पुच्छा ? गोयमा ! जयाणं वाउकुमारा, वाउकुमारीओ वा, अप्पणो परस्स वा तदुभयस्स वा अट्ठाए वाउकायं उदीरंति, तयाणं ईसिं पुरेवाया ॥ ६ ॥ वाउयाएणं

भावार्थ स्नेहमयादि वायु चलते हैं ? हां गौतम ! स्नेहमयादि वायु चलते हैं. अहो भगवन् ! वे वायु कब चलते हैं ? अहो गौतम ! वायुकाय का शरीर उदारिक है, उत्तरवैक्रेय करके शरीराश्रितक्रिया से उनका जब गमन होवे तब वे चले ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या स्नेहमयादि चार प्रकार के वायु हैं ? हां गौतम ! अहो भगवन् ! वे स्नेहमयादि वायु कब चलते हैं ? अहो गौतम ! जब वायुकुमार देव स्वतः के लिये, अन्य के लिये अथवा दोनों के लिये वायुकाय नीकालते हैं तब वायुकाय

शब्दार्थ का आ० ऊंचाश्वासलेना पा० नीचाश्वासलेना ज० जैसे खं० स्कंदक त० तैसे च० चार आ० आलापक ने० जानना अ० अनेक स० लक्ष पु० स्पर्श्याहुआ उ० घातकर स० शरीर सहित नि० नीकले ॥ ७ ॥ उ० चांवल कु० कुलथ सु० मदिरा ए० ये किं० कौन से स० शरीर वाले व० कहना गो० गौतम उ० चावल कु० कुलथ सु० मदिरा जें० जो घ० घन द० द्रव्य ए० ये पु० पहिले के भा० भाव प० कहा हुवा प० आश्रित व० वनस्पति जी० जीव स० शरीर त० उस प० पश्चात् स० शस्त्र से अ० अतिक्रमे

सूत्र

भंते ! वाउयं चेव आणमंतिवा, पाणमंतिवा, जहा खंदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगसयसहस्सपुट्ठे उद्दाय ससरीरी निक्खमइ ॥ ७ ॥ अह भंते ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा, एएणं किं सरीराति वत्तव्वं रिया ? गोयमा ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा य जे घणे दव्वे, एएणं पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च वणस्सइजीव सरीरा

भावार्थ

चउती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वायुकाय का क्या श्वासोश्वास लेती है? अहो गौतम ! स्कन्दक के अधिकारमें वायुकाय वायुकायाका श्वासोश्वास लेती है. अनेक लक्षवार मरकर वायुकायके जीव वायुकायमें उत्पन्न होते हैं. वायुकाय शस्त्रादिक के स्पर्श से मरती है, वैक्रेय व उदारिक शरीर की अपेक्षा से वायुकाय के जीव शरीर छोडकर जाते हैं, तेजस कार्माण की अपेक्षा से शरीर सहित जाते हैं ऐसे चार आलापक जानना॥७॥ अब अहो भगवन् ! ओदन, (चांवल) कुलथ व सूरा इन तीनों को कोनसा शरीर कहा है ? अहो

शब्दार्थ भं० भगवन् ई० अल्प जा० यावत् वा० वायु वा० वाता है गो० गौतम ज० जब वा० वायु अ० यथच्छ रि० जाता है त० तब ई० अल्प जा० यावत् वा० चलता है. ॥ ५ ॥ वा० वायु काय उ० उत्तर वैक्रेय वा० वायु कुमार वा० वायु कुमारी अ० स्वतः के प० अन्य के उ० दोनों के अ० लिये वा० वायु काया की उ० उदीरणा करे त० तब ई० अल्प पु० स्नेहवाला वायु ॥ ६ ॥ वा० वायु काय वा० वायु

सूत्र रियंति तयाणं ईसिं जाव वायंति ॥ अत्थिणं भंते ईसिं ? हंता अत्थि! कयाणं भंते ! ईसिं जाव वायंति ? गोयमा ! जयाणं वाउयाए उत्तरकिरियं रियइ, तयाणं ईसिं ॥ ५ ॥ अत्थिण भंते! ईसिं ? हंता अत्थि । कयाणं भंते ! ईसिं पुरेवाया पुच्छा? गोयमा ! जयाणं वाउकुमारा, वाउकुमारीओ वा, अप्पणो परस्स वा तदुभयस्स वा अट्ठाए वाउकायं उदीरंति, तयाणं ईसिं पुरेवाया ॥ ६ ॥ वाउयाएणं

भावार्थ स्नेहमयादि वायु चलते हैं ? हां गौतम ! स्नेहमयादि वायु चलते हैं. अहो भगवन् ! वे वायु कब चलते हैं ? अहो गौतम ! वायुकाय का शरीर उदारिक है, उत्तरवैक्रेय करके शरीराश्रितक्रिया से उनका जब गमन होवे तब वे चले ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! क्या स्नेहमयादि चार प्रकार के वायु हैं ? हां गौतम ! अहो भगवन् ! वे स्नेहमयादि वायु कब चलते हैं ? अहो गौतम ! जब वायुकुमार देव स्वतः के लिये, अन्य के लिये अथवा दोनों के लिये वायुकाय नीकालते हैं तब वायुकाय

शब्दार्थ का आ० ऊंचाश्वासलेना पा० नीचाश्वासलेना ज० जैसे खं० स्कंदक त० तैसे च० चार आ० आलापक ने० जानना अ० अनेक स० लक्ष पु० स्पर्श्याहुआ उ० घातकर स० शरीर सहित नि० नीकले ॥ ७ ॥ उ० चांवल कु० कुलथ सु० मदिरा ए० ये किं० कौन से स० शरीर वाले व० कहना गो० गौतम उ० चावल कु० कुलथ सु० मदिरा जें० जो घ० घन द० द्रव्य ए० ये पु० पहिले के भा० भाव प० कहा हुवा प० आश्रित व० वनस्पति जी० जीव स० शरीर त० उस प० पश्चात् स० शस्त्र से अ० अतिक्रमे

सूत्र भंते ! वाउयं चेव आणमंतिवा, पाणमंतिवा, जहा खंदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगलयसहस्सपुट्ठे उद्दाय ससरीरी निक्खमइ ॥ ७ ॥ अह भंते ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा, एएणं किं सरीराति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! उदण्णे, कुम्मासे, सुरा य जे घणे दव्वे, एएणं पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च वणस्सइजीव सरीरा

भावार्थ चलती है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय वायुकाय का क्या श्वासोश्वास लेती है? अहो गौतम ! स्कन्दक के अधिकारमें वायुकाय वायुकायाका श्वासोश्वास लेती है. अनेक लक्षवार मरकर वायुकायके जीव वायुकायमें उत्पन्न होते हैं. वायुकाय शस्त्रादिक के स्पर्श से मरती है, वैक्रेय व उदारिक शरीर की अपेक्षा से वायुकाय के जीव शरीर छोडकर जाते हैं, तेजस कार्माण की अपेक्षा से शरीर सहित जाते हैं ऐसे चार आलापक जानना ॥७॥ अब अहो भगवन् ! ओदन, (चांवल) कुलथ व सुरा इन तीनों को कोनसा शरीर कहा है ? अहो

शब्दार्थ हुवे श० शस्त्र से प० परिणमेहुवे अ० अग्नि से झा० जले हुवे अ० अग्नि से झु० शोषन हुवे अ० अग्नि से प० परिणमित अ० अग्नि जी० जीव स० शरीर व० वक्तव्यता सि० होवे सु० मदिरा ए० यह जे० जो द० प्रवाही ए० वह पु० पूर्वभाव प० आश्रित प० कहा हुवा आ० अप्काय जी० जीव स० शरीर त० उस की प० पीछे स० शस्त्र अ० अतिक्रमे जा० यावत् अ० अग्नि जी० जीव स० शरीर ॥ ८ ॥ अ० अथ भं० भगवन् अ०लोहा तं० ताम्बा त०तरुआ सा० सीसा उ०पत्थर क०

सूत्र तओ पच्छा सत्थातीया, सत्थ परिणामिया, अगणिज्झामिया, अगणिज्झूसिया अगणि सेविया अगणिपरिणामिया, अगणिजीवसरीरातिवा वत्तव्वंसिया । सुरा एय जे दव्वे एएणं पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च आउजीवसरीरा, तओ पच्छा सत्थातीया जाव अगणिजीवसरीरातिवत्तव्वं सिया ॥८॥ अहणं भंते ! अये तंबे तउए सीसए उवले

गौतम ! द्रव्य के दो भेद घनद्रव्य व द्रव (प्रवाही) द्रव्य. जो ओदन व कुलथ घनद्रव्य हैं वे पूर्व पर्याय आश्री वनस्पतिकायिक है; फीर शस्त्र से अतिक्रमाये हुवे, शस्त्र से परिणमाये हुवे, अग्नि से धमित, अग्नि से भ्रमित, व अग्नि से परिणमित उक्त पदार्थों अग्नि के शरीरवाले कहाते हैं. और सूरा (शराब) प्रवाही द्रव्य होने से पूर्व पर्याय आश्री अप्कायिक कहाता है. फीर शस्त्र यावत् अग्नि परिणमने पर अग्नि कायिक कहाता है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! लोहा, ताम्बा, तरुआ, सीसा, पाषाण, दग्ध कसोटा वगैरह कौन

कसोटा ए० ये किं० कोन से स० शरीर वाले गो० गौतम पु० पृथ्वी स० शरीर वाले त० उस प० पीछे अ० अग्नि जी० जीव स० शरीर वाले ॥ ९ ॥ अ० अथ भं० भगवन् अ० अस्थी अ० जलीहुई अस्थी च० चर्म च० जला हुवा चर्म रो० रोम रो० जला हुवा रोम सिं० शृंग सिं०जला हुवा शृंग खु०खुर खु० जलाहुवा खुर न० नख न० जला हुवा नख ए० ये किं० कोन से श० शरीर वाले व० वक्तव्यता सि० है गो० गौतम अ० अस्थी च० चर्म रो० रोम सिं० शृंग, खु० खुर न० नख ए० ये त० त्रस प्राण जी० जीव श० शरीर वाले अ० जलीहुइ हड्डी च० जला चर्म रो० जला रोम सिं० जलाशृंग खु० जला

सूत्र

कसाट्टिया एएणं किं सरीराइ वत्तव्वंसिया ? गोयमा! अये, तंबे, तउए, सीसए, उवले कसाट्टिया एएणं, पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च पुढवी जीव सरीरा, तओ पच्छा सत्थाईया जाव अगणि जीव सरीराइ वत्तव्वंसिया ॥ ९ ॥ अह भंते ! अट्ठी, अट्ठिज्झामे चम्मे, चम्मज्झामे, रोमे, रोमज्झामे सिंगे, सिंगज्झामे, खुरे, खुरज्झामे, नहे, नहज्झामे एएणं किं सरीराइ वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! अट्ठी चम्मे रोमे सिंगे

भावार्थ

से शरीरवाले हैं ? अहो गौतम ! पूर्व पर्याय आश्रित पृथ्वी शरीरवाले हैं और शस्त्र यावत् अग्नि परिणमने से अग्नि शरीरी है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! हड्डी, जली हुई हड्डी, चर्म, जलाहुवा चर्म, ऐसे ही विना जलाहुवा व जलाहुवा रोम, शृंग, खुर, व नख को कौनसा शरीर कहा है ? अहो गौतम ! अस्थी,

शब्दार्थ

खुर ण० जलाहुवा नख ए० ये पु० पहिले के भाव प० कहा हुवा प० आश्रित त० त्रस पा० प्राण जीव स० शरीर त० उन प० पीछे स० शस्त्र से अ० अतिक्रमे जा० जावत् अ० अग्नि जीव व० वक्तव्यता सि० होवे ॥ १० ॥ अ० अथ भं० भगवन् इं० अंगारे छा० भस्म बु० भूसा गो० छाने ए० ये किं० कौन से स० शरीर वाले व० वक्तव्यता सि० होवे गो० गौतम इं० अंगारे छा० भस्म बु० भूसा गो० छाने पु० पूर्व भाव प० कहा हुवा ए० ये ए० एकेन्द्रिय जीव स० शरीर प० प्रयोग परिणमित जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय स० शरीर प० प्रयोग प० परिणमित त० उस प० पीछे स० शस्त्र अ० अतिक्रमे

सूत्र

खुरे नहे एएणं तसपाणजीवसरीरा । अट्ठिज्झामे, चम्मज्झामे, रोमज्झामे, सिंगखुर णहज्झामे एएणं पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च तस पाण जीव सरीरा तओ पच्छा सत्थाईया जाव अगणिजीवत्ति वत्तव्वं सिया ॥ १० ॥ अह भंते ! इंगाले, छारिए, बुसे, गोमए एएणं किं सरीराइ वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! इंगाले, छारिए, बुसे, गोमए एएणं पुव्वभाव पण्णवणं एए एगिंदियजीवसरीरप्पयोग परिणामियावि जाव पंचिंदिय जीव सरीरप्पयोग परिणामियावि, तओ पच्छा सत्थाईया

भावार्थ

चर्म, रोम, शृंग, खुर व नख त्रस प्राणी जीव के शरीर कहाते हैं और जली हुई अस्थी, चर्म, रोम वगैरह पूर्व भव आश्री त्रस प्राणी जीव के शरीर कहाते हैं. फीर शस्त्र यावत् अग्नि परिणमने पर अग्नि जीव शरीर कहाते हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! अंगारे, राख, भूसा व गोबर को कौनसा शरीर कहा ?

शब्दार्थ जा० यावत् अ० अग्नि जी० जीव स० शरीर व० वक्तव्यता सि० होवे ॥ ११ ॥ ल० लवण भं० भगवन् स० समुद्र में के० कितना च० चक्रवाल वि० विष्कंभपना प० प्ररूपा ए० ऐसे ने० जानना. जा० यावत् लो० लोकस्थिति लो० लोकानुभाव ॥ १२ ॥ से० ऐसे ही भं० भगवन् भ० भगवान जा० यावत् वि० विचरते हैं पं० पांचवे स० शतक में बी० दूसरा उ० उद्देशा स० समाप्त ॥ ५ ॥ २ ॥

सूत्र जाव अगणि जीव सरीराइ वत्तव्वंसिया ॥ ११ ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे केव-इयं चक्कवाल विक्खंभेणं पण्णत्ते एवं नेयव्वं जाव लोगट्ठिई, लोयाणुभावे ॥१२॥ सेवं भंते भंतेत्ति भगवं जाव विहरइ ॥ पंचमसए बीईओ उद्देसो सम्मत्तो ॥५॥२॥

भावार्थ अहो गौतम ! पूर्व पर्याय आश्रित एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय का शरीर कहा है. फीर शस्त्र यावत् अग्नि परिणम ने से अग्नि जीव शरीर कहाते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की परिधि कितनी कही? अहो गौतम ! लवण समुद्र दो लाख योजन का लम्बा चौडा है और १५८११३९ योजन से कुच्छ अधिक की उसकी परिधि कही है वगैरह जीवाभिगम सूत्र से अनुभावतक कहना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं ऐसा कहकर तप संयम से आत्मा को भावते हुए श्री गौतम स्वामी विचरने लगे. यह पांचवा शतकका दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ २ ॥

पदार्थ

खुर ण० जलाहुवा नख ए० ये पु० पहिले के भाव प० कहा हुवा प० आश्रित त० त्रस पा० प्राण जीव स० शरीर त० उस प० पीछे म० शस्त्र से अ० अतिक्रमे जा० जावत् अ० अग्नि जीव व० वक्तव्यता सि० होवे ॥ १० ॥ अ० अथ भं० भगवन् इं० अंगारे छा० भस्म बु० भूसा गो० छाने ए० ये किं० कौन से स० शरीर वाले व० वक्तव्यता सि० होवे गो० गौतम इं० अंगारे छा० भस्म बु० भूसा गो० छाने पु० पूर्व भाव प० कहा हुवा ए० ये ए० एकेन्द्रिय जीव स० शरीर प० प्रयोग परिणमित जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय स० शरीर प० प्रयोग प० परिणमित त० उस प० पीछे स० शस्त्र अ० अतिक्रमे

सूत्र

खुरे नहे एएणं तसपाणजीवसरीरा । अट्ठिज्झामे, चम्मज्झामे, रोमज्झामे, सिंगखुर णहज्झामे एएणं पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च तस पाण जीव सरीरा तओ पच्छा सत्थाईया जाव अगणिजीवत्ति वत्तव्वं सिया ॥ १० ॥ अह भंते ! इंगाले, छारिए, बुसे, गोमए एएणं किं सरीराइ वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! इंगाले, छारिए, बुसे, गोमए एएणं पुव्वभाव पण्णवणं एए एगिंदियजीवसरीरप्पयोग परिणामियावि जाव पंचिंदिय जीव सरीरप्पयोग परिणामियावि, तओ पच्छा सत्थाईया

भावार्थ

चर्म, रोम, शृंग, खुर व नख त्रस प्राणी जीव के शरीर कहाते हैं और जली हुई अस्थी, चर्म, रोम वगैरह पूर्व भव आश्री त्रस प्राणी जीव के शरीर कहाते हैं. फीर शस्त्र यावत् अग्नि परिणमने पर अग्नि जीव शरीर कहाते हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! अंगारे, राख, भूसा व गोबर को कौनसा शरीर कहा ?

शब्दार्थ युष्य स० सहस्र आ० अनुक्रम से गं० गुंथा हुवा जा० यावत् चि० है ए० एक ही जी० जीव ए० एक स० समय में दो० दो आ० आयुष्य प० वेदते हैं तं० वह ज० यथा इ० इस भवका प० परभवका जं० जिस स० समय में इ० इस भवका प० वेदता है तं० उस स० समय में प० परभव का प० वेदता है

सूत्र तंजहा इह भवियाउयं च, परभवियाउयंच, जंसमयं इह भवियाउयं पडिसंवेदेइ तं समयं परभावियाउयं पडिसंवेदेइ, जाव से कहमेयं भंते! एवं ? गोयमा! जण्णं ते अण्णउत्थिया तं चेव जाव परभवियाउयंच जे ते एव माहंसु तंमिच्छा. अहं पुण गोयमा ! एवं माइक्खामि जाव अण्णमण्ण घडत्ताए चिट्ठंति, एवामेव एगमेगस्स जीवस्स बहूहिं आजाइसहस्सेहिं. बहूहिं आउयसहस्साइं आणुपुव्विगंठि-

भावार्थ हजारों आयुष्य अनुक्रम से गुन्थे हुवे, बांधे हुवे, यावत् परस्पर वीस्तीर्ण व [१]भारवाले रहते हैं. और इस से एक जीव एक समय में इस भव संबंधी व परभव संबंधी ऐसे दो आयुष्य वेदता है. जिस समय में इस भव संबंधी आयुष्य वेदता है उस समय में वह जीव परभव संबंधी आयुष्य वेदता है. और जिस समय में परभव संबंधी आयुष्य वेदता है उस समय में इस भव संबंधी आयुष्य वेदता है. 'अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! अन्य तीर्थिक यावत् परभव संबंधी आयुष्य वेदते हैं वहांतक का

१ यहां कर्म पुद्गल की अपेक्षा से भारपना ग्रहण कियागया है.

अ० अन्यतीर्थिक भं० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं प० प्ररूपते हैं से० अब ज० जैसे जा० जाल ग्रंथिका आ० अनुक्रम से गं० गुंथीहुई प० परंपरा से गं० गुंथीहुई अ० परस्पर गं० गुंथीहुई अ० परस्पर गु० विस्तार युक्त अ० परस्पर भा० वजनदार अ० परस्पर गु० विस्तीर्ण सं० वजनदार अ० परस्पर घ० रचीहुई चि० हैं ए० ऐसे ही ब० बहुत जी०जीवों के ब०बहुत आ०आजाति स०सहस्र ब०बहुत आ० आ-

अण्णउत्थियाणं भंते ! एव माइक्खंति भासेंति पण्णवेंति, एवं परूवेंति, से जहा नामए जाल गंठियाइवा आणुपुव्विगंठिया अणंतरगंठिया, परंपरगंठिया, अण्णमण्णगंठिया, अण्णमण्ण गुरुयत्ताए, अण्णमण्णभारियत्ताए, अण्णमण्णगुरुसंभारियत्ताए, अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति एवामेव बहूणं जीवाणं बहूसु आजाइसहस्सेसु, बहूइं आउयसहस्साइं आणुपुव्वि गंठियाइं जाव चिट्ठंति । एगे वियणं जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पडिसंवेदेइ-

दूसरे उद्देशे में समुद्रादिक का सत्यज्ञान ज्ञानियोंने कहा, अब आगे मिथ्यात्वीयोंका असत्यज्ञान कहते हैं. श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को गौतम स्वामी वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न पुछने लगे कि अहो भगवन् ! अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि जैसे मत्स्य पकडने की जाली अनुक्रम से गुंथी हुई, परंपरा (एक ग्रन्थी अनंतर दूसरी ग्रन्थी) से गुन्थी हुई, परस्पर गुन्थी हुई, परस्पर वीस्तीर्ण परस्पर वजनवाली और वीस्तीर्ण व वजनवाली होती है. वैसे ही बहुत देवतादि जन्म में अनेक जीवों के

चि० हैं ए० ऐसे ही ए० एक ही जी० जीव का ब० बहुत आ० आजाति स० सहस्र ब० बहुत आ० आयुष्य स० सहस्र आ० अनुक्रम से गं० ग्रथित चि० है शेष पूर्ववत् ॥ १ ॥ जी० जीव भं० भगवन् भ० योग्य ने० नारकी में उ० उपजने को से० वह किं० क्या सा० आयुष्य सहित सं० जाता है. नि० आयुष्य रहित सं० जाता है. गो० गौतम सा० आयुष्य सहित सं० जाता है नो० नहीं नि० आयुष्य रहित सं० जाता है. से० उसने भं० भगवन् आ० आयुष्य क० कहा क० किया स० संचित किया गो० गौतम पु० पहिले भ० भव में क० किया पु० पहिले भव में सं० संचित किया ए० ऐसे जा०

सूत्र

खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पडिसंवेदेइ, तं जहा इहभवियाउयंवा, परभवियाउयंवा ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए सेणं भंते किं साउए संकमइ निराउए संकमइ ? गोयमा साउए संकमइ नो निराउए संकमइ ॥ सेणं भंते ! आउए कहिं कडे कहिं समाइण्णे ? गोयमा ! पुरिमे

भावार्थ

समय में इस भव के आयुष्य की वेदना नहीं होती है. इसलिये जीव एक समयमें इस भव का अथवा परभव का ऐसा एक ही आयुष्य वेदता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जो जीव यहां से नरक में जाता है वह यहांपर नरक के आयुष्य का बंध करके जाता है या विना बंध किये हुए जाता है ? अहो गौतम ! नारकी में उत्पन्न होनेवाला नेरया यहांपर नरक का आयुष्य बांधकर जाता है विना बांधे नहीं जा

शब्दार्थ जा० यावत् से० वह क० कैसे भं० भगवन् ए० ऐसे गो० गौतम ज० जो ते० वे अ० अन्यतीर्थिक तं० वैसे ही जा० यावत् प० परभव का आ० आयुष्य जे० जो ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं तं० वह मि० मिथ्या अ० मैं पु० फीर गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं जा० यावत् अ० परस्पर व० बनाने को

सूत्र याइं जाव चिट्ठंति ॥ एगे वियणं जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पडिसंवेदेइ तं जहा इह भवियाउयंवा, परभवियाउयंवा. जं समयं इह भवियाउयं पडिसंवेदेइ नो तंसमयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ, जं समयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ णो तं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदइ, इह भवियाउस्स पडिसंवेदणयाए णो परभवियाउयस्स पडिसंवेदणा, परभवियाउयस्स पडिसंवेदणयाए णो इहभवियाउयस्स पडिसंवेदणा एवं

भावार्थ जो कथन करते हैं वह सब मिथ्या है. परंतु मैं ऐसा कहता हूं कि ग्रन्थिजाल समान बहुत देवादिक जन्म में एक जीव के बहुत हजार आयुष्य अनुक्रम से गुन्थाये हुवे रहते हैं और एक जीव एक समय में इस भव संबंधी अथवा परभव संबंधी ऐसा एक ही आयुष्य वेद सकता है. अर्थात् जिस समय में इस भव संबंधी आयुष्य वेदता है उस समय में परभव संबंधी आयुष्य नहीं वेदता है और जिस समय में परभव संबंधी आयुष्य वेदता है उस समय में इस भव संबंधी आयुष्य नहीं वेदता है. क्योंकि इस भव के आयुष्य की वेदना होते परभव के आयुष्य की वेदना नहीं होती है, और परभव के आयुष्य की वेदना के

शब्दार्थ प० करते स० सात प्रकार का प० करता है तं० वह ज० जैसे र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी के ने० नारकी का आ० आयुष्य जा० यावत् अ० अधो स० सातवी पु० पृथ्वी के ने० नारकी का आ० आयुष्य ति० तिर्यंच जो० योनिका आ०आयुष्य प० करते पं० पांच प्रकार का प० करते हैं तं०वह ज०जैसे ए० एकेन्द्रिय ति० तिर्यंच योनिका आ० आयुष्य भे० भेद स० सब भा० कहना म० मनुष्य का आ० आयुष्य दु० दोप्रकार का दे० देवका आ० आयुष्य च० चार प्रकार का प० करते हैं. ५ ॥ ३ ॥

सूत्र रयणप्पभापुढवी नेरइयाउयंवा जाव अहे सत्तमा पुढवी नेरइयाउयंवा, ॥ तिरिक्ख जोणियाउयं पकरेमाणे पंचविहं पकरेइ तंजहा एगिंदिय तिरिक्ख जोणियाउयंवा भेदो सव्वो भाणियव्वो । मणुस्साउयं दुविहं पकरेइ देवाउयं चउव्विहं पकरेइ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचमसए तईओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ ३ ॥ *

भावार्थ सात प्रकार के आयुष्य का बंध करता है, रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी का आयुष्य यावत् सातवी तमतमा पृथ्वी के नारकी का आयुष्य. तिर्यंच योनि के आयुष्य का बंध करनेवाला एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनि ऐसे पांच प्रकारके आयुष्यका बंध करताहै. कर्मभूमि व अकर्म भूमि ऐसे दो प्रकार के आयुष्य का बंध मनुष्य करता है. और भुवनवाति, वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक ऐसे चार प्रकार के आयुष्य का बंध देवों करते हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह पांचवा शतकका तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ ३ ॥

पदार्थ

यावत् वै० वैमानिक का दं० दंडक ॥ २ ॥ से० अथ णू० शंकादर्शी भं० भगवन् जे० जो जं० जिस भ० योग्य जो० योनि उ० उत्पन्न होने को से० वह त० उस आ० आयुष्य प० करता है तं० वह ज० जैसे ने० नारकी का आ०आयुष्य जा० यावत् दे० देवताका आ० आयुष्य हं० हां गो० गौतम जे० जो जं० जिस भ० योग्य जो० योनि उ० उत्पन्न होने को से० वह त० उस आ० आयुष्य प० करता है तं० वह ज० जैसे ने० नारकी का आ० आयुष्य दे० देवता का आ० आयुष्य ना० नारकी का आ०आयुष्य

सूत्र

भवे कडे, पुरिमे भवे समाइण्णे । एवं जाव वेमाणियाणं दंडओ ॥२॥ से णूणं भंते! जे जं भविए जोणिं उववज्जित्तए से तमाउयं पकरेइ तंजहा नेरइयाउयंवा, जाव देवाउयंवा ? हंता गोयमा ! जे जं भविए जोणिं उववज्जित्तए से तमाउयं पकरेइ, तंजहा नेरइयाउयंवा जाव देवाउयंवा । ने इयाउयं पकरेमाणे सत्तविहं पकरेइ तंजहा

भावार्थ

सकता है. अहो भगवन् ! उस जीवने ऐसा आयुष्य कहां उपार्जित किया ? अहो गौतम ! जीवने ऐसा आयुष्य पूर्वभव में उपार्जित किया. जैसे नारकीका कहा वैसे ही वैमानिक तक के चौविसही दंडक का जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नरक यावत् देवयोनि में से जीव जिस योनि में उत्पन्न होने योग्य होता है उसी योनि के आयुष्य का बंध क्या वह करता है ? हां गौतम ! जिस योनि में उत्पन्न होने योग्य होता है उसी योनि के आयुष्य का बंध करता है. नारकी के आयुष्य का बंध करनेवाला

सूत्र

तंजहा-संखसद्दाणिवा जाव झूसिराणिवा ॥ ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं सुणेइ, अपुट्ठाइं सुणेइ ? गोयमा ! पुट्ठाइं सुणेइ, णो अपुट्ठाइं सुणेइ ; जाव नियमा छदिसिं सुणेइ ॥ तहाणं भंते ! छउमत्थे मणूसे किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, पारगयाइं सद्दाइं

शब्दार्थ

भं० भगवन् किं० क्या पु० स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं अ० नहीं स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं गो० गौतम पु० स्पर्शे हुए सु० सुनते हैं णो० नहीं अ० नहीं स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं जा० यावत् नि० निश्चय ही छ० छदिशी सु० सुनते हैं त० तैसे भं० भगवन् छ० छद्मस्थ म० मनुष्य किं० क्या आ० इन्द्रिय विषयिक स० शब्द सु० सुनते हैं पा० इन्द्रिय विषय से दूर के स० शब्द सु० सुनते हैं गो० गौतम आ० इन्द्रिय

भावार्थ

प्रमुख का सुषिर शब्द सुन सकते हैं ? हां गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य हस्त मुख दंडादि से संयोजित शंख के शब्द, यावत् सुषिर के शब्द सुन सकते हैं. अहो भगवन् ! कान को स्पर्शाये हुवे शब्दों सुने जाते हैं या विना स्पर्शाये हुए शब्दों सुने जाते हैं ? अहो गौतम ! स्पर्शाये हुवे शब्दों सुन सकते हैं परंतु नहीं स्पर्शाये हुए शब्दों नहीं सुन सकते हैं यावत् प्रथम शतक में जैसे आहार का अधिकार कहा वैसे ही यावत् छ दिशी के शब्दों सुन सकते हैं वहांतक कहना. अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य क्या श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में आये हुए शब्दों सुन सकते हैं या श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में नहीं आये हुए शब्दों सुन सकते हैं ? अहो गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में आये हुवे शब्दों सुन सकते हैं परंतु विषय के बाहिर

शब्दार्थ छ० छद्मस्थ भं० भगवन् म० मनुष्य आ० संयोग वाले सं० शब्द सु० सुनते हैं सं० शंख का शब्द सिं० शृंगका शब्द सं० छोटे शंख का शब्द ख० खरमुखी पो० बडे बांके प० पीपी का सं० शब्द प० छोटा ढोल प० बडा ढोल भं० बांकीया हो० होरंभक स० शब्द भे० भेरी झ० झालर दुं० दुंदुभीका स० शब्द त० तत वि० वितत घ० घन झू० झसिर हं० हां गो० गौतम छ० छद्मस्थ म० मनुष्य आ० संबंध वाले स० शब्द सु० सुनते है तं० वह ज० जैसे सं० शंख शब्द जा० यावत् झू० झुपिर शब्द ता० उनको

सूत्र छउमत्थेणं भंते ! मणूसे आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइ, तंजहा संख सद्दाणित्रा, सिंगसद्दाणित्रा, संखिय खरमुहिय, पोया, परिपिरिया सद्दाणित्रा पणव, पडह, भंभा, होरंभ-सद्दाणित्रा, भेरि- झल्लरि- दुंदभि-सद्दाणित्रा, तयाणि वितयाणित्रा, घणाणित्रा, झूसिराणित्रा ? हंता गोयमा ! छउमत्थेणं मणूसे आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइ

भावार्थ तीसरे उद्देशे में छद्मस्थ अन्यतीर्थीकी वक्तव्यता कही. चौथे उद्देशे में छद्मस्थ केवली की वक्तव्यता करते हैं. अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य क्या हस्त मुख दंडादि से संयोजित शंख का शब्द, शृंगका शब्द, छोटे शंख का शब्द, खरमुखी (बांके) का शब्द, बडे बांके का शब्द, पींपी का शब्द, छोटे पडह का शब्द, ढोल का शब्द, ढक्का का शब्द, होरंभ का शब्द, भेरी का शब्द, झालर का शब्द, दुंदुभी का शब्द, विणादि तत का शब्द, सतारादि वितत का शब्द, कांस्य तालादिक घन का शब्द, और बांसली

शब्दार्थ भं० भगवन् किं० क्या पु० स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं अ० नहीं स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं गो० गौतम पु० स्पर्शे हुए सु० सुनते हैं णो० नहीं अ० नहीं स्पर्शे हुवे सु० सुनते हैं जा० यावत् नि० निश्चय ही छ० छदिशी सु० सुनते हैं त० तैसे भं० भगवन् छ० छद्मस्थ म० मनुष्य किं० क्या आ० इन्द्रिय विषयिक स० शब्द सु० सुनते हैं पा० इन्द्रिय विषय से दूर के स० शब्द सु० सुनते हैं गो० गौतम आ० इन्द्रिय

सूत्र तंजहा-संखसद्दाणिवा जाव झूसिराणिवा ॥ ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं सुणेइ, अपुट्ठाइं सुणेइ ? गोयमा ! पुट्ठाइं सुणेइ, णो अपुट्ठाइं सुणेइ ; जाव नियमा छदिसिं सुणेइ ॥ तहाणं भंते ! छउमत्थे मणूसे किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, पारगयाइं सद्दाइं

भावार्थ प्रमुख का सुपिर शब्द सुन सकते हैं ? हां गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य हस्त मुख दंडादि से संयोजित शंख के शब्द, यावत् सुपिर के शब्द सुन सकते हैं. अहो भगवन् ! कान को स्पर्शाये हुवे शब्दों सुने जाते हैं या विना स्पर्शाये हुए शब्दों सुने जाते हैं ? अहो गौतम ! स्पर्शाये हुवे शब्दों सुन सकते हैं परंतु नहीं स्पर्शाये हुए शब्दों नहीं सुन सकते हैं यावत् प्रथम शतक में जैसे आहार का अधिकार कहा वैसे ही यावत् छ दिशी के शब्दों सुन सकते हैं वहांतक कहना. अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य क्या श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में आये हुए शब्दों सुन सकते हैं या श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में नहीं आये हुए शब्दों सुन सकते हैं ? अहो गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में आये हुवे शब्दों सुन सकते हैं परंतु विषय के बाहिर

शब्दार्थ

विपायिक स० शब्द सु० सुनते हैं णो० नहीं पा० इन्द्रिय विषय से दूरके स० शब्द सु० सुनते हैं ॥ १ ॥ ज० जैसे भं० भगवन् छ० छद्मस्थ म० मनुष्य त० तैसे के० केवली गो० गौतम आ० इन्द्रिय विपायिक पा० इन्द्रिय विषय से दूरके स० सब दू० दूर मू० पास अ० पासनहि ऐसे स० शब्द जा० जानते हैं पा० देखते हैं से० अथ के० कैसे तं० वैसे के० केवली आ० इन्द्रिय विपायिक पा० इन्द्रिय विषय से बाहिर के जा० यावत् पा० देखते हैं गो० गौतम के० केवली पु० पूर्व में मि० मर्यादा जा० जानते

सूत्र

सुणेइ ? गोयमा ! आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, णो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ॥ १ ॥ जहाणं भंते ! छउमत्थे मणूसे आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ णो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ तहाणं केवली किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? गोयमा ! केवलीणं आरगयंवा पारगयंवा सव्वदूरमूलमणंतियं सद्दं जाणइ पासइ, ॥ से केणट्ठेणं तंचेव केवलीणं आरगयंवा पारगयंवा जाव पासइ ? गोयमा ! केवली पुरच्छिमेणं

भावार्थ

के शब्दा नहीं सुन सकते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जब छद्मस्थ विषय के अंदर के शब्दों सुन सकते हैं परंतु विषय की बाहिर के शब्दों नहीं सुन सकते हैं तब क्या केवली श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में रहे हुए शब्दों सुन सकते हैं या विषय से बाहिर के शब्दों सुन सकते हैं ? अहो गौतम ! केवली श्रोत्रेन्द्रिय के विषय के अंदर के व बाहिर के सर्वथा दूर के, पास के, व बीच के ऐसे सब शब्द जानते व देखते हैं.

शब्दार्थ हैं अ० अमर्यादा जा० जानते हैं ऐ० ऐसे दा० दक्षिण में प० पश्चिम में उ० उत्तर में ऊ० ऊर्ध्व अ० नीचे मि० मर्यादित जा० जानते हैं अ० अमर्यादित जा० जानते हैं स० सब जा० जानते हैं के० केवली स० सब पा० देखते हैं के० केवली स० सर्वथा स० सब काल स० सब भाव अ० अनंत णा० ज्ञान के० केवली को अ० अनंत दं० दर्शन नि० प्रगट ज्ञा० ज्ञान ते० इसलिये जा० यावत् पा० देखते हैं ॥२॥

सूत्र मियंपि जाणइ, अमियंपि जाणइ, एवं दाहिणेणं, पच्चच्छिमेणं, उत्तरेणं, उड्ढं, अहे मियंपि जाणइ, अमियंपि जाणइ, सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली, सव्वओ सव्वकालं, सव्वभावे, अणंते णाणे केवलिस्स, अणंते दंसणे केवलिस्स, निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दंसणे केवलिस्स, सेतेणट्ठेणं जाव पासइ ॥ २ ॥

भावार्थ अहो भगवन् ! किस तरह केवली दूरके व नजीक, विषयवाले व विषय विनाके सब शब्दों जान व देखसकते हैं ? अहो गौतम ! केवली पूर्व, दक्षिण, पश्चिम व उत्तर दिशा में प्रमाण सहित गर्भज मनुष्य जीवादि वस्तु जानते हैं और प्रमाण रहित अनंत असंख्यात वनस्पति जीव तथा पृथ्वीजीवादि वस्तु जानते हैं. इस तरह केवली सब जानते हैं व देखते हैं, केवली अतीत, अनागतादि सब काल, उदय उपशमादि सब भाव व उत्पाद व्यय ध्रौव्यादि सब भाव को केवल ज्ञान से जानते हैं व केवल दर्शन से देखते हैं. क्योंकि केवल ज्ञानी को निरावरण शुद्ध निर्मल अनंत केवल ज्ञान व अनंत केवल दर्शन है. इसलिये केवली

शब्दार्थ विपयिक स० शब्द सु० सुनते हैं णो० नहीं पा० इन्द्रिय विपय से दूरके स० शब्द सु० सुनते हैं ॥ १ ॥ ज० जैसे भं० भगवन् छ० छद्मस्थ म० मनुष्य त० तैसे के० केवली गो० गौतम आ० इन्द्रिय विपयिक पा० इन्द्रिय विपय से दूरके स० सब दू० दूर मू० पास अ० पासनहि ऐसे स० शब्द जा० जानते हैं पा० देखते हैं से० अथ के० कैसें तं० वैसे के० केवली आ० इन्द्रिय विपयिक पा० इन्द्रिय विषय से बाहिर के जा० यावत् पा० देखते हैं गो० गौतम के० केवली पु० पूर्व में मि० मर्यादा जा० जानते

सूत्र

सुणेइ ? गोयमा ! आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, णो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ॥ १ ॥ जहाणं भंते ! छउमत्थे मणूसे आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ णो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ तहाणं केवली किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? गोयमा ! केवलीणं आरगयंवा पारगयंवा सव्वदूरमूलमणंतियं सद्दं जाणइ पासइ, ॥ से केणट्ठेणं तंचेव केवलीणं आरगयंवा पारगयंवा जाव पासइ ? गोयमा ! केवली पुरच्छिमेणं

के शब्दा नहीं सुन सकते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जब छद्मस्थ विषय के अंदर के शब्दों सुन सकते हैं परंतु विषय की बाहिर के शब्दों नहीं सुन सकते हैं तब क्या केवली श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में रहे हुए शब्दों सुन सकते हैं या विषय से बाहिर के शब्दों सुन सकते हैं ? अहो गौतम ! केवली श्रोत्रेन्द्रिय के विषय के अंदर के व बाहिर के सर्वथा दूर के, पास के, व बीच के ऐसे सब शब्द जानते व देखते हैं.

शब्दार्थ ह० हसे उ० उत्सुक होवे ॥ ३ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ह० हसते हुवे उ० उत्सुक होते हुवे क० कितनी क० कर्म प्रकृतियों बं० बांधे गो० गौतम स० सात प्रकार का बं० बंध अ० आठ प्रकार का बं० बंध ॥ ४ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् ह० हसते हुए उ० उत्सुक होते हुवे क० कितनी क० कर्म प्रकृतियों बं०

सूत्र हसेज्जवाउस्सुया एज्जवा ॥३॥ जीवेणं भंते ! हसमाणेवा उस्सुयमाणेवा कइकम्मप्पगडीओ बंधइ ? गोयमा सत्तविहबंधएवा, अट्ठविह बंधएवा. ॥ ४ ॥ णेरइएणं भंते ! हसमाणे उस्सुयमाणे कतिकम्म पगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधएवा, अट्ठविह बंधएवा. एवं जाव वेमाणिए ॥ ५ ॥ जीवाणं भंते ! हसमाणावा, उस्सुयमाणावा कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सत्तविहबंधगावा, अट्ठविह

भावार्थ इसलिये केवली हसते नहीं है व उत्सुक नहीं होते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीव हसताहुवा व उत्सुक होता हुवा कितने कर्म बांधे ? अहो गौतम ! जिन को आयुष्य कर्म का बंध नहीं होवे उस को सात कर्म प्रकृतियों और जिस को आयुष्य कर्म का बंध होवे उस को आठ कर्म प्रकृतियों का बंध होता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! नारकी इस तरह हसता हुवा व उत्सुक होता हुवा कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध करे ? अहो गौतम ! सात कर्म प्रकृतियों का अथवा आठ कर्म प्रकृतियों का बंध करे. ऐसे ही वैमानिकतक के

शब्दार्थ छ० छद्मस्थ म० मनुष्य ह० हसे उ० उत्सुक होवे हं० हां ह० हसे उ० उत्सुक होवे ज० जैसे छ० छद्मस्थ म० मनुष्य त० तैसे के० केवली णो० नहीं इ० यह अर्थ स० योग्य से० वह के० किसलिये गो० गौतम ज० जिसलिये जी० जीव च० चारित्र मो० मोहनीय क० कर्म के उ० उदय मे ह० हसते हैं उ० उत्सुक होते हैं से० वह के० केवली को न० नहीं है ते० इसलिये जा० यावत् नो० नहीं त० तैसे के० केवली

सूत्र छउमत्थेणं भंते! मणूसे हसेज्जवा, उस्सुयाएज्जवा? हंता हसेज्जवा उस्सुयाएज्जवा जहाणं भंते ! छउमत्थे मणूसे हसेज्जवा उस्सुआएज्जवा, तहाणं केवलीवि हसेज्जवा, उस्सुयाएज्जवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं, जाव नोणं तहा केवली हसेज्जवा उस्सुआएज्जवा ? गोयमा ! जण्णं जीवा चरित्तमोहणिज्जकम्मस्स उदएणं हसंतिवा उस्सुयायंतिवा , सेणं केवलिस्स नत्थि, से तेणट्ठेणं जाव नोणं तहा केवली

भावार्थ दूर के, नजीक के सब शब्दों जान व देख सकते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य क्या हसते हैं व उत्सुक होते हैं ? हां गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य हसते हैं व उत्सुक होते हैं. अहो भगवन् ! जैसे छद्मस्थ मनुष्य हसते हैं व उत्सुक होते हैं वैसे ही क्या केवली हसते हैं व उत्सुक होते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से केवली नहीं हसते हैं यावत् उत्सुक नहीं होते हैं ? अहो गौतम ! चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से जीव हसते हैं व उत्सुक होवे हैं वह केवली को नहीं है

शब्दार्थ ह० हसे उ० उत्सुक होवे ॥ ३ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ह० हसते हुवे उ० उत्सुक होते हुवे क० कितनी क० कर्म प्रकृतियों वं० बांधे गो० गौतम स० सात प्रकार का वं० बंध अ० आठ प्रकार का वं० बंध ॥ ४ ॥ णे० नारकी भं० भगवन् ह० हसते हुए उ० उत्सुक होते हुवे क० कितनी क० कर्म प्रकृतियों वं०

सूत्र हसेजवाउस्सुया एज्जवा ॥३॥ जीवेणं भंते ! हसमाणेवा उस्सुयमाणेवा कइकम्मपगडीओ बंधइ ? गोयमा सत्तविहबंधएवा, अट्ठविह बंधएवा. ॥ ४ ॥ णेरइएणं भंते ! हसमाणे उस्सुयमाणे कतिकम्म पगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधएवा, अट्ठविह बंधएवा. एवं जाव वेमाणिए ॥ ५ ॥ जीवाणं भंते ! हसमाणावा, उस्सुयमाणावा कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सत्तविहबंधगावा, अट्ठविह

भावार्थ इसलिये केवली हसते नहीं है व उत्सुक नहीं होते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीव हसताहुवा व उत्सुक होता हुवा कितने कर्म बांधे ? अहो गौतम ! जिन को आयुष्य कर्म का बंध नहीं होवे उस को सात कर्म प्रकृतियों और जिस को आयुष्य कर्म का बंध होवे उस को आठ कर्म प्रकृतियों का बंध होता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! नारकी इस तरह हसता हुवा व उत्सुक होता हुवा कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध करे ? अहो गौतम ! सात कर्म प्रकृतियों का अथवा आठ कर्म प्रकृतियों का बंध करे. ऐसे ही वैमानिकतक के

शब्दार्थ वांधते हैं गो० गौतम स० सात प्रकार से आ० आठ प्रकार से बं० बांधते हैं ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ५ ॥ जी० जीव भं० भगवन् ह० हसते हुवे पूर्ववत् ॥ ६ ॥ छ० छद्मस्थ भं० भगवन् नि०

सूत्र बंधगावा, ॥ णेरइयाणं भंते ! हसमाणा उस्सुयमाणा कतिकम्मप्पगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्ज सत्तविह बंधगा, अहवा सत्तविह बंधगावि, अट्ठविह बंधगावि, अहवा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय, एवं पोहत्तिएहिं, जीवेगिंदिय वज्जो तियभंगो, ॥ ६ ॥ छउमत्थेणं भंते ! मणूसे निद्दाएज्जवा, पयलाएज्जवा ? हंता

भावार्थ चौविस दंडक का जानना ॥ ७ ॥ अब बहुत जीव आश्रित पृच्छा करते हैं. अहो भगवन् ! बहुत जीव हसते व उत्सुक होते कितनी प्रकृतियों का बंध करे ? अहो गौतम ! आयुष्य रहित सात का बंध करे व आयुष्य सहित आठ का बंध करे. अहो भगवन् ! बहुत नारकी हसते उत्सुक होते कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध करे ? अहो गौतम ! सब जीव आयुष्य विना सात का भी बंध करते हैं और आयुष्य सहित आठ का बंध करते हैं. वैसे ही यहां कहना १ सब सात का बंध करनेवाले होते हैं २ सात का बंध करनेवाले अथवा आठ का बंध करनेवाले ३ सात और आठ का बंध करनेवाले. ऐसे तीन भांगे एकेन्द्रिय के पांच दंडक छोडकर शेष १९ दंडक में पाते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! छद्मस्थ जीव सुख से शयन

पदार्थ — निद्रालेवे प० प्रचलालेवे हं० हां नि० निद्रालेवे प० प्रचलालेवे ज० जैसे ह० हसे त० तैसे ण० विशेष द० दर्शनावरणीय क० कर्म का उ० उदय से नि० निद्रालेवे प० प्रचलालेवे से० वह के० केवली को भ० नहीं है अ० अनंत ॥ ७ ॥ जी० जीव भं० भगवन् नि० निद्रालेते प० प्रचलालेते क० कितनी क० कर्म प्रकृतियों बं० बांधता है गो० गौतम स० सात प्रकार का अ० आठ प्रकार का बं० बंध ए० ऐसे जा० यावत् वे०

सूत्र — निद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा, जहा हसेज्जा तहा. णवरं दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, निद्दायइवा, पयलाइवा ॥ सेणं केवलिस्स नत्थि अणंतं चेव ॥ ७ ॥ जीवेणं भंते ! निद्दायमाणेवा पयलायमाणेवा कतिकम्मप्पगडीओ बंधइ ? गोयमा ! सत्तविह बंधएवा अट्ठविहबंधएवा, एवं जाव वेमाणिए ॥ पोहत्तिएसु जीवेगिंदि-

भावार्थ — किया जावे वैसी निद्रा या चलते, बैठते जो निद्रा आवे वैसी निद्रा क्या लेते हैं ? हां गौतम ! छद्मस्थ उक्त प्रकार की निद्रा लेते हैं वगैरह सब वर्णन छद्मस्थ जीव को हसने का आलापक कहा वैसे ही जानना परंतु यहां पर दर्शनावरणीय कर्म के उदय से निद्रा आती है वह कर्म केवली को नहीं होने से केवली निद्रा नहीं लेते हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जीव निद्रा, व प्रचला करते कितनी प्रकृतियों का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! जीव निद्रा व प्रचला करते सात अथवा आठ कर्म प्रकृतियों का बंध करता है. ऐसे ही चौविसही

शब्दार्थ वैमानिक में पो० बहुत जी० जीव ए० एकेन्द्रियवर्जित ति० तीन भं० भांगे ॥ ८ ॥ ह० इन्द्रका भं० भगवन् ह० हरिणगमेषी स० शक्र का दू० दूत इ० स्त्री का ग० गर्भ सा० साहरते हुवे किं० क्या ग० गर्भ से ग० गर्भ में सा० लेजाता है ग० गर्भ से जो० योनिमें सा० लेजाता है जो० योनिसे ग० गर्भ में सा० लेजाता है जो० योनिसे जो० योनि में सा० लेजाता है गो० गौतम नो० नहीं ग० गर्भ से ग०

मूल यव्वज्जो तिय भंगो ॥ ८ ॥ हरीणं भंते ! हरिणेगमेसी सक्कदूए इत्थीगब्भं साहरमाणे किं गब्भाओ गब्भं साहरइ, गब्भाओ जोणिं साहरइ, जोणीओ गब्भं साहरइ, जोणीओ जोणिं साहरइ ? गोयमा ! नो गब्भाओ गब्भं साहरइ, नो गब्भाओ जोणिं

भावार्थ दंडक का जानना. बहुत जीव आश्रित एकेन्द्रिय छोडकर शेष के तीन भांगे जानना ॥ ८ ॥ अवस्वापिनी निद्रा में गर्भ का साहरण होता है, इसलिये गर्भ साहरण का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्रका दूत [पादात्यानिकका अधिपति] हरिणगमेषी स्त्रीगर्भका साहरण करते क्या जीव सहित पुद्गल पिंड रूपी गर्भ को १ एक गर्भाशय से दूसरे गर्भ में रखता है ? २ गर्भाशय से योनि में रखता है ? ३ योनि से लेकर गर्भ में रखता है ? अथवा ४ योनि से लेकर योनि में रखता है ? अहो गौतम ! शक्र देवेन्द्र का दूत हरिणगमेषी गर्भ को १ गर्भाशय से नीकालकर गर्भाशय में नहीं रखता है, २ गर्भाशय से लेकर योनिद्वार में नहीं रखता है, और ३ योनि से लेकर योनि में नहीं रखता है परंतु ४ योनि से नीका-

शब्दार्थ गर्भ में सा० लेजाता है नो० नहीं ग० गर्भ से जो० योनि में सा० लेजाता है नो० नहीं जो० योनि से जो० योनि में सा० लेजाता है प० स्पर्श कर अ० सुख पूर्वक जो० योनि से ग० गर्भ में सा० लेजाता है ॥२॥ प० समर्थ भं० भगवन् ह० हरिणगमेषी स० शक्र का दू० दूत इ० स्त्री का ग० गर्भ न० नखाग्र से रो० रोमकूप से सा० रखने को नी० नीकालने को हं० हां प० समर्थ नो० नहीं त० उसको ग० गर्भ को किं० कुच्छ भी आ० आबाधा वि० दुःख उ० उत्पात छ० चर्मछेद पु० पुनः क० करे ए० यह सु० सूक्ष्म

सूत्र साहरइ, नो जोणीओ जोणिं साहरइ, परामुसिय २ अव्वाबाहेणं अव्वाबाहं जोणीओ गब्भं साहरइ ॥ ९ ॥ पभूणं भंते ! हरिणेगमेसी सक्कस्सणं दूए इत्थीए गब्भं नहसिरंसिवा रोमकुवंसिवा, साहरित्तएवा, नीहरित्तएवा ? हंता पभू । णो चेवणं तस्स गब्भस्स किंचि आबाहंवा, विबाहंवा, उप्पाएज्ज, छविच्छेदं पुण करेज्जा, ए सु-

भावार्थ लेकर गर्भाशय में रखता है. और गर्भ साहरण करते गर्भ को किसी प्रकार की बाधा पीडा नहीं होती है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र का दूत हरिणगमेषी नखाग्र से या रोम कूप में स्त्री का गर्भ रखने को अथवा बाहिर नीकालने को क्या समर्थ है ? हां गौतम ! वह हरिणगमेषी देवता गर्भ को नखाग्र से रखने को व नीकालने को समर्थ है तथापि उस गर्भ को किसी प्रकारकी बाधा, पीडा उत्पात व चर्म का छेद नहीं होता है. गर्भ साहरण करने का इतना सूक्ष्मपना रहा हुवा है. देव शक्ति से गर्भ नीकालते व रखते

शब्दार्थ सा० रखना नी० नीकालना ॥ १० ॥ ते० तेणं का० काल ते० उस स० समय में स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर का अं० शिष्य अ० अतिमुक्तक ना० नाम के कु० छोटे स० साधु प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत त० तब से० वह अ० अतिमुक्त कु० कुमार स० श्रमण अ० एकदा म० बहुत वु० वृष्टि में नि० पड़ती हुई क० कक्षा में प० पात्र र० रजोहरण आ० लेकर ब० बाहिर सं० नीकला नि० णाहिकोलियं त० तब से० उस उ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमणने वा० प्रवाह को प० बहता हुआ

सूत्र दुमं च णं साहरिजमाणं, नीहरिजमाणं, ॥ १० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्तेनामं कुमारसमणे पगइभद्दए जाव विणीए तएणं से अइमुत्ते णामं कुमारसमणे अण्णयाकयाई महावुट्ठिकायंसि निवयमाणंसि कक्खपडिग्गहरयहरण मायाए बहिया संपट्ठिए विहाराए तएणंसे अइमुत्ते कुमार समणे वाहयं वहयमाणं पासइ २ त्ता, मट्टियापालिं बंधइ २ णावियामे २ नाविओवि

भावार्थ जाना नहीं जाता है ॥ १० ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के भद्रिक यावत् विनीत प्रकृतिवान् अतिमुक्त (अइमुत्ते) कुमार श्रमण एकदा महावृष्टि हुए पीछे रजोहरण व पात्र लेकर

१ आठ वर्ष पहिले दीक्षा ग्रहण नहीं करते हैं, परंतु अतिमुक्त कुमारने छ वर्ष में ही दीक्षा ग्रहण की थी जिससे कुमार श्रमण नाम रखा था.

शब्दार्थ पा० देखकर म० मृत्तिका की पा० पाल बं० बांधकर ना० नाव मे० मेरी ना० नाविक समान णा० नावा को अ० यह प० पात्र उ० पानी में प० वहाते हुवे अ० क्रीडा करते हैं तं० उसे थे० स्थविरोंने अ०देखा जे० जहां स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ते० वहां उ० आये ए० ऐसा व० बोले ए० ऐसे ख० निश्चय दे० देवानुप्रिय का अं० शिष्य अ० अतिमुक्त णा० नामके कु० कुमार श्रमण से० वह भं० भगवन् क०कितने भ० भवग्रहण में सि० सिझेंगे बु० बुझेंगे जा० यावत् अं० अंतकरेंगे अ० आर्य स० श्रमण भं० भगवन् म० महावीर ते० उन थे० स्थविर को ए० ऐसे व० बोले ए० ऐसे अ० आर्य म०मेरा अं०शिष्य

सूत्र वणावमयं पडिग्गहयं उदगंसि पवाहमाणे अभिरमइ तंच थेरा अदक्खु जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति २ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी, अइमुत्तेनामं कुमारसमणे । सेणं भंते ! अइमुत्ते कुमारसमणे कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिहिति जाव अंतं करेंहिति? अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे ते थेरे एवं वयासी एवं खलु अज्जो ! ममं अंतेवासी. अइमुत्तेणामं कुमारसमणे पगइभद्दए जाव विणीए,

भावार्थ बाहिर भूमिका को गये. वहांपर उन अतिमुक्त कुमार श्रमणने पानी का प्रवाह वहता हुवा देखकर मृत्तिका से पाल बांधकर पानी को रोका. इस तरह पानी को रोककर 'यह मेरी नाव है यह मेरी नाव है.' ऐसा संकल्प किया. जैसे नाविक नाव को चालता है वैसे ही अतिमुक्त कुमार श्रमण नाव रूप पात्र को

शब्दार्थ सा० रखना नी० नीकालना ॥ १० ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर का अं० शिष्य अ० अतिमुक्तक ना० नाम के कु० छोटे स० साधु प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत त० तब से० वह अ० अतिमुक्त कु० कुमार स० श्रमण अ० एकदा म० बहुत वृ० वृष्टि में नि० पडती हुई क० कक्षा में प० पात्र र० रजोहरण आ० लेकर ब० बाहिर सं० नीकला वि० स्थंडिलकेलिये त० तब से० उस उ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमणने वा० प्रवाह को प० वहता हुआ

सूत्र हुमं च णं साहरिज्जवा, नीहरिज्जवा, ॥ १० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्तनामं कुमारसमणे पगइभद्दए जाव विणीए तएणं से अइमुत्ते णामं कुमारसमणे अण्णयाकयाइं महावुट्ठिकायंसि निवयमाणंसि कक्खपडिग्गहरयहरण मायाए बहिया संपट्ठिए विहाराए तएणंसे अइमुत्ते कुमार समणे वाहयं वहयमाणं पासइ २ त्ता, मट्टियपालिं बंधइ २ णावियामे २ नाविओवि

भावार्थ जाना नहीं जाता है ॥ १० ॥ उस काल उस समय में श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के भद्रिक यावत् विनीत प्रकृतिवान् अतिमुक्त (अइमंते) कुमार श्रमणे एकदा महावृष्टि हुए पीछे रजोहरण व पात्र लेकर

१ आठ वर्ष पहिले दीक्षा ग्रहण नहीं करते हैं, परंतु अतिमुक्त कुमारने छ वर्ष में ही दीक्षा ग्रहण की थी जिससे कुमार श्रमण नाम रखा था.

शब्दार्थ श्रमण भं० भगवंत म० महावीर से ए० ऐसा वु० कहाये हुवे स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना करते हैं अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण को अ० ग्लानिरहित सं० अंगीकार करते हैं जा० यावत् वे० वैयावृत्य क० करते हैं ॥ ११ ॥ ते० उस का०काल ते० उस स० समय में म० महाशुक्र क० देवलोक से म० महास्वर्ग वि० विमान से दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म०

सूत्र सारीरिए चेव, ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तासमाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हंति जाव वेयावडियं करंति ॥ ११ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्काओ कप्पाओ महासग्गाओ विमाणाओ दो देवा महिड्डिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ

भावार्थ अंत करेंगे. इसलिये अहो आर्यों ! तुम उन की हीलना, निंदा, खिसना, गर्हा व तिरस्कार मत करो परंतु अग्लानपने उन को अंगीकार करो, उपष्टंभ करो और भक्त, पान व विनय से उन की वैयावृत्य करो. क्योंकि अतिमुक्त कुमारश्रमण अंत करनेवाले चरिम शरीरी हैं. जब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने ऐसा कहा तब वे स्थविर भगवंत श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर अतिमुक्त कुमार श्रमण को अग्लानपने अंगीकार करनेलगे यावत् भक्त पान व विनय से उन की वैय्यावृत्य करनेलगे ॥ ११ ॥ उस काल उस समयमें महाशुक्र देवलोकमेंसे महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले दो देव श्रीश्रमण भगवंत महावीर

शब्दार्थ अ० अतिमुक्त कु० कुमारश्रमण प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० वह अ० अतिमुक्त कु० कुमार स० श्रमण ए० इस भ० भव में सि० सिझेंगे जा० यावत् अं० अंत करेंगे ते० इसलिये मा० मत तु० तुम अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण की ही० हीलना करो नि० निंदाकरो खि० खिसना करो ग० गर्हाकरो अ० निरस्कार करो तु० तुम अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण को अ० ग्लानि रहित सं० अंगीकार करो उ० ग्रहण करो भ० भक्त पा० पान वि० विनय से वे० वैय्यावृत्य क० करो अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण अं० अंत करने वाले अं० अंतिम शरीरी त० तब थे० स्थविर भ० भगवंत स०

सूत्र सेणं अइमुत्ते कुमारसमणे एमेणंचेव भवग्गहणेणं, सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ ॥ तं मा णं अज्जा ! तुब्भे अइमुत्तं कुमारसमणं हीलह, निंदह, खिंसह, गरहह अवमण्णह, तुब्भेणं देवाणुप्पिया अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हह, अगिलाए उवगिण्हह अगिलाए भंत्तेणं, पाणेणं विणएणं, वेयावडियं करेह, अइमुत्तेणं कुमारसमणे अंतकरे चेव, अंतिम-

भावार्थ पानी में बहता हुवा रखकर खेलने लगे. इस तरह करते हुवे अतिमुक्त कुमार को स्थविरने देखे और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आकर ऐसे बोले कि अहो भगवन् ! आपका अतिमुक्त नामक शिष्य कितने भव में सिझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे. श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी बोले कि अहो आर्यों मेरा शिष्य-अतिमुक्त नामक कुमार-साधु इसी भव में सिझेंगे यावत् सब दुःखों का

शब्दार्थ श्रमण भ० भगवंत म० महावीर से ए० ऐसा वु० कहाये हुवे स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना करते हैं अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण को अ० ग्लानिरहित सं० अंगीकार करते हैं जा० यावत् वे० वैयावृत्य क० करते हैं ॥ ११ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में म० महाशुक्र क० देवलोक से म० महास्वर्ग वि० विमान से दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म०

सूत्र सारीरिए चेव, ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तासमाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हंति जाव वेयावडियं करंति ॥ ११ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्काओ कप्पाओ महासग्गाओ विमाणाओ दो देवा महिड्डिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ

भावार्थ अंत करेंगे. इसलिये अहो आर्यों ! तुम उन की हीलना, निंदा, खिंसना, गर्हा व तिरस्कार मत करो परंतु अग्लानपने उन को अंगीकार करो, उपष्टंभ करो और भक्त, पान व विनय से उन की वैयावृत्य करो. क्योंकि अतिमुक्त कुमारश्रमण अंत करनेवाले चरिम शरीरी हैं. जब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने ऐसा कहा तब वे स्थविर भगवंत श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर अतिमुक्त कुमार श्रमण को अग्लानपने अंगीकार करनेलगे यावत् भक्त पान व विनय से उन की वैय्यावृत्य करनेलगे ॥ ११ ॥ उस काल उस समयमें महाशुक्र देवलोकमेंसे महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले दो देव श्रीश्रमण भगवंत महावीर

शब्दार्थ अ० अतिमुक्त कु० कुमारश्रमण प० प्रकृति भद्रिक जा० यावत् वि० विनीत से० वह अ० अतिमुक्त कु० कुमार स० श्रमण ए० इस भ० भव में सि० सिझेंगे जा० यावत् अं० अंत करेंगे ते० इसलिये मा० मत तु० तुम अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण की ही० हीलना करो निं० निंदाकरो खिं० खिसना करो ग० गर्हाकरो अ० निरस्कार करो तु० तुम अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण को अ० ग्लानि रहित सं० अंगीकार करो उ० ग्रहण करो भ० भक्त पा० पान वि० विनय से वे० वैय्यावृत्य क० करो अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण अं० अंत करने वाले अं० अंतिम शरीरी त० तब थे० स्थविर भ० भगवंत म०

सूत्र सेणं अइमुत्ते कुमारसमणे एमेणंचेव भवग्गहणेणं, सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ ॥ तं मा णं अज्जो ! तुब्भे अइमुत्तं कुमारसमणं हीलह, निंदह, खिंसह, गरहह अवमण्णह, तुब्भेणं देवाणुप्पिया अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हह, अगिलाए उवगिण्हह अगिलाए भत्तेणं, पाणेणं विणएणं, वेयावडियं करेह, अइमुत्तेणं कुमारसमणे अंतकरे चेव, अंतिम-

भावार्थ पानी में वहता हुआ रखकर खेलने लगे. इस तरह करते हुवे अतिमुक्त कुमार को स्थविरने देखे और श्रमण भगवंत महावीर स्वामी की पास आकर ऐसे बोले कि अहो भगवन् ! आपका अतिमुक्त नामक शिष्य कितने भव में सिझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे. श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी बोले कि अहो आर्यो मेरा शिष्य अतिमुक्त नामक कुमार साधु इसी भव में सिझेंगे यावत् सब दुःखों का

शब्दार्थ श्रमण भ० भगवत म० महावीर से ए० ऐसा वु० कहाये हुवे स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना करते हैं अ० अतिमुक्त कु० कुमार श्रमण को अ० ग्लानिरहित सं० अंगीकार करते हैं जा० यावत् वे० वैयावृत्य क० करते हैं ॥ ११ ॥ ते० उस का० काल ते० उस स० समय में म० महाशुक्र क० देवलोक से म० महास्वर्ग वि० विमान से दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म०

सूत्र सारीरिए चेव, ॥ तएणं ते थेरा भगवंतो समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तासमाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिण्हंति जाव वेयावडियं करंति ॥ ११ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्काओ कप्पाओ महासग्गाओ विमाणाओ दो देवा महिड्डिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ

भावार्थ अंत करेंगे. इसलिये अहो आर्यों ! तुम उन की हीलना, निंदा, खिसना, गर्हा व तिरस्कार मत करो परंतु अग्लानपने उन को अंगीकार करो, उपष्टंभ करो और भक्त, पान व विनय से उन की वैयावृत्य करो. क्योंकि अतिमुक्त कुमारश्रमण अंत करनेवाले चरिम शरीरी हैं. जब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने ऐसा कहा तब वे स्थविर भगवंत श्रमण भगवंत को वंदना नमस्कार कर अतिमुक्त कुमार श्रमण को अग्लानपने अंगीकार करनेलगे यावत् भक्त पान व विनय से उन की वैय्यावृत्य करनेलगे ॥ ११ ॥ उस काल उस समयमें महाशुक्र देवलोकमेंसे महर्द्धिक यावत् महानुभागवाले दो देव श्रीश्रमण भगवंत महावीर

शब्दार्थ महानुभाग वाले स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अं० समीप पा० आये त० तत्र ते० वे दे० देव स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को म० मन से वं० वंदना करते हैं न० नमस्कार करते हैं न०नमस्कार करके इ० यह ए० ऐसा वा० प्रश्न पु० पुछते हैं क० कितने दे०देवानुप्रिय के अं० शिष्य स० सो सि०सिझेंगे जा० यावत् अं० अंत क० करेंगे न०तब स०श्रमण भ०भगवन्त म० महावीर ते० उन दे० देवों ते म० मन से पु० पुछाये हुवे ते० उन दे० देवोंको म० मनसे ही इ० यह ए० ऐसा म० मेरे स० सात अं० शिष्य स० सो० सि० सिझेंगे जा० यावत् अं० अंत करेंगे त० तब ते० वे दे० देवों स० श्रमण

सूत्र महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया ॥ तएणं ते देवा समणं भगवं महावीरं मणसाचेव वंदंति नमंसंति नमंसंतित्ता, मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं पुच्छंति-कइणं देवाणुप्पियाणं अंतेवासिसयाइं, सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति ? ॥ तएणं समणे भगवं महावीरे तेहिं देवेहिं मणसा पुट्ठे, तेसिं देवाणं मणसाचेव इमं एयारूवं वागरणं वागरेइ - एवं खलु देवाणुप्पिया ममं सत्त अंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति

भावार्थ स्वामीकी पास आये और उनोंने श्रमण भगवंत महावीर स्वामीको मन से ही वंदना नमस्कार कर ऐसा प्रश्न पूछा कि अहो देवानुप्रिय ! आप के कितने सो शिष्य सिझेंगे, बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे? उन मन से पूछे हुवे प्रश्नोंका महावीर स्वामीने मन से ही उत्तर दिया कि मेरे सात सो शिष्य सिझेंगे, बुझेंगे

शब्दार्थ भगवंत म० महावीर से म० मन में पु० पुछा हुवा म० मन से ही इ० यह ए० ऐसा वा०प्रश्न वा०कहाहुवा हृ० [redacted] जा० यावत् हि० हृदय स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वंदना करते हैं न० नमस्कार करते हैं म० मन से ही सु० शुश्रुषा करते ण० नमस्कार करते अ० सन्मुख जा० यावत् प० पर्युपासना करते हैं ॥ १२ ॥ ते० उस काल ते० उस समय में स० श्रमण भ० भगवंत का जे० ज्येष्ठ अं० शिष्य इं० इन्द्रभूति अ० अनगार जा० यावत् अ० पास उ० ऊर्ध्व जा० जंघा जा० यावत् वि०विचरते

सूत्र जाव अंतं करेहिंति ॥ तएणं ते देवा समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा पुट्ठेण मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरियासमाणा, हट्ठतुट्ठ जाव हियया समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति, मणसा चेव सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा जाव पज्जुवासंति ॥ १२ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी, इंदभूईणामं अणगारे जाव अदूरसामंते उड्ढं जाणू

भावार्थ यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे. इस तरह मन से पूछे हुवे प्रश्नों का मन से ही उत्तर सुनकर उक्त देवों हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हुवे, श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार किया और मन से ही शुश्रूषा व नमस्कार करते हुवे सन्मुख यावत् पर्युपासना करने लगे॥१२॥उस काल उस समयमें श्री श्रमण भगवंत के ज्येष्ठ शिष्य इन्द्रभूति अनगार पास में ऊर्ध्व जानु व अधोशिर करके ध्यान करते हुवे विचरते

शब्दार्थ हैं त० तब त० उन भ० भगवंत गो० गौतम को ज्ञा० ध्यान में व० रहते हुवे इ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुआ ए० ऐसे ख० निश्चय दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म०महानुभाग वाले स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अं० पास पा०आये तं० इसलिये नो० नहीं अ० मैं ते० उन दे० देवोंको जा० जानता हूं क० कितने क० देवलोक में से स० स्वर्ग में से वि० विमान में से क० किस अ० अर्थ केलिये इ० यहां ह० शीघ्र आ० आये तं० इसलिये ग० जाऊं भ०

मूत्र जाव विहरइ तएणं तस्स भगवओ गोयमस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेया रूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु दो देवा महिड्डिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया. तं नो खलु अहं ते देवा जाणामि कयराओ कप्पाओ वा सग्गाओवा विमाणाओवा कस्सवा अत्थस्स अट्ठाए इहं हव्व-मागया तं गच्छामिणं समणं भगवं महावीरं जाव पज्जुवासामि. इमाइं चणं एयारूवाइं

भावार्थ . उस समय में भगवान् गौतम को ध्यान करते हुवे ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुवा कि श्री श्रमण भग-वन्त महावीर स्वामी की पास दो महर्द्धिक यावत् महानुभाग देव आये हुवे हैं. परंतु वे देवों कौन से देव लोक के विमान में से किसलिये आये हुवे हैं सो मैं नहीं जानता हूं; इसलिये मैं श्री श्रमण भगवन्त की पास जाऊं और पर्युपासना करके उक्त प्रश्नों पूछूं. ऐसा विचार करके श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामीकी पास

शब्दार्थ भगवन्त म० महावीर की जा० यावत् प० पर्युपासना करूं इ० ये ए० ऐसे वा० प्रश्न पु० पूछूं ति० ऐसा करके ए०ऐसा सं०विचार करके उ०उपस्थित होकर जे० जहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर जा० यावत् प०पर्युपासना करते हैं. गो० गौतम स०श्रमण भ० भगवंत म० महावीर ए०ऐसे व०बोले से० अथ णू० शंकादर्शी त० तुझे गो० गौतम झा० ध्यान में व० रहते इ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय जा० यावत् जे० जहां म० मेरी अं० समीप ते० वहां ह० शीघ्र आ० आया से० अथ णू० शंकादर्शी अ०

सूत्र वागरणाइं पुच्छिस्सामि त्तिकट्टु। एवं संपेहेइ २ त्ता उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पज्जुवासइ। गोयमादि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-सेणूणं तव गोयमा! झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव जेणेव मम अंतिए तेणेव हव्वमागए, से णूणं गोयमा! अट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि. तं गच्छाहिणं गोयमा! एए चेव देवा इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेहिंति, । तएणं

भावार्थ गौतम स्वामी आये.श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामीने कहा कि अहो गौतम! तुझे ध्यान करते हुवे ऐसा अध्यवसाय यावत् संकल्प हुवा कि ये महर्द्धिक देवों कहां से व किसलिये मेरी पास आये हुवे हैं? और इसका निर्णय करने को तू मेरी पास आया हुवा है यह क्या सत्य है? हां भगवन्! यह सत्य है. तब हे गौतम! तू इन देवों की पास जा और तुझे ये देवों उक्त प्रश्नों का उत्तर देवेंगे. इस तरह भगवन्त की-

शब्दार्थ हैं त० तब त० उन भ० भगवंत गो० गौतम को झा० ध्यान में व० रहते हुवे इ० यह ए० ऐसा अ० अध्यवसाय जा० यावत् स० उत्पन्न हुआ ए० ऐसे ख० निश्चय दो० दो दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् प०महानुभाग वाले स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर की अं० पास पा०आये तं० इसलिये नो० नहीं अ० मैं ते० उन दे० देवोंको जा० जानता हूं क० कितने क० देवलोक में से स० स्वर्ग में से वि० विमान में से क० किस अ० अर्थ केलिये इ० यहा ह० शीघ्र आ० आये तं० इसलिये ग० जाऊं भ०

मूत्र जाव विहरइ तएणं तस्स भगवओ गोयमस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवं अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु दो देवा महिड्डिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया. तं नो खलु अहं ते देवा जाणामि कयराओ कप्पाओ वा सग्गाओवा विमाणाओवा कस्सवा अत्थस्स अट्ठाए इहं हव्व-मागया तं गच्छामिणं समणं भगवं महावीरं जाव पज्जुवासामि. इमाइं चणं एयारूवाइं

भावार्थ थे. उस समय में भगवान् गौतम को ध्यान करते हुवे ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुवा कि श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की पास दो महर्द्धिक यावत् महानुभाग देव आये हुवे हैं. परंतु वे देवों कौन से देव लोक के विमान में से किसलिये आये हुवे हैं सो मैं नहीं जानता हूं; इसलिये मैं श्री श्रमण भगवन्त की पास जाऊं और पर्युपासना करके उक्त प्रश्नों पूछूं. ऐसा विचार करकेश्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामीकी पास

शब्दार्थ हुवे खि० शीघ्र प० सामने गये जे० जहां भ० भगवन्त गो० गौतम ते० वहां उ० आये जा० जावत् ण० नमस्कार कर ए० ऐसे व० बोले ए० ऐसा ख० निश्चय भं० भगवन् अं० हम म० महाशुक्र म० महास्वर्ग वि० विमान से दो० दो देव म०महर्द्धिक जा०यावत् पा० आये त० तब अ० हम स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीर को वं० वांदे न० नमस्कार किया म० मन से ए० ऐसा वा० प्रश्न पु० पूछे क० कितने भं० भगवन् दे० देवानुप्रिय के अं०शिष्यसि० सिझेंगे जा० यावत् अं० अंतकरेंगे त०तब स०श्रमण भ०भगवन्त

सूत्र ड्डीया जाव पाउब्भूया । तएणं अम्हे समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो २ मणसा चेव इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छामो-कइणं भंते ! देवाणुप्पियाणं अंतेवासि सयाइं सिज्झिहिंति, जाव अंतं करेहिंति ! तएणं समणे भगवं महावीरे अम्हेहिं मणसा पुट्ठे अम्हं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरेइ, एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम सत्तअंतेवासिसयाइं जाव अंतं करेहिंति, तएणं अम्हे समणेणं भगवया महा-

भावार्थ महर्द्धिक यावत् महानुभाग दो देव महाशुक्र देवलोक में महा स्वर्ग विमान से आये हुवे हैं. और हमने श्री श्रमण भगवंत महावीर को मन से ऐसा प्रश्न पूछा कि आप के कितने सो शिष्य सिझेंगे, बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे. इस तरह मन से पूछाये हुवे प्रश्नों का श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामीने मन से ही ऐसा उत्तर दिया कि अहो देवानुप्रिय ! मेरे सातसो शिष्य सिझेंगे, बुझेंगे यावत्

शब्दार्थ अर्थ स० योग्य है० हां अ० है तं० इसलिये ग० जा गो० गौतम ए० ये दे० देव इ० इन ए० ऐसे वा० प्रश्नों वा० कहेंगे त० तब भ० भगवान गो० गौतम स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर की अ० आज्ञा होते स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को वं० वंदना की ण० नमस्कार किया जे० जहां ते० वे दे० देव तं० तहां पा० नीकला ग० जाने को त० तब ते० वे दे० देव भ० भगवन्त गो० गौतम को ए० आते हुवे पा० देखा ह० हृष्ट तुष्ट जा० यावत् हि० हृदय खि० शीघ्र अ० उपस्थित

सूत्र भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णेसमाणे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, जेणेव ते देवा तेणेव पाहारेत्थगमणाए ॥ तएणं ते देवा भगवं गोयमं एजमाणं पासइ हट्ठ तुट्ठ जाव हियया खिप्पामेव अब्भुट्ठेंति २ त्ता, खिप्पामेव पच्चुवगच्छंति, जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति २ जाव णमंसित्ता एवं वयासी भंते ! अम्हे महासुक्काओ कप्पाओ महासग्गाओ विमाणाओ दो देवा महि-

भावार्थ आज्ञा मीलने पर भगवान् गौतम स्वामी उक्त दोनों देवों की पास जाने को नीकले. उस समय में उक्त देवों भगवन्त श्री गौतम स्वामी को आते हुवे देखकर हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित होते हुए शीघ्र उपस्थित हुवे और भगवन्त श्री गौतम स्वामी की पास गये. उन को नमस्कार कर ऐसा बोले कि अहो पूज्य ! हम

शब्दार्थ अ० अभ्याख्यान ए० यह दे० देवों को भं० भगवन् अ० असंयति व० वक्तव्यता सि० होवे गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० योग्य णि० निष्ठुर व० वचन ए० यह दे० देवोंको दे० देवोंको भं० भगवन् सं० संयतासंयति व० वक्तव्यता सि० होवे गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० योग्य अ० असद्भूत ए० यह दे० देवोंको से० अब किं० क्या खा० कहावे दे० देव गो० गौतम दे० देव नो० नोसंयति व० वक्तव्यता सि० होवे ॥ १४ ॥ दे० देव भं० भगवन् क० कौनसी भा० भाषा से भा०

सूत्र णो इणट्ठे समट्ठे, अब्भक्खाणमेयं देवाणं ॥ देवाणं भंते ! असंजयाइ वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, णिट्ठुरवयण मेयं देवाणं ॥ देवाणं भंते ! संजयासंजयाइ वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे असब्भूयमेयं देवाणं॥ से किं खाइणं भंते ! देवाइ वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! देवाणं नो संजयाइ वत्तव्वंसिया ॥ १४ ॥ देवाणं

भावार्थ देवों को असंयति कहना ? यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों कि ऐसा कहने से देवों को निष्ठुर (कठोर) वचन लगता है. क्या भगवन् ! देवों को संयतासंयति कहना ? यह अर्थ भी योग्य नहीं है क्यों कि देवों को यह असद्भूत (अछता भाव) होवे. तब अहो भगवन् ! देवों को क्या कहना ? अहो गौतम ! 'देव नोसंयति हैं' ऐसा कहना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! देव कितनी भाषा बोलते हैं और कौनसी भाषा

शब्दार्थ म० महावीर से पु० पुछाये हूवे अ० हम को म० मनसे ही इ० यह ए० ऐसा वा० प्रश्न वा० कहा ए० ऐसे दे० देवानुप्रिय शेष पूर्ववत् ति० ऐसा क० करके भ० भगवन्त गो० गौतम को वं० वंदना की ण० नमस्कार किया जा० जिस दि० दिशी से पा० आये ता० उसी दि० दिशी में प० पीछे गये ॥१३॥ भं० भगवन् गो० गौतमने स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को ए० ऐसा व० कहा दे० देव भं० भगवन् सं० संयाति ति० ऐसी व० वक्तव्यता सि० होवे. गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० योग्य

सूत्र वीरेणं मणसा पुट्ठेणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरियासमाणा समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो त्तिकट्टु भगवं गोयमं वंदइ नमंसइ जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥ १३ ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं एवं वयासी- देवाणं भंते ! संजयाइ वत्तव्वंसिया ? गोयमा !

भावार्थ सब दुःखों का अंत करेंगे. इस तरह मन से पूछे हुवे प्रश्नों का उत्तर मनद्वारा मीलने से हमने श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को वंदना नमस्कार किया. इतना कहकर वे देवों श्री गौतम स्वामी को वंदना नमस्कार करके जहां से आये थे वहां पीछे गये ॥ १३ ॥ भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को ऐसे बोले कि अहो भगवन् ! क्या 'देव संयति हैं' ऐसी वक्तव्यता होवे ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. क्योंकि देवों को संयति कहने से अभ्याख्यान (असत्य आल) होता है. तब क्या भगवन् !

शब्दार्थ अ० अभ्याख्यान ए० यह दे० देवों को भं० भगवन् अ० असंयति व० वक्तव्यता सि० होवे गो०गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० योग्य णि० निष्ठुर व० वचन ए० यह दे० देवोंको दे० देवोंको भं० भगवन् सं० संयतासंयति व० वक्तव्यता सि० होवे गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० योग्य अ० असद्भूत ए० यह दे० देवोंको से० अब किं० क्या खा० कहावे दे० देव गो० गौतम दे० देव नो० नोसंयति व० वक्तव्यता सि० होवे ॥ १४ ॥ दे० देव भं० भगवन् क० कौनसी भा० भापा से भा०

सूत्र णो इणट्ठे समट्ठे, अब्भक्खाणमेयं देवाणं ॥ देवाणं भंते ! असंजयाइ वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, णिट्ठुरवयण मेयं देवाणं ॥ देवाणं भंते ! संजयासंजयाइ वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे असब्भूयमेयं देवाणं॥ से किं खाइणणं भंते ! देवाइ वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! देवाणं नो संजयाइ वत्तव्वंसिया ॥ १४ ॥ देवाणं

भावार्थ देवों को असंयति कहना ? यह अर्थ योग्य नहीं हैं क्यों कि ऐसा कहने से देवों को निष्ठुर (कठोर) वचन लगता है. क्या भगवन् ! देवों को संयतासंयति कहना ? यह अर्थ भी योग्य नहीं है क्यों कि देवों को यह असद्भूत (अछता भाव) होवे. तव अहो भगवन् ! देवों को क्या कहना ? अहो गौतम ! 'देव नोसंयति हैं' ऐसा कहना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! देव कितनी भाषा बोलते हैं और कौनसी भाषा

शब्दार्थ बोले क० कौनसी भा० भाषा भा० बोलाती हुई वि० विशिष्ट होवे गो० गौतम दे० देव अ० अर्ध मागधी भा० भाषा भा० बोले स० वही अ० अर्ध मागधी भा० भाषा भा० बोलाती हुई वि० विशिष्ट होवे ॥ १५ ॥ के० केवली भं० भगवन् अं० अंतकरने वाले अ० अंतिम शरीर वाले को जा० जानते हैं पा० देखते हैं हं० हां गो० गौतम जा० जानते है पा० देखते हैं ज० जैसे भं० भगवन के० केवली अं०

सूत्र भंते ! कयराए भासाए भासंति, कयरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सइ ? गोयमा ! देवाणं अद्ध मागहाए भासाए भासंति, सावियणं अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सइ । केवलीणं भंते ! अंतकरंवा अंतिमसारीरियंवा जाणइ पासइ, ? हंता गोयमा ! जाणति पासति ॥१५॥ जहाणं भंते केवली अंतकरंवा अंतिमसारीरियंवा जाणइ पाणइ, तहाणं छउमत्थेवि अंतकरंवा अंतिमसारीरियंवा जाणइ पासइ ?

भावार्थ बोलने से विशिष्टता पाते हैं ? अहो गौतम ! देवों अर्धमागधि भाषा बोलते हैं और अर्धमागधि भाषा बोलते हुवे विशिष्टता पाते हैं ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! केवली अंतकरनेवाले अथवा अंतिम शरीरवाले को जाने देखे ? हां गौतम ! केवली अंतकरनेवाले व अंतिम शरीरवाले को जाने देखे. अहो भगवन् ! जैसे केवली अंत करनेवाले व अंतिम शरीरी को जानते देखते हैं वैसे ही क्या छद्मस्थ जानते देखते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं हैं. छद्मस्थ सुनकरके व प्रमाण से जानते

शब्दार्थ अंतकरने वाले अं० अंतिम शरीर वाले को जा० जानते हैं पा० देखते हैं त० तैसे छ० छद्मस्थ भी अं० अंत करने वाले अं० अंतिम शरीर वाले को जा० जानते हैं पा० देखते हैं गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अ० अर्थ स० समर्थ सो० सुनकर प० प्रमाण से से० अथ किं० क्या तं० वह सो० सुनकर के० केवली के० केवली के श्रावक के० केवली सा० श्राविका का उ० सेवा करने वाला के० केवली की उ० सेवा करने वाली के त० स्वयं बुद्ध त० स्वयं बुद्ध के सा० श्रावक सा० श्राविका उ० सेवा करने वाला उ०

सूत्र गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे सोच्चा जाणइ पासइ, पमाणओवा ॥ से किंतं सोच्चा ? सोच्चाणं ! केवलिस्सवा, केवलिसावयस्सवा, केवलिसावियाएवा, केवलिउवासगस्सवा, केवलिउवासियाएवा, तप्पक्खियस्सवा, तप्पक्खियसावयस्सवा, तप्पक्खियसावियाएवा, तप्पक्खियउवासगस्सवा, तप्पक्खिय उवासियाएवा, सेतं सोच्चा ॥ से किंतं

भावार्थ देखते हैं. सुनने का क्या अर्थ है ? केवली, केवली के श्रावक, श्राविका, सेवा करनेवाले, सेवा करनेवाली, स्वयंबुद्ध, स्वयंबुद्ध के श्रावक, श्राविका, सेवा करनेवाले व सेवा करनेवालियों के मुख से श्रवण करके छद्मस्थ मनुष्य अंत करनेवाले व अंतिम शरीरी को जानते व देखते हैं. अब प्रमाण का क्या अर्थ ? प्रमाण के चार भेद कहे हैं. १ चक्षु वगैरह इन्द्रियों से जाना जावे सो प्रत्यक्ष २ चिन्ह संबंध स्मरण से जो जाना जावे सो अनुमान; जैसे धूम्र से अग्नि का जानना. ३ उपमा से जाना जावे सो उपमा प्रमाण जैसे

शब्दार्थ सेवा करने वाली के से० अथ किं० क्या प० प्रमाण च० चार प्रकार के प० प्रत्यक्ष अ० अनुमान ओ० उपमा आ० आगम ज० जैसे अ० अनुयोग द्वार में त० तैसे णे० जानना प० प्रमाण ते० उस से प० आगे णो० नहीं अ० आत्मागम णो० नहीं अ० अनंतरागम प० परंपरागम ॥ १६ ॥ के० केवली भं० भगवन च० छेल्ला कर्म च० चरिम निर्जरा जा० जाने पा० देखे हं० हां गो० गौतम जा० जाने पा० देखे

सूत्र पमाणे ? पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-पच्चक्खे, अणुमाणे, ओवमे; आगमे, जहा अणुओगदारे तहा णेयव्वं पमाणं जाव तेण परं णो अत्तागमे, णो अनंतरागमे, परंपरागमे ॥ १६ ॥ केवलीणं भंते ! चरिमकम्मंवा, चरिमणिज्जरंवा जाणइ पासइ? हंता गोयमा ! जाणइ पासइ ॥ जहाणं भंते ! केवली चरिम कम्मवा चरिमणि-

भावार्थ गाय जैसा गवयं, ४ गुरु की परंपरा से आप्त वचनों को सुनकर जानना सो आगम प्रमाण. इस का विशेष विवरण अनुयोगद्वार सूत्र में कहा है. आत्मागम अर्थ से वीतराग को आत्मागम, गणधरों को अनंतरागम और शिष्योंको परंपरागम. सूत्र से गणधरों को आत्मागम, शिष्यों को अनंतरागम व प्रशिष्यों को परंपरागम जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! क्या केवली चरिम कर्म व चरिम निर्जरा को जानते हैं व

१. वन का पशु विशेष, इसे रोझ भी कहते हैं.

पदार्थ

ज० जैसे भं० भगवन् के० केवली च० चरिम कर्म ज० जैसे अं० अंत करने वाले आ० आलापक त० तैसे च० चरिम कर्म से अ० अपरिशेष णे० जानना. ॥ १७ ॥ के० केवली भं० भगवन् प० प्रकृष्ट म० मन व० वचन धा० धारण करे हं० हां धा० धारन करे ज० जो भं० भगवन् के० केवल ज्ञानी प० प्रकृष्ट म० मन व० वचन धा० धारणकरे तं० उसे वे० वैमानिक देव जा० जानते हैं पा० देखते हैं गो० गौतम अ०

सूत्र

जरंवा जाणइ पासइ ? हंता गोयमा ! जाणइ पासइ । जहाणं भंते ! केवली चरिमकम्मंवा जहाणं अंतकरेणं आलावगो, तहा चरिम कम्मेणवि अपरिसेसिओ णेयव्वो ॥ १७ ॥ केवलीणं भंते ! पणीयं मणंवा, वइंवा धारेज्जा ? हंता धारेज्जा ॥ जण्णं भंते ! केवली पणीयं मणंवा वइंवा धारेज्जा, तं णं वेमाणिया देवा जाणंति

भावार्थ

देखते हैं ? हां गौतम ! केवली चरिम कर्म व चरिम निर्जराको जानते व देखते हैं. जैसे केवली चरिम कर्म व निर्जरा को जानते हैं वैसे ही क्या छद्मस्थ जानते हैं व देखते हैं ? अहो गौतम ! इस का सब अधिकार उपर के अंतकरे आलापक जैसे कहना ॥१७॥ अहो भगवन्! क्या केवली श्रेष्ठ मन वचन धारे—उन का व्यापार करे ? हां गौतम ! केवली श्रेष्ठ मन वचन का व्यापार करे. अहो भगवन् ! जो मन वचन केवली धारण करते हैं उन को वैमानिक देव क्या जानते व देखते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक वैमानिक देव जानते हैं व देखते हैं और कितनेक नहीं जानते हैं व नहीं देखते हैं. अहो भगवन् ! किस कारनसे

शब्दार्थ सेवा करने वाली के से० अथ किं० क्या प० प्रमाण च० चार प्रकार के प० प्रत्यक्ष अ० अनुमान ओ० उपमा आ० आगम ज० जैसे अ० अनुयोग द्वार में त० तैसे णे० जानना प० प्रमाण ते० उस से प० आगे णो० नहीं अ० आत्मागम णो० नहीं अ० अनंतरागम प० परंपरागम ॥ १६ ॥ के० केवली भं० भगवन् च० छेल्ला कर्म च० चरिम निर्जरा जा० जाने पा० देखे हं० हां गो० गौतम जा० जाने पा० देखे

सूत्र पमाणे ? पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-पच्चक्खे, अणुमाणे, ओवमे; आगमे, जहा अणुओगदारे तहा णेयव्वं पमाणं जाव तेण परं णो अत्तागमे, णो अनंतरागमे, परंपरागमे ॥ १६ ॥ केवलीणं भंते ! चरिमकम्मंवा, चरिमणिज्जरंवा जाणइ पासइ? हंता गोयमा ! जाणइ पासइ ॥ जहाणं भंते ! केवली चरिम कम्मवां चरिमणि-

भावार्थ गाय जैसा गवय, ४ गुरु की परंपरा से आप्त वचनों को सुनकर जानना सो आगम प्रमाण. इस का विशेष विवरण अनुयोगद्वार सूत्र में कहा है. आत्मागम अर्थ से वीतराग को आत्मागम, गणधरों को अनंतरागम और शिष्योंको परंपरागम. सूत्र से गणधरों को आत्मागम, शिष्यों को अनंतरागम व प्रशिष्यों को परंपरागम जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! क्या केवली चरिम कर्म व चरिम निर्जरा को जानते हैं व

१ वन का पशु विशेष, इसे रोझ भी कहते हैं.

दार्थ प० परंपर प० पर्याप्त अ० अपर्याप्त उ०उपयोगयुक्त उ० उपयोग रहित त०उन में जे० जो उ०उपयोग वाले जा० जानते पा० देखते हैं से० अथ ते० इसलिये तं० वैसे ही ॥ १८ ॥ प० समर्थ भं० भगवन् अ० अनुत्तरोपपातिक दे० देव त० वहां रहे हुवे इ० यहां रहे हुवे के० केवली की स० साथ आ० अलाप सं० संलाप क० करने को हं० हां प० समर्थ के० कैसे जा० यावत् प० समर्थ अ० अनुत्तरोपपातिक

सूत्र वण्णगा ते न जाणंति न पासंति । एवं अणंतर, परंपर, पज्जत्त, अपज्जत्ताय, उवउत्ता अणुवउत्ता, ॥ तत्थणं जे ते उवउत्ता ते जाणंति पासंति, से तेणट्ठेणं तंचेव ॥ १८ ॥ पभूणं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावंवा संलावंवा करेत्तए ? हंता पभू । से केणट्ठेणं जाव पभूणं अणुत्तरोववाइयादेवा जाव करेत्तए ? गोयमा ! जण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया

भावार्थ जान सकते हैं अर्थात् उपयोगवन्त अमायी सम्यग् दृष्टि परंपरा उत्पन्न होनेवाले पर्याप्त देव जान सकते हैं व देख सकते हैं. इसलिये ऐसा कहा गया है ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! अनुत्तरोपपातिक देव वहां रहे हुवे ही यहां मनुष्य लोक में रहे हुवे केवली की साथ आलाप संलाप करने को क्या समर्थ हैं ? हां गौतम ! वे देवों यहां पर केवली की साथ-आलाप संलाप करने को समर्थ हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से वे समर्थ हैं ? अहो

शब्दार्थ कितनेक जा० जानते हैं पा० देखते हैं से० अथ के० कैसे जा० यावत् ण० नहीं जा० जानते हैं गो० गौतम वे० वैमानिक दे० देव दु० दोप्रकार के प० कहे मा० मायावी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्न हुवे अ० अमायावी स० सम्यग् दृष्टि उ० उत्पन्न हुए त० उन में जे० जो ते० वे मा० मायावी मि० मिथ्यादृष्टि उ० उत्पन्न होने वाले ते० वे न० नहीं जा० जानते हैं न० नहीं पा० देखते हैं ए० ऐसे अ० अनंतर

सूत्र पासंति ? गोयमा ! अत्थेगइया जाणंति पासंति, अत्थेगइया णजाणंति णपासंति ॥ से केणट्ठेणं जाव ण,पासंति? गोयमा! वेमाणिया देवा दुविहा प०तं० माथिमिच्छादिट्ठिउववण्णगाय, अमायिसम्मादिट्ठिउववण्णगाय । तत्थणं जे ते माइमिच्छादिट्ठिउव-

भावार्थ कितनेक जानते, देखते हैं और कितनेक नहीं जानते हैं व नहीं देखते हैं ? अहो गौतम ! वैमानिक देव दो प्रकार के कहे हैं. १ मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न हुवे और २ अमायी सम्यग् दृष्टि उत्पन्न हुवे. उन में से मायी मिथ्यादृष्टि नहीं जान सकते व नहीं देख सकते हैं परंतु अमायी सम्यग् दृष्टि जान व देख सकते हैं. अमायी सम्यग्दृष्टि के दो भेद अनंतर उत्पन्न होनेवाले और परंपरा उत्पन्न होनेवाले. उन में से अनंतर उत्पन्न होनेवाले नहीं जान सकते हैं परंतु परंपरा उत्पन्न होनेवाले जान सकते हैं. परंपरा उत्पन्न होनेवाले के दो भेद पर्याप्त व अपर्याप्त उन में अपर्याप्त नहीं जान सकते हैं परंतु पर्याप्त जान सकते हैं. पर्याप्त के दो भेद उपयोग युक्त व उपयोग रहित उस में उपयोगवाले जान सकते हैं परंतु उपयोग बिना के नहीं

अर्थ केवली जा० यावत् पा० देखते हैं ॥ १९ ॥ अ० अनुत्तरोपपातिक भं० भगवन् दे० देव किं० क्या उ० उदित मोहवाले उ० उपशान्त मोहवाले खी० क्षीणमोहवाले गो० गौतम नो० नहीं उ० उदितमोहवाले उ० उपशांत मोहवाले णो० नहीं खी० क्षीणमोह वाले ॥ २० ॥ के० केवली भं० भगवन् आ०

सूत्र भवंति, से तेणट्ठेणं जण्णं इहगए केवली जाव पासइ ॥ १९ ॥ अणुत्तरोववाइयाणं भंते ! देवा किं उदिण्णमोहा, उवसंतमोहा, खीणमोहा ? गोयमा नो उदिण्णमोहा, उवसंतमोहा, णो खीणमोहा ॥ २० ॥ केवलीणं भंते ! आयाणेहिं जाणइ पासइ ?

भावार्थ अहो गौतम ! उन को अनंत मनोद्रव्य वर्गणा विशेषपनासे प्राप्त हुई है, सामान्यपना से प्राप्त हुई है, व सन्मुख हुई है. इसलिये अहो गौतम ! यहांपर केवली जो अर्थ, हेतु कहते हैं उन को अनुत्तर कल्पवासी देव वहां रहे हुवे जान सकते हैं व देख सकते हैं * ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! अनुत्तर कल्पवासी देव क्या उदित [उदय हुवा] मोहवाले हैं, उपशान्त मोहवाले हैं, या क्षीण मोहवाले हैं ? अहो गौतम ! वे उदित मोहवाले नहीं हैं वैसे ही क्षीण मोहवाले नहीं है परंतु उपशांत मोहवाले हैं ॥ २० ॥ अहो

* अनुत्तर कल्पवासी देवों का अवधिज्ञान संभिन्नलोकनाडीविषयवाला है. जो अवधिज्ञान लोक नाडी ग्राहक होता है वह मनोद्रव्य वर्गणा का ग्राहक भी होता है. और भी मात्र लोक का संख्यात भागवाला अवधिज्ञान होता है वह भी मनोद्रव्यग्राही होता है, तो लोक नाडी विषयवाला अवधिज्ञान क्यों मनोद्रव्यग्राही न होवे ? अर्थात् मनोद्रव्य वर्गणा ग्राही होवे

शब्दार्थ दे० देव जा० यावत् क० करने को गो० गौतम ज० जो अ० अनुत्तरोपपातिक दे० देव त० वहां रहे हुवे अ० अर्थ हे० हेतु प० प्रश्न का० कारन वा० व्याकरण पु० पुछते हैं त० उसे इ० यहां रहे हुए के० केवली अ० अर्थ जा० यावत् वा० कहते हैं ते० इसलिये ज० यदि भं० भगवन् गो० गौतम ते० उन दे० देवों को अ० अनंत म० मनोद्रव्य व० वर्गणा ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुखहुई ते० इसलिये के०

सूत्र चेव समाणा अट्ठंवा, हेउंवा, पसिणंवा कारणंवा, वागरणंवा पुच्छंति, तण्णं इहगए केवली अट्ठंवा जाव वागरणंवा वागरेइ से तेणट्ठेणं । जइणं भंते ! इहगए केवली अट्ठंवा जाव वागरेइ तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति पासंति ? हंता गोयमा ! जाणंति, पासंति । से केणट्ठेणं जाव पासंति ? गोयमा ! तेसिणं देवाणं अणंताओ मणोदव्व वग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ

भावार्थ गौतम ! * अनुत्तरकल्पवासी देव वहां रहे हुवे जो अर्थ, हेतु, प्रश्न, कारन, व्याकरण वगैरह पूछते हैं उन का उत्तर केवली यहां रहे हुवे देते हैं इसलिये वे देवता समर्थ हैं. अहो भगवन् ! यहां रहे हुवे केवली जो अर्थ, हेतु वगैरह कहते हैं उन को अनुत्तर कल्पवासी देव क्या वहां रहे हुवे जान व देख सकते हैं ? हां गौतम ! वे जान व देख सकते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से वे जान व देख सकते हैं ?

* बारहवा अच्युत देवलोक से उपरके देवलोक के देवताओं का मनुष्य लोक में आगमन नहीं होता है.

अर्थ काल में ए० इन ही अ० आकाश प्रदेश में ह० हस्त जा० यावत् उ० अवगाहकर चि० रहने को गो० गौतम णो० नहीं इ० यह अर्थ स० योग्य के० कैसे भं० भगवन् जा० यावत् के० केवली अ० इस स० समय में जे० जिन आ० आकाश प्रदेश में जा० यावत् चि० रहते हैं णो० नहीं प० समर्थ के० केवली से० आगामिक काल में ए० इनही में ह० हस्त जा० यावत् चि० रहने को गो० गौतम के० केवली को वी० वीर्य के स० योग सहित स० विद्यमान द० द्रव्य च० अस्थिर उ० उपकरण (अंगोपांग) भ०

सूत्र एसु चेव आगासपएसेसु हत्थंवा जाव उग्गाहित्ताणं चिट्ठित्तए ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! जाव केवलीणं अस्सिं समयंसि जेसु आगासपएसेसु जाव चिट्ठइ, णो णं पभू केवली सेयकालंसिवि एसुचेव हत्थंवा जाव चिट्ठित्तए ? गोयमा ! केवलिस्सणं वीरियस्स सजोगसद्दव्वयाए चलाइं उवगरणाइं भवंति, चलोवगरणट्ठयाएणं केवली अस्सिं समयंसि जेसु आगासपएसेसु हत्थंवा जाव

भावार्थ गत काल में हस्त, पांव, बाहु व जंघा अवगाह कर रहने को क्या समर्थ हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है. अहो भगवन् ! किस कारन से केवली इस वर्तमान समय में जिन प्रदेशों में हस्तादि अवगाहकर रहे हुवे हैं उन प्रदेशों में ही आगामिक काल में नहीं रह सकते हैं ? अहो गौतम ! केवली को वीर्यांतराय के क्षय से मन वचन व काया का व्यापार सहित विद्यमान जीव द्रव्य के भाव से अस्थिर अंगोपांग

शब्दार्थ इन्द्रिय से जा०जानें पा० देखे णो० नहीं इ० यह अर्थ स० समर्थ के० किसलिये जा० यावत् शेष पूर्ववत् ॥ २१ ॥ के० केवली भं० भगवन् अ० इस स० समय में जे० जिन आ० आकाश प० प्रदेश में ह० हस्त पा० पांव बा० बाहु उ० जंघा उ० अवगाह कर चि० रहते हैं प० समर्थ के० केवली से० आगामिक

सूत्र णो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं जाव केवलीणं आयाणेहिं न जाणइ न पासइ? गोयमा! केवलीणं पुरच्छिमेणं मियंपि जाणइ, अमियंपि जाणइ, जाव निव्वुडे दंसणे केवलिस्स से तेणट्ठेणं ॥ २१ ॥ केवलीणं भंते! अस्सिं समयंसि जेसु आगासपएसेसु हत्थंवा, पायंवा, बाहंवा, ऊरुंवा उग्गाहित्ताणं चिट्ठइ, पभूणं केवली सेयकालंसिवि

भावार्थ भगवन्! क्या केवली आदान (ग्रहण करने योग्य सो इन्द्रियों) से जानते हैं देखते हैं? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है. किस कारन से केवली इन्द्रियों से नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं? अहो गौतम! केवली पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व, अधो वगैरह दिशा में मर्यादा सहित जानते हैं और मर्यादा रहित भी जानते हैं, सब काल, सब भाव जानते देखते हैं. यावत् केवली को प्रगट ज्ञान दर्शन रहाहुवा है इसलिये वे केवली इन्द्रियों से नहीं जानते व नहीं देखते हैं॥२१॥ अहो भगवन्! इस समय में केवली जिन आकाश प्रदेश में अपने हस्त, पांव, बाहु व जंघा अवगाहकर रहे हुवे हैं. उन ही आकाश प्रदेश में अना-

सू उ० बताने को गो० गौतम चो० चौदहपूर्वी को अ० अनंत द्रव्य उ० उत्कारिका भे० भेद से तोडे हुवे ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुए भ० होते हैं ते० इसलिये जा० यावत् उ० बताने १० वैसे ही भं० भगवन् पं० पांचवा स० शतक का च० चौथा उ० उद्देशा स० समाप्त ॥ ५ ॥ ४ ॥
छ० छद्मस्थ भं० भगवन् म० मनुष्य ती० अतीत अ० अनंत सा० शाश्वत स० समय के० संपूर्ण सं०

णंताइं दव्वाइं उक्कारिया भेएणं भिज्जमाणाइं लद्धाइं पत्ताइं अभिसमण्णागयाइं भवंति, से तेणट्ठेणं जाव उवदंसित्तए ॥२४॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचम सयस्स चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ ४ ॥ * * * *

छउमत्थेणं भंते ! मणूसे तीय मणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं जहा पढमसए

भावार्थ

अहो भगवन् ! किस तरह चौदह पूर्वधारी एक घडे से सहस्र घडे यावत् एक दंड से सहस्र दंड बनाकर बताने को समर्थ हैं ? अहो गौतम ! भेद पांच प्रकार के कहे हुवे हैं १. खंडादि भेद सो अनेक टुकडे हुवे लोष्टादि २. प्रतर भेद सो पड नीकले अभ्रपटल ३ चूर्ण भेद तिलादि चूर्णवत् ४ अनुतटिका भेद अवटनट का भेद समान और ५. उत्कारिका भेद एरण्ड बीज समान. जो चौदह पूर्वधारी होते हैं उन को अनंत द्रव्य उत्कारिक भेद से भेदाये हुवे प्राप्त होते हैं; इस से वे अनेक रूप बनाकर बता सकते हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह पांचवा शतक का चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ ४ ॥

चतुर्थ उद्देशे में चौदह पूर्वधारी का महानुभाव कहा. उस से छद्मस्थ जीव सीझे ऐसी किसी को शंका

सूत्र

चिट्ठइ, णोणं पभू केवली सेयकालंसि त्रिएसुचेत्र, जाव चिट्ठित्तए से तेणट्ठेणं जाव वुचइ केवलीणं अस्सिं समयंसि जाव चिट्ठित्तए ॥ २२ ॥ पभूणं भंते ! चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्सं, पडाओ पडसहस्सं, कडाओ कडसहस्सं, रहाओ रहसहस्सं, छत्ताओ छत्तसहस्सं, दंडाओ दंडसहस्सं, अभिनिव्वट्टित्ता उवदंसेत्तए ? हंता पभू। से केणट्ठेणं पभू चोद्दसपुव्वी जाव उवदंसेत्तए ? गोयमा ! चोद्दसपुव्विस्सणं अ-

भावार्थ

होते हैं उ० अस्थिर उ० उपकरण कालयं के० केवली अ० इस स० समय में जे० जिन आ० आकाश प्रदेश में शेष पूर्ववत् ॥ २२ ॥ प०समर्थ भं०भगवन् चो०चौदहपूर्वी घ०घट से घ०घटसहस्र प०वस्त्र से प० वस्त्र सहस्र क० कट (छादडी से) क० कट सहस्र र० रथ से र० रथ सहस्र छ० छत्र से छ० छत्र सहस्र दं० दंड से दं० दंड सहस्र अ० करके उ० बताने को हं० हां प० समर्थ के० कैसे चो० चौदह पूर्वी जा०

होते हैं. इस तरह अस्थिर अंगोपांग होने से केवली वर्तमान समय में जिन प्रदेशों में हस्तादि अवगाहकर रहते हैं उन प्रदेशों में अनागत काल में नहीं रहते हैं ॥ २२ ॥ अब श्रुत केवली आश्री प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! चौदह पूर्वधारी श्रुत केवली क्या लब्धि के प्रभाव से एक घडे की नेश्राय से सहस्र घडे, एक वस्त्र से सहस्र वस्त्र, एक कट (छादडी) से सहस्र कट, एक रथ से सहस्र रथ, एक छत्र से सहस्र छत्र व एक दंड से सहस्र दंड बनाकर बताने को क्या समर्थ हैं ? हां गौतम ! चौदह पूर्वधारी समर्थ हैं.

शब्दार्थ — यावत् उ० बताने को गो० गौतम चो० चौदहपूर्वी को अ० अनंत द्रव्य उ० उत्कारिका भे० भेद से भि० तोडे हुवे ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुख हुए भ० होते हैं ते० इसलिये जा० यावत् उ० बताने को से० वैसे ही भं० भगवन् पं० पांचवा स० शतक का च० चौथा उ० उद्देशा स० समाप्त ॥ ५ ॥ ४ ॥

छ० छद्मस्थ भं० भगवन् म० मनुष्य ती० अतीत अ० अनंत सा० शाश्वत स० समय के० संपूर्ण सं०

सूत्र — णंताइं दव्वाइं उक्कारिया भेएणं भिज्जमाणाइं लद्धाइं पत्ताइं अभिसमण्णागयाइं भवंति, से तेणट्ठेणं जाव उवदंसित्तए ॥ २४ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचम सयस्स चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ ४ ॥

* * * *

छउमत्थेणं भंते ! मणूसे तीय मणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं जहा पढमसए

भावार्थ — अहो भगवन् ! किस तरह चौदह पूर्वधारी एक घडे से सहस्र घडे यावत् एक दंड से सहस्र दंड बनाकर बताने को समर्थ हैं ? अहो गौतम ! भेद पांच प्रकार के कहे हुवे हैं १ खंडादि भेद सो अनेक टुकडे हुवे लोष्टादि २ प्रतर भेद सो पड नीकले अभ्रपटल ३ चूर्ण भेद तिलादि चूर्णवत् ४ अनुतटिका भेद अवटतट का भेद समान और ५. उत्कारिका भेद एरण्ड बीज समान. जो चौदह पूर्वधारी होते हैं उन को अनंत द्रव्य उत्कारिक भेद से भेदाये हुवे प्राप्त होते हैं; इस से वे अनेक रूप बनाकर बता सकते हैं. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं यह पांचवा शतक का चौथा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ ४ ॥

चतुर्थ उद्देशे में चौदह पूर्वधारी का महानुभाव कहा. उस से छद्मस्थ जीव सीझे ऐसी किसी को शंका

संयम स॰ जन जस प॰ प्रथम श॰ शतक में च॰ चतुर्थ उ॰ उद्देशे में आ॰ आलापक त॰ तैसे ने॰ जानना जा॰ यावत् ॥ १ ॥ अ॰ अन्यतीर्थिक भं॰ भगवन् ए॰ ऐसा आ॰ कहते हैं जा॰ यावत् प॰ प्ररूपते हैं स॰ सब पा॰ प्राणी स॰ सब भू॰ भूत स॰ सब जी॰ जीव स॰ सब स॰ सत्व ए॰ ऐसी वे॰ वेदना

सूत्र

चउत्थ उद्देसे आलावगा तहा नेयव्वा जाव अलमत्थुत्ति वत्तव्वंसिया ॥ १ ॥ अण्णउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा सव्वेसत्ता, एवंभूयं वेयणं वेदंति. से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया एव माइक्खंति जाव वेदंति, जे ते एव माहंसु मिच्छाते एव माहंसु ॥ अहं पुण गोयमा! एव माइक्खामि जाव परूवेमि, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेयणं वेदंति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवंभूयं वेयणं वेदंति ॥

होवे इस की निवृत्ति के लिये पांचवा उद्देशा कहते हैं. अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य मात्र संयम से क्या सिझते हैं, बुझते हैं यावत् सब दुःखों का अंत करते हैं ? अहो गौतम ! प्रथम शतक के चतुर्थ उद्देशे में जैसा कहा वैसेही यहां जानना. अर्थात् छद्मस्थ मनुष्य नहीं सिझतेहैं यावत् सब दुःखों का अंत नहीं करते हैं परंतु ज्ञान दर्शन के धारक केवली ही सिझते हैं. क्यों कि उस से विशेष कुच्छ नहीं है. ॥ २ ॥ अहो

वेदते हैं से० अथ क० कैसा ए० यह भं० भगवन् ए० ऐसे गो० गौतम जे० जो ते० वे अ० अन्य तीर्थिक ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् वे० वेदते हैं जे० जो ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० मैं पु० पुनः गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं

सूत्र

से केणट्ठेणं ! अत्थेगइया तंचेव उच्चारेयव्वं ? गोयमा ! जेण पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा तहा वेयणं वेदंति तेणं पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेयणं वेदंति, जेणं पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा नो तहा वेयणं वेदंति, तेणं पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवंभूयं वेयणं वेदंति से तेणट्ठेणं तहेव ॥२॥ नेरइयाणं भंते ! किं एवंभूयं वेयणं वेदंति अणेवंभूयं वेयणं वेदंति ? गोयमा ! नेरइयाणं

भावार्थ

भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि सब प्राण भूत जीव व सत्व ऐवंभूते वेदना वेदते हैं तो यह किस तरह है ? अहो गौतम ! जो अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं वे मिथ्या हैं अर्थात् उन का कथन मिथ्या है. मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि कितनेक प्राण भूत सत्व व जीव एवंभूत वेदना वेदते हैं और कितनेक प्राण भूत जीव व सत्व अनेवंभूत वेदना वेदता हैं. अहो भगवन् !

१ जिसरीति से कर्म करना उसी रीति से उसको भोगना सो.

जा० यावत् प० प्ररूपता हूं जे० जो पा० प्राणी भू० भूत जी० जीव स० सत्व ज० जैसे क० किया हुवा क० कर्म त० तैसी वे०वेदना वे० वेदते हैं ते०वे पा०प्राण ए०एवंभूत वे०वेदना वे०वेदते हैं शेष सब पूर्ववत् ॥ २ ॥ पूर्ववत् ॥ ३ ॥ जं० जम्बूद्वीप में भा० भरत क्षेत्र में इ० इस उ० अवसर्पिणी के स० अवसर में

सूत्र

एवंभूयंवि वेयणं वेदेंति, अणेवंभूयंवि वेयणं वेदेंति ॥ से केणट्ठेणं तंचेव ? गोयमा ! जेणं नेरइयाणं जहा कडा कम्मा तहा वेयणं वेदेंति तेणं नेरइया एवंभूयं वेयणं वेदेंति जेणं नेरइया जहा कडा कम्मा णो तहा वेयणं वेदेंति तेणं नेरइया अणेवंभूयं वेयणं वेदेंति । से तेणट्ठेणं जाव वेमाणिया, संसारमंडलं नेयव्वं ॥ ३ ॥

किस तरह ? अहो गौतम ! प्राण भूतादि जिसरीति से कर्मों किये वैसी वेदना वेदते हैं वे प्राण भूतादि एवंभूत वेदना वेदते हैं और जो प्राण भूत जिसरीति से कर्मों किये वैसी वेदना नहीं वेदते हैं अनेवंभूत वेदना वेदते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी एवंभूत वेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! नारकी एवंभूत अनेवंभूत ऐसी दोनोंप्रकार की वेदना वेदते हैं. अहो भगवन् ! यह किस तरह ? अहो गौतम ! जो नारकी जैसे कर्म किये वैसी वेदना वेदते हैं वे एवंभूत वेदना वेदते हैं और जो नारकी जैसे कर्म किये वैसी वेदना नहीं वेदते हैं वे अनेवंभूत वेदना वेदते हैं. इस तरह वैमानिक तक जानना. यह संसार-चक्र में परिभ्रमण करनेवाले जीवों की वक्तव्यता कही. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र

शब्दार्थ क० कितने कु० कुलकर हो० थे गो० गौतम स० सात ए० ऐसे तीर्थंकर मा० माता पि० पिता प० प्रथम सि० शिष्या च० चक्रवर्ती मा० मता इ० स्त्री रत्न ब० बलदेव वा० वासुदेव मा० माता पि० पिता ए० इन के प० प्रतिशत्रु ज० जैसे स० समवायांग में ना० नाम की प० परिपाटी ने० जानना ॥ ५ ॥ ५ ॥ क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव अ० अल्प आ० आयुष्यपने का क० कर्म प० करते हैं गो०

सूत्र जंबुद्दीवेणं भंते ! इह भारहेवासे इमीसे उसप्पिणीए समाए कइ कुलगरा होत्था ? गोयमा ! सत्त, एवं तित्थयरा मायरो पियरो पढमा सिस्सिणीओ, चक्कवट्टी, मायरो, पियरो इत्थिरयणं, बलदेववासुदेवा, वासुदेव मायरो पियरो एएसिं पडिसत्तू जहा समवाए नाम परिवाडी तहा नेयव्वा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ पंचम सयस्स पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥५ ॥ ५ ॥ * * * *

कहणं भंते ! जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरंति ? गोयमा ! पाणे अइवाइत्ता,

भावार्थ में इस अवसर्पिणी में कितने कुलकर होते हैं ? अहो गौतम ! सात कुलकर होते हैं. ऐसे ही तीर्थंकर व उनके माता, पिता प्रथम शिष्य व शिष्या चक्रवर्ती, व उनके माता, पिता, स्त्री रत्न बलदेव वासुदेव व उन के माता, पिता व प्रतिशत्रु [प्रतिवासुदेव] का अधिकार जैसे समवायांग सूत्र में कहा है वैसे ही यहां जानना. अहो भगवन् ! आप के वचन सत्य हैं. यह पांचवा शतक का पांचवा उद्देशा पूर्ण हुवा ॥५॥५॥

पांचवे उद्देशे के अंत में उत्तम पुरुषों के नामों कहे हैं. अब उत्तमता व अधमता किस तरह से प्राप्त

शब्दार्थ जा० यावत् प० प्ररूपता हूं जे० जो पा० प्राणी भू० भूत जी० जीव स० सत्व ज०. जैसे क० किया हुवा क० कर्म त० तैसी वे०वेदना वे० वेदते हैं ते०वे पा०प्राण ए०एवंभूत वे०वेदना वे०वेदते हैं शेष सूत्र पूर्ववत् ॥ २ ॥ पूर्ववत् ॥ ३ ॥ जं० जम्बूद्वीप में भा० भरत क्षेत्र में इ० इस उ० अवसर्पिणी के स० अवसर में

सूत्र एवंभूयंवि वेयणं वेदंति, अणेवंभूयंवि वेयणं वेदंति ॥ से केणट्ठेणं तंचेव ? गोयमा ! जेणं नेरइयाणं जहा कडा कम्मा तहा वेयणं वेदेंति तेणं नेरइया एवंभूयं वेयणं वेदेंति जेणं नेरइया जहा कडा कम्मा णो तहा वेयणं वेदेंति तेणं नेरइया अणेवंभूयं वेयणं वेदेंति । से तेणट्ठेणं जाव वेमाणिया, संसारमंडलं नेयव्वं ॥ २ ॥

भावार्थ यह किस तरह ? अहो गौतम ! प्राण भूतादि जिसरीति से कर्मों किये वैसी वेदना वेदते हैं वे प्राण भूतादि एवंभूत वेदना वेदते हैं और जो प्राण भूत जिसरीति से कर्मों किये वैसी वेदना नहीं वेदते हैं वे अनेवंभूत वेदना वेदते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी एवंभूत वेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! नारकी एवंभूत अनेवंभूत ऐसी दोनोंप्रकार की वेदना वेदते हैं. अहो भगवन् ! यह किस तरह ? अहो गौतम ! जो नारकी जैसे कर्म किये वैसी वेदना वेदते हैं वे एवंभूत वेदना वेदते हैं और जो नारकी जैसे कर्म किये वैसी वेदना नहीं वेदते हैं वे अनेवंभूत वेदना वेदते हैं. इस तरह वैमानिक तक जानना. यह संसार-चक्र में परिभ्रमण करनेवाले जीवों की वक्तव्यता कही. ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र

शब्दार्थ दी० दीर्घायुष्य का क० कर्म प० करते हैं ॥ २ ॥ क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव अ० अशुभ दी० दीर्घायुष्य का क० कर्म प० करते हैं गो० गौतम पा० प्राणियों की अ० हिंसा करने से मृ० मृषा व० व० बोलने से त० तथारूप स० श्रमण मा० ब्राह्मण की ही० हीलना करने से निं० नींदने से खिं० खिंसना करने से ग० गर्हा करने से अ० तीरस्कार करने से अ० अन्यतर अ० अमनोज्ञ अ० अप्रीति का० कारन से अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम प० देकर ए० ऐसे ख० निश्चय जी० जीव जा० यावत् प० करते हैं ॥ ३ ॥ क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव सु० शुभ दी० दीर्घ आयुष्य का क० कर्म

सूत्र पडिलाभेत्ता एवं खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरंति ॥ २ ॥ कहणं भंते ! जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरंति ? गोयमा ! पाणे अइवाएत्ता, मुसं वइत्ता तहारूवं समणंवा माहणंवा हीलित्ता, निंदित्ता, खिंसित्ता, गरहित्ता, अवमाणित्ता, अण्णयरेणं अमणुण्णेणं, अप्पीइ कारएणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभित्ता, एवं खलु जीवा जाव पकरंति ॥ ३ ॥ कहणं भंते ! जीवा सुभ दीहाउयत्ताए कम्मं

भावार्थ श्रमण माहण को फासुक एषणिक अशनादिक देने से जीव दीर्घ आयुष्य बांधते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन्! जीव कैसे अशुभ दीर्घायुष्य बांधते हैं ? अहो गौतम ! प्राणियों का वध करने से, मृषा बोलने से, व तथारूप श्रमण माहण की हीलना, निंदा, खिंसना, गर्हा व तिरस्कार करने से, वैसे ही अन्य अमनोज्ञ अप्रीति कारक अशनादि देने से जीव अशुभ दीर्घायुष्य बांधते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीव कैसे शुभ

शब्दार्थ गौतम पा० प्राणियों का अ० अतिपात करके मु० मृषा व० बोल करके त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को अ० अफ्रासुक अ० अनेषणिक अ० अन्न पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम से प० देकर ए० ऐसे जी० जीव अ० अल्प आ० आयुष्यपने का क० कर्म प० करते हैं ॥ १ ॥ क० कैसे भं० भगवन् जी०जीव दी०दीर्घ आ०आयुष्यपने का क०कर्म प०करतेहैं गो०गौतम नो०नहीं पा०प्राणियोंका अ० अतिपात करने से नो० नहीं मु०मृषा व०बोलने से त०तथारूप स०श्रमण मा०ब्राह्मण को फा०फासुक ए० एषणिक अ० अन्न पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम प० देने से ए० ऐसे ख० निश्चय जी० जीव

सूत्र मुसं वइत्ता, तहारूवं समणंवा माहणंवा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण पाण खाइम साइमेणं पडिलाभेत्ता एवं खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरंति ॥ १ ॥ कहणं भंते ! जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरंति ? गोयमा ! नो पाणे अइवाइत्ता, नो मुसं वइत्ता, तहारूवं समणंवा माहणंवा फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं

भावार्थ होती है सो बताते हैं. अहो भगवन् ! किस तरह से जीव अल्पायुष्य का कर्म करते हैं ? अहो गौतम ! प्राणियों का वध करने से, मृषा बोलने से, व तथारूप श्रमण माहण को अफ्रासुक अनेषणिक आहार, पानी, खादिम व स्वादिम देने से जीव अल्प आयुष्य बांधते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव कैसे दीर्घ आयुष्य बांधते हैं ? अहो गौतम ! प्राणियों का वध नहीं करने से, मृषा नहीं बोलने से व तथाभूत

शब्दार्थ दी० दीर्घायुष्य का क० कर्म प० करते हैं ॥ २ ॥ क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव अ० अशुभ दी० दीर्घायुष्य का क० कर्म प० करते हैं गो० गौतम पा० प्राणियों की अ० हिंसा करने से मृ० मृषा व० व० बोलने से त० तथारूप स० श्रमण मा० ब्राह्मण की ही० हीलना करने से निं० नींदने से खिं० खिंसना करने से ग० गर्हा करने से अ० तीरस्कार करने से अ० अन्यतर अ० अमनोज्ञ अ० अप्रीति का० कारन से अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम प० देकर ए० ऐसे ख० निश्चय जी० जीव जा० यावत् प० करते हैं ॥ ३ ॥ क० कैसे भं० भगवन् जी० जीव सु० शुभ दी० दीर्घ आयुष्य का क० कर्म

सूत्र पडिलाभेत्ता एवं खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरंति ॥ २ ॥ कहणं भंते ! जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरंति ? गोयमा ! पाणे अइवाएत्ता, मुसं वइत्ता तहारूवं समणंवा माहणंवा हीलित्ता, निंदित्ता, खिंसित्ता, गरहित्ता, अवमाणित्ता, अण्णयरेणं अमणुण्णेणं, अप्पीइ कारएणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभित्ता, एवं खलु जीवा जाव पकरंति ॥ ३ ॥ कहणं भंते ! जीवा सुभ दीहाउयत्ताए कम्मं

भावार्थ श्रमण माहण को फासुक एषणिक अशनादिक देने से जीव दीर्घ आयुष्य बांधते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जीव कैसे अशुभ दीर्घायुष्य बांधते हैं ? अहो गौतम ! प्राणियों का वध करने से, मृषा बोलने से, व तथारूप श्रमण माहण की हीलना, निंदा, खिंसना, गर्हा व तिरस्कार करने से, वैसे ही अन्य अमनोज्ञ अप्रीति कारक अशनादि देने से जीव अशुभ दीर्घायुष्य बांधते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जीव कैसे शुभ

शब्दार्थ गौतम पा० प्राणियों का अ० अतिपात करके मु० मृषा व० बोल करके त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को अ० अफ्रासुक अ० अनेषणिक अ० अन्न पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम से प० देकर ए० ऐसे जी० जीव अ० अल्प आ० आयुष्यपने का क० कर्म प० करते हैं ॥ १ ॥ क० कैसे भं० भगवन् जी०जीव दी०दीर्घ आ०आयुष्यपने का क०कर्म प०करतेहैं गो०गौतम नो०नहीं पा०प्राणियोंका अ० अतिपात करने से नो० नहीं मु०मृषा व०बोलने से त०तथारूप स०श्रमण मा०ब्राह्मण को फा०फ्रासुक ए० एषणिक अ० अन्न पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम प० देने से ए० ऐसे ख० निश्चय जी० जीव

मुसं वइत्ता, तहारूवं समणंवा माहणंवा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण पाण खाइम साइमेणं पडिलाभेत्ता एवं खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरंति ॥ १ ॥ कहणं भंते ! जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरंति ? गोयमा ! नो पाणे अइवाइत्ता, नो मुसं वइत्ता, तहारूवं समणंवा माहणंवा फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं

भावार्थ होती है सो बताते हैं. अहो भगवन् ! किस तरह से जीव अल्पायुष्य का कर्म करते हैं ? अहो गौतम ! प्राणियों का वध करने से, मृषा बोलने से, व तथारूप श्रमण माहण को अफ्रासुक अनेषणिक आहार, पानी, खादिम व स्वादिम देने से जीव अल्प आयुष्य बांधते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव कैसे दीर्घ आयुष्य बांधते हैं ? अहो गौतम ! प्राणियों का वध नहीं करने से, मृषा नहीं बोलने से व तथाभूत

शब्दार्थ अ० अप्रत्याख्यान मि० मिथ्यादर्शन कि० क्रिया सि० क्वचित् क० करें सि० क्वचित् नो० नहीं क० करे अ० अथ से० उन को भं० किरियाणा अ० प्राप्त होवे त० उस प० पीछे स० सब ता० वे प० पतली होती हैं ॥ ५ ॥ गा० गृहपतिका भं० किरियाना वि० बेचने वाला का क० मोललेनेवाला मं० किरि-

सूत्र दंसणवत्तिया ? गोयमा ! आरंभिया किरिया कज्जइ, परिग्गाहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया कज्जइ, मिच्छादंसणकिरिया सिय कज्जइ सिय नो कज्जइ ॥ अह से भंडे अभिसमण्णागए भवइ, तओसे पच्छा सव्वाओ ताओ पयणुईभवंति ॥ ५ ॥ गाहावइस्सणं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेज्जा, भंडेयसे

भावार्थ वाला गाथापति को क्या आरंभिकी क्रिया लगती है, परिग्रहिकी क्रिया लगती है, मायाप्रत्ययिकी क्रिया लगती है, अप्रत्याख्यान प्रत्ययिकी क्रिया लगती है या मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! इस तरह किरियाने की गवेषणा करनेवाले गाथापति को आरंभिकी, परिग्राहिकी, अप्रत्याख्यान प्रत्ययिकी व माया प्रत्ययिकी क्रिया लगती है; और मिथ्यादर्शन क्रिया क्वचित् लगती है व क्वचित् नहीं लगती है. और जब वह किरियाना गवेषणा करते हुवे प्राप्त हो जावे तो उक्त सब क्रियाओं पतली हो जाती हैं क्योंकि गवेषणा करनेमें वह उद्यमी बना हुवा था सो उद्यम हीन हो गया ॥ ५ ॥ किरियाने का व्यापार करनेवाले की पास से ग्राहक किरियाना अंगीकार करे परंतु उसने

शब्दार्थ प० करते हैं पूर्ववत् ॥ ४ ॥ गा० गाथापति का भं० भगवन् भं० किरियाना वि० विक्रय करने वाला का के० कोई भं० किरियाना अ० लेजावे त० उस भं० भगवन् भं० किरियाना की अ० गवेषणा करने वाले को किं० क्या आ० आरंभिकी क्रिया क० करता है प० परिग्रहिकी मा० माया प्रत्ययिकी अ० प्रत्याख्यान मि० मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी गो० गौतम आ० आरंभिकी कि० क्रिया प० परिग्रहिकी मा० माया प्रत्ययिकी

सूत्र पकरंति ? गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता, नो मुसं वइत्ता. तहारूवं समणंवा, माहणंवा, वंदित्ता जाव पज्जुवासेत्ता, अण्णयरेणं मणुण्णेणं पीइकारएणं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभित्ता. एवं खलु जीवा जाव पकरंति ॥ ४ ॥ गाहावइस्सणं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स केइ भंडं अवहरेजा तस्सणं भंते ! भंडं अणुगवेसमाणस्स किं आरंभिया किरिया कज्जइ, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणीया मिच्छा-

भावार्थ दीर्घायुष्य बांधते हैं ? अहो गौतम ! प्राणातिपात नहीं करने से, मृषा नहीं बोलने से, तथारूप श्रमण माहण को वंदना नमस्कार करनेसे व अन्य मनोज्ञ प्रीति उत्पन्न करनेवाले अशनादि देनेसे जीव शुभ दीर्घायुष्य बांधते हैं ॥ ४ ॥ शुभाशुभ कर्मों की उपार्जना क्रिया से होती है इसलिये क्रिया का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! किरियाने का व्यापार करनेवाला गाथापति के किरियाने की कोई चोरी करे. और चोरी में गया हुवा किरियाने की वह गाथापति गवेषणा करे. अब उस समय में उस गवेषणा करने

शब्दार्थ करते हैं सि० क्वचित् नो० नहीं क० करते हैं क० मोललेने वाले को ता० वे स० सब प० पतली होती हैं ॥ ६ ॥ गा० गाथापति भं० भगवन् भं० किरियाना वि० खरीदने वाले को जा० यावत् भं० किरियाना से० उस की पास उ० लाये क० खरीदने वाले को शेष पूर्ववत् मि० मिथ्या दर्शन कि० क्रिया की भ०

सूत्र सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ कइयस्सणं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति ॥ ६ ॥ गाहावइस्सणं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स जाव भंडे से उवणीए सिया, कइयस्सणं भंते ! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ, गाहावइस्सवा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया ? गोयमा ! कइयस्स ताओ भंडाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जंति, मिच्छादंसणकिरिया भयणाए ॥ गाहावइस्सणं ताओ सव्वाओ

भावार्थ हक को उक्त सब क्रियाओं पतली होती हैं ॥ ६ ॥ किरियाना वेचनेवाला गाथापति की पास से ग्राहक ने किराना खरीदा और ग्रहण भी कर लीया तब अहो भगवन् ! उस ग्राहक को क्या आरंभिकी आदि क्रियाओं लगती हैं ! और गाथापति को भी क्या आरंभिकी आदि क्रियाओं लगती हैं ? अहो गौतम ! उस किराने से ग्राहक को आरंभिकी, परिग्रहिकी, मायाप्रत्ययिकी व अप्रत्याख्यान क्रियाओं लगती हैं. मिथ्या दर्शन क्रिया क्वचित् लगती है व क्वचित् नहीं लगती है. और गाथापति को उक्त सब क्रियाओं पतली

शब्दार्थ याना सा० ग्रहण करे भं० किरियाना भी से० उस को अ० नहीं आया हुआ सि० होवे गा० गाथापति का भं० भगवन् ता० उस भं० किरियाने से किं० क्या आ० आरंभिकी कि० क्रिया क० करता है जा० यावत् मि० मिथ्या दर्शन कि० क्रिया क० करता है क० मोललेने वाले को ता० उस भं० किरियाने से आ० आरंभिकी कि० क्रिया जा० यावत् मि० मिथ्या दर्शन कि० क्रिया गो० गौतम गा० गाथापति को ता० उस भं० किरियाने से आ० आरंभिकी कि० क्रिया क० करता है जा० यावत् अ० अप्रत्याख्यान कि० क्रिया क० करते हैं मि० मिथ्या दर्शन सि० क्वचित् क०

सूत्र अणुवणीए सिया गाहावइस्सणं भंते! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ? कइयस्सवा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ, जाव मिच्छादंसण किरिया कज्जइ? गोयमा! गाहावइस्स ताओ भंडाओ आरंभिया किरिया कज्जइ जाव अपच्चक्खाण किरिया कज्जइ, मिच्छादंसण किरिया

भावार्थ किरियाना दीया नहीं है, तो अहो भगवन्! उस गाथापति को उस किरियाने से क्या आरंभिकी यावत् मिथ्यादर्शन क्रिया लगे? और ग्राहक को क्या उस किरियाने से आरंभिकी यावत् मिथ्यादर्शन क्रिया लगे? अहो गौतम! गाथापति को उस किराने से आरंभिकी यावत् अप्रत्याख्यान प्रत्ययिकी क्रिया लगती है और मिथ्यादर्शन क्रिया क्वचित् लगती है व क्वचित् नहीं लगती है. खरीदनेवाला ग्रा-

शब्दार्थ करते हैं सि० क्वचित् नो० नहीं क० करते हैं क० मोललेने वाले को ता० वे स० सब प० पतली होती हैं ॥ ६ ॥ गा० गाथापति भं० भगवन् भं० किरियाना वि० खरीदने वाले को जा० यावत् भं० किरियाना से० उस की पास उ० लाये क० खरीदने वाले को शेप पूर्ववत् मि० मिथ्या दर्शन कि० क्रिया की भ०

सूत्र सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ कइयस्सणं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति ॥ ६ ॥ गाहावइस्सणं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स जाव भंडे से उवणीए सिया, कइयस्सणं भंते ! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ, गाहावइस्सवा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया ? गोयमा ! कइयस्स ताओ भंडाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जंति, मिच्छादंसणकिरिया भयणाए ॥ गाहावइस्सणं ताओ सव्वाओ

भावार्थ हक को उक्त सब क्रियाओं पतली होती हैं ॥ ६ ॥ किरियाना वेचनेवाला गाथापति की पास से ग्राहक ने किराना खरीदा और ग्रहण भी कर लीया तब अहो भगवन् ! उस ग्राहक को क्या आरंभिकी आदि क्रियाओं लगती हैं ? और गाथापति को भी क्या आरंभिकी आदि क्रियाओं लगती हैं ? अहो गौतम! उस किराने से ग्राहक को आरंभिकी, परिग्रहिकी, मायाप्रत्ययिकी व अप्रत्याख्यान क्रियाओं लगती हैं. मिथ्या दर्शन क्रिया क्वचित् लगती है व क्वचित् नहीं लगती है. और गाथापति को उक्त सब क्रियाओं पतली

भजना ॥ ७ ॥ गा० गाथापति को भं० भगवन् भं० किरियाणा जा० यावत् ध० धन अ० नहीं दीया सि० होवे ए० इस को ज० जैसे भं० किरियाना उ० दीया हुवा त० तैसे णे० जानना च० चतुर्थ आ० आलापक ध० धन से० उसकी पास उ० लाया हुवा सि० होवे ज० जैसे प० प्रथम आ० आलापक भं० किरियाना अ० नहीं लाया हुवा सि० होवे त० तैसे ने० जानना प० प्रथम च० चतुर्थ का ए० एक ग० गमा बि० द्वितीय त० तृतीय का ए० एक ॥ ८ ॥ अ० अग्निको भं० भगवन् अ० तत्काल उ०

सूत्र

पयणुईभवंति ॥ ७ ॥ गाहावइस्सणं भंते ! भंडं जाव धणेय से अणुवणीए सिया, एयंपि जहा भंडे उवणीए तहाणेयव्वं चउत्थो आलावगो, धणेयसे उवणीए सिया जहा पढमो आलावगो भंडेयसे अणुवणीए सिया तहा नेयव्वो पढमं चउत्थाणं एको- गमो, बितीय तईयाणं एक्को ॥ ८ ॥ अगणिकाएणं भंते ! अहुणोज्जालिए समाणे

भावार्थ

होती है ॥ ७ ॥ गाथापतिने किरियाना बेचदिया परंतु ग्राहकने जहांलग उस के पैसे (धन) नहीं दिया है, वहांलग उस गाथापति को धन व किरियाना ऐसे दोनों की क्रिया कम लगती हैं और ग्राहक को विशेष क्रिया लगती है. जब किरानेका धन उस गाथापति को ग्राहक दे देता है तब उस को धन की क्रिया विशेष लगती है और ग्राहक को धन की क्रिया पतली होती है. यों इस क्रिया अधिकार में प्रथम व चतुर्थ आलापक का सरिखा अर्थ होता है वैसे ही दूसरा व तीसरा आलापक का एक सरिखा अर्थ होता है ॥ ८ ॥ अब अग्नि को प्रज्वालेने के संबंध में प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! कोई पुरुष

शब्दार्थ उज्वालते म० महाकर्मवाले म० महाक्रिया वाले म० महा आश्रव वाले म० महावेदना वाले भ० होवे अ० नीचे स० समय २ में वो०बिखरते हुवे वो० नष्ट करते च० छेल्ले स० समय में इं० अग्निभूत मु० मुर्मुरा समान छा० भस्मीभूत त० उस पीछे अ० अल्पकर्म वाले कि० क्रिया आ० आश्रव अ० अल्प वे० वेदना वाले भ० होता है हं० हां गो० गौतम अ० अग्निकाय अ० तत्काल का उ० उज्वल होती तं०

सूत्र महाकम्मतराए चेव, महाकिरियतराए चेव, महस्सवतराए चेव, महावेयणतराएचेव भवइ ! अहेणं समए २ वोक्कसिज्जमाणे वोच्छिज्जमाणे चरिमकालसमयंसि इंगालभूए मुम्मुरभूए, छारियभूए, तओपच्छा अप्पकम्मतराएचेव किरिया आसव अप्पवेयणतराए चेव भवइ ? हंता गोयमा ! अगणिकाएणं अहुणोज्जलिए समाणे तं चेव ॥ १ ॥

भावार्थ अग्नि को तत्काल प्रज्वलित करे तो क्या वह बहुत कर्मवाला, महा क्रियावाला, महा आश्रववाला व महा वेदनावाला होवे ? और फीर नीचे समय २ में अग्नि को बिखरदेते व बुझा देते अंगारे समान, मुर्मुरे समान, व भस्म समान जब वह अग्नि होती है तब क्यावह अल्प कर्म, अल्प क्रिया, अल्प आश्रव व वेदनावाला होवे ? हां गौतम ! तुर्त अग्नि प्रज्वलित करनेवाला महाकर्मी यावत् महावेदनावाला होवे और अग्नि बिखेरकर अंगारे यावत् भस्म समान करनेवाला अल्प कर्मवाला यावत् अल्प वेदनावाला होवे॥२॥ अब

शब्दार्थ वैसे ही ॥ २ ॥ पु० पुरुष भं० भगवन् ध० धनुष्य प० ग्रहण करता है उ० बाण प० ग्रहण करता है ठ० स्थान ठा० बैठे आ० खींचा हुआ क० कर्ण पर्यंत उ० बाण क० करे उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० छोडे त० तब से० वह उ० बाण उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० छोडा हुवा जा० जो त० तहां पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्व अ० हणावे व० वर्तुलाकार करे ले० मीले सं० परस्पर गात्रोंको एकत्रित करे सं० थोडा स्पर्श करे प० दुःखदेवे कि० किलामना उत्पन्न करे ठा० स्थान से सं० जावे जी० जीवित से व० पृथक् करे त० तब भं० भगवन् से० उस पु० पुरुष को क० कितनी

सूत्र पुरिसेणं भंते ! धणुं परामुसइ २ उसुं परामुसइ २ ठाणं ठाइ २ आययकण्णाययं उसुं करेइ २ उड्ढं वेहासं उसुं उव्विहइ, तएणं से उसू उड्ढं वेहासं उव्विहिए समाणे जाइं तत्थ पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणइ वत्तेइ लेस्सेइ संघाएइ संघट्टेइ परितावेइ किलामेइ ठाणाओ ठाणं संकामेइ जीवियाओ ववरोवेइ तएणं भंते ! सेपुरिसे कइ किरिए ? गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे धणुं परामुसइ २ जाव उव्विहइ तावं चणं

भावार्थ धनुष्य आश्री क्रिया का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! कोई पुरुष धनुष्य पर बाण रखकर आसन सहित कर्ण पर्यंत प्रत्यंचा खींचकर ऊंचे आकाश में बाण छोडे, फीर आकाश में बाण छोडते हुए प्राण भूत, जीव व सत्वोंको हणे, वर्तुलाकार बनावे, स्पर्श करे, संघट्टना करे, परिताप उत्पन्न करे, दुःख

शब्दार्थ कि० क्रिया गो० गौतम जा० जितने में से० वह पु०पुरुष ध० धनुष्य प० ग्रहण करता है जा० यावत् उ०बाण उ०छोडता है ता०उतने में से०उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा०यावत् पा० प्राणातिपाति की कि० क्रिया पं०पांच कि० क्रिया से पु० स्पर्शाया जे० जिन जी०जीवों के स० शरीर से ध० धनुष्य नि० बनाया ते० वेभी जी० जीव का० कायिकी जा० यावत् पं० पांच कि० क्रिया से पु० स्पर्शाये ए० ऐसे ध० धनुष्यपीठिका पं० पांच क्रियाओं से जी० जीन्हा पं० पांच ण्हा० तांत पं० पांच से ब० बाण पं०

सूत्र से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥ जेसिं पियणं जीवाणं सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए तेवियणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, एवं धणुपिट्ठे पंचहिं किरियाहिं, जीवा पंचहिं, ण्हारु पंचहिं, उसू पंचहिं सरे पत्ताणे फले ण्हारु पंचहिं, अहेणं से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए, भारियत्ताए गुरुयसं.

भावार्थ उत्पन्न करे, एक स्थान से अन्य स्थान चलावे व जीवित से पृथक् करे. उस समयमें उस बाण छोडनेवाले पुरुष को अहो भगवन् ! कितनी क्रियाओं कही ? अहो गौतम ! जहांलग उस पुरुषने धनुष्य उठाया यावत् बाण छोडा वहांलग उस को पांच क्रियाओं होवे. कायिकी, अधिकरणकी, प्रद्वेषिकी, परितापनिकी, व प्राणातिपातिकी. और जिन जीवों के शरीर से धनुष्य बना हुवा है; उन जीवों को भी कायिकादि पांच क्रियाओं लगती है. ऐसे ही जिन जीवों से धनुष्यपीठिका, जिन्हा, तांता, बाण, पांखों व आगे

शब्दार्थ

जैसे हो ॥ ९ ॥ पु० पुरुष भं० भगवन् ध० धनुष्य प० ग्रहण करता है उ० बाण प० ग्रहण करता है ठा० स्थान ठा० बैठे आ० खींचा हुआ क० कर्ण पर्यंत उ० बाण क० करे उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० छोडे त० तब से० वह उ० बाण उ० ऊर्ध्व वे० आकाश में उ० छोडा हुआ जा० जो त० तहां पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्व अ० हणावे व० वर्तुलाकार करे ले० मीले सं० परस्पर मात्रोंको एकत्रित करे सं० थोडा स्पर्श करे प० दुःखदेवे कि० किलामना उत्पन्न करे ठा० स्थान से सं० जावे जी० जीवित से व० पृथक् करे त० तब भं० भगवन् से० उस पु० पुरुष को क० कितनी

मूल

पुरिसेणं भंते ! धणुं परामुसइ २ उसुं परामुसइ २ ठाणं ठाइ २ आययकण्णाययं उसुं करेइ २ उड्ढं वेहासं उसुं उव्विहइ, तएणं से उसू उड्ढं वेहासं उव्विहिए समाणे जाइं तत्थ पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणइ वत्तेइ लेस्सेइ संघाएइ संघट्टेइ परितावेइ किलामेइ ठाणाओ ठाणं संकामेइ जीवियाओ ववरोवेइ तएणं भंते ! से पुरिसे कइ किरिए ? गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे धणुं परामुसइ २ जाव उव्विहइ तावं च णं

भावार्थ

मनुष्य आश्री क्रिया का प्रश्न करते हैं. अहो भगवन् ! कोई पुरुष धनुष्य पर बाण रखकर आसन सहित कर्ण पर्यंत प्रत्यंचा खींचकर ऊंचे आकाश में बाण छोडे, फीर आकाश में बाण छोडते हुए प्राण भूत, जीव व सत्वोंको हणे, वर्तुलाकार बनावे, स्पर्श करे, संघट्टा करे, परिताप उत्पन्न करे, दुःख

अर्थ क्रिया से पु० स्पर्शाये ध० धनुष्य पीठिका च० चार जी० जीव्हा च० चार ण्हा० तांत च० चार उ० वाण पं० पांच स० शर प० पत्र फ० फल ण्हा० तांत जे० जो जी० जीव अ० नीचे प० आते हुवे उ० मार्ग में चि० रहते हैं ते० वे भी जी० जीव का० कायिकी जा० यावत् पं० पांच कि० क्रिया से पु० स्पर्शाये हुवे ॥१०॥ अ० अन्यतीर्थिक भं० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प० प्ररूपते हैं से० अथ. ज० जैसे जु० युवति को जु० युवान ह० हस्त को गे० ग्रहण करते हैं च० चक्र की ना० नाभी अ० आरा से उ०

सूत्र

जीवा चउहिं, ण्हारूचउहिं उसू पंचहिं, सरे पत्ताणे फले ण्हारु पंचहिं जेवियसे जीवा अहे पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे चिट्ठंति तेवियणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा, ॥ १० ॥ अण्णउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति से जहा नामए जुवइं जुवाणे हत्थेणं हत्थं गेण्हेज्जा चक्कस्सवा नाभी अरगाउत्तासिया एवामेव

भावार्थ

जीव्हा, व तांता बना हुवा है उन जीवों को चार क्रियाओं लगती हैं. और वाण, पांखो, भाला वगैरह को पांच क्रियाओं लगती हैं. वाण को आते हुए मार्ग में जो जीवों रहे हुवे हैं उन को भी कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ १० ॥ यह सम्यक् प्ररूपना कही अब मिथ्याप्ररूपक बताते हैं. अहो भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि जैसे युवान पुरुष युवति को हस्तसे हस्त में पकडता है, अथवा गाडी के चक्र की नाभि में आरा सघन होता है वैसे ही चार सो पांच सो

शब्दार्थ — पांच मे स० शर प० पत्र फ० फल ण्हा० तांत अ० सर्व से० वह उ० वाण अ० अपनी गु० गुरुतासे भा० वजनपने गु० गुरुतासे वजनपने अ० नीचे वी० स्वभाव से प० पीछा आता जा० जो त० वहां पा० प्राणी जा० यावत् जी० जीव से व० पृथक् करे ता० उतने में से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम जा० जितने में से० वह उ० बाण अ० अपनी गु० गुरुतासे जा० यावत् व० पृथक् करता है ता० उतने में से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् च० चार कि० क्रिया से पु० स्पर्शाया जे० जिन जी० जीवों के स० शरीर धु० धनुष्य नि० बना ते० वे जी० जीव चा० चार कि०

सूत्र — भारियंत्ताए अहे वीससाए पच्चोवयमाणे जाइं तत्थपाणाइं जाव जीवियाओ ववरोवेइ, तावं च णं से पुरिसे कइ किरिए ? गोयमा ! जावंचणं से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए जाव ववरोवेइ तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिं पिणं जीवाणं सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए ते जीवा चउहिं किरियाहिं, धणुपिट्ठे चउहिं,

भावार्थ — लगा हुवा लोहे का भाला बना हुवा है उन सब को पांच क्रियाओं लगती हैं. अब अपने गुरुत्वपना से, वजनपना से, गुरुत्व व वजन पनासे स्वाभाविक वह बाण नीचे आता है. इस तरह नीचे आते हुए प्राण, भूतादि यदि हणावे तो उस बाण छोडनेवाले पुरुष को अहो भगवन् ! कितनी क्रिया लगे ? अहो गौतम ! उस पुरुष को चार क्रिया लगे. और जिन जीवों के शरीर से वह धनुष्य, धनुष्य पीठिका

क्रिया से पु० स्पर्शाये ध० धनुष्य पीठिको च० चार जी० जीव्हा च० चार ण्हा०तांत च० चार उ० बाण पं० पांच स० शर प० पत्र फ० फल ण्हा०तांत जे० जो जी०जीव अ०नीचे प० आते हुवे उ०मार्ग में चि० रहते हैं ते० वे भी जी० जीव का०कायिकी जा० यावत् पं० पांच कि०क्रिया से पु०स्पर्शाये हुवे ॥१०॥ अ० अन्यतीर्थिक भं० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं जा० यावत् प०प्ररूपते हैं से० अथ.ज०जैसे जु० युवति को जु० युवान ह० हस्त को गे० ग्रहण करते हैं च० चक्र की ना० नाभी अ० आरा से उ०

सूत्र

जीवा चउहिं, ण्हारूचउहिं उसू पंचहिं, सरे पत्ताणे फले ण्हारु पंचहिं जेवियसे जीवा अहे पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे चिट्ठंति तेवियणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा, ॥ १० ॥ अण्णउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति से जहा नामए जुवइं जुवाणे हत्थेणं हत्थं गेण्हेज्जा चक्कस्सवा नाभी अरगाउत्तासिया एवामेव

भावार्थ

जीव्हा, व तांता बना हुवा है उन जीवों को चार क्रियाओं लगती हैं. और बाण, पांखो, भाला वगैरह को पांच क्रियाओं लगती हैं. बाण को आते हुए मार्ग में जो जीवों रहे हुवे हैं उन को भी कायिकादि पांच क्रियाओं लगती हैं ॥ १० ॥ यह सम्यक् प्ररूपना कही अब मिथ्याप्ररूपक बताते हैं. अहो भगवन् ! अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि जैसे युवान पुरुष युवति को हस्तसे हस्त में पकडता है, अथवा गाडी के चक्र की नाभि में आरा स्थित होता है वैसेही चार सो पांच सो

शब्दार्थ पांच से स० शर प० पत्र फ० फल ण्हा० तांत अ० सर्व से० वह उ० बाण अ० अपनी गु० गुरुतासे भा० वजनपने गु० गुरुतासे वजनपने अ० नीचे वी० स्वभाव से प० पीछा आता जा० जो त० वहां पा० प्राणी जा० यावत् जी० जीव से व० पृथक् करे ता० उतने में से० उस पु० पुरुष को क० कितनी कि० क्रिया गो० गौतम जा० जितने में से० वह उ० बाण अ० अपनी गु० गुरुतासे जा० यावत् व० पृथक् करता है ता० उतने में से० उस पु० पुरुष को का० कायिकी जा० यावत् च० चार कि० क्रिया से पु० स्पर्शाया जे० जिन जी० जीवों के स० शरीर धु० धनुष्य नि० बना ते० वे जी० जीव चा० चार कि०

सूत्र भारियंत्ताए अहे वीससाए पच्चोवयमाणे जाइं तत्थपाणाइं जाव जीवियाओ ववरोवेइ, तावं च णं से पुरिसे कइ किरिए ? गोयमा ! जावंचणं से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए जाव ववरोवेइ तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिं पिणं जीवाणं सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए ते जीवा चउहिं किरियाहिं, धणुपिट्ठे चउहिं,

भावार्थ लगा हुवा लोहे का भाला बना हुवा है उन सब को पांच क्रियाओं लगती हैं. अब अपने गुरुत्वपना से, वजनपना से, गुरुत्व व वजन पनासे स्वाभाविक वह बाण नीचे आता है. इस तरह नीचे आते हुए प्राण, भूतादि यदि हणवे तो उस बाण छोडनेवाले पुरुष को अहो भगवन् ! कितनी क्रिया लगे ? अहो गौतम ! उस पुरुष को चार क्रिया लगे. और जिन जीवों के शरीर से वह धनुष्य, धनुष्य पीठिका

आकांणे न० नरक ने० नारकी भं० भगवन् किं०क्या ए० एक प० समर्थ वि०वैक्रेय करने को पु०अनेक ज० जैसे जी० जीवाभिगम में आ० आलापक त० तैसे णे० जानना. जा० यावत् दु० खराक्रीति से सहन करे ॥ ११ ॥ आ० आधाकर्म अ० अनवद्य म० मन प० स्थापने वाला भ० होवे से० उसको त० उस ठा० स्थान की आ० आलोचना प० प्रतिक्रमण करते का० काल क० करे अ० है त० उसको आ० आराधना ए० इस ग० गम से ने० जानना की० मोललिया हुवा क० बनाया हुवा ठ० स्थपाया हुवा र०

सूत्र

बहुसमाइण्णे नेरयलोए नेरइएहिं ॥ नेरइयाणं भंते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए, पुहत्तं पभू विउव्वित्तए, जहा जीवाभिगमे आलावगो तहा नेयव्वो, जाव दुरहियासे ॥ ११ ॥ आहाकम्मं अणवज्जेत्ति मणंपहारेत्ता भवइ; सेणं तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंते कालं करेइ, नात्थि तस्स आराहणा; सेणं तस्स ठाणस्स आलोइय पडि-

भावार्थ

वैक्रेय नहीं करते हैं. ऐसे ही बहुत शरीर वैक्रेय करते हैं, महा उज्वल प्रज्वल वेदना वेदते हुए विचरते हैं. इस का विस्तार पूर्वक विवेचन जीवाभिगम सूत्र से जानना ॥ ११ ॥ कोई साधु भिक्षा की गवेषणा में ...स्यवाला व रसगृद्धि बनकर आधाकर्मादि दोष युक्त आहार को निरवद्य मान कर भोगवे और ...की आलोचना प्रतिक्रमण किये विना यदि वह काल कर जावे तो वह आराधक नहीं होता है और ...आलोचनादि करके काल करे तो आराधक होता है. ऐसे ही मोल लिया हुवा, बनाया हुवा, स्थापकर

भरी हुई ए० ऐसे ही च० चार पं० पांच जो० योजन स० सो व० वहुत स०आकीर्ण म० मनुष्य लोक म० मनुष्य से क० कैसे ए० यह भं० भगवन् गो० गौतम ज० जो ते० वे अ० अन्यतीर्थिक जा० यावत् म० मनुष्य से जे० जो ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या अ० मैं पु० पुनः गो० गौतम ए० ऐसा आ० कहता हूं जा० यावत् ए० ऐसे ही च० चार पं० पांच जो० योजन स० सो व० वहुत स०

चत्तारि पंच जोयण सयाइं, वहु समाइण्णे मणुयलोए मणुस्सेहिं, ॥ से कह मेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया जाव मणुस्सेहिं जे ते एव माहंसु मिच्छा । अहंपुण गोयमा ! एव माइक्खामि जाव एवामेव चत्तारिपंच जोयण सयाइं

योजनका मनुष्यलोक मनुष्यों से भरदेते हैं तो यह किसतरह है? अहो गौतम! जो अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं वे मिथ्या वैसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं. मैं ऐसा कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि जैसे काम पीडित युवान युवती को पकडता है. अथवा चक्र की नाभी में जैसे आरा सघन होता है वैसे ही नरक में किसी स्थान चार सो किसी स्थान पांच सो योजन तक नारकी भरे हुवे रहते हैं. अहो भगवन् ! नारकी वैक्रेय करते हुवे क्या एक रूप वैक्रेय करते हैं या अनेक रूप वैक्रेय करते हैं ? अहो गौतम ! एक रूप भी वैक्रेय करते हैं अनेक रूप भी वैक्रेय करते हैं. एक रूप अनेक रूप वैक्रेय करते हुए मारने का शस्त्र जो पुद्गल है उस रूप का भी वैक्रेय करते हैं. संख्यात रूप वैक्रेय करते हैं परंतु असंख्यात रूप

शब्दार्थ आकीर्ण ने० नरक ने० नारकी भं० भगवन् किं०क्या ए० एक प० समर्थ वि०वैक्रेय करने को पु०अनेक ज० जैसे जी० जीवाभिगम में आ० आलापक त० तैसे णे० जानना. जा० यावत् दु० खराक्रीति से सहन करे ॥ ११ ॥ आ० आधाकर्म अ० अनवद्य म० मन प० स्थापने वाला भ० होवे से० उसको त० उस ठा० स्थान की आ० आलोचना प० प्रतिक्रमण करते का० काल क० करे अ० है त० उसको आ० आराधना ए० इस ग० गम से ने० जानना की० मोललिया हुवा क० बनाया हुवा ठ० स्थपाया हुवा र०

सूत्र बहुसमाइण्णे नेरयलोए नेरइएहिं ॥ नेरइयाणं भंते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए, पुहत्तं पभू विउव्वित्तए, जहा जीवाभिगमे आलावगो तहा नेयव्वो, जाव दुरहियासे ॥ ११ ॥ आहाकम्मं अणवज्जेत्ति मणंपहारेत्ता भवइ; सेणं तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंते कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा; सेणं तस्स ठाणस्स आलोइय पडि-

भावार्थ वैक्रेय नहीं करते हैं. ऐसे ही बहुत शरीर वैक्रेय करते हैं, महा उज्वल प्रज्वल वेदना वेदते हुए विचरते हैं. इस का विस्तार पूर्वक विवेचन जीवाभिगम सूत्र से जानना ॥ ११ ॥ कोई साधु भिक्षा की गवेषणा में आलस्यवाला व रसगृद्धि बनकर आधाकर्मादि दोष युक्त आहार को निरवद्य मान कर भोगवे और उस की आलोचना प्रतिक्रमण किये विना यदि वह काल कर जावे तो वह आराधक नहीं होता है और आलोचनादि करके काल करे तो आराधक होता है. ऐसे ही मोल लिया हुवा, बनाया हुवा, स्थापकर

शब्दार्थ रचित कं० अरण्य भ० भक्त दु० दुर्भिक्ष भ० भक्त व० वद्दल का भ० भक्त गि० रोगीका भ० भक्त से० शैय्यान्तरपिंड रा० राज्यपिंड अ० आधाकर्म आ० अनवद्य व० बहुत ज० मनुष्य की म० बीच में भा० कहकर स० स्वयमेव प० भोगवकर भ० होवे से० उसको त० उसके ठा० स्थान की अ० है त० उस को आ० आराधना ए० यह त० तैसे आ० यावत् रा० राजपिंड आ० आधाकर्म अ० अनवद्य अ० परस्पर को

सूत्र कंते कालं करेइ अत्थितस्स आराहणा ॥ एएणं गमेणं नेयव्वं कीयकडं ठवियं, रइयं, कंतारभत्तं, दुब्भिक्खभत्तं, वद्दलियाभत्तं, गिलाण भत्तं, सेज्जायरपिंडं, रायपिंडं, आहाकम्मं अणवज्जेत्ति बहुजणमज्झे भासित्ता, सयमेव परिभुंजित्ता भवइ, सेणं तस्स ठाणस्स जाव अत्थि तस्स आराहणा ॥ एयंपि तहचेव जाव रायपिंडं ॥ आहाकम्मं

रखा हुवा, तैयार किया हुवा, अरण्य में जाते हुवे लोगों के लिये बनाया हुवा, दुष्काल में दीन पुरुषों के लिये बनाया हुवा, वद्दल के लिये बनाया हुवा, रोगियों के लिये बनाया हुवा, शैय्यांतरपिंड व राज पिंड ऐसे दोष युक्त आहार को बहुत मनुष्य की बीच में यह अनवद्य है ऐसा कहकर स्वयं ही ऐसा आहार भोगवे. फीर उस की आलोचना प्रतिक्रमण किये विना यदि काल करे तो वह विराधक होता है और आलोचनादि करके काल करे तो आराधक होता है. आधाकर्मादि दोष युक्त आहार को यह आहार निरवद्य है ऐसा कहकर परस्पर साधुओं को देवे, वैसे ही आधाकर्मादि दोष युक्त आहार को

पदार्थ

अ० देकर भ० होवे त० उस को ए० यह त० तैसे जा० यावत् रा० राजपिंड आ० आधाकर्म अ० अनवद्य व० बहुत ज० मनुष्य की म० बीच में प० कहने वाला भ० होवे से० उस को त० उस की अ० है आ० आराधना जा० यावत् रा० राजपिंड ॥ १२ ॥ आ० आचार्य उ० उपाध्याय भं० भगवन् स० अपने ग० गण को अ० अग्लानपने सं० ग्रहण करते अ० अग्लानपने उ० उपग्रहण करते क० कितने भ० भव में सि० सीझे जा० यावत् अं० अंतकरे गो० गौतम अ० कित-

सूत्र

अणवज्जेत्ति अण्णमण्णस्स अणुपदावेइत्ता भवइ, सेणं तस्स एयं तहचेव जाव रायपिंडं, आहाकम्मं णं अणवज्जेत्ति, बहुजणमज्झे पभावइत्ता भवइ, सेणं तस्स जाव अत्थि आराहणा जाव रायपिंडं ॥ १२ ॥ आयरिय उवज्झाएणं भंते ! सवि सयंसि गणं अगिलाए संगिण्हमाणे, अगिलाए उवगिण्हमाणे, कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतं करेइ ? गोयमा ! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ, अत्थेगइए दोच्चेणं

भावार्थ

सभा में निरवद्य आहार है ऐसा कहे. इस तरह विपरीत प्ररूपना से ज्ञानादिक की विराधना होती है. ऐसा करनेवाला यदि आलोचना प्रतिक्रमण करके काल करे तो आराधक होता है और आलोचना किये विना काल करे तो विराधक होता है, ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! आचार्य उपाध्याय अपने गणको अग्लानपने अंगीकार करते, आदरदेते कितने भव में सीझे, बुझे यावत् सब दुःखों का अंत करे ?

शब्दार्थ नेक ते० उसी भ० भवग्रहण में सि० सीझे अ० कितनेक दो० दूसरे भ० भव में सि० सीझे त० तीसरे पु० फीर भ० भवग्रहण ना० अतिक्रमे नहीं ॥ १३ ॥ जे० जो, भं० भगवन् प० अन्य को अ० असत्य अ० असद्भूत अ० अभ्याख्यान से अ० आल चढाता है त० उस को क० कैसा क० कर्म क० करते हैं गो० गौतम जे० जो प० अन्य को अ० असत्य अ० असद्भूत अ० अभ्याख्यान से अ० आल चढाता है त० उस को त० तैसा क० कर्म क० करते हैं ज० जहां अ० आते हैं त० वहां प० अनुभवते हैं त०

सूत्र भवग्गहणेणं सिज्झइ, तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥ १३ ॥ जेणं भंते ! परं अलिएणं असब्भूएणं अब्भक्खाणेणंअब्भक्खाइ तस्सणं कहप्पगारा कम्मा कज्जंति? गोयमा ! जेणं परं अलिएणं असंतएणं अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाइ, तस्सणं तहप्पगाराचेव कम्मा कज्जंति । जत्थेवणं अभिसमागच्छइ तत्थेवणं पडिसंवेदेइ तओ

भावार्थ अहो गौतम ! कितनेक उसी भव में सीझे, कितनेक दूसरे भव में सीझे, परंतु तीसरा भव नहीं उल्लंघते हैं अर्थात् तीसरे भव में निश्चयही सीझते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! जो कोई अन्य महात्मा पुरुषको द्वेषबुद्धि से असद्भूत, असत्य कलंक चढावे तो उन को कैसे कर्मों का बंध होवे ? अहो गौतम ! जो पुरुष जैसा कलंक अन्य को चढाता है उस को वैसे ही कर्मों का बंध होता है. और जहां वह कर्म किया होगा वहांही उदय में आवेगा और वहां ही वेदेगा. अहो भगवन् ! अपके वचन सत्य हैं. यह पांचवा शतक का छठा

दार्थ उस प० पीछे वे० वेदते हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ * *

प० परमाणु पो० पुद्गल ए० चलता है वे० विशेष चलता है जा० यावत् तं० उस २ भा० भाव में प० परिणमता है गो० गौतम सि० क्वचित् ए० चलता है वे० विशेष चलता है तं० उस २ भा० भाव

सूत्र से पच्छा वेदेइ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचमसयस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥५॥६॥ +

परमाणुपोग्गलेणं भंते ! एयइ वेयइ जाव तंतं भावं परिणमइ ? गोयमा ! सिय एयइ वेयइ जाव परिणमइ, सिय णो एयइ जाव णो परिणमइ, दुपदेसिएणं भंते ! खंधे एयइ जाव परिणमइ ? गोयमा ! सिय एयइ जाव परिणमइ सिय नो एयइ जाव नो परिणमइ, सिय देसेएयइ देसे णोएयइ ! तिपएसिएणं भंते ! खंधे एयइ ?

भावार्थ उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ ६ ॥ * * *

छट्ठे उद्देशे के अंत में निर्जरा का कथन किया है. वह निर्जरा कर्मों को चलाती है इसलिये पुद्गलों का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! पूरण गलन स्वभाव वाले निरवयव रूप परमाणु पुद्गल क्या चलते हैं, विशेष चलते हैं यावत् उन २ भावों में परिणमते हैं ? अहो गौतम ! क्वचित् चलते हैं यावत् क्वचित् उन २ भावों में परिणमते हैं और क्वचित् नहीं चलते हैं यावत् उन २ भावों में नहीं परिणमते हैं. अहो भगवन् ! क्या द्वि प्रदेशात्मक स्कंध चलता है यावत् उन २ भावों में परिणमता है ? अहो गौतम ! द्वि

सूत्र

भवग्गहणेणं सिज्झइ, तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥ १३ ॥ जेणं भंते ! परं अलिएणं असब्भूएणं अब्भक्खाणेणंअब्भक्खाइ तस्सणं कहप्पगारा कम्मा कज्जंति? गोयमा ! जेणं परं अलिएणं असंतएणं अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाइ, तस्सणं तहप्पगाराचेव कम्मा कज्जंति । जत्थेवणं अभिसमागच्छइ तत्थेवणं पडिसंवेदेइ तओ

शब्दार्थ

नेक ते० उसी भ० भवग्रहण में सि० सीझे अ० कितनेक दो० दूसरे भ० भव में सि० सीझे त० तीसरा पु० फीर भ० भवग्रहण ना० अतिक्रमे नहीं ॥ १३ ॥ जे० जो भं० भगवन् प० अन्य को अ० असत्य अ० असद्भूत अ० अभ्याख्यान से अ० आल चढाता है त० उस को क० कैसा क० कर्म क० करते हैं गो० गौतम जे० जो प० अन्य को अ० असत्य अ० असद्भूत अ० अभ्याख्यान से अ० आल चढाता है त० उस को त० तैसा क० कर्म क० करते हैं ज० जहां अ० आते हैं त० वहां प० अनुभवते हैं त०

अहो गौतम ! कितनेक उसी भव में सीझे, कितनेक दूसरे भव में सीझे, परंतु तीसरा भव नहीं उल्लंघते हैं अर्थात् तीसरे भव में निश्चयही सीझते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! जो कोई अन्य महात्मा पुरुषको द्वेषबुद्धि से असद्भूत, असत्य कलंक चढावे तो उन को कैसे कर्मों का बंध होवे ? अहो गौतम ! जो पुरुष जैसा कलंक अन्य को चढाता है उस को वैसे ही कर्मों का बंध होता है. और जहां वह कर्म किया होगा वहांही उदय में आवेगा और वहां ही वेदेगा. अहो भगवन् ! आपके वचन सत्य हैं. यह पांचवा शतक का छठा

शब्दार्थ उस प० पीछे वे० वेदते हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ * *

प० परमाणु पो० पुद्गल ए० चलता है वे० विशेष चलता है जा० यावत् तं० उस २ भा० भाव में प० परिणमता है गो० गौतम सि० क्वचित् ए० चलता है वे० विशेष चलता है तं० उस २ भा० भाव

सूत्र से पच्छा वेदेइ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचमसयस्स छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥५॥६॥ +

परमाणुपोग्गलेणं भंते ! एयइ वेयइ जाव तंतं भावं परिणमइ ? गोयमा ! सिय एयइ वेयइ जाव परिणमइ, सिय णो एयइ जाव णो परिणमइ, दुपदेसिएणं भंते ! खंधे एयइ जाव परिणमइ ? गोयमा ! सिय एयइ जाव परिणमइ सिय नो एयइ जाव नो परिणमइ, सिय देसेएयइ देसे णोएयइ ! तिपएसिएणं भंते ! खंधे एयइ ?

भावार्थ उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ ६ ॥ * * *

छट्ठे उद्देशे के अंत में निर्जरा का कथन किया है. वह निर्जरा कर्मों को चलाती है इसलिये पुद्गलों का प्रश्न पूछते हैं. अहो भगवन् ! पूरण गलन स्वभाव वाले निरवयव रूप परमाणु पुद्गल क्या चलते हैं, विशेष चलते हैं यावत् उन २ भावों में परिणमते हैं ? अहो गौतम ! क्वचित् चलते हैं यावत् क्वचित् उन २ भावों में परिणमते हैं और क्वचित् नहीं चलते हैं यावत् उन २ भावों में नहीं परिणमते हैं. अहो भगवन् ! क्या द्वि प्रदेशात्मक स्कंध चलता है यावत् उन २ भावों में परिणमता है ? अहो गौतम ! द्वि

शब्दार्थ नेक ते० उसी भ० भवग्रहण में सि० सीझे अ० कितनेक दो० दूसरे भ० भव में सि० सीझे त० तीसरे पु० फीर भ० भवग्रहण ना० अतिक्रमे नहीं ॥ १३ ॥ जे० जो भं० भगवन् प० अन्य को अ० असत्य अ० असद्भूत अ० अभ्याख्यान से अ० आल चढाता है त० उस को क० कैसा क० कर्म क० करते हैं गो० गौतम जे० जो प० अन्य को अ० असत्य अ० असद्भूत अ० अभ्याख्यान से अ० आल चढाता है त० उस को त० तैसा क० कर्म क० करते हैं ज० जहां अ० आते हैं त० वहां प० अनुभवते हैं त०

सूत्र भवग्गहणेणं सिज्झइ, तचं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥ १३ ॥ जेणं भंते ! परं अलिएणं असब्भूएणं अब्भक्खाणेणंअब्भक्खाइ तस्सणं कहप्पगारा कम्मा कज्जंति ? गोयमा ! जेणं परं अलिएणं असंतएणं अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाइ, तस्सणं तहप्पगाराचेव कम्मा कज्जंति । जत्थेवणं अभिसमागच्छइ तत्थेवणं पडिसंवेदेइ तओ

भावार्थ अहो गौतम ! कितनेक उसी भव में सीझे, कितनेक दूसरे भव में सीझे, परंतु तीसरा भव नहीं उल्लंघते हैं अर्थात् तीसरे भव में निश्चयही सीझते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! जो कोई अन्य महात्मा पुरुषको द्वेषबुद्धि से असद्भूत, असत्य कलंक चढावे तो उन को कैसे कर्मों का बंध होवे ? अहो गौतम ! जो पुरुष जैसा कलंक अन्य को चढाता है उस को वैसे ही कर्मों का बंध होता है. और जहां वह कर्म किया होगा वहांही उदय में अवेगा और वहां ही वेदेगा. अहो भगवन् ! अपके वचन सत्य हैं. यह पांचवा शतक का छठा

पदार्थ — स्कंध च॰ चार प्रदेशी स्कंध ज॰ जैसे च॰ चार प्रदेशीस्कंध त॰ तैसे पं॰ पांच प्रदेशी जा॰ यावत् त॰ तैसे अ॰ अनंत प्रदेशी ॥ १ ॥ प॰ परमाणु पो॰ पुद्गल भं॰भगवन् अ॰ असिधारा ख॰ क्षुर की धारा उ॰ अवगाहे हं॰ हां उ॰ अवगाहे से॰ अथ त॰ वहां छि॰ छेदावे भि॰ भेदावे गो॰ गौतम णो॰ नहीं इ॰ यह अ॰ अर्थ स॰ समर्थ नो॰ नहीं त॰ तहां स॰ शस्त्र क॰ जावे ए॰ ऐसे जा॰ यावत् अ॰ असंख्यात प्रदेशात्मक अ॰ अनंत प्रदेश वाला भं॰ भगवन् खं॰ स्कंध अ॰ खड्ग की धारा खु॰ क्षुरकी धारा को उ॰

सूत्र — देसा एयंति, ॥ जहा चउप्पदेसिओ तहा पंचप्पदेसिओ जाव तहा अणंत पएसिओ ॥ १ ॥ परमाणु पोग्गलेणं भंते ! असिधारंवा खुरधारंवा, उग्गाहेज्जा ? हंता उग्गाहेज्जा ॥ सेणं तत्थ छिज्जेज्जवा भिज्जेज्जवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।. नो खलु तत्थ सत्थं कमइ, एवं जाव असंखेज्जपएसिओ ॥ अणंत पएसिएणं भंते !

भावार्थ — देश से चले व बहुत देश से चले नहीं. जैसे चार प्रदेशात्मक स्कंध का कहा वैसे ही पांच, छ, सात, आठ नव, दश. संख्यात असंख्यातव अनंत प्रदेशात्मक स्कंध का जानना॥१॥ अहो भगवन् ! क्या परमाणुपुद्गल खड्ग की धारा व क्षुर (उस्तरे) की धारा को अवगाहे अर्थात् उस को लगे ? हां गौतम ! परमाणु पुद्गल खड्ग की धारा व क्षुरकी धारा नीचे आसकते हैं. अहो भगवन् ! क्या वह परमाणु पुद्गल छेदाता भेदाता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है क्योंकि उसमें शस्त्र संक्रमण नहीं कर सकता है

शब्दार्थ को प० परिणमता है सि०क्वचित् णो०नहीं ए०चलता है जा०यावत् नो०नहीं तं० उस २ भा०भाव में प० परिणमता है सि० क्वचित् दे० देश से ए० चलता है जा० यावत् प० परिणमता है दु० द्विप्रदेशी

सूत्र गोयमा ! सिय एयइ, सिय नो एयइ, सिय देसे एयइ नो देसे एयइ, सिय देसे एयइ नो देसा एयंति, सिय देसा एयंति नो देसे एयइ, । चउप्पएसिएणं भंते ! खंधे एयइ ? गोयमा ! सिय एयइ, सिय नो एयइ, सिय देसे एयइ णो देसे एयइ, सिय देसे एयइ णो देसा एयंति. सिय देसा एयंति नो देसे एयइ, सिय देसा एयंति नो

भावार्थ प्रदेशी स्कंध क्वचित् चलता है, यावत् क्वचित् उन २ भावोंमें परिणमता है, वैसे ही क्वचित् नहीं चलता है यावत् उन २ भावों में नहीं परिणमता है. और क्वचित् देश से चलता है व देश से नहीं चलता है. अहो भगवन् ! तीन प्रदेशात्मक स्कंध क्या चलता है यावत् उन २ भावों में परिणमता है ? अहो गौतम! तीन प्रदेशात्मक स्कंध में पांच विकल्प कहे हुए हैं ? क्वचित् चले २ क्वचित् नचले ३ क्वचित् देश से चले व नचले ४ क्वचित् देश से एक चले दो नहीं चले और ५ क्वचित् देश से दो चले एक नहीं चले. अहो भगवन् ! चार प्रदेशात्मक स्कंध क्या चले ? अहो गौतम ! चार प्रदेशात्मक स्कंध में छ विकल्प होते हैं. १ क्वचित् कंपे २ क्वचित् नहीं कंपे ३ क्वचित् देशमें कंपे व कंपे नहीं ४ क्वचित् एक देश से चले बहुत देश से चले नहीं ५ क्वचित् बहुत देश से चले एक देश से चले नहीं और ६ क्वचित् बहुत

न्दार्थ आवे त० तहां वि० विमाश आ० प्राप्त होवे उ० पानी का आ०आवर्त उ०पानी का विं०बिंदु उ० अवगाह कर से० अथ त० तहां प० नष्टहोवे ॥ २ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल किं० क्या स० अर्ध सहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित उ० अथवा अ० अर्ध रहित अ० मध्य रहित अ० प्रदेश रहित गो० गौतम अ० अर्ध रहित अ० मध्य रहित अ० प्रदेश रहित नो० नहीं अ० अर्ध सहित नो० नहीं स०मध्य सहित नो० नहीं स० प्रदेश सहित दु० द्विप्रदेशी स्कंध किं० क्या गो० गौतम अ० अर्ध सहित अ० मध्य रहित

सूत्र गच्छेज्जा, तहिं विणिहाय मावज्जेज्जा, उदगावत्तंवा, उदगंबिंदुंवा उग्गाहेज्जा, सेणं तत्थ परियावज्जेज्जा, ॥ २ ॥ परमाणु पोग्गलेणं भंते ! किं सअड्ढे समज्झे सपएसे उदाहु अणड्ढे, अमज्झे, अपएसे ? गोयमा ! अणड्ढे अमज्झे अपएसे, नोसअड्ढे, नो समज्झे नो सपएसे । दुपएसिएणं भंते ! खंधे किं सअड्ढे, समज्झे, सपएसे उदाहु

भावार्थ है. ऐसे ही गंगा महानदी के प्रवाह में कितनेक अनंत प्रदेशी स्कंध नष्ट होते हैं कितनेक नष्ट नहीं होते हैं. कितनेक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध पानी के आवर्त को या पानी के बिन्दु को अवगाह कर रहेते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! क्या परमाणु पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित है अथवा अर्ध, प्रदेश व मध्य रहित है ? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश रहित है. अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित नहीं है. क्यों की परमाणु पुद्गल अत्यंत ही सूक्ष्म है और उस का विभाग नहीं होसकता है. अहो भगवन् ! द्वि

शब्दार्थ अवगाहे हं० हां उ० अवगाहे से० अथ त० तहां छि० छेदावे भि० भेदावे गो० गौतम अ० कितनेक छि० छेदावे भि० भेदावे अ० कितनेक नो० नहीं छि० छेदावे नो० नहीं भि० भेदावे ए० ऐसे अ० अग्नि काय की म० मध्य में त० तहां झि० जले भा० कहना. ए० ऐसे पु० पुष्कल संवर्तक म० महामेघ की म० मध्य में त० तहां उ० द्रवित होना ए० ऐसे गं० गंगा म० महानदी का प० प्रतिश्रोत ह० शीघ्र आ०

सूत्र खंधे असिधारंवा खुरधारंवा उग्गाहेज्जा ? हंता उग्गाहेज्जा । सेणं तत्थ छिज्जेजवा ? गोयमा ! अत्थेगइए छिज्जेज्जवा भिज्जेज्जवा, अत्थेगइए नो छिज्जेजवा नो भिज्जेज्जवा भिज्जेजवा ॥ एवं अगणिकायस्स मज्झं मज्झेणं तहिं णवरं झियाएज्ज भाणियव्वं एवं पुक्खलसंवट्टस्स, महामेहस्स मज्झं मज्झेणं तहिं उल्लोसिया, एवं गंगाए महाणईए पडिसोयं हव्वमा-

भावार्थ जैसे एक परमाणु शस्त्र से अछिन्न अभिन्न है वैसे ही द्विप्रदेशी स्कंध यावत् संख्यात, असंख्यात प्रदेशी स्कंध भी अछिन्न अभिन्न होते हैं. और अनंत प्रदेशात्मक स्कंध क्वचित् छेदाते भेदाते हैं और क्वचित् छेदाते भेदाते नहीं हैं. जैसे शस्त्र से छेदाते भेदाते का आलापक कहा वैसे ही अग्निकाय में जलनेका जानना. अर्थात् कितनेक अनंत प्रदेशात्मक स्कंध अग्निकाय में जलते हैं व कितनेक नहीं जलते हैं ऐसे ही पुष्कलावर्त महामेघ में कितनेक अनंत प्रदेशी स्कंध भींजते हैं और कितनेक नहीं भींजते

शब्दार्थ साहित पु० पृच्छा गो० गौतम सि० क्वचित् स० अर्ध साहित अ० मध्य रहित स० प्रदेश सहित सि० क्वचित् अ० अर्ध रहित स० मध्य साहित स० प्रदेश साहित ज० जैसे सं० संख्यात प्रदेशात्मक त० तैसे अ० असंख्यात प्रदेशात्मक अ० अनंत प्रदेशात्मक ॥ ३ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल भं० भगवन् प० परमाणु पुद्गल फु० स्पर्शे हुवे किं० क्या दे० देश से दे० देश को फु० स्पर्शता है दे० देश से दे०

सूत्र खंधे किं सअड्ढे पुच्छा ? गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, सिय अणड्ढे समज्झे, सपएसे, जहा संखेज्जपएसिओ, तहा असंखेज्ज पएसिओवि, अणंत पएसिओवि ॥ ३ ॥ परमाणु पोग्गलेणं भंते ! परमाणु पुग्गलं फुसमाणे किं देसेणं देसं फुसइ, देसेणं देसे फुसइ, देसेणं सव्वंफुसइ, देसेहिं देसं

भावार्थ वगैरह जो विषम राशि है उस का तीन प्रदेशी स्कंध जैसे जानना. अहो भगवन् ! संख्यात प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश साहित हैं ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशी स्कंध क्वचित् अर्ध सहित मध्य रहित व प्रदेश साहित है और क्वचित् अर्ध रहित, मध्य साहित व प्रदेश सहित है; क्योंकि इस में सम विषम दोनों राशि होती हैं. संख्यात प्रदेशी स्कंध जैसे असंख्यात प्रदेशी स्कंध व अनंत प्रदेशी स्कंध का जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल का स्पर्श करते क्या १ अपने एक देश से दूसरे के एक देश को स्पर्शे २ अपने एक देश से दूसरे के अनेक देशों को स्पर्शे ३ अपने एक

शब्दार्थ स० प्रदेश सहित णो० नहीं अ० अर्ध रहित णो० नहीं स० मध्य सहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित ति० तीन प्रदेश की पु० पृच्छा खं० स्कंध गो० गौतम अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित नो० नहीं अ० अर्ध सहित नो० नहीं अ० मध्य रहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित जैसे दु० द्विप्रदेशी त० तैसे जे० जो स० सम ते० वे भा० कहना जे० जो वि० विषम ते० वे ज० जैसे ति० तीन प्रदेशात्मक त० तैसे भा० कहना सं० संख्यातप्रदेशात्मक भं० भगवन् खं० स्कंध किं० क्या स० अर्ध

अणड्ढे अमज्झे अपएसे ? गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, नो अणड्ढे, नो समज्झे, नो अपएसिए। तिपएसिएणं भंते ! खंधे पुच्छा। गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सपएसे नो सअड्ढे नो अमज्झे नो अपएसे जहा दुपएसिओ तहा जेसमा ते भाणियव्वा. जे विसमा ते जहा तिपएसिओ, तहा भणियव्वो. ॥ * ॥ संखेज्जपएसिएणं भंते !

भावार्थ प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित है या अर्ध मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! द्वि प्रदेशी स्कंध दो परमाणु का बनाहुआ होने से अर्ध सहित है, मध्य रहित है, व प्रदेश सहित है. अहो भगवन् ! तीन प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है अथवा अर्ध, मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! तीन प्रदेशी स्कंध में तीन प्रदेश होने से अर्ध नहीं हैं परंतु, मध्य व प्रदेश रहे हुवे हैं. इसी तरह आगे २-४-६-८ वगैरह जो सम राशि है उस को द्वि प्रदेशी स्कंध जैसे कहना और ३-५-७-९

शब्दार्थ सहित पु० पृच्छा गो० गौतम सि० क्वचित् स० अर्ध सहित अ० मध्य रहित स० प्रदेश सहित सि० क्वचित् अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित ज० जैसे सं० संख्यात प्रदेशात्मक त० तैसे अ० असंख्यात प्रदेशात्मक अ० अनंत प्रदेशात्मक ॥ ३ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल भं० भगवन् प० परमाणु पुद्गल फु० स्पर्शे हुवे किं० क्या दे० देश से दे० देश को फु० स्पर्शता है दे० देश से दे०

सूत्र खंधे किं सअड्ढे पुच्छा ? गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, सिय अणड्ढे स-मज्झे, सपएसे, जहा संखेज्जपएसिओ, तहा असंखेज्ज पएसिओवि, अणंत पएसिओत्ति ॥ ३ ॥ परमाणु पोग्गलेणं भंते ! परमाणु पुग्गलं फुस-माणे किं देसेणं देसं फुसइ, देसेणं देसे फुसइ, देसेणं सव्वंफुसइ, देसेहिं देसं

भावार्थ वगैरह जो विषम राशि है उस का तीन प्रदेशी स्कंध जैसे जानना. अहो भगवन् ! संख्यात प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशी स्कंध क्वचित् अर्ध सहित मध्य रहित व प्रदेश सहित है और क्वचित् अर्ध रहित, मध्य सहित व प्रदेश सहित है; क्योंकि इस में सम विषम दोनों राशि होती हैं. संख्यात प्रदेशी स्कंध जैसे असंख्यात प्रदेशी स्कंध व अनंत प्रदेशी स्कंध का जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल का स्पर्श करते क्या १ अपने एक देश से दूसरे के एक देश को स्पर्शे २ अपने एक देश से दूसरे के अनेक देशों को स्पर्शे ३ अपने एक

शब्दार्थ स० प्रदेश सहित णो० नहीं अ० अर्ध राहित णो० नहीं स० मध्य सहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित ति० तीन प्रदेश की पु० पृच्छा खं० स्कंध गो० गौतम अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहि नो० नहीं अ० अर्ध सहित नो० नहीं अ० मध्य रहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित जैसे दु० द्विप्रदेशी त० तैसे जे० जो स० सम ते० वे भा० कहना जे० जो वि० विषम ते० वे ज० जैसे ति० तीन प्रदेशा त्मक त० तैसे भा० कहना सं० संख्यातप्रदेशात्मक भं० भगवन् खं० स्कंध किं० क्या स० अर्ध

अणड्ढे अमज्झे अपएसे ? गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, नो अणड्ढे, नो समज्झे, नो अपएसिए। तिपएसिएणं भंते ! खंधे पुच्छा। गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सप-एसे नो सअड्ढे नो अमज्झे नो अपएसे जहा दुपएसिओ तहा जेसमा ते भाणियव्वा. जे विसमा ते जहा तिपएसिओ, तहा भणियव्वो. ॥ * ॥ संखेज्जपएसिएणं भंते !

भावार्थ प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित है या अर्ध मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! द्वि प्रदेशी स्कंध दो परमाणु का बनाहुआ होने से अर्ध सहित है, मध्य रहित है, व प्रदेश सहित है. अहो भगवन् ! तीन प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है अथवा अर्ध, मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! तीन प्रदेशी स्कंध में तीन प्रदेश होने से अर्ध नहीं है परंतु मध्य व प्रदेश रहे हुवे हैं. इसी तरह आगे २-४-६-८ वगैरह जो सम राशि है उस को द्वि प्रदेशी स्कंध जैसे कहना और ३-५-७-९

शब्दार्थ सहित पु० पृच्छा गो० गौतम सि० क्वचित् स० अर्ध सहित अ० मध्य रहित स० प्रदेश सहित सि० क्वचित् अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित ज० जैसे सं० संख्यात प्रदेशात्मक त० तैसे अ० असंख्यात प्रदेशात्मक अ० अनंत प्रदेशात्मक ॥ ३ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल भं० भगवन् प० परमाणु पुद्गल फु० स्पर्शे हुवे किं० क्या दे० देश से दे० देश को फु० स्पर्शता है दे० देश से दे०

सूत्र खंधे किं सअड्ढे पुच्छा ? गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, सिय अणड्ढे स- मज्झे, सपएसे, जहा संखेज्जपएसिओ, तहा असंखेज्ज पएसिओवि, अणंत पएसिओवि ॥ ३ ॥ परमाणु पोग्गलेणं भंते ! परमाणु पुग्गलं फुस- माणे किं देसेणं देसं फुसइ, देसेणं देसे फुसइ, देसेणं सव्वंफुसइ, देसेहिं देसं

भावार्थ वगैरह जो विषम राशि है उस का तीन प्रदेशी स्कंध जैसे जानना. अहो भगवन् ! संख्यात प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशी स्कंध क्वचित् अर्ध सहित मध्य रहित व प्रदेश सहित है और क्वचित् अर्ध रहित, मध्य सहित व प्रदेश सहित है; क्योंकि इस में सम विषम दोनों राशि होती हैं. संख्यात प्रदेशी स्कंध जैसे असंख्यात प्रदेशी स्कंध व अनंत प्रदेशी स्कंध का जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल का स्पर्श करते क्या १ अपने एक देश से दूसरे के एक देश को स्पर्शे २ अपने एक देश से दूसरे के अनेक देशों को स्पर्शे ३ अपने एक

शब्दार्थ

स० प्रदेश सहित णो० नहीं अ० अर्ध रहित णो० नहीं स० मध्य सहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित ति० तीन प्रदेश की पु० पृच्छा खं० स्कंध गो० गौतम अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहि नो० नहीं अ० अर्ध सहित नो० नहीं अ० मध्य रहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित जैसे दु० द्विप्रदेशी त० तैसे जे० जो स० सम ते० वे भा० कहना जे० जो वि० विषम ते० वे ज० जैसे ति० तीन प्रदेशा त्मक त० तैसे भा० कहना सं० संख्यातप्रदेशात्मक भं० भगवन् खं० स्कंध किं० क्या स० अर्ध

सूत्र

अणड्ढे अमज्झे अपएसे ? गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, नो अणड्ढे, नो समज्झे, नो अपएसिए । तिपएसिएणं भंते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सप-एसे नो सअड्ढे नो अमज्झे नो अपएसे जहा दुपएसिओ तहा जेसमा ते भाणियव्वा. जे विसमा ते जहा तिपएसिओ, तहा भणियव्वो. ॥ * ॥ संखेज्जपएसिएणं भंते !

भावार्थ

प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित है या अर्ध मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! द्वि प्रदेशी स्कंध दो परमाणु का बनाहुआ होने से अर्ध सहित है, मध्य रहित है, व प्रदेश सहित है. अहो भगवन् ! तीन प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है अथवा अर्ध, मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! तीन प्रदेशी स्कंध में तीन प्रदेश होने से अर्ध नहीं हैं परंतु मध्य व प्रदेश रहे हुवे हैं. इसी तरह आगे २-४-६-८ वगैरह जो सम राशि है उस को द्वि प्रदेशी स्कंध जैसे कहना और ३-५-७-९

शब्दार्थ सहित पु० पृच्छा गो० गौतम सि० क्वचित् स० अर्ध सहित अ० मध्य रहित स० प्रदेश सहित सि० क्वचित् अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित ज० जैसे सं० संख्यात प्रदेशात्मक त० तैसे अ० असंख्यात प्रदेशात्मक अ० अनंत प्रदेशात्मक ॥ ३ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल भं० भगवन् प० परमाणु पुद्गल फु० स्पर्शे हुवे किं० क्या दे० देश से दे० देश को फु० स्पर्शता है दे० देश से दे०

सूत्र खंधे किं सअड्ढे पुच्छा ? गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, सिय अणड्ढे स-मज्झे, सपएसे, जहा संखेज्जपएसिओ, तहा असंखेज्ज पएसिओवि, अणंत पएसिओवि ॥ ३ ॥ परमाणु पोग्गलेणं भंते ! परमाणु पुग्गलं फुस-माणे किं देसेणं देसं फुसइ, देसेणं देसे फुसइ, देसेणं सव्वंफुसइ, देसेहिं देसं

भावार्थ वगैरह जो विषम राशि है उस का तीन प्रदेशी स्कंध जैसे जानना. अहो भगवन् ! संख्यात प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशी स्कंध क्वचित् अर्ध सहित मध्य रहित व प्रदेश सहित है और क्वचित् अर्ध रहित, मध्य सहित व प्रदेश सहित है; क्योंकि इस में सम विषम दोनों राशि होती हैं. संख्यात प्रदेशी स्कंध जैसे असंख्यात प्रदेशी स्कंध व अनंत प्रदेशी स्कंध का जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल का स्पर्श करते क्या १ अपने एक देश से दूसरे के एक देश को स्पर्शे २ अपने एक देश से दूसरे के अनेक देशों को स्पर्शे ३ अपने एक

शब्दार्थ स० प्रदेश सहित णो० नहीं अ० अर्ध रहित णो० नहीं स० मध्य सहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित ति० तीन प्रदेश की पु० पृच्छा खं० स्कंध गो० गौतम अ० अर्ध रहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहि नो० नहीं अ० अर्ध सहित नो० नहीं अ० मध्य रहित नो० नहीं अ० प्रदेश रहित जैसे दु० द्विप्रदेशी त० तैसे जे० जो स० सम ते० वे भा० कहना जे० जो वि० विषम ते० वे ज० जैसे ति० तीन प्रदेशा त्मक त० तैसे भा० कहना सं० संख्यातप्रदेशात्मक भं० भगवन् खं० स्कंध किं० क्या स० अर्ध

सूत्र अणड्ढे अमज्झे अपएसे ? गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे, सपएसे, नो अणड्ढे, नो समज्झे, नो अपएसिए । तिपएसिएणं भंते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सप- एसे नो सअड्ढे नो अमज्झे नो अपएसे जहा दुपएसिओ तहा जेसमा ते भाणियव्वा. जे विसमा ते जहा तिपएसिओ, तहा भणियव्वो. ॥ * ॥ संखेज्जपएसिएणं भंते !

भावार्थ द्वि प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित है या अर्ध मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! द्वि प्रदेशी स्कंध दो परमाणु का बनाहुआ होने से अर्ध सहित है, मध्य रहित है, व प्रदेश सहित है. अहो भगवन् ! तीन प्रदेशी स्कंध क्या अर्ध मध्य व प्रदेश सहित है अथवा अर्ध, मध्य व प्रदेश रहित है ? अहो गौतम ! तीन प्रदेशी स्कंध में तीन प्रदेश होने से अर्ध नहीं हैं परंतु, मध्य व प्रदेश रहे हुवे हैं. इसी तरह आगे २-४-६-८ वगैरह जो सम राशि है उस को द्वि प्रदेशी स्कंध जैसे कहना और ३-५-७-९

शब्दार्थ स्पर्शावे जा० यावत् अ० अनंत प्रदेश दु० द्विप्रदेशात्मक भं० भगवन् खं० स्कंध प० परमाणु पुद्गल फु० स्पर्शता हुवा पु० पृच्छा त० तीसरा न० नववा से फु० स्पर्शे दु० द्विपदेशात्मक दु० दो प्रदेशी को फु० स्पर्शते प० प्रथम त० तीसरा स० सातवा न० नववे से फु० स्पर्शे दु० दो प्रदेशी ति० तीन प्रदेश को फु० स्पर्शते आ० आदि के प० पीछे के ती० तीन से म० मध्य के ती० तीन प० प्रतिषेध करना दु०

सूत्र णिप्पच्छिमएहिं तिहिं फुसइ; जहा परमाणुपोग्गले तिपएसियं फुसाविओ एवं फुसावेयव्वो, जाव अणंत पएसिओ। दुपएसिएणं भंते! खंधे परमाणु पोग्गलं फुसमाणे पुच्छा तइय नवमेहिं फुसइ, दुपएसिओ दुपएसियं फुसमाणो पढमतइय सत्तमनवमेहिं फुसइ, दुपएसिओ तिपएसियं फुसमाणो आदिल्लएहिं य पच्छिल्लएहिं

भावार्थ पुद्गल द्वि प्रदेशी स्कंध को स्पर्शते सर्व से एक देश को व सर्व से सर्व को स्पर्शे ऐसे सातवे व नववे दो भांगे पाते हैं. परमाणु पुद्गल तीन प्रदेशी स्कंध को स्पर्शते पीछे के तीन भांगे पाते हैं १ यदि वह तीन प्रदेशात्मक स्कंध तीन प्रदेश में रहा हुवा होवे तो उस स्कंध के एक प्रदेश को वह परमाणु सर्वांग से स्पर्शता है २ यदि उस त्रिप्रदेशी स्कंध के दो परमाणु एक प्रदेश पर रहा हुवा होवे तो सर्वांग से अनेक देशों को स्पर्शे ३ यदि उक्त तीन प्रदेशी स्कंध परमाणु की सूक्ष्मता से एकही परमाणु पर रहे तब सर्वांग से सर्वांग को स्पर्शे ऐसे अंत्यके तीन भांगे पाते हैं. जैसे तीन प्रदेश को परमाणु पुद्गल स्पर्शता है वैसे ही चार

शब्दार्थ

देशको फु० स्पर्शता है दे० देश से स० सब को फु० स्पर्शता है दे० देशोंसे स० सब से गो० गौतम नो० नहीं दे० देश से दे० देशको फु० स्पर्शे प० परमाणु पो० पुद्गल दु० द्विप्रदेशी को फु० स्पर्शते स० सात न० नव मे फु० स्पर्शे प० परमाणु पो० पुद्गल ति० तीन प्रदेश को फु० स्पर्शते नि० अन्त्य ति० तीन से फु० स्पर्शे ज० जैसे प० परमाणु पो० पुद्गल ति० तीन प्रदेश को फु० स्पर्शा हुआ ए० ऐसे फु०

सूत्र

फुसइ, देसेहिं देसे फुसइ, देसेहिं सव्वं फुसइ, सव्वेणं देसं फुसइ, सव्वेणं देसे फुसइ, सव्वेणं सव्वं फुसइ ? गोयमा ! नो देसेणं देसं फुसइ, णो देसेणं देसे फुसइ, णो देसेणं सव्वं फुसइ, नो देसेहिं देसं फुसइ, नो देसेहिं देसे फुसइ, नो देसेहिं सव्वं फुसइ, नो सव्वेणं देसं फुसइ, णो सव्वेणं देसे फुसइ, सव्वेणं सव्वं फुसइ। परमाणु पोग्गले दुपएसियं फुसमाणे सत्त नवमेहिं फुसइ, परमाणुपोग्गले तिपएसियं फुसमाणे

भावार्थ

देश से दूसरे के सर्वांग को स्पर्शे ४ अपने अनेक देश से दूसरे के एक देश को स्पर्शे ५ अपने अनेक देश से दूसरे के अनेक देशों को स्पर्शे ६ अपने अनेक देश से दूसरे के सर्वांग को स्पर्शे ७ अपने सर्वांग से दूसरे के एक देश को स्पर्शे ८ अपने सर्वांग से दूसरे के अनेक देशों को स्पर्शे और ९ अपने सर्वांग से दूसरे के क्या सर्वांग को स्पर्शे ? अहो गौतम ! इन भांग में से मात्र नवां सर्वांग से सर्वांग को स्पर्शे यही भांगा मील सकता है. परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल को स्पर्शने में शेष आठ भांगे नहीं हैं. परमाणु

पदार्थ
तीन प्रदेशात्मक ति० तीन प्रदेश को फु० स्पर्शते स० सत्र ठा० स्थान में फु० स्पर्शते ज० जैसे ति० तीन प्रदेशात्मक को फु० स्पर्शा हुवा ए० ऐसे ति० तीन प्रदेशात्मक जा० यावत् अ० अनंत प्रदेशात्मक की साथ सं० जोडना ज० जैसे ति० तीन प्रदेशात्मक ए० ऐसे जा० यावत् अ० अनंत प्रदेशात्मक भा० कहना ॥ ४ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल भं० भगवन् का० काल से के० कितना हो० होता है गो० गौतम ज०

सूत्र
सियं फुसमाणो सव्वेसुवि ठाणेसु फुसइ । जहा तिपएसिओ तिपएसियं फुसाविओ, एवं तिपएसिओ जाव अणंतपएसिएणं संजोएयव्वो, जहा तिपएसिओ एवं जाव अणंतपएसिओ भाणियव्वो ॥ ४ ॥ परमाणु पोग्गलेणं भंते ! कालओ केवचिरंहोइ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, एवं जाव अणंत पएसि-

भावार्थ
तीन प्रदेशी स्कंध परमाणु पुद्गल को स्पर्शते हुवे तीसरा, छट्ठा व नववां भांगा को स्पर्शे. तीन प्रदेशी स्कंध द्वि प्रदेशी स्कंध को स्पर्शते हुए पहिला, तीसरा, चौथा, छट्ठा, सातवां व नववां को स्पर्शे और तीन प्रदेशी तीन प्रदेशी को स्पर्शते हुवे सब भांगे को स्पर्शे. जैसे तीन प्रदेशी का कहा वैसे ही चार, पांच यावत् संख्यात असंख्यात व अनंत प्रदेशी का जानना. और जैसे तीन प्रदेशी स्कंध से परमाणु पुद्गल यावत् अनंत प्रदेशी के भांगे कहे वैसे ही चार, पांच यावत् अनंत प्रदेशी की साथ जानना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गलपने कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय

शब्दार्थ द्विप्रदेशात्मक ज० जैसे तिं० तीन प्रदेश फु० स्पर्शाया हुवा ए० ऐसे फु० स्पर्शना जा० यावत् अ० अनंत प्रदेशात्मक ति० तीन प्रदेशात्मक भं० भगवन् खं० स्कंध प० परमाणु पो० पुद्गल फु० स्पर्शते हुवे पु० पृच्छा त० तीसरा छ० छठ्ठा न० नववे से फु० स्पर्शता है ति० तीन प्रदेशात्मक दु० दो प्रदेश को फु० स्पर्शने प० प्रथम त० तीसरा च० चौथा छ० छठ्ठा स० सातवा न० नववे से फु० स्पर्शता है ति०

सूत्र तिहिं फुसइ, मज्झिमएहिं तिहिंवा पाडिसेहेयव्वं. दुपएसिओ जहा तिपएसियं फुसाविओ. एवं फुसावेयव्वो जाव अणंतपएसियं तिपएसिएणं भंते ! खंधे परमाणु पोग्गलं फुसमाणे पुच्छा तइयछट्ठणवमेहिं फुसइ ॥ तिपएसिओ दुपएसियं फुसमाणो पढमएणं तइयएणं चउत्थछट्ठसत्तमनवमेहिं फुसइ ॥ तिपएसिओ तिपए-

पांच यावत् संख्यात, असंख्यात व अनंत प्रदेश तक जानना. अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल को स्पर्शते द्वि प्रदेशी स्कंध में कितने भांगे पावे ? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल को स्पर्शते हुवे द्विप्रदेशी स्कंध में तीसरा व नववा भांगा पावे अर्थात् अपने देश से परमाणु पुद्गल के सर्वांग को स्पर्शे अथवा अपने सर्वांग से उस के सर्वांग को स्पर्शे. द्वि प्रदेशी द्वि प्रदेशी को स्पर्शते हुए पहिला, तीसरा, सातवां, व नववां भांगा को स्पर्शे, तीन प्रदेशी को स्पर्शते हुए पहिले के तीन व पीछे के तीन ऐसे भांगे को स्पर्शे. और इसी तरह चार, पांच यावत् संख्यात, असंख्यात व अनंत प्रदेशी को स्पर्शते हुवे द्विप्रदेशी स्कंधमें उक्त छ भांगे पावे

अनुवादार्थ निं० कंपन रहित ज० जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट अ० असंख्यात काल ए० एक गु० गुन काला भं० भगवन् पो० पुद्गल का० काल में के० कितना भ० होवे गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट अ० असंख्यात काल ए० ऐसे व० वर्ण गं० गंध र० रस फा० स्पर्श जा०""यावत्

सूत्र गाढे एगगुणकालएणं भंते ! पोग्गले कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं एवं जाव अणंत गुणकालए; एवं वण्ण गंधरस फास जाव अणंत लुक्खे, एवं सुहुम परिणए पोग्गले, एवं बादर परिणए पोग्गले सद्दपरिणएणं भंते ! पोग्गले कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा !

भावार्थ की व्याख्या नहीं होती है. एक आकाश प्रदेश पर रहनेवाला परमाणु पुद्गल कम्पन रहित जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात काल तक रहता है ऐसे ही असंख्यात प्रदेशावगाढ परमाणु पुद्गल का जानना. अहो भगवन् ! एक गुन काला पुद्गल जघन्य कितना कालतक रहता है ? अहो गौतम ! एक गुन काला पुद्गल जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात कालतक रहता है जैसे एक गुन काला का कहा वैसे ही अनंत गुन काला तक जानना. और ऐसे ही शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श में अनंत प्रदेशी रूक्ष पुद्गल तक का जानना. ऐसे ही सूक्ष्म परिणत पुद्गल व बादर परिणत पुद्गल का जानना. अहो भगवन् ! शब्द से परिणमे हुए पुद्गलों कितने काल तक शब्दपने रहते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य

शब्दार्थ जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट अ० असंख्यात ए० ऐसे जा० यावत् अ० अनंत प्रदेशात्मक ए० ये प० प्रदेशावगाही भं० भगवन् पो० पुद्गल से० कंपन सहित त० उस ठा० स्थान में अ०. अन्य ठा० स्थान में का० काल से के० कितना हो० होता है गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट आ० आवलिका का अ० असंख्यातवा भा० भाग ए० ऐसे जा० यावत् अ० असंख्यात प्रदेशावगाढ

सूत्र ओ॥ एगपएसोगाढेणं भंते! पोग्गले सेए तम्मिवा ठाणे अण्णम्मिवा ठाणे कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णं एगं समयं उक्कोसे आवलियाए असंखेज्जइ भागं, एवं जाव असंखेज्ज पएसोगाढे ॥ एग पएसोगाढेणं भंते! पोग्गले निरेए कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जकालं एवं जाव असंखेज्ज पएसो

उत्कृष्ट असंख्यात काल तक रहे तत्पश्चात् वह एक रूप में नहीं रह सकता है. वैसे ही द्वि प्रदेशी स्कंध तीन प्रदेशी यावत् अनंत प्रदेशी स्कंध जघन्य एक समय तक रहता है उत्कृष्ट असंख्यात काल तक रहता है. अहो भगवन्! एक प्रदेशावगाढ (एक आकाश प्रदेश पर रहा हुवा) पुद्गल कंपन सहित अ-धिकृत स्थान में अथवा अन्य स्थान में कितना काल तक रहे? अहो गौतम! जघन्य एक समय तक रहे उत्कृष्ट आवलिका के असंख्यातवे भाग तक रहे. जैसे एक प्रदेशावगाढ पुद्गल का कहा वैसे ही अ-संख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गलतक का जानना. आकाश के अनंत प्रदेश नहीं होने से अनंत प्रदेशावगाढ पुद्गल

शब्दार्थ प्रदेशी ॥ ६ ॥ ए० एक प० प्रदेशावगाढ भं० भगवन् पु० पुद्गल का से० कंपन सहित अं० आंतरा का० काल से के० कितना हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट अ० असंख्यात काल

सूत्र अणंतकालं. एवं जाव अणंतपएसिओ ॥ ६ ॥ एगपएसोगाढस्सणं भंते ! पोग्गलस्स सेयस्स अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जंकालं ॥ एवं जाव असंखेज्जपएसोगाढे एग पएसोगाढस्सणं भंते ! निरेयस्स अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइ भागं एवं जाव असंखेज्जपएसोगाढे ॥ वण्ण गंध रस फास सुहुमपरिणयाणं, एएसिं जंचेव अंतरंपि भाणियव्वं ॥ सद्द परिणयस्सणं भंते ! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवचिरंहोइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं

भावार्थ समय उत्कृष्ट अनंत काल का अंतर पडता है. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! एक प्रदेशावगाही चलित पुद्गलों का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात कालका. और ऐसे ही असंख्यात प्रदेशात्मक का जानना. एक प्रदेशावगाही स्थिर पुद्गलों का अहो भगवन् ! कितना अंतर ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यात वां भाग का जानना. ऐसे ही असंख्यात

शब्दार्थ अ० अनंत लु० रूक्ष ए० एस बा० बादर परिणत पो० पुद्गल स० शब्द प० परिणत भं० भगवन् पो० पुद्गल का० काल से क० कितना हो० होवे शेष पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल का भं० भगवन् अं० आंतरा का० काल से के० कितना हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट अ० असंख्यात काल दु० द्विप्रदेशी भं० भगवन् खं० स्कंध का ए० ऐसे जा० यावत् अ० अनंत

सूत्र जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं आवालियाए असंखेज्जइभागं, असद्दपरिणए जहा एक गुणकालए ॥ ५ ॥ परमाणु पोग्गलस्सणं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगंसमयं उक्कोसेणं असंखेज्जकालं ॥ दुपएसियस्सणं भंते ! खंधस्स अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं

भावार्थ एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यातवा भाग तक रहते हैं अशब्दपरिणत पुद्गलोंको एक गुन काला जैसे कहना॥५॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल का अंतर[1] कितनेकाल का कहा? अहो गौतम! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट असंख्यात काल का. द्विप्रदेशी स्कंध यावत् अनंत प्रदेशी स्कंध का जघन्य एक

[1] एक परमाणु पुद्गल जितने समय में अन्य पुद्गलों की साथ मीलकर फीर उस से विच्छिन्न बनकर एक ही परमाणु पुद्गल बन जावे उतने समय को अंतर कहते है.

शब्दार्थ प्रदेशी ॥ ६ ॥ ए० एक प० प्रदेशावगाढ भं० भगवन् पु० पुद्गल का से० कंपन सहित अं० आंतरा का० काल से के० कितना हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट अ० असंख्यात काल

सूत्र अणंतकालं. एवं जाव अणंतपएसिओ ॥ ६ ॥ एगपएसोगाढस्सणं भंते ! पोग्गलस्स सेयस्स अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जंकालं ॥ एवं जाव असंखेज्जपएसोगाढे एग पएसोगाढस्सणं भंते ! निरयस्स अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइ भागं एवं जाव असंखेज्जपएसोगाढे ॥ वण्ण गंध रस फास सुहुमपरिणयाणं, एएसिं जंचेव अंतरंपि भाणियव्वं ॥ सद्द परिणयस्सणं भंते ! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवचिरंहोइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं

भावार्थ समय उत्कृष्ट अनंत काल का अंतर पडता है. ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! एक प्रदेशावगाही चलित पुद्गलों का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात कालका. और ऐसे ही असंख्यात प्रदेशात्मक का जानना. एक प्रदेशावगाही स्थिर पुद्गलों का अहो भगवन् ! कितना अंतर ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यात वां भाग का जानना. ऐसे ही असंख्यात

शब्दार्थ अ० अनंत लु० रूक्ष ए० ऐसे बा० बादर परिणत पो० पुद्गल स० शब्द प० परिणत भं० भगवन् पो० पुद्गल का० काल से क० कितना हो० होवे शेष पूर्ववत् ॥ ५ ॥ प० परमाणु पो० पुद्गल का भं० भगवन् अं० अंतरा का० काल से के० कितना हो० होवे गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट अ० असंख्यात काल दु० द्विप्रदेशी भं० भगवन् खं० स्कंध का ए० ऐसे जा० यावत् अ० अनंत

सूत्र जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं आवालियाए असंखेज्जइभागं, असद्दपरिणए जहा एक गुणकालए ॥ ५ ॥ परमाणु पोग्गलस्सणं भंते ! अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगंसमयं उक्कोसेणं असंखेज्जकालं ॥ दुपएसियस्सणं भंते ! खंधस्स अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं

भावार्थ एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यातवा भाग तक रहते हैं अशब्दपरिणत पुद्गलोंको एक गुन काला जैसे कहना॥५॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल का अंतर[1] कितनेकाल का कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट असंख्यात काल का. द्विप्रदेशी स्कंध यावत् अनंत प्रदेशी स्कंध का जघन्य एक

[1] एक परमाणु पुद्गल जितने समय में अन्य पुद्गलों की साथ मीलकर फीर उस से विच्छिन्न बनकर एक ही परमाणु पुद्गल बन जाये उतने समय को अंतर कहते हैं.

शब्दार्थ गौतम स० सब से थो० थोडे खे० क्षेत्र स्थान का आयुष्य ओ० अवगाहना स्थान का आयुष्य अ० असंख्यात गुना द० द्रव्य स्थान असंख्यात गुना भा० भाव स्थान असंख्यात गुने ॥ ८ ॥ ने० नारकी कि० क्या सा० आरंभ सहित स० परिग्रह सहित उ० अथवा अ० अनारंभी अ० अपरिग्रही गो० गौतम ने० नारकी सा० सारंभी स० सपरिग्रही नो० नहीं अ० अनारंभी अ० अपरिग्रही से० अथ के० कैसे गो०

सूत्र उयस्स कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तट्ठाणाउए, ओगाहणट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे, दव्वट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे, भावट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे ॥ खेत्तोगाहणदव्वे भावट्ठाणाउयंच अप्पबहुं-खेत्ते सव्वत्थोवे सेसाट्ठाणा असंखेज्जगुणा ॥ ८ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा, उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ? गोयमा ! नेरइया सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा ॥ सेकेणट्ठेणं जाव

भावार्थ कौन किस से अल्प, बहुत व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडा क्षेत्र स्थान का आयुष्य, उस से अवगाहना स्थान का आयुष्य असंख्यात गुना, उस मे द्रव्य स्थान का आयुष्य असंख्यात गुना और उस से भाव स्थान का आयुष्य असंख्यात गुना. ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी सारंभी सपरिग्रही है ? अथवा अनारंभी अपरिग्रही हैं ? अहो गौतम ! नारकी सारंभी व सपरिग्रही हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी सारंभी सपरिग्रही हैं ? अहो गौतम ! नारकी पृथ्वी काया का यावत् त्रस काया

शब्दार्थ शेष पूर्ववत् ॥ ७ ॥ ए० कंपने वाले द० द्रव्य स्थान का आ० आयुष्य खे० क्षेत्र स्थान आयुष्य ओ० अवगाहना स्थान आयुष्य भा० भाव स्थान आयुष्य में से क० कौन जा० यावत् वि० विशेषाधिक गो०

सूत्र असंखेज्जकालं असद्दपरिणयस्सणं भंते ! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवचिरंहोइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइ भागं, ॥ ७ ॥ एयस्स भंते ! दव्वट्ठाणाउयस्स, खेत्तट्ठाणाउयस्स, ओगाहणट्ठाणाउयस्स, भावट्ठाणा

भावार्थ प्रदेशावगाही स्थिर पुद्गल तक का जानना. ऐसे ही वर्ण, गंध, रस स्पर्श व सूक्ष्म परिणत पुद्गलों का जानना. शब्द परिणत का अंतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात काल का और अशब्द परिणत पुद्गलों का जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यात वा भाग का जानना. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य स्थान की स्थिति, क्षेत्र स्थान की स्थिति. अवगाहना स्थान की स्थिति, व भाव स्थान की स्थिति में से

---

१ द्रव्य सो पुद्गल द्रव्य, स्थान सो भेद और आयु सो स्थिति. अर्थात् पुद्गल परमाणु द्विप्रदेशी स्कंधादिक की स्थिति अथवा द्रव्यका उसी भव में अवस्थान रूप रहना सो द्रव्यस्थान आयुष्य.

२ क्षेत्रस्थान आयुष्य एक आकाश प्रदेश में जितने कालतक पुद्गल अवस्थित पने रहे सो क्षेत्रस्थान आयुष्य.

३ जितने आकाश प्रदेश में पुद्गल अवगाहे उतने ही पुद्गल अन्य स्थान अवगाहे इस की स्थिति सो अवगाहन स्थान आयुष्य और ४ भाव सो कालादि के भेद की स्थिति.

शब्दार्थ गौतम स० सब से थो० थोडे खे० क्षेत्र स्थान का आयुष्य ओ० अवगाहना स्थान का आयुष्य अ० असंख्यात गुना द० द्रव्य स्थान असंख्यात गुना भा० भाव स्थान असंख्यात गुने ॥ ८ ॥ ने० नारकी किं० क्या सा० आरंभ सहित स० परिग्रह सहित उ० अथवा अ० अनारंभी अ० अपरिग्रही गो० गौतम ने० नारकी सा० सारंभी स० सपरिग्रही नो० नहीं अ० अनारंभी अ० अपरिग्रही से० अथ के० कैसे गो०

सूत्र उयस्स कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तट्ठाणाउए, ओगाहणट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे, दव्वट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे, भावट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे ॥ खेत्तोगाहणदव्वे भावट्ठाणाउयंच अप्पबहुं-खेत्ते सव्वत्थोवे सेसाट्ठाणा असंखेज्जगुणा ॥ ८ ॥ नेरइयाणं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा, उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ? गोयमा ! नेरइया सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा ॥ सेकेणट्ठेणं जाव

भावार्थ कौन किस से अल्प, बहुत व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडा क्षेत्र स्थान का आयुष्य, उस से अवगाहना स्थान का आयुष्य असंख्यात गुना, उस मे द्रव्य स्थान का आयुष्य असंख्यात गुना और उस से भाव स्थान का आयुष्य असंख्यात गुना. ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! क्या नारकी सारंभी सपरिग्रही हैं ? अथवा अनारंभी अपरिग्रही हैं ? अहो गौतम ! नारकी सारंभी व सपरिग्रही हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से नारकी सारंभी सपरिग्रही हैं ? अहो गौतम ! नारकी पृथ्वी काया का यावत् त्रस काया

शब्दार्थ शेष पूर्ववत् ॥ ७ ॥ ए० कंपने वाले द० द्रव्य स्थान का आ० आयुष्य खे० क्षेत्र स्थान आयुष्य ओ० अवगाहना स्थान आयुष्य भा० भाव स्थान आयुष्य में से क० कौन जा० यावत् वि० विशेषाधिक गो०

सूत्र असंखेज्जकालं असद्दपरिणयस्सणं भंते ! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवचिरंहोइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइ भागं, ॥ ७ ॥ एयस्स भंते ! दव्वट्ठाणाउयस्स, खेत्तट्ठाणाउयस्स, ओगाहणट्ठाणाउयस्स, भावट्ठाणा

भावार्थ प्रदेशावगाही स्थिर पुद्गल तक का जानना. ऐसे ही वर्ण, गंध, रस स्पर्श व सूक्ष्म परिणत पुद्गलों का जानना. शब्द परिणत का अंतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात काल का और अशब्द परिणत पुद्गलों का जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यात वा भाग का जानना. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य स्थान की स्थिति, क्षेत्र स्थान की स्थिति. अवगाहना स्थान की स्थिति, व भाव स्थान की स्थिति में से

१ द्रव्य सो पुद्गल द्रव्य, स्थान सो भेद और आयु सो स्थिति. अर्थात् पुद्गल परमाणु द्विप्रदेशी स्कंधादिक की स्थिति अथवा द्रव्यका उसी भव में अवस्थान रूप रहना सो द्रव्यस्थान आयुष्य.

२ क्षेत्रस्थान आयुष्य एक आकाश प्रदेश में जितने कालतक पुद्गल अवस्थित पने रहे सो क्षेत्रस्थान आयुष्य.

३ जितने आकाश प्रदेश में पुद्गल अवगाहे उतने ही पुद्गल अन्य स्थान अवगाहे इस की स्थिति सो अवगाहन स्थान आयुष्य और ४ भाव सो कालादि के भेद की स्थिति.

पदार्थ मनुष्यणी ति० तिर्यंच ति० तिर्यंचणियों प० परिग्रहीत भ० होते हैं ए० ऐसे आ० आसन स० शयन भं० भांडे म० पात्र उ० उपकरण प० परिग्रहीत ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमार ॥१०॥ ए० एकेन्द्रिय ज० जैसे ने० नारकी ॥ ११ ॥ बे० द्विइन्द्रिय भं० भगवन् वा० बाह्य भं० भंड म० पात्र उ०

सूत्र मणूसा-मणूसीओ-तिरिक्खजोणिया - तिरिक्खजोणिणीओ - परिग्गहियाओ भवंति ॥ आसण सयण भंडमत्तोवगरणा परिग्गहिया भवंति, सचित्ताचित्तमीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति से तेणट्ठेणं तहेव, एवं जाव थणियकुमारा ॥ १० ॥ एगिंदिया जहा नेरइया ॥ ११ ॥ बेइंदियाणं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा तंचेव जाव सरीरा परिग्गहिया भवंति, बाहिरिया भंडमत्तोवगरणापरिग्गहिया

भावार्थ तिर्यंच, तिर्यंचणियों का परिग्रह होता है, वैसे ही आसन, शयन, भंड, पात्र, उपकरण, सचित्त अचित्त व मीश्र द्रव्य का परिग्रह होता है इसलिये वेसारंभी व सपरिग्रही कहलाते हैं. ॥ १० ॥ एकेन्द्रिय का अधिकार नारकी जैसे कहना ॥११॥ द्वीन्द्रिय तीइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय को शरीर, कर्म व बाह्य भंड, पात्र उपकरण वैसे ही सचित्त अचित्त व मीश्र द्रव्यका परिग्रह होता है इसलिये वे सारंभी व सपरिग्रही कहाते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! क्या तिर्यंच पंचेंद्रिय सारंभी सपरिग्रही हैं ? अहो गौतम !

शब्दार्थ गौतम ने० नारकी पु० पृथ्वी काया का स० आरंभ करते हैं जा० यावत् त० त्रस काया का स० आरंभ करते हैं स० शरीर परिग्रही भ० होते हैं क० कर्म प० परिग्रह वाले भ० होते हैं स० सचित्त अ० अचित्त मी० मीश्र द० द्रव्य प० परिग्रहीत भ० होते हैं ते० इसलिये ॥ ९ ॥ अ० असुरकुमार भं० भगवन् भ० भवन के प० परिग्रहवाले दे० देव दे० देवियों म० मनुष्य म०

सूत्र अपरिग्गहा ? गोयमा ! नेरइयाणं पुढविकायं समारभंति, जाव तसकायं समारभंति, सरीरा परिग्गहिया भवंति, कम्मा परिग्गहिया भवंति सचित्ताचित्तमीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति । सेतेणं तं चेव ॥९॥ असुरकुमाराणं भंते ! किं सारंभा पुच्छा ? गोयमा ! असुरकुमारा सारंभा संपरिग्गहा नो अणारंभा अपरिग्गहा, से केणट्ठेणं ? गोयमा ! असुरकुमाराणं पुढविकायं समारभंति जाव तसकायं समारभंति ॥ सरीरा परिग्गहिया भवंति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, भवणा परिग्गहिया भवंति, देवा-देवीओ

भावार्थ का आरंभ करते हैं. नारकी को शरीर, कर्म, सचित्त, अचित्त व मीश्र द्रव्य का परिग्रह होता है इसलिये वे सारंभी व सपरिग्रही हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार जाति के देव क्या सारंभी सपरिग्रही हैं ? अहो गौतम ! असुरकुमार सारंभी सपरिग्रही हैं क्योंकी असुरकुमार पृथ्वीकाय यावत् त्रसकाया का आरंभ करते हैं और उन को शरीर कर्म, भवन, देव, देवियों, मनुष्य, मनुष्यणियों,

शब्दार्थ कारी स्थान चि० क्यारे के आकार वाले स्थान अ० कूप त० तलाव द० द्रह न० नदी वा० वावे पु० पुष्करणी दी० लम्बी वावि गुं० चक्राकार वापि स० सरोवर स० सरोवर की पं० पंक्ति स० छोटे तलावों की पंक्ति बि० बिल पंक्ति आ० खेलने का बगीचा उ० उद्यान का० वन व० वन व० वनखंड

सूत्र ओ, परिग्गाहियाओ भवंति, आरामुज्जाण-काणणा-वणा-वणखंडा वणराईओ-परिग्गहिया-ओ भवंति ॥ देवउल-सभ-पव्व-थूभ-खाइय- परिखाओ-परिग्गाहियाओ भवंति, पागार ट्टालग-चरिय-दार-गोपुर-परिग्गाहिया भवंति, पासाय-घर-सरण-लेण-आवण-परिग्गाहि-या भवंति, सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहा-परिग्गाहिया भवंति,

भावार्थ तालाव, तालाव की पंक्ति, छोटे तालाव, छोटे तालाव की पंक्ति, बिलों की पंक्ति, आराम, उद्यान, कानन वन, वनखंड, वनराजी, देवालय, सभा स्थान, पर्वत, स्तूप, खाई, परिखा, कोट, कोट की उपर के अटारी, चरिका, द्वार, गोपुर, प्रासाद, गृह, तृणका गृह, आश्रय स्थान, दुकान. शृंगाटकके आकार का मार्ग,

४ जिस में दपत्यादि क्रीडा करते हैं उसे आराम कहते हैं. ५१ उत्सवों के प्रसंग में बहुत जनों को भोग्य पुष्पवाले वृक्षो जिस मे रहे हुवे होवे ६ नगर की पास का वन. ७ नगर से बहुत दूर का वन ८ एक जाति के वृक्ष समुहवाला स्थान ९ वृक्ष की पक्ति १० ऊंचे नीचे सब स्थान सरिखी ११ गृह के कोट में हस्ती प्रमुख को जाने का द्वार.

शब्दार्थ

उपकरण प० परिग्रहीत भ० होते हैं ए० ऐसे जा० यावत् च० चतुरिन्द्रिय ॥ १२ ॥ पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच तं० वैसे जा० यावत् क० कर्म परिग्रहीत टं० छेदेहुए पर्वत कू० शिखर से मुं० मुण्ड पर्वत सि० सि० शिखर वाले पर्वत प० किंचित् नम हुवे ज० जल थ० स्थल बि० बिल गु० गुफा ले० उत्कीर्ण पर्वत गड़ उ० पानी नीचे पड़ने का स्थान नि० झरने के स्थान चि० कीचड़ मीश्रित जल स्थान प० आनंद

सूत्र

भवंति. सचित्ताचित्त जाव भवंति, एवं जाव चउरिंदिया ॥ १२ ॥ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! तंचेव जाव कम्मापरिग्गहिया भवंति, टंका-कूडा-सेला-सिहरी-पब्भारा-परिग्गहिया भवंति, जल-थल-बिल-गुह-लेणा-परिग्गहिया भवंति, उज्झर-निज्झर-चिल्लल-पल्लल-विप्पणा-परिग्गहिया भवंति, अगड-तडाग-दह-नदीओ-वावी-पुक्खरिणी-दीहिया-गुंजालिया-सरा-सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ, बिलपंतिया-

भावार्थ

तिर्यंच पंचेन्द्रिय पृथ्वीकाय यावत् त्रस काया का आरंभ करते हैं. उन को शरीर, कर्म का परिग्रह रहाहुवा है. टंके, कूटे, सिले, शिखर व किंचित् नमे हुवे शिखर का परिग्रह रहा हुवा है. जलस्थान, स्थलस्थान, बिल, गुफा व आश्रय स्थान का परिग्रह रहा हुवा है, पर्वत के झरणे, निझरणे, कीचड़, प्रल्हादक स्थान व वप्रादि का परिग्रह रहा हुवा है. कूवे, तालाव, नदी, वावि, पुष्करणी, दीर्घिका, चक्राकार वावि, बड़े

१ छिन्नटंकाः टंके २ शिखराणि इत्यादि वंगनस्थानानिवा ३ मुण्ड पर्वत.

शब्दार्थ — जैसे ति० तिर्यंच त० तैसे म० मनुष्य भा० कहना ॥ १४ ॥ वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक ज० जैसे भ० भवनवासी त० तैसे ने० जानना ॥ १५ ॥ पं० पांच हे० हेतु प० कहा तं० वह ज०

सूत्र — तिरिक्ख जोणिया तहा मणुस्सात्रि भाणियव्वा ॥ १४ ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया जहा भवणवासी तहा नेयव्वा ॥ १५ ॥ पंचहेऊ पण्णत्ता, तंजहा-हेउं जाणइ, हेउं पासइ, हेउं बुज्झइ, हेउं अभिसमागच्छइ, हेउं छउमत्थमरणं मरइ पंचहेऊ पण्णत्ता तंजहा हेउणा जाणइ जाव हेउणा छउमत्थमरणं मरइ। पंचहेऊ पण्णत्ता, तंजहा-हेउं न जाणइ जाव हेउं अण्णाण मरणं मरइ, पंचहेऊ पण्णत्ता,

भावार्थ — वाणव्यंतर, ज्योतिषी, व वैमानिक को भवनपति जैसे कहना. ॥ १५ ॥ जो परिग्रही होते हैं वे छद्मस्थ होते हैं और छद्मस्थ हेतुसे जानते हैं इसलिये आगे हेतुका प्रश्न पुछते हैं. हेतु पांच प्रकार के कहे हैं. १ हेतु जानतेहैं अर्थात् साध्य निश्चयार्थ के लिये जानते हैं २ सामान्यता से जानते हैं ३ सम्यक् प्रकारसे श्रद्धते हैं ४ हेतु में प्रवर्ते और ५ हेतु छद्मस्थ मरण मरे. और पांच प्रकार के हेतु कहे हैं. हेतु से जाने यावत् हेतु से छद्मस्थ मरण मरे. पांच हेतु-हेतु को जाने नहीं यावत् हेतु अज्ञान मरण मरे. पांच हेतुकहे-हेतुसे जाने नहीं यावत् हेतु से अज्ञान मरण मरे. पांच अहेतु कहे हैं अहेतु जाने यावत् अहेतु केवली मरण मरे.

शब्दार्थ व० वृक्ष की पंक्ति दे० देवालय स० सभा प० पर्वत थू० स्तूभ खा० खाइ प० उपर नीचे सम आकार वाली खाई पा० प्राकार अ० अटारी च० चरिका दा० द्वार गो० गोपुर पा० महेल घ० गृह स० शरण ले० स्थानक आ० दूकानों सि० श्रृंगाटक स्थान ति० तीन रस्ता मीले च० चौक च० चचर च० चतुर्मुख म० राजमार्ग प० मार्ग स० शकट र० रथ जा० यान ज० घोंसरू गि० अंबाडी थि० ऊंटका पलाण सी० पालखी सं० छोटी गाडी लो० तवा क० कडाई क० कुडछी भ० भवन शेष पूर्ववत् ॥ १३ ॥ ज०

सूत्र सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-संदमाणियाओ-परिग्गहियाओ भवंति, लोही-लोहकडाह-कडुच्छुया-परिग्गहिया भवंति, भवणा परिग्गहिया भवंति, देवा-देवीओ-मणुस्सा-मणुस्सीओ-तिरिक्खजोणिया - तिरिक्खजोणिणीओ-आसण-सयण-खंभ-भंड-सचित्ता-चित्त-मीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति, से तेणट्ठेणं ॥ १३ ॥ जहा

भावार्थ तीन रस्ते मीले वैसा मार्ग, चौक, चचर, चार मुखवाला मार्ग, राज्यमार्ग, शकट, रथ, विमान, धूंसरा, अंबाडी, ऊंटका पलाण, पालखी, छोटीगाडी, तवा, छोटीकडाइ, कुडछी, भुवन, देव, देवी, मनुष्य, मनुष्यणी, तिर्यंच, तिर्यंचणी, आसन, शयन, स्थंभ, भंड, सचित्त, अचित्त, व मीश्र द्रव्यका परिग्रह रहा हुवा है इसीसे तिर्यंच सपरिग्रही व सारंभी कहाते हैं ॥ १३ ॥ ऐसे ही मनुष्य का जानना. ॥ १४ ॥

शब्दार्थ अ० अर्ध सहित अ० मध्य रहित अ० प्रदेश रहित अ० आर्य ना० नारद पुत्र अनगार नि० निर्ग्रन्थी

सूत्र अज्जो तंचेव ॥ तएणं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वयासी-- दव्वादेसेणवि मे अज्जो सव्व पोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, णो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, खेत्ताएसेणवि, कालाएसेणवि भावाएसेण ॥ तएणं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी जइणं अज्जो दव्वाएसेणं सव्व पोग्गला सअड्ढा, समज्झा, सपएसा, णो अणड्ढा अमज्झा, अपएसा. एवं ते परमाणु पोग्गलेवि सअड्ढे समज्झे सपएसे णो अणड्ढे अमज्झे अपएसे जइणं अज्जो खेत्ताएसेणवि सव्वं पोग्गाला सअड्ढा समज्झा सपएसा जाव एवं ते एग पएसेगाढेवि पोग्गले सअड्ढे, समज्झे, सपएसे ॥ जइणं अज्जो कालाएसेणं सव्व पोग्गला सअड्ढा

भावार्थ कि अहो आर्य ! द्रव्यादेश से, क्षेत्रा देश से, कालादेश से व भावादेश से सब पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित हैं. फीर निर्ग्रन्थी पुत्र अनगारने नारद पुत्र अनगार को ऐसा कहा कि अहो आर्य ! जब द्रव्या देश से सब पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश वाले हैं तब परमाणु पुद्गल भी अर्ध, मध्य व प्रदेश वाले होवे, जब क्षेत्रा देश से सब पुद्गल अर्ध मध्य व प्रदेश वाले हैं तब एक प्रदेशावगाही पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित होवे. जब कालादेश से सब पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश वाले हैं तब एक समय की स्थिति वाले

नारद पुत्र ते० तहां उ० आये उ० आकर ना० नारद पुत्र अ० अनगार को ए० ऐसा व० कहा स० सब पो० पुद्गल अ० आर्य किं० क्या स० अर्ध सहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित उ० अथवा

सूत्र

अणगारे जेणेव नारयपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता, नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी—सव्वे पोग्गलात्ति अज्जो किं सअड्ढा समज्झा सपएसा उदाहु अणड्ढा अमज्झा अपएसा? अज्जोत्ति नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वयासी सव्वे पोग्गला मे अज्जो सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा। तएणं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी जइण ते अज्जो! सव्वे पोग्गला सअड्ढा समज्झा, सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा; किं दव्वादेसेणं अज्जो! सव्व पोग्गला सअड्ढा तहेव चेव, कालादेसेणं तंचेव, भावादेसेणं

भावार्थ

हुए विचरते थे ॥ २ ॥ उस समय में निर्ग्रन्थी पुत्र अनगार नारदपुत्र अनगार की पास आकर ऐसा बोले की अहो आर्य! सब पुद्गलों क्या अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित हैं अथवा अथवा अर्ध, मध्य व प्रदेश रहित हैं? नारद पुत्र अनगार निर्ग्रन्थी पुत्र अनगार को ऐसा बोले कि अहो आर्य! सब पुद्गल मेरे अभिप्राय से अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित हैं. उस समय में निर्ग्रन्थी पुत्र अनगारने नारद पुत्र को कहा कि अहो आर्य! जब तुम्हारे अभिप्राय से सब पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश सहित हैं तब क्या वे द्रव्यादेश से अर्ध मध्य व प्रदेश सहित हैं, क्षेत्रादेशसे, काला देश से या भावादेश से हैं? तब नारद पुत्रने उत्तर दिया

शब्दार्थ सहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित ज० यादि दे० देवानुप्रिय न० नहीं गि० खेदित होवे प० कहने

सूत्र. ए ॥ ३ ॥ तएणं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी दव्वा एसेणावि अज्जो ! सव्व पोग्गला सपएसावि अपएसावि अणंता, खेत्ताएसेणवि एवं चेव, कालाएसेणवि. भावाएसेणवि एवं चेव । जे दव्वओ अपएसे, से खेत्तओ नियमा अप-

भावार्थ से इस का अर्थ सुनने को इच्छता हूं ॥ ३ ॥ तब निर्ग्रन्थी पुत्र अनगारने नारदपुत्र को ऐसा कहा कि अहो आर्य ! द्रव्य, क्षेत्र, काल व भावादेश से सब पुद्गलों प्रदेश सहित भी हैं व प्रदेश रहित हैं क्योंकि इसमें द्विप्रदेशात्मकादि स्कंध व परमाणु पुद्गल रहे हुवे हैं और वे अनंत हैं. क्षेत्रादेश से आकाश के द्विप्रदेशी स्कंध को अवगाहकर रहनेवालें पुद्गल सप्रदेशी हैं और एक आकाश प्रदेशावगाही पुद्गल अप्रदेशी हैं. काल से दो तीन वगैरह समय की स्थितिवाले पुद्गल सप्रदेशी हैं और एक समय की स्थिति वाले पुद्गल अप्रदेशी हैं, भाव से दो तीन वगैरह गुनकाले द्रव्य सप्रदेशी हैं और एक गुनकाला द्रव्य अप्रदेशी है, जो द्रव्य से अप्रदेशी होते हैं वे क्षेत्र से निश्चयही अप्रदेशी होते हैं क्यों की द्रव्य से अप्रदेशी परमाणु पुद्गल एक प्रदेशावगाही होता है. काल से क्वचित् सप्रदेशी होता है, क्वचित् अप्रदेशी होता है, यादि वह परमाणु एक समय की स्थितिवाला होवे तो अप्रदेशी और अनेक समय की स्थिति वाला होवे तो सप्रदेशी. भाव से भी क्वचित् सप्रदेशी व क्वचित् अप्रदेशी हैं क्यों कि जो एक गुनकालादि है वह

शब्दार्थ पुत्र अ० अनगार को ए० ऐसा व० बोले स० सब पो० पुद्गल मे० मेरे मत में अ० आर्य स० अर्ध

सूत्र

समज्झा सपएसा, एवं तेएग समय ठिईएवि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे तंचेव॥ जइणं अज्जो भावाएसेणं सव्व पोग्गला सअड्ढे एवं एक गुणकालएवि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे तंचेव॥ अहते एवं न भवंति तो ज वयासि दव्वाएसेणंवि सव्व पोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा नोअणड्ढा अमज्झा अपएसा एवं खेत्ताएसेणवि, कालाएसेणवि, भावाएसेणवि तण्णं मिच्छा॥ तएणंसे नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वयासी नो खलु एवं देवाणुप्पिया एयमट्ठं जाणामो पासामो॥ जइणं देवाणुप्पिया नो गिलायंति परिकहित्तए तं इच्छामिणं देवाणुप्पियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाणित्ता-

भावार्थ

पुद्गल भी अर्ध, मध्य व प्रदेश वाले होवे और जब भावादेशसे सब पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश वाले हैं, तब एक गुन काला पुद्गल भी अर्ध, मध्य व प्रदेश वाला होवे. परंतु ऐसा नहीं है. इसलिये द्रव्यादेश से क्षेत्रादेश से, कालादेश से व भावा देशसे सब पुद्गल अर्ध, मध्य व प्रदेश वाले हैं ऐसा जो तुम कहते हो वह मिथ्या है. तब नारद पुत्र अनगार निर्ग्रन्थी पुत्र अनगार को ऐसा बोले कि अहो देवानुप्रिय ! मैं इसका अर्थ नहीं जानता हूं. इसलिये यदि आपको कहने में किसी प्रकारका खेद न होवे तो मैं आपकी पास

शब्दार्थ सहित स० मध्य सहित स० प्रदेश सहित ज० यदि दे० देवानुप्रिय न० नहीं गि० खेदित होवे प० कहने

सूत्र. ए ॥ ३ ॥ तएणं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी दव्वा एसेणावि अज्जो ! सव्व पोग्गला सपएसावि अपएसावि अणंता, खेत्ताएसेणवि एवं चेव, कालाएसेणवि. भावाएसेणावि एवं चेव । जे दव्वओ अपएसे, से खेत्तओ नियमा अप-

भावार्थ से इस का अर्थ सुनने को इच्छता हूं ॥ ३ ॥ तब निर्ग्रन्थी पुत्र अनगारने नारदपुत्र को ऐसा कहा कि अहो आर्य ! द्रव्य, क्षेत्र, काल व भावादेश से सब पुद्गलों प्रदेश सहित भी हैं व प्रदेश रहित हैं क्योंकि इसमें द्विप्रदेशात्मकादि स्कंध व परमाणु पुद्गल रहे हुवे हैं और वे अनंत हैं. क्षेत्रादेश से आकाश के द्विप्रदेशी स्कंध को अवगाहकर रहनेवाले पुद्गल सप्रदेशी हैं और एक आकाश प्रदेशावगाही पुद्गल अप्रदेशी हैं. काल से दो तीन वगैरह समय की स्थितिवाले पुद्गल सप्रदेशी हैं और एक समय की स्थिति वाले पुद्गल अप्रदेशी हैं, भाव से दो तीन वगैरह गुनकाले द्रव्य सप्रदेशी हैं और एक गुनकाला द्रव्य अप्रदेशी है, जो द्रव्य से अप्रदेशी होते हैं वे क्षेत्र से निश्चयही अप्रदेशी होते हैं क्यों की द्रव्य से अप्रदेशी परमाणु पुद्गल एक प्रदेशावगाही होता है. काल से क्वचित् सप्रदेशी होता है, क्वचित् अप्रदेशी होता है, यदि वह परमाणु एक समय की स्थितिवाला होवे तो अप्रदेशी और अनेक समय की स्थिति वाला होवे तो सप्रदेशी. भाव से भी क्वचित् सप्रदेशी व क्वचित् अप्रदेशी हैं क्यों कि जो एक गुनकालादि है वह

शब्दार्थ को तं० इसलिये इ० इच्छता हूं दे० देवानुप्रिय की अं० पास ए० यह सो० सुनकर के नि० अवधारकर

सूत्र एसे; कालओ सिय सपएसे सिय अपएसे, भावओ सिय सपएसे सिय अपएसे ॥ जेखेत्तओ अपएसे से दव्वओ सिय सपएसे सिय अपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए, जहा खेत्तओ एवं कालओ, भावओ, ॥ जे दव्वओ सपएसे से खेत्तओ सिय सपएसे सिय अपएसे, एवं कालओ भावओवि, ॥ जे खेत्तओ सपएसे से

भावार्थ अप्रदेशी और अनेक गुनकालादि है वह सप्रदेशी है. जो क्षेत्रसे अप्रदेशी है-एक आकाशप्रदेशावगाही है वह द्रव्यसे क्वचित् सप्रदेशी व क्वचित् अप्रदेशी है; क्योंकि एक परमाणु भी एक आकाशप्रदेशावगाही होता है और अनेक परमाणु भी एक आकाश प्रदेशावगाही होता है. वैसे ही क्षेत्र से अप्रदेशी पुद्गलों की काल से व भाव से अप्रदेशी की भजना रहती है, क्यों कि एक आकाश प्रदेशावगाही पुद्गल एक समय व अनेक समय की स्थिति वाला होवे वैसे ही एक गुनकाला व अनेक गुनकाला भी होवे. जैसे क्षेत्र का आलापक कहा वैसे ही काल व भावका जानना. जो द्रव्य से सप्रदेशी है वह क्षेत्र से क्वचित् सप्रदेशी व अप्रदेशी होता है क्योंकि द्विप्रदेशात्मकादि स्कंध एक प्रदेश व अनेक प्रदेशावगाही हो सकते हैं वैसे ही वे काल व भाव से भी क्वचित् सप्रदेशी व क्वचित् अप्रदेशी हैं. जो क्षेत्र से सप्रदेशी हैं वे द्रव्य से नियमा सप्रदेशी होते हैं क्योंकि अनेक प्रदेशावगाही अनेक पुद्गलों होते हैं. काल

सूत्र

दव्वओ नियमा सपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए, जंहा दव्वओ तहा कालओ, भावओवि॥४॥एएसिणं भंते ! पोग्गलाणं दव्वादेसेणं खेत्तादेसेणं,कालादेसेणं, भावादेसेणं सपएसाणं अपएसाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहिया वा ? नारय-पुत्ता ! सव्वत्थोवा पोग्गला भावादेसेणं अपएसा, कालादेसेणं अपएसा, असंखेज्जगुणा दव्वादेसेणं अपएसा असंखेज्जगुणा, खेत्तादेसेणं अपएसा असंखेज्जगुणा, खेत्तादेसेणं चेव सपएसा असंखेज्जगुणा, दव्वादेसेणं सपएसा विसेसाहिया, कालादेसेणं सपए-

अनुवादार्थ

व भाव में भजना होती है अर्थात् क्वचित् सप्रदेशी है व क्वचित् अप्रदेशी है. जैसे द्रव्य का आला-पक कहा वैसे ही काल व भाव का जानना. अर्थात् जो काल से सप्रदेशी है वह द्रव्य क्षेत्र व भाव से सप्रदेशी अप्रदेशी है और जो भाव से सप्रदेशी है वह द्रव्य क्षेत्र व काल से सप्रदेशी अप्रदेशी दोनों है॥४॥ अहो पूज्य ! इन द्रव्यादेश, क्षेत्रादेश, कालादेश व भावादेश से सप्रदेश व अप्रदेश में कौन किस से अल्प, बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो नारद पुत्र ! सब से थोडे भावादेश से अप्रदेशी, कालादेशसे अप्रदेशी असंख्यात गुने, द्रव्यादेश से अप्रदेशी असंख्यात गुने, क्षेत्रादेश से अप्रदेशी असंख्यात गुने, क्षेत्रादेश से सप्रदेशी असंख्यात गुने, द्रव्यादेश से सप्रदेशी विशेषाधिक, कालादेशसे सप्रदेशी विशेषाधिक,

शब्दार्थ को तं० इसलिये इ० इच्छता हूं दे० देवानुप्रिय की अं० पास ए० यह सो० सुनकर के नि० अवधारकर

सूत्र एसे; कालओ सिय सपएसे सिय अपएसे, भावओ सिय सपएसे सिय अपएसे ॥ जेदव्वओ अपएसे से दव्वओ सिय सपएसे सिय अपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए, जहा खेत्तओ एवं कालओ, भावओ, ॥ जे दव्वओ सपएसे से खेत्तओ सिय सपएसे सिय अपएसे, एवं कालओ भावओवि, ॥ जे खेत्तओ सपएसे से

भावार्थ अप्रदेशी और अनेक गुनकालादि है वह सप्रदेशी है. जो क्षेत्रसे अप्रदेशी है-एक आकाशप्रदेशावगाही है वह द्रव्यसे कदाचित् सप्रदेशी व कदाचित् अप्रदेशी है; क्योंकि एक परमाणु भी एक आकाशप्रदेशावगाही होता है और अनेक परमाणु भी एक आकाश प्रदेशावगाही होता है. वैसे ही क्षेत्र से अप्रदेशी पुद्गलों की काल में व भाव से अप्रदेशी की भजना रहती है, क्यों कि एक आकाश प्रदेशावगाही पुद्गल एक समय व अनेक समय की स्थिति वाला होवे वैसे ही एक गुनकाला व अनेक गुनकाला भी होवे. जैसे क्षेत्र का आलापक कहा वैसे ही काल व भावका जानना. जो द्रव्य से सप्रदेशी है वह क्षेत्र से क्वचित् सप्रदेशी व अप्रदेशी होता है क्योंकि द्विप्रदेशात्मकादि स्कंध एक प्रदेश व अनेक प्रदेशावगाही हो सकते हैं वैसे ही काल व भाव में भी क्वचित् सप्रदेशी व क्वचित् अप्रदेशी हैं. जो क्षेत्र से सप्रदेशी हैं वे द्रव्य में नियमा सप्रदेशी होते हैं क्योंकि अनेक प्रदेशावगाही अनेक पुद्गलों होते हैं. काल

सूत्र

दव्वओ नियमा सपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए, जहा दव्वओ तहा कालओ, भावओवि॥४॥एएसिणं भंते ! पोग्गलाणं दव्वादेसेणं खेत्तादेसेणं,कालादेसेणं, भावादेसेणं सपएसाणं अपएसाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहिया वा ? नारयपुत्ता! सव्वत्थोवा पोग्गला भावादेसेणं अपएसा, कालादेसेणं अपएसा, असंखेज्जगुणा दव्वादेसेणं अपएसा असंखेज्जगुणा, खेत्तादेसेणं अपएसा असंखेज्जगुणा, खेत्तादेसेणं चेव सपएसा असंखेज्जगुणा, दव्वादेसेणं सपएसा विसेसाहिया, कालादेसेणं सपए-

भावार्थ

व भाव में भजना होती है अर्थात् क्वचित् सप्रदेशी है व क्वचित् अप्रदेशी है. जैसे द्रव्य का आलापक कहा वैसे ही काल व भाव का जानना. अर्थात् जो काल से सप्रदेशी है वह द्रव्य क्षेत्र व भाव से सप्रदेशी अप्रदेशी है और जो भाव से सप्रदेशी है वह द्रव्य क्षेत्र व काल से सप्रदेशी अप्रदेशी दोनों है॥४॥ अहो पूज्य ! इन द्रव्यादेश, क्षेत्रादेश, कालादेश व भावादेश से सप्रदेश व अप्रदेश में कौन किस से अल्प, बहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो नारद पुत्र ! सब से थोडे भावादेश से अप्रदेशी, कालादेशसे अप्रदेशी असंख्यात गुने, द्रव्यादेश से अप्रदेशी असंख्यात गुने, क्षेत्रादेश से अप्रदेशी असंख्यात गुने, क्षेत्रादेश से सप्रदेशी असंख्यात गुने, द्रव्यादेश से सप्रदेशी विशेषाधिक, कालादेशसे सप्रदेशी विशेषाधिक,

ने० नारकी के० कितना काल व० बढते हैं गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट आ० आवलिका के अ० असंख्यात भाग ए० ऐसे हा० हीन होते हैं णे० नारकी के० कितने काल अ० अवस्थित गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट च० चौवीस मुहूर्त ए० ऐसे स० सातों पु० पृथ्वी में र० रत्नप्रभा में अ० अडतालीस मु० मुहूर्त स० शर्कर प्रभा च० चौदह रा० रात्रिदिन बा० बालु प्रभा मे मा० मास पं० पंकप्रभा में दो० दोमास धू० धूम्रप्रभा में च० चार मास त० तमप्रभा

वड्ढंति ? गोयमा ! जहण्णं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं, एवं हायंतिवा । नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं अवट्ठिया ? गोयमा ! जहण्णं एगं समयं उक्कोसेणं चउवीसं मुहुत्ता, एवं सत्तसु विपुढविसु वड्ढंति हायंति भाणियव्वं णवरं अवट्ठिएसु इमं णाणत्तं तं० रयणप्पभाए पुढवीए अडयालीस मुहुत्ता सक्करप्पभाए चउद्दस राइंदि-

अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यात वा भागतक नारकी बढते रहते हैं. इतने ही कालतक हीन होते रहते हैं. अहो भगवन् ! नारकी कितने काल तक अवस्थित रहते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त. सातों नारकी में वृद्धि व हीन होने का उक्त कथनानुसार जानना परंतु अवस्थित में रत्न प्रभा पृथ्वी में नारकी ४८ मुहूर्ततक अवस्थित रहते हैं, शर्करप्रभा में चौदह रात्रिंदिन, वालुप्रभा में एक मास, पंकप्रभा में दोमास, धूम्रप्रभा में चार मास, तमप्रभामें आठ मास

शब्दार्थ में अ० आठमास त० तमतमा में व०-बारह मास ॥ ११ ॥ अ० असुर कुमार व० बढते हैं हा० हीन होते हैं ज० जैसे ने० नारकी अ० अवस्थित ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट अ० अडतालीस मु० मुहूर्त ए० ऐसे द० दश प्रकार के भी ॥१२॥ पूर्ववत् ॥ १३ ॥ बे० द्विइन्द्रिय व० बढते हैं. हा० हीन होते हैं. त० तैसे अ० अवस्थित ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट दो० दो अं० अंतर्मुहूर्त ए० ऐसे

सूत्र याइं वालुयप्पभाए मासं, पंकप्पभाए दोमासा, धूमप्पभाए चत्तारिमासा तमाए अट्ठमासा तमतमाए बारसमासा ॥ ११ ॥ असुरकुमारावि वड्ढंति हायंति जहा नेरइया, अवट्ठिया जहण्णं एगं समयं उक्कोसं अट्ठचत्तालीसं मुहुत्ता, एवं दसविहावि ॥ १२ ॥ एगिंदिया वड्ढंतिवि, हायंतिवि, अवट्ठियावि एएहिंतिहिंवि जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसं आवलियाए असंखेज्जं भागं ॥ १३ ॥ बेइंदिया वड्ढंति हायंति तहेव । अवट्ठिया

भावार्थ तक, तमतमाप्रभा में बारह मास तक नारकी अवस्थित रहते हैं. ॥ ११ ॥ असुरकुमार में वृद्धि होना व हीन होना नारकी जैसे जानना. परंतु उनका जघन्य एकसमय उत्कृष्ट ४८ मुहूर्त तक अवस्थित काल जानना. ऐसे ही दश प्रकार के भुवनपतिका जानना. ॥ १२ ॥ एकेन्द्रिय का वृद्धि, हीन व अवस्थित रहने का काल जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यातवा भाग का है ॥ १३ ॥ बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का वृद्धि होना व हीन होना पहिले जैसे कहना और अवस्थित काल जघन्य एक समय उत्कृष्ट

शब्दार्थ ने० नारकी के० कितना काल व० बढते हैं गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक समय उ० उत्कृष्ट आ० आवलिका के अ० असंख्यात भाग ए० ऐसे हा० हीन होते हैं णे० नारकी के० कितने काल अ० अव-स्थित गो० गौतम ज० जघन्य ए० एक स० समय उ० उत्कृष्ट च० चौवीस मुहूर्त ए० ऐसे स० सातों पु० पृथ्वी में र० रत्नप्रभा में अ० अडतालीस मु० मुहूर्त स० शर्कर प्रभा च० चौदह रा० रात्रिदिन वा० वालु प्रभा मे मा० मास पं० पंकप्रभा में दो० दोमास धू० धूम्रप्रभा में च० चार मास त० तमप्रभा

सूत्र वाड्ढंति ? गोयमा ! जहण्णं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं, एवं हायंतिवा । नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं अवाट्ठिया ? गोयमा ! जहण्णं एगं समयं उक्कोसेणं चउवीसं मुहुत्ता, एवं सत्तसु विपुढविसु वाड्ढंति हायंति भाणियव्वं णवरं अवाट्ठिएसु इमं णाणत्तं तं० रयणप्पभाए पुढवीए अडयालीस मुहुत्ता सक्करप्पभाए चउदस राइंदि-

भावार्थ अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवलिका का असंख्यात वा भागतक नारकी बढते रहते हैं. इतने ही कालतक हीन होते रहते हैं. अहो भगवन् ! नारकी कितने काल तक अवस्थित रहते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त. सातों नारकी में वृद्धि व हीन होने का उक्त कथनानुसार जानना परंतु अवस्थित में रत्न प्रभा पृथ्वी में नारकी ४८ मुहूर्ततक अवस्थित रहते हैं, शर्करप्रभा में चौदह रात्रिंदिन, वालुप्रभा में एक मास, पंकप्रभा में दोमास, धूम्रप्रभा में चार मास, तमप्रभामें आठ मास